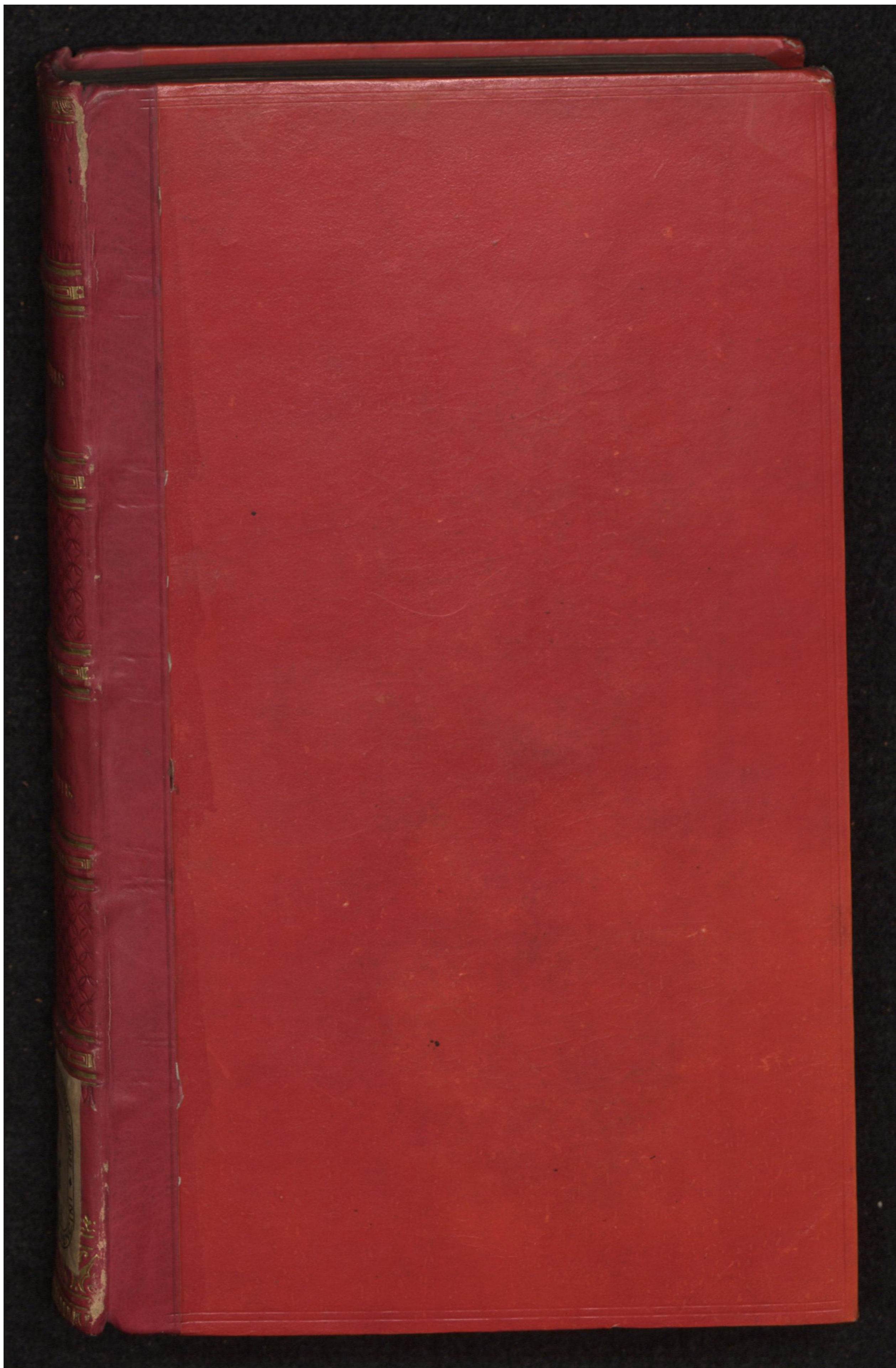
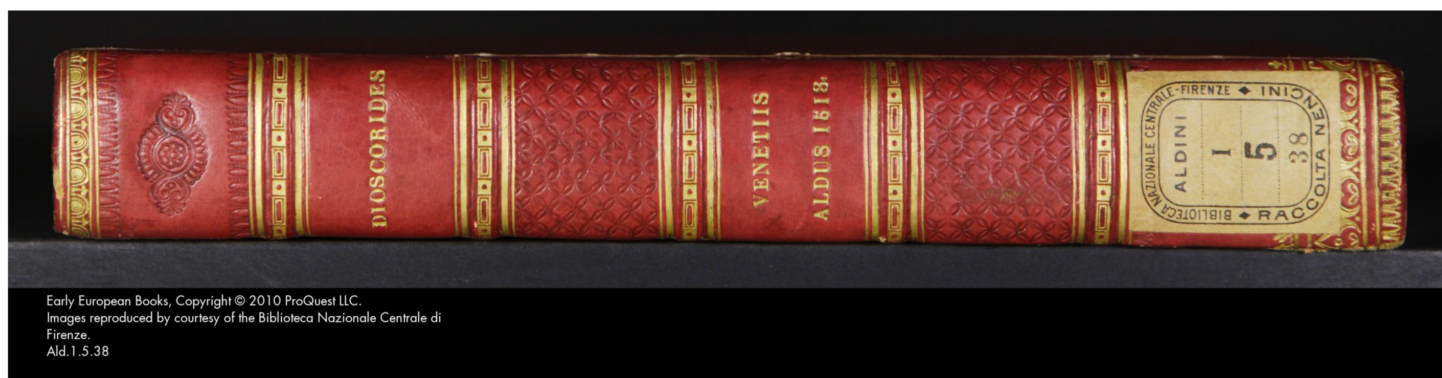
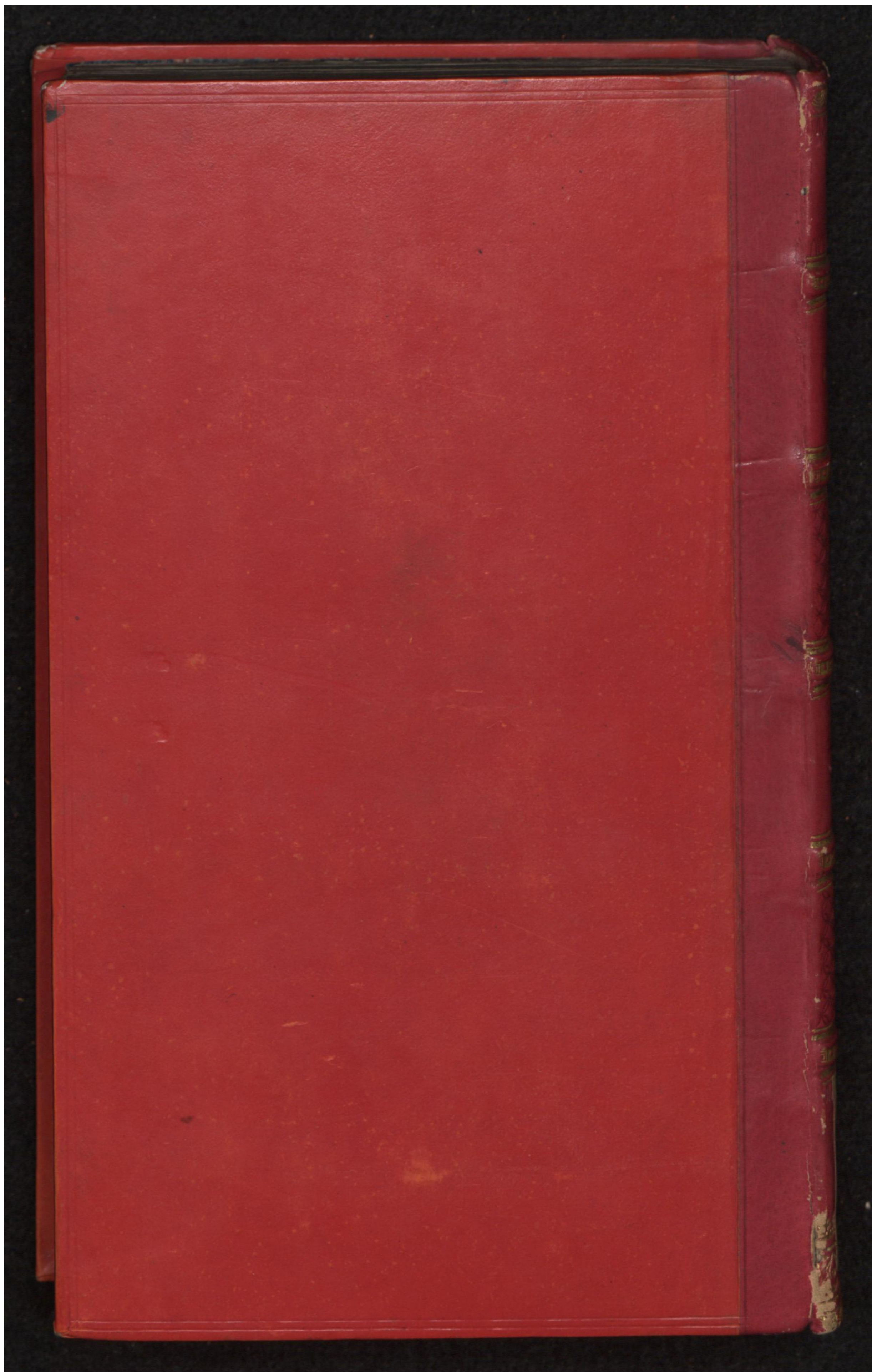
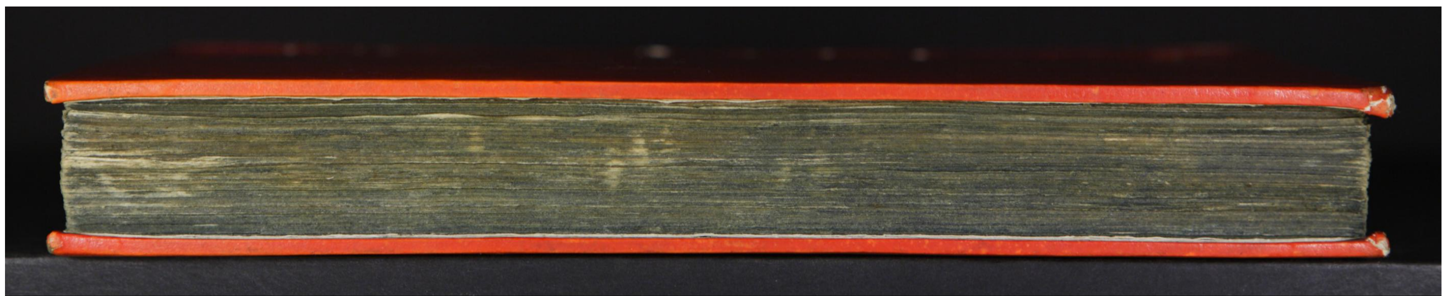



DIOSCORIDES
VENETIIS
ALDUS 1518
BIBLIOTECA NAZIONALE CENTRALE - FIRENZE
RACCOLTA NENCINI
ALDINI
I
5
38



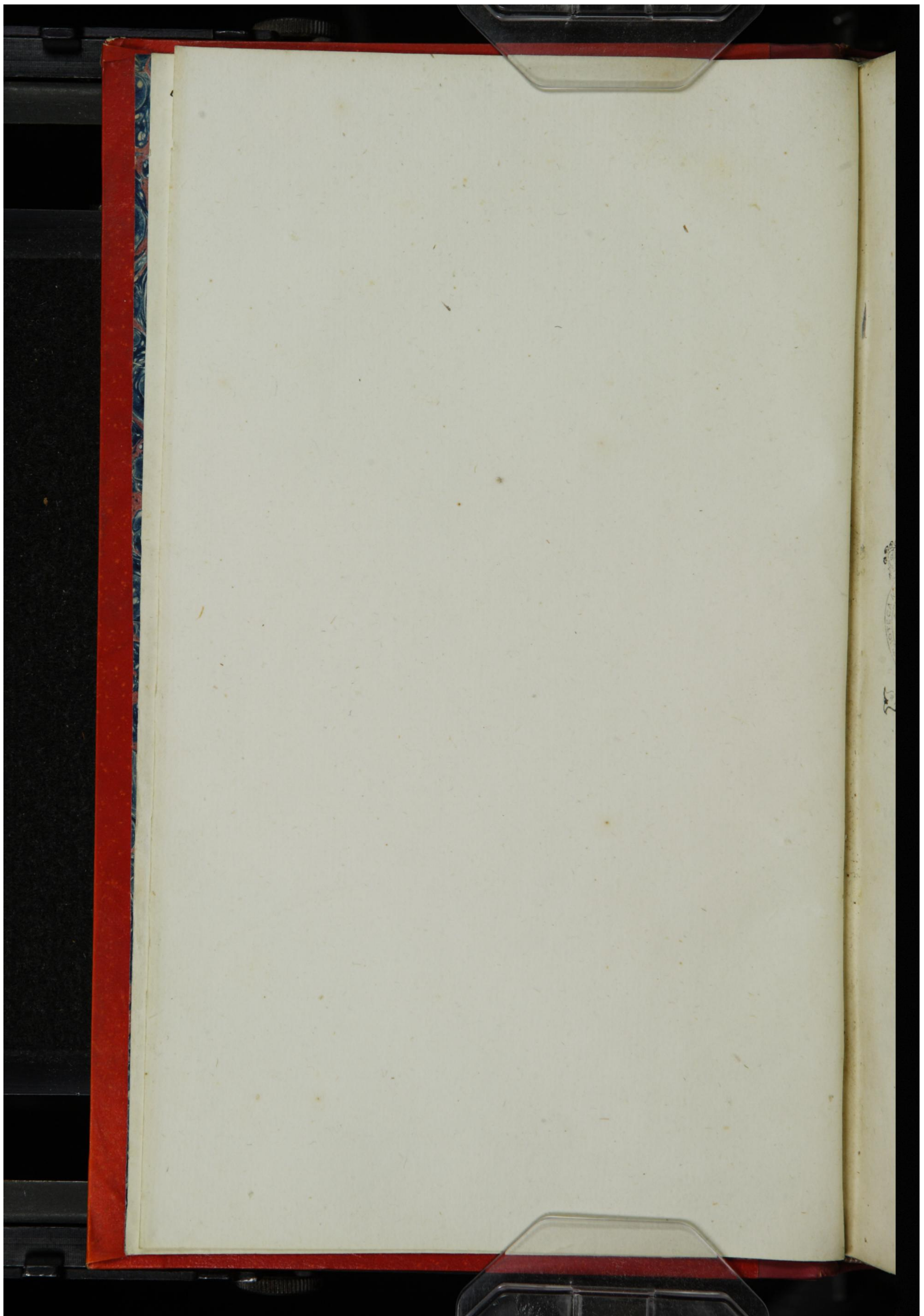







BIBLIOTECA NAZIONALE CENTRALE - FIRENZE
ALDINI
I
5
38
RACCOLTA NENCINI


OTIVM
SINE LITERIS
MORS EST
Seneca
Ex Libris Joannis Nencini
1874



# ΔΙΟΣΚΟΡΙΔΗΣ.

# DIOSCORIDES.






## Πεδακίου Διοσκορίδου περὶ ὕλης ἰατρικῆς λόγοι ἕξ.

Τ οῦ αὐτοῦ περὶ ἰοβόλων, ἐν οἷς καὶ περὶ λυσσῶντος κυνὸς σημείωσίς τε τῶν ἀπ' αὐτῶν δεδηγμένων, καὶ θεραπεία. λόγοι δύο.

Ἔ λεγχος τῶν ἁπάντων φυτῶν, καὶ ζώων, καὶ μεταλλευομένων ὧν περὶ τὸ χρήσιμον ὁ συγγραφεὺς Διοσκορίδης ἐν τῷ παρόντι βιβλίῳ διδάσκει.

Σ τίχοι περὶ δυνάμεως τινῶν φυτῶν ἐν τοῖς παλαιοῖς εὑρισκόμενοι ἀντιγράφοις.

## Pedacij Dioscoridis de materia medica libri Sex.

E iusdem de uenenatis animalibus libri duo, quibus canis rabidi signa, et curatio eorum continetur, quibus uenenata animalia morsum defixerint.

I ndex omnium plantarum, animalium, metallorum quorum utilitatem author Dioscorides præsenti in libro docet.

C armina de uirtute, siue facultate quarundam plantarum in antiquis reperta exemplaribus.

FRANCISCVS ASVLANVS HIERONYMO ROSCIO PATAVINO PHILOSOPHO ET MEDICO PRAESTANTISSIMO.

SOCRATES ille summus apud græcos et dicendi, & instituẽdi magister Atheniensem Demonicũ ad recta uitæ officia, egregiamq; uirtutis laudem
I excitans inter prima præcepta illud retulit, decere liberos non modo fortunarum paternarum succedere hæredes, uerum etiam amicitiarum. Nec uero homo sapientissimus, idemq; totius græciæ orator longe eloquentissimus in omni suorum monimentorum genere de ulla re magis solicitum se ostendit, quàm ut ius institutæ semel amicitiæ, mutuisq; officijs confirmatæ perpetuum conseruetur. quod quidem facilius etiam fieri posse existimauit, si id ipsum amicitiæ ius ab exquisita honesti ratione, & flagranti uirtutis studio proficisceretur. Hanc quoq; sententiã Aristoteli, cæterisq; Peripateticis ita probatam uideo, ut non dubitarint affirmare amicitiam quandam esse uirtutem, aut certe non posse nisi cum uirtute consistere. Nos autem eo consilio Hieronyme clarissime hæreditatem Aldi, quem loco patris habebamus, adire uoluimus, ut illam integram filijs eius, qui ex sorore nostra suscepti essent, conseruaremus, Atq; ea omnia curare, quæ non minus ad nomen eius illustrandum pertinerent, quàm ad amicos, quos complures nobis reliquit, colendos, & omni officiorum genere amplectendos. Quod quã quam in omnibus alijs facere soleo, explicare tamen non satis possum, quanto desyderio quotidie magis flagrem, ut intellegas officia, & studia, quæ à me tibi præstantur, non iure ueteris amicitiæ, summæq; necessitudinis inter domum nostram, ac te iam pridem constitutæ præstari, sed incredibili opinione doctrinæ, & iudicij, quæ apud me iam inde esse cœpit, cum Dioscoridis libros de materia medica, & uenenatis animalibus, atq; de remedijs, quæ ijs adhibeantur, qui ex morsu eorum animalium uenenis inficiuntur, diligenter à te castigatos, ac ex collatione multorum, uetustissimorumq; codicum recognitos ad me informandos miseris. Qua in re non modo apud me testatum reliquisti te medicinæ scientiam optime tenere, eiusq; usum ad corpora grauioribus morbis conflictata prudẽter accommodare, uerum etiam posse studiosos adulescentes ad eius ipsius cognitionẽ uel excitare, uel ætate iam prouectos, qui bonas horas male

collocarunt, sui erroris admonere, & deterso prioris seculi squalore, nihil propemodum relinquere, quod pristinum decus non recuperarit, & splendorem non acceperit suum. Itaq; tuis potissimum auspicijs legetur Dioscorides magna ex parte integritati suæ restitutus, nec uni, aut alteri legetur, sed omnibus apud quos uel græcæ linguæ studium, uel bonarum literarum cultus uiget. Atq; interim nõ imemores etiã futuri sunt Nicolai Leonici uiri doctissimi. Is enim pro incredibili suo erga bonos studio codicem emendatissimæ lectionis tibi commoduuit, cuius fidem secutus cum alia immutanda duxisti, tum apponendum asteriscum nonnullis capitibus curasti, quæ ueluti supposititia sunt tibi iudicata, cum ea oĩa animaduertisses in codice illo antiqssimo desyderari. Nec ad extremũ ullo modo silendum arbitror, testimoniũ quod ex Sudæ collectaneis de Dioscoride uulgo affertur, quod familiariter cum Cleopatra uixerit, importune nimis ad hunc Dioscoridem trahi, quippe qui Licinij Bassi amicum se profiteatur, qui Plinij temporibus floruit. Sed hæc aliud requirunt otium. nec in præsentia aliud petimus, aut optamus, quàm ut cognoscas me beneficij, et uirtutis tuæ memorem, non autem doctrinæ ostentatorem, aut ullius reprehendendi cupidum. Vale.

| | | | |
|---|---|---|---|
| ἄλιζον | φια. | ἀστὴρ ἀττικός. | ψβ. |
| ἀσκληπιάς. | φιβ. | ἀντίρρινον | ψκε. |
| ἀδακτυλλίς. | φιγ. | ἀδίαντον | ψκη. |
| ἀρτεμισία πολύκλωνος | φλγ. | αἰγίλωψ | ψμα. |
| ἀρτεμισία λεπτόφυλλος | φλδ. | ἀκτὴ | ψνδ. |
| ἀμβροσία | φλε. | ἄπιος | ψνβ. |
| ἀνδρόσακες | φνς. | ἄλυπον | ψνθ. |
| ἀπολλώνιον | φνζ. | ἄμπελος ἀγρία | ψξβ. |
| ἀνθυλλίς. | φνθ. | ἄμπελος λευκὴ | ψξγ. |
| ἀνθεμίς. | φξ. | ἄμπελος μέλαινα | ψξδ. |
| ἀλθαία | φξθ. | ἄμπελος οἰνοφόρος | ψοε. |
| ἀλκέα. | φο. | ἄμπελος ἀγρία. | ψος. |
| ἀνάγυρις. | φογ. | ἀντίπουσα. | ωξ. |
| ἄλισμα | φοε. | ἄνθος χαλκοῦ. | ωξβ. |
| ἄσκυρον | φοη. | ἀρσενικόν. | ωςε. |
| ἀνδρόσαιμον | φοθ. | ἄλες | ϡ. |
| ἄγχουσα | χα. | ἁλὸς ἄχνη | ϡα. |
| ἄγχουσα ἑτέρα | χς. | ἅλμη | ϡβ. |
| ἄγχουσα τρίτη | χζ. | ἁλὸς ἄνθος | ϡγ. |
| ἄγρωστις. | χιβ. | ἀφρόνιτρον | ϡε. |
| ἄγρωστις ἡ ἐν παρνασσῷ | χιδ. | ἄσβεστος | ϡη. |
| ἀχίλλειος | χιη. | ἀλκυόνιον | ϡι. |
| ἀγήρατον | χμα. | ἀλαρκης | ϡια. |
| ἀστράγαλος | χμδ. | ἀντιπαθές. | ϡιδ. |
| ἀκόνιτον | χνθ. | ἄμμος | ϡμα. |
| ἀκόνιτον ἕτερον | χξ. | ἀκόνη | ϡμβ. |
| ἀπόκυνον | χξγ. | ἀσβόλη | ϡνς. |
| ἀλσίνη | χξθ. | ἀκόνιτον | ϡξδ. |
| ἀείζωον τὸ μέγα | χοα. | αἷμα ταύρειον | ϡπβ. |
| ἀείζωον τὸ μικρόν. | χοβ. | ἄξος | ϡς. |
| ἀείζωον ἕτερον | χοδ. | B | |
| ἀναλύφη | χος. | Βάλσαμον. | ιη. |
| αἰθιοπίς. | χπζ. | Βρύον | κ. |
| ἄρκτιον | χπη. | βδέλλιον | πα. |
| ἄρκειον | χπθ. | βράθυ | ρε. |

βάλανοι ρμδ.
βαλαύστια. ρνε.
βάτραχοι σιϛ.
βούπρησις σνδ.
βούτυρος καὶ ἡ ἀσβ αὐτοῦ λι/
γνύς. σξθ.
βρῶμος τδ.
βουνιάς. τκδ.
βλῆτον. τλα.
βολβὸς τπβ.
βολβὸς ἐδώδιμος ϖθ.
βατράχιον τϛδ.
βάκχαρις υνϛ.
βαλλωτή. φκγ.
βήχιον φλβ.
βόσφιο φλϛ.
βούφθαλμον φξβ.
βρεταννική. φπδ.
βάτος. χθ.
βάτος ἰδαία χη.
βρύον θαλάσσιον χπα.
βούνιον χψϛ.
βούγλωσσον ψε.
βρῶμος ἡ πόα ψχβ.
βάλανος μυρεψική ψμγ.
βούπρησις ϡξ.
βδέλλα ϡϖθ.

Γ

γῆρας ὄφεως σζ.
γαλῆ κατοικίδιος σιε.
γάρρος σκβ.
γῆς ἔντερα. σξ.
γάλα σξγ.
γάλα σχιστόν. σξε.
γάλα γυναικεῖον σξϛ.
γογγύλη τκβ.
γιγγίδιον τνε.
γεντιανή. υη.
γλυκύρριζα. υιβ.
γλήχων υμα.
γλαύκιον φϛ.
γεράνιον φλζ.
γναφάλιον. φλη.
γαλίοψις χζ.
γάλλιον χοη.
γλαῦξ ψκγ.
γύψος ϡη.
γῆ ϡμδ.
γῆ ἐρετριάς. ϡμη.
γῆ σαμία ϡμϛ.
γῆ χία ϡμη.
γῆ σελινουσία. ϡμθ.
γῆ κιμωλία. ϡν.
γῆ πνιγῖτις ϡνα.
γῆ ἡ ἐκ τῶν καμίνων ϡνγ.
γῆ μηλιάς. ϡνδ.
γῆ ἀμπελῖτις ϡνε.
γύψος ϡπα.
γάλα ἐμπυριασθέν. ϡϖγ.

Δ

δάφνη. ρζ.
δάκρυον ἐλαίας αἰθιοπι/
κῆς. ρμβ.
δρῦς. ρμγ.
δράκων θαλάσσιος σγ.
δράβη τοε.
δρακοντία μεγάλη τπδ.
δίψακος υιη.
δίκταμνος υμβ.

Z



H



Θ



I

M

ποτήριον. υκβ.
πήγανον υνζ.
πήγανον ἄγριον υνη.
πάνακες υξ.
πάνακες ἀσκληπιοῦ. υξα.
πάνακες χειρώνιον υξβ.
πετροσέλινον υπβ.
πύρεθρον. υϛα.
πευκέδανος υϛβ.
πολύκνημον. φιδ.
πράσιον. φκε.
πόλιον φλ.
παρθένιον φξα.
παιονία. φξγ.
πολύγονον ἄρρεν φπϛ.
πολύγονον θῆλυ φπζ.
πολύγονατον φπη.
πολεμώνιον φϛ.
περικλύμενον φϛϛ.
πεντάφυλλον χκδ.
παρωνυχία χλϛ.
περιστερεὼν χμβ.
ποταμογείτων χπγ.
πετασίτης. χϛ.
πολύγαλον ψκδ.
πιτυοῦσα ψμη.
πέπλος ψμθ.
πεπλὶς ψν.
πυκνόκομον. ψνζ.
πιδρίς ψξε.
πολυπόδιον ψξζ.
πομφόλυξ ωνθ.
πιτυοκάμπη ϡνθ.

Ρ

ῥύπος βαλανείων λδ.
ῥύπος ἐκ τῆς παλαί-
στρας. λε.
ῥύπος γυμνασίων λϛ.
ῥητίνη σχινίνη ϛα.
ῥητίνη ὑγρὰ πιτυΐνη καὶ πευ-
κίνη ϛγ.
ῥάμνος ρκ.
ῥόδα ρλα.
ῥοδίδες ρλβ.
ῥοῦς ρμη.
ῥόα ρβ.
ῥάφανος τκε.
ῥάφανος ἄγριος τκϛ.
ῥᾶ υζ.
ῥοδία ῥίζα χκϛ.

Σ

σχῖνος ιϛ.
καὶ χλθ.
σχῖνος τὸ δένδρον ϛ.
στακτὴ οδ.
σμύρνα οκ.
σμύρνα βοιωτική. οθ.
στύραξ. π.
στρόβιλοι πθ.
σαπρότης ξύλων ριγ.
σίδια ρνδ.
συκόμορον ρπβ.
σῦκον κύπριον ρπγ.
συκῆ ἀγρία ρπε.
σίκυς ἥμερος ϡμθ.
σῦκα ρπδ.
σκορπίος χερσαῖος σα.
σκορπίος θαλάσσιος σβ.
σκολόπενδρα σδ.

σίκης τνα.
σταφὶς ἀγρία ψλη.
σπαρτὶς ψμ.
σίλυβον ψμα.
σκαμμωνία ψνβ.
σκορπιοειδές. ψοδ.
σταφυλὴ ψοζ.
σταφὶς ψοη.
σκωρία σιδήρου ωξη.
σκωρία μολίβδου ωοα.
στίμμοι ωογ.
σκωρία ἀργύρου ωοε.
σῶρυ ωϛγ.
σανδαράχη ωϛϛ.
στυπτηρία ωϛζ.
σπόγγοι ϡιβ.
σμύρεις ϡμ.
σαλαμάνδρα ϡξα.
σμίλαξ ϡξθ.
σαρδονία πέτρα ϡοα.

Τ

τέρμινθος ϛβ.
τελλῖναι ρϛϛ.
τρυγὼν θαλασσία σι.
τρίγλη σιβ.
τέττιγες σμδ.
τυρὸς νεαρός. σξζ.
τράγος τγ.
τῆλις τπβ.
τεῦτλον τλξ.
τραγοπώγων τξα.
τηλέφιον. υε.
τραγάκανθα υκη.
τραγοορίγανον υμ.
τορδίλιον υξη.

τεύκριον φιζ.
τρίφυλλον φκθ.
τύφη φλθ.
τρίβολον φϛξ.
τράγιον χλα.
τράγιον ἄλλο χλβ.
τράγος χλγ.
τρίσπορον ψιζ.
τριχομανὲς ψιθ.
τιθυμάλλου ἑπτὰ εἴδη ψμζ.
τεκτονική. ωπϛ.
τρύξ ϡϛ.
τέφρα ϡθ.
τοξικὸν ϡοζ.
τίτανος ϡπϛ.

Υ

ὑποκιστὶς ρκη.
ὕδνον τξγ.
ὑδροπέπερι τοθ.
ὕσσωπον υλε.
ὑπερικὸν φοξ.
ὑάκινθος χμε.
ὑπήκοον χν.
ὑοσκύαμος χνα.
ὕδωρ ψϛβ.
ὕδωρ θαλάσσιον ψϛγ.
ὑδρόμηλον ωδ.
ὑδράργυρος ωπδ.
ὑοσκύαμος ϡοβ.
ὑδράργυρος ποθεῖσα ϡπε.
ὕδωρ ψυχρόν. ϡϛα.

Φ.

φοῦ. ι.
φλοιὸς λιβάνου. πγ.
φιλλυρέα ρκϛ.

φιλλυρέα ρκϛ.
φηγὸς ρμε.
φοίνιξ ρμθ.
φοίνικος σπάθη βάϊ καὶ ρν.
φοίνιξ ἢ καὶ ἐλάτη ρνα.
φίνις σμϛ.
φακὸς τιξ.
φασίολος τιη.
φυλλίτις φκζ.
φαλάγγιον φκη.
φύλλον φμϛ.
φάλλαρις φξε.
φοίνιξ χκε.
φακὸς ὁ ἐπὶ τῶν τελμάτων χο.
φῦκος θαλάσσιον χ,πβ.
φλόμος χϖϛ.
φύτευμα ψιβ.
φαρικὸν ϡοϛ.
φρῦνος ϡπη.

X

χημαὶ ρϛα.
χελιδόνες δμη.
χολὴ σϖδ.
χόνδρος τϛ.
χελιδόνιον τὸ μικρόν. υ.
χελιδόνιον τὸ μέγα τϛθ.
χαμαιλέων ὁ λευκός. υιε.
χαμαιλέων ὁ μέλας υιϛ.
χαμαίδρυς φιη.
χαμαιπίτυς φπα.
χαμαιπίτυς ἑτέρα φπβ.

χρυσοκόμη χλζ.
χρυσόγονον χλη.
χρυσάνθεμον χμ.
χαμαικισσὸς ψη.
χαμαιλεύκη ψθ.
χαμαιδάφνη ψλα.
χαμαισύκη ψμα.
χαμελαία ψνγ.
χαλβάνη φγ.
χαμαιάκτη ψνϛ.
χαλκὸς κεκαυμένος ωξα.
χρυσοκόλλη ωοη.
χάλκανθον ωπη.
χαλκῖτις ωπθ.

Ψ

ψευδακακία ιγ.
ψευδοκιννάμωμον ιε.
ψευδοδίκταμνος υμγ.
ψύλλιον χνβ.
ψευδοβούνιον ψα.
ψιμμύθιον ωοζ.
ψωρικὸν ωϛ.
ψύλλιον ϡξζ.
ψιμμύθιον ϡοθ.

Ω

ὠμοτάριχος σκα.
ὠόν. σμβ.
ὤκιμον τνθ.
ὠκιμοειδές. χι.
ὤχρα ωϖβ.

## Κεφάλαια τοῦ περὶ ὀβόλων λόγου.

Ἐκ τοῦ Γαληνοῦ ἐν τῷ περὶ ἁπλῶν φαρμάκων δυνάμεως.

Ὁ δὲ ἀναζαρβεὺς Διοσκορίδης ἐν η΄ βιβλίοις τὴν χρήσιμον ἅπασαν ὕλην ἔγραψεν οὐ βοτανῶν μόνον, ἀλλὰ καὶ δένδρων. καὶ καρπῶν καὶ χυμῶν καὶ ὀπῶν. ἔτι τε τῶν μεταλλευομένων ἁπάντων, καὶ τῶν ἐν τοῖς ζώοις μορίων μνημονεύσας. καί μοι δοκεῖ τελεωτάτην πάντων οὗτος τὴν περὶ τῆς ὕλης τῶν φαρμάκων πραγματείαν ποιήσασθαι. πολλὰ μὲν γὰρ τοῖς ἔμπροσθεν ὑπὲρ αὐτῶν γέγραπται καλῶς, ἀλλ' ὑπὲρ ἁπάντων οὕτως οὐδενί.

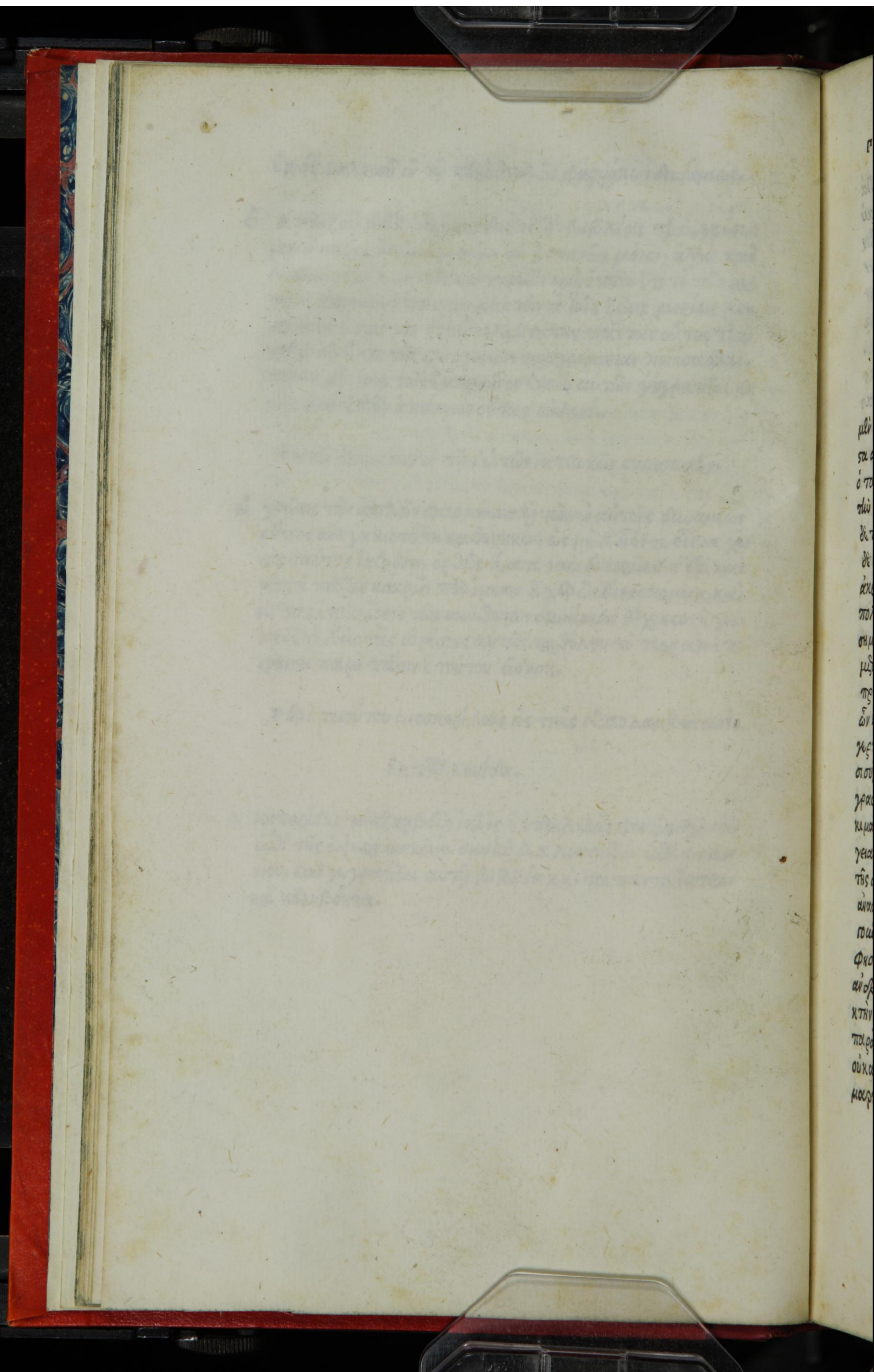
Ἐκ τοῦ Ὀρειβασίου ἐν τῷ ιε΄. τῶν ἰατρικῶν συναγωγῶν.

Ἡ γνῶσις τῶν ἁπλῶν φαρμάκων καὶ τῶν ἐν αὐτοῖς δυνάμεων οὕτως ἀναγκαιοτάτη καθέστηκεν, ὡς μηδ' οἷόν τε εἶναι χωρὶς ταύτης ἰατρεύειν ὀρθῶς. ἅμα τε γὰρ εὐπορίας τ' ἐστὶ καὶ κατὰ πᾶσαν καιρῶν περίστασιν εὐχερῶς εὑρισκόμενα, καὶ εἰς τὰς ἐπικρίσεις τῶν συνθέτων δυνάμεων εὔχρηστον ἡ γνῶσις. ἔτι δ' εἰς τὰς εὑρέσεις αὐτῶν. καθόλου τὸ τεχνικὸν ἐπιφαίνει παρὰ πᾶσιν ἡ τούτου εἴδησις.

Περὶ τοιούτου Διοσκορίδους ὥς τινες ὑπολαμβάνουσι.

Ἐκ τοῦ Σουίδα.

Διοσκορίδης ἀναζαρβεὺς ἰατρὸς ὁ ἐπικληθεὶς Φακᾶς. διὰ τοὺς ἐπὶ τῆς ὄψεως φακούς. συνῆν δὲ Κλεοπάτρᾳ ἐπὶ Ἀντωνίου. καὶ γέγραπται αὐτῷ βιβλία κκ΄. τὰ πάντα ἰατρικὰ περιβόητα.



ΠΕΔΑΚΙΟΥ ΔΙΟΣΚΟΡΙΔΟΥ ἈΝΑΖΑΡΒΕΩΣ ΠΕΡΙ ὝΛΗΣ ἸΑΤΡΙΚῆΣ ΒΙΒΛΙΟΝ ΠΡΩ͂ΤΟΝ.

π

Ολλῶν οὐ μόνον ἀρχαίων, ἀλλὰ καὶ νέων συνταξαμένων περὶ τῆς τῶν φαρμάκων σκευασίας τε καὶ δυνάμεως, καὶ δοκιμασίας φίλτατε Ἄρειε, πειράσομαί σοι παραστῆσαι μὴ κενήν, μηδὲ ἄλογον ὁρμὴν ἐσχηκέναι πρὸς τήνδε τὴν πραγματείαν. διὰ τὸ τοὺς μὲν αὐτῶν, μὴ τετελειωκέναι, τοὺς δὲ ἐκ ἱστορίας τὰ πλεῖστα ἀναγράψαι. Ἰόλας μὲν γὰρ ὁ βιθυνὸς καὶ Ἡρακλείδης ὁ ταραντῖνος, ἐπ' ὀλίγον ἥψαντο τῆς αὐτῆς πραγματείας. τὴν βοτανικὴν παντελῶς ἐάσαντες παράδοσιν. οὐ μὴν οὐδὲ τῶν μεταλλικῶν, ἢ ἀρωμάτων ἐμνημόνευσαν. Κρατεύας δὲ ὁ ῥιζοτόμος, καὶ Ἀνδρέας ὁ ἰατρός. οὗτοι γὰρ δοκοῦσι ἀκριβέστερον τῶν λοιπῶν περὶ τοῦτο τὸ μέρος ἀνεστράφθαι, πολλὰς ῥίζας εὐχρηστοτάτας, καί τινας βοτάνας ἀπαρασημειώτους εἴασαν. πλὴν τοῖς μὲν ἀρχαίοις μαρτυρητέον μετὰ τῆς ὀλιγότητος τῶν παραδοθέντων, καὶ τὴν ἀκρίβειαν προσπαραλαβοῦσι. τοῖς μέντοι νέοις οὐ συγκαταθετέον. ὧν εἰσι Βάσσος ὁ τυλαῖος, καὶ Νικήρατος, καὶ Πετρώνιος Νίγερ τε καὶ Διόδοτος, ἀσκληπιάδαι πάντες. οἳ τὴν μὲν πᾶσι σύμφυλον καὶ γνώριμον ὕλην, ἠξίωσαν ἐπὶ πόσον ἀναγραφῆς ἀκριβοῦς. τὰς δὲ τῶν φαρμάκων δυνάμεις καὶ δοκιμασίας ἐξ ἐπιδρομῆς παρέδοσαν. οὐ τῇ πείρᾳ τὴν ἐνέργειαν δυνάμεις καὶ δοκιμασίας αὐτῶν κανονίζοντες. τῇ δὲ τῆς αἰτίας κενοφωνίᾳ, εἰς ὄγκον διαφορᾶς ἕκαστον αὐτῶν ἀναφέροντες μετὰ τὸ καὶ ἄλλα ἀντ' ἄλλων ἀναγράφειν. ὁ γοῦν διαπρεπὴς δοκῶν εἶναι ἐν αὐτοῖς Νίγερ, τὸ εὐφόρβιον φησὶν ὀπὸν εἶναι χαμελαίας, γεννωμένης ἐν ἰταλίᾳ. καὶ τὸ ἀνδρόσαιμον, ταυτὸν ὑπάρχειν ὑπερικῷ. ἀλόην δὲ ὀρυκτὴν ἐν ἰουδαίᾳ γεννᾶσθαι. καὶ ἄλλα τούτοις ὅμοια πλεῖστα παρὰ τὴν ἀλήθειαν ἐκτίθεται ψευδῶς. ἅπερ εἰσὶ τεκμήρια οὐκ αὐτοψίας, ἀλλὰ τῆς ἐκ παρακουσμάτων ἱστορίας. ἥμαρτον δὲ καὶ περὶ τὴν τάξιν. οἱ μὲν ἀσυμφύλους δυνά-

μεις συγκρούσαντες, οἱ δὲ κατὰ στοιχεῖα ἀναγράψαντες. διέ
ζευξαν τῆς ὁμογενείας, τά τε γένη καὶ τὰς ἐνεργείας αὐ
τῶν, ὡς διὰ τοῦτο ἀσυμνημόνευτοι γίνεσθαι. ἡμεῖς δ' ὡς ἔστιν
εἰπεῖν ἐκ πρώτης ἡλικίας, ἄληκτόν τινα ἔχοντες ἐπιθυ-
μίαν περὶ τὴν ἐπίγνωσιν τῆς ὕλης, καὶ πολλὴν γῆν ἐπελ-
θόντες. οἶσθα γὰρ ἡμῖν στρατιωτικὸν τὸν βίον, συναγηώχα
μεν τὴν πραγματείαν ἐν ἓξ βιβλίοις σοῦ προτρεψαμένου.
ᾧ καὶ τὴν σύνταξιν ἀνατίθεμεν. εὐχάριστον ἐκπληροῦντες
πάθος. δι' ἣν ἔχεις πρὸς ἡμᾶς διάθεσιν. φύσει μὲν πρὸς πάν
τας τοὺς ἀπὸ παιδείας ἀναγομένους οἰκειούμενος. μάλιστα
δὲ πρὸς τοὺς ὁμοτέχνους. ἰδιαίτερον δὲ πρὸς ἡμᾶς. δεῖγμα
δὲ οὐ σμικρὸν τῆς ἐν σοὶ καλοκαγαθίας, καὶ ἡ τοῦ κρατίστου
Λικινίου Βάσου πρὸς σὲ διάθεσις. ἣν ἔγνωμεν συνδιάγον-
τες ὑμῖν. ἀξιοζήλωτον τὸ παρ' ἀμφοτέρων ὑμῶν πρὸς ἀλ
λήλους εὔνουν ὁρῶντες. παρακαλοῦμεν δέ σε καὶ τοὺς ἐντευ
ξομένους τοῖς ὑπομνήμασι, μὴ τὴν ἐν λόγοις ἡμῶν δύνα-
μιν σκοπεῖν. ἀλλὰ τὴν ἐν τοῖς πράγμασι μετ' ἐμπειρίας ἐπι
μέλειαν. μετὰ γὰρ πλείστης ἀκριβείας τὰ μὲν πλεῖστα δι'
αὐτοψίας γνόντες, τὰ δὲ ἐξ ἱστορίας συμφώνου τοῖς πᾶσι
καὶ ἀνακρίσεως τῶν παρ' ἑκάστοις ἐπιχωρίων ἀκριβώσαν-
τες, πειρασόμεθα καὶ τῇ τάξει διαφόρῳ χρήσασθαι. καὶ τὰ
γένη καὶ τὰς δυνάμεις ἑκάστου αὐτῶν ἀναγράψασθαι. ὅτι
γε μὴν ἀναγκαῖος ὑπάρχει ὁ περὶ φαρμάκων λόγος, παν-
τί που δῆλον συνεζευγμένος ὅλῃ τῇ τέχνῃ. καὶ τὴν ἀπ' αὐ
τοῦ συμμαχίαν ἀήττητον παντὶ μέρει παρεχόμενος. καὶ διό
τι δύναται αὔξεσθαι κατά τε τὰς σκευασίας καὶ τὰς μί
ξεις καὶ τοὺς ἐπὶ τῶν παθῶν πειρασμούς. πλεῖστα συμβαλ
λομένης τῆς περὶ ἕκαστον τῶν φαρμάκων γνώσεως. προσπα
ραληψόμεθα δὲ καὶ τὴν συνήθη καὶ σύμφυλλον ὕλην, ἵνα
ἡ γραφὴ γένηται τελεία. πρὸ πάντων οὖν φροντίζειν τῆς
ἀποθέσεως καὶ συλλογῆς ἑκάστου κατὰ τοὺς οἰκείους καιροὺς
προσήκει. παρά τε δὴ τούτους ἢ ἐνεργεῖ, ἢ ἐξίτηλα γίνεται
τὰ φάρμακα. αἰθρίου τε ὄντος τοῦ καταστήματος συλλέγειν
δεῖ. μεγάλη γὰρ καὶ ἐν τούτῳ ὑπάρχει διαφορὰ, τοῦ αὐχμῶν
ἢ ὄμβρων γινομένων τὴν συλλογὴν ποιεῖσθαι. ὥσπερ καὶ τὸ

ὀρεινοὺς καὶ ὑψηλοὺς καὶ διαπνεομένους καὶ ψυχροὺς καὶ ἀνύδρους εἶναι τοὺς τόπους· ἰσχυρότεραι γάρ εἰσιν αἱ δυνάμεις. αἱ δὲ ἐν πεδινοῖς καὶ καθύγροις καὶ κατασκίοις καὶ μὴ διαπνεομένοις, ἀτονώτεραι κατὰ τὸ πλεῖστον. καὶ μᾶλλον αἱ μὴ καθ' ὥραν εὐκαίρως συλλεγεῖσαι, ἢ διὰ ἀσθένειαν ἐφθινηκυῖαι. οὐκ ἀγνοητέον μέντοι ὅτι πολλάκις ταῦτα παρὰ τὴν ἰδιότητα τῆς χώρας, καὶ παρὰ τὴν σύγκρασιν τοῦ ἔτους, τάχιον ἢ βράδιον ἀκμάζει. ἔνια δὲ καὶ παρὰ τὴν ἑαυτῶν ἰδιότητα, ἐν χειμῶνι ἄνθη τε καὶ φύλλα φορεῖ. τινὰ δὲ καὶ δὶς τοῦ ἔτους ἀνθοφορεῖ. τὸν δὲ βουλόμενον ἐν τούτοις ἐμπειρίαν ἔχειν, δεῖ κατά γε τὴν ἀρτιφυῆ βλάστησιν ἐκ τῆς γῆς, ἀκμάζουσι καὶ παρακμάζουσι παρατυγχάνειν. οὔτε γὰρ ὅτι βλάστῃ ἐντετυχηκὼς μόνον, δύναται τὸ ἀκμάζον γνωρίσαι, οὔτε ὁ ἑωρακὼς τὰ ἀκμάζοντα, τὸ ἀρτιφυὲς ἐπιγνῶναι. παρὰ γὰρ τοὺς μετασχηματισμοὺς τῶν φύλλων, καὶ τὰ μεγέθη τῶν καυλῶν καὶ ἀνθῶν καὶ καρπῶν, καί τινας ἄλλας ἰδιότητας, μεγάλη πλάνη γίνεται ἐπ' ἐνίοις τοῖς μὴ οὔπω τὴν θέαν ποιησαμένοις. παρὰ ταύτην γοῦν τὴν αἰτίαν, τινὲς τῶν ἀναγραψάντων ἐπλανήθησαν. εἰπόντες τινὰ μήτε ἄνθη μήτε καυλὸν μήτε καρπὸν φορεῖν. καθάπερ ἐπὶ τῆς ἀγρώστεως καὶ βηχίου καὶ πενταφύλλου. ὁ δὲ πολλάκις ἐντετυχηκὼς αὐτοῖς καὶ ἐν πολλοῖς τόποις, μάλιστα τὴν ἐπίγνωσιν ποιήσεται. χρὴ μέντοι εἰδέναι ὅτι μόνα τῶν βοτανικῶν φαρμάκων ἐπὶ πολλὰ ἔτη διαμένει, οἷ ἑλλέβορος ὁ λευκὸς καὶ μέλας. τὰ δὲ λοιπὰ μέχρι τριετίας ἐπὶ τὸ πλεῖστον εἰσὶν εὔχρηστα. ἃ μὲν οὖν θαμνώδη ἐστί, στοιχάς. χαμαίδρυς. πόλιον. ἀβρότονον. σέριφον. ἀψίνθιον. ὕσσωπον, καὶ τὰ ὅμοια τούτοις, συλλέγειν δεῖ, ἐγκύμονα τῶν σπερμάτων. ἄνθη δὲ πρὸ τῆς ἀποπτώσεως αὐτῶν. τοὺς δὲ καρποὺς πεπείρους ὄντας. καὶ τὰ σπέρματα δὲ ἀρχόμενα ξηραίνεσθαι πρὸ τοῦ ἀπορρεῖν. χυλίζειν δὲ καὶ τὰς βοτάνας, ἀρτιβλαστῶν ὄντων τῶν καυλῶν. ὁμοίως καὶ τὰ φύλλα. ὀποὺς δὲ καὶ δάκρυα λαμβάνειν. τέμνοντας ἐν ἀκμῇ ἔτι τοὺς καυλούς. τὰς δὲ εἰς ἀπόθεσιν ῥίζας καὶ χυλίσματα καὶ φλοιοὺς ἀφαιρεῖν ἀρχο-

μένων φυλορροεῖν τῶν βοτανῶν. καὶ τὰς μὲν καθαρὰς αὐτόθι ξηραίνειν ἐν τόποις ἀνοτίστοις. τὰς δὲ μετεχούσας γῆς ἢ πηλοῦ, πλύνειν ὕδατι. ἀποτίθεσθαι δὲ καὶ ἄνθη, καὶ ὅσα εὐώδη τυγχάνει ἐν κιβωτίοις φιλλυρείνοις ἀνοτίστοις. ἔστι δὲ ὅτε καὶ ἐν χάρταις ἢ φύλλοις χρησίμως περιειλεῖται πρὸς διαμονὴν τῶν σπερμάτων. πρὸς δὲ τὰ ὑγρὰ φάρμακα ἁρμόσει ὕλη πᾶσα ἡ πυκνὴ ἐξ ἀργύρου ἢ ὑέλου ἢ κέρατος γεγενημένη. καὶ ὀστρακίνη δὲ ἡ μὴ ἀραιὰ εὔθετος. ξυλίνων δὲ ὅσα ἐκ πύξου κατασκευάζεται. τὰ δὲ χαλκᾶ ἀγγεῖα, ἁρμόσει πρὸς τὰ ὀφθαλμικὰ φάρμακα καὶ ὑγρὰ, καὶ ὅσα δι' ὄξους ἢ πίσσης ὑγρᾶς ἢ κεδρίας κατασκευάζεται. στέατα δὲ καὶ μυελοὺς, ἐν κασσιτερίνοις ἀγγείοις ἀποτίθεσθαι δεῖ.

## Περὶ ἴριδος. κεφ. α΄.

Ἶρις ἰλλυρικὴ φύλλα φέρει ὅμοια ξιφίῳ. μείζονα δὲ καὶ πλατύτερα καὶ λιπαρώτερα. ἄνθη δὲ ἐπὶ καυλῷ παράλληλα. ἐπικαμπῆ. ποικίλα. ἢ γὰρ λευκὰ ἢ ὠχρὰ ἢ μέλανα ἢ πορφυρᾶ ἢ κυανίζοντα ὁρᾶται. ὅθεν διὰ τὴν ποικιλίαν ἀπεικάσθη ἴριδι τῇ οὐρανίᾳ. ῥίζαι ὕπεισι γονατώδεις. στερεαί. εὐώδεις. ἃς δεῖ μετὰ τὴν τομὴν ξηράναντα ἐν σκιᾷ καὶ διείραντα, λίνῳ ἀποτίθεσθαι. ἔστι δὲ βελτίων ἡ ἰλλυρικὴ καὶ μακεδονικὴ καὶ ἐν ταύταις ἀρίστη ἡ πυκνόρριζος καὶ ὑποκόλοβος, καὶ δύσθραυστος. καὶ τῇ χρόᾳ ὑπόκιρρος. καὶ σφόδρα εὐώδης καὶ τῇ γεύσει πυρωτέρα. τήν τε ὀσμὴν εἰλικρινής. καὶ μὴ νοτίζουσα. πταρμούς τε ἐν τῷ κόπτεσθαι κινοῦσα ἡ λιβυκή. λευκὴ κατὰ χρόαν. πικρὰ πρὸς γεῦσιν δευτερεύουσα τῇ δυνάμει. παλαιούμεναι δὲ τερηδονίζονται. εὐωδέστεραι μέντοι γε γίνονται. δύναμιν δὲ ἔχουσι πᾶσαι θερμαντικὴν. λεπτυντικήν. ἁρμόζουσαι πρὸς βῆχας, καὶ τὰ δυσανάγωγα ὑγρὰ λεπτοποιοῦσαι. καθαίρουσι δὲ χολὰς ποτιζόμεναι μεθ' ὑδρομέλιτος, ὁλκῆς < ζ΄. εἰσὶ δὲ καὶ ὑπνοποιοί. καὶ δακρυοποιοί. καὶ στρόφους ἰῶνται. μετ' ὄξους δὲ πινόμεναι θηριοδήκτοις ἀρήγουσι. καὶ σπληνικοῖς. καὶ σπωμένοις. καὶ περιψυχομένοις ἢ ῥιγοῦσι καὶ τοῖς γόνον προϊεμένοις. σὺν οἴνῳ δὲ ποθεῖσαι, ἄγουσιν ἔμμη-

να. καὶ τὸ ἀπόζεμα δὲ αὐτῶν, πρὸς γυναικείας πυρίας εὔθετον. μαλάσσον τε τοὺς τόπους καὶ ἀναστομοῦν. ἰσχιάδας τε εἰς ἔγκλυσμα. καὶ συρίγγων καὶ κόλπων σαρκωτικά. προστεθεῖσαι δὲ ὡς κολλύριον μετὰ μέλιτος, ἔμβρυα κατασπῶσι. μαλάσσουσι δὲ χοιράδας καὶ σκιῤῥώματα παλαιὰ ἑφθαὶ καταπλασθεῖσαι. ξηραὶ δὲ πληροῦσιν ἕλκη. καὶ ἀνακαθαίρουσι μετὰ μέλιτος. καὶ τὰ ἐψιλωμένα τῶν ὀστέων σαρκοῦσιν. ὠφελοῦσι δὲ καὶ κεφαλαλγίας, σὺν ὄξει καὶ ῥοδίνῳ καταπλασθεῖσαι. φακούς τε καὶ ἐφήλεις ἀποκαθαίρουσι, σὺν ἐλλεβόρῳ λευκῷ διπλασίονι καὶ μέλιτι καταπλασθεῖσαι. μίγνυνται δὲ καὶ πεσσοῖς καὶ μαλάγμασι καὶ ἀκόποις. καὶ καθόλου εἰσὶ πολύχρηστοι.

## Περὶ Ἀκόρου. Κεφ. β΄.

Ἄκορον τὰ μὲν φύλλα ἔχει ἐμφερῆ ἴρεως. στενότερα δὲ καὶ τὰς ῥίζας οὐκ ἀνομοίους. ἐμπεπλεγμένας δὲ καὶ οὐκ εἰς εὐθὺ πεφυκυίας. ἀλλὰ πλαγίας καὶ ἐξ ἐπιπολῆς. γόνασι διειλημμένας. ὑπολεύκους. δριμείας τῇ γεύσει. καὶ τῇ ὀσμῇ οὐκ ἀηδεῖς. διαφέρει δὲ τὸ πυκνὸν καὶ λευκόν. ἄβρωτόν τε καὶ πλῆρες. εὐῶδες. τοῦτο δ' ἐστὶ τὸ ἐν Κολχίδι καὶ τὸ ἐκ τῆς Γαλατίας ἀσπλήνιον λεγόμενον. δύναμιν δὲ ἔχει ἡ ῥίζα θερμαντικήν. πινόμενον δὲ τὸ ἀφέψημα αὐτοῦ οὖρα κινεῖ. ἁρμόζον πρὸς πλευρᾶς πόνον καὶ θώρακος καὶ ἥπατος. στρόφους. ῥήγματα. σπάσματα. σπλῆνας τήκει. ὠφελεῖ καὶ στραγγουριῶντας. θηριοδήκτους. καὶ εἰς ἐγκάθισμα ὡς ἶρις πρὸς τὰ γυναικεῖα. ὁ δὲ χυλὸς τῆς ῥίζης ἀποκαθαίρει τὰ ἐπισκοτοῦντα ταῖς κόραις. μίγνυται δὲ καὶ τοῖς ἀντιδότοις ἡ ῥίζα χρησίμως.

## Περὶ Μήου. Κεφ. γ΄.

Μῆον τὸ καλούμενον ἀθαμαντικὸν, γεννᾶται πλεῖστον ἐν Μακεδονίᾳ καὶ Ἱσπανίᾳ. ὅμοιον καυλῷ καὶ τοῖς φύλλοις ἀνήθῳ. παχύτερον δὲ τοῦ ἀνήθου. δίπηχύ που ἀναβαῖνον. ταῖς ῥίζαις ὑπεσπαρμένον λεπταῖς πλαγίως. καὶ εὐθείαις. μακραῖς εὐώδεσι. θερμαινούσαις τὴν γλῶτταν. αἱ τινὲς ἀπο-

ζεσθεῖσαι μεθ' ὕδατος ἢ καὶ λεῖαι δίχα ἑψήσεως ποθεῖσαι, τὰ στεγνὰ περὶ κύστιν καὶ νεφροὺς πάθη παρηγοροῦσι. καὶ δυσουρίαις ἁρμόζουσι. στομάχου τε ἐμπνευματώσεσι καὶ στρόφοις ὑστερικαῖς τε διαθέσεσι. ἄρθρων πόνοις. θώρακι ῥευματιζομένῳ σὺν μέλιτι λεῖαι ἀντὶ ἐκλεικτοῦ βοηθοῦσιν. αἷμά τε ἄγουσι δι' ἐμμηνίων ἀποζεσθεῖσαι εἰς ἐγκάθισμα. παιδίων δὲ καταπλασθεῖσαι ἐφηβαίοις οὖρα ἄγουσιν. ἔστι δὲ καὶ κεφαλαλγὲς πλεῖον ἢ δεῖ πινόμενον.

## Περὶ κυπέρου. Κεφ. δ'.

Κύπερος. οἱ δὲ ἐρυσίσκηπτρον ὡς τὴν ἀσπάλαθον καλοῦσι. φύλλα δὲ ἔχει ὅμοια πράσῳ. μακρότερα δὲ καὶ ἰσχνότερα. καυλὸν δὲ πυχναῖον, ἢ καὶ μείζονα. γωνιώδη, ὅμοιον σχίνῳ, οὗ κατὰ κορυφὴν φυλλαρίων ἐστὶν ἔκφυσις μικρῶν καὶ σπέρματος. ῥίζαι δ' ὕπεισιν ὧν καὶ ἡ χρῆσις ὡς πρὸς ἐπιμήκεις ὡς ἐλαῖαι συναφεῖς ἑαυταῖς. ἢ στρογγύλαι. μέλαιναι. εὐώδεις. ἔμπικροι. φύεται δὲ ἐν τόποις ὀμβρασίμοις καὶ τελματώδεσιν. ἀρίστη δὲ ἐστὶν ἡ βαρυτάτη καὶ πυκνὴ καὶ ἁδρὰ. δύσθραυστος. τραχεῖα. εὐώδης μετά τινος δριμύτητος. τοιαύτη δὲ ἐστὶν, ἡ κιλίκις, καὶ ἡ συριακή, καὶ ἡ ἀπὸ τῶν κυκλάδων νήσων. δύναμις δὲ ἐστιν αὐτῇ θερμαντική. διουρητική. λιθιῶσι καὶ ὑδρωπικοῖς πινομένη βοηθεῖ. καὶ σκορπιοδήκτοις. καὶ ταῖς περὶ μήτραν δὲ καταψύξεσι καὶ μύσεσι πυελωμένη, ἁρμόζει. ἄγουσα ἔμμηνα. ποιεῖ δὲ καὶ τοῖς ἐν στόματι ἕλκεσι καὶ νεμομένοις ξηρὰ λεῖα. μίγνυται καὶ μαλάγμασι θερμαντικοῖς. καὶ εἰς τὰ στύμματα τῶν μύρων εὐθετεῖ. ἱστορεῖται δὲ καὶ ἕτερον εἶδος κυπέρου ἐν ἰνδίᾳ γεννώμενον. προσεοικὸς ζιγγιβέρι. ὃ διαμασηθὲν κροκῶδες πικρὸν εὑρίσκεται. καταχρισθὲν δὲ, παραχρῆμα ψιλοῖ τὰς τρίχας.

## Περὶ καρδαμώμου. Κεφ. έ.

Καρδάμωμον ἄριστον τὸ ἐκ τῆς κομαγηνῆς καὶ ἀρμενίας καὶ βοσπόρου κομιζόμενον. γεννᾶται δὲ καὶ ἐν ἰνδίᾳ καὶ ἀραβίᾳ. ἐκλέγου δὲ τὸ δύσθραυστον. πλῆρες. μεμυκός. τὸ γὰρ μὴ τοιοῦτον, ἔξωρόν ἐστι, καὶ τὸ τῇ ὀσμῇ πληκτικόν. γεύσει

δὲ δριμὺ καὶ ὑπόπικρον· δύναμιν δὲ ἔχει θερμαντικήν. ποιεῖ δὲ μεθ' ὕδατος πινόμενον πρὸς ἐπιληπτικούς, βήττοντας, ἰσχιαδικούς, καὶ παράλυσιν, ῥήγματα σπάσματα, στρόφους, καὶ ἕλμινθα πλατεῖαν ἐκβάλλει. μετ' οἴνου δὲ πινόμενον, νεφρικοῖς, δυσουροῦσι, σκορπιοπλήκτοις, καὶ πᾶσι θηριοβόλοις ἁρμόζει· μετὰ δάφνης ῥίζης φλοιοῦ ποθὲν ὅσον < λίθους θρύπτει· φθείρει καὶ ἔμβρυα ὑποθυμιώμενον. καὶ ψώρας ἐξαίρει σὺν ὄξει καταχριόμενον· μίγνυται δὲ καὶ εἰς τὰς τῶν μύρων συνθέσεις.

## Περὶ Νάρδου. Κεφ. ϛ'.

Νάρδου ἐστὶ δύο γένη· ἡ μὲν, γάρ τις καλεῖται ἰνδική· ἡ δὲ, συριακή· οὐχ ὅτι ἐν συρίᾳ εὑρίσκεται· ἀλλ' ὅτι τοῦ ὄρους ἐν ᾧ γεννᾶται, τὸ μὲν πρὸς συρίαν τέτραπται· τὸ δὲ πρὸς ἰνδούς· καὶ τῆς λεγομένης συριακῆς, ἐστὶ βελτίων ἡ πρόσφατος καὶ κούφη· πολύκομος· ξανθὴ τὴν χρόαν· εὐώδης ἄγαν· καὶ μετὰ τοῦ κυπερίζειν ἐν τῇ ὀσμῇ, μικρὸν ἔχουσα τὸν στάχυν· πικρὰ τὴν γεῦσιν· καὶ γλώσσης ἀναξηραντική· ἐπιμένουσά τε τῇ εὐωδίᾳ ἐφ' ἱκανόν· τῆς δὲ ἰνδικῆς ἡ μέν τις λέγεται γαγγῖτις· ἀπό τινος ποταμοῦ παραρρέοντος τοῦ ὄρους γάγγου καλουμένου, παρ' ᾧ φύεται· ἀσθενεστέρα κατὰ δύναμιν οὖσα διὰ τὸ ἐφύδατος τῶν τόπων εἶναι καὶ ἐπιμηκεστέρα· πλείονάς τε ἔχουσα τοὺς στάχυς· ἀπὸ τῆς αὐτῆς ῥίζης καὶ πολυκόμους καὶ περιπεπλεγμένους· βρομώδεις κατὰ τὴν ὀσμήν· ἡ δὲ ὀρεινοτέρα εὐωδεστέρα· κολοβόσταχυς κυπερίζουσα κατὰ τὴν εὐωδίαν· ἔχουσά τε καὶ ἄλλα ἐν αὐτῇ, ὅσα περ καὶ ἡ συριακὴ λεγομένη· καλεῖται δέ τις καὶ σαμφαρῖτις, σφόδρα κολοβή· ἀπὸ χωρίου ὠνομασμένη· μεγαλόσταχυς· λευκότερον καυλὸν, ἔσθ' ὅτε μέσον ἔχουσα· ὑπερτραγίζοντα τῇ ὀσμῇ, ἣν δεῖ ἀπεκλέγεσθαι· πιπράσκεται δὲ καὶ ἀποβεβρεγμένη· ὅπερ γινώσκεται ἐκ τοῦ λευκὸν εἶναι τὸν στάχυν καὶ αὐχμηρόν· καὶ μὴ ἔχειν τὸν χνοῦν· δολίζουσι δὲ αὐτὴν ἐμφυσῶντες στίμμι μεθ' ὕδατος ἢ οἴνου φοινικίου, πρὸς τὸ συμπιλοῦσθαι αὐτὴν, καὶ βαρυτέραν γίνεσθαι· ἐπὶ δὲ τῆς χρείας ἀφαιρεῖν δεῖ, εἰ προσείη ταῖς ῥίζαις πηλός· καὶ σήθειν χωρίζοντα τὸν κονιορτόν· εὐχρηστοῦντα εἰς

χειρόνι πλέον. δύναμιν δὲ ἔχουσι θερμαντικήν. ξηραντικήν. οὐρητικήν. ὅθεν κοιλίαν τε ἱστᾶσι πινόμεναι, καὶ τὰς ἐκ μήτρας ῥύσεις προστιθέμεναι, καὶ ἰχῶρας στέλλουσι. βοηθοῦσι δὲ καὶ ναυτίαις, σὺν ψυχρῷ ὕδατι πινόμεναι. καὶ καρδιωγμοῖς. καὶ ἐμπνευματουμένοις. ἡπατικοῖς τε καὶ ἰκτερικοῖς καὶ νεφριτικοῖς. ἀφεψηθεῖσαι δὲ ὕδατι. καὶ πυελαθεῖσαι, εἰς ἐγκάθισμα φλεγμονὰς μήτρας ἰῶνται. ποιοῦσι καὶ πρὸς τὰς ἐν ὀφθαλμοῖς μυδήσεις τῶν βλεφάρων. στύφουσαι καὶ δασύνουσαι τὰς βλεφαρίδας. καὶ ξηροῖς τε σώμασι διάπασμα. μίγνυνται δὲ καὶ ἀντιδότοις. ἀποτίθενται δὲ εἰς τὰ ὀφθαλμικά. ἐν ἀγγείῳ καινῷ ἀκονίτῳ. λειοτριβηθεῖσαι σὺν οἴνῳ καὶ ἀναπλασθεῖσαι.

## Περὶ κελτικῆς νάρδου. κεφ. ζ΄.

Ἡ δὲ κελτικὴ νάρδος, γεννᾶται μὲν ἐν τοῖς κατὰ λιγυρίαν ἄλπεσιν ἐπιχωρίως ὀνομαζομένη ἀλιούγγια. γεννᾶται δὲ ἐν τῇ ἰστρίᾳ. ἔστι δὲ θαμνίσκος μικρὸς σὺν ταῖς ῥίζαις, εἰς δέσμας ἀναλαμβανόμενος χειροπληθεῖς. ἔχει δὲ φύλλα ὑπομήκη. ὑπόξανθα. ἄνθος μήλινον. μόνων δὲ τῶν καυλῶν ἐστὶ καὶ τῶν ῥιζῶν ἡ χρῆσις καὶ ἡ εὐωδία. ὅθεν δεῖ πρὸ μιᾶς ἡμέρας καταρράναντας ὕδατι τὰς δέσμας καὶ χωρίζοντας τὸ γεῶδες, τιθέναι ἐπ' ἐδάφους νοτεροῦ, προϋποκειμένου χάρτου, τῇ δὲ ὑστεραίᾳ καθαίρειν. οὐ γὰρ συναποκαθαίρεται τῷ ἀχυρώδει καὶ ἀλλοτρίῳ τὸ εὔχρηστον, διὰ τὴν ἐκ τῆς ἰκμάδος εὐτονίαν. δολίζεται δὲ συναποτιλλομένης αὐτῇ, πόας ἐμφεροῦς. ἣν διὰ τὸ περὶ τὴν ὀσμὴν βρομῶδες, τράγον καλοῦσιν. εὐχερὴς δὲ ἡ ἐπίγνωσις. ἄκαυλος γάρ ἐστιν ἡ πόα καὶ λευκοτέρα. καὶ ἧττον ἐπιμήκη τὰ φύλλα ἔχει, οὐ δὲ τὴν ῥίζαν πικρὰν ἢ ἀρωματίζουσαν ὥσπερ ἡ τῆς ἀληθινῆς ἔχει. ἀποκρίνας οὖν τὰ καυλία καὶ τὰς ῥίζας, τὰ δὲ φύλλα ῥίψας, εἰ βούλει δ' ἀποτίθεσθαι, ἀναλαμβάνων λεῖα οἴνῳ. καὶ τροχίσκους ἀναπλάσας φύλαττε ἐν ὀστρακίνῳ ἀγγείῳ καινῷ, πωμάζων ἐπιμελῶς. ἀρίστη δέ ἐστιν ἡ πρόσφατος καὶ εὐώδης. πολύρριζος. οὐκ εὔθρυπτος. πλήρης. δύναται δὲ ὅσα καὶ ἡ συριακή. διουρητικωτέρα τε καὶ εὐστομαχωτέρα. ἐν

φελεῖ δὲ καὶ τὰς περὶ μήτραν φλεγμονάς. καὶ ἰκτερικοὺς. καὶ πνευματώσεις στομάχου, μετὰ ἀφεψήματος ἀψινθίου πινομένη. ὁμοίως καὶ σπλῆνα. καὶ τὰ περὶ τὴν κύστιν καὶ νεφρούς. καὶ πρὸς τὰ ἰοβόλων δήγματα σὺν οἴνῳ. καὶ εἰς τὰ μαλάγματα μίγνυται καὶ ποτίσματα. καὶ χρίσματα θερμαντικά.

Περὶ ὀρεινῆς νάρδου. Κεφ. η'.

Ἡ δὲ ὀρεινὴ νάρδος, καλουμένη δὲ ὑπό τινων καὶ θυλακῖτις καὶ νίεις, γεννᾶται ἐν κιλικίᾳ καὶ συρίᾳ. φύλλα καὶ καυλοὺς ὅμοια ἠρυγγίῳ ἔχουσα, μικρότερα μὲν, οὐ μὴν τραχέα καὶ ἀκανθώδη. ῥίζαι δὲ ὕπεισι μέλαιναι εὐώδεις δύο. ἢ καὶ πλείους. ὥς περ ἀσφοδέλου. ἰσχνότεραι καὶ μικρότεραι πολλῷ. οὔτε δὲ καυλὸν, οὔτε καρπὸν, οὔτε ἄνθος φέρει. ποιεῖ δὲ ἡ ῥίζα πρὸς ὅσα καὶ ἡ κελτικὴ νάρδος.

Περὶ Ἀσάρου. Κεφ. θ'.

Ἄσαρον. οἱ δὲ, νάρδον ἀγρίαν καλοῦσι. φύλλα ἔχει κισσῷ ὅμοια. πυκνότερα δὲ πολλῷ καὶ στρογγυλώτερα. ἄνθη μεταξὺ τῶν φύλλων πρὸς τῇ ῥίζῃ, πορφυρᾶ. εὐώδη. ὑοσκυάμῳ κυτίνῳ ἐμφερές. ἐφ' ᾧ τὸ σπέρμα ἐοικὸς γιγάρτῳ. ῥίζαι ὕπεισι πολλαί. γονατώδεις. λεπταί. πλάγιαι. ὅμοιαι ἀγρώστει. ἰσχνότεραι μέν τοι πολλῷ καὶ εὐώδεις θερμαίνουσαι καὶ δάκνουσαι λίαν τὴν γλῶσσαν. δύναμις δὲ αὐτῶν διουρητικὴ θερμαντική. ἁρμόζουσα ὑδρωπικοῖς. ἰσχιαδικοῖς χρονίοις. ἄγουσι δὲ καὶ ἔμμηνα μετὰ μελικράτου ποθεῖσαι αἱ ῥίζαι πλῆθος <ϛ'. καθαίρουσιν ὡς ἐλλέβορος λευκός. μίγνυται δὲ καὶ μύροις. φύεται ἐν ὑποσκίοις ὄρεσι. πλεῖστα δὲ ἐν πόντῳ καὶ φρυγίᾳ καὶ ἰλλυρίδι. καὶ ἰουστίνῃ τῆς ἰταλίας.

Περὶ Φοῦ. Κεφ. ι'.

Φοῦ. οἱ δὲ, καὶ τοῦτο ἀγρίαν νάρδον καλοῦσι. γεννᾶται μὲν ἐν πόντῳ. φύλλα δὲ ἐλαφοβοσκῷ ἢ ἱπποσελίνῳ παραπλήσια ἔχει. καυλὸν πηχυαῖον, ἢ μείζω. λεῖον. τρυφερὸν ἐμπόρφυρον. μεσόκοιλον. διειλημμένον γόνασιν. ἄνθη πρὸς τὰ τοῦ ναρκίσσου. μείζω δὲ καὶ τρυφερώτερα. καὶ ἐν τῷ ὑπολευ-

κῳ διαπόρφυρα. ῥίζα δὲ ἡ μὲν ἀνωτέρω, περὶ δακτύλου μικροῦ τὸ πάχος. πλάγια δὲ ἐπιρρίζια ἔχει καθάπερ ἀγχῖνος ἢ μέλας ἐλλέβορος. ἀλλήλοις ἐπιπεπλεγμένα. ὑπόξανθα. εὐώδη. ναρδίζοντα τῇ ὀσμῇ, μετά τινος βαρέος βρομώδους. δύναται δὲ θερμαίνειν. οὖρα κινεῖν ξηρὰ ποτιζομένη. καὶ τὸ ἀπόζεμα δὲ αὐτῆς, τὸ αὐτὸ δύναται. ποιεῖν καὶ πρὸς πλευρᾶς πόνον. ἔμμηνά τε ἄγει καὶ ἀντιδότοις μίγνυται. δολοῦται δὲ ὀξυμυρσίνης ῥίζαις παραμιγνυμένη. εὐχερὴς δὲ ἡ ἐπίγνωσις αὐτῆς ἐστι. σκληραὶ γάρ εἰσιν αὗται καὶ δύσθραυστοι δίχα εὐωδίας.

## Περὶ Μαλαβάθρου. Κεφ. ια.

Μαλάβαθρον ἔνιοι ὑπολαμβάνουσιν εἶναι τῆς ἰνδικῆς νάρδου φύλλον πλανώμενοι ὑπὸ τῆς κατὰ τὴν ὀσμὴν ἐμφερείας. πολλὰ γάρ ἐστιν ὅμοια τῇ ὀσμῇ νάρδῳ. ὡς τὸ φοῦ ἄσαρον. νῆεις. οὐκ ἔχει δὲ οὕτως. ἴδιον γάρ ἐστι γένος φυόμενον ἐν τοῖς ἰνδικοῖς τέλμασι. φύλλον ὂν ἐπινηχόμενον τῷ ὕδατι. καθάπερ ἡ ἐπὶ τῶν τελμάτων φακῆ. ῥίζαν οὐκ ἔχον. ὅπερ συλλέγοντες, εὐθέως διαπείρουσι λίνῳ. καὶ ξηράναντες ἀποτίθενται. φασὶ δὲ καὶ τῆς θερείας ἀναξηρανθέντος τοῦ ὕδατος, καίεσθαι φρυγάνοις τὴν γῆν. μὴ γενομένου γὰρ τούτου μηκέτι φύεσθαι. ἔστι δὲ καλὸν τὸ πρόσφατον καὶ ὑπόλευκον, ἐν τῷ μελανίζειν τε ἄθραυστον καὶ ὁλόκληρον. πληκτικὸν τῇ ὀσμῇ. καὶ ἐπιδιαμένον τῇ εὐωδίᾳ. ναρδίζον δὲ τῇ γεύσει μὴ ἁλμυρίζον. τὸ δὲ ἀσθενὲς καὶ τὸ λεπτοκοπημένον, εὐρωτιῶσαν ἔχον τὴν ἀποφοράν, φαῦλον. δύναμιν δὲ ἔχει τὴν αὐτὴν τῇ νάρδῳ. ἐνεργέστερον δὲ ἐκείνης πάντα ποιεῖ. διουρητικωτέρα μέντοι καὶ εὐστομαχωτέρα ἐστὶν, ἡ τοῦ μαλαβάθρου δύναμις. καὶ πρὸς τὰς ὀφθαλμικὰς φλεγμονὰς ἁρμόζει. ἀναζεσθὲν ἐν οἴνῳ καὶ λεῖον ἐπιχριόμενον. ὑποτίθεται δὲ καὶ γλώσσῃ πρὸς εὐωδίαν στόματος καὶ ζὼ ἱματίοις τίθεται. ἄβρωτα γὰρ καὶ εὐώδη ταῦτα τηρεῖ.

## Περὶ Κασσίας. Κεφ. ιβ΄.

Κασσίας δέ ἐστι πλείονα εἴδη, περὶ τὴν ἀρωματοφόρον ἀραβίαν. ἔχει δὲ ῥάβδον παχύφλοιον. φύλλα δὲ ὥσπερ ἴρεως.

ἐκλέγου δὲ τὴν ἔγκιρρον. εὔχρουν. κοραλίζουσαν. στενὴν λίαν.
μακρὰν καὶ παχεῖαν. τοῖς συριγγίοις πλήρη δηκτικὴν ἐν
τῇ γεύσει. καὶ στύφουσαν μετὰ πολλῆς πυρώσεως. ἀρωματί-
ζουσαν. οἰνίζουσαν τῇ ὀσμῇ. ἡ δὲ τοιαύτη ὑπὸ τῶν ἐπιχω-
ρίων ἄχυ καλεῖται. δαφνῖτις δὲ προσαγορεύεται ὑπὸ τῶν
ἐν ἀλεξανδρείᾳ ἐμπόρων. πρὸ δὲ ταύτης ἐστὶν ἡ μέλαινα καὶ
ἐμπόρφυρος παχεῖα, ζίγιρ καλουμένη. ῥοδίζουσα τῇ ὀσμῇ.
μάλιστα πρὸς τὴν ἰατρικὴν χρῆσιν εὔθετος. δευτερεύει δὲ
ἡ προειρημένη. τρίτη δὲ ἐστὶν ἡ καλουμένη βλάκτος μοσυλή-
τις. αἱ δὲ λοιπαὶ εὐτελεῖς. ὡς ἡ καλουμένη ἀσυφημον. μέ-
λαινα καὶ ἀηδὴς καὶ λεπτόφλοιος. ἣ καὶ φλοιορραγής. ὡς
καὶ ἡ κιττὼ καὶ δάκαρ καλουμένη. ἔστι δέ τις καὶ ψευ-
δοκασία ἀφάτως ἐμφερής. ἥτις ἐλέγχεται τῇ γεύσει, οὐκ
οὖσα δριμεῖα. οὐδὲ ἀρωματώδης. προσεχόμενόν τε τὸν φλοιὸν
ἔχει τῇ ἐντεριώνῃ. εὑρίσκεται δὲ καὶ πλατεῖα σύριγξ. ἁ-
παλή. κούφη. εὐερνής. διαφέρουσα δὲ τῆς ἄλλης. ἀποδοκί-
μαζε δὲ τὴν ὑπόλευκον καὶ ψωρώδη. τραγίζουσαν ἐν τῇ ὀσμῇ.
καὶ τὴν μὴ ἔχουσαν δὲ τὴν σύριγγα παχεῖαν. ψωρώδη δὲ καὶ
λεπτήν. δύναμιν δὲ ἔχει θερμαντικὴν καὶ οὐρητικήν. ξη-
ραντικήν. στύφουσαν πραέως. ἁρμόζει δὲ εἰς τὰ πρὸς ὀξυδερ-
κίαν ὀφθαλμικὰ καὶ μαλάγματα. φακούς τε αἴρει μετὰ
μέλιτος καταχριομένη. καὶ ἔμμηνα ἄγει. καὶ ἐχιοδήκτοις
βοηθεῖ πινομένη. καὶ πρὸς τὰς ἐντὸς φλεγμονὰς πάσας
ποθεῖσα καὶ πρὸς νεφρούς. εἰς ἐγκαθίσματά τε καὶ ὑπο-
θυμιάματα γυναιξί. πρὸς ἀνευρυσμὸν μήτρας. διπλάσιον
δὲ αὐτῆς μιγνύμενον τοῖς φαρμάκοις, εἰ μὴ παρείη κιννα-
μώμου. τὸ αὐτὸ γὰρ δρᾷ. ἄγαν δὲ ἐστὶ πολύχρηστος.

## Περὶ κινναμώμου. κεφ. ιγ΄.

Κ ιναμώμου ἐστὶ πλείονα εἴδη, ὀνομαζόμενα ἐπιχωρείως. δια-
φέρει δὲ τὸ μόσυλον. διὰ τὸ σώσειν ποσῶς ἐμφέρειαν, πρὸς
τὴν μουσυλῖτιν καλουμένην κασίαν. καὶ τούτου πρὸς τὸ
πρόσφατον τῇ χρόᾳ μέλαν. τεφρίζον ἐν τῷ οἰνώδει. λεπτὸν
δὲ τοῖς ῥαβδίοις καὶ λεῖον, ὄζοις συνεχέσι κεχρημένον. σφό-
δρα εὐῶδες. σχεδὸν γὰρ ἡ τοῦ ἀρίστου κράσις ἐστὶ περὶ τὴν ἐν

τῇ εὐωδίᾳ ἰδιότητα. εὑρίσκεται γὰρ μετὰ τοῦ ἀρίστου καὶ
ἰδιάζοντος ἡ ὀσμὴ πηγανίζουσα ἢ καρδαμώμῳ ἐμφερής.
ἔτι καὶ δριμὺ καὶ δηκτικὸν τῇ γεύσει. καὶ ὑφαλμυρίζον
μετὰ θερμασίας, εἶτε τῇ παρατρίψει μὴ ταχέως διασωό-
μενον. καὶ ἐν τῷ θραύεσθαι χνοῶδες καὶ λεῖον ἔχον τὸ με-
ταξὺ τῶν ὄζων. δοκίμαζε δὲ ἀπὸ μιᾶς ῥίζης λαμβάνων τὸν
θαλλόν. εὐχερὴς γοῦν ἡ τοιαύτη δοκιμασία. τὰ γὰρ θραύσμα-
τα, μίγματα τυγχάνει. καὶ κατὰ τὴν πρώτην δοκιμασίαν
τὰ κρείττονα προεκπνέοντα καὶ πληροῦντα τὴν ὄσφρησιν,
ἐμποδίζει τὴν τοῦ ἥττονος ἐπίκρισιν. ἔστι δὲ καὶ ὀρεινὸν, πα-
χύ. κολοβόν. σφόδρα ὑπόκιρρον τὴν χρόαν. καὶ τρίτον πα-
ρὰ τὸ μούσυλον, μέλαν καὶ λίαν εὐῶδες. εὐερνῶδες δὲ καὶ οὐ
πολυγόνατον. τέταρτον, λευκόν. χαῦνον. ὀγκῶδες ἰδέσθαι
καὶ εὐτελές. εὔθραυστόν τε καὶ μεγάλην ἔχον ῥίζαν ὡς ἀ-
χρεῖον παραιτοῦ κασίζον. πέμπτον τῇ ὀσμῇ πληκτικόν. ὑ-
πόκιρρον δὲ καὶ προσεμφερὲς κασίᾳ πυρρᾷ. πρὸς τὴν ἀφὴν
δὲ, στερεόν. οὐ πάνυ. ἰνῶδες. παχύρριζον. τούτων δὲ τὸ πνέον
λιβανωτοῦ ἢ μυρσίνης ἢ κασίας ἢ ἀμώμου, εὐωδίας ἧττόν
ἐστιν. ἀπολέγου δὲ τὸ λευκὸν καὶ τὸ ψωρῶδες, καὶ τὸ ῥυσό-
καρφον καὶ λεῖον. καὶ τὸ ξυλῶδες. δὲ κατὰ τὴν ῥίζαν ὡς ἀ-
χρεῖον παραιτοῦ. ἔστι δέ τι καὶ ἄλλο ὅμοιον τὸ καλούμενον
ψευδοκιννάμωμον εὐτελὲς οὐκ εὔτονον τῇ ὀσμῇ. ἐκλελυμέ-
νον δὲ καὶ τῇ δυνάμει. καλεῖται δὲ καὶ ζιγγίβερ ξυλοκιννά-
μωμον ὄν. ἔχον δέ τινα ἐμφέρειαν κινναμώμῳ. ἔστι δὲ ξυλώ-
δες κιννάμωμον, ἔχον ῥάβδους μακρὰς καὶ ῥωμαλέας καὶ
τὴν εὐωδίαν πολὺ καταδεεστέρας. λέγεται δὲ ὑπ' ἐνίων καὶ
κατὰ γένος διαφέρειν τοῦ κινναμώμου τὸ ξυλοκιννάμω-
μον ἑτέρας ὂν φύσεως. δύναμιν δὲ ἔχει πᾶν κιννάμωμον
θερμαντικήν. οὐρητικήν. μαλακτικήν. πεπτικήν. ἄγει δὲ καὶ
ἔμμηνα καὶ ἔμβρυα πινόμενον καὶ προστιθέμενον μετὰ σμύρ-
νης. καὶ ἰοβόλοις θηρίοις θανασίμοις ἁρμόζει καὶ τὰ ταῖς
κόραις ἐπισκοτοῦντα ἀποκαθαίρει. θερμαίνει τε καὶ λε-
πτύνει. καὶ ἔστι διουρητικόν. φακούς τε καὶ ἐφήλεις ἀποκα-
θαίρει μετὰ μέλιτος ἐπιχρισθέν. ποιεῖ δὲ καὶ πρὸς βῆχας.
κατάρρους. ὑδρώπας. νεφρίτιδας. δυσουρίας. μίγνυται

δὲ καὶ τοῖς πολυτελέσι μύροις. καὶ καθόλου ἐστὶ πολύχρηστον. ἀποτίθεται δὲ εἰς διαμονὴν λεῖον. οἴνῳ ἀναλαμβανόμενον καὶ ξηραινόμενον ἐν σκιᾷ. ἔστι δέ τι λεγόμενον κινναμώμον, ὃ ἔνιοι ψευδοκιννάμωμον καλοῦσιν. εὐερνὲς σφόδρα καὶ παχυραβδότερον. κατὰ πολλὰ μέντοι γε ἐλαττούμενον κινναμώμου κατά τε ὀσμὴν καὶ γεῦσιν.

## Περὶ ἀμώμου. ΚΕΦ. ιδ´.

Ἄμωμόν ἐστι θαμνίσκος οἱονεὶ βότρυς, ἐκ ξύλου ἀντιμπεπλεγμένος ἑαυτῷ. ἔχει δέ τι καὶ ἄνθος. μικρὸν, ὡς λευκοΐου. φύλλα δὲ βρυωνίᾳ ὅμοια. κάλλιστον δέ ἐστι τὸ ἀρμένιον. χρυσίζον τῇ χρόᾳ. ἔχον τε τὸ ξύλον ὑπόκιρρον. εὐῶδες ἱκανῶς. τὸ δὲ μηδικὸν διὰ τὸ ἐν πεδίοις καὶ ἐν ἐφύδροις τόποις φύεσθαι, ἀδυνατώτερον. ἔστι δὲ μέγα καὶ ὑπόχλωρον. καὶ πρὸς τὴν ἀφὴν ἁπαλόν. καὶ ἰνῶδες τοῖς ξύλοις. πηγανίζον τῇ ὀσμῇ. τὸ δὲ ποντικὸν ὑπόκιρρον οὐ μακρόν. οὐδὲ δύσθραυστον. βοτρυῶδες. πλῆρες καρποῦ. καὶ τῇ ὀσμῇ πληκτικόν. ἐκλέγου δὲ τὸ πρόσφατον καὶ λευκὸν ἢ ὑπέρυθρον. οὐ πεπιλημένον ἢ συμπεπλεγμένον. λελυμένον δὲ καὶ διακεχυμένον. σπέρματος πλῆρες. ὅμοιον βοτρυδίοις. βαρύ. σφόδρα εὐῶδες, δίχα εὐρῶτος, καὶ δριμύ. δάκνον τὴν γεῦσιν. ἁπλοῦν τὴν χρόαν καὶ οὐ ποικίλον. δύναμιν δὲ ἔχει θερμαντικήν. στυπτικήν. ξηραντικήν. ὑπνοποιόν. ἀνώδυνον. τῷ μετώπῳ καταπλασσόμενον. φλεγμονάς τε καὶ μελικηρίδας, διαφορεῖ. σκορπιοπλήκτους τε μετ' ὠκίμου καταπλασθὲν ὠφελεῖ. ποδαγρικοῖς συμβάλλεται καὶ ὠφελεῖ, καὶ παρηγορεῖ. καὶ ὀφθαλμῶν φλεγμονάς. καὶ τὰς ἐν σπλάγχνοις σὺν σταφίδι. πρὸς δὲ τὰ γυναικεῖα καὶ ἐν ἐγκαθίσμασι χρήσιμον. ποθὲν δὲ τὸ ἀφέψημα αὐτοῦ ἁρμόζει ἡπατικοῖς. νεφριτικοῖς. ποδαγρικοῖς. μίγνυται δὲ καὶ ἀντιδότοις. καὶ τοῖς πολυτελεστάτοις τῶν μύρων. δολίζουσιν δέ τινες τὸ ἄμωμον τῇ λεγομένῃ ἀμωμίδι. ἐμφερῆ οὔσῃ ἀμώμῳ ἀόσμῳ μέντοι καὶ ἀκάρπῳ. γεννωμένη δὲ ἐν ἀρμενίᾳ. ἄνθος ἐχούσῃ ἐμφερὲς ὀριγάνῳ. δεῖ δὲ ἐν ταῖς τῶν τοιούτων δοκιμασίαις τὰ θραύσματα ἐκφεύγειν. ἐκλέγου δὲ τὰ ἀπὸ μιᾶς ῥίζης ἔχοντα κλάδους τελείους.

Περὶ κόστου. κεφ. ιέ

Κ όστου διαφέρει ὁ ἀραβικὸς, λευκός ὢν καὶ κοῦφος. πλείστην ἔχων καὶ ἡδεῖαν τὴν ὀσμήν. δευτερεύει δὲ ὁ ἰνδικὸς ἀθρόος ὢν καὶ κοῦφος καὶ μέλας ὡς νάρθηξ. τρίτος δέ ἐστιν ὁ συριακὸς, βαρύς. τὴν χρόαν πυξώδης. πληκτικὸς τῇ ὀσμῇ. ἄριστος δέ ἐστιν ὁ πρόσφατος. λευκός. πλήρης δι' ὅλου. πυκνός. ξηρός. ἀτερηδόνιστος. ἄβρωμος. γεύσει δηκτικός. καὶ πυρώδης. δύναμιν δὲ ἔχει θερμαντικήν. διουρητικήν. ἐμμήνων ἀγωγὸν καὶ τῶν περὶ ὑστέραν παθῶν ἀρωγόν. ἐν προσθέμασι καὶ καταντλήμασι καὶ πυελάσεσι. ἐχιοδήκτοις βοηθεῖ. καὶ πρὸς θώρακος πόνους καὶ σπάσματα. καὶ πνευματώσεις μετ' οἴνου καὶ ἀψινθίου. καὶ ἀφροδίσια δὲ παρορμᾷ μετ' οἰνομέλιτος. ἄγει δὲ καὶ ἕλμινθας πλατείας μεθ' ὕδατος. σύγχρισμά τε ῥιγοῦσι μετ' ἐλαίου πρὸ τῆς ἐπισημασίας, καὶ παραλυτικοῖς. καθαίρει δὲ καὶ ἔφηλιν καταχρισθεὶς μεθ' ὕδατος ἢ μέλιτος. μίγνυται δὲ καὶ μαλάγμασι καὶ ἀντιδότοις. μιγνύουσι δ' ἔνιοι τὰς ῥωμαλεωτάτας τοῦ κομμαγηνοῦ ἑλενίου ῥίζας δολοῦντες αὐτόν. εὐχερὴς δὲ ἡ διάγνωσις. οὔτε γὰρ πυροῖ τὴν γεῦσιν τὸ ἑλένιον, οὔτε τὴν εὐωδίαν εὔτονον καὶ πληκτικὴν παρέχει.

Περὶ Σχίνου. κεφ. ιϛ΄.

Σ χῖνος, ἡ μέν τις γίνεται ἐν λιβύῃ. ἡ δὲ, ἐν ἀραβίᾳ. ἑτέρα δὲ ἐν τῇ ἀβαταίᾳ λεγομένῃ. ἥτις ἐστὶ κρατίστη. δευτερεύει δὲ ἡ ἀραβική. ἣν ἔνιοι βαβυλώνιον καλοῦσιν. οἱ δὲ, τευχῖτιν. ἡ δὲ λιβυκὴ ἄχρηστος. ἐκλέγου δὲ τὴν πρόσφατον. ἔμπυρον. πολυανθῆ. σχιζομένην δὲ ἐμπόρφυρον καὶ λεπτήν. καὶ ῥοδίζουσαν τῇ εὐωδίᾳ ἐπειδὰν διατρίβηται ταῖς χερσί. καὶ δάκνουσαν τὴν γλῶσσαν μετὰ πολλῆς πυρώσεως. χρῆσις δὲ τοῦ ἄνθους καὶ τῶν καλάμων καὶ τῆς ῥίζης. δύναμιν δὲ ἔχει ὑπαλλακτικὴν ἀναστοματικὴν διουρητικήν. ἐμμηνίων ἀγωγόν. πνευμάτων διαλυτικήν. κεφαλῆς καρηβαρικήν. ὑποστύφουσαν μετρίως. ἔτι δὲ θρεπτικήν. πεπτικήν. ἀναστομωτικὴν καὶ διουρητικήν. τὸ μὲν οὖν ἄνθος αὐτῆς, ποτίσμασι χρήσιμον πρὸς αἵματος ἀναγωγὰς καὶ πόνους στομάχου.

πνεύμονος. ἢ ἥπατος, νεφρῶν. μίγνυται δὲ εἰς ἀντιδότους. ἡ
δὲ ῥίζα στυπτικωτέρα. διὸ καὶ τοῖς ἀσώδεσι στομάχοις δίδοται
ὑδρωπιῶσί τε καὶ σπάσμασι μετὰ ἴσου πεπέρεως < α. ὀλ-
κὴ πρὸς ἡμέρας τινάς. τὸ δὲ ἀπόζεμα αὐτῆς, ταῖς περὶ μή-
τραν φλεγμοναῖς εἰς ἐγκάθισμα ἁρμόδιον.

### Περὶ Καλάμου. Κεφ. ιζ΄.

Κάλαμος ἀρωματικὸς, φύεται μὲν ἐν ἰνδίᾳ. ἔστι δὲ αὐτοῦ κάλ-
λιστος ὁ κιῤῥός. πυκνογόνατος, καὶ εἰς πολλοὺς σκινδαλμοὺς
θραυόμενος. γέμων ἀραχνίων τὴν σύριγγα. ὑπόλευκος ἐν
δὲ τῇ διαμασσήσει γλίσχρος. στυπτικός. ὑπόδριμυς. δύναται
δὲ οὖρα κινεῖν ποθείς. ὅθεν ἁρμόζει μετὰ ἀγρώστεως ἢ σελί-
νου σπέρματος ἀφεψηθεὶς καὶ ποθεὶς, ὑδρωπικοῖς. νεφριτι-
κοῖς. στραγγουριῶσι. ῥήγμασιν. ἄγει δὲ καὶ ἔμμηνα πινόμε-
νος καὶ προστιθέμενος. βῆχάς τε ἰᾶται ἀποθυμιώμενος
καθ᾽ ἑαυτόν. καὶ σὺν ῥητίνῃ τερεβινθίνῃ, τοῦ καπνοῦ διὰ σύ-
ριγγος ἑλκομένου τῷ στόματι. ἀφέψεται δὲ καὶ εἰς ἐγκάθισ-
μα τὰ γυναικεῖα. καὶ ἐγκλύσματα. μίγνυται δὲ καὶ μαλάγ-
μασι. καὶ θυμιάμασι πρὸς εὐωδίαν.

### Περὶ Βαλσάμου. Κεφ. ιη΄.

Βάλσαμον τὸ μὲν δένδρον κατὰ μέγεθος λυκοΐου ἢ πυρακαν-
θης βλέπεται. φύλλα ἔχον ὅμοια πηγάνῳ λευκότερα δὲ
πολλῷ καὶ ἀειθαλέστερα. γεννώμενον ἐν μόνῃ ἰουδαίᾳ, κατά
τινα αὐλῶνα καὶ ἐν αἰγύπτῳ. διαφέρον αὐτὸ ἑαυτοῦ τραχύ-
τητι καὶ μήκει καὶ ἰσχνότητι. λέγεται γοῦν τὸ λεπτὸν καὶ τρι-
χῶδες τοῦ θάμνου θεριστόν. ἴσως διὰ τὸ εὐχερῶς θερίζεσθαι
ἰσχνὸν ὄν. τὸ δὲ ὀποβάλσαμον λεγόμενον ὀπίζεται ἐν τοῖς
ἀπὸ κυνὸς καύμασιν ἐν τεμνομένου σιδηροῖς ὄνυξι τοῦ
δένδρου. ῥεῖ δὲ ὀλίγον. ὡς καθ᾽ ἕκαστον ἔτος μὴ πλεῖον ἢ ἓξ
ἢ ἑπτὰ χόας συναθροίζεσθαι. πωλεῖται δὲ ἐν τῷ τόπῳ στα-
θμὸς αὐτοῦ πρὸς διπλοῦν ἀργύριον. ἔστι δὲ ὀπὸς καλὸς ὁ πρό-
σφατος τῇ ὀσμῇ. εὔτονος καὶ εἰλικρινής. καὶ μὴ παροξίζων.
εὐδίαυτος. λεῖος. στύφων καὶ δάκνων μετρίως τὴν γλῶσσαν.
δολοῦται δὲ ποικίλως. οἱ μὲν γὰρ χρίσματι μίσγουσιν αὐ-

τό. ὡς δ' ἔστι τερεβίνθινον. κύπρινον. σχίνινον. σούσινον. βαλάνινον. μετώπιον. μέλι. κηρωτὴν μυρσίνην ἢ κυπρίνην ὑγράν. λείαν. ἐλέγχεται δὲ εὐχερῶς ὁ τοιοῦτος. ἐπισταγεὶς γὰρ ὁ ἄκρατος εἰς ἐρεοῦν ὕφος, καὶ ἐκπλυθεὶς, κηλῖδα οὐ ποιεῖ οὐδὲ σπῖλον. ὁ δὲ δεδολωμένος προσμένει. καὶ γάλακτι δὲ ἐπισταγεὶς πήγνυσι τοῦτο ὅπερ δεδολωμένος οὐ δρᾷ. ἔτι ὁ ἄκρατος ἐπιχυθεὶς γάλακτι ἢ ὕδατι χεῖται ταχέως καὶ γαλακτοῦται. ὁ δὲ δεδολωμένος ἐπιπλεῖ καθάπερ ἔλαιον. συστρεφόμενος ἢ διαχεόμενος ἀστεροειδῶς. τῷ μέντοι χρόνῳ καὶ ὁ ἄκρατος παχυνόμενος, ἑαυτοῦ χείρων γίνεται. πλανῶνται δὲ οἱ νομίζοντες τοῦτον ἄκρατον ἐπισταγέντα ὕδατι εἰς χωρεῖν εἰς βάθος πρῶτον. εἶτα ἀναπλεῖν εὐδιάχυτον. Τὸ δὲ ξύλον ὃ καλεῖται ξυλοβάλσαμον, δόκιμόν ἐστι τὸ πρόσφατον καὶ λεπτόκαρφον. καὶ πυῤῥὸν εὐώδες. βραχὺ πνέον ὀποβαλσάμου. τοῦ δὲ καρποῦ, καὶ γὰρ τούτου ἡ χρῆσις ἀναγκαία, ἐκλέγου τὸν ξανθόν. πλήρη. μέγαν. βαρύν. δάκνοντα τὴν γεῦσιν καὶ πυροῦντα. μετρίως παραπνέοντα τοῦ ὀποβαλσάμου. φέρεται δέ τι ἀπὸ τῆς πέτρας. ὧ δολίζουσι τὸν καρπόν, σπέρμα ὑπερικῷ ὅμοιον. ὅπερ γνώσῃ ἐκ τοῦ μεῖζόν τι εἶναι καὶ κενὸν καὶ ἀδύναμον, πεπερίζον τῇ γεύσει. δύναμιν δὲ ἔχει ἐνεργεστάτην ὁ ὀπὸς, θερμαντικώτατος ὤν. σμήχων τὰ ἐπισκοτοῦντα ταῖς κόραις, καὶ τὰς περὶ μήτραν ψύξεις ἰώμενος. προστιθέμενος μετὰ ῥοδίνης κηρωτῆς. ἄγει δὲ καὶ ἔμμηνα. καὶ ἔμβρυα. καὶ ῥήγει συγχρισθεὶς λύει. καθαίρει δὲ καὶ τὰ ῥυπαρὰ τῶν ἑλκῶν. ἔστι δὲ καὶ πεπτικὸς καὶ οὐρητικὸς πινόμενος. δυσπνοοῦσιν ἁρμόζων. καὶ τοῖς ἀκόνιτον πεπωκόσι μετὰ γάλακτος. καὶ θηριοδήκτοις. μίγνυται δὲ καὶ ἀκόποις. καὶ μαλάγμασι καὶ ἀντιδότοις. καὶ καθόλου δραστικωτάτην ἔχει τὴν δύναμιν ὁ ὀπὸς τοῦ βαλσάμου. δεύτεραν δὲ ὁ καρπός. ἐλαχίστην δὲ τὸ ξύλον. ὁ δὲ καρπὸς, ἁρμόζει πλευριτικοῖς. περιπνευμονικοῖς. βήσσουσιν. ἰσχιαδικοῖς. ἐπιληπτικοῖς σκοτωματικοῖς. ὀρθοπνοϊκοῖς. στροφουμένοις. δυσουροῦσι. θηριοδήκτοις. καὶ εἰς τὰ γυναικεῖα δὲ ὑποθυμιάματα εὐθετεῖ. καὶ εἰς ἐγκαθίσματα ἀφεψόμενος ἀναστομοῖ τὴν μήτραν.

καὶ ἐπι-

καὶ ἐπίπασται ὑγρασίαν. Τὸ δὲ ξύλον τὴν αὐτὴν ἔχει δύναμιν τῷ καρπῷ. ἧσσονα μέντοι. βοηθεῖ δὲ ἀφεψηθὲν ὕδατι καὶ πινόμενον ἀπεψίαις. στρόφοις. θηριοδήκτοις. σπωμένοις. οὖρά τε ἄγει. καὶ πρὸς τὰ ἐν κεφαλῇ τραύματα μετὰ ἴρεως ἁρμόζει ξηρᾶς. ἀνάγει δὲ καὶ λεπίδας. πήγνυται δὲ καὶ εἰς τὰ τῶν μύρων σύμματα.

Περὶ Ἀσπαλάθου. Κεφ. ιθ´.

Ἀσπάλαθος. οἱ δέ, ἐρυσίσκηπτρον. θάμνος ἐστὶ ξυλώδης. ἀκάνθαις πολλαῖς κεχρημένος. γεννώμενος ἐν ἴστρῳ καὶ νισύρῳ καὶ συρίᾳ καὶ ῥόδῳ. ᾧ χρῶνται οἱ μυρεψοὶ εἰς τὰς τῶν μύρων σύψεις. ἔστι δὲ καλὸς ὁ βαρύς. καὶ μετὰ τὸ περιφλοιωθῆναι ὑπέρυθρος ἢ πορφυρίζων. πυκνός. εὐώδης. πικρίζων ἐν τῇ γεύσει. ἔστι δέ τι καὶ ἕτερον εἶδος αὐτοῦ λευκόν. ξυλῶδες. ἄοσμον. ὃ δὴ καὶ χεῖρον καθέστηκε. Δύναμιν δὲ ἔχει θερμαντικὴν μετὰ στύψεως. ὅθεν πρός τε τὰς ἄφθας ἑψηθεὶς μετ᾽ οἴνου καὶ διακλυζόμενος ἁρμόζει. καὶ πρὸς τὰς ἐν αἰδοίοις καὶ νομὰς καὶ ἀκαθαρσίας ἐγκλυζόμενος, καὶ πρὸς τὰς ὀζαίνας ἔμβρυά τε κατασπᾷ μιγνύμενος πεσσῷ. τὸ δὲ ἀφέψημα αὐτοῦ κοιλίαν ἵστησι. καὶ αἵματος ἀναγωγὴν ποθέν. δυσουρίαν τε καὶ ἐμπνευμάτωσιν λύει.

Περὶ Βρύου. Κεφ. κ´.

Βρύον. ὑπό τινων δὲ σπλάγχνον καλεῖται. εὑρισκόμενον ἐπὶ δένδρων κεδρίνων. ἢ λευκίνων ἢ δρυϊνῶν. διαφέρει δὲ τὸ κέδρινον. δεύτερον δὲ τὸ λεύκινον. ἔστι δὲ αὐτοῦ τὸ εὐωδέστερον καὶ λευκόν, καλόν. τὸ δὲ μελανίζον χεῖρον. Δύναμιν δὲ ἔχει στυπτικὴν ποιοῦνται πρὸς τὰ περὶ μήτραν ἐν ἀφεψήμασιν εἰς ἐγκάθισμα. μίγνυται δὲ καὶ μύροις βαλανίνοις καὶ χρίσμασι διὰ τὸ ἐν αὐτῷ στυπτικόν. καὶ εἰς θυμιαμάτων δὲ καὶ ἀκόπων σκευασίαν ἐστὶν εὔθετον.

Περὶ Ἀγαλλόχου. Κεφ. κα´.

Ἀγάλλοχον ξύλον ἐστὶ φερόμενον ἐκ τῆς ἰνδίας. καὶ ἀραβίας θυΐνης. ἐστιγμένον εὐῶδες. παραστῦφον ἐν τῇ γεύσει μετὰ ποσῆς

πικρίας. φλοιὸν ἔχων δερματώδη, καὶ ὑπόκιλον. ποιεῖ δὲ διαμασώμενον καὶ διακλυζόμενον τὸ ἀφέψημα πρὸς εὐωδίαν στόματος. καὶ διάπασμα δὲ ὅλου τοῦ σώματός ἐστι. θυμιᾶται δὲ ἀντὶ λιβανωτοῦ. ἡ δὲ ῥίζα αὐτοῦ < ὁλκὴ πινομένη, στομάχου πλάδον καὶ ἀτονίαν καὶ καύσωνα παρηγορεῖ. τοῖς τε ἀλγοῦσι πλευρὸν καὶ ἧπαρ. ἢ δυσεντερικοῖς ἢ στρεφουμένοις, ἀρήγει πινομένη μεθ' ὕδατος.

### Περὶ νασκάφθου. κεφ. κβʹ.

Νάσκαφθον. οἱ δὲ, νάρκαφθον. καὶ τοῦτο ἐκ τῆς ἰνδικῆς κομίζεται. ἔστι δὲ φλοιῶδες. συγκειμένου λεπίσματι ἐοικός. θυμιώμενον διὰ τὴν εὐωδίαν, καὶ μιγνύμενον τοῖς σκευαστοῖς θυμιάμασιν, ὠφελεῖν καὶ μήτραν ἐστεγνωμένην. ὑποθυμιαθέν.

### Περὶ κάγκαμου. κεφ. κγʹ.

Κάγκαμον. δάκρυόν ἐστιν ἀραβικοῦ ξύλου σμύρνῃ προσεοικός. βρομῶδες ἐν τῇ γεύσει. ᾧπερ ὡς θυμιάματι χρῶνται. ὑποκαπνίζουσι δὴ καὶ τὰ ἱμάτια μετὰ σμύρνης καὶ στύρακος. δύναμιν δὲ ἱστορεῖται ἔχειν, ἰσχναντικὴν τῶν καταπιμέλων, τετρωβόλου πλῆθος πινόμενον, σὺν ὕδατι ἢ ὀξυμέλιτι ἐφ' ἱκανὰς ἡμέρας. δίδοται καὶ σπληνικοῖς. καὶ ἐπιληπτικοῖς. καὶ ἀσθματικοῖς. ἔμμηνά τε ἄγει σὺν μελικράτῳ. καθαίρει δὲ καὶ τὰς ἐν ὀφθαλμοῖς ταχέως οὐλάς. καὶ ἀμβλυωπίας ἰᾶται, δευθὲν οἴνῳ. πρὸς τερηδήσεις οὔλων καὶ ὀδονταλγίας, ὡς οὐδὲν ἕτερον ποιεῖ.

### Περὶ κύφεως. κεφ. κδʹ.

Κῦφι. θυμιάματός ἐστι σκευασία κεχαρισμένη θεοῖς. χρῶνται δὲ αὐτῷ κατακόρως οἱ ἐν αἰγύπτῳ ἱερεῖς. μίγνυται δὲ καὶ ἀντιδότοις. καὶ ἀσθματικοῖς δίδοται ἐν ποτίσμασι. σκευασίαι δὲ αὐτοῦ ἐμφέρονται πλείονες. ἐν αἷς ἐστὶ καὶ αὕτη. κυπείρου ἡμίξεστον. ἀρκευθίδος ἁδρᾶς τὸ αὐτό. σταφίδων λιπαρῶν ἐκγιγαρτισμένων μνᾶς ιβʹ. ῥητίνης ἀπεκαθαρμένης μνᾶς εʹ. καλάμου ἀρωματικοῦ. ἀσπαλάθου. σχίνου. ἑκάστου μναῖ αʹ. σμύρνης < ιβʹ. οἴνου παλαιοῦ ξέστας θʹ. με-

λιτος μνᾶς β΄. ἐκχυλίσας τὴν σταφίδα κόψον καὶ λεάνον μετ' οἴνου καὶ τῆς σμύρνης. καὶ τὰ ἄλλα κόψας καὶ σήσας, μίξον τούτοις. ἔασόν τε συμπιεῖν ἡμέραν α΄. εἶτα ἑψήσας τὸ μέλι ἄχρι κολλώδους συστάσεως, μίξον ἐπιμελῶς τὴν ῥητίνην τε τήξας. εἶτα τὰ λοιπὰ συνανατρίψας ἐπιμελῶς ἀποτίθεσο εἰς ἀγγεῖον ὀστράκινον.

## Περὶ κρόκου. ΚΕΦ. κε΄.

Κρόκος ἐστὶ κράτιστος ἐν ἰατρικῇ χρήσει, ὁ κωρύκειος. πρόσφατός τε καὶ εὔχρους. ὀλίγον τὸ λευκὸν ἔχων ἐπὶ τῆς ἕλικος. ἐπιμήκεις. ὁλομελής. ἄθραυστος. ἀνελλιπής. πλήρης. βάπτων ἐν διέσει τὰς χεῖρας. οὐκ εὐρωτιῶν ἢ ἰκμάζων ἐπακτικὸς δὲ ἐν τῇ ὀσμῇ καὶ δριμύς. ὁ γὰρ μὴ τοιοῦτος ἢ παλαιός ἐστιν, ἢ βεβρεγμένος. δευτερεύει δὲ ὁ ἐκ τῆς πρὸς λυκίαν κωρικίου. καὶ ὁ ἀπὸ τοῦ λυκιακοῦ ὀλύμπου. εἶτα ὁ ἐξ αἰγῶν τῆς αἰτωλίας, ὁ δὲ κυρηναϊκὸς ὁ ἐκ κεντορίας, πάντων τῶν κατὰ τὴν σικελίαν. ἀσθενὴς κατὰ δύναμιν. λαχανώδεις ὄντες πάντες. διὸ μέντοι τὸ πολύχυλον καὶ εὔχρουν οἱ ἐν τῇ ἰταλίᾳ τὴν θυίαν βάπτοντες, τούτῳ χρῶνται. πολλοῦ δὲ πιπράσκεται διὰ τοῦτο. εἰς δὲ τὰ φάρμακα, ὁ προγεγραμμένος ἐστὶ χρήσιμος. δολοῦται δὲ μίξει κροκομάγματος κεκομμένου. ἢ δι' ἑψήματος ὑπαλειφόμενος. συντετριμμένου, εἰς τὸ βαρυσταθμίσαι, λιθαργύρου ἢ μολυβδαίνης. δηλοῖ δὲ ταῦτα τό, τε ἐνυπέχον κονιορτῶδες. καὶ τὸ τὴν ὀσμὴν ἑψηματώδη τυγχάνειν. ἔχει δύναμιν πεπτικήν. μαλακτικήν. ὑποστύφουσαν. οὐρητικήν. παρέχει εὔχροιαν. καὶ ἀκραίπαλος ἐστὶ μετὰ γλυκέος πινόμενος. ῥεύματά τε ὀφθαλμῶν ἐπιχριόμενος, στέλλει σὺν γάλακτι γυναικείῳ. μίγνυται δὲ καὶ τοῖς πρὸς τὰ ἐντὸς ποτίσμασι χρήσιμως. καὶ προσθέμασι καὶ καταπλάσμασι τοῖς πρὸς τὴν μήτραν καὶ δακτύλιον. παρίστησι δὲ καὶ πρὸς ἀφροδίσια. τάς τε ἐρυσιπελατώδεις. φλεγμονὰς πραΰνει καταχριόμενος. καὶ εἰς τὰς ὠτικὰς χρησιμεύει. φασὶ δὲ καὶ ἀναιρετικὸν αὐτὸ εἶναι μεθ' ὕδατος πινόμενον πλῆθος < γ΄. πρὸς δὲ τὸ εὐλέαντον αὐτὸν γίνεσθαι, δεῖ ἐν ἡλίῳ ψύγειν ἐν ὀστρακίνῳ

θερμῷ. ταχέως δὲ δεῖ στρέφειν. καὶ ἡ ῥίζα δὲ αὐτοῦ πινομέ-
νη σὺν γλυκεῖ, οὖρα κινεῖ.

### περὶ κροκομάγματος. Κεφ. κϛ΄.

Τὸ δὲ κροκόμαγμα γίνεται ἐκ τοῦ κροκίνου μύρου, τῶν ἀρω-
μάτων ἐκπιεσθέντων. καὶ ἀναπλασθέντων. ἔστι δὲ αὐτοῦ τὸ εὐώ-
δες καλόν. μέσως κατάσμυρνον. βαρύ. μέλαν ἄξυλον, ἐν τῷ
διεθῆναι ἱκανῶς. κροκῶδες τὴν χρόαν. λεῖον. ὑπόκιρρον. βά-
πτον ἰσχυρῶς τοὺς ὀδόντας καὶ τὴν γλῶσσαν. ἐπιμένον τε συ-
χνὰς ὥρας. Δύναμιν δὲ ἔχει σμηκτικὴν τῶν ἐπισκοτούντων
ταῖς κόραις. οὐρητικήν. μαλακτικήν. πεπτικήν. θερμαντικήν.
ἀναλογεῖ δὲ κατὰ ποσὸν τῇ τοῦ κρόκου δυνάμει. πλεῖστον γὰρ
τούτου μετείληφεν.

### περὶ ἐλενίου. Κεφ. κζ΄.

Ἐλένιον φύλλα ἔχει φλόμῳ τῷ στενοφύλλῳ παραπλήσια.
τραχύτερα δὲ καὶ ἐπιμήκη. καυλὸν δὲ οὐκ ἀνίησιν ἔν τισι τό-
ποις. ῥίζαν ὑπόκιρρον. εὐώδη μεγάλην. ὑπόδριμυν. ἀφ'
ἧς εἰς τὴν φύτευσιν καθάπερ ἐπὶ τῶν κυρίνων ἢ ἄρων λι-
παραὶ παραφυάδες λαμβάνονται. γίνεται δὲ ἐν ὀρεινοῖς καὶ
συσκίοις καὶ ἀνίκμοις τόποις. ὀρύσσεται δὲ ἡ ῥίζα θέρους.
καὶ τεμνομένη ξηραίνεται. κινεῖ δὲ τὸ ἀφέψημα αὐτῆς πι-
νόμενον οὖρα καὶ ἔμμηνα. αὐτὴ δὲ ἡ ῥίζα λαμβανομένη ἐν
ἐκλεικτῷ μετὰ μέλιτος, ἁρμόζει βηξὶν ὀρθοπνοίαις. ῥήγμασι.
σπάσμασιν. ἐμπνευματώσεσι. θηρίων δήγμασι καθόλου
θερμαντικὴ ὑπάρχουσα. τὰ δὲ φύλλα αὐτῆς ἐπιπλάττεται
ἀφεψηθέντα μετ' οἴνου, ἰσχιαδικοῖς ὠφελίμως. ἔστι δὲ καὶ
εὐστόμαχος ταριχευθεῖσα ἐν γλυκεῖ. ξηράναντες γὰρ αὐτὴν
ἐπ' ὀλίγον οἱ ἀλμευταὶ, εἶτα ἀφεψήσαντες, ἀποβρέχουσιν
ὕδατι ψυχρῷ. εἶτα βάλλοντες εἰς ἕψημα, ἀποτίθενται
εἰς χρῆσιν, ποιεῖ δὲ λεία πινομένη, αἱμοπτυϊκοῖς.

### περὶ ἐλενίου αἰγυπτίου. Κεφ. κη΄.

Ἐλένιον ἄλλο ἱστορεῖ κρατεύας γεννᾶσθαι ἐν αἰγύπτῳ. πόα δέ
ἐστι κλῶνας ἔχουσα πηχυαίους. ἐπὶ γῆς ἐρριμμένους ὥσ-
περ τὸ ἕρπυλλον. φύλλα δὲ τοῖς τοῦ φακοῦ ὅμοια. μακρότε-

ρα δὲ καὶ πολλὰ περὶ τοῖς κλωνίοις. ῥίζαν ὠχράν. πάχος δακτύλου μικροῦ. κάτωθεν λεπτήν. ἄνωθεν δὲ παχυτέραν. φλοιὸν ἔχουσαν μέλανα. φύεται δὲ ἐν παραθαλασσίοις τόποις καὶ γεωλόφοις. Δύναμιν δὲ ἔχει μετ' οἴνου πινομένη μία ῥίζα, θηριοδήκτοις βοηθεῖν.

Περὶ ἐλαίου ὠμοτριβοῦς. κεφ. κθ'.

Ἔλαιον πρὸς τὴν ἐν ὑγείᾳ χρῆσιν ἄριστον τὸ ὠμοτριβές. ὃ καὶ ὀμφάκινον καλεῖται. τούτου διαφέρει τὸ νέον. ἄδηκτον εὐῶδες. χρήσιμον δὲ τὸ τοιοῦτον καὶ εἰς τὴν τῶν μύρων κατασκευήν. ἔστι δὲ καὶ εὐστόμαχον διὰ τὸ στύφειν. καὶ οὔλων σταλτικόν. καὶ ὀδόντων κρατυντικόν. κρατούμενον ἐν τῷ στόματι. καὶ ἱδρώτων ἐφεκτικόν.

Περὶ ἐλαίου κοινοῦ. κεφ. λ'.

Τὸ δὲ καὶ παλαιότερον καὶ λιπαρώτερον, εἰς τὴν τῶν φαρμάκων χρῆσιν εὔθετον. κοινῶς γὰρ πᾶν ἔλαιον, θερμαντικόν ἐστι καὶ μαλακτικὸν γαστρός. δυσπερίψυκτον φυλάσσον τὸ σῶμα. ἑτοιμότερον πρὸς τὰς ἐνεργείας ποιοῦν. ἔστι δὲ καὶ εὐκοίλιον καὶ μαλακτικόν. ἀμβλῦνόν τε τὰς τῶν ἑλκόντων φαρμάκων δυνάμεις ἐν τῇ μίξει. δίδοται δὲ καὶ πρὸς τὰ θανάσιμα συνεχῶς πινόμενον καὶ ἐξεμούμενον. καθαίρει δὲ ὅσον κοτύλην σὺν πτισάνης ἴσῳ χυλῷ ποθὲν ἢ ὕδατι. στροφουμένοις τε ἐν ποτῷ, ὠφελίμως δίδοται μετὰ πηγάνου ἑψηθὲν κυάθων ἓξ πλῆθος. ἕλμινθάς τε ἐκβάλλει. καὶ ἐνίεται δὲ τὸ αὐτό, μάλιστα πρὸς τὰς εἰλεώδεις. τὸ γὰρ παλαιὸν θερμαντικώτερον καὶ διαφορητικώτερον. πρὸς ὀξυδερκίαν τε ὑπάλειμμα. μικτέον δὲ εἰ μὴ παρείη παλαιὸν ἔλαιον οὕτω. κατακράσας εἰς ἀγγεῖον τοῦ παρόντος τὸ κρεῖσσον, ἕψε ἕως οὗ γένηται μέλιτος πάχος καὶ χρῶ· τὴν γὰρ αὐτὴν τῷ προειρημένῳ εἰσφέρεται δύναμιν.

Περὶ ἐλαίου ἐκ τῆς ἀγρίας ἐλαίας. κεφ. λα'.

Τὸ δὲ ἐκ τῆς ἀγρίας ἐλαίας ἔλαιον, στυπτικώτερον. πρὸς μὲν τὴν ἐν ὑγείᾳ χρῆσιν, δεύτερον. κεφαλαλγοῦσι δὲ ἀντὶ ῥοδί-

νου ἁρμόζει. ἐπέχει καὶ ἱδρῶτας καὶ τρίχας ῥεούσας. ἀποσμήχει δὲ καὶ πίτυρα. καὶ ἀχῶρας, καὶ ψώρας, καὶ λέπρας. βράδιόν τε πολιοῖ καθ' ἑκάστην ἡμέραν ἐπαλειφόμενον.

Ἔλαιον λευκόν. Κεφ. λβʹ.

Λευκαίνεται δὲ ἔλαιον οὕτω. λαβὼν τὸ τῇ χροιᾷ μὲν λευκόν. τὴν ἡλικίαν δὲ μὴ πλέον ἐνιαυσίου, ἔγχεε εἰς κεραμεοῦν ἀγγεῖον πλατύστομον. καινόν. ἔστωσαν δὲ μέτρῳ κοτύλαι ρ. εἶτα θεὶς ὑφ' ἥλιον, ἀνάχει κόγχῳ καθ' ἑκάστην ἡμέραν κατὰ τὸ μέσον. ὑψόθι τῇ καταφορᾷ χρώμενος. ἵνα τῇ συνεχεῖ κυλίσει καὶ πληγῇ μεταβάληται καὶ ἀφείσῃ. τῇ δὲ ὀγδόῃ ἡμέρᾳ, βρέξας τήλεως καθαρᾶς < ν. ἐν ὕδατι θερμῷ, ἔμβαλε μαλακὴν γινομένην εἰς τὸ προειρημένον ἔλαιον χωρὶς τοῦ στραγγίσαι τὸ ὕδωρ. προσαποδὸς δὲ καὶ δαλὸν πιτυίνης ὡς ὅτι λιπαρώτατον καὶ εἰς λεπτὰ κατεσχισμένον τὰς ἴσας ὁλκάς. καὶ οὕτως ἔασον ἄλλας ὀκτὼ ἡμέρας διελθεῖν. μετὰ δὲ ταύτας ἀνάχει τῷ κόγχῳ τὸ ἔλαιον. τό, τε λοιπὸν εἰ μὲν εἴη τοῦ τέλους τετευχὸς, εἰς καινὸν ἀγγεῖον προεκλελυσμένον, οἴνῳ παλαιῷ κατὰ κεράσας, ἀπόθεσο προϋπεστρωμένων μελιλώτων στεφανίσκων ἀλίσκων ὁλκῶν ια. καὶ ἴρεως τῆς ἴσης. εἰ δὲ μὴ, πάλιν ἐν ἡλίῳ θετέον αὐτό. καὶ ἐργαστέον ἄχρις οὗ λευκὸν γένηται.

Περὶ Σικυωνίου ἐλαίου. Κεφ. λγʹ.

Ἔνεστι δὲ καὶ σικυώνιον τὸ προειρημένον οὕτω σκευάζειν. εἰς λέβητα κεκασσιτερωμένον, πλατύστομον, ἐγχέας νέου ἐλαίου ὠμοτριβοῦς καὶ λευκοῦ χόα α. καὶ ὕδατος ἡμίχουν, ἕψε κούφῳ πυρὶ κινῶν πρᾳέως. ὅταν δὲ ἀναζέσῃ δὶς, ὑπόσπασον τὸ πῦρ καὶ ψύξας ἀποκόγχυσον τὸ ἔλαιον. εἶτα ἄλλο ἐπιδοὺς ὕδωρ, συναναζέσον αὐτῷ καὶ τὰ λοιπὰ ποιήσας καθὼς σοι ὑποδέδεικται, ἀπόθου. σκευάζεται δὲ τοῦτο μάλιστα ἐν σικυωνίᾳ σικυώνιον καλούμενον. Δύναμιν δὲ ἔχει ποσῶς θερμαντικήν. ἁρμόζον ἐν πυρετοῖς καὶ τοῖς περὶ νεῦρα πάθεσι. χρῶνται δὲ αὐτῷ καὶ γυναῖκες, ὥσπερ τῷ στιλβώθρῳ.

Ῥύπος βαλανείων. Κεφ. λδ΄.

Ὁ δὲ ἐν τοῖς βαλανείοις συναιρόμενος, δύναται θερμαίνειν. μαλάσσειν. διαφορεῖν. ῥαγάσι τε καὶ κονδυλώμασιν ἐν διαχρίστοις.

Ῥύπος ἐκ τῆς παλαίστρας. Κεφ. λε΄.

Ὁ δὲ ἀπὸ τῆς παλαίστρας προσειληφὼς τὴν κόνιν, ἐοικὼς δὲ ῥύπῳ, τὰς περὶ τοὺς κονδύλους συστροφὰς ἐπιτιθέμενος ὠφελεῖ. καὶ ἰσχιαδικοὺς θερμὸς ἀντὶ μαλάγματος ἢ πυρίας ἐπιτιθέμενος.

Ῥύπος γυμνασίων. Κεφ. λϛ΄.

Καὶ ὁ ἐν τοῖς τῶν γυμνασίων τοίχοις ῥύπος, καὶ ὁ ἀπὸ τῶν ἀνδριάντων, θερμαίνει τε καὶ διαχεῖ τὰ δυσέκπεπτα φύματα. καὶ πρὸς ἀποσύρματα καὶ πρὸς ἕλκη πρεσβυτικὰ ἁρμόζει.

Περὶ ἐλαιομέλιτος. Κεφ. λζ΄.

Ἐλαιόμελι. κατὰ Πάλμυραν τῆς Συρίας ἔκ τινος στελέχους, ἔλαιον μέλιτος παχύτερον ῥεῖ. γλυκὺ τῇ γεύσει. ὅπερ πινόμενον πλῆθος κυάθων β΄ μετὰ κοτύλης μιᾶς ὕδατος, ἄγει κατὰ κοιλίαν ὠμὸν καὶ χολώδη. ἐνωθροὶ δὲ γίνονται καὶ ἔκλυτοι οἱ λαμβάνοντες. ὅπερ οὐ δεῖ εὐλαβεῖσθαι. διεγείρειν δὲ αὐτοὺς μὴ ἐῶντας καταφέρεσθαι. σκευάζεται δὲ καὶ ἐκ τοῦ λίπους τῶν θαλλῶν ἔλαιον. ἔστι δὲ αὐτοῦ κάλλιστον καὶ παλαιόν. καὶ παχὺ καὶ λιπαρόν. οὐ τεθολωμένον. θερμαίνει δὲ ἰδίως ποιοῦν πρὸς τὰ ἐπισκοτοῦντα ταῖς κόραις ἐπιχριόμενον. καὶ λέπρας καὶ ἀλγήματα περὶ νεῦρα ἐγχριόμενον ὠφελεῖ.

Περὶ κικίνου ἐλαίου. Κεφ. λη΄.

Κίκινον ἔλαιον, σκευάζεται τούτῳ τῷ τρόπῳ. λαβὼν ὠμῶν κροτώνων ὅσον ἂν δόξῃ, καὶ ψύξας εἰς ἥλιον, καταστρώσας θηλοπέδου τόπον ἕως ἂν ὁ περικείμενος φλοιὸς ἀπορραγεὶς ἐκπέσοι, συναγαγὼν τὴν σάρκα, ἔμβαλε εἰς ὅλμον. καὶ κόψας ἐπιμελῶς εἰς λέβητα κεκασσιτερωμένον βάλε, ὕδωρ ἔχοντα. καὶ ἀνάβρασον ὑποκαίων. ὅταν δὲ αὐῶσι τὴν ἐν αὐτοῖς ὑγρότητα πᾶσαν, ἆρας τὸν λέβητα ἀπὸ τοῦ πυρὸς, ἀπόψα μυάκῃ τὸ ἐπιπλέον ἔλαιον καὶ ἀποτίθει.

σω. οἱ δὲ αἰγύπτιοι διὰ τὸ δαψιλῶς χρῆσθαι, ἑτέρως αὐτὸ σκευάζουσι. μετὰ γὰρ τὸ καθᾶραι εἰς μύλην ἀποδιδόντες τοὺς κρότωνας, ἀλήθουσιν ἐπιμελῶς. εἰς τὰς σπυρίδας ἐμβαλόντες τὸ ἠλεσμένον, δι' ὀργάνου ἐκθλίβουσιν. ὥριμοι δέ εἰσιν οἱ κρότωνες, ὅταν ἀπὸ τῶν περιεχόντων αὐτοὺς σφαιρείων ἀπολύωνται. ποιεῖ δὲ τὸ κίκινον πρὸς ἀχῶρας καὶ ψώρας καὶ τὰς ἐν ἕδρα φλεγμονάς. πρός τε ὑστέρας μύσεις καὶ διαστροφάς. ἔτι δὲ οὐλὰς ἀπρεπεῖς καὶ ὠταλγίας. ἐμπλάστροις τε μιγὲν, ἐμπρακτοτέρας αὐτὰς ἐργάζεται. ἄγει δὲ καὶ κατὰ κοιλίαν ὑδατῶδες ποθέν. ἐκκρίνει δὲ καὶ ἕλμινθας.

Περὶ Ἀμυγδαλίνου ἐλαίου. Κεφ. λθ΄.

Ἀμυγδάλινον ἔλαιον ὅτινες μετώπιον καλοῦσι, σκευάζεται οὕτως. ἀμυγδάλων πικρῶν χο β΄. καθαρὰς καὶ ξηράνας, κόψον ὑπέρωξυ λίνῳ ἐν ὅλμῳ κούφως μέχρις μᾶζα γένηται. ἐπιχέας τε ζεστοῦ ὕδατος κοτύλας β΄, ἔα συμπιεῖν ἡμιώριον. ἀφ' ἧς πάλιν βιαιότερον τρίβε. εἶτα ἀποθλίβων πρὸς πλάκα ὀξύπου. καὶ τὸ ἀπὸ τῶν δακτύλων εἰς μύακα ἀναλάμβανε. εἶτα πάλιν εἰς τὸ ἀποτεθλιμμένον κοτύλην ὕδατος μίαν ἐπιχέας, καὶ συμπιεῖν ἐάσας, τὸ αὐτὸ ποίει. ἀποδίδωσι δὲ κοτύλην α΄ τὸ τετραχοίνικον. ποιεῖ δὲ πρὸς τὰς ἐν μήτρᾳ ἀλγηδόνας καὶ πνίγας ὑστερικὰς, διαστροφάς τε καὶ φλεγμονὰς τῶν αὐτῶν τόπων. ἔτι δὲ κεφαλαλγίας καὶ ὤτων πόνους. καὶ ἤχους καὶ συριγμούς. ὠφελεῖ δὲ καὶ νεφριτικούς. καὶ δυσουριῶντας. καὶ λιθιῶντας. καὶ ἀσθματικούς. καὶ σπληνικούς. αἴρει δὲ καὶ σπίλους ἐκ προσώπου. καὶ ἐφήλεις καὶ ῥυτίδας, μέλιτι μιγνύμενον καὶ κρίνου ῥίζῃ καὶ κυπρίνῃ ἢ ῥοδίνῃ κηρωτῇ. καὶ ἀμβλυωπίας δέ ἐστιν ἀνασκευαστικόν. σὺν οἴνῳ δὲ ἀχῶρας καὶ πίτυρα σμήχει.

Περὶ Βαλανίνου ἐλαίου. Κεφ. μ΄.

Ἐοικότως δὲ καὶ τὸ βαλάνινον σκευάζεται. δύναμιν δὲ ἔχει καθαρτικὴν σπίλων. φακῶν ἰόνθων. οὔλων μελανίας, κοιλίας, καθαρτικήν. ἔστι δὲ κακοστόμαχον. ἁρμόζει δὲ καὶ ὠταλγίαις. καὶ ἤχοις. καὶ συριγμοῖς. μετὰ χηνείου στέατος ἐγ-

χεόμενον. Ἔλαιον σησάμινον. Κεφ. μα΄.

Ὁμοίως δὲ σκευάζεται τοῖς προειρημένοις, τό, τε σησάμινον ἐκ τοῦ σησάμου. Ἔλαιον καρύϊνον. Κεφ. μβ΄.

Καὶ τὸ καρύϊνον ἐκ τῶν βασιλικῶν καρύων συντιθέμενον. δύναμιν δὲ ἔχουσι τὴν αὐτὴν τῷ βαλανίνῳ.

Περὶ ὑοσκυαμίνου ἐλαίου. Κεφ. μγ΄.

Καὶ τὸ ὑοσκυάμινον δὲ σκευάζεται οὕτω. λαβὼν τὸν λευκὸν καρπὸν ξηρὸν πρόσφατον καὶ κόψας, ὕδατι θερμῷ φύρα ὡς προείρηται ἐπὶ τοῦ ἀμυγδαλίνου. ἡλιάζων δὲ τὰ ὑπὸ χεῖρα ξηραινόμενα αὐτοῦ μέρη, τῷ ὅλῳ ἀνάμισγε. καὶ τὸ αὐτὸ ποίει ἄχρις ἂν μελανθῇ καὶ δυσώδες γένηται. εἶτα διηθήσας καὶ ἐκθλίψας ἀποτίθεσο. ποιεῖ δὲ καὶ πρὸς ὠταλγίας. καὶ πεσσοῖς μίγνυται μαλακτικὸν ὄν.

Περὶ κνιδελαίου. Κεφ. μδ΄.

Ὁμοίως δὲ καὶ τὸ διὰ τοῦ κνιδείου σκευάζεται κόκκου λεπισθέντος καὶ κοπέντος. καθαρτικὴν δὲ ἔχει δύναμιν κοιλίας πινόμενον. Περὶ κνικελαίου. Κεφ. με΄.

Ὡσαύτως δὲ καὶ τὸ κνίκινον σκευάζεται. δύναμις δὲ ἡ αὐτὴ τῷ διὰ τοῦ κνιδείου κόκκου. ἀνειμένη δὲ μᾶλλον.

Περὶ ῥαφανελαίου. Κεφ. μϛ΄.

Τὸ δὲ ῥαφάνινον σκευάζεται ἐκ τοῦ αὐτῆς σπέρματος ὡς πρὸ καὶ τὰ λοιπά. τοῖς ἐκ νόσου δὲ φθειριῶσιν ἁρμόζει. καὶ τὰς περὶ τὸ πρόσωπον σμήχει τραχύτητας. χρῶνται δὲ αὐτῷ οἱ ἐν αἰγύπτῳ τοῖς προσοψήμασι συνέψοντες αὐτό.

Περὶ μελανθελαίου. Κεφ. μζ΄.

Καὶ τὸ μελάνθινον δὲ τὴν αὐτὴν ἔχει δύναμιν, καὶ σκευασίαν τῷ ῥαφανίνῳ. Περὶ σιναπελαίου. Κεφ. μη΄.

Τὸ δὲ σινάπινον σκευάζεται, λεαινομένου τοῦ σινήπεως καὶ βρε

χεομένου ὕδατι ψυχρῷ. ἔπειτα μιγνυμένου ἐλαίου. καὶ συνεκθλιβομένου. ποιεῖ δὲ πρὸς τὰ χρόνια ἀλγήματα μετὰ σύγκρισιν.

Περὶ μυρσινελαίου. Κεφ. μθʹ.

Μυρσίνινον δὲ σκευάζεται οὕτω. λαβὼν τὰ ἁπαλὰ φύλλα τῆς μελαίνης μυρσίνης ἢ ἀγρίας ἢ ἡμέρου, κόπτε πιέζων. ἴσον δὲ τῷ χυλῷ, ἐλαίου ὀμφακίνου σμίξων, χλίαινε ἐπ' ἀνθράκων, ἕως ἂν συνεψηθῇ αἴρων τὸ ἐφιστάμενον. ἄλλως πως ἑτέρα, δὲ σκευασία τὰ ἁπαλὰ τῶν φύλλων κόψαντα, ἕψειν μεθ' ὕδατος καὶ ἐλαίου, καὶ τὸ ἐφιστάμενον ἀποψᾶν ἰδίως δὲ τὰ φύλλα κατατεθέντα εἰς ἥλιον, ἐν ἐλαίῳ ἀποβρέχειν. ἔνιοι δὲ προστύφουσι τὸ ἔλαιον σιδίοις. κυπαρίσσῳ. κυπείρῳ. σχίνῳ. ἔστι δὲ ἐμπλαστικώτερον τῇ γεύσει πικρίζον. καὶ ἐλαιῶδες. χλωρόν. διαφανές. ὄζον μυρσίνης. Δύναμις δὲ αὐτοῦ στυπτική. σκληρωτική. διὸ καὶ ποιεῖ μιγνύμενον ἀπουλωτικαῖς. καὶ πρὸς πυρίκαυστα. ἀχῶρας. πίτυρα. ἐξανθήματα. παρατρίμματα ῥαγάδας. κονδυλώματα. ἄρθρα κεχαλασμένα. ἱδρῶτας στέλλει. καὶ ὅσα στύψεως ἢ πυκνώσεως ἔχει χρείαν.

Περὶ δαφνελαίου. Κεφ. νʹ.

Τὸ δὲ δάφνινον σκευάζεται διὰ τῶν δαφνίδων ὅταν ὦσι δρυοπετεῖς, ἑψομένων μεθ' ὕδατος. ἐκ γὰρ τοῦ περικειμένου λέπους, ἀνίησιν λιπαρίαν τινά. ἣν διακόψαντες χερσὶν εἰς μύακας ἀναλαμβάνουσιν. ἔνιοι δὲ ὀμφάκινον ἔλαιον προστύψαντες, κυπείρῳ καὶ σχίνῳ καὶ καλάμῳ καὶ μετὰ ταῦτα δάφνης φύλλα ἁπαλὰ βαλόντες, συνέψουσιν. οἱ δέ, καὶ δαφνίδας ἕως ἂν ἱκανὸν γένηται τῇ ὀσμῇ. ἔνιοι δὲ καὶ στύρακα μίσγουσι καὶ μυρσίνην. ἀρίστη δὲ πρὸς σκευασίαν ἡ ὀρεινὴ καὶ πλατύφυλλος δάφνη. διαφέρει δὲ τοῦ δαφνίνου τὸ πρόσφατον. χλωρὸν τῇ χροᾷ. πικρότατον. δριμύ. Δύναμιν δὲ ἔχει θερμαντικήν. μαλακτικήν. ἀναστομωτικήν. κόπων λυτικήν. ἁρμόζει καὶ τοῖς περὶ τὰ νεῦρα πάθεσι πᾶσι, καὶ ὠταλγίαις, καὶ καταρροιζομένοις. ἔστι δὲ καὶ ναυτιῶδες ποθέν.

Περὶ σχινελαίου. Κεφ. ναʹ.

Τὸ δὲ σχίνινον ὁμοίως ἐκ τοῦ καρποῦ πεπείρου σκευασθὲν, ὡς τὸ δάφνινον, προσυφθὲν, ὑπάγει ψώρας κτηνῶν καὶ κυνῶν καὶ εἰς πεσσοὺς καὶ εἰς ἄκοπα καὶ λεπρικὰ ἐπιτηδείως μίγνυται, στέλλει δὲ καὶ ἱδρῶτας. καὶ τὸ τερεβίνθινον δὲ ὁμοίως σκευάζεται.

Περὶ μαστιχελαίου. Κεφ. νβʹ.

Τὸ δὲ μαστίχινον, ἐκ τῆς μαστίχης λείας σκευάζεται. ποιεῖ δὲ πρὸς τὰ ἐν ὑστέρᾳ πάντα ἠπίως θερμαῖνον. στύφον. μαλάσσον. καὶ πρὸς τὰ περὶ τὸν στόμαχον ἐπιρρηπτόμενα σκιρρώματα καὶ κοιλιακὰ. καὶ δυσεντερικά. καὶ τὰ ἐπὶ τοῦ προσώπου καθαῖρον. καὶ εὔχροιαν ποιοῦν. συντίθεται δὲ ἐν Χίῳ τῇ νήσῳ κάλλιστον.

Σύνθεσις περὶ μύρων. Κεφ. νγʹ.

Ἐπεὶ δὲ καὶ τὰ μύρα εὐθετεῖ ἐπ' ἐνίων παθῶν καὶ μιγνύμενα φαρμάκοις καὶ ἐμβρεχόμενα καὶ ὀσφραινόμενα, ἀκόλουθον ἡγούμεθα καὶ τὴν τούτων παράδοσιν ποιήσασθαι, ἃ δεῖ δοκιμάζοντας ἐπιβλέπειν, εἰ ἄρ' οὗ ἡ κρᾶσις ἐστὶ τοῦ μύρου, ἐκεῖνο ποιεῖ κατὰ τὴν ὄσφρησιν. ἀρίστη δέ ἐστιν ἡ τοιαύτη κρίσις. ἐπ' ἐνίων μέντοι οὐ φυλάττεται τὸ τοιοῦτον διὰ τὴν ἐπικράτειαν μιγμάτων σφοδροτέρων. ὡς ἐπὶ ἀμαρακίνου καὶ κροκίνου καὶ τηλίνου καὶ ἄλλων τινῶν ἅπερ ἐκ τῆς περὶ αὐτὰ γυμνασίας δοκιμαστέον.

Περὶ ῥοδίνου σκευασίας. Κεφ. νδʹ.

Ῥόδινον ἔλαιον γίνεται οὕτω. σχίνου λίτρας ε. οὐγγίας ή. ἐλαίου λίτρας κ. οὐγγίας ε. κόψας καὶ φυράσας ὕδατι, ἕψε ἀνακινῶν. εἶτα ἀπηθήσας εἰς τὰς κ. λίτρας καὶ οὐγγίας ε. ἐλαίου, βάλε ῥόδων ἀβρόχων ἀριθμῷ χίλια πέταλα ἢ κυπέρου λίτρας α. ἐλενίου λίτρας α. καλάμου λίτρας α. ἐλαίου ξέστας ς. ῥόδων ξέστην α ς″. καὶ τὰς χεῖρας μέλιτι χρίσας, ἀνακίνει πλεονάκις ἀποθλίβων ἠρέμα. ἔπειτα ἐάσας τὴν νύκτα ἔκθλιβε. ὅταν δὲ τὸ τρυγῶδες ὑποστῇ, ἄλλαξον τὸ ἀποδεχόμενον ἀγγεῖον. ἀποτίθεσο δὲ εἰς κρατῆρα μέλιτι κατακεχρισμένον. βαλὼν δὲ εἰς λουτηρί-

δίον τὰ ἐξιπωθέντα ῥόδα, ἐπίχει λίτρας η΄· οὐγγίας γ΄. τοῦ ἐστυμμένου ἐλαίου, καὶ πάλιν ἐξίπου. ἔσται δέ σοι τοῦτο δεύτερον. καὶ ἂν βουληθῇς ἄχρι γ΄. ἢ δ΄ ἀποβροχῆς ἐπιχέων ἐξίπου. γίνεται γὰρ τὸ μὲν α΄. τὸ δὲ β΄. τὸ δὲ γ΄. τὸ δὲ δ΄. μύρον. ὁσάκις δ᾽ ἂν ποιῇς, τοὺς κρατῆρας, προσκατάχριε μέλιτι. εἰ δὲ θέλεις δευτέραν ἐμβολὴν ποιήσασθαι, εἰς τὸ πρῶτον ἐξιπωθὲν ἔλαιον, τὸν ἴσον ἀριθμὸν προσφάτων ῥόδων ἀβρόχων ἔμβαλε καὶ ἀνακινῶν ταῖς χερσὶ προσδεδευμέναις μέλιτι, ἔκπιεζε, καὶ ποίει τὸ δεύτερον καὶ τρίτον καὶ τέταρτον ὁμοίως ἐκθλίβων. καὶ ὁσάκις δ᾽ ἂν ποιῇς τοῦτο, νεαρὰ ὀνυχίζων πρόσβαλε ῥόδα· δυναμικώτερον γὰρ γίνεται. ἄχρι δὲ ἑβδόμης ἐμβροχῆς, ἐπιδέχεται τὸ ἔλαιον τὴν ἐμβολὴν τῶν ῥόδων. ἔπειτα δὲ οὐκέτι. κεχρίσθω δὲ καὶ ἡ ληνὸς μέλιτι. δεῖ δὲ ἐπιμελῶς τὸ ἔλαιον τοῦ χυλοῦ χωρίζειν. ἀπολιφθὲν γὰρ τοὐλάχιστον, τὸ μύρον φθείρει. ἔνιοι δὲ αὐτὰ μόνα τὰ ῥόδα ὀνυχίσαντες καὶ ἡλιάσαντες, ἀναποβρέχουσι τῷ ἐλαίῳ. ἔχοντα σταθμὸν οὐγγίας ϛ΄. εἰς μίαν ξέστην ἐλαίου. καὶ ἀλλάσσοντες, ἡμέρας η΄. καὶ ἡλιάζοντες ἐπὶ ἡμέρας μ΄. ἄχρι τρίτης ἐμβροχῆς, οὕτως ἀποτίθενται. ἔνιοι δὲ προσύφουσι τὸ ἔλαιον. κάλαμον καὶ ἀσπάλαθον ἐμβάλλοντες, οἱ δέ, καὶ ἄγχουσαν ἕνεκεν εὐχροίας. καὶ ἅλας πρὸς τὸ μὴ φθείρεσθαι. δύναμιν δὲ ἔχει στυπτικήν. ψυκτικήν. εὔθετον εἰς ἐμβρέγματα καὶ καταπλασμάτων μίξεις. λύει δὲ καὶ κοιλίαν ποτιζόμενον. καὶ καῦσον σβεννύουσι στομάχου. ἔστι δὲ καὶ θρεπτικὸν κοίλων ἑλκῶν. καὶ τῶν κακοηθῶν πλαωτικόν. ἀχώρων καὶ ἐκζεμάτων ἐπάλειμμα. καὶ κεφαλαλγίας ἔμβρεγμα, ἐν ἀρχῇ ὀδονταλγίας διάκλυσμα. ποιεῖ δὲ καὶ πρὸς βλέφαρα ἐσκληρυμμένα ἐγχριόμενον. πρός τε ἐντέρων ἐρεθισμοὺς καὶ ὑστέρας ἐγκλυζόμενον χρήσιμον.

### Περὶ ἐλαΐνου σκευασίας κεφ. νε΄.

Ἐλάτην θλάσας καὶ διακνίσας, ἔμβαλε εἰς λουτῆρα καὶ ἐπίχει ὀμφάκινον ἔλαιον ἐπὶ ἡμέρας γ΄. ἀνελόμενός τε εἰς σινδόνα ἐξίπου. ἔστω δὲ ἑκάτερα ἰσόσταθμα εἶτα ἀφεψή-

μενος ἐν καθαρῷ ἀγγείῳ, χρῶ. δύναμιν δὲ ἔχει ἀναλογοῦσαν τῷ ῥοδίνῳ. κοιλίαν δὲ οὐ μαλάσσει.

### Περὶ μηλίνου σκευασίας. Κεφ. νϛ΄.

Ἔλαιον μήλινον σκευάζεται τὸν τρόπον τοῦτον. ἐλαίου ξέστας ϛ΄. ὕδατος ξέστας ι΄. μίξας, προσέμβαλε λαπάθης τεθλασμένης οὐγγίας γ΄. σχίνου οὐγγίαν α΄. καὶ ἐάσας ἡμέραν μίαν, ἕψησον, εἶτα ἀπηθήσας τὸ ἔλαιον, βάλε εἰς ἀγγεῖον πλατύστομον, ἐπιθεὶς τε ῥύπον ἐκ καλάμου. ἢ φοίακθους ἀραιάς. ἄνωθέν τε ἐπιθεὶς κυδώνια μῆλα καὶ περικαλύψας ἱματίοις, ἔασον ἡμέρας ἱκανὰς ἕως ἂν ἐπισπάσηται τὴν ἀπὸ τῶν μήλων δύναμιν τὸ ἔλαιον. ἔνιοι δὲ τὰ μῆλα περιβάλλοντες ἱματίοις ἐπὶ ἡμέρας ι΄, ἵνα συνέχηται καὶ μὴ διαπνέηται ἡ εὐωδία, μετὰ ταῦτα ἀποβρέχουσι τῷ ἐλαίῳ ἡμέρας β΄. καὶ νύκτας. εἶτα ἐξιπώσαντες ἀποτίθενται. Δύναμιν δὲ ἔχει στυπτικήν. ψυκτικήν. ποιοῦν πρὸς τὰ ψωρώδη ἕλκη καὶ πίτυρα. χύμεθλα. ἕρπητας, καὶ πρὸς τὰς ἐν ὑστέρᾳ ἑλκώσεις ἐγχυματιζόμενον. οὖρά τε ἠρεθισμένα στέλλει ἐγκλυζόμενον. καὶ ἱδρῶτας ἐφίστησι. πίνεται δὲ καὶ πρὸς κανθαρίδας. βουπρήστεις. πιτυοκάμπην. ἔστι δὲ αὐτοῦ δοκιμώτερον τὸ κυδωνίων ὄζον μήλων.

### Περὶ οἰνανθίνου σκευασίας. Κεφ. νζ΄.

Οἰνάνθην τὴν ἐκ σταφυλῆς εὐώδη μαράνας, βάλε εἰς ὀμφάκινον ἔλαιον. καὶ κίνει μεταστρέφων. ἐάσας δὲ ἡμέρας δύο, ἔξιπου, καὶ ἀποτίθεσο. Δύναμιν δὲ ἔχει στυπτικὴν ἀναλογοῦσαν τῇ τοῦ ῥοδίνου. ἐκτὸς τοῦ τὴν κοιλίαν λύειν καὶ μαλάσσειν. καὶ τούτου δὲ ἐστὶ δοκιμώτατον, τὸ ἐμφαῖνον ἐν τῇ ὀσμῇ τὴν οἰνάνθην.

### Περὶ τηλίνου σκευασίας. Κεφ. νη΄.

Τήλεως λίτρας ε΄. ἐλαίου λίτρας θ΄. καλάμου λίτραν α΄. κυπείρου λίτρας β΄. ἀπόβρεχε τῷ ἐλαίῳ ἐπὶ ἡμέρας ζ΄. κινῶν ἑκάστης ἡμέρας τρίς. εἶτα ἔξιπου καὶ ἀποτίθεσο. οἱ δὲ, ἀντὶ μὲν καλάμου καρδάμωμον. ἀντὶ δὲ τῆς κυπείρου,

ξυλοβάλσαμον συναποβρέχουσιν. οἱ δὲ, προσύφουσι τὸ ἔλαιον τούτοις. καὶ μετὰ ταῦτα τὴν πάλιν ἀποβρέχοντες ἐξιποῦσι. Δύναμιν δὲ ἔχει μαλακτικὴν. ἀποστημάτων. πεπτικήν. μάλιστα δὲ ἁρμόζει τοῖς περὶ μήτραν πᾶσι σκληρώμασι. δυστοκούσαις τε ἐγχυματίζεται ἐπειδὰν κατὰ ξηρὰ τὰ περὶ τοὺς τόπους γένηται, προεκκριθέντων τῶν ὑγρῶν πρός τε τὰς ἐν δακτυλίῳ φλεγμονάς. καὶ ἐγκλύζεται ἐπὶ τῶν τεινεσμῶν ὠφελίμως. πίτυρά τε καὶ ἀχῶρας σμήχει. καὶ πρὸς κατακαύματα καὶ χίμεθλα ποιεῖ μετὰ κηροῦ. σμήχει τε ἐφηλίδας. καὶ εἰς στιλβώματα μίγνυται. ἐκλέγου δὲ τὸ πρόσφατον καὶ μὴ λίαν μὴ παρεμφαῖνον τὴν τῆς τήλεως ὀσμήν. σμῆχον τὰς χεῖρας. γλυκύπικρον ἐν τῇ γεύσει· τὸ γὰρ τοιοῦτον κάλλιστον.

## Περὶ σαμψυχίνου σκευασίας. κεφ. νθ'.

Ἑρπύλλου κασσίας. ἀβροτόνου. σισυμβρίου. μυρσίνης. πετάλων. σαμψύχου. ἑκάστου αὐτῶν δύναμιν ἀποβλέπων κόπτε ἐν τῷ αὐτῷ πάντα. καὶ ἐπίχεε ἐλαίου ὀμφακίνου τοσοῦτον, ὥστε μὴ κατακρατεῖσθαι τὴν δύναμιν τῶν ἐν αὐτῷ βρεχομένων. καὶ ἔασον ἡμέρας τέτταρας καὶ ἔκθλιβε. καὶ πάλιν τὸ αὐτὸ πλῆθος τῶν αὐτῶν προσφάτων, ἀπόβρεχε τὸν ἴσον χρόνον. καὶ ἐξίπου. ἔσται γὰρ εὐτονώτερον. ἐκλέγου δὲ τὸ μέλαν χλωρὸν τῇ χρόᾳ σάμψυχον, ἐπὶ πολὺ ὄζον μετρίως δριμύ. Δύναμιν δὲ ἔχει θερμαντικὴν. λεπτυντικήν. δριμεῖαν. ποιεῖ δὲ καὶ πρὸς μύσιν καὶ διαστροφὴν ὑστέρας. ἔμμηνά τε καὶ ἔμβρυα ἐπισπᾶται. καὶ πνίγας ὑστερικὰς ἀνακτᾶ τε ὀσφύων τε καὶ βουβώνων ἀλγήματα πραΰνει. σὺν μέλιτι δὲ αὐτῷ χρῆσθαι βέλτιον. ἐπεὶ τῇ σφοδρᾷ στύψει σκληρύνει τοὺς τόπους. λύει καὶ κόπους συγχριόμενον. εἴς τε τὰ ἐπὶ τῶν ὀπισθοτονικῶν καταπλάσματα, ἐπιτηδείως μίγνυται. καὶ τῶν ἄλλως σωομένων.

## Περὶ ὠκιμίνου σκευασίας. κεφ. ξ'.

Λαβὼν ἐλαίου λίτρας κ'. ὠκίμου σταθμῷ λίτρας ια'. οὐγγίας η'. ἀποφυλλίσας, ἀπόβρεχε νύκτα καὶ ἡμέραν ἐν τῷ

ἐλαίῳ. εἶτα ἔξιπου καὶ ἀποτίθεσο. ἐκκενώσας δὲ τὰ ἀπὸ τῆς κυρτίδος, ἐπίχει πάλιν τὸ ἴσον πλῆθος τοῦ ἐλαίου καὶ ἔξιπου. καλεῖται δὲ τοῦτο δευτερεῖον. τρίτην γὰρ οὐκ ἐπιδέχεται βροχήν. εἶτα πρόσφατον ὤκιμον λαβὼν ἴσον, πάλιν ἀπόβρεχε ὡς ἐπὶ τοῦ ῥοδίνου εἴρηται. τὸ δὲ ἤδη ἀποβεβρεγμένον ἐπιχέων καὶ ἐῶν τὸν αὐτὸν χρόνον, ἔκθλιβε καὶ ἀποτίθεσο. καὶ τρὶς δὲ ἢ τετράκις θέλῃς, ἀπόβρεχε. πρόσφατον ἀεὶ ὤκιμον ἐμβάλλων. δύναται δὲ καὶ ἐκ τοῦ ὀμφακίνου σκευάζεσθαι. βέλτιον δὲ ἐκείνως. δύναται δὲ τὰ αὐτὰ τῷ σαμψυχίνῳ ἔλαττον ἐνεργοῦν.

### Περὶ ἀβροτονίνου σκευασίας. Κεφ. ξα΄.

Ἀβροτόνινον. ἐκ τοῦ εἰς τὸ κύπριον ἠρωματισμένου ἐλαίου λίτρας θ΄. οὐγγίας ε΄. ἀβροτόνου φύλλων λίτρας η΄. ἐμβαλὼν καὶ ἀποβρέξας, νύκτα καὶ ἡμέραν ἔξιπου. πολυχρόνιον δὲ εἰ βούλει ποιῆσαι, ἐκβαλὼν τὰ πρῶτα φύλλα, ἔμβαλε ἕτερα φύλλα. καὶ ἐναποβρέχων ἐκπίεζε. δύναμιν δὲ ἔχει θερμαντικήν. ποιοῦσαν πρὸς τὰς ἐν ὑστέρᾳ μύσεις καὶ σκληρίας. ἄγον ἔμμηνα καὶ δεύτερα.

### Περὶ ἀνηθίνου σκευασίας. Κεφ. ξβ΄.

Ἐλαίου λίτρας η΄. οὐγγίας θ΄. ἀνήθου ἄνθους λίτρας ια΄. οὐγγίας η̄. ἐναπόβρεχε τῷ ἐλαίῳ ἡμέραν α΄. εἶτα ἐκπίεζε ταῖς χερσὶ καὶ ἀποτίθεσο. ἐὰν δὲ θέλῃς διάβροχον ποιῆσαι, πρόσφατον ἀνήθου ἄνθος ὡσαύτως ἀπόβρεχε. δύναται δὲ μαλάσσειν τὰ περὶ μήτραν καὶ ἀναστομοῦν. ἁρμόζον πρὸς τὰ περιοδικὰ ῥίγη θερμαῖνον καὶ κόπους λύον καὶ ἀλγήματα ἄρθρων ὠφελοῦν.

### Περὶ σουσίνου σκευασίας. Κεφ. ξγ΄.

Τὸ δὲ σούσινον, ὃ ἔνιοι κρίνινον καλοῦσιν, οὕτω σκευάζεται. ἐλαίου λίτρας θ΄. οὐγγίας ε̄. καλάμου λίτρας ε΄. οὐγγίας γ΄. σμύρνης οὐγγίας ε΄. φυράσας οἴνῳ εὐώδει, ἕψε. εἶτα ἀπηθήσας τὸ ἔλαιον, ἀπόχει μετὰ καρδαμώμου κεκομμένου καὶ βεβρεγμένου ὕδατι ὀμβρίῳ λίτρας γ΄. οὐγγίας ς΄.

καὶ ἐάσας βραχῆναι, ἀπόθλιβε. καὶ λαβὼν ἐκ τοῦ ἐσκευασμένου ἐλαίου τρεῖς καὶ ἥμισυ λίτρας, κρίνα ἀριθμῷ χίλια, ἀποφυλλίσας, θὲς ἐν λουτῆρι πλατεῖ. μὴ βαθεῖ ἐπιχέας τε τὸ ἔλαιον, ἀνακίνει ταῖς χερσὶ μέλιτι κεχρισμέναις. ἐάσας δὲ ἡμέραν μίαν καὶ νύκτα, πρωῒ ἐνελόμενος εἰς πυξίδα, ἔξιπου. τὸ δὲ φερόμενον ἀπήθει εὐθέως ἀπὸ τοῦ συνεκθλιβόντος ὕδατος τῷ ἐλαίῳ. οὐ γὰρ ἐπιμένει ὡς τὸ ῥόδινον. συνθερμαινόμενον δὲ ἀνάζει καὶ σήπεται. μετάγγιζε δὲ πολλάκις εἰς ἕτερα ἀγγεῖα μέλιτι καταχεχρισμένα προσπάσσων ἅλας λεπτόν. καὶ τὴν συλλεγομένην ἀκαθαρσίαν ἐπιμελῶς ἀφαιρῶν. μετακεράσας δὲ ἐκ τοῦ κυρτιδίου τὸ ἐξιπωθὲν ἄρωμα εἰς τὸν λουτῆρα, πάλιν ἐπίχει τοῦ ἠρωματισμένου ἐλαίου τὸ ἴσον πλῆθος τῷ προτέρῳ. καὶ καρδαμώμου κεκομμένου συνέμβαλλε ὁλκὰς ι. καὶ ἀνακινήσας χρησίμως ταῖς χερσί, καὶ ἐπισχὼν μικρόν, ἔξιπου. τὸ ἀπορρέον ἀποκαθαίρων. καὶ τρίτον ἐπιχέας πάλιν τὸ αὐτὸ ποίει. προσεπεμβάλλων καὶ ζ' καρδαμώμου καὶ τοὺς ἅλας ὁμοίως. καὶ τὰς χεῖρας βρέχων τῷ μέλιτι. θλίβων καὶ ἔσται τὸ μὲν πρότερον ἐκπιεσθὲν ἄριστον. ἐχόμενον δὲ τὸ ἑξῆς. τρίτον δὲ τὸ τελευταῖον. καὶ πάλιν λαβὼν χίλια κρίνα καὶ ἀποφυλλίσας διάθες. καὶ ἐπιχέας τὸ πρῶτον ἐξιπωθὲν μεθόδευε. τὰ αὐτὰ ποιῶν ὡς πρότερον ἐποίεις ἐπὶ τοῦ πρώτου. καρδάμωμον παραμίσγων, εἶτα ἐξιπῶν, ποίει τὰ αὐτὰ καὶ ἐπὶ τοῦ δευτέρου καὶ τρίτου ὡς εἴρηται. προσεμβάλλων καὶ τὸ καρδάμωμον. εἶτα ἔξιπου καὶ ποίει τὰ αὐτά. ὁσάκις δ' ἂν ἀποβρέξῃς νεαρὰ κρίνα δυναμικώτερον ἕξεις τὸ μύρον. ἐπὶ τέλει δὲ ὅταν αὐτάρκως ἔχειν σοι δοκῇ, μίσγε ἑκάστῃ σκευασίᾳ σμύρνης χρηστῆς < οβ'. κρόκου < ι'. καρδαμώμου < οε'. οἱ δὲ κρόκου καὶ κινναμώμου τὸ ἴσον κόψας σήσας ἔμβαλε εἰς τὸν λουτῆρα μεθ' ὕδατος. καὶ ἐπίχεε τὸ πρῶτον ἐκπιεσθὲν μύρον. εἶτα ἐάσας μικρόν, ἀναλάμβανε εἰς ἀγγεῖα ξηρὰ προκεκλυσμένα κόμμι ἢ σμύρνῃ. καὶ κρόκῳ καὶ μέλιτι μεθ' ὕδατος δεδευμένοις. τὰ δ' αὐτὰ ποίει καὶ ἐπὶ τοῦ δευτέρου ἐκπιέσματος καὶ ἐπὶ τοῦ τρίτου. ἔνιοι δὲ τὸ ἁπλοῦν ἐξ ἐλαίου βαλανίνου καὶ κρίνου ἢ

ἄλλου

ἄλλου ἐλαίου σκευάζουσι. δοκεῖ δὲ διαφέρειν τὸ ἐν Φοινίκῃ, καὶ ἐν Αἰγύπτῳ γινόμενον. ἄριστον δὲ αὐτοῦ τὸ ὄζον κρίνων. Δύναμιν δὲ ἔχει θερμαντικήν. μαλακτικήν. ἀναστομωτικήν. τῶν περὶ μήτραν μύσεων χρησιμώτατον πρὸς τὰ γυναικεῖα. ἁρμόζει δὲ καὶ πρὸς ἀχῶρας. ἰόνθους. πίτυρα. ἐκζέματα. μώλωπάς τε ταχέως μεταβάλλει καὶ ὁμοχρόους ποιεῖ. καὶ καθόλου ἐστὶν ἀραιωτικόν. ἄγει δὲ καὶ χολὴν κατὰ κοιλίαν πινόμενον. κινεῖ δὲ καὶ οὔρησιν. ἔστι δὲ καὶ κακοστόμαχον. καὶ ναυτίας ποιητικόν.

### Περὶ ναρκισσίνου σκευασίας. Κεφ. ξδʹ.

Ἔλαιον ναρκίσσινον στύφεται οὕτως. ἐλαίου πεπλυμένου λίτρας όʹ. οὐγγίας εʹ. ἀσπαλάθου λίτρας ςʹ. οὐγγίας βʹ. κόψας καὶ βρέξας ὕδατι, τῷ τρίτῳ τοῦ ἐλαίου μίξας, ἕψε. εἶτα ἐξελὼν τὸν ἀσπάλαθον, καλάμου βάλε λίτρας εʹ. οὐγγίας ηʹ. καὶ σμύρνης χόνδρον κόψας καὶ σήσας, φύρασον οἴνῳ παλαιῷ εὐώδει. καὶ μίξας ἕψε. ὅταν δὲ καὶ μετὰ τούτων ἀναζέσῃ, ἐξελὼν ἀπόθου τὸ ἔλαιον ψύγειν. εἶτα λαβὼν ἐκ τοῦ ἐλαίου εἰς λουτῆρα, ἀπόχει. καὶ τοῦ ναρκίσσου ὡς ὅτι πλεῖστον ἔμβαλε τὸ ἄνθος. ἐπὶ ἡμέρας βʹ κενῶν. ὡς ἐπὶ τοῦ σουσίνου. ἐξίπου τε καὶ μετάγγιζε πυκνῶς. καὶ γὰρ τάχιστα σήπεται. ποιεῖ δὲ πρὸς τὰ ἐν ὑστέρᾳ μαλάσσον τὰς περὶ αὐτὴν σκληρείας καὶ μύσεις. ἔστι δὲ κεφαλαλγές.

### Περὶ κροκίνου σκευασίας. Κεφ. ξεʹ.

Κρόκινον δὲ σκευάζων, προστύψεις τὸ ἔλαιον ὡς εἴρηται ἐπὶ τοῦ σουσίνου. πλήθει καὶ σταθμίᾳ τῇ αὐτῇ. λαβὼν δὲ ἐκ τοῦ ἐστυμμένου ἐλαίου εἰς τὸ σούσινον λίτρας τρεῖς ἥμισυ βάλε κρόκου < ηʹ. καὶ ἀνακίνει πολλάκις τῆς ἡμέρας. ποιῶν τοῦτο συνεχῶς ἐπὶ ἡμέρας εʹ. τῇ δὲ ἕκτῃ ἀπήχει τὸ ἔλαιον ἀπὸ τοῦ κρόκου καθαρείως. τῷ δ' αὐτῷ κρόκῳ ἐπίχει τὸ ἴσον πλῆθος τοῦ ἐλαίου καὶ ἀνακίνει ἡμέρας, ιγʹ. εἶτα ἀποχέας πρόσμιξον σμύρνης κεκομμένης καὶ σεσησμένης < μʹ. καὶ κίνει ἐν ὅλμῳ χρησίμως. εἶτα ἀπόθου. ἔνιοι δὲ τὸ ἴσον κύπρινον ἠρωματισμένου ἐλαίου καὶ εἰς τὸ κρόκινον χρῶνται. ἔστι

δὲ αὐτοῦ κράτιστον, τὸ κατακόρως κρόκου πνέον. ὅπερ εἰς τὴν ἰατρικὴν χρῆσιν ἁρμόζει. δεύτερον δὲ τὸ τῇ σμύρνῃ παρεμφερόν. δύναμιν δὲ ἔχει θερμαντικὴν. ὑπνωτικήν. ὅθεν πολλάκις ἐπὶ φρενιτικῶν ἁρμόζει καταβρεχόμενον, ἢ ὀσφραινόμενον. ἢ καὶ κατὰ μυξωτήρων διαχριόμενον. ἔστι δὲ καὶ πυοποιόν. καὶ καθαρτικὸν ἑλκῶν. καὶ πρὸς τὰς ἐν μήτρᾳ σκληρίας καὶ μύσεις καὶ τὰ ἐν αὐτῇ κακοήθη, σὺν κηρῷ καὶ κρόκῳ καὶ μυελῷ καὶ ἐλαίῳ διπλασίονι. συμπέττει γὰρ καὶ μαλάσσει καὶ ὑγραίνει καὶ πραΰνει. ποιεῖ καὶ πρὸς τὰς ἀπογλαυκώσεις μεθ' ὕδατος ὑπαλειφόμενον. ἀναλογεῖ δὲ αὐτῷ καὶ τὸ λεγόμενον βουτύρινον καὶ ὀνύχινον. καὶ στυράκινον. τοῖς ὀνόμασι μόνον διαφέροντα. τῇ μέν τοι σκευασίᾳ καὶ τῇ δυνάμει ὄντα παρόμοια.

Περὶ κυπρίνου στύψεως καὶ σκευασίας ἐλαίου. Κεφ. ξϛ.

Ἐλαίου ὀμφακίνου πεπλυμένου μέρος α΄, ὕδατος ὀμβρείου μέρος αϛ΄. τὸ μὲν ἐπέχει τῷ ἐλαίῳ. τὸ δὲ φύρα σὺν τοῖς ἐμβληθησομένοις ἀρώμασιν. εἶτα λαβὼν ἀσπαλάθου λίτρας ε΄. ἥμισυ, καλάμου λίτρας ϛ΄. ἥμισυ. σμύρνης λίτραν α΄. καρδαμώμου λίτρας γ΄. οὐγγίας θ΄. καὶ ἐλαίου λίτρας θ΄. οὐγγίας ε΄, τὴν ἀσπάλαθον κόψας καὶ βρέξας ἐν ὕδατι ἐμβαλὼν, ἕψε μετὰ τοῦ ἐλαίου ἕως ἂν συναναζέσῃ. τὴν δὲ σμύρναν διεὶς οἴνῳ παλαιῷ εὐώδει τὸν κάλαμον κεκομμένον συναναφύρα μετὰ τῆς σμύρνης. καὶ ἐξελὼν τὴν ἀσπάλαθον, ἔμβαλε τὸ φύραμα τοῦ καλάμου. ὅταν δὲ μετὰ τούτου ζέσῃ, καθελὼν ἀπήθησον τοῦ χαλκοῦ τὸ ἔλαιον. καὶ κατάχει κατὰ τοῦ καρδαμώμου κεκομμένου καὶ πεφυραμένου τῷ λοιπῷ ὕδατι. καὶ κίνει σπάθῃ. ἕως ἂν ψυγῇ μὴ διαλείπων. εἶτα ἀπηθήσας τὸ ἔλαιον, ἔμβαλε εἰς τὰς κη΄. τοῦ ἐλαίου λίτρας, ἄνθους κυπείρου λίτρας μϛ΄. οὐγγίας η΄. ἐάσας τε ἀποβραχῆναι, ἐξίπωσον διὰ σπυρίδος. ἐὰν δὲ πλείω θέλῃς, τοῦ νεαροῦ ἄνθους τὸ ἴσον ἐμβαλὼν πλῆθος ὁμοίως ἐξίπου. ἐάν τε δίβροχον ἐάν τε τρίβροχον βούλῃ ποιεῖν. δυναμικώτερον γὰρ γίνεται. ἐκλέγεσθαι δὲ δεῖ τὸ χρηστὸν καὶ μετ' εὐωδίας πληκτικόν. ἔνιοι δὲ καὶ κιννάμωμον μίσγουσι. Δύναμιν δὲ

ἔχει θερμαντικήν. μαλακτικήν. ἀναστομωτικήν. ἁρμόζουσαν τοῖς περὶ μήτραν καὶ νεῦρα πάθεσι. καὶ πλευριτικοῖς καὶ κατάγμασι. καθ' ἑαυτὸ καὶ κηρωτῇ μιγνύμενον. μίγνυται δὲ καὶ μαλάγμασι τοῖς ἁρμόζουσιν. ὀπισθοτονικοῖς. συναγχικοῖς. βουβώνων φλεγμονῇ. καὶ ἀκόποις.

Περὶ στύψεως ἰρίνου. Κεφ. ξζ'.

Σπάθης λίτρας ς'. οὐγγίας η'. ἐλαίου λίτρας ογ'. οὐγγίας ε'. κόψας ὡς λεπτότατα, μίξον ὕδατος κοτύλας ι'. καὶ βαλὼν ἐς χαλκοῦν, ἕψε μέχρις ἂν οὗ τὴν ὀσμὴν ἀναλάβοι. εἶτα ἀπήθει εἰς κρατῆρα μέλιτι κατακεχρισμένον. ἐκ τούτου τοῦ ἠρωματισμένου ἐλαίου, τὸ πρῶτον ἴρινον σκευάζεται. ἐναποβρεχθείσης τῷ ἐστυμμένῳ ἐλαίῳ ἴρεως ὡς ὑπογέγραπται. ἢ οὕτως. ἐλαίου λίτρας ο'. οὐγγίας ε'. ξυλοβαλσάμου λίτρας ε'. οὐγγίας β'. κόψας ὡς εἴρηται, σύνεψε. εἶτα ἐξελὼν τὸ ξυλοβάλσαμον, πρόσεμβαλε καλάμου κεκομμένου λίτρας θ'. οὐγγίας ι'. σμύρνης χόνδρον οἴνῳ παλαιῷ ἐμβρέχων δεύει. εἶτα λαβὼν ἐκ τοῦ ἐστυμμένου ἐλαίου καὶ ἠρωματισμένου λίτρας ιδ'. ἐναποβρέχει ἴρεως κεκομμένης ἴσον τῷ σταθμῷ. ἐῶν ἡμέρας β'. καὶ νύκτας β'. εἶτα ἐξίπου βιαίως καὶ νεανικῶς. καὶ εἰ βούλει δυναμικώτερον εἶναι, τὸν ἴσον σταθμὸν καὶ δὶς καὶ τρὶς ὁμοίως ἐναποβρέχων ἐξίπου. κράτιστον δὲ ὑπάρχει τὸ ἐν ὀσφρήσει μηδενὸς ἄλλου, μόνης δὲ τοῦ ἴρεως ποιοῦν. τοιοῦτον δέ ἐστι τὸ ἐν Πέργῃ τῆς Παμφυλίας, καὶ ἐν Ἤλιδι τῆς Ἀχαΐας γινόμενον. Δύναμιν δὲ ἔχει μαλακτικήν. θερμαντικήν. ἐσχάρας τε καὶ σηπεδόνας καὶ ῥυπαρίας ἀνακαθαίρει. καὶ ταῖς περὶ μήτραν διαθέσεσιν ἁρμόζει. φλεγμοναῖς τε καὶ μύσεσιν. ἔμβρυά τε ἐκβάλλει. καὶ αἱμορροΐδας ἀναστομοῖ. πρός τε ἤχους ὤτων σὺν ὄξει καὶ πηγάνῳ καὶ πικροῖς ἀμυγδάλοις. καὶ πρὸς καταῤῥους χρονίζοντας. διαχριομένων τῶν μυξωτήρων. καὶ πρὸς ὀζαίνας. καθαίρει δὲ καὶ τὴν κοιλίαν, κυάθου πλῆθος ποθέν. ποιεῖ καὶ πρὸς εἰλεώδη. κινεῖ καὶ οὖρα. καὶ ἰᾶται τῶν δυσχερῶς ἐμούντων. διαχριομένων τῶν δακτύλων. ἢ τῶν ἐμετηρίων. καὶ ἰᾶται συναγχικῶν διαχριόμενον ἢ ἀναγαργαριζόμενον

σὺν μελικράτῳ. καὶ πρὸς τραχύτητα ἀρτηρίας. δίδοται καὶ τοῖς κώνειον ἢ μύκητας ἢ κόριον πεπωκόσιν.

### Περὶ Γλευκίνου σκευασίας. ΚΕΦ. ξή.

Γλεύκινον δὲ σκευάζεται τὸ ἁπλοῦν. ἐκ τοῦ ἐλαίου ὀμφακίνου, καὶ σχοίνου, καὶ καλάμου, καὶ νάρδου κελτικῆς. καὶ σπάθης, καὶ ἀσπαλάθου. καὶ μελιλώτου. καὶ κόστου. καὶ γλεύκους συμπεριτιθεμένων τῶν στεμφύλλων τῷ ἔχοντι ἀγγείῳ τὰ ἀρώματα καὶ τὸν οἶνον. καὶ τὸ ἔλαιον. κινεῖται δὲ ἐπὶ ἡμέρας λ΄ δὶς τῆς ἡμέρας. καὶ μετὰ ταῦτα ἐκπιεσθὲν, ἀποτίθεται. Δύναμιν δὲ ἔχει θερμαντικὴν. μαλακτικὴν. ἀνετικήν. ποιοῦσαν πρὸς τὰ ῥίγη καὶ τὰ νευρικὰ πάθη. καὶ τὰ ἐν ὑστέρᾳ. πάντως δὲ ἀκόπου μᾶλλον ὠφελεῖ μαλακτικὸν ὄν.

### Περὶ Ἀμαρακίνου. ΚΕΦ. ξθ.

Ἀμαράκινον δὲ ἐν Κυζίκῳ κάλλιστον γίνεται. σκευάζεται δὲ διά τε ὀμφακίνου ἐλαίου καὶ βαλανίνου στυφομένων. ξυλοβαλσάμῳ. σχοίνῳ. καλάμῳ. ἡδυνομένων δὲ, ἀμαράκῳ. κόστῳ. ἀμώμῳ. νάρδῳ. καρποβαλσάμῳ καὶ σμύρνῃ. οἱ δὲ πολυτελέστερον αὐτὸ ποιοῦντες, μίσγουσι καὶ κινάμωμον. παραλαμβάνεται δὲ μέλι καὶ οἶνος εἰς τὴν τῶν ἀστείων χρῆσιν καὶ φύρασιν τῶν κεκομμένων ἀρωμάτων. ἔστι δὲ θερμαντικόν. καρωτικόν. ἀναστομωτικόν. μαλακτικόν. πυρωτικόν. οὐρητικόν. εὔχρηστον εἴς τε τὰς σήπας καὶ συρίγγας. καὶ ὑδροκήλας μετὰ τὰς χειρουργίας. περιρρήσσει τε τὰς ἐσχάρας καὶ τὰ τεθηριωμένα ἕλκη. πρός τε δυσουρίαν ἁρμόζει περιχριομένου τοῦ δακτύλου. καὶ πρὸς τὰς φλεγμονὰς αὐτοῦ. καὶ πρὸς αἱμορροΐδων ἀναστόμωσιν περιχριόμενον. ἔμμηνά τε κινεῖ προστιθέμενον τῇ μήτρᾳ. καὶ σκληρίας καὶ οἰδήματα ἐν ὑστέρᾳ διαφορεῖ. καὶ πρὸς τὰ νευρόβρωτα καὶ μυόβρωτα, συμφέρει ἐν πλήμασιν ἀραιῶς βρεχόμενον καὶ ἐπιτιθέμενον.

### Περὶ Μεγαλείου. ΚΕΦ. ό.

Τὸ δὲ μεγάλειον καλούμενον, πάλαι μέν ποτε ἐσκευάζετο. ἐκλέλοιπε δὲ νῦν. πρὸς ἐκπλήρωσιν δὲ τῆς ἱστορίας, οὐκ ἔστιν

ἄτοπον ἐπιμιχθῆναι. καὶ τούτου δὲ σκευασία ἡ αὐτὴ τῷ ἀμαρακίνῳ. πλεονάζει δὲ τῇ ῥητίνῃ. καὶ ταύτῃ διαφέρει. ἔστι δὲ μαλακτικὸν ἠπίως. ἡ μέντοι ῥητίνη μίγνυται τοῖς μύροις. οὔτε φυλακῆς οὔτε ἡδονῆς χάριν. χρώματος δὲ καὶ πάχους ἕνεκα. μίγνυται δὲ ἡ τερεβινθίνη ἀφεψομένη, ἄχρις ἂν ἄκοσμος γένηται. δηλωθήσεται δὲ ἐν τοῖς περὶ ῥητίνης ἡ ἕψησις αὐτῆς.

Περὶ ἡδυχρόου. ΚΕΦ. οα.

Καὶ τὸ καλούμενον δὲ ἡδύχρουν, σκευαζόμενον δὲ ἐν Κῷ τῆς αὐτῆς ἔχεται δυνάμεώς τε καὶ σκευασίας τῷ ἀμαρακίνῳ. εὐωδέστερον δὲ τυγχάνει.

Περὶ Μετωπίου. ΚΕΦ. οβ.

Σκευάζεται δὲ καὶ ἐν αἰγύπτῳ μύρον. ἐπιχωρίως ὑπ᾽ αὐτῶν καλούμενον μετώπιον. διὰ τὴν τῆς χαλβάνης μίξιν. τὸ γὰρ ξύλον ἐξ οὗ γεννᾶται ἡ χαλβάνη, μετώπιον καλεῖται. δι᾽ ἀμυγδάλων δὲ πικρῶν καὶ ἐλαίου ὀμφακίνου καὶ καρδαμώμου σχίνου τε καὶ καλάμου καὶ μέλιτος καὶ οἴνου καὶ σμύρνης καὶ βαλσάμου καρποῦ καὶ χαλβάνης καὶ ῥητίνης συντίθεται. δόκιμον δέ ἐστι τὸ βαρύοσμον καὶ λιπαρόν. ἐμφαῖνον μᾶλλον τὸ καρδαμώμου καὶ τῆς σμύρνης. ἢ τὸ τῆς χαλβάνης. σφόδρα δὲ θερμαίνει καὶ πυροῖ καὶ ἀναστομοῖ. ἐπισπᾶταί τε καὶ καθαίρει ἕλκη. πρός τε νεῦρα καὶ μύας διακοπέντα ποιεῖ. ὑδροκήλας τε σὺν σηπτοῖς. μίγνυται δὲ καὶ μαλάγμασι καὶ κηρωταῖς. πρός τε ῥίγη καὶ ὀπισθοτονικῶς σπωμένους χρησιμεύει. κινεῖ δὲ καὶ ἱδρῶτας. καὶ ἀναστομοῖ τὰ περὶ ὑστέραν. καὶ σκληρείας τὰς περὶ αὐτὴν χαλᾷ. καὶ καθόλου μαλακτικὴν ἔχει τὴν δύναμιν.

Περὶ Μενδησίου. ΚΕΦ. ογ.

Καὶ τὸ μενδήσιον δὲ λεγόμενον, ἐκ τοῦ βαλανίνου ἐλαίου καὶ σμύρνης καὶ κασσίας καὶ ῥητίνης σκευάζεται. ἔνιοι δὲ μετὰ τὸν κατασταθμισμὸν, κινναμώμου μικρὸν προσεμβάλλουσιν ἀνωφελῶς. οὐκ ἐκδίδωσι γὰρ τὰ μὴ συνεψηθέντα τὴν δύναμιν. ἐμφερῆ δὲ ἔχει τὴν ἐνέργειαν τῷ μετωπίῳ. ἥττονα μέντοι.

### Περὶ Στακτῆς. Κεφ. οδ΄.

Στακτὴ δὲ καλεῖται, προσφάτου σμύρνης τὸ λιπαρόν. κεκομμένης μεθ᾽ ὕδατος ὀλίγου. ἀποτεθλιμμένης τε δι᾽ ὀργάνου. εὐώδης τε λίαν καὶ πολυτελής ἐστι. καὶ καθ᾽ ἑαυτὴν οὖσαν μύρον τὸ καλούμενον στακτή. δόκιμος δέ ἐστιν ἡ ἀμιγὴς ἐλαίῳ καὶ ἐν ἐλαχίστῳ πλείστην δύναμιν κεκτημένη. οὖσαν θερμαντικήν. ἀναλογοῦσαν τῇ σμύρνῃ καὶ τοῖς θερμαίνουσι τῶν μύρων.

### Περὶ Κινναμωμίνου. Κεφ. οε΄.

Κινναμώμινον δὲ ἔκ τε ἐλαίου βαλανίνου καὶ συμμάτων ξυλοβαλσάμου. καλάμου. σχίνου. ἡδυσμάτων δὲ, κινναμώμου. βαλσάμου καρποῦ. σμύρνης τετραπλασίονος παρὰ τὸ κιννάμωμον σκευάζεται. μίγνυται δὲ καὶ μέλι εἰς τὴν φύρασιν. δόκιμον δέ ἐστι τὸ δριμύ. μαλακὸν δὲ τῇ ὀσμῇ. καὶ παρεμφαῖνον σμύρνης. παχύ τε καὶ εὐῶδες. ἄγαν δὲ τῇ γεύσει πικρόν. τὸ γὰρ τοιοῦτον οὐκ ἐκ ῥητίνης. ἀλλ᾽ ἐκ σμύρνης ἔχει τὸ πάχος. ἡ γὰρ ῥητίνη οὐ προσδίδωσι πικρίαν. οὐδὲ εὐωδίαν.

Δύναμιν δὲ ἔχει σφόδρα δριμεῖαν καὶ θερμαντικὴν καὶ πικράν. ἀναστομοῖ γοῦν θερμαίνουσα καὶ διαφορεῖ. καὶ διαχεῖ. καὶ ἐπισπᾶται ὑγρά. καὶ πνεύματα. ἔστι δὲ καρηβαρικόν. ποιεῖ δὲ καὶ πρὸς τὰ περὶ μήτραν σὺν ἐλαίῳ διπλασίονι καὶ κηρῷ. καὶ μυελῷ. οὕτω γὰρ ἀποβάλλει τὸ πολὺ τῆς δριμύτητος. καὶ γίνεται μαλακτικόν. ἄλλως γὰρ συγκαίει καὶ σκληρύνει βιαιότατα πάντων τῶν παχέων μύρων. ποιεῖ καὶ πρὸς σύριγγας καὶ σηπτὰς ἐναργῶς. καὶ πρὸς ὑδροκήλας καὶ ἄνθρακας καὶ γαγγραίνας σὺν καρδαμώμῳ. πρός τε ῥίγη τὰ περιοδικὰ καὶ πρὸς τρόμους. καὶ τοὺς ἀπὸ τῶν ἰοβόλων θηρίων δακνομένους ἐν συγχρίσματι. ἐπίθεμά τε σκορπιοπλήκτοις καὶ φαλαγγιοδήκτοις.

### Περὶ Ναρδίνου μύρου, Κεφ. ος΄.

Νάρδινον μύρον ποικίλως σκευάζεται διά τε τοῦ μαλαβαθρίνου φύλλου καὶ δίχα τούτου. ὡς τὸ πολὺ δὲ μίγνυται τῷ βαλανίνῳ ἐλαίῳ, ἢ ὀμφακίνῳ. πρὸς μὲν τὴν στῦψιν τοῦ ἐλαίου σχῖνος. πρὸς δὲ τὴν εὐωδίαν κόστος. ἄμωμον. νάρδον. σμύρνα.

βάλσαμον. ἔστι δὲ χρηστὴ ἡ λεπτή· μὴ δριμεῖα· ἔχουσα τὴν εὐω-
δίαν τῆς ξηρᾶς νάρδου ἢ ἀμώμου. Δύναμις δὲ αὐτῆς λεπτυν-
τική· δριμεῖα· σμηκτική· ἀραιωτικὴ ὑγρῶν· θερμαντική· ὑ-
γρὰ δὲ ἐστὶ καὶ οὐ γλοιώδης, ἐὰν μὴ ῥητίνην ἔχῃ. σκευάζε-
ται δὲ καὶ λιτὴ δι᾽ ὀμφακίνου ἐλαίου καὶ σχίνου, καὶ καλά-
μου, καὶ κόστου, καὶ νάρδου.

### Περὶ Μαλαβαθείνου. Κεφ. οζ΄.

Τὸ δὲ μαλαβάθεινον, ἔχει μὲν στύμματα ἃ καὶ ἡ νάρδος. σμύρ-
νης δὲ πλέον. διὸ καὶ γίνεται θερμαντικόν· ἀναλογοῦν τῷ
κροκίνῳ καὶ ἀμαρακίνῳ τὴν δύναμιν.

### Περὶ Σμύρνης. Κεφ. οη΄.

Σμύρνα δάκρυόν ἐστι δένδρου γεννωμένου ἐν Ἀραβίᾳ· ὅμοιον
τῇ αἰγυπτιακῇ ἀκάνθῃ· οὗ ἐγκοπτομένου ἀπορρέει τὸ δάκρυον
εἰς ὑπεστρωμένας ψιάθους· τὸ δὲ, ἐπὶ τῷ στελέχει προσπή-
γνυται. καὶ λέγεται αὐτοῦ ἡ μέν τις πεδιάσιμος λιπαρά·
ἧς πιεζομένης, ἡ στακτὴ λαμβάνεται. ἡ δέ τις γαβιρέα λιπα-
ρωτάτη· ἐν εὐγείοις καὶ λιπαροῖς τόποις γεννωμένη. ἣ καὶ πολ-
λὴν ἀνίησι τὴν στακτήν. πρωτεύει δὲ ἡ τρωγλοδυτικὴ καλου-
μένη, ἀπὸ τῆς γεννώσης αὐτὴν χώρας. ὑπόχλωρος καὶ δηκτι-
κὴ οὖσα. διαυγής. συλλέγεται δέ τις καὶ λεπτὴ μετὰ τὴν
τρωγλοδυτικὴν ἀριθμουμένη. ἐνάπαλλος ὡς τὸ βδέλλιον. ὑ-
πόβρωμος τῇ ὀσμῇ. ἐν εὐηλίοις τόποις γεννωμένη. ἡ δέ τις
καυκαλὶς λεγομένη. ὑπέρωρος μέλαινα. κατοπτος. ἡ δὲ χει-
ρίστη ἐν ἁπάσαις, ἐργασίμη καλεῖται. ψαφαρὰ καὶ ἀλιπής.
δριμεῖα. κομμίζουσα τῇ ὄψει καὶ τῇ δυνάμει. καὶ ἡ ἀμιναία
δὲ καλουμένη, ἀδόκιμος. καὶ πιέσματα δὲ ἐξ αὐτῶν γίνε-
ται. ἀπὸ μὲν τῶν λιπαρῶν εὐώδη καὶ λιπαρά. ἀπὸ δὲ τῶν
ξηρῶν ἀλιπῆ καὶ οὐκ εὐώδη. ἄτονος διὰ τὸ μὴ προσειληφέ-
ναι ἔλαιον εἰς τὴν ἀνάπλασιν. δολίζεται δὲ κόμμι βραχέν-
τι σμύρνης ἀποβρέγματι καὶ μιγνυμένῳ. ἐκλέγου δὲ τὴν
νέαν. ψαθυράν. κούφην. ὁμόχρουν πανταχόθεν. καὶ τὴν ἐν τῷ
θλασθῆναι, ἔνδοθεν, λευκὰς, ὀνυχοειδεῖς, ἔχουσαν διαφύσεις.
λείαν. μικρόβωλόν τε καὶ πικράν. εὐώδη. δριμεῖαν. θερμαν

τικήν. ἡ δὲ βαρεῖα καὶ τῇ χρόᾳ πισσώδης, οὐκ ἔστιν ἄχρηστος. Δύναμιν δὲ ἔχει θερμαντικήν. καρωτικήν. κωλυτικήν. ξηραντικήν. στυπτικήν. μαλάσσει δὲ καὶ μήτραν μεμυκυῖαν καὶ ἀναστομοῖ. ἄγει δὲ καὶ ἔμμηνα καὶ ἔμβρυα συντόμως, σὺν ἀψινθίῳ ἢ θέρμων ἀποβρέγματι. ἢ πηγάνου χυλῷ προστεθεῖσα. λαμβάνεται δὲ αὐτὴ καταποτίου, μέγεθος κυάμου πρὸς βῆχα χρονίαν καὶ ὀρθόπνοιαν. καὶ πλευρᾶς πόνον καὶ θώρακος. λύσιν τε κοιλίας. καὶ δυσεντερίας. λύει δὲ καὶ ῥίγη. πρὸ δύο ὡρῶν τῆς ἐπιβολῆς μετὰ πεπέρεως καὶ ὕδατος τὸ μέγεθος κυάμου ποθεῖσα. ἀρτηρίας τε τραχύτητα καὶ δασυσμοὺς φωνῆς, ἀποκαθίστησιν ὑποτιθεμένη τῇ γλώττῃ καὶ ἀποχυλιζομένη. κτείνει δὲ καὶ ἕλμινθας. καὶ πρὸς δυσωδίαν στόματος διαμασᾶται. πρὸς δὲ μασχαλῶν πόνους, μετὰ στυπτηρίας ὑγρᾶς διαχρίεται. σὺν οἴνῳ δὲ καὶ ἐλαίῳ διακλυζομένη, ὀδόντας καὶ οὖλα κρατύνει. κολλᾷ δὲ καὶ τὰ ἐν τῇ κεφαλῇ τραύματα ἐπιπασσομένη. καὶ τὰ τεθλασμένα ὦτα καὶ ἐψιλωμένα ὀστᾶ, ἰᾶται σὺν κοχλίου σαρκὶ ἐπιχριομένη. καὶ τὰ πυορροοῦντα τῶν ὤτων καὶ φλεγμαίνοντα. σὺν μηκωνίῳ καὶ καστορίῳ καὶ γλαυκίῳ. πρὸς δὲ ἴονθους μετὰ κασσίας καὶ μέλιτος ἐπιχρίεται. λειχῆνας τε ἀποσμήχει σὺν ὄξει. καὶ τρίχας ῥεούσας μετὰ λαδάνου καὶ οἴνου καὶ μυρσινίνου καταχριομένη ῥώννυσι. πραΰνει δὲ καὶ τοὺς χρονίους κατάρρους διαχριομένη περὶ τῶν μυξωτήρων. πληροῖ καὶ τὰ ἐν ὀφθαλμοῖς ἕλκη. καὶ καθαίρει τὰ λευκώματα καὶ τὰ ἐπισκοτοῦντα ταῖς κόραις. καὶ τραχώματα σμήχει. γίνεται δὲ καὶ λιγνὺς ἐξ αὐτῆς ὁμοίως τῇ ἐκ τοῦ λιβάνου. ὡς ὑποδείξομεν, ἁρμόζουσα πρὸς τὰ αὐτά.

Περὶ βοιωτικῆς σμύρνης. κεφ. οθ΄.

Ἡ δὲ βοιωτικὴ σμύρνα, ἔστι δένδρου τινὸς ἐν βοιωτίᾳ γιννομένου ῥίζα τετμημένη. ἐκλέγου δὲ τὴν ἐμφερῆ σμύρνῃ κατὰ τὴν εὐωδίαν. Δύναμιν δὲ ἔχει θερμαντικήν. μαλακτικήν. διαλυτικήν. μίγνυται δὲ καὶ θυμιάμασι χρήσιμος.

Περὶ στύρακος. κεφ. π΄.

Στύραξ δάκρυόν ἐστι δένδρου τινὸς ὁμοίου κυδωνίῳ. διαφέρει δὲ αὐτοῦ ὁ ξανθὸς καὶ λιπαρὸς ῥητινώδης. θρόμβους ἔχων ὑπολεύκους. ἐπιδιαμένων τῇ εὐωδίᾳ ὡς ὅτι πλεῖστον. καὶ ἐν τῷ μαλάσσεσθαι ἀνιεὶς ὑγρασίαν τινὰ μελιτώδη. τοιοῦτος δέ ἐστιν ὁ καταβαλίτης καὶ πισιδιακὸς καὶ κιλίκιος. φαῦλος δὲ ὁ μέλας καὶ ψαθυρός. καὶ πιτυρώδης. εὑρίσκεται δὲ καὶ δάκρυον κόμμι ἐοικός. διαυγές. σμυρνίζον. ὀλίγον δὲ τοῦτο γεννᾶται. δολίζουσι δὲ αὐτὸν τοῖς ἐκ τοῦ δένδρου πρίσμασιν ἅπερ ὑπὸ τῶν σκωλίκων ἀνατιτρᾶται μιγνυμένῃ καὶ μέλιτι καὶ ἴρεως ὑποστάθμῃ. καὶ ἄλλοις τισίν. ἔνιοι δὲ κηρὸν ἢ στέαρ ἀρωματίσαντες συμμαλάσσουσιν ἐν τοῖς ὀξυτάτοις ἡλίοις τῷ στύρακι. καὶ δι' ἠθμοῦ εὐρυτρήτου, ἐκθλίβουσιν εἰς ὕδωρ ψυχρὸν ποιοῦντες. σκωλίκια καὶ πωλοῦσι. σκωλικίτην ὀνομάζοντες. ἐγκρίνουσι δὲ οἱ ἄπειροι τὸν τοιοῦτον ὡς ἀκέραιον. οὐ προσέχοντες τῇ κατὰ τὴν ὀσμὴν εὐτονίᾳ. δριμὺς γὰρ λίαν ἐστὶν ὁ ἄδολος. Δύναμιν δὲ ἔχει θερμαντικήν. μαλακτικήν. πεπτικήν. ποιῶν πρὸς βῆχας καὶ κατάρρους. κορύζας. βράγχους. ἀποκοπὴν φωνῆς. ἁρμόζει καὶ πρὸς τὰς ἐν ὑστέρᾳ μύσεις καὶ σκληρίας. ἔμμηνά τε ἄγει πινόμενος καὶ προστιθέμενος. κοιλίαν τε κούφως μαλάττει καταπινόμενος ὀλίγος μετὰ ῥητίνης τερεβινθίνης. μίγνυται δὲ καὶ μαλάγμασι διαφορητικοῖς καὶ ἀκόποις χρησίμως. καίεται δὲ καὶ ὀπτᾶται καὶ φώγνυται καὶ θαλοῦται ὡς λίβανος. ἁρμόζει τε ἡ αἰθάλη πρὸς ἃ καὶ ἡ τοῦ λιβάνου. τὸ δὲ ἐξ αὐτοῦ σκευαζόμενον χρῖσμα ἐν τῇ συρίᾳ στυράκινον, θερμαίνει καὶ μαλάττει ἰσχυρῶς. κεφαλαλγὲς μέντοι καὶ βαρὺ καὶ καρωτικὸν καθέστηκεν.

Περὶ βδελλίου. Κεφ. πα΄.

Βδέλλιον. οἱ δὲ μάδελκον, οἱ δὲ βολχὸν καλοῦσι. δάκρυον ἐστὶ δένδρου σαρακηνικοῦ. δόκιμον δὲ ἐστὶν αὐτοῦ τὸ τῇ γεύσει πικρόν. διαυγές. ταυροκολλῶδες. λιπαρὸν διὰ βάθους καὶ εὐμάλακτον. ἀμιγὲς ξύλων καὶ ῥυπαρείας. εὐῶδες ἐν τῇ θυμιάσει. ἐοικὸς ὄνυχι. ἔστι δὲ καὶ ἕτερον ῥυπαρὸν καὶ μέλαν, ἁδρόβωλον. παλαθῶδες. κομιζόμενον ἀπὸ τῆς ἰνδικῆς. φέρεται δὲ ἀπὸ τῆς πέτρας. ξηρόν. ῥητινῶδες. ὑποπέλιον. δι-

τερεῦον τῇ δυνάμει. δολοῦται δὲ μιγνύμενον κόμμι. τὸ δὲ τοιοῦτον οὐχ ὁμοίως πικραίνει τὴν γεῦσιν. ἔν τε τῇ ὑποθυμιάσει, οὐχ οὕτως εὐώδες ἐστί. Δύναμιν δὲ ἔχει θερμαντικήν. μαλακτικήν. διαλυτικὴν. βρογχοκηλῶν καὶ σκληρειῶν καὶ ὑδροκηλῶν. ἐνεθὲν πτυέλω ἀσίτου. ἀνασπασμοῖ καὶ τὴν μήτραν προστιθέμενον καὶ ὑποθυμιώμενον. ἐφέλκεται δὲ καὶ τὰ ἔμβρυα καὶ πᾶσαν ὑγρασίαν. θρύπτει δὲ καὶ λίθους πινόμενον. καὶ οὖρα ἄγει. βηχικοῖς τε καὶ θηριοδήκτοις, ὠφελίμως δίδοται. ἀγαθὸν δὲ καὶ πρὸς ῥήγματα. σπάσματα. καὶ πλευρᾶς πόνον καὶ διαδρομὰς πνευμάτων. μίσγεται δὲ καὶ μαλάγμασι τοῖς ἁρμόζουσι πρὸς τὰς σκληρείας καὶ δέσεις τῶν νεύρων. κατεργάζεται κοπτόμενον, παραχεομένου οἴνου ἢ ὕδατος θερμοῦ.

## Περὶ λιβάνου. κεφ. πβ΄.

Λίβανος γεννᾶται μὲν ἐν ἀραβίᾳ τῇ λιβανοφόρῳ καλουμένῃ. πρωτεύει δὲ ὁ ἄρρην καλούμενος σταγονίας. στρογγύλος φυσικῶς. ἔστι δὲ ὁ τοιοῦτος ἄτομος λευκός τε καὶ θλασθεὶς ἔνδοθεν λιπαρός. ἐπιθυμιαθείς τε ταχέως ἐκκαιόμενος. ὁ δὲ ἰνδικὸς ὑπόκιρρός τε ἐστὶ, καὶ πελιὸς τὴν χρόαν. γίνεται δὲ καὶ κατὰ τὴν ἐπιτήδευσιν στρογγύλος. τέμνοντες γὰρ αὐτὸν εἰς τετράγωνα σχήματα καὶ βάλλοντες εἰς κεράμεια, κυλίουσιν ἕως ἂν ἀπολάβοι τὸ στρογγύλον σχῆμα. χρόνῳ δὲ ὁ τοιοῦτος ξανθοῦται. ἄτομος ἡ σύαγρος καλούμενος. δευτερεύει δὲ ὁ ἀράβιος καὶ ὁ ἐν ἀμίλῳ. ὃν ἔνιοι κοπίσκον καλοῦσι. μικρότερον καὶ κιρρότερον ὄντα. λέγεται δέ τις καὶ ἀμωμίτης. ἄλλως μὲν λευκός. ἐν δὲ τῷ μαλάσσεσθαι ἐνδιδοὺς ὡς μαστίχη. δολοῦται δὲ πᾶς λίβανος τῇ πιτυίνῃ ῥητίνῃ μεθοδευόμενος. καὶ κόμμι. εὐχερὴς δέ ἐστιν ἡ διάγνωσις. τὸ μὲν γὰρ κόμμι οὐκ ἐκφλογοῦται θυμιώμενον. ἡ δὲ ῥητίνη εἰς καπνὸν ἐκτυφοῦται. ὁ δὲ λίβανος ἐξάπτεται. δηλοῖ δὲ καὶ ἡ ὀσμὴ τὸ τοιοῦτο. Δύναται δὲ θερμαίνειν, στύφειν, ἀποκαθαίρειν τὰ ἐπισκοτοῦντα ταῖς κόραις. καὶ τὰ κοῖλα τῶν ἑλκῶν πληροῦν καὶ ἀπουλοῦν. κολλᾶν τε ἔναιμα τραύματα. αἱμορραγίας τε παύειν, καὶ τὴν ἐκ μηνίγγων

ἐπέχειν. παρηγορεῖ καὶ τὰ περὶ δακτύλιον καὶ τὰ λοιπὰ μόρια κακοήθη. ἔμμοτος λεῖος σὺν γάλακτι. καὶ τὰς ἐν ἀρχῇ μυρμηκίας καὶ λειχῆνας, σὺν ὄξει καὶ πίσσῃ καταχριόμενος αἴρει. καὶ τὰ πυρίκαυτα δὲ ἕλκη καὶ χίμεθλα ἰᾶται σὺν στέατι χοιρείῳ ἢ χηνείῳ. ἀχῶρας δὲ σὺν νίτρῳ σμώμενος ἰᾶται. παρωνυχίας τε σὺν μέλιτι· ὤτων θλάσεις σὺν πίσσῃ. πρὸς δὲ τὰ λοιπὰ ἀλγήματα τῶν ὤτων, σὺν οἴνῳ γλυκεῖ ἐγχεόμενος. μαστούς τε τοὺς ἀπὸ τοκετῶν φλεγμαίνοντας σὺν κιμωλίᾳ καὶ ῥοδίνῳ καταχριόμενος ὠφελεῖ. μίγνυται δὲ καὶ τοῖς πρὸς ἀρτηρίαν ὠφελίμως. καὶ τοῖς σπλαγχνικοῖς φαρμάκοις. αἱμοπτοϊκούς τε ὠφελεῖ πινόμενος. μανιώδης δέ ἐστι πινόμενος ὑπὸ τῶν ὑγιαινόντων. πλείων δὲ μετ' οἴνου ποθεὶς καὶ κτείνει. καίεται δὲ λίβανος ἐπ' ὀστράκου καθαροῦ τεθείς. ὑφαπτόμενός τε χόνδρῳ ἀναφθέντι ἀπὸ λύχνου, ἄχρις ἂν ἐκκαῇ. δεῖ δὲ μετὰ τὴν τελείαν καῦσιν πωμάζειν τινὶ ἄχρις ἂν σβεσθῇ. οὕτω γὰρ οὐκ ἐκτεφροῦται. ἔνιοι δὲ περιτιθέασι τῷ λοπαδίῳ ἀγγεῖον χαλκοῦν, κοῖλον κατὰ μέσον τετρημμένον. πρὸς ἔκληψιν τῆς λιγνύος, ὡς ὑποδείξομεν ἐν τῷ περὶ αἰθάλης λιβάνου λόγῳ. οἱ δὲ εἰς ὠμὴν χύτραν βάλλοντες καὶ περιπλάσσοντες πηλῷ, καίουσιν ἐν καμίνῳ. φώγνυται δὲ ἐπ' ὀστράκου καινοῦ καὶ ἀνθράκων διαπύρων, ἕως ἂν μηκέτι πομφυλιγίζῃ, μηδὲ λιπαρίαν τινὰ ἢ ἀτμίδα ἀνίῃ. θρύπτεται δὲ εὐχερῶς μὴ κατακεκαυμένος.

Περὶ φλοιοῦ λιβάνου. κεφ. πγ΄.

Φλοιὸς δὲ λιβάνου διαφέρει ὁ παχὺς καὶ λιπαρὸς καὶ εὐώδης. πρόσφατος. λεῖος καὶ μὴ λεπρώδης ἢ ὑμενώδης. δολοῦται δὲ μιγνυμένου αὐτῷ φλοιοῦ στροβιλίνου ἢ πιτυίνου. ἔλεγχος δὲ καὶ τούτων τὸ πῦρ. οἱ μὲν γὰρ λοιποὶ θυμιαθέντες οὐκ ἀνάπτονται. καπνιζόμενοι δὲ δίχα εὐωδίας ἐκτύφονται. ὁ μέν τοι τοῦ λιβάνου φλοιὸς ἅπτεται καὶ μετ' εὐωδίας ἐκθυμιᾶται. καίεται δὲ καὶ οὗτος ὡς καὶ ὁ λίβανος. Δύναμιν δὲ ἔχει τὴν καὶ ὁ λίβανος ἐνεργέστερος ὢν καὶ στυπτικώτερος. ὅθεν ποθεὶς, αἱμοπτοϊκοῖς μᾶλλον καὶ ῥοϊκοῖς ἁρμόζει ἐν προσθέτῳ. ποιεῖ καὶ πρὸς οὔλας ἐν

ὀφθαλμοῖς. καὶ κοιλώματα καὶ ῥυπαρίας. φωχθεὶς δὲ καὶ πρὸς ψωροφθαλμίας ποιεῖ.

Περὶ μάννης λιβάνου. Κεφ. πδ'.

Μάννα δὲ λιβάνου, δόκιμός ἐστιν ἡ λευκὴ καὶ καθαρά. ἔνχονδρος. δύναμιν δὲ ἔχει τὴν καὶ ὁ λιβανωτός. ὑπανειμένως δὲ μᾶλλον. μίσγουσι δὲ ἔνιοι δολίζοντες, ῥητίνην πιτυΐνην σεσησμένην καὶ γύρειν. ἢ φλοιὸν λιβανωτοῦ κεκομμένου. ἐλέγχει δὲ καὶ ταῦτα τὸ πῦρ. οὔτε γὰρ κατ' ἴσον καὶ ἰσοτόνως θυμιαθήσεται ἀδρίζοντι τῷ ἀτμῷ. ἀσβολώδει δὲ καὶ οὐ καθαρῷ, καὶ τῇ εὐωδίᾳ μικτὴν ἔχει τὴν ἀποφοράν.

Περὶ αἰθάλης λιβανωτοῦ. Κεφ. πε'.

Αἰθάλην δὲ λιβανωτοῦ ποίει οὕτω. λαβιδίῳ καθ' ἕνα χόνδρον τοῦ λιβάνου ἅπτων πρὸς λύχνον, ἐπιτίθει εἰς κοῖλον λοπάδιον ὀστράκινον καινόν. εἶτα περικάλυψον χάλκωμα ἔγκοιλον, τετρημένον κατὰ μέσον καὶ ἐσμηγμένον ἐπιμελῶς, ἐπιτίθει τε κατὰ τὸ ἕτερον αὐτοῦ μέρος ἢ ἀμφότερα λιθάρια ὕψει τετραδακτυλιαῖα πρὸς τὸ διαφαίνειν εἰ καίεται. καὶ ἵνα χώρα ᾖ ὑποτιθέναι ἑτέρους χόνδρους ἀεί. πρὸ τοῦ τὸν πρῶτον χόνδρον ἀποσβεσθῆναι παντελῶς, καὶ τοῦτο ποίει ἕως ἂν αὐτάρκη λιγνὺν δόξῃς συνειλοχέναι. συνεχῶς μέντοι σπόγγῳ ἐξ ὕδατος ψυχροῦ περίμασσε τὰ ἐκτὸς μέρη τοῦ χαλκώματος. οὕτω γὰρ προσκαθίζει πᾶσα λιγνύς. μὴ ἄγαν αὐτοῦ πυρουμένου. ἐπεὶ ἀποπίπτουσα διὰ τὴν κουφότητα, μίγνυται τῇ τοῦ λιβάνου σποδῷ. ἀποψήσας οὖν τὴν πρώτην λιγνὺν, ποίει τὸ αὐτὸ ἐφ' ὅσον ἂν δοκῇ. ἀναιροῦ δὲ καὶ τὴν ἐκ τοῦ καέντος λιβάνου σποδὸν ἰδίᾳ. δύναμιν δὲ ἔχει πραϋντικὴν τῶν ἐν ὀφθαλμοῖς φλεγμονῶν. σταλτικὴν ῥευμάτων. ἀνακαθαρτικὴν ἑλκῶν. πληρωτικὴν κοιλωμάτων. σταλτικὴν καρκινωμάτων.

Περὶ λιγνύος σκευασίας. Κεφ. πϛ'.

Τὸν αὐτὸν δὲ τρόπον σκευάζεται καὶ ἐκ τῆς σμύρνης καὶ ἐκ τῆς ῥητίνης. καὶ ἐκ τοῦ στύρακος λιγνύς. ἁρμόζουσι δὲ πρὸς τὰ αὐτά. καὶ ἐκ τῶν λοιπῶν δὲ δακρύων ὁμοίως τὴν λιγνύν.

## Περὶ Πίτυος. ΚΕΦ. πζ΄.

Π ίτυς γνώριμον δένδρον. ἔστι δὲ τοῦ αὐτοῦ γένους καὶ ἡ λεγομένη πεύκη. εἴδει διαφέρουσαι. ἀμφοτέρων δὲ ὁ φλοιὸς στυπτικός. ἁρμόζων πρός τε παρατρίμματα λεῖος καταπλασσόμενος. καὶ πρὸς τὰ ἐπιπόλαια τῶν ἑλκῶν καὶ κεκαυμένα σὺν λιθαργύρῳ καὶ μάννῃ. ἀναληφθεὶς δὲ κηρωτῇ μυρσίνῃ, ἀπουλοῖ τὰ ἐπὶ τῶν τρυφεροχρώτων ἕλκη. καὶ τὰ ἑρπυστικὰ ἐπέχει μετὰ χαλκάνθης λεῖος. ἔμβρυά τε καὶ δεύτερα ὑστέρα θυμιαθεὶς ἐκβάλλει. κοιλίαν τε ποθεὶς ἐφίστησι. καὶ οὖρα κινεῖ. καὶ τὰ φύλλα δὲ αὐτῆς καταπλασθέντα λεῖα, φλεγμονὰς παρηγορεῖ. καὶ τραύματα ἀφλέγμαντα διατηρεῖ. λειωθέντα δὲ καὶ ἑψηθέντα ἐν ὄξει, ὀδονταλγίας πραΰνει διακλυζόμενα θερμά. ἁρμόζει δὲ καὶ ἡπατικοῖς τῶν φύλλων ὁλκὴ μία σὺν ὕδατι ἢ μελικράτῳ ποθεῖσα. ποιεῖ δὲ τὰ αὐτὰ καὶ ὁ τῆς στροβίλου φλοιὸς καὶ τὰ φύλλα ποθέντα. καὶ τὸ ἐξ αὐτῶν δὲ δᾳδίον σχισθὲν εἰς λεπτὰ καὶ ἑψηθὲν σὺν ὄξει, ὀδονταλγίας πραΰνει. κρατουμένου τοῦ ἀφεψήματος κατὰ τοῦ πεπονθότος ὀδόντος. καὶ σπάθη δὲ ἐξ αὐτῶν γίνεται εἰς ἀκόπων σκευασίας καὶ πεσσῶν ἐπιτήδειος. ἡ δὲ ἐξ αὐτῶν λιγνὺς καιομένων, ἐκλαμβάνεται πρὸς μέλανος γραφικοῦ κατασκευὴν ποιοῦσα καὶ πρὸς καλλιβλέφαρα καὶ κανθοὺς βεβρωμένους. πρός τε πτίλα βλέφαρα καὶ ὀφθαλμοὺς δακρύοντας.

## Περὶ Πιτυΐδων. ΚΕΦ. πη΄.

Π ιτυΐδες δὲ καλοῦνται ὁ καρπὸς τῶν πιτύων καὶ τῆς πεύκης. ὁ εὑρισκόμενος ἐν τοῖς κώνοις. δύναμιν δὲ ἔχουσι στυπτικήν. θερμαίνουσαν ποσῶς. βοηθοῦσι δὲ βηξὶ καὶ τοῖς περὶ θώρακα πάθεσι. καθ᾽ ἑαυτὰς καὶ μετὰ μέλιτος λαμβανόμεναι.

## Περὶ Στροβίλων. ΚΕΦ. πθ΄.

Σ τρόβιλοι δὲ καὶ καθαροὶ ἐσθιόμενοι, ἢ μετὰ γλυκέος καὶ σικύου σπέρματος πινόμενοι, οὐρητικοί. ἀμβλυντικοὶ τῶν περὶ κύστιν καὶ νεφροὺς δριμυτήτων. παρηγοροῦσι δὲ καὶ στομάχων δηγμούς. μετ᾽ ἀνδράχνης χυλοῦ λαμβανόμενοι ἐξερείδουσι τε ἀτονίαν σώματος. καὶ τὰς τῶν ὑγρῶν διαφθορὰς ἐξαμ-

βλύνουσιν. ὅλοι δὲ οἱ στρόβιλοι ἀπὸ δένδρων πρόσφατοι θλασθέντες ἐν γλυκεῖ καὶ ἑψηθέντες, ἁρμόζουσι παλαιαῖς βηξὶ καὶ φθίσεσι. καὶ τοῦ ἐξ αὐτῶν ὑγροῦ καθ' ἑκάστην ἡμέραν λαμβανομένου κυάθων τὸ πλῆθος τεσσάρων.

### Περὶ Σχίνου. Κεφ. ϟ'.

Σχῖνος δένδρον γνώριμον στυπτικὸν ὅλον. καὶ γὰρ ὁ καρπὸς αὐτῆς καὶ τὸ φύλλον καὶ ὁ φλοιὸς τῶν κλάδων καὶ τῆς ῥίζης ἰσοδυναμεῖ. γίνεται δὲ καὶ χύλισμα ἐκ τοῦ φλοιοῦ, καὶ τῆς ῥίζης καὶ τῶν φύλλων ἑψημένων σὺν ὕδατι ἐφ' ἱκανόν. εἶτα μετὰ τὸ ἑψηθῆναι τῶν φύλλων ῥιπτομένων, τοῦ ὕδατος δὲ πάλιν ἑψομένου μέχρι μελιτώδους συστάσεως. ποιεῖ δὲ στύφων πρὸς αἵματος ἀναγωγὰς καὶ ῥύσεις κοιλίας καὶ δυσεντερίας πινόμενος, καὶ πρὸς τὰς ἐκ μήτρας αἱμορροΐας καὶ προπτώσεις ὑστέρας καὶ δακτυλίου. καὶ καθόλου ἀντὶ ἀκακίας καὶ ὑποκυστίδος, ἔνεστιν αὐτῷ χρῆσθαι. καὶ ὁ χυλὸς δὲ τῶν φύλλων ἐκθλιβέντων τὰ αὐτὰ ποιεῖ. καὶ τὸ ἀφέψημα δὲ αὐτῶν καταντλούμενον, τὰ ἀσυμπλήρωτα πληροῖ. καὶ τὰ ἀπώρωτα πωρεῖ ὀστέα. καὶ τὰς ἐκ μήτρας ῥύσεις στέλλει. καὶ τῶν νομῶν ἀποτρεπτικὸν καὶ οὐρητικόν ἐστιν. ἵστησι δὲ καὶ σειομένους ὀδόντας διακλυζόμενον. τὰ δὲ ξυλάρια χλωρὰ ἀντὶ καλαμίσκων παρατριβόμενα τοῖς ὀδοῦσι, σμήχει τούτους. γίνεται δὲ καὶ ἐκ τοῦ καρποῦ αὐτοῦ ἔλαιον στυπτικόν. ἁρμόζον πρὸς τὰ στύψεως δεόμενα.

### Περὶ Ῥητίνης σχινίνης. Κεφ. ϟα'.

Γεννᾶται δὲ καὶ ῥητίνη ἐξ αὐτῆς σχινίνη καλουμένη. ὑπὸ ἐνίων δὲ μαστίχη. χρησιμεύουσα πρὸς αἵματος ἀναγωγάς. καὶ πρὸς παλαιὰν βῆχα πινομένη. ἔστι δὲ εὐστόμαχος ἐρευκτική. μίγνυται δὲ καὶ σμήγμασιν ὀδόντων. καὶ ἐπιχρίσμασι προσώπου στιλβοποιοῦσα. ἀνακολλᾷ δὲ καὶ τρίχας ἐν ὀφθαλμοῖς. στόματός τε εὐωδίαν ποιεῖ διαμασωμένη. καὶ ὅλων ἐστὶ σταλτική. γεννᾶται δὲ καὶ καλλίστη καὶ πλείστη ἐν Χίῳ τῇ νήσῳ. διαφέρει δὲ αὐτῆς ἡ λαμπυρίζουσα. καὶ τυρρηνικῷ κηρῷ ὁμοία τῇ λευκότητι. ἀσπρὰ καὶ καπυρὰ καὶ εὐθροβὴς καὶ

εὐθραυστεῖ

εὐώδης. ἡ δὲ χλωρὰ ἧττον. δολοῦται δὲ λιβάνου καὶ ῥητί-
νης στροβιλίνης μιγνυμένων αὐτῇ.

### Περὶ τερμίνθου. Κεφ. ξβʹ.

Τέρμινθος γνώριμον δένδρον. ἧς τὰ φύλλα καὶ ὁ καρπὸς καὶ
ὁ φλοιὸς στυπτικὰ ὄντα ἁρμόζει πρὸς ἃ καὶ ἡ σχῖνος. σκευαζό-
μενα ὁμοίως καὶ λαμβανόμενα. ὁ δὲ καρπὸς αὐτοῦ ἐστὶν ἐδώδι-
μος. κακοστόμαχος. οὐρητικός. θερμαντικός. ἔστι δ' ἄριστος πρὸς
ἀφροδίσια. σὺν οἴνῳ δὲ ποθεὶς, πρὸς φαλαγγίων δήγματα ἁρ-
μόζει. ἡ δὲ ἐξ αὐτῆς ῥητίνη, κομίζεται μὲν ἐξ ἀραβίας τῆς
ἐν πέτρᾳ. γεννᾶται δὲ καὶ ἐν ἰουδαίᾳ καὶ συρίᾳ καὶ ἐν κύ-
πρῳ καὶ ἐν λιβύῃ. καὶ ἐν ταῖς κυκλάσι νήσοις. ἡ δὴ καὶ δια-
φέρει διαυγεστέρα οὖσα. λευκή. ὑαλίζουσα τῷ χρώματι καὶ
κυανίζουσα. εὐώδης τερμίνθου πνέουσα. προάγει δὲ πα-
σῶν τῶν ῥητινῶν ἡ τερμινθίνη. καὶ μετὰ ταύτην ἡ σχινίνη.
εἶτα ἡ πιτυΐνη καὶ ἡ ἐλατίνη. μεθ' ἃς ἀριθμοῦνται ἥ τε πευ-
κίνη καὶ ἡ στροβιλίνη. ἔστι δὲ πᾶσα ῥητίνη, μαλακτική. θερ-
μαντική. διαχυτική. ἀνακαθαρτική. βηξὶν ἁρμόζουσα καὶ
φθίσεσιν. ἐν ἐκλικτοῖς καθ' ἑαυτὴν ἢ μετὰ μέλιτος. ἀνακα-
θαίρουσα καὶ τὰ ἐκ θώρακος. ἔστι δὲ καὶ οὐρητικὴ καὶ πε-
πτική. κοιλίαν τε μαλάσσει. ἔν τε ἀνακολλήσει τριχῶν ἁρ-
μόζει τῶν ἐν βλεφάροις. καὶ πρὸς λέπρας σὺν ἰῷ χαλκοῦ
καὶ χαλκάνθῳ καὶ νίτρῳ. πρός τε τὰ ἰχωρορροοῦντα ὦτα
σὺν μέλιτι καὶ ἐλαίῳ. καὶ πρὸς κνησμὸν αἰδοίου. μίγνυται
δὲ καὶ ἐμπλάστροις καὶ μαλάγμασι καὶ ἀκόποις. καὶ πλευρᾶς
ἀλγήμασι βοηθεῖ καθ' ἑαυτὴν ἐπιχρισθεῖσα καὶ ἐπιτιθεμένη.

### Περὶ ῥητίνης ὑγρᾶς πιτυΐνης καὶ πευκίνης. Κεφ. ξγʹ.

Γίνεται δὲ ῥητίνη ὑγρὰ πιτυΐνη καὶ πευκίνη. κομιζόμεναι
ἀπὸ γαλλίας καὶ τυῤῥηνίας. καὶ ἀπὸ κολοφῶνος, πάλαι
ποτὲ ἐκομίζετο. ὅθεν καὶ τὴν ἐπωνυμίαν ἔσχε κολοφωνία
κληθεῖσα. καὶ ἀπὸ γαλατίας τῆς πρὸς ταῖς ἄλπεσιν. ἣν
ἐπιχώριοι οἱ τῆδε ἔποικοι λάρικα ὀνομάζουσιν. ἐξόχως
ποιοῦσα πρὸς τὰς χρονίους βῆχας ἐν ἐκλικτῷ καὶ καθ'
ἑαυτήν. διάφοροι δέ εἰσι τῷ χρώματι καὶ αὗται. ἡ μὲν γὰρ

τις ἐστι λευκή. ἡ δὲ ἐλαιώδης. ἡ δὲ μέλιτι ἔοικεν ὥσπερ ἡ λάριξ γίνεται δὲ καὶ κυπαρισσίνη ῥητίνη ὑγρά. ἥτις ποιεῖ πρὸς τὰ αὐτά. τῆς μέντοι ξηρᾶς, ἡ μέν ἐστι στροβιλίνη καὶ ἐλατίνη. ἡ δὲ πευκίνη. ἡ δὲ πιτυίνη. ἐκλέγου δὲ πασῶν τὴν εὐωδεστάτην καὶ διαυγῆ καὶ μὴ καπυρὰν μηδὲ κάθυγρον, κηροειδῆ δὲ καὶ εὔθρυπτον. διαφέρει δὲ αὐτῶν ἡ πιτυίνη καὶ ἐλατίνη. εὐώδης γάρ εἰσι καὶ λιβανίζουσαι. κομίζονται δὲ διάφοροι ἐκ πιτυούσης τῆς νήσου, ἥτις κεῖται κατὰ τὴν ἱσπανίαν. ἡ δὲ πευκίνη καὶ στροβιλίνη, καὶ κυπαρισσίνη, ἐνδεέστεραι εἰσί. καὶ οὐχ ὁμοίως κέχρηνται ταῖς δυνάμεσιν ὡς ἐκεῖναι. παραλαμβάνονται δὲ πρὸς ὅσα καὶ ἐκεῖναι. ἡ μέντοι σχινίνη, ἀναλογεῖ τῇ τερμινθίνῃ.

## Περὶ λιγνύος ῥητίνης. Κεφ. ϛλ΄.

Καίεται δὲ πᾶσα ῥητίνη ὑγρὰ ἐν τετραπλασίονι ἀγγείῳ, κατὰ τὸ τοῦ ἐγχεομένου ὑγροῦ πλῆθος. δεῖ γὰρ χοῦν μὲν τῆς ῥητίνης, δύο δὲ χόας ὀμβρίου ὕδατος βαλόντας εἰς ἀγγεῖον, ἕψειν ἐπ' ἀνθράκων πράως. διηνεκῶς κινοῦντας ἄχρις οὗ ἄοσμος γένηται καὶ εὔθρυπτος καὶ καπυρά. καὶ ὡς τοῖς δακτύλοις εἴκειν. λοιπὸν δεῖ ψύξαντας εἰς κεραμεοῦν ἀγγεῖον ἀκόνιτον, τουτέστιν ἀπίσσωτον. ἀποτίθεσθαι, γίνεται δὲ ἐξόχως λευκή. δεῖ μέντοι προδιυλίζειν πᾶσαν ῥητίνην τήκοντας ἵνα χωρισθῇ τὸ ῥυπῶδες αὐτῆς. καίονται δὲ καὶ δίχα ὕδατος ἐπ' ἀνθράκων κούφως τὸ πρῶτον. ὅταν δὲ μέλλωσι συστρέφειν ἀθρόως καὶ πολλοὺς ὑποθετέον τοὺς ἄνθρακας. καὶ ἑψητέον ἀδιαλείπτως ἐφ' ἡμέρας καὶ νύκτας τρεῖς, ἄχρις ἂν τὸ προειρημένον ἰδίωμα ἀπολίπωσιν. ἀποτίθεσθαι δὲ ὡς εἴρηται. τὰς μέντοι ξηρὰς ἀρκέσει δι' ὅλης ἡμέρας ἑψήσαντας ἀποτίθεσθαι. εὐχρηστοῦσι δὲ καὶ αἱ κεκαυμέναι, εἴς τε τὰ εὐώδη τῶν μαλαγμάτων καὶ ἄκοπα. καὶ εἰς χρωματισμοὺς μύρων. ἐκλαμβάνεται δὲ καὶ λιγνὺς ῥητίνης ὥσπερ ἐπὶ τοῦ λιβάνου. ἥτις χρησιμεύει πρός τε καλλιβλέφαρα. καὶ περὶ βεβρωμένους κανθοὺς καὶ μυδῶντα τὰ βλέφαρα. καὶ δακρύοντας ὀφθαλμούς. γίνεται δὲ ἐξ αὐτῆς καὶ μέλαν ᾧ γράφομεν.

Περὶ πίσσης ὑγρᾶς. Κεφ. ϛε'.

Π ίσσα ἡ μὲν ὑγρὰ ἣν ἔνιοι κῶνον καλοῦσι. συνάγεται μὲν ἐκ τῶν λιπαρωτάτων ξύλων, πεύκης καὶ πίτυος. ἔστι δὲ καλὴ ἡ στίλβουσα καὶ λεία καὶ καθαρά. ποιεῖ δὲ πρὸς θανάσιμα φάρμακα. φθισικούς. ἐμπυϊκούς. βῆχας. ἄσθματα δυσαναγώγα τῶν ἐν θώρακι ὑγρῶν, ἐκλειχομένη κυάθου πλῆθος μετὰ μέλιτος. ποιεῖ δὲ καὶ πρὸς τὰς τῶν παρισθμίων καὶ σταφυλῆς φλεγμονὰς καὶ συνάγχας διαχριομένη. καὶ πρὸς τὰ πυορροοῦντα ὦτα σὺν ῥοδίνῳ. καὶ πρὸς ἑρπετῶν δήγματα σὺν ἁλσὶ λείοις καταπλασσομένη. κηρῷ δὲ ἴσῳ μιγεῖσα, λεπροὺς ὄνυχας ἀφίστησι. φύματά τε ὑστέρας καὶ σκληρίας δακτυλίου διαφορεῖ. σὺν κριθίνῳ δὲ ἑψηθεῖσα ἀλεύρῳ καὶ παιδὸς οὔρῳ, χοιράδας περιρρήσσει. μετὰ δὲ θείου ἢ πίτυος φλοιοῦ ἢ πιτύρων, ἕρπητας ἐπέχει καταχριομένη. μάννῃ δὲ καὶ κηρωτῇ μιγεῖσα, τὰς ἀποφορὰς παρακολλᾶ. πρός τε τὰς ἐν ποσὶ καὶ δακτυλίῳ ῥαγάδας ἁρμόζει καταχριομένη. πληροῖ τε τὰ ἕλκη. καὶ ἀχῶρας καθαίρει σὺν μέλιτι. σὺν σταφίδι δὲ καὶ μέλιτι, ἄνθρακας καὶ σηπεδόνας περιχαράσσει. μίγνυται δὲ καὶ σήπτοις χρησίμως.

Περὶ πισσελαίου. Κεφ. ϛϛ'.

Γ ίνεται δὲ καὶ πισσέλαιον ἐκ τῆς πίσσης, χωριζομένου τοῦ ὑδατώδους αὐτῆς. ἐφίσταται δὲ τοῦτο καθάπερ ὀρρὸς γάλακτι. καὶ ἐκλαμβάνεται δὲ ἐν τῇ ἑψήσει τῆς πίσσης, ὑπεραιωρουμένου ἐρίου καθαροῦ. ὅπερ ὅταν ἐκ τοῦ ἀναφερομένου ἀτμοῦ γένηται διάβροχον, ἐκθλίβεται εἰς ἀγγεῖον. καὶ τοῦτο γίνεται ἐφ' ὅσον ἂν χρόνον ἡ πίσσα ἕψηται. ποιεῖ δὲ πρὸς ὅσα καὶ ἡ ὑγρὰ πίσσα. δασύνει δὲ καὶ ἀλωπεκίας καταπλασσόμενον μετὰ κριθίνου ἀλεύρου. θεραπεύει δὲ ταῦτα καὶ ἡ ὑγρὰ πίσσα. καὶ τὰ ὦθι τῶν κτηνῶν ἕλκη καὶ ψώρας ἐπιχριομένη.

Περὶ λιγνύος τῆς ἐξ ὑγρᾶς πίσσης. Κεφ. ϛζ'.

Γ ίνεται δὲ καὶ λιγνὺς τῆς ὑγρᾶς πίσσης οὕτως. εἰς λύχνον καινὸν ἐλλυχνιασμένον βαλοῦς τι τῆς πίσσης. ἅψον, καὶ πωμάσας τὸν λύχνον καινῷ ἀγγείῳ κεραμέῳ κλιβανοειδεῖ, ἄνωθεν μὲν

περιφέρει καὶ στενῷ, κάτωθεν δὲ τρῆμα ἔχοντι καθάπερ οἱ
κλίβανοι, ἔα καίεσθαι. ὅταν δὲ ἀναλωθῇ τὸ πρῶτον ὑγρὸν,
ἄλλο ἐπίχεε. ἕως ἂν αἰθαλώσῃς λιγνὺν αὐτάρκη. καὶ χρῶ.
Δύναμιν δὲ ἔχει δριμεῖαν καὶ στυπτικήν. χρηστέον δὲ αὐτῇ, εἰς
τὰ καλλιβλέφαρα καὶ περιχριστά. καὶ ὅπου μεμυδηκότα
βλέφαρα τριχοφυῆσαι δεῖ. καὶ πρὸς ἀσθενέστερα καὶ δα-
κρυρροοῦντα. ἔτι δὲ εἰς ἑλκώδη ὄμματα χρήσιμος.

### Περὶ ξηρᾶς πίσσης. Κεφ. ϛη'.

Η δὲ ξηρὰ πίσσα, ἑψομένης τῆς ὑγρᾶς γίνεται. καλεῖται δ' αὐ-
τὴ ὑπ' ἐνίων παλίμπισσα. γίνεται δὲ αὐτῆς. ἡ μέν τις ἰξώ-
δης, βοσκὰς καλουμένη. ἡ δὲ, ξηρά. ἔστι δὲ καλὴ ἡ καθαρά. καὶ
λιπαρά. εὐώδης τε καὶ ὑπόκιρρος καὶ ῥητινώδης. τοιαύτη
δὲ ἐστὶν ἡ λικιακὴ καὶ βρυττία δύο φύσεων ἐχόμεναι πίσσης
ἅμα καὶ ῥητίνης. Δύναμιν δὲ ἔχει θερμαντικὴν. μαλακτι-
κὴν. πυοποιόν. διαφορητικὴν φυμάτων καὶ φυγέθλων. καὶ
πληρωτικὴν ἑλκῶν. μίγνυται δὲ καὶ τραυματικοῖς χρησίμως.

### Περὶ ζωπίσσης. Κεφ. ϛθ'.

Ζώπισσαν δὲ οἱ μὲν, εἶπον τὴν ἐκ τῶν πλοίων ξυομένην ῥητί-
νην μετὰ τοῦ κηροῦ. καλουμένην ὑπ' ἐνίων ἀπόχυμα. οὖσαν
διαχυτικὴν διὰ τὸ ἐν τῇ θαλάσσῃ βρέχεσθαι. οἱ δὲ, τὴν πι-
τυΐνην ῥητίνην οὕτως ὠνόμασαν.

### Περὶ ἀσφάλτου. Κεφ. ρ'.

Ἄσφαλτος διαφέρει ἡ ἰουδαϊκὴ τῆς λοιπῆς. ἔστι δὲ καλὴ ἡ πορ-
φυροειδῶς στίλβουσα. εὔτονος τῇ ὀσμῇ καὶ βαρεῖα. ἡ δὲ με-
λαινα καὶ ῥυπώδης, φαύλη. δολοῦται γὰρ πίσσης μιγνυ-
μένης. γεννᾶται καὶ ἐν φοινίκῃ. καὶ ἐν σιδῶνι. καὶ ἐν βαβυλῶ-
νι. καὶ ἐν ζακύνθῳ. γίνεται δὲ καὶ κατὰ τὴν ἀκραγαντίνων χώ-
ραν τῆς σικελίας, ὑγρὸν ἐπινηχόμενον ταῖς κρήναις. ᾧ χρῶν-
ται εἰς τοὺς λύχνους ἀντὶ ἐλαίου. καλοῦντες αὐτὸ σικελὸν
ἔλαιον. πλανώμενοι. ἔστι γὰρ ἀσφάλτου ὑγρᾶς εἶδος.

### Περὶ πισσασφάλτου. Κεφ. ρα'.

Καλεῖται δέ τις καὶ πιττάσφαλτος γινομένη ἐν ἀπολλωνίᾳ τῇ πρὸς ἐπιδαύρῳ. ἥτις ἐκ τῶν κεραυνίων ὀρῶν συγκαταφέρεται τῇ τοῦ ποταμοῦ ῥύμῃ. καὶ ἐκβράσσεται κατὰ τὰς ἠϊόνας βωλοειδῶς συμπεπηγυῖα. ὄζουσα πίσσης μεμιγμένης ἀσφάλτῳ.

## Περὶ νάφθας. Κεφ. ρβ΄.

Καλεῖται δέ τις καὶ νάφθα. ὅπερ ἐστὶ τῆς βαβυλωνίου ἀσφάλτου περιήθημα. τῷ χρώματι λευκόν. εὑρίσκεται δὲ καὶ μέλαν. Δύναμιν ἔχον ἁρπακτικὴν τοῦ πυρός. ὥστε καὶ ἐκ διαστήματος ἁρπάζειν αὐτό. ὅπερ πρὸς ὑποχύσεις χρησιμεύει καὶ λευκώματα. Δύναμιν δὲ ἔχει πᾶσα ἄσφαλτος, ἀφλέγμαντον. κολλητικήν. διαφορητικήν. μαλακτικήν. ποιοῦσαν πρὸς πνίγας ὑστερικὰς καὶ προπτώσεις. προστιθεμένη καὶ ὀσφραινομένη καὶ ὑποθυμιωμένη. ἐλέγχει δὲ καὶ ἐπιληπτικοὺς ὑποθυμιαθεῖσα καθάπερ καὶ ὁ γαγάτης λίθος. πινομένη δὲ μετ᾽ οἴνου καὶ καστορίου ἔμμηνα κινεῖ καὶ βηξὶ χρονίαις καὶ ἀσθματικοῖς καὶ δυσπνοίαις βοηθεῖ. καὶ ἑρπετῶν δήγμασι. καὶ ἰσχίων πόνοις καὶ πλευρᾶς. δίδοται δὲ καὶ κοιλιακοῖς καταπότιον. καὶ θρόμβους αἵματος διαλύει σὺν ὄξει ποθεῖσα. ἐγκλύζεται καὶ ἐπὶ δυσεντερικῶν σὺν πτισάνῃ τακεῖσα. καὶ κατάρρους ὑποθυμιωμένη θεραπεύει. καὶ ὀδόντων ἀλγήματα περιπλασθεῖσα πραΰνει. ἀνακολλᾶ δὲ καὶ τρίχας ἡ ξηρὰ διὰ μηλωτίδος. θερμανθεῖσα δ᾽ ἀρήγει τι καὶ ποδαγρικοῖς καὶ ἀρθριτικοῖς καὶ ληθαργικοῖς σὺν ὠμῇ λύσει καὶ κηρῷ καὶ νίτρῳ καταπλασθεῖσα. ἡ δὲ πιττάσφαλτος δύναται ὅσα πίσσα καὶ ἄσφαλτος μιγέντα.

## Περὶ κυπαρίσσου. Κεφ. ργ΄.

Κυπάρισσος στύφει. ψύχει. ἧς τὰ φύλλα ποθέντα μετὰ γλυκέος καὶ σμύρνης ὀλίγης, κύστει ῥευματιζομένῃ καὶ δυσουρίαις βοηθεῖ. τὰ δὲ σφαιρία κοπέντα καὶ σὺν οἴνῳ πινόμενα, ἁρμόζει πρὸς αἵματος ἀναγωγὴν καὶ δυσεντερίαν. καὶ κοιλίας ῥευματισμόν. ὀρθόπνοιαν. βῆχα. καὶ τὸ ἀφέψημα αὐτῶν τὸ αὐτὸ ποιεῖ. μαλάττει δὲ καὶ σκληρίας κοπέντα μετὰ σύκου. καὶ πολύποδας τοὺς ἐν μυκτῆρσιν ἰᾶται. ἐκβάλλει δὲ

καὶ λεπριῶντας ὄνυχας, σὺν ὄξει καθεψηθέντα καὶ λειαν-
θέντα μετὰ θέρμων. στέλλει δὲ καὶ ἐντεροκήλας καταπλα-
σθέντα. καὶ τὰ φύλλα δὲ τὰ αὐτὰ ποιεῖ. δοκεῖ δὲ καὶ κώνω-
πας διώκειν τὰ σφαιρία μετὰ τῆς κόμης θυμιαθέντα. τὰ
δὲ φύλλα λεῖα καταπλαττόμενα, τραύματα κολλᾷ. ἔστι δὲ
καὶ ἴσχαιμα. σὺν ὄξει δὲ λειωθέντα, τρίχας βάπτει. κατα-
πλάσσεται δὲ καθ' αὑτὰ καὶ σὺν ἀλφίτῳ πρὸς ἐρυσιπέλα-
τα καὶ ἕρπητας. ἄνθρακας. καὶ πρὸς ὀφθαλμῶν φλεγμο-
νάς. κηρωτῇ δὲ μιγέντα, στόμαχον κρατύνει ἐπιτιθέμενα.

## Περὶ ἀρκευθίδος κεφ. ρδ'.

Ἔστιν ἀρκευθὶς ἡ μὲν, μικρά. ἡ δὲ, μεγάλη. δριμεῖαι δὲ ἀμφότε-
ραι. διουρητικαὶ καὶ θερμαντικαί. θυμιώμεναί τε θηρία
διώκουσιν. ὁ δὲ καρπὸς αὐτῶν ὁ μέν τις καρύου μέγεθος εὑ-
ρίσκεται. ὁ δὲ καρύου ποντικοῦ ἴσος. στρογγύλος τε καὶ
εὐώδης καὶ γλυκὺς ἐν τῷ διαμασᾶσθαι, καὶ ὑπόπικρος.
ἀρκευθὶς καλούμενος. θερμαντικὸς μετρίως καὶ στυπτικός.
εὐστόμαχος. ποιῶν πρὸς τὰ ἐν θώρακι καὶ βῆχας καὶ πνευμα-
τώσεις καὶ στρόφους καὶ θηρία πινόμενος. ἔστι δὲ καὶ οὐρητι-
κός. ὅθεν καὶ σπάσμασι καὶ ῥήγμασι. καὶ ὑστερικαῖς πνιγο-
μέναις ἁρμόζει.

## Περὶ βράθυος. κεφ. ρε'.

Βράθυς. ἔνιοι βαράθρον καλοῦσι. ἔστι δὲ τούτου εἴδη δύο. τὸ
μὲν γὰρ αὐτοῦ ἔστι τοῖς φύλλοις ὅμοιον κυπαρίσσῳ. ἀκανθω-
δέστερον δὲ καὶ βαρύοσμον. δριμύ. πυρωτικόν. κολοβὸν δὲ τὸ
δένδρον καὶ εἰς πλάτος μᾶλλον χεόμενον. χρῶνται δέ τινες
τοῖς φύλλοις ἀντὶ θυμιάματος. τὸ δὲ ἕτερον μυρίκῃ τοῖς
φύλλοις ὅμοιον. ἀμφοτέρων δὲ τὰ φύλλα ἵστησι νομάς. καὶ
φλεγμονὰς καταπλαττόμενα πραΰνει. ἀποκαθαίρει τε
μελανίας σὺν μέλιτι καταπλασσόμενα, καὶ τὰς ῥυπαρί-
ας καὶ ἄνθρακας περιρρήττει σὺν οἴνῳ ποθέντα. καὶ αἷμα
δι' οὔρων ἄγει. ἔμβρυά τε ἐκτινάσσει. προστεθέντα δὲ καὶ ὑπο-
θυμιαθέντα, τὸ αὐτὸ ποιεῖ. μίγνυται δὲ καὶ τοῖς θερμαν-
τικοῖς χρίσμασιν ἰδίως δὲ τῷ γλευκίνῳ.

## Περὶ κέδρου. Κεφ. ρϛ΄.

Κέδρος, δένδρον ἐστὶ μέγα. ἐξ οὗ ἡ λεγομένη κεδρία συνάγεται.
καρπὸν δὲ ἔχει ὥσπερ ἄρκευθος, φθροῦ τὸ μέγεθος, μύρ-
του περιφερῆ. Τῆς δὲ κεδρίας ἀρίστη ἡ παχεῖα καὶ διαυ-
γὴς βαρεῖα τῇ ὀσμῇ. ἀποχεομένη δὲ κατὰ σταλαγμοὺς ἐπι-
διαμένουσα καὶ μὴ διαχεομένη. Δύναμιν δὲ ἔχει σηπτικὴν
μὲν τῶν ἐμψύχων. φυλακτικὴν δὲ τῶν νεκρῶν σωμάτων. ὅθεν
καὶ νεκροῦ ζωὴν τινὲς αὐτὴν ἐκάλεσαν. καὶ ἱμάτια δὲ καὶ
δέρματα φθείρει διὰ τὸ θερμαίνειν ἐπιτεταμένως καὶ ξη-
ραίνειν. εὐθετεῖ δὲ εἴς τε τὰ ὀφθαλμικὰ ὀξυδερκὴς οὖσα ἐγ-
χριομένη. καὶ λευκώματα καὶ οὐλὰς σμήχει. σὺν ὄξει δια-
κλυζομένη, σκώληκας τοὺς ἐν ὠσὶ κτείνει. ἤχους τε καὶ συ-
ριγμοὺς παύει σὺν ὑσσώπου ἀφεψήματι ἐγχεομένη. εἴς τε
ἐμβρώματα ὀδόντων ἐνσταλαγεῖσα, θραύει μὲν τὸν ὀδόντα.
παύει δὲ τὴν ἀλγηδόνα. σὺν ὄξει δὲ διακλυζομένη τὸ αὐτὸ
ποιεῖ. περιχρισθεῖσα δὲ αἰδοίῳ πρὸ τῆς συνουσίας, ἀτόκι-
όν ἐστι. συναγχικῶν τε περίχριστός ἐστι καὶ παρισθμίων φλεγ-
μοναῖς βοηθεῖ. φθεῖράς τε καὶ κονίδας φθείρει περιχρισθεῖ-
σα. κεράστου δὲ δήγμασι σὺν ἁλσὶ καταπλασσομένη, ἀρή-
γει. πρός τε λαγωοῦ θαλασσίου πόσιν, σὺν γλυκεῖ λαμβα-
νομένη βοηθεῖ. ὠφελεῖ καὶ ἐλεφαντιῶντας ἐκλειχομένη ἢ
περιχριομένη. καθαίρει καὶ τὰ ἐν πνεύμονι ἕλκη. καὶ ἰᾶ-
ται ὅσον κύαθος ῥοφουμένη. σκώληκάς τε καὶ ἀσκαρίδας
ἐγκλυζομένη φθείρει καὶ ἔμβρυα καταπίπτει. γίνεται δὲ καὶ
ἔλαιον ἐξ αὐτῆς χωριζόμενον ἀπὸ τῆς κεδρίας δι᾽ ἐρίου
ὑπεραιωρουμένου ἐν τῇ ἑψήσει ὡς ἐπὶ τῆς πίσσης. ποιοῦν
πρὸς ὅσα καὶ ἡ κεδρία. θεραπεύει δὲ τὸ ἔλαιον ἰδίως καὶ τὰς
ἐπὶ τῶν τετραπόδων ψώρας καὶ κυνῶν καὶ βοῶν ἀνδρικῶς
καταχριόμενον. καὶ τοὺς ἐπ᾽ αὐτῷ κρότωνας φθείρει. καὶ
τὰς ἐπὶ τῇ κουρᾷ γινομένας ἑλκώσεις αὐτῶν ἐπουλοῖ. τὴν
δὲ λιγνὺν συνακτέον αὐτῆς ὥσπερ τὴν τῆς πίσσης. δυνά-
μιν ἔχουσαν τὴν αὐτὴν ἐκείνῃ. κεδρίδες δὲ καλοῦνται οἱ ἐξ
αὐτῆς καρποί. Δύναμιν δὲ ἔχουσι θερμαντικὴν. κακοστό-
μαχον. βοηθοῦσι δὲ βηξί. σπάσμασι. ῥήγμασι. στραγγουρίαις.
καὶ ἔμμηνα ἄγουσι μετὰ πεπέρεως λείου πινόμεναι. καὶ πρὸς

λαγωοῦ θαλασσίου πόσιν σὺν οἴνῳ λαμβανόμεναι. διώκουσι καὶ θηρία χριομένου τοῦ σώματος σὺν ἐλαφείῳ στέατι ἢ μυελῷ. μίγνυται δὲ καὶ ἀντιδότοις.

## Περὶ Δάφνης. Κεφ. ρζ΄.

Δάφνη. ἡ μέν τις ἐστὶ λεπτόφυλλος. ἡ δὲ, πλατυτέρα. θερμαντικαὶ δὲ ἀμφότεραι καὶ μαλακτικαί. ὅθεν τὸ ἀφέψημα αὐτῶν εἰς ἐγκαθίσματα τὰ περὶ μήτραν καὶ κύστιν ἁρμόζει. τὰ δὲ χλωρὰ τῶν φύλλων, ἠρέμα ὑποστύφει. ὠφελεῖ δὲ λεῖα καταπλασθέντα, σφηκῶν καὶ μελιττῶν πληγάς. Δύναται δὲ καὶ πᾶσαν φλεγμονὴν πραΰνειν σὺν ἀλφίτῳ καὶ ἄρτῳ καταπλασθέντα. ποθέντα δὲ πραΰνει τὸν στόμαχον. καὶ ἐμέτους κινεῖ. Αἱ δὲ δαφνίδες θερμαντικώτεραι τῶν φύλλων εἰσί. ποιοῦσιν οὖν ἐκλειχόμεναι λεῖαι σὺν μέλιτι ἢ γλυκεῖ, πρὸς φθίσιν καὶ ὀρθόπνοιαν καὶ τοὺς περὶ θώρακα ῥευματισμούς. πίνονται δὲ σὺν οἴνῳ πρὸς σκορπιοπλήκτους. καὶ ἀλφοὺς δὲ σμήχουσι. τὸ δὲ πίεσμα αὐτῶν, ὠταλγίαις καὶ δυσηκοΐαις βοηθεῖ σὺν οἴνῳ παλαιῷ καὶ ῥοδίνῳ ἐγχεόμενον. μίγνυται καὶ ἀκόποις καὶ συγχρίσμασι θερμαντικοῖς καὶ διαφορητικοῖς. Δυνάμεσι ὁ δὲ φλοιὸς τῆς ῥίζης αὐτῆς, λίθους θρύπτει καὶ ἔμβρυα κτείνει καὶ ἡπατικοὺς ὠφελεῖ. τριωβόλου πλῆθος σὺν οἴνῳ εὐώδει πινόμενος.

## Περὶ Πλατάνου. Κεφ. ρη΄.

Πλατάνου τὰ ζυφερὰ τῶν φύλλων ἑψηθέντα ἐν οἴνῳ καὶ καταπλασθέντα, στέλλει ῥεύματα ὀφθαλμῶν. κουφίζει δὲ καὶ τὰ οἰδήματα καὶ φλεγμονάς. ὁ δὲ φλοιὸς ἑψηθεὶς ἐν ὄξει, ὀδονταλγίας ἐστὶ διάκλυσμα. τὰ δὲ σφαιρία χλωρὰ σὺν οἴνῳ ποθέντα, ἑρπετοδήκτοις βοηθεῖ. ἀναληφθέντα δὲ στέατι, πυρίκαυστα θεραπεύει. ὁ δὲ χνοῦς τῶν φύλλων καὶ τῶν σφαιρίων, ἀκοὴν καὶ ὄψιν ἐμπεσὼν, λυμαίνεται.

## Περὶ Μελίας. Κεφ. ρθ΄.

Μελία δένδρον ἐστὶ γνώριμον. οὗ τῶν φύλλων ὁ χυλὸς καὶ αὐτὰ σὺν οἴνῳ πινόμενα, καὶ καταπλασσόμενα ἐχιοδήκτοις

βοηθεῖ. ὁ δὲ φλοιὸς καεὶς καὶ καταχρισθεὶς μεθ' ὕδατος, λέπρας ἀφίστησι. τὰ δὲ τορνεύματα τοῦ ξύλου ποθέντα, φασὶν ἀναιρετικὰ εἶναι.

Περὶ λεύκης. Κεφ. ρι.

Λεύκης τοῦ δένδρου ὁ φλοιὸς ποθεὶς ὅσον οὐγγία μία πλῆθος, ἰσχιάδας ὠφελεῖ καὶ στραγγουρίας. ἱστορεῖται δὲ καὶ ἀτόκιος εἶναι. ποθεὶς μετὰ ἡμιόνου νεφροῦ. καὶ τὰ φύλλα δὲ πινόμενα μετὰ κάθαρσιν σὺν οἴνῳ, τὸ αὐτὸ δρᾷν λέγεται. ὠφελεῖ καὶ ὠταλγίας ὁ χυλὸς τῶν φύλλων χλιαρὸς ἐνσταζόμενος. τὰ δὲ κατὰ τὴν ἐκβλάστησιν τῶν φύλλων σφαιρία λεῖα μετὰ μέλιτος ἐγχριόμενα, ἀμβλυωπίας θεραπεύει. ἔνιοι δὲ ἱστοροῦσι τὸν φλοιὸν τῆς λεύκης καὶ τῆς αἰγείρου τμηθέντα εἰς λεπτὰ μεγέθη καὶ σπαρέντα πρασιαῖς κεκοπρισμέναις, ἐν παντὶ καιρῷ μύκητας ἐδωδίμους φύειν.

Περὶ μάκερος. Κεφ. ρια.

Μάκερ, φλοιός ἐστι κομιζόμενος ἐκ τῆς βαρβάρου. ὑπόξανθος. παχύς. στύφων ἱκανῶς κατὰ τὴν γεῦσιν. πίνεται δὲ πρὸς αἵματος πτύσιν καὶ δυσεντερίας καὶ κοιλίας ῥευματισμόν.

Περὶ πτελέας. Κεφ. ριβ.

Πτελέας τὰ φύλλα καὶ οἱ ἀκρέμονες καὶ ὁ φλοιὸς στυπτικοί. ποιεῖ δὲ τὰ φύλλα πρὸς λέπραν λεῖα σὺν ὄξει ἐπιπλαττόμενα. καὶ τραύματα κολλᾷ. μᾶλλον δὲ ὁ φλοιὸς ἀντὶ ἐπιδέσμου περιειλούμενος. ἔστι γὰρ ἱμαντώδης. ὁ δὲ παχύτερος φλοιὸς σὺν οἴνῳ ἢ ὕδατι ποθεὶς οὐγγίας α. πλῆθος, ἄγει φλέγμα. καὶ τὸ ἀφέψημα δὲ τῶν φύλλων ἢ τοῦ φλοιοῦ τῶν ῥιζῶν καταντλούμενον, κάταγμα πωροῖ τάχιον. τὸ δὲ ἐν ταῖς φύσαις κατὰ τὴν πρώτην ἐκβλάστησιν εὑρισκόμενον ὑγρόν, στίλβει πρόσωπον ἐπιχριόμενον. ξηραινόμενον δὲ τὸ ὑγρὸν τοῦτο, ἀναλύεται εἰς θηρία κωνωποειδῆ. λαχανεύεται δὲ τὰ πρόσφατα τῶν φύλλων ἑψόμενα εἰς προσοψήματα.

Περὶ σαπρότητος ξύλων. Κεφ. ριγ.

Ἡ δὲ ἀπὸ τῶν παλαιῶν ξύλων καὶ πρέμνων σαπρία σὺν ἴσα

μένη, ὥσπερ ἄλευρον καταπλασσομένη, ἀνακαθαίρει καὶ ἀπουλοῖ ἕλκη. τὰ δὲ ἑρπυστικὰ ἐπέχει, σὺν ἴσῳ ἀνίσῳ φυραθεῖσα καὶ οἴνῳ, ἐν ὀθόναις τε καθεῖσα καὶ λεία καταπλασσομένη.

Περὶ Αἰγείρου. Κεφ. ριδ.

Αἴγειρος. τούτου τὰ φύλλα μετ' ὄξους καταπλαττόμενα, ποδαγρικοῖς ὀδύνας ὠφελεῖ. ἡ δὲ ἐξ αὐτῆς ῥητίνη μίγνυται μαλάγμασιν. ὁ καρπὸς δὲ μετὰ ὄξους πινόμενος, ἐπιληπτικοὺς ὠφελεῖ. ἱστορεῖται δὲ ὅτι τὸ ἐξ αὐτῶν δάκρυον κατὰ τὸν Ἠριδανὸν ποταμὸν καταχεόμενον, πήγνυται καὶ γίνεται τὸ καλούμενον ἤλεκτρον. ὑπ' ἐνίων δὲ χρυσοφόρον. εὐῶδες ἐν τῇ παρατρίψει καὶ χρυσοειδὲς τῷ χρώματι. ὅπερ πινόμενον λεῖον, στομάχου καὶ κοιλίας ῥεῦμα ἵστησι.

Περὶ Καλάμου. Κεφ. ριε.

Καλάμων δὲ ὁ μέν τις καλεῖται ναστός, ἐξ οὗ τὰ βέλη γίνεται. ὁ δέ τις θῆλυς, ἐξ οὗ αἱ γλῶτται τοῖς αὐλοῖς κατασκευάζονται. ἄλλος δὲ συριγγίας πολύσαρκος πυκνογόνατος, εἰς βιβλιογραφίαν ἐπιτήδειος. ὁ δέ τις παχὺς καὶ κοῖλος παρὰ ποταμοῖς φυόμενος, ὃς καὶ δόναξ καλεῖται. ὑπό τινων δὲ κύπριος. καὶ ἕτερος φραγμίτης. λεπτὸς ὑπόλευκος. πᾶσι γνώριμος. οὗ ἡ ῥίζα καταπλασθεῖσα λεία, καὶ καθ' ἑαυτὴν καὶ σὺν βολβοῖς, ἐπισπᾶται σκόλοπας καὶ ἀκίδας. σὺν ὄξει δὲ στρέμματα καὶ ὀσφύος ἀλγήματα παρηγορεῖ. τὰ δὲ φύλλα χλωρὰ κοπέντα καὶ ἐπιτεθέντα ἐρυσιπέλατά τε καὶ τὰς ἄλλας φλεγμονὰς ἰᾶται. ὁ δὲ φλοιὸς ἀλωπεκίας θεραπεύει καεὶς καὶ μετ' ὄξους καταπλασθείς. ἡ δὲ ἀνθήλη τῶν καλάμων ἐμπεσοῦσα εἰς τὰς ἀκοάς, κώφωσιν ἐργάζεται. δύναται δὲ τὰ αὐτὰ καὶ ὁ κύπριος λεγόμενος κάλαμος ποιεῖν.

Περὶ Παπύρου. Κεφ. ρις.

Πάπυρος γνώριμός ἐστι πᾶσιν. ἀφ' ἧς ὁ χάρτης κατασκευάζεται. εὐχρηστεῖ δὲ πρὸς τὴν ἐν ἰατρικῇ χρῆσιν. πρὸς ἀναστόμωσιν συρίγγων σκευασθεῖσα διαβροχῆς, περιειλουμένου λίνου ἄχρι ξηρασίας. στενουμένη γὰρ καὶ καθιεμένη, ἐμπίπλαται

ὑγρασίας. καὶ ἐξοιδοῦσα διανοίγει τὰς σύριγγας. ἔχει δέ τι ἡ ῥίζα αὐτῆς καὶ τρόφιμον. διαμασώμενοι γοῦν αὐτὴν οἱ ἐν αἰγύπτῳ, ἀποχυλίζουσιν ἐκπτύοντες τὸ διαμάσημα. χρῶνται δὲ καὶ ἀντὶ ξύλων αὐταῖς. ἡ δὲ κεκαυμένη πάπυρος ἄχρι τεφρώσεως δύναται νομὰς ἐπέχειν τὰς ἐν στόματι καὶ παντὶ μέρει. βέλτιον δὲ ὁ χάρτης κατακαεὶς δρᾷ τὸ τοιοῦτον.

## Περὶ Μυρίκης. Κεφ. ριζ.

Μυρίκη δένδρον ἐστὶ γνώριμον παρὰ λίμναις καὶ τοῖς στασίμοις ὕδασι φυόμενον. καρπὸν ὥσπερ ἄνθος φέρουσα βρυώδες κατὰ τὴν σύστασιν. γεννᾶται δέ τις ἐν αἰγύπτῳ καὶ συρίᾳ ἥμερος κατὰ τὰ ἄλλα, ὁμοία τῇ ἀγρίᾳ. καρπὸν φέρουσα ἐμφερῆ κηκῖδι. ἀνωμάλως στύφοντα κατὰ τὴν γεῦσιν. ἁρμόζοντά τε ἀντὶ κηκῖδος εἰς τὰ στοματικὰ καὶ ὀφθαλμικά. καὶ πρὸς αἵματος πτύσεις ἐν ποτῷ. καὶ κοιλιακαῖς καὶ ῥοϊκαῖς γυναιξίν. ἰκτέρῳ τε καὶ φαλαγγιοδήκτοις. οἰδήματά τε στέλλει καταπλασθείς. καὶ ὁ φλοιὸς δὲ τὰ αὐτὰ ποιεῖ τῷ καρπῷ. τῶν δὲ φύλλων τὸ ἀφέψημα σὺν οἴνῳ ποθὲν, σπλῆνα τήκει. καὶ ὀδονταλγίαις βοηθεῖ διακλυζόμενον. ἐγκάθισμά τε ῥοϊκαῖς. καὶ περίχυμα τοῖς φθεῖρας καὶ κόνιδας γεννῶσιν ἐπιτήδειον. καὶ ἡ ἀπὸ τῶν ξύλων τέφρα προστεθεῖσα, ῥεῦσιν ἐκ μήτρας στέλλει. κατασκευάζουσι δὲ ἔνιοι καὶ κύλικας ἐκ τοῦ πρέμνου. αἷς ἐπὶ τῶν σπληνικῶν χρῶνται ἀντὶ ποτηρίων. ὡς τοῦ δι' αὐτῶν πόματος ὠφελοῦντος.

## Περὶ Ἐρείκης. Κεφ. ριη.

Ἐρείκη δένδρον ἐστὶ θαμνῶδες ὅμοιον μυρίκῃ. μικρότερον δὲ πολλῷ. οὗ τῷ ἄνθει μέλιτται χρώμεναι, μέλι ἐργάζονται οὐ σπουδαῖον. ταύτης ἡ κόμη καὶ τὸ ἄνθος καταπλασσόμενα, ἑρπετῶν δήγματα ἰᾶται.

## Περὶ Ἀκακαλίδος. Κεφ. ριθ.

Ἀκακαλὶς θάμνου καρπός ἐστι γεννωμένου ἐν αἰγύπτῳ. ἐοικὼς κατά τι τῷ μυρίκης καρπῷ. οὗ τὸ ἀπόβρεγμα μίγνυται κολλυρίοις τοῖς πρὸς ὀξυδορκίαν ἁρμόζουσιν.

## Περὶ ῥάμνου. κεφ. ρκʹ.

Ῥάμνος θάμνος ἐστὶ περὶ φραγμοὺς φυόμενος ῥάβδους ἔχων ὀρθὰς καὶ ὀξείας ἀκάνθας ὥσπερ ἡ ὀξυάκανθα. φύλλα μικρά. ὑπομήκη. ὑπολίπαρα. μαλακά. ἔστι δὲ καὶ ἑτέρα λευκοτέρα, καὶ τρίτη μελαντέρα ἔχουσα τὰ φύλλα, καὶ πλατύτερα σὺν τῷ ἠρέμα ἐρυθραίνεσθαι. ῥάβδους μακρὰς πηχῶν ὡς πέντε. μᾶλλον ἀκανθώδεις. ἧττον δὲ στερεὰς καὶ ἐπάκμους ἔχει τὰς ἀκάνθας. καρπὸς δὲ πλατύς. λευκός. λεπτὸς ὡς θυλακώδης. ἐοικὼς ἀσφοδέλῳ. ποιεῖ δὲ πασῶν τὰ φύλλα πρὸς ἐρυσιπέλατα καὶ ἕρπητας καταπλασσόμενα. λέγεται δὲ καὶ κλῶνας αὐτῆς, θύραις ἢ θυρίσι προστεθέντας, ἀποκρούειν τὰς τῶν φαρμάκων κακουργίας.

## Περὶ ἀλίμου κεφ. ρκαʹ.

Ἄλιμος. θάμνος ἐστὶ φραγμίτης. ὅμοιος ῥάμνῳ οὐκ ἔχων ἀκάνθας. φύλλα δὲ ἐλαίᾳ παραπλήσια. πλατύτερα μέντοι φύεται ἐν παραθαλασσίοις καὶ φραγμοῖς. λαχανεύεται δὲ αὐτῆς τὰ φύλλα ἑψόμενα εἰς βρῶσιν. τῆς δὲ ῥίζης < α. ὁλκὴ ποθεῖσα σὺν μελικράτῳ, σπάσματα ῥήγματα καὶ στρόφους πραΰνει. καὶ γάλα κατασπᾷ.

## Περὶ γαλιούρου. κεφ. ρκβʹ.

Γαλίουρος γνώριμός ἐστι θάμνος. ἀκανθώδης. στερεός. οὗ τὸ σπέρμα λιπαρὸν καὶ λιγνυῶδες εὑρίσκεται. ὅπερ πινόμενον βηξὶν ἀρήγει. καὶ τοὺς ἐν κύστει λίθους θρύπτει. καὶ πρὸς ἑρπετῶν δήγματα ποιεῖ. τὰ δὲ φύλλα καὶ ἡ ῥίζα στυπτικά. ὧν τὸ ἀφέψημα ποθὲν, κοιλίαν ἵστησιν. οὖρά τε ἄγει καὶ θανασίμοις καὶ θηριοδήκτοις βοηθεῖ. διαφορεῖ δὲ πάντα τὰ πρόσφατα φύματα καὶ οἰδήματα ἡ ῥίζα, λεία ἐπιπλασθεῖσα.

## Περὶ ὀξυακάνθης. κεφ. ρκγʹ.

Ὀξυάκανθα. οἱ δὲ πυρίναν. οἱ δὲ, πυρακάνθην καλοῦσι. δένδρον ἐστὶ παραπλήσιον ἀχράδι. μικρότερον δὲ καὶ ἀκανθῶδες ἄγαν. καρπὸν δὲ φέρει μύρτῳ ἐμφερῆ ἁδρόν. ἐρυθρόν. εὔθρυπτον. ἔνδοθεν πυρῆνα ἔχοντα. ῥίζαν πολυσχιδῆ καὶ βαθεῖαν.

τούτου ὁ καρπὸς διάῤῥοιαν ἵστησι. καὶ ῥοῦν γυναικεῖον πινόμενος καὶ ἐσθιόμενος. ἡ δὲ ῥίζα καταπλασθεῖσα λεία, σκόλοπας καὶ ἀκίδας ἐπισπᾶται. ἱστορεῖται δὲ δύνασθαι τὴν ῥίζαν, καὶ ἐκ φωσμοὺς, ἐργάζεσθαι τῆς κοιλίας ἠσουχῆ τῆς πληχθείσης ἢ χρισθείσης.

Περὶ κυνοσβάτου. Κεφ. ρκδ.

Κυνόσβατον. οἱ δὲ, ὀξυάκανθαν καλοῦσι. θάμνος ἐστὶ βάτου πολλῷ μείζων. δενδρώδης. φύλλα φέρει πολλῷ πλατύτερα μυρσίνης. ἀκάνθας δὲ περὶ ταῖς ῥάβδοις ἰσχυρὰς. ἄνθος λευκόν. καρπὸν ἐπιμήκη. πυρῆνι ἐλαίας ἐοικότα. ἐν τῷ πεπαίνεσθαι πυῤῥόν. τὰ δὲ ἐντὸς ἐριώδη. ἵστησι δὲ κοιλίαν ὁ καρπὸς ξηρός. δίχα τοῦ ἐν αὐτῷ ἐριώδους. κακωτικὸν γὰρ τῆς ἀρτηρίας ἐστὶν ἀποζεννύμενον ἐν οἴνῳ καὶ πινόμενον.

Περὶ κύπρου. Κεφ. ρκε.

Κύπρος δένδρον ἐστὶ περὶ ταῖς ῥάβδοις φύλλα ἔχον ἐλαίᾳ παραπλήσια. πλατύτερα δὲ καὶ μαλακώτερα καὶ χλωρότερα. ἄνθη λευκὰ βρυώδη. εὐώδη. σπέρμα μέλαν ὅμοιον τῷ τῆς ἀκτῆς. γεννᾶται δὲ ἀρίστη ἐν τῇ ἀσκάλωνι καὶ κανώπῃ. δύναμιν δὲ ἔχει τὰ φύλλα στυπτικήν. ὅθεν διαμασσηθέντα ἄφθας ἰᾶται. καὶ τὰς ἄλλας πυρώδεις φλεγμονὰς καταπλασθέντα ὠφελεῖ. καὶ ἄνθρακας. τὸ δὲ ἀφέψημα αὐτῶν, πυρικαύτων κατάντλημα. ξανθίζει δὲ καὶ τρίχας στρουθίου χυλῷ τὰ φύλλα λεῖα βραχέντα καὶ ἐγχρισθέντα. τὸ δὲ ἄνθος ἐπιπλασθὲν τῷ μετώπῳ λεῖον μετ' ὄξους, κεφαλαλγίας παύει. τὸ δὲ σκευαζόμενον ἐξ αὐτοῦ χρίσμα κύπρινον θερμαντικόν. γίνεται καὶ μαλακτικὸν νεύρων, εὐῶδες προλαμβάνον πυρωτικὸν σμίγματος.

Περὶ φιλλυρέας. Κεφ. ρκϛ.

Φιλλυρέα δένδρον ἐστὶν ὅμοιον κύπρῳ κατὰ μέγεθος. φύλλα δὲ ἐλαίας ὅμοια. πλατύτερα δὲ καὶ μελάντερα. καρπὸν δὲ ἔχει σχίνῳ ἐμφερῆ. μέλανα. ὑπόγλυκυν. ὡς ἐν βότρυσι κείμενον. ἐν τραχέσι δὲ πέτραις γεννᾶται ταύτης τὰ φύλλα,

στύφει ὡς ἀγριελαία· ποιοῦντα πρὸς τὰ στύψεως δεόμενα. μάλιστα τοῖς ἐν στομίοις ἕλκεσι διαμάσημα καὶ διάκλυσμα τὸ ἀφέψημα. καὶ πινόμενον δὲ οὖρα καὶ ἔμμηνα ἄγει.

### Περὶ κίσου. Κεφ. ρκζ´.

Κίσος, ὃν ἔνιοι κίθαρον ἢ κίσσαρον καλοῦσι, θάμνος ἐστὶν ἐν πετρώδεσι τόποις φυόμενος, πολύκλαδος. φυλλώδης. οὐχ ὑψηλός. φύλλα ἔχων περιφερῆ στρυφνά. δασέα ἄνθη ὥσπερ ῥοιᾶς. ἐπὶ δὲ τοῦ θήλεος λευκά. Δύναμιν δὲ ἔχει στυπτικήν. ὅθεν τὰ ἄνθη λεῖα πινόμενα δὶς τῆς ἡμέρας ἐν οἴνῳ αὐστηρῷ, δυσεντερίαις ἁρμόζει. καθ᾽ αὑτὰ δὲ καταπλασθέντα, νομὰς ἐφίστησι. σὺν κηρωτῇ δὲ πυρίκαυτα καὶ παλαιὰ ἕλκη ἰᾶται.

### Περὶ ὑποκιστίδος. Κεφ. ρκη´

Φύεται δὲ παρὰ τὰς ῥίζας τοῦ κίσου ἡ λεγομένη ὑποκιστίς. ὑπ᾽ ἐνίων δὲ ῥόβιθρον. ἢ κύτινος καλουμένη. ὅμοιόν τι κυτίνῳ ῥοιᾶς. καὶ τὸ μὲν αὐτοῦ κιρρόν. τὸ δὲ χλωρόν. τὸ δὲ λευκόν. ὅπερ κυλίζεται ὥσπερ ἡ ἀκακία. ἔνιοι δὲ ξηράναντες αὐτήν. καὶ θλάσαντες, βρέχουσί τε καὶ ἕψουσι. καὶ τὰ ἄλλα ποιοῦσιν, ὡς ἐπὶ τοῦ λυκίου. Δύναμιν δὲ ἔχει τὴν αὐτὴν τῇ ἀκακίᾳ. στυπτικωτέραν δὲ καὶ ξηραντικωτέραν. ποιοῦσαν πρὸς κοιλιακούς. δυσεντερικούς. αἱμοπτοϊκούς. ῥοῦν γυναικεῖον πινομένη καὶ ἐνιεμένη.

### Περὶ λαδάνου. Κεφ. ρκθ´.

Ἔστι δὲ καὶ ἕτερον εἶδος κίσου. καλούμενον ὑπ᾽ ἐνίων λῆδον. θάμνος κατὰ αὐτὰ τὰ φυόμενος τῷ κίσῳ. μακρότερα δὲ τὰ φύλλα ἔχει καὶ μελάντερα. λιπαρίας τινὰς κατὰ τὸ ἔαρ ἐπισπώμενα. οὗ φύλλων ἡ δύναμις στυπτικὴ καθέστηκε ποιοῦσα πρὸς ὅσα καὶ ὁ κίσος. γίνεται δὲ ἐξ αὐτοῦ τὸ λεγόμενον λάδανον. τὰ φύλλα γὰρ αὐτοῦ νεμόμεναι αἱ αἶγες καὶ οἱ τράγοι, τὴν λιπαρίαν ἀναλαμβάνουσι τῷ πώγωνι γνωρίμως. καὶ τοῖς μηροῖς προσπλαττομένην διὰ τὸ τυγχάνειν ἰξώδη. ἣν ἀφαιροῦντες ὑλίζουσι. καὶ ἀποτίθενται ἀναπλάσσοντες μαγίδας. ἔνιοι δὲ καὶ σχοινία ἐπισύρουσι τοῖς θάμνοις

καὶ τὸ προσπλασθὲν αὐταῖς λίπος ἀποξύσαντες ἀναπλάσσουσι. κράτιστον δέ ἐστιν αὐτοῦ τὸ εὐῶδες. ὑπόχλωρον. εὐμάλακτον. λιπαρόν. ἀμέτοχον ψάμμου ἢ ψαφαρίας. ῥητινῶδες. τοιοῦτον δέ ἐστι τὸ ἐν κύπρῳ γεννώμενον. τὸ μέντοι ἀραβικὸν καὶ λιβυκὸν εὐτελέστερον. Δύναμιν δὲ ἔχει στυπτικήν. θερμαντικήν. μαλακτικήν. ἀναστομωτικήν. ἵστησι δὲ τὰς ῥεούσας τρίχας, μιγὲν οἴνῳ καὶ σμύρνῃ καὶ μυρσίνῳ ἐλαίῳ. οὐλάς τε εὐπρεπεστέρας ποιεῖ μετ' οἴνου καταχριόμενον. καὶ ὠταλγίας μεθ' ὑδρομέλιτος, ἢ ῥοδίνου ἐγχεόμενον θεραπεύει. ὑποθυμιᾶται δὲ καὶ πρὸς ὑστερῶν ἐκβολάς. καὶ σκληρίας θεραπεύει τὰς ἐν μήτρᾳ ἐν πεσσῷ μιγέν. καὶ ταῖς ἀνωδύνοις καὶ βηχικαῖς καὶ μαλάγμασι χρησίμως μίγνυται. κοιλίαν τε ἵστησι σὺν οἴνῳ παλαιῷ ποθέν. ἔστι δὲ καὶ οὐρητικόν,

## ΠΕΡΙ ἘΒΕΝΟΥ. ΚΕΦ. ΡΛ.

Ἔβενος κρατίστη ἡ αἰθιοπική. καὶ μέλαινα. καὶ μὴ ἔχουσα κτηδόνας. ἐμφερής, κέρατι εἰργασμένῳ τῇ λειότητι. θλασθεῖσα δὲ πυκνή, δηκτικὴ ἐν τῇ γεύσει καὶ ὑποστύφουσα. τεθεῖσά τε ἐπ' ἀνθράκων μετ' εὐωδίας καὶ δίχα καπνοῦ ἐκθυμιωμένη. ἡ δὲ πρόσφατος διὰ τὴν λιπαρίαν, ἀνάπτεται πυρὶ προσαφθεῖσα. τριφθεῖσα δὲ ἐπ' ἀκόνης, ὑπόκιρρος γίνεται. Ἔστι δέ τις καὶ ἰνδική, ἔχουσα διαφύσεις λευκὰς, καὶ κιρράς. καὶ σπίλους ὁμοίως πυκνούς. πλὴν βελτίων ἡ πρώτη. ἔνιοι δὲ τὰ σησάμινα ἢ ἀκάνθινα ξύλα ἐμφερῆ ὄντα, ἀντὶ ἐβένου πωλοῦσι. διαγινώσκεται δὲ ἐκ τοῦ χαῦνά τε εἶναι, καὶ κατὰ σχίδακας μικρὰς ἀπολύεσθαι ἐμπορφύρους τῷ χρώματι. μηδὲν δὲ δηκτικὸν ἐχούσας ἐν τῇ γεύσει, ἢ ἐν τῇ θυμιάσει εὐῶδες. Δύναμιν δὲ ἔχει, σμηκτικὴν τῶν ἐπισκοτούντων ταῖς κόραις. ποιεῖ δὲ καὶ πρὸς τὰ παλαιὰ ῥεύματα καὶ φλυκτίδας, εἰ δέ τις ποιήσας ἐξ αὐτῆς ἀκόνιον χρῷτο εἰς τὰ κολλύρια, βέλτιον ἐνεργήσει. κατεργάζεται δὲ εἰς τὰ ὀφθαλμικὰ τῶν τορευμάτων ἢ ῥινημάτων, βρεχομένων ἐν οἴνῳ χίῳ ἡμέραν καὶ νύκτα. εἶτ' ἀλλοιουμένων ἐπιμελῶς καὶ εἰς κολλύρια ἀναπλασσομένων. ἔνιοι δὲ προτρίψαντες διηθοῦσιν αὐτά. εἶθ' οὕτω τὰ λοιπὰ ποιοῦσι. τινὲς δὲ ἀντὶ οἴνου

ὕδατι χρῶνται. καίεται δὲ ἐν ὠμῇ χύτρᾳ ἕως ἂν ἀνθρακω-
θῇ. καὶ πλύνεται ὡς ὁ κεκαυμένος μόλιβδος. ἁρμόζει δὲ ψω-
ροφθαλμίαις. καὶ πρὸς ἡ τοιαύτη ξηροφθαλμίας.

### Περὶ ῥόδων  Κεφ. ρλα.

Ρ όδον ψύχει καὶ στύφει. τὰ δὲ ξηρὰ μᾶλλον στύφει. χυλίζειν
δὲ δεῖ τὰ ἁπαλὰ ἀποψαλίσαντας τὸν ὄνυχα καλούμε-
νον. ὅπερ ἐστὶ τὸ λευκὸν τὸ ἐν τῷ φύλλῳ. τὸ δὲ λοιπὸν ἐκθλίβειν
καὶ τρίβειν ἐν σκιᾷ ἐν θυίᾳ ἄχρις οὗ συστραφῇ. οὕτω τε ἀ-
ποτίθεσθαι εἰς τὰς ὀφθαλμικὰς περιχρίσεις. ξηραίνεται
δὲ τὰ φύλλα ἐν σκιᾷ συνεχῶς στρεφόμενα ἵνα μὴ εὐρωτιά-
σῃ. ποιεῖ δὲ τῶν ξηρῶν ἑψηθέντων ἐν οἴνῳ τὸ ἀπόθλιμμα,
πρὸς ἄλγημα κεφαλῆς, ὀφθαλμῶν. ὤτων. οὔλων. δακτυ-
λίων. ἀπευθυσμένου ἐντέρου. μήτρας. πτερῷ ἐγχριόμενον
καὶ προσκλυζόμενον. αὐτὰ δὲ δίχα τοῦ ἐκθλιβῆναι, κοπέν-
τα καὶ ἐπιπλασσόμενα, ποιεῖ πρὸς ὑποχονδρίων φλεγ-
μονὰς, καὶ στομάχου πλάδον καὶ ἐρυσιπέλατα. ξηρὰ δὲ λεῖα
παρὰ μηροῖς προσπάσσεται. καὶ ἀνθηραῖς καὶ τραυματι-
καῖς ἀντιδότοις μίγνυται. καίεται δὲ καὶ εἰς καλλιβλέ-
φαρα. τὸ δὲ ἐν μέσοις τοῖς ῥόδοις εὑρισκόμενον ἄνθος πρὸς
οὔλων ῥευματισμοὺς ξηρὸν προσπασθὲν ποιεῖ. αἱ κεφαλαὶ δὲ
ποθεῖσαι, κοιλίαν ῥέουσαν καὶ αἵματος ἀναγωγὴν ἐπέχουσιν.

### Περὶ ῥοδίδων  Κεφ. ρλβ.

Κ αἱ αἱ λεγόμεναι δὲ ῥοδίδες, σκευάζονται τὸν τρόπον τοῦτον. ῥόδων
χλωρῶν ἀβρόχων μεμαρασμένον < μ. νάρδου ἰνδικῆς < ι.
σμύρνης < ϛ. λεῖα ἀναπλάσσεται εἰς τροχίσκους τριωβο-
λιαίους. καὶ ἐν σκιᾷ ξηραίνεται. καὶ ἀποτίθεται εἰς κερα-
μεοῦν ἀγγεῖον ἀκόνιτον περιεσφηνωμένον. ἔνιοι δὲ προστιθέασι
καὶ κόστου < β. ἴρεως ἰλλυρικῆς τὸ αὐτὸ μίσγοντες καὶ οἶ-
νον χῖον μετὰ μέλιτος. χρῆσις δὲ αὐτῶν ἐστίν, ἐπὶ γυναικῶν
περιτιθεμένων τῷ τραχήλῳ ἀντὶ ὁρμοῦ ἡδύπνου ἀμβλυνου-
σῶν τὴν τῶν ἱδρώτων δυσωδίαν. χρῶνται δὲ καὶ λείοις ἐν
διαπλάσμασι καὶ συγχρίσμασι μετὰ τὸ λουτρόν. καὶ μετὰ τὸ ξη-
ρανθῆναι, ἐκλύονται ψυχρῷ.

### Περὶ λυκίου. Κεφ. ρλγ.

Λύκιον. ὃ ἔνιοι πυξάκανθαν καλοῦσι, δένδρον ἐστὶν ἀκανθῶδες. ῥά-
βδους ἔχον τριπήχεις ἢ καὶ μείζονας. περὶ ἃς τὰ φύλλα
πύξῳ ὅμοια πυκνά. καρπὸν δὲ ἔχει ὡς πέπερι μέλανα. πικρόν.
πυκνόν. λεῖον. καὶ τὸν φλοιὸν δὲ ὠχρόν. ὅμοιον τῷ διεθέντι
λυκίῳ. ῥίζας δὲ πολλάς. πλαγίας. ξυλώδεις. φύεται δὲ πλεῖ-
στον ἐν καππαδοκίᾳ καὶ λυκίᾳ. καὶ ἐν ἄλλοις τόποις πολλοῖς.
τραχέα δὲ φιλεῖ χωρία. χυλίζεται δὲ, τῶν φύλλων σὺν τοῖς θά-
μνοις θλασθέντων καὶ βραχέντων, ἐφ' ἱκανὰς ἡμέρας. εἶθ' ἑ-
ψηθέντων. καὶ τῶν μὲν ξύλων ῥιπτομένων τοῦ δὲ ὑγροῦ πά-
λιν ἑψομένου μέχρι μελιτώδους συστάσεως. δολοῦται δὲ ἀ-
μόργης τῇ ἑψήσει ἅμα μιγνυμένης, ἢ ἀψινθίου χυλίσματι
ἢ βοείᾳ χολῇ. καὶ τὸ μὲν ἐπινηχόμενον ἀφρῶδες ἐν τῇ ἑ-
ψήσει ἀφελὼν, ἀπόθου εἰς τὰ ὀφθαλμικά. τῷ δὲ λοιπῷ εἰς
τὰ ἄλλα χρῶ. γίνεται δὲ καὶ ἐκ τοῦ καρποῦ ὁμοίως χύλισμα ἐκ-
πιεζομένου καὶ ἡλιαζομένου. ἔστι δὲ κάλλιστον τὸ καιόμενον λύκι-
ον. καὶ κατὰ τὴν σβέσιν τὸν ἀφρὸν ἐνερευθῆ ἔχον. ἔξωθεν μέλαν.
διαιρεθὲν δὲ κιῤῥόν. ἄβρωμον. στύφον μετὰ πικρίας χρώματι
κροκώδες οἷόν ἐστι τὸ ἰνδικόν. διαφέρον τοῦ λοιποῦ καὶ δυ-
ναμικώτερον. Δύναμιν δὲ ἔχει στυπτικήν. καὶ τὰ ἐπισκο-
τοῦντα ταῖς κόραις καθαίρει. ψωριάσεις δὲ τὰς ἐπὶ τῶν
βλεφάρων, καὶ κνησμοὺς καὶ παλαιὰ ῥεύματα θερα-
πεύει. ποιεῖ δὲ καὶ πρὸς ὦτα πυοῤῥοοῦντα. παρίσθμια. οὖλα
ἑλκούμενα. καὶ διεῤῥωγότα χείλη. ῥαγάδας ἐν δακτυλί-
οις. παρατρίμματα ἐπιχριόμενον. ἁρμόζει καὶ κοιλιακοῖς καὶ
δυσεντερικοῖς, πινόμενον καὶ ἐγκλυζόμενον. δίδοται δὲ καὶ
αἱμοπτοϊκοῖς, καὶ βήττουσι σὺν ὕδατι καὶ τοῖς ὑπὸ λυσ-
σῶντος κυνὸς δηχθεῖσιν. ἐν καταποτίῳ ἢ σὺν ὕδατι ποτόν.
ξανθίζει τε καὶ τρίχας. παρωνυχίας τε καὶ ἕρπητας.
καὶ σηπεδόνας ἰᾶται. ἵστησι καὶ ῥοῦν γυναικεῖον προστιθέ-
μενον. βοηθεῖ δὲ καὶ λυσσοδήκτοις ποθὲν μετὰ γάλακτος. ἢ
ἀντὶ καταποτίου λαμβανόμενον. Λέγεται δὲ τὸ ἰνδικὸν
λύκιον γίνεσθαι ἐκ θάμνου, τῆς λεγομένης λογχίτιδος. ἔστι
δὲ εἶδος ἀκάνθης, ῥάβδους ἔχουσα ὀρθὰς τριπήχεις ἢ καὶ μεί-
ζους πολλὰς ἀπὸ τοῦ πυθμένος, παχυτέρας βάτου, φλοιοὺς
ῥαγεῖς ἐνερευθεῖς. τὰ δὲ φύλλα ὅμοια ἐλαίᾳ. ἧς ἡ πόα ἐν ὀ-

ξει ἑψηθεῖσα καὶ ποτιζομένη, ἱστορεῖται φλεγμονὰς σπληνὸς καὶ ἴκτερον ἰᾶσθαι. καὶ καθάρσεις γυναικείας ἄγειν. καὶ ὠμὴ δὲ λεία ποθεῖσα, τὰ αὐτὰ ποιεῖν. παραδίδοται. τοῦ δὲ σπέρματος μύστρα δύο ποθέντα, ὑδατώδη καθαίρει, καὶ θανασίμοις βοηθεῖ.

Περὶ Ἀκακίας. Κεφ. ρλδ΄.

Ἀκακία φύεται ἐν αἰγύπτῳ. ἄκανθα δέ ἐστι δενδρώδης. θαμνώδης. οὐκ ὀρθοφυής. ἄνθος ἔχουσα λευκόν. τὸν δὲ καρπὸν ὥσπερ θέρμον ἐν λοβοῖς κείμενον. ἐξ οὗ καὶ ἐκθλίβεται τὸ ἐγχύλισμα ξηραινόμενον ἐν σκιᾷ. μέλαν μὲν ἐκ τοῦ πεπείρου καρποῦ. ὑπόκιρρον δὲ ἐκ τοῦ ὠμοῦ. ἐκλέγου δὲ τὸ ἠρέμα ἔγκιρρον εὐῶδες, ὡς ἐν ἀκακίᾳ. χυλίζουσι δέ τινες τὰ φύλλα σὺν τῷ καρπῷ. καὶ κόμμι δὲ ἐκ τῆς ἀκάνθης γίνεται. Δύναμιν δὲ ἔχει στυπτικήν. ψυκτικήν. ἁρμόζει δὲ ὁ χυλὸς πρὸς τὰ ὀφθαλμικὰ καὶ ἐρυσιπέλατα. ἕρπητας. χιμέθλας. πτερύγια. τὰ ἐν τῷ στόματι ἕλκη. καὶ προπτώσεις τῶν ὀφθαλμῶν. καθίστησιν. ἐπέχει δὲ καὶ ῥοῦν γυναικεῖον. καὶ τὰς προπτώσεις δὲ τῆς ὑστέρας στέλλει. κοιλίαν τε ῥέουσαν ἐπέχει πινόμενος καὶ ἐγκλυζόμενος. μελαίνει δὲ καὶ τρίχας. πλύνεται δὲ καὶ εἰς τὰ ὀφθαλμικά. τριβομένου μεθ᾽ ὕδατος ἀποχεομένου τοῦ ἐπιπάγου ἄχρις ἂν καθαρὸν ἐφίστηται τὸ ὕδωρ. καὶ οὕτως ἀναλαμβάνεται εἰς τροχίσκους. καίεται δὲ ἐν ὠμῇ χύτρᾳ μετὰ κεράμου ἐν καμίνῳ. ὀπτᾶται δὲ ἐπ᾽ ἀνθράκων ἐκφυσωμένη, τὸ δὲ τῆς ἀκάνθης ἕψημα καταντλούμενον. ἄρθρα λελυμένα ἵστησι. Τὸ δὲ κόμμι τῆς ἀκάνθης διαφέρει τὸ σκωληκοειδὲς, ὑελίζον. διαυγές. ἄξυλον. εἶτα τὸ λευκόν. τὸ δὲ ῥητινῶδες καὶ ῥυπαρὸν, ἄχρηστον. Δύναμιν δὲ ἔχει παρεμπλαστικήν. ἀμβλυντικήν. δριμέων φαρμάκων οἷς μίγνυται. πυρίκαυστά τε οὐκ ἐᾷ φλυκταινοῦσθαι καταχριόμενον μετ᾽ ὠοῦ. Φύεται δὲ καὶ ἑτέρα ἀκακία ἐν καππαδοκίᾳ καὶ πόντῳ. παρεμφέρουσα τῇ αἰγυπτίᾳ. ἐλάττων μέντοι παραπολὺ καὶ χαμαίζηλος. καὶ τρυφερωτέρα περιπλέξεως τῆς ἀκάνθης σκολοπώδους. φύλλα ἔχουσα πηγάνῳ ὅμοια. τὸ δὲ σπέρμα ἐν θυλάκοις συνεζευγμένοις, τριχώροις ἢ τετραχώροις, ἔλαττον φακοῦ. στύφει δὲ

καὶ αὐτὴ

καὶ αὐτὴ χυλιζομένη σύμπασα. πλὴν ἥττων τῇ δυνάμει
καθέστηκεν. εἰς τὰ ὀφθαλμικὰ ἀνεπιτήδειος οὖσα.

### Περὶ Ἀμόργης. Κεφ. ρλέ.

Ἀ μόργη, ὑποστάθμη ἐστὶν ἐλαίας τῆς ἐκθλιβομένης. ἥτις ἑ/
ψηθεῖσα ἐν χαλκῷ κυπρίῳ μέχρι μελιτώδους συστάσεως,
στύφει. ποιοῦσα πρὸς ἃ καὶ τὸ λύκιον. ἐκ περισσοῦ δὲ καὶ
πρὸς ὀδονταλγίας καὶ τραύματα. ἐπιχριομένη μετ᾽ ὄξους
ἢ οἴνου ἢ οἰνομέλιτος. μίγνυται δὲ καὶ ὀφθαλμικαῖς δυ/
νάμεσι καὶ ἐμπλαστικαῖς. παλαιουμένη τὲ βελτίων γίνεται.
ἔγκλυσμά τε ἕδρα καὶ αἰδοίῳ καὶ μήτραις ἡλκωμέναις ἐστὶ
χρήσιμος, ἐκβάλλει δὲ καὶ τοὺς ἐφθαρμένους ὀδόντας σὺν
ὀμφακίνῳ ἑψηθεῖσα ἄχρι μελιτώδους συστάσεως. καὶ περι/
πλασθεῖσα. ψώρας τὲ κτηνῶν σὺν θέρμων ἀφεψήματι καὶ
χαμαιλέοντος καταχριομένη θεραπεύει. ἡ δὲ ἀνέψητος καὶ
πρόσφατος ποδαγρικοὺς καὶ ἀρθρητικοὺς ὠφελεῖ. θερμὴ
καταντληθεῖσα. ἐγχριομένη δὲ εἰς κώδιον καὶ ἐπιτιθεμένη
ἐπὶ τῶν ὑδρωπικῶν, στέλλει τὸν ὄγκον.

### Περὶ Ἄγνου. Κεφ. ρλς'.

Ἄ γνος ἢ λύγος. θάμνος ἐστὶ δενδρώδης. παρὰ ποταμοῖς τραχέσι
τε τόποις καὶ χαράδραις φυόμενος ῥάβδους ἔχων δυσθραύ/
στους. μακράς. φύλλα δὲ ὥσπερ ἐλαίας. ἁπαλώτερα δέ. τὸ
δ᾽ ἄνθος ἡ μέν τις λευκὸν σὺν ὑποπορφυρίζοντι. ἡ δὲ, πορφυ/
ροῦν φέρει. σπέρμα δὲ ὡς πέπερι. Δύναμιν δὲ ἔχει θερ/
μαντικὴν. στυπτικήν. ὁ δὲ καρπὸς αὐτῆς πινόμενος, βοηθεῖ
θηριοδήκτοις. σπληνικοῖς. ὑδρωπικοῖς. καταστᾷ δὲ καὶ
γάλα. καὶ ἔμμηνα ἄγει πινόμενος ὅσον < α πλῆθος σὺν
οἴνῳ ἐκλύει δὲ καὶ γονήν. ἅπτεται δὲ καὶ κεφαλῆς κά/
ρον ἐπιφέρων. τὸ δὲ ἀφέψημα τῆς πόας καὶ τοῦ σπέρμα-
τος, εἰς ἐγκαθίσματα ταῖς περὶ ὑστέραν διαθέσεσι, καὶ
φλεγμοναῖς ἀρήγει ποθὲν δὲ μετὰ γλήχωνος καὶ ὑποθυ/
μιαθὲν τὸ σπέρμα καὶ προστεθὲν, κάθαρσιν κινεῖ. λύει δὲ καὶ
κεφαλαλγίας καταπλασσόμενον. καὶ ἐπὶ ληθαργικῶν
τε καὶ φρενιτικῶν ἐμβρέχεται σὺν ὄξει καὶ ἐλαίῳ. καὶ τὰ

φύλλα ὑποθυμιώμενά τε καὶ ὑποστρωννύμενα, θηρία διώκει, καὶ καταπλασσόμενα ἐπὶ τῶν θηριοδήκτων βοηθεῖ. σκληρείας τε διδύμων μετὰ βουτύρου καὶ φύλλων ἀμπέλου μαλάττει. ῥαγάδας τε τὰς ἐν δακτυλίῳ σὺν ὕδατι ἐπιπλασθὲν τὸ σπέρμα πραΰνει. σὺν δὲ τοῖς φύλλοις, στρέμματα, τραύματα ἰᾶται. δοκεῖ δὲ καὶ κωλυτήριον εἶναι ἐν ὁδοιπορείαις παρατριμμάτων, εἴ τις ῥάβδον αὐτῆς παρὰ χεῖρα κρατοίη. ὀνόμασται δὲ ἄγνος, διὰ τὰς ἐν τοῖς θεσμοφορίοις ἁγνευούσας γυναῖκας, εἰς ὑπόστρωμα χρῆσθαι αὐτῇ. λύγος δὲ διὰ τὸ περὶ τὰς ῥάβδους αὐτῆς εὔτονον.

Περὶ ἰτέας. Κεφ. ρλζ΄.

Ἰτέα δένδρον ἐστὶ πᾶσι γνώριμον. οὗ ὁ καρπὸς καὶ τὰ φύλλα καὶ ὁ φλοιὸς καὶ ὁ χυλὸς, στυπτικὴν ἔχει δύναμιν. ἁρμόζει δὲ τὰ φύλλα λεῖα μετὰ ὀλίγου πεπέρεως καὶ οἴνου ποθέντα εἰλεώδεσι. καθ' ἑαυτὰ δὲ σὺν ὕδατι ληφθέντα, ἀσυλληψίαν κατεργάζεται. ὁ δὲ καρπὸς ποθεὶς, αἱμοπτοϊκοὺς ὠφελεῖ. καὶ ὁ φλοιὸς δὲ τὰ αὐτὰ δρᾷ. καεὶς δὲ καὶ φυραθεὶς ὄξει, τύλους καὶ ἥλους αἴρει καταπλασθείς. ὁ δὲ ἐκ τῶν φύλλων καὶ τοῦ φλοιοῦ χυλὸς, ἐν κελύφῳ ῥόας θερμανθεὶς μετὰ ῥοδίνου, ὠταλγίας ἀρήγει. καὶ τὸ ἀφέψημα δὲ αὐτῶν, κατάντλημα ποδάγρας ἄριστον. σμήχει δὲ καὶ πίτυρα. λαμβάνεται δὲ καὶ ὀπὸς ἐξ αὐτῆς ἐντεμνομένης τοῦ φλοιοῦ κατὰ τὴν ἄνθησιν. ἔσω γὰρ εὑρίσκεται συνεστώς. δύναμιν δὲ ἔχει σμηκτικὴν τῶν ἐπισκοτούντων ταῖς κόραις.

Περὶ ἀγριελαίας. Κεφ. ρλη΄.

Ἀγριελαία ἣν ἔνιοι κότινον καλοῦσιν. οἱ δὲ, αἰθιοπικὴν ἐλαίαν, ἔχει φύλλα στυπτικά. λεῖα δὲ καταπλασθέντα, ἐφεκτικά ἐστιν ἐρυσιπελάτων. ἑρπήτων. ἐπινυκτίδων. ἀνθράκων. νομῶν. παρωνυχιῶν. περιχαρακτικὰ ἐσχαρῶν. σὺν μέλιτι καταπλασσόμενα. ἀνακαθαίρει δὲ καὶ τὰ ῥυπαρὰ ἕλκη. διαφορεῖ καὶ φύγεθλα καὶ φλεγμονὰς, σὺν μέλιτι καταπλασθέντα. καὶ δέρμα κεφαλῆς ἀποσπασθὲν, παρακολλᾷ. ἰᾶται δὲ καὶ τὰ ἐν στόματι ἕλκη καὶ ἄφθας διαμασηθέντα.

καὶ ὁ χυλὸς δὲ αὐτῶν καὶ τὸ ἀφέψημα, τὸ αὐτὸ ποιεῖ. ἐπέχει δὲ καὶ αἱμοῤῥαγίαν. καὶ ῥοῦν γυναικεῖον προστιθέμενος ὁ χυλός. καὶ τὰ ἐν ὀφθαλμοῖς σταφυλώματα. καὶ φλυκταίνας. ἔτι δὲ ἕλκη καὶ παλαιὰ ῥεύματα στέλλει. διὸ καὶ μιγέντα κολλυρίοις πρὸς τὰς τῶν βλεφάρων διαθέσεις εὐθετεῖ. χυλίζοντας δὲ δεῖ κόπτειν τὰ φύλλα. καὶ περιχέοντας οἶνον ἢ ὕδωρ ἐκθλίβειν. καὶ ξηράναντας ἐν ἡλίῳ ἀναπλάσσειν. ἔστι δὲ εὐτονώτερος, ὁ διὰ τοῦ οἴνου ἐκθλιβόμενος. καὶ εἰς ἀπόθεσιν μᾶλλον τοῦ δι' ὕδατος ἁρμόζει. ποιεῖ δὲ καὶ πρὸς ὦτα πυοῤῥοοῦντα καὶ ἑλκωμένα. τὰ δὲ φύλλα καὶ αὐτὰ κοιλιακοῖς εὐθετεῖ καταπλασσόμενα σὺν ὠμῇ λύσει. καίεται δὲ τὰ φύλλα μετὰ τῶν ἀνθῶν. καὶ ἀντὶ σποδίου λαμβάνεται ἐν χύτρᾳ ὠμῇ. περιπλασσομένῃ πηλῷ τὸ στόμα μέχρις ὀπτήσεως τοῦ κεράμου. ἔπειτα κατασβέννυται οἴνῳ. καὶ φυραθέντα πάλιν οἴνῳ, ὁμοίως καίεται. εἶτα πλύνεται ὡς τὸ ψιμμύθιον καὶ ἀναπλάσσεται. δοκεῖ δὲ ἡ τοιαύτη καῦσις, μὴ λείπεσθαι τοῦ σποδίου εἰς τὰ ὀφθαλμικά. ὅθεν καὶ τὴν δύναμιν ὁμοίως ἡγητέον.

Περὶ Ἐλαίας. κεφ. ρλθʹ.

Δύναται δὲ τὰ αὐτὰ καὶ τὰ τῆς ἡμέρου ἐλαίας φύλλα. λείπεται δὲ τῇ δυνάμει. ὅθεν πρὸς τὰ ὀφθαλμικὰ μᾶλλον ἁρμόζει διὰ τὸ ἐπιεικέστερον. τὸ δὲ ἐκ χλωροῦ τοῦ ξύλου καιομένου ἐκκρινόμενον ὑγρὸν, πίτυρα καὶ ψώρας καὶ λειχῆνας καταχριόμενον ἰᾶται. καὶ ὁ καρπὸς δὲ αὐτῶν καταπλασθεὶς, πίτυρα καὶ νομὰς θεραπεύει. τὸ δ' ἐντὸς τοῦ πυρῆνος μετὰ στέατος καὶ ἀλεύρου, λεπροὺς ὄνυχας ἐκτινάσσει.

Περὶ Κολυμβάδων ἐλαιῶν. κεφ. ρμʹ.

Ἐλαῖαι κολυμβάδες λεῖαι καταπλασθεῖσαι, πυρίκαυτα οὐκ ἐῶσι φλυκταινοῦσθαι. καὶ ῥυπαρὰ δὲ ἕλκη καθαίρουσιν. ὁ δὲ ἐκ τῆς ἅλμης χυλὸς αὐτῶν διακλυζόμενος, οὖλα στέλλει. καὶ ὀδόντας σειομένους κρατύνει. ἔστι δὲ ἡ μὲν ὑπόκιῤῥος καὶ πρόσφατος ἐλαία, δυσκοίλιος. εὐστόμαχος. ἡ δὲ μέλαινα καὶ πέπειρος, εὐδιάφθορος καὶ κακοστόμαχος. ὀφθαλμοῖς τε ἀνεπιτήδειος καὶ κεφαλαλγής. φρυγεῖσα δὲ καὶ κα-

καταπλασθεῖσα, νομὰς ἵστησι. καὶ ἄνθρακας περιρρήσσει.

Περὶ ἐλαίου ἀγρίας ἐλαίας. Κεφ. ρμα.

Τὸ δὲ ἐκ τῆς ἀγρίας ἐλαίας ἔλαιον, διάκλυσμα οὔλοις μυδῶσι. καὶ σταλτικὸν ὑποσάλων ὀδόντων ἐστί. πυρία τε διαυτοῦ θερμαινομένου ἐπιτήδειος οὔλοις ῥευματιζομένοις. ἄχρις ἂν λευκὰ φανῇ.

Περὶ δακρύου ἐλαίας αἰθιοπικῆς. Κεφ. ρμβ.

Τὸ δὲ δάκρυον τῆς αἰθιοπικῆς ἐλαίας, ἔοικέ πως σκαμμωνίᾳ. ἔγκιρρον. ἐκ μικρῶν σταγόνων συγκείμενον. δηκτικόν. τὸ δὲ ὅμοιον κόμμι καὶ ἀμμωνιακῷ, μελανίζον καὶ οὐ δηκτικὸν, ἀχρεῖον. φέρει δὲ τὸ τοιοῦτον καὶ ἡ παρ' ἡμῖν ἐλαία. καὶ ἡ ἀγριελαία. ποιεῖ δὲ πρὸς ἀμβλυωπίαν καὶ οὐλὰς καὶ λευκώματα ἐγχριόμενον σμήχει. οὖρά τε ἔμμηνα κινεῖ. καὶ πρὸς ὀδόντων πόνους ἐνεργεῖ. ἐντιθέμενον εἰς τὸ βρῶμα. ἀναγράφεται δὲ καὶ ἐν τοῖς φθαρτικοῖς. ἄγει δὲ καὶ ἔμβρυα καὶ λειχῆνας θεραπεύει καὶ λέπραν. καλεῖται δὲ αἰθιοπικὴ ἐλαία καὶ ἀγριελαία.

Περὶ δρυός. Κεφ. ρμγ.

Δρῦς πᾶσα στυπτικὴν ἔχει δύναμιν. μάλιστα δὲ αὐτῆς στύφει τὸ μεταξὺ τοῦ φλοιοῦ καὶ τοῦ πρέμνου ὑμενῶδες. ὁμοίως καὶ τὸ περὶ τῇ βαλάνῳ ὑπὸ τὸ κέλυφος. δίδοται δὲ τὸ ἀφέψημα αὐτῶν, κοιλιακοῖς καὶ δυσεντερικοῖς. καὶ αἱμοπτοϊκοῖς. καὶ ἐν πεσσοῖς λεῖον προστίθεται ῥοϊκαῖς γυναιξίν.

Περὶ βαλάνων. Κεφ. ρμδ.

Καὶ αἱ βάλανοι δὲ τὰ αὐτὰ ποιοῦσιν. εἰσὶ δὲ καὶ οὐρητικαί. καὶ κεφαλαλγεῖς, βιβρωσκόμεναι, καὶ πνευματοῦσαι. ἁρμόζουσι δὲ πρὸς τὰ ἰοβόλα ἐσθιόμεναι. καὶ τὸ ἀφέψημα δὲ αὐτῶν καὶ τοῦ φλοιοῦ, βοηθεῖ τοξικῷ μετὰ γάλακτος βοείου πινόμενον, ὠμαὶ δὲ καταπλασθεῖσαι λεῖαι, φλεγμονὰς παρηγοροῦσι. σὺν στέατι δὲ χοιρείῳ ταριχηρῷ, πρὸς κακοήθεις σκληρίας, καὶ πρὸς πονηρευόμενα ἕλκη ἁρμόζουσιν. ἰσχυρότεραι δὲ τῶν δρυΐνων αἱ πρίνιναι τῇ δυνάμει εἰσίν.

## Περὶ φηγοῦ καὶ πρίνου. Κεφ. ρμε´.

Καὶ ἡ φηγὸς καὶ ἡ πρίνος εἴδη ὄντα δρυὸς, ἐοικότα ἐνεργεῖ. τῆς ῥίζης δὲ τοῦ πρίνου ὁ φλοιὸς ἑψηθεὶς σὺν ὕδατι ἄχρις οὗ τακηρὸς γένηται, καὶ ἐπιπλασθεὶς νύκτα ὅλην, τρίχας μελαίνει προαποσμηχθείσας κιμωλίᾳ γῇ. ἁρμόζει δὲ τὰ φύλλα πάντων, κοπέντα λεῖα οἰδήμασι. καὶ τὰ ἄτονα τῶν μόρη κρατύνει.

## Περὶ Καστάνων. Κεφ. ρμς´.

Αἱ δὲ σαρδιαναὶ βάλανοι, ἃς τινὲς λόπιμα ἢ κάστανα καλοῦσιν, ἢ μότα ἢ διὸς βαλάνους, στύφουσι καὶ αὗται, τῶν ὁμοίων εἰσὶ δραστικαί. καὶ μάλιστα οἱ μεταξὺ τῆς σαρκὸς καὶ τοῦ λέπους φλοιοί. ἡ δὲ σὰρξ καὶ τοῖς ἐφήμερον πεπωκόσιν, ἁρμόζει.

## Περὶ Κηκίδων. Κεφ. ρμζ´.

Κηκὶς καρπός ἐστι δρυός. ἡ μέν τις ὀμφακῖτις καλεῖται μικρὰ καὶ κονδυλώδης. στιβαρά. ἀτρύπητος. ἡ δέ τις λεία καὶ κούφη καὶ τετρημένη. ἐκλέγεσθαι δὲ δεῖ τὴν ὀμφακῖτιν. ἐνεργεστέραν οὖσαν. ἀμφότεραι δὲ στύφουσιν ἱκανῶς, καὶ στέλλουσι λεῖαι τὰς ὑπερσαρκώσεις. ῥευματισμούς τε οὔλων καὶ κιονίδος. καὶ τὰς ἐν στόματι ἄφθας. τὸ δὲ μέσον αὐτῶν, βρώματι ὀδόντων ἐντεθὲν, παύει τὰς ὀδύνας. γίνονταί τε καὶ ἴσχαιμοι καεῖσαι ἐπ᾽ ἀνθράκων μέχρι πυρώσεως, καὶ κατασβεσθεῖσαι ἢ οἴνῳ ἢ ὄξει ἢ ὀξάλμῃ. τὸ δὲ ἀπόζεμα αὐτῶν ποιεῖ καὶ πρὸς ἐγκαθίσματα. προπτώσεις ὑστέρας, καὶ ῥευματισμούς. μελαίνουσι δὲ καὶ τρίχας, ἀποβραχεῖσαι ὄξει ἢ ὕδατι. ἁρμόζουσι δὲ καὶ κοιλιακοῖς καὶ δυσεντερικοῖς ἐπιπλαττόμεναι οἴνῳ ἢ ὕδατι λεῖαι καὶ πινόμεναι. τοῖς τε προσοψήμασι μιγνύμεναι ἢ προαφεψόμεναι ὅλαι ἐν τῷ ὕδατι. εἰς ὃ μέλλει τι ἕψεσθαι τῶν ἁρμοζόντων πρὸς αὐτούς. καὶ καθόλου ὅπου δεῖ στύψαι ἢ στῆσαι ἢ ἀναξηρᾶναι, παραλαμβάνεσθαι δεῖ τὴν χρῆσιν αὐτῶν.

## Περὶ Ῥοός. Κεφ. ρμη´.

Ῥοῦς ὁ ἐπὶ τὰ ὄψα. ὃν ἔνιοι ἐρυθρὸν καλοῦσι, καρπός ἐστι τῆς καλουμένης βυρσοδεψικῆς ῥοός. ἥ τις ὠνομάσθη ἐκ τοῦ τοὺς

βυρσοδέψαι αὐτῇ χρῆσθαι, εἰς τὴν σύψιν τῶν δερμάτων. ἔστι δὲ δενδρύφιον φυόμενον ἐν πέτραις ὡς δίπηχυ. ἐφ' οὗ φύλλα ἐπιμήκη. ὑπέρυθρα. τὴν περιφέρειαν ἐντετμημένα πρινοειδῶς. καρπὸς δὲ βοτρυδίοις ἐοικώς. πυκνός. κατὰ τὸ μέγεθος τερεβίνθου. ὑπόπλατυς. οὗ τὸ περικείμενον φλοιῶδες, ἐστὶν εὔχρηστον. Δύναμιν δὲ ἔχει τὰ φύλλα, στυπτικήν. ποιοῦσαν πρὸς ἃ καὶ ἡ ἀκακία. μελαίνει δὲ τρίχας τὸ ἀφέψημα. δυσεντερίαις τε ἐστὶν ἔγκλυσμα. καὶ πόμα. καὶ ἐγκάθισμα. καὶ ὤτων πυορροούντων ἔγκλυσμα. πτερύγιά τε καὶ γαγγραίνας ἐπέχει καταπλασσόμενα τὰ φύλλα, μετ' ὄξους ἢ μέλιτος καὶ τὸ χύλισμα δὲ τῶν φύλλων ξηρῶν ἑψομένων σὺν ὕδατι ὥσπερ τὸ λύκιον ἄχρι συστάσεως μελιτώδους, ἁρμόζει πρὸς ὅσα καὶ τὸ λύκιον. καὶ ὁ καρπὸς δὲ τὰ αὐτὰ ποιεῖ. ἁρμόζων ἐν προσοψήμασι κοιλιακοῖς. δυσεντερικοῖς. ἀλέγμαντά τε τηρεῖ. σὺν ὕδατι καταπλασθείς. θλάσματα ἀποσύρματα. πελιώματα. γλώσσης τε τραχύτητας σμήχει σὺν μέλιτι καὶ λευκὸν ῥοῦν ἵστησιν. αἱμορροΐδας τε θεραπεύει μετὰ δρυΐνου ἄνθρακος λείου ἐπιτιθέμενος. καὶ τούτου δὲ τὸ ἀπόβρεγμα ἑψόμενον συνίσταται, βέλτιόν πως τοῦ καρποῦ ποιοῦν. φέρει δὲ καὶ κόμμι ὅπερ ἐντίθεται τοῖς βρώμασι τῶν ὀδόντων πρὸς ἀνωδυνίαν.

## Περὶ φοίνικος. κεφ. ρμθ.

Φοῖνιξ ἐν αἰγύπτῳ γίνεται. συνάγεται δὲ μετοπωρούσης τῆς κατὰ τὴν ὀπώραν ἀκμῆς. παρεμφερῶν τῇ ἀραβικῇ μυροβαλάνῳ. πῶμα δὲ λέγεται. χλωρὸς τὸ χρῶμα. ἐμφερὴς κυδωνίῳ κατὰ τὴν ὀσμήν. εἰ δὲ ἀφεψηθῇ πεπαινόμενος, γίνεται φοινικοβάλανος. ἔστι δὲ στρυφνός. στυπτικός. πινόμενος σὺν οἴνῳ αὐστηρῷ πρὸς διάρροιαν καὶ ῥοῦν γυναικεῖον. ἵστησι δὲ καὶ αἱμορροΐδας. καὶ τραύματα κολλᾷ καταπλασθείς. αἱ δὲ φοινικοβάλανοι, στυπτικώτεραι τυγχάνουσι τῶν ξηρῶν. κεφαλαλγεῖς δέ εἰσι καὶ πλείονες βρωθεῖσαι μεθύσκουσιν. αἱ δὲ ξηραὶ ὠφελοῦσι βιβρωσκόμεναι αἱμοπτοϊκούς. στομαχικούς. δυσεντερικούς. καὶ τὰ περὶ κύστιν καταπλασσόμεναι λεῖαι μετὰ κυδωνίου καὶ κηρωτῆς οἰνανθίνης. μάλιστα δὲ αἱ καρυω

τισὶ ἐσθιόμεναι, ἀρτηριῶν τραχύτητας ἰῶνται.

Περὶ φοινίκων θηβαϊκῶν. Κεφ. ρν.

Τ ῶν δὲ θηβαϊκῶν τὸ ἀφέψημα ποθὲν, παύει καύσωνα. καὶ
τὰς δυνάμεις ἀνακτᾶται, μετὰ ὑδρομέλιτος παλαιοῦ λαμ
βανόμενον. καὶ αὐταὶ βρωθεῖσαι, τὸ αὐτὸ ποιοῦσι. γίνεται
δὲ καὶ οἶνος ἐξ αὐτῶν τὸ αὐτὸ δυνάμενος τῷ καρπῷ. καὶ καθ'
ἑαυτὸ ποθὲν τὸ ἀφέψημα αὐτῶν καὶ ἀναγαργαριζόμενον
ἱκανῶς στύφει καὶ στέλλει. Οἱ δὲ πυρῆνες τῶν φοινίκων,
καίονται ἐν ὠμῇ χύτρᾳ. καθάπερ καὶ τὰ ἄλλα πάντα. εἶ
τα σβεσθέντες οἴνῳ πλύνονται. καὶ ὡς ἀντὶ σποδοῦ εἰς τὰ
καλλιβλέφαρα χρησιμεύουσι. καὶ μὴ αὐτάρκως καῶσι,
πάλιν τὸ αὐτὸ γίνεται. Δύναμιν δὲ ἔχουσι στυπτικὴν
παρεμπλαστικήν. ποιοῦσαν πρὸς τὰς ἐν ὀφθαλμοῖς φλυκ
τίδας. σταφυλώματα. μίλφας σὺν νάρδῳ. σὺν οἴνῳ δὲ στέλ
λουσι καὶ ὑπερσαρκώματα. καὶ ἀπουλοῦσιν ἕλκη. εὐθετοῦ
σι δὲ μάλιστα οἱ ἀπ' αἰγύπτου. οἱ ἐκ τῶν χαμαιζήλων φοινίκων.

Περὶ φοίνικος ἐλάτης. Κεφ. ρνα.

Φ οίνιξ ἣν ἔνιοι ἐλάτην ἢ σπάθην καλοῦσι, περικάλυμμά ἐστι
τοῦ καρποῦ τῶν φοινίκων ἀκμὴν ἀνθούντων. χρῶνται δὲ αὐ
τῷ οἱ μυρεψοὶ εἰς τὰς τῶν μύρων στύψεις. ἔστι δὲ αὐτῆς κρατίστη.
ἡ εὐώδης στύφουσα. βαρεῖα. μεμυκυῖα. λιπαρὸν ἔχουσα τὸ ἐν
τός. Δύναμιν δὲ ἔχει στυπτικήν. ἐφιστᾶσαν τὰ νεμόμενα τῶν
ἑλκῶν χαλασμοὺς τε ἄρθρων συνάγει. λεία μαλάγμασι μιγεῖ
σα καὶ καταπλάσμασιν. ὠφελεῖ δὲ καὶ ὑποχόνδρια καὶ
στόμαχον ἀτονοῦντα. καὶ ἡπατικὰς διαθέσεις. μιγνυμένη
τοῖς ἁρμόζουσι τῶν καταπλασμάτων. μελαίνει δὲ καὶ τρί
χας τὸ ἀφέψημα αὐτῆς. σμηχόμενον συνεχῶς. ποτιζόμε
νον δὲ νεφριτικοῖς καὶ τοῖς περὶ κύστιν καὶ σπλάγχνα ἁρ
μόζει. κοιλίαν τε καὶ ὑστέραν ῥευματιζομένην ἵστησιν. ἁπα
λὴ δὲ σὺν ῥητίνῃ καὶ κηρῷ ἐπιτεθεῖσα, καὶ ἐαθεῖσα ἡμέρας
εἴκοσι, ψώρας ἰᾶται. καὶ ὁ περιεχόμενος δὲ ὑπ' αὐτῆς καρ
πὸς, ἐλάτει καλεῖται. ὑπ' ἐνίων δὲ βόρασσος. καὶ αὐτὸς στυ
πτικὸς ὢν τὰ αὐτὰ δρᾷ τῇ σπάθῃ. χωρὶς τῆς ἐν τοῖς μύ

ροις εὐχρηστίας. καὶ τὸ ἐγκάρδιον δὲ τοῦ πρέμνου λευκοῦ καὶ αὐτὸ πρόσφατον βιβρωσκόμενον καὶ ἀφεψόμενον, ποιεῖ πρὸς ὅσα καὶ ὁ βούρασος.

### Περὶ ῥόας. Κεφ. ρνβ΄

Ῥόα πᾶσα εὔχυμος, εὐστόμαχος, ἄτροφος. τούτων μέντοι ἡ γλυκεῖα εὐστομαχωτέρα. θερμασίαν ποσὴν γεννῶσα περὶ στόμαχον, καὶ πνευματοῦσα. ὅθεν ἐπὶ μὲν τῶν πυρεσσόντων ἐστὶν ἄθετος. ἡ δὲ ὀξεῖα καυσουμένῳ στομάχῳ βοηθεῖ. καὶ ἔστι σταλτικωτέρα καὶ οὐρητικωτέρα. ἄστομος δέ, καὶ στυπτική. ἡ δὲ οἰνώδης μέσην ἔχει δύναμιν. τῆς δὲ ὀξείας ὁ πυρὴν ξηρανθεὶς ἐν ἡλίῳ καὶ ἐπιπασσόμενος προσοψήμασι καὶ συνεψόμενος, κοιλίαν καὶ στομάχου ῥεῦμα ἵστησιν. ἀποβραχεὶς δὲ ἐν ὀμβρίῳ ὕδατι, αἱμοπτοϊκοὺς ὠφελεῖ πινόμενος. καὶ εἰς ἐγκαθίσματα δυσεντερικῶν καὶ ῥοϊκῶν ἁρμόζει. εὔχρηστον δὲ τὸ ἀπόθλιμμα τῶν πυρήνων ἑψηθὲν καὶ μιγὲν μέλιτι, πρός τε τὰ ἐν στόματι καὶ αἰδοίῳ καὶ ἕδρᾳ ἕλκη καὶ πτερύγια τὰ ἐν δακτύλοις. νομάς τε καὶ ὑπεροχὰς καὶ ὠταλγίας καὶ τὰ ἐν μυκτῆρσι. καὶ μάλιστα τῆς ὀξείας.

### Περὶ κυτίνων. Κεφ. ρνγ΄

Τὰ δὲ ἄνθη αὐτῆς ἃ καὶ κύτινοι καλοῦνται, καὶ αὐτὰ στυπτικὰ καὶ ξηραντικὰ καὶ κατασταλτικά εἰσι καὶ ἐναίμων κολλητικά. ἁρμόζονται πρὸς ἃ καὶ ἡ ῥόα. τὸ δὲ ἀφέψημα αὐτῶν οὔλων πλαδώντων καὶ ὀδόντων σειομένων διάκλυσμα. ἀνακόλλημά τε ἐν ἐντεροκηλικοῖς ἐν καταπλάσμασιν. ἱστοροῦσι δέ τινες, μὴ ὀφθαλμιᾶν παρ' ὅλον τὸ ἔτος τοὺς καταπιόντας τρεῖς κυτίνους, ὡς ὅτι ἐλαχίστους. ξυλίζονται δὲ ὡς ἡ ὑποκιστίς.

### Περὶ σιδίων. Κεφ. ρνδ΄

Καὶ τὰ λέπη δὲ τῆς ῥόας ἅ τινες σίδια καλοῦσι στυπτικὴν ἔχοντα καὶ αὐτὰ δύναμιν, πρὸς ὅσα καὶ οἱ κύτινοι ἁρμόζουσι. τὸ δὲ ἀφέψημα τῶν ῥιζῶν, ἕλμινθας πλατείας ποθέν, ἐκτινάσσει καὶ ἀποκτείνει.

### Περὶ βαλαυστίων. Κεφ. ρνε΄

Βαλαύστιον ἐστὶν ἄνθος ἀγρίας ῥοιᾶς. εἴδη δὲ ἐστὶν αὐτοῦ πλείονα· εὑρίσκεται γὰρ καὶ λευκὸν. καὶ πυῤῥὸν καὶ ῥοδόχρουν. ἔοικε δὲ κυτίνῳ ῥοιᾶς. χυλίζεται δὲ ὡς ἡ ὑποκιστίς. δύναμιν δὲ ἔχει στυπτικὴν. ποιοῦσαν πρὸς ἃ καὶ ἡ ὑποκιστὶς καὶ ὁ κύτινος.

Περὶ μυρσίνης κεφ. ρνϛ΄.

Μυρσίνη ἡ ἥμερος, πρὸς μὲν τὴν ἰατρικὴν χρῆσιν, ἡ μέλαινα τῆς λευκῆς ἁρμοδιωτέρα. καὶ ταύτης μᾶλλον ἡ ὀρεινή. τὸν μέντοι καρπὸν ἀτονώτερον ἔχει. δύναμις δὲ αὐτῆς καὶ τοῦ καρποῦ στυπτική. δίδοται δὲ ὁ καρπὸς χλωρός τε καὶ ξηρὸς ἐσθιόμενος αἱμοπτοϊκοῖς καὶ τοῖς δακνομένοις τὴν κύστιν. καὶ ὁ ἐκ τῶν χλωρῶν δὲ μύρτων ἐκθλιβέντων χυλὸς, τὰ αὐτὰ ποιεῖ. εὐστόμαχος ὢν καὶ οὐρητικοῖς ἁρμόζων. φαλαγγιοδήκτοις, καὶ σκορπιοπλήκτοις σὺν οἴνῳ. καὶ τὸ ἀφέψημα δὲ τοῦ καρποῦ βάπτει τρίχας. ἑψηθεὶς δὲ σὺν οἴνῳ, καὶ καταπλασθεὶς, τὰ ἐν ἀκρωτηρίοις ἕλκη θεραπεύει. μετὰ πάλης δὲ ἀλφίτου καταπλασθεὶς, φλεγμονὰς τὰς ἐν ὀφθαλμοῖς παρηγορεῖ. καὶ πρὸς αἰγίλωπα δὲ ἐπιπλάττεται. καὶ ὁ ἐξ αὐτῆς δὲ γινόμενος οἶνος ἐκθλιβέντος τοῦ καρποῦ. καὶ μετὰ ποσὸν ἀφεψηθέντος. ὀξίζει δὲ ὁ μὴ οὕτω σκευασθεὶς, ἀκραίπαλός ἐστι προπινόμενος. ποιῶν πρὸς ὅσα καὶ ὁ καρπός. ἐγκαθίσματά τε, μήτρας, προπτώσεις. καὶ δακτυλίῳ, καὶ ῥοϊκαῖς ἁρμόζει. σμήχει δὲ καὶ πίτυρα. καὶ ἀχῶρας. καὶ ἐξανθήματα. τρίχας τε ῥεούσας ἐπέχει. μίγνυται δὲ καὶ λιπαραῖς, ὥσπερ καὶ τὸ ἐκ τῶν φύλλων αὐτῆς σκευαζόμενον ἔλαιον. καὶ τὸ τῶν φύλλων δὲ ἀφέψημα, εἴς τε τὰ ἐγκαθίσματα ἁρμόζει, καὶ πρὸς τὰ χαλαρὰ καὶ ἀσυμπώρωτα ἄρθρα καὶ πρὸς ἀσυμπώρωτα κατεαγότα. ὠφελίμως καταντλεῖται. σμήχει δὲ καὶ ἀλφούς. καὶ πρὸς ὦτα πυορροοῦντα ἐγχυματίζεται. καὶ μελασμοὺς τριχῶν καὶ ὁ ἐξ αὐτῶν ὁ χυλὸς τὰ αὐτὰ ποιεῖ. αὐτὰ δὲ τὰ φύλλα λεῖα καταπλασσόμενα ἐν ὕδατι, ἁρμόζει τοῖς καθύγροις τῶν ἑλκῶν. καὶ ῥευματιζομένοις τόποις πᾶσι καὶ κοιλιακοῖς. ἐλαίου ὀμφακίνου γὰρ ἢ ῥοδίνου ὀλίγου καὶ οἴνου μεμιγμένου, καὶ ἕρπησι, καὶ ἐρυσιπέλασι, διδύμων τε φλεγμοναῖς καὶ ἐπινυ

κηλῖσι καὶ κονδυλώμασι. ξηρὰ δὲ λεῖα παρωνυχίσι καὶ πτερυγίοις, χρησίμως καταπλάττεται. καὶ καθύγροις μασχάλαις καὶ μηροῖς. καὶ ἐπὶ καρδιακῶν στέλλει τοὺς ἱδρῶτας. κεκαυμένα δὲ καὶ ὠμὰ μετὰ κηρωτῆς, πυρίκαυτα καὶ πτερύγια καὶ παρωνυχίας ἰᾶται. χυλίζεται δὲ τὰ φύλλα παραχεομένου οἴνου παλαιοῦ. ἢ ὕδατος ὀμβρίου. καὶ ἐκθλίβεται. ἡ δὲ χρῆσις αὐτοῦ προσφάτου ὄντος. ξηρανθεὶς γὰρ εὐρωτιᾷ καὶ ἀδυνατεῖ.

Περὶ μυρτιδάνου. Κεφ. ρνζ΄.

Τὸ δὲ μυρτίδανον λεγόμενον, ἐπίφυσίς ἐστιν ἀνώμαλος καὶ ὀχθώδης καὶ ὁμόχρους. οἱονεὶ χεῖρες περὶ τὸ τῆς μυρσίνης πρέμνον. στύφει δὲ μᾶλλον τῆς μυρσίνης. ἀποτίθεται δὲ κοπὲν καὶ μιγὲν οἴνῳ αὐστηρῷ ἀναπλασθέντι εἰς τροχίσκους, ἐν σκιᾷ ξηραίνεται, δραστικώτερον δέ ἐστι τοῦ καρποῦ καὶ τοῦ φύλλου, μιγνύμενον κηρωτῇ καὶ πεσσοῖς, ἐγκαθίσμασί τε καὶ καταπλάσμασι τοῖς στύψεως δεομένοις.

Περὶ κερασίων. Κεφ. ρνη΄.

Κεράσια καὶ αὐτὰ μὲν χλωρὰ λαμβανόμενα, εὐκοίλια τυγχάνει. ξηρὰ δὲ ἵστησι κοιλίαν. τὸ δὲ κόμμι τῶν κερασίων, βῆχα χρονίαν ἰᾶται λαμβανόμενον μετὰ κεράματος. εὔχροιάν τε καὶ ὀξυδερκίαν καὶ ὄρεξιν ποιεῖ. ὠφελεῖ δὲ καὶ λιθιῶντας μετ᾽ οἴνου πινόμενον.

Περὶ κερατίων. Κεφ. ρνθ΄.

Κεράτια χλωρὰ μὲν λαμβανόμενα, κακοστόμαχα τυγχάνει. καὶ κοιλίας λυτικά. ξηρανθέντα δὲ ἵστησι κοιλίαν. εὐστομαχώτερα ὄντα καὶ διουρητικά. μάλιστα δὲ τὰ ἐκ τῶν στεμφύλων συντιθέμενα.

Περὶ μηλέας. Κεφ. ρξ΄.

Μηλέας πάσης τὰ φύλλα καὶ τὰ ἄνθη καὶ οἱ βλαστοὶ, στύφουσι. μάλιστα δὲ τῆς κυδωνίας. καὶ ὁ καρπὸς ἄωρος μὲν στυπτικὸς καθέστηκε. πεπανθεὶς δὲ οὐχ ὁμοίως. τὰ δὲ τοῦ ἔαρος ἀκμάζοντα μῆλα, χολοπιά. ἄθετα τῷ νευρώδει παντὶ ἐμπνευματοῦντα.

Περὶ κυδωνίων μήλων. ΚΕΦ. ρξα'.

Τὰ δὲ κυδώνια, εὐστόμαχα. οὐρητικά. ὀπτηθέντα δὲ προσηνέστερα γίνεται. χρήσιμα κοιλιακοῖς καὶ δυσεντερικοῖς καὶ ἐμπυϊκοῖς καὶ χολεριῶσι μάλιστα ὠμά. καὶ τὸ ἀπόβρεγμα δὲ αὐτῶν ἁρμόζει τοῖς στόμαχον ἢ κοιλίαν ῥευματιζομένοις ἐν ποτῷ. ὁ δὲ χυλὸς ὠμῶν αὐτῶν λαμβανόμενος, ὀρθοπνοικοὺς ὠφελεῖ. τὸ δὲ ἀφέψημα, πρόσκλυσμα δακτυλίου καὶ ὑστέρας προπτώσει. τὰ δὲ ἐκ τοῦ μέλιτος, καὶ αὐτὰ μὲν οὐρητικά. τὸ δὲ μέλι τὴν αὐτῶν ἀναλαμβάνεται δύναμιν. στεγνωτικὸν γὰρ καὶ στυπτικὸν γίνεται. τὰ δὲ σὺν τῷ μέλιτι ἑψόμενα, εὐστόμαχα μὲν καὶ εὔστομα. ἧττον δὲ στεγνωτικά. τὰ δὲ ὠμά. καταπλάσμασι μίγνυται πρὸς στέγνωσιν κοιλίας, στομάχου ἀναστροφήν, καὶ πύρωσιν, μαστοὺς φλεγμαίνοντας, σπλῆνας ἐσκιρρωμένους, κονδυλώματα. γίνεται δὲ καὶ οἶνος ἐξ αὐτῶν κοπτομένων καὶ ἐκθλιβομένων, πρὸς διαμονὴν μιγνυμένου τοῖς ιϛ'. ξέσταις τοῦ χυλοῦ μέλιτος ξέστου ἑνὸς ἐπεὶ ὀξίζει. ἁρμόζει δὲ πρὸς τὰ εἰρημένα πάντα. καὶ χρῖσμα δὲ ἐξ αὐτῶν σκευάζεται τὸ καλούμενον μήλινον. ᾧ χρώμεθα ὁπόταν στυπτικοῦ ἐλαίου δεηθῶμεν. ἐκλέγεσθαι δὲ δεῖ τὰ ἀληθινά. μικρὰ δέ ἐστι καὶ περιφερῆ καὶ εὐώδη ταῦτα. τὰ δὲ λεγόμενα στρουθία καὶ μεγάλα ἧττόν ἐστιν εὔχρηστα. τὰ δὲ ἄνθη αὐτῶν ξηρά τε καὶ χλωρὰ καταπλάσμασιν εὔθετα. πρὸς τὰ στύψεως χρείαν ἔχοντα. καὶ πρὸς ὀφθαλμῶν φλεγμονάς. καὶ πρὸς αἵματος ἀναγωγάς. κοιλίας τε ῥύσιν καὶ ἐμμηνίων φορὰν ἁρμόζει μετὰ οἴνου πινόμενα.

Περὶ μελιμήλων. ΚΕΦ. ρξβ'.

Τὰ δὲ μελίμηλα κοιλίαν μαλάσσει. καὶ θηρία ἐκτινάσσει κακοστόμαχα. καύσου ποιητικά. καλεῖται δὲ ὑπό τινων γλυκύμηλα.

Περὶ ἠπειρωτικῶν μήλων. ΚΕΦ. ρξγ'.

Τὰ δὲ ἠπειρωτικὰ λεγόμενα, ῥωμαϊστὶ δὲ ὀρβικουλάτα, εὐστόμαχα. κοιλίας σταλτικά, οὔρων προκλητικά. ἀτονώτερα μέντοι τῶν κυδωνίων ἐστίν.

Περὶ ἀγριομήλων. ΚΕΦ. ρξδ'.

Τὰ δὲ ἄγρια ἔοικε τοῖς ἐαρινοῖς, στύφοντα. δεῖ δὲ πρὸς τὰ στύψεως χρῄζοντα, ἀωροτέροις ἅπασι χρῆσθαι.

### Περὶ περσικῶν μήλων. Κεφ. ρξε΄.

Τὰ δὲ περσικὰ μῆλα εὐστόμαχα. εὐκοίλια τὰ πέπειρα. τὰ δὲ ἄωρα, στεγνωτικὰ κοιλίας. ξηρανθέντα δὲ, καὶ στεγνωτικώτερα γίνονται. καὶ τὸ ἀφέψημα δὲ αὐτῶν ξηρῶν λαμβανόμενον, στόμαχον καὶ κοιλίαν ῥευματιζομένην ἵστησιν.

### Περὶ ἀρμενιακῶν. Κεφ. ρξϛ΄.

Τὰ δὲ μικρότερα καλούμενα δὲ ἀρμενιακὰ, ῥωμαϊστὶ δὲ πραικόκια, εὐστομαχώτερα τῶν προειρημένων εἰσίν.

### Περὶ μηδικῶν. Κεφ. ρξζ΄.

Τὰ δὲ μηδικὰ λεγόμενα ἢ περσικὰ ἢ κεδρόμηλα, ῥωμαϊστὶ δὲ κίτρια, πᾶσι γνώριμα. φυτὸν γάρ ἐστι καρποφοροῦν δι' ὅλου τοῦ ἔτους ἐπαλλήλως. αὐτὸ δὲ τὸ μῆλον ἐπίμηκες. ἐρρυτιδωμένον. χρυσίζον τῇ χρόᾳ. εὐῶδες μετὰ βάρους. σπέρμα ἔχον ἀπίῳ ἐοικός. Δύναμιν δὲ ἔχει ποθὲν ἐν οἴνῳ, ἀντενεργεῖν θανασίμοις. κοιλίαν τε ὑπάγειν. διάκλυσμά τε ἐστὶ πρὸς εὐωδίαν στόματος τὸ ἀφέψημα καὶ ὁ χυλὸς αὐτῶν. βιβρώσκεται δὲ μάλιστα ὑπὸ γυναικῶν πρὸς τὴν κίσσαν. φυλάττειν δὲ καὶ ἱμάτια δοκεῖ, ἄβρωτα ἐπιτιθέμενα κιβωτίοις.

### Περὶ ἀπίου. Κεφ. ρξη΄.

Ἀπίου δὲ πολλὰ εἴδη. πᾶσαι δὲ στύφουσιν. ὅθεν εἰς τὰ ἀποκρουστικὰ καταπλάσματα ἁρμόζουσι. τὸ δὲ ἀφέψημα αὐτῶν ξηρανθεισῶν, καὶ αὐταὶ λαμβανόμεναι ὠμαὶ, κοιλίαν ἱστᾶσι. βλάπτουσι δὲ ἐσθιόμεναι τοὺς νήστεις.

### Περὶ ἀχράδος. Κεφ. ρξθ΄.

Ἡ δὲ ἀχρὰς, εἶδός ἐστιν ἀγρίου ἀπίου. βραδέως πεπαινομένη. Δύναμιν δὲ ἔχει, στυπτικωτέραν ἀπίου. ὅθεν πρὸς τὰ αὐτὰ ἁρμόζει. στύφει δὲ καὶ τὰ φύλλα αὐτῆς. ἡ δὲ ἐκ τοῦ ξύλου αὐτῶν τέφρα, βοηθεῖ ἐναργῶς τοῖς ὑπὸ μυκήτων πνιγομέ-

τοις. φασὶ δέ τινες ὅτι κἂν συνεψήσῃ τις ἀχράδας μύκησιν, ἀβλαβεῖς αὐτοὺς γίνεσθαι.

Περὶ Μεσπίλων. Κεφ. ρο.

Μέσπιλον τὸ δένδρον. ὃ παρ' ἐνίοις ἀρωνία καλεῖται, ἀκανθῶδες ἐστίν. ὅμοιον τοῖς φύλλοις πυρακάνθῃ. καρπὸν φέρον μικρῷ μήλῳ ὅμοιον ἡδύν. ἔχοντα τρία ὀστάρια ἔνδοθεν. ἀφ' ὧν καὶ τρίκοκκον τινὲς αὐτὸ ὀνομάζουσι. βραδέως πεπαινόμενον. στύφει δὲ βιβρωσκόμενον. εὐστόμαχόν τε ἐστὶ καὶ κοιλίας στεγνωτικόν.

Περὶ ἑτέρου μεσπίλου. Κεφ. ροα.

Μεσπίλου δὲ καὶ ἕτερόν ἐστιν εἶδος ἐν ἰταλίᾳ γεννώμενον. ὃ ἔνιοι ἐπιμηλίδα καλοῦσιν. οἱ δὲ, σητάνιον ὀνομάζουσι. δένδρον ἐστὶ μήλῳ ἐμφερὲς τοῖς φύλλοις ὅτι μικρότερον. ἔχει δὲ καρπὸν καὶ αὐτὸν στρογγύλον. βρώσιμον. πλατὺν ἔχοντα τὸν πυθμένα. ὑποστύφοντα. πεπαινόμενον βραδέως.

Περὶ Λωτοῦ. Κεφ. ροβ.

Λωτὸς τὸ δένδρον, φυτόν ἐστιν εὐμέγεθες. καρπὸν δὲ φέρει μείζονα πεπέρεως γλυκύν. βρώσιμον. εὐστόμαχον. κοιλίας στεγνωτικόν. τῶν δὲ πρισμάτων τοῦ ξύλου τὸ ἀφέψημα πινόμενον καὶ ἐγκλυζόμενον, βοηθεῖ δυσεντερικοῖς. καὶ γυναιξὶ ῥοϊκαῖς. ξανθίζει δὲ καὶ τρίχας. καὶ ἐπέχει γαστέρα ῥέουσαν.

Περὶ Κρανίας. Κεφ. ρογ.

Κρανία δένδρον ἐστὶν ἀδρόν. καρπὸν φέρον ὡς ἐλαίας. ἐπιμήκη. χλωρὸν τὸ πρῶτον. πεπαινόμενον δὲ ξανθόν. ἢ κηροειδῆ. ἐδώδιμον. στύφοντα. ἁρμόζοντα πρὸς κοιλίας ῥύσιν καὶ δυσεντερίας. συντιθέμενον καὶ εἰς ἕψημα, καὶ εἰς βρῶσιν. καὶ ἁλμεύεται ὡς ἐλαία. ὁ δὲ τῶν χλωρῶν φύλλων ἰχὼρ καιομένων, ἁρμόζει πρὸς λειχῆνας καταχριόμενος.

Περὶ Οὔων. Κεφ. ροδ.

Οὔα τὰ μηλίζοντα καὶ μήπω πέπειρα τμηθέντα καὶ ξηρανθέντα ἐν ἡλίῳ, σταλτικὰ γίνεται κοιλίας ἐσθιόμενα. καὶ τὸ

ἐξ αὐτῶν δὲ ἄλευρον ἀλεσθέντων ἀντὶ ἀλφίτων λαμβανόμενον. καὶ τὸ ἀφέψημα δὲ αὐτῶν πινόμενον, τὸ αὐτὸ ποιεῖ.

Περὶ Κοκκυμηλέας. Κεφ. ροε.

Κοκκυμηλέα δένδρον ἐστὶ γνώριμον. οὗ ὁ καρπὸς ἐδώδιμος. κακοστόμαχος. κοιλίας μαλακτικός. τῶν δὲ συριακῶν καὶ μάλιστα τῶν ἐν δαμασκῷ γεννωμένων ὁ καρπὸς ξηρανθεὶς, δυσστόμαχος καὶ κοιλίας σταλτικός. τὸ δὲ ἀφέψημα τῶν φύλλων ἐν οἴνῳ σκευαζόμενον καὶ ἀναγαργαριζόμενον, κιονίδα καὶ οὖλα καὶ παρίσθμια ῥευματιζόμενα στέλλει. τὰ αὐτὰ δὲ παρέχει καὶ ὁ τῶν ἀγριοκοκκυμήλων καρπὸς, ὥσπερ ξηρανθείς. ἑψηθεὶς δὲ μετὰ ἑψήματος, εὐστομαχώτερος καὶ σταλτικώτερος κοιλίας γίνεται. τὸ δὲ κόμμι τῆς κοκκυμηλέας, ἐστὶ κολλητικόν. λίθων θρεπτικὸν πινόμενον σὺν οἴνῳ. σὺν ὄξει δὲ ἐπιχριόμενον, λειχῆνας τὰς ἐπὶ παιδίων θεραπεύει.

Περὶ Κομάρου. Κεφ. ρος.

Κόμαρος δένδρον ἐστί. παρόμοιον κυδωνίᾳ. λεπτόφυλλον. καρπὸν ἔχον ὡς κοκκυμήλου μέγεθος. ἀπύρηνον μεμάκυλα καλούμενον. πεπανθέντα δὲ ὑπόκιρρον ἢ ἐρυθρόν. ἐσθιόμενον. ἀχυρῶδες. κακοστόμαχον δὲ καὶ κεφαλαλγές.

Περὶ Ἀμυγδαλῆς. Κεφ. ροζ.

Ἀμυγδαλέας πικρᾶς ἡ ῥίζα ἀφεψηθεῖσα λεία, ἐφήλεις τὰς ἐν προσώπῳ ἀποκαθαίρει καὶ αὐτὰ δὲ τὰ ἀμύγδαλα καταπλασθέντα, τὰ αὐτὰ ποιεῖ. προστιθέμενα δὲ ἄγει καταμήνια. καὶ κεφαλαλγίαις βοηθεῖ καταπλασθέντα μετώπῳ ἢ κροτάφοις μετ᾽ ὄξους καὶ ῥοδίνου. καὶ πρὸς ἐπινυκτίδας σὺν οἴνῳ. πρὸς δὲ σηπεδόνας καὶ ἕρπητας καὶ κυνόδηκτα, σὺν μέλιτι. ἐσθιόμενα δὲ ἐστὶν ἀνώδυνα. κοιλίας μαλακτικά. ὑπνωτικά. οὐρητικά. καὶ πρὸς αἵματος ἀναγωγὴν μετὰ ἀμύλου λαμβανόμενα. πρὸς δὲ νεφριτικοὺς καὶ περιπνευμονικούς. σὺν ὕδατι πινόμενα ἢ ἐκλειχόμενα σὺν ῥιτίνῃ τερεβινθίνῃ. δυσουροῦσι δὲ καὶ λιθιῶσι, σὺν γλυκεῖ βοηθεῖ. καὶ ἡπατικοῖς καὶ βηξὶ καὶ κώλου ἐμπνευματώσεσι, σὺν μέλιτι καὶ

γάλακτι ἐκλειχόμενα. καρύου ποντικοῦ τὸ μέγεθος. ἔστι δὲ καὶ ἀμέθυστα προσλαμβανόμενα ὅσον ε. ἢ ζ΄. κτείνει δὲ καὶ ἀλώπεκας βρωθέντα σύν τινι. τὸ δὲ κόμμι αὐτῆς στύφει καὶ θερμαίνει. καὶ βοηθεῖ πρὸς αἵματος ἀναγωγὴν πινόμενον. σὺν ὄξει δὲ ἐπιχριόμενα, λειχῆνας ἐπιπολαίους αἴρει. ἰᾶται καὶ βῆχα χρονίαν μετὰ κράματος ποθέν. λιθιῶντας δὲ ὠφελεῖ σὺν γλυκεῖ πινόμενον. ἡ δὲ γλυκεῖα καὶ ἐδώδιμος ἀμυγδαλῆ, κατὰ πολὺ ἥσσων ἐστὶν ὡς πρὸς ἐνέργειαν τῆς πικρᾶς. καὶ αὐτὴ δὲ λεπτυντική. οὐρητική. βρωθέντα δὲ σὺν τῷ λέπει τὰ ἀμύγδαλα χλωρά, στομάχου πλάδον ἀποκαθίστησι.

Περὶ πιστακίων. Κεφ. ροη΄.

Πιστάκια τὰ μὲν γεννώμενα ἐν συρίᾳ, ὅμοια στροβίλοις, εὐστόμαχα. ἐσθιόμενα δὲ καὶ πινόμενα ἐν οἴνῳ λεῖα, ἑρπετοδήκτοις βοηθεῖ.

Περὶ καρύων βασιλικῶν. Κεφ. ροθ΄.

Κάρυα βασιλικὰ ἃ ἔνιοι περσικὰ καλοῦσιν, ἐσθιόμενα. δύσπεπτα. κακοστόμαχα. χολοποιά. κεφαλαλγῆ. βηχώδεσιν ἐναντία. χρήσιμα δὲ βιβρωσκόμενα πρὸς ἐμέτους νήστει. καὶ θανασίμων φαρμάκων ἐστὶν ἀντιφάρμακα. προβρωθέντα καὶ ἐπιβρωθέντα, σὺν ἰσχάσι καὶ πηγάνῳ. πλείονα δὲ βρωθέντα, πλατεῖαν ἕλμινθα ἐκτινάσσει. ἐπιπλάσσεται δὲ καὶ μαστοῖς φλεγμαίνουσι. καὶ ἀποστήμασι καὶ στρέμμασι σὺν ὀλίγῳ μέλιτι καὶ πηγάνῳ. μετὰ δὲ κρομμύου καὶ ἁλὸς καὶ μέλιτος, πρὸς κυνόδηκτα καὶ ἀνθρωπόδηκτα ποιεῖ. πυρωθέντα δὲ σὺν τῷ κελύφει. καὶ ἐπιτεθέντα τῷ ὀμφαλῷ, στρόφους παύει. τὸ δὲ λέπυρον καὲν καὶ τριφθὲν ἐν οἴνῳ καὶ ἐλαίῳ, παιδίοις ἐπιχρισθὲν, καλλίτριχόν ἐστι. καὶ ἀλωπεκίας δασύνει. καὶ ἔμμηνα ἵστησι τὸ ἐντὸς αὐτοῦ λεῖον καὲν καὶ σὺν οἴνῳ προστιθέμενον. τῶν δὲ παλαιῶν καρύων τὰ ἐντὸς καταπλασθέντα, γαγγραίνας καὶ ἄνθρακας καὶ αἰγίλωπας καὶ ἀλωπεκίας μασηθέντα καὶ ἐπιτεθέντα, ἰᾶται συντόμως. γίνεται δὲ καὶ ἔλαιον ἐξ αὐτῶν κοπτομένων καὶ ἐκθλιβομένων. τὰ δὲ χλωρά, ἧττον κακοστόμαχα. γλυκύτερα ὄντα. διὸ καὶ τοῖς σκορόδοις μίγνυται πρὸς τὴν

δριμύτητα περιαιρεῖν. αἴρει δὲ καὶ πελιώματα καταπλασθέντα.

Περὶ καρύων ποντικῶν. Κεφ. ρπ΄.

Τὰ δὲ ποντικὰ ἃ ἔνιοι λεπτοκάρυα καλοῦσιν, ἔστι κακοστόμαχα. καὶ αὐτὰ δὲ λεῖα σὺν μελικράτῳ πινόμενα, βῆχα παλαιὰν ἰᾶται. φρυκτὰ δὲ ἐσθιόμενα σὺν πεπέρει ὀλίγῳ κατάρρουν πεπαίνει. ὅλα δὲ καέντα λεῖα μετὰ ἀξουγγίου ἢ στέατος ἀρκείου, ἀλωπεκίας ἐπιχρισθέντα δασύνει. φασὶ δὲ ἔνιοι ὅτι μετὰ ἐλαίου τὰ κελύφη κεκαυμένα καὶ λειοτριβηθέντα, γλαυκοφθάλμων παιδίων μελαίνει τὰς κόρας ἐπιβρεχομένου τοῦ βρέγματος.

Περὶ Μορέας. Κεφ. ρπα΄.

Μορέα ἢ συκαμινέα, δένδρον ἐστὶ γνώριμον. ἧς ὁ καρπὸς λυτικὸς κοιλίας. εὔφθαρτος. κακοστόμαχος. καὶ ὁ ἐξ αὐτῆς δὲ χυλὸς τὰ αὐτὰ δρᾷ. ἑψηθεὶς δὲ ἐν χαλκώματι ἢ ἡλιασθεὶς, στυπτικώτερος γίνεται. μιγέντος δὲ αὐτῷ ὀλίγου μέλιτος, ποιεῖ πρὸς ῥεύματα καὶ νομὰς καὶ παρίσθμια φλεγμαίνοντα. ἐπιτείνεται δὲ καὶ ἡ δύναμις αὐτοῦ παραμιγείσης στυπτηρίας σχιστῆς καὶ κηκίδος καὶ σμύρνης καὶ κρόκου. ἔτι δὲ καὶ μυρίκης καρποῦ καὶ ἴριδος. καὶ λιβανωτοῦ. τὰ δὲ ἄωρα μόρα ξηρὰ κοπέντα, ἀντὶ ῥοὸς τοῖς ὄψοις μίγνυται. καὶ κοιλιακοὺς ὀνίνησιν. ὁ τῆς ῥίζης δὲ φλοιὸς συνεψηθεὶς ὕδατι καὶ ποθεὶς κοιλίαν λύει. καὶ πλατεῖαν ἕλμινθα ἐκτινάσσει. καὶ τοῖς ἀκόνιτον πεπωκόσι βοηθεῖ. τὰ δὲ φύλλα λεῖα σὺν ἐλαίῳ καταπλασθέντα, πυρίκαυστα ἰᾶται. ἑψηθέντα δὲ ἐν ὀμβρίῳ ὕδατι, σὺν ἀμπέλου καὶ συκῆς μελαίνης φύλλοις, βάπτει τρίχας. ὁ δὲ χυλὸς τῶν φύλλων, φαλαγγιοδήκτοις ἀρήγει. ποθεὶς κυάθου πλῆθος. τοῦ φλοιοῦ δὲ καὶ τῶν φύλλων τὸ ἀπόζεμα, διάκλυσμα εὔθετόν ἐστιν ὀδονταλγίαις. ὀπίζεται δὲ περὶ τῶν πυραμητῶν τῆς ῥίζης περιορυχθείσης καὶ ἐγκοπείσης. εὑρίσκεται γὰρ τῇ ὑστεραίᾳ ἐπίπαγός τις ὃς πρός τε ὀδονταλγίας ποιεῖ. καὶ φύματα διαφορεῖ καὶ κοιλίαν καθαίρει.

Περὶ Συκομο/

## Περὶ Συκομόρου. Κεφ. ρπβ'.

Συκόμορον. ἔνιοι δὲ καὶ τοῦτο συκάμινον λέγουσι. καλεῖται δὲ καὶ ὁ ἀπ' αὐτῆς καρπὸς συκόμορον. διὰ τὸ ἄτονον τῆς γεύσεως. δένδρον δέ ἐστι μέγα. ὅμοιον τῇ συκῇ πολύχυμον σφόδρα τοῖς φύλλοις ἐοικὸς μορέᾳ. φέρει δὲ καρπὸν τρὶς καὶ τετράκις τοῦ ἔτους. οὐκ ἀπὸ τῶν ἀκρεμόνων ὡς ἔθος τῇ συκῇ. ἀπὸ δὲ τοῦ στελέχους ὅμοιον ἐρινεῷ. γλυκύτερον ὀλύνθου. οὐκ ἔχοντα δὲ κεγχραμίδας. μὴ δὲ πεπαινόμενον δίχα τοῦ ἐπικνησθῆναι ὄνυχι ἢ σιδήρῳ. φύεται δὲ πλεῖστον ἐν Καρίᾳ καὶ Ῥόδῳ. καὶ ἐν τοῖς οὐ πολυπύροις τόποις. βοηθεῖ δὲ ἐν ταῖς σιτοδείαις, διὰ τὸ διηνεκὲς τοῦ καρποῦ. ἔστι δὲ εὐκοίλιος ὁ καρπός. ἄτροφος. κακοστόμαχος. ὀπίζεται δὲ τῷ δένδρῳ πρὶν καρποφορήσει νεαρὸν, τοῦ φλοιοῦ ἐξ ἐπιπολῆς λίθῳ θλωμένου. βαθύτερον γὰρ θλασθεὶς, οὐδὲν ἀνίησι. συλλέγεται δὲ σπόγγῳ ἢ ἐρίῳ τὸ δάκρυον. καὶ ξηρανθὲν καὶ ἀναπλασθὲν ἐν ἀγγείῳ ὀστρακίνῳ, ἀποτίθεται. Δύναμιν δὲ ἔχει ὁ ὀπὸς μαλακτικὴν. κωλυτικὴν τραυμάτων. διαφορητικὴν τῶν δυσπέπτων. πίνεται δὲ καὶ συγχρίεται πρὸς ἑρπετῶν δήγματα καὶ ἐσκιῤῥωμένους σπλῆνας στομάχου τε ἀλγήματα καὶ φρίκας. ταχέως δὲ τερυδονίζεται ὁ ὀπός.

## Περὶ Σύκου ἐκ Κύπρῳ. Κεφ. ρπγ'.

Γίνεται δὲ καὶ ἐν Κύπρῳ εἴδει διάφορον. πτελέᾳ γὰρ οὖσα, συκαμίνῳ τὰ φύλλα ἔοικε. τὸν δὲ καρπὸν κατὰ τὸ μέγεθος κοκκυμήλων. καὶ γλυκύτερον. τὰ δ' ἄλλα πάντα ὅμοια τοῖς προειρημένοις.

## Περὶ Σύκων. Κεφ. ρπδ'.

Σῦκα πέπειρα τὰ ἁπαλά. κακοστόμαχα. κοιλίας λυτικά. ῥαδίως δὲ ὁ ἐξ αὐτῶν ῥευματισμὸς ἵσταται. ἐξανθημάτων καὶ ἱδρώτων προκλυτικά. ἄδιψα δὲ καὶ σβεστικὰ θερμασίας. τὰ δὲ ξηρὰ τρόφιμα. θερμαντικά. διψητικώτερα. εὐκοίλια. ἄθετα δὲ ῥευματισμοῖς στομάχου καὶ κοιλίας. βρόχῳ δὲ καὶ ἀρτηρίᾳ καὶ κύστει καὶ νεφροῖς εὔθετα. καὶ τοῖς ἐκ μακρονοσίας κακοχροοῦσι καὶ ἀσθματικοῖς καὶ ἐπιληπτι-

κοῖς καὶ ὑδρωπικοῖς. ἀνακαθαίρει δὲ καὶ τὰ ἐν θώρακι ἀπο-
ζεσθέντα σὺν ὑσσώπῳ καὶ ποθέντα. ἁρμόζει δὲ καὶ πα-
λαιοῖς βηξί. καὶ τοῖς περὶ πνεύμονα χρονίοις πάθεσι. κοι-
λίαν τε μαλάσσει κοπέντα μετὰ νίτρου καὶ κρόκου ἐσθιό-
μενα. τὸ δὲ ἀφέψημα αὐτῶν, ταῖς περὶ ἀρτηρίαν καὶ πα-
ρίσθμια φλεγμοναῖς, ἁρμόζει εἰς ἀναγαργάρισμα. καὶ εἰς τὰς
ἐμηλύσεις δὲ μίγνυται. καὶ εἰς γυναικείας πυρίας μετὰ
τήλεως ἢ πτισάνης. σὺν πηγάνῳ δὲ ἀφεψημένα, στρόφων ἐστὶν
ἔγκλυσμα. καταπλαττόμενα δὲ ἑφθὰ λεῖα, διαφορεῖ σκλη-
ρίας. παρωτίδας. δοθιῆνας μαλάσσει. φύγεθλα πεπαί-
νει. καὶ μᾶλλον σὺν ἴριδι ἢ νίτρῳ ἢ ἀσβέστῳ. καὶ ὠμὰ δὲ κοπέν-
τα σὺν οἷς εἴρηται, τὰ αὐτὰ δρᾷ. σὺν σιδίῳ δὲ ῥοιᾶς, πτερύ-
για ἀνακαθαίρει. μετὰ χαλκάνθου δὲ τὰ ἐν κνήμαις ῥευματι-
κά, δυσαλθῆ καὶ κακοήθη ἰᾶται. ἑψηθέντα δὲ ἐν οἴνῳ καὶ
μιγέντα ἀψινθίῳ καὶ κριθίνῳ ἀλεύρῳ, ὑδρωπικοὺς ὠφε-
λεῖ καταπλασθέντα. κεκαυμένα δὲ μιγέντα κηρωτῇ,
χυμέθλας ἰᾶται. λεῖα δὲ ὠμὰ σὺν νάπυϊ ὑγρῷ ἀναληφθέν-
τα καὶ ἐντεθέντα ἐν ὠσίν, ἤχους καὶ κνισμοὺς θεραπεύει.
ὁ δὲ ὀπὸς τῆς ἀγρίας καὶ τῆς ἡμέρου συκῆς, πηκτικός ἐστι γά-
λακτος ὥσπερ ἡ πιτύα. λύει δὲ καὶ τὸ πεπηγὸς ὥσπερ τὸ
ὄξος. ἑλκτικός τε σωμάτων καὶ ἀναστομωτικός. κοιλίας
τε λουτικὸς, καὶ ὑστέρας ἀναχαλιστικὸς, μετὰ ἀμυγδάλου
λείου πινόμενος. καὶ ἐμμηνίων ἀγωγὸς, προστεθεὶς σὺν ὠοῦ λε-
κύθῳ. ἢ κηρῷ τυρρηνικῷ. ποδαγρικοῖς τε καταπλάσμασι
χρήσιμος μετὰ τηλίου ἀλεύρου καὶ ὄξους. σμήχει δὲ λέπρας
καὶ λειχῆνας. ἐφήλεις. ἀλφούς. ψώρας. ἀχῶρας σὺν ἀλ-
φίτῳ. καὶ σκορπιοπλήκτοις, κατὰ τῆς πληγῆς ἐπισταζό-
μενος, καὶ ἰοβόλοις, καὶ κυνοδήκτοις βοηθεῖ. καὶ ὀδονταλ-
γίας ὠφελεῖ ἐρίῳ ἀναληφθείς. καὶ εἰς τὸ βρῶμα ἐντιθέμε-
νος. καὶ μυρμηκίας αἴρει, στέατι περιπλασθείσης τῆς ἐν κύκλῳ
σαρκός.

## Περὶ ἀγρίας συκῆς. Κεφ. ρπε΄.

Τὰ αὐτὰ δὲ καὶ ὁ χυλὸς, ποιεῖ τῶν ἀπὸ τῆς ἀγρίας συκῆς ἁ-
παλῶν κλάδων, ἡνίκα ἂν ἔκφυσι ὥσι μή πω τοῦ ὀφθαλμοῦ
βεβλαστηκότος. κοπτόμενοι δὲ ἐκθλίβονται. καὶ ὁ χυλὸς

ξηραινόμενος ἐν σκιᾷ ἀποτίθεται. λαμβάνεται δὲ καὶ εἰς ἑλκωτικὰς δυνάμεις ὅ, τε ὀπὸς καὶ ὁ χυλός. αἱ δὲ κράδοι βοείοις κρέασι καθεψόμεναι, εὐέψητα ταῦτα ποιοῦσι. καὶ τὸ γάλα δὲ λυτικώτερον ἐν τῇ ἑψήσει κινούμενον, αὐτὸ ἀπαθὲς αὐταῖς παρασκευάζουσιν.

Περὶ ὀλύνθων. κεφ. ρπς´.

Οἱ δὲ ὄλυνθοι, ὑπὸ δέ τινων ἐρινεοὶ καλούμενοι, ἑφθοὶ καταπλασθέντες, πᾶσαν συστροφὴν καὶ χοιράδας ἐκμαλάσσουσιν, ὠμοὶ δὲ μυρμηκίας καὶ θύμους, σὺν νίτρῳ καταπλασθέντες καὶ ἀλεύρῳ, αἴρουσι. καὶ τὰ φύλλα δὲ τὰ αὐτὰ δύναται. σὺν ὄξει δὲ καὶ ἁλσὶ καταπλασθέντες, ἀχῶρας, πίτυρα καὶ ἐπινυκτίδας ἰῶνται. παρατρίβεται δὲ αὐτῆς καὶ τὰ συκώδη καὶ τραχέα τῶν βλεφάρων. καὶ λεῦκαι δὲ καταπλάσσονται τοῖς τῆς μελαίνης συκῆς φύλλοις ἢ τοῖς κλάδοις. ποιεῖ καὶ πρὸς τὰ κυνόδηκτα σὺν μέλιτι. καὶ πρὸς τὰ κηρία. ἀνάγουσι δὲ οἱ ὄλυνθοι καὶ ὀστᾶ. σὺν μήκωνος ἀγρίας φύλλοις. δοθιῆνάς τε σὺν κηρῷ διαλύουσι. σὺν ὀρόβῳ δὲ καὶ οἴνῳ καταπλασθέντες, πρὸς μυγαλῆς δήγματα καὶ σκολοπένδρας ἁρμόζουσι.

Περὶ κονίας τῆς συκῆς. κεφ. ρπζ´.

Γίνεται δὲ καὶ κονία ἀγρίας συκῆς καὶ ἡμέρου καέντων τῶν κλάδων ἐκ τῆς τέφρας. πολύβροχον δὲ αὐτὴν δεῖ ποιεῖν καὶ παλαιοῦν. ἁρμόζει δὲ καὶ πρὸς τὰ καυστικὰ καὶ γαγγραινούμενα. ἀνακαθαίρει γὰρ καὶ ἀναλίσκει τὰ περισσά. χρεῖα δὲ αὐτῇ δεῖ σπόγγον βρέχοντας συνεχῶς καὶ ἐπιτιθέντας. ἐφ' ὧν δὲ καὶ ἐγκλύζοντας ὡς ἐπὶ δυσεντερικῶν καὶ παλαιῶν ῥευμάτων. καὶ κόλπων ὑπονόμων καὶ μεγάλων. καθαίρει γὰρ καὶ κολλᾷ καὶ σαρκοῖ, καὶ συμφύει ἐοικότως τοῖς ἐναίμοις. καὶ ποτίζεται δὲ πρὸς αἵματος ἐκθρόμβωσιν καὶ πτώματα, ῥήγματα, σπάσματα. σὺν ὕδατος κυάθῳ προσφάτως διυλισμένη, καὶ ἐλαίου μιγέντος ὀλίγου. κοιλιακοῖς τε καὶ δυσεντερικοῖς, καθ' ἑαυτὴν κυάθου πλῆθος βοηθεῖ διδομένη. καὶ τοῖς νευρικοῖς δὲ καὶ σπάσμασι, σύγχρισμα ἁρμόδιον σὺν

ἐλαίῳ, ἱδρῶτας κινοῦσι. καὶ πρὸς γύψου πόσιν καὶ φαλαγγίων δήγματα πίνεται. παρέχουσι δὲ τὰ αὐτὰ καὶ αἱ λιπαραὶ κονίαι. μάλιστα δὲ ἡ δρυΐνη. στυπτικαὶ δέ εἰσι πᾶσαι.

Περὶ περσέας. Κεφ. ρπη'.

π Περσέα δένδρον ἐστὶν ἐν Αἰγύπτῳ. καρπὸν φέρον. ἐδώδιμον. εὐστόμαχον. ἐφ' οὗ καὶ τὰ λεγόμενα κρανοκόλαπτα φαλάγγια εὑρίσκεται. μάλιστα δὲ ἐν Θηβαΐδι. Δύναμιν δὲ ἔχει τὰ φύλλα λεῖα ἐπιπλαττόμενα ξηρὰ, αἱμορραγίας ἱστᾶν. τοῦτο δὲ ἱστόρησάν τινες ἐν Πέρσαις, ἀναιρετικὸν εἶναι. μετατεθὲν δὲ εἰς Αἴγυπτον, ἀλλοιωθῆναι καὶ ἐδώδιμον γενέσθαι.

Περὶ ἰβηρίδος. * Κεφ. ρπθ'.

ι Ἰβηρὶς ἤτοι καρδαμαντικὴ ἔχει τὰ φύλλα παρόμοια καρδάμῳ. ἐν ἔαρι εὐθαλέστερα. μῆκος δὲ ὅσον πηχυαῖον ἢ ἔλαττον. φύεται δὲ ἐν ἀγεωργήτοις τόποις. θέρους δὲ γαλακτικὸν ἄνθος προβάλλει. καὶ τότε ἐστὶ δραστικώτερον. ἔχει δὲ δύο ῥίζας παρομοίας καρδάμῳ θερμαντικὰς καὶ καυστικάς. αὗται γὰρ ἀγαθαὶ αἱ ῥίζαι πρὸς ἰσχιαδικούς. σὺν λίπους ὑείου τεταριχευμένου, ὡς ἐμπλαστρώδεις γενέσθαι κατάπλασμα μέχρις ὡρῶν τεσσάρων. ἔπειτα ἐν βαλανείῳ ἐμβιβαζέσθω. καὶ ἐλαίῳ μετ' ἐρίου τοῖς τόποις ἐπιχριέσθω.

# ΠΕΔΑΚΙΟΥ ΔΙΟΣΚΟΡΙΔΟΥ ἈΝΑΖΑΡΒΕΩΣ ΠΕΡΙ ὙΛΗΣ ἸΑΤΡΙΚΗΣ ΒΙΒΛΙΟΝ ΔΕΥΤΕΡΟΝ.

Ἐν μὲν τῷ πρώτῳ βιβλίῳ φίλτατε ἄρειε, ὄντι πρώτῳ τῶν περὶ ὕλης ἡμῖν συντεταγμένων, παραδεδώκαμεν τὸν περὶ ἀρωμάτων καὶ ἐλαίων καὶ μύρων καὶ δένδρων, καὶ τῶν γεννωμένων ἐξ αὐτῶν ὀπῶν τε καὶ δακρύων καὶ καρπῶν λόγον. ἐν δὲ τούτῳ δευτέρῳ ὄντι, ἐπελευσόμεθα. περί τε ζώων καὶ μέλιτος καὶ γάλακτος καὶ στέατος καὶ τῶν λεγομένων σιτηρείων. ἔτι δὲ λαχάνων. ὑποτάξαντες αὐτοῖς ὅσα δριμέα τῶν βοτανικῶν κέχρηται δυνάμει. διὰ τὸ συγγένειαν ἔχειν αὐτὰ ὡς πρὸς τὰ σκόροδα καὶ τὰ κρόμμυα. καὶ νάπυ. ἵνα μὴ διαζευχθῇ τῶν ὁμογενῶν ἡ δύναμις.

Περὶ ἐχίνου θαλασσίου. κεφ. ρπθ'.

Ἐχῖνος θαλάττιος, εὐστόμαχος. εὐκοίλιος. οὐρητικός. οὗ τὸ ὄστρακον ὠμὸν, μίγνυται χρησίμως ὀπτηθὲν, τοῖς περὶ τὰς ψώρας ἁρμόζουσι σμήγμασι. κεκαυμένον δὲ καθαίρει τὰ ῥυπαρὰ ἕλκη. καὶ καταστέλλει τὰ ὑπερσαρκοῦντα.

Περὶ τοῦ χερσαίου ἐχίνου. κεφ. ρϟ'.

Καὶ τοῦ χερσαίου δὲ ἐχίνου τὸ δέρμα καέν, πρὸς ἀλωπεκίας μετὰ πίσσης ὑγρᾶς καταχριόμενον, ἁρμόζει. ἡ δὲ σὰρξ σκελετευθεῖσα καὶ πινομένη μετὰ ὀξυμέλιτος, βοηθεῖ νεφριτικοῖς. καὶ τοῖς ἀπὸ σαρκὸς ὕδρωψι, καὶ σπασμώδεσι καὶ ἐλεφαντιῶσι. καχέκταις. ξηραίνει δὲ καὶ τοὺς περὶ τὰ σπλάγχνα ῥευματισμούς. καὶ τὸ ἧπαρ δὲ αὐτοῦ ξηρανθὲν ἐπ' ὀστράκου ἡλιοκαύστου καὶ ἀποτεθὲν, πρὸς τὰ αὐτὰ ὁμοίως ἁρμόζει διδόμενον.

Περὶ ἱπποκάμπου. κεφ. ρϟα'.

Ἱππόκαμπος, θαλάσσιόν ἐστι ζῶον μικρόν. οὗ καέντος ἀναληφθεῖσα ἡ τέφρα πίσσῃ ὑγρᾷ ἢ ὀξυγγίῳ ἢ ἀμαρακίνῳ μύρῳ καὶ καταχρισθεῖσα, ἀλωπεκίας δασύνει.

Περὶ πορφύρας. Κεφ. ρϛβ΄.

Πορφύρα καυθεῖσα δύναμιν ἔχει ξηραντικήν. σμηκτικὴν ὀδόντων. ὑπερσαρκωμάτων δὲ κατασταλτικήν. ἀνακαθαρτικὴν ἑλκῶν. ἀπουλωτικήν.

Περὶ κηρύκων. Κεφ. ρϛγ΄.

Τὰ αὐτὰ δὲ ποιοῦσι καὶ οἱ κήρυκες καέντες. εἰσὶ δὲ μᾶλλον καυστικοί. ἐὰν δέ τις ἁλῶν αὐτοὺς πληρώσας ἐν ὠμῇ χύτρᾳ καύσῃ, ἁρμόζουσι πρὸς σμῆξιν ὀδόντων καὶ κατακαύματα ἐπιπλασθέντες. ἐὰν δὲ δεῖ ἀποστρακοῦσθαι τὸ φάρμακον. μετὰ δὲ τὴν ἀπούλωσιν τοῦ κατακαύματος αὐτόματον ἀποπίπτει. γίνεται δὲ καὶ ἄσβεστος ἐξ αὐτῶν ὡς ὑποδείξομεν ἐν τῷ περὶ ἀσβέστου λόγῳ.

Περὶ ἰονίων. Κεφ. ρϛδ΄.

Ἰόνια δὲ καλεῖται τὰ ἐπιθέματα τῶν κηρύκων καὶ πορφύρων μέγα. περὶ οἷς ἡ ἕλιξ ἐστὶ τοῦ ὀστράκου. καίεται δὲ ὁμοίως δύναμιν ἔχοντα καυστικωτέραν τῶν κηρύκων καὶ τῆς πορφύρας, διὰ τὸ πιέζειν αὐτῶν τὴν φύσιν. αἱ δὲ σάρκες τῶν κηρύκων, εὔστομοι καὶ εὐστόμαχοι. κοιλίαν δὲ οὐ μαλάσσουσι.

Περὶ μυάκων. Κεφ. ρϛε΄.

Μύακες διαφέρουσιν οἱ ποντικοί. καέντες δὲ τὸ αὐτὸ δρῶσι τοῖς κήρυξιν. ἰδιαίτερον δὲ πλυθέντες ὡς μόλιβδος, χρησιμεύουσιν εἰς τὰ ὀφθαλμικὰ σὺν μέλιτι. ἐκτήκοντες παχύτητας βλεφάρων καὶ σμήχοντες λευκώματα, καὶ τὰ ἄλλως ἐπισκοτοῦντα ταῖς κόραις. ἡ δὲ σὰρξ αὐτῶν κυνοδήκτοις ἐπιτιθεμένη ὠφελίμως.

Περὶ τελλινῶν. Κεφ. ρϛϛ΄.

Τελλῖναι δὲ νεαραὶ εὐκοίλιαι. μάλιστα δὲ ὁ ἐξ αὐτῶν ζωμός. ταριχηραὶ δὲ καεῖσαι καὶ τριβεῖσαι λεῖαι καὶ μετὰ κεδρίας ἐπισταζόμεναι, τὰς ἐκτιλθείσας τῶν βλεφάρων τρίχας οὐκ ἐῶσιν αὖθις φυῆναι.

Περὶ χημῶν. Κεφ. ρϛζ΄.

Καὶ ὁ ἐκ τῶν χημῶν δὲ καὶ τῶν ἄλλων κογχαείων ζωμὸς, κοιλίαν κινεῖ ἑψόμενος μετὰ ὀλίγου ὕδατος. μετ' οἴνου δὲ λαμβάνεται.

Περὶ ὄνυχος. Κεφ. ρϛη΄.

Ὄνυξ ἐστὶ πῶμα κογχυλίου, ὅμοιον τῷ τῆς πορφύρας. εὑρισκόμενον ἐν τῇ ἰνδίᾳ, ἐν ταῖς ναρδοφόροις λίμναις. διὸ καὶ ἀρωματίζει νεμομένων τῶν κογχυλίων τὴν νάρδον. συλλέγεται δὲ, ἐπειδὰν ὑπὸ τῶν αὐχμῶν ἀναξηρανθῶσιν αἱ λίμναι. διαφορεῖ δὲ ὁ ἀπὸ τῆς ἐρυθρᾶς κομιζόμενος, ὑπόλευκος ὢν καὶ λιπαρός. μέλας δὲ ὁ βαβυλώνιος καὶ μικρότερος. ἀμφότεροι δὲ εὐώδεις, θυμιώμενοι, καστορίζοντες ποσῶς τῇ ὀσμῇ. ἐγείρουσι δὲ καὶ ἔτι ὑπὸ θυμιαθέντες τὰς ὑστερικῶς πνιγομένας, καὶ ἐπιληπτικούς. ποθέντες δὲ κοιλίαν μαλάσσουσιν. αὐτὸ δὲ τὸ κογχύλιον καέν, ποιεῖ ὅσα καὶ ἡ πορφύρα καὶ ὁ κῆρυξ.

## Περὶ κοχλίου χερσαίου. Κεφ. ρϛθʹ.

Κοχλίας χερσαῖος εὐστόμαχος. δύσφθαρτος. ἄριστος δὲ ὅ, τε ἐν σαρδῶνι καὶ λιβύῃ καὶ ἀστυπαλαίᾳ καὶ σικελίᾳ καὶ χίῳ γεννώμενος. καὶ ὁ ἐν ταῖς κατὰ λιγυείαν ἄλπεσι πωματίας καλούμενος. καὶ ὁ θαλάσσιος δὲ εὐστόμαχος καὶ εὐέκκριτος. ὁ δὲ ποτάμιος βρομώδης, καὶ ὁ ταῖς ἀκάνθαις καὶ τοῖς θαμνίσκοις προσκεκολλημένος ἄγριος. ὃν τινες σέσιλον ἢ σεσόλιτα καλοῦσι ταρακτικός ἐστι κοιλίας καὶ στομάχου ἐμετοποιός. Δύναται δὲ πάντων τὰ ὄστρακα κεκαυμένα θερμαίνειν καὶ καίειν. σμήχειν λέπρας. ἀλφούς. ὀδόντας. οὐλὰς δὲ τὰς ἐν ὀφθαλμοῖς καὶ λευκώματα καὶ ἐφήλεις. καὶ ἀμβλυωπίας, μετὰ τῆς σαρκὸς ὅλοι καέντες καὶ λειανθέντες καὶ ἐγχριόμενοι σὺν μέλιτι ἀποκαθαίρουσιν. ὠμοὶ δὲ σὺν τοῖς κελύφοις καταπλασθέντες, ἐξικμάζουσι τὰ ὑδρωπικὰ οἰδήματα. καὶ οὐκ ἀφίστανται πρὶν ἢ πᾶν ἀνικμασθῆναι τὸ ὑγρόν. καὶ ποδαγρικὰς δὲ φλεγμονὰς πραΰνουσι. καὶ σκόλοπας ἕλκουσιν ὁμοίως καταπλασθέντες καὶ ἐμμήνια ἄγουσι λεῖοι προστιθέμενοι. αἱ δὲ σάρκες αὐτῶν λεῖαι σὺν σμύρνῃ καὶ λιβανωτῷ καταπλασθεῖσαι, τραύματα καὶ μάλιστα τὰ κατὰ τὰ νεῦρα κολλῶσι. καὶ τὰς ἐκ μυκτήρων αἱμορραγίας σὺν ὄξει λειανθέντες ἐπέχουσι. ζῶσα δὲ ἡ σὰρξ καταποθεῖσα τοῦ λιβυκοῦ μάλιστα, ἀλγηδόνας στομάχου παύει. μετὰ δὲ τοῦ ὀστράκου ὅλος τριβεὶς καὶ μετ᾽ οἴνου καὶ σμύρνης ποθεὶς ὀλίγος, κωλικοὺς θεραπεύει καὶ κύστεως ἀλ-

γήματα. ἀνακολλᾶ δὲ τρίχας ὁ χερσαῖος. ἐὰν τις βελόνην κατὰ τῆς σαρκὸς αὐτοῦ φέρων τῷ προϊσταμένῳ ἡλοιώδει προσάπτηται τῆς θριχός.

### Περὶ καρκίνων. Κεφ. σ.

Καρκίνων ποταμίων καέντων, ἡ τέφρα κοχλιαρίων δυοῖν πλῆθος σὺν γεντιανῆς ῥίζης κοχλιαρίῳ ἑνὶ. καὶ οἴνῳ ποθεῖσα ἐπὶ ἡμέρας γ. βοηθεῖ λυσσοδήκτοις ἐναργῶς. σὺν δὲ μέλιτι ἑφθεῖσα, ῥαγάδας τὰς ἐν ποσὶ καὶ τὰς ἐν δακτυλίῳ καὶ χιμέθλας καὶ καρκινώματα παρηγορεῖ. λεῖοι δὲ ὠμοὶ σὺν γάλακτι ὀνείῳ ποθέντες. βοηθοῦσι δήγμασιν ἑρπετῶν, φαλαγγίων, σκορπίων πληγαῖς. ἑφθοὶ δὲ σὺν ζωμῷ ἐσθιόμενοι, φθισικοὺς ὠφελοῦσι. καὶ τοὺς λαγωὸν θαλάσσιον πεπωκότας. τεφρωθέντες δὲ μετ᾿ ὠκίμου καὶ προστεθέντες, σκορπίους κτείνουσι. δύνανται δὲ τὰ αὐτὰ καὶ οἱ θαλάσσιοι. πλὴν ἧττον τούτων ἐνεργοῦσι.

### Περὶ σκορπίου χερσαίου. Κεφ. σα.

Σκορπίος χερσαῖος ὠμὸς λεῖος ἐπιτεθεὶς, βοήθημα τῆς ἰδίας πληγῆς γίνεται. εὑρίσκεται δὲ καὶ ὀπτηθεὶς πρὸς τὸ αὐτό.

### Περὶ σκορπίου θαλασσίου. Κεφ. σβ.

Τοῦ δὲ θαλασσίου σκορπίου ἡ χολὴ ἁρμόζει πρὸς τὰς ἐν ὀφθαλμοῖς ὑποχύσεις καὶ λευκώματα καὶ ἀμβλυωπίας.

### Περὶ δράκοντος θαλασσίου. Κεφ. σγ.

Δράκων θαλάσσιος ἀναπτυχθεὶς καὶ ἐπιτεθεὶς, ἴαμά ἐστι πρὸς τὴν ἐκ τῆς ἀκάνθης αὐτοῦ πληγήν.

### Περὶ σκολοπένδρας. Κεφ. σδ.

Σκολόπενδρα θαλασσία ἑψηθεῖσα ἐν ἐλαίῳ καὶ καταχρισθεῖσα, ψιλοῖ τρίχας. ψαυσθεῖσα δὲ κνησμοὺς ἐργάζεται.

### Περὶ νάρκης. Κεφ. σε.

Νάρκη θαλασσία ἐπιτεθεῖσα ἐπὶ χρονίων ἀλγημάτων τῶν περὶ κεφαλὴν, πραΰνει τὸ σφοδρὸν τοῦ ἀλγήματος. καὶ ἕδραν

δὲ ἐκτρεπομένην ἢ προσαποπίπτουσαν, στέλλει προστεθεῖσα.

Περὶ σαρκὸς ἐχίδνης. Κεφ. σς΄.

Ἐχίδνης σὰρξ ἑψηθεῖσα καὶ ἐσθιομένη, ὀξυδερκεῖς ποιεῖ τὰς ὄψεις. καὶ πρὸς τὰ νευρικὰ ἁρμόζει. καὶ τὰς αὐξομένας χοιράδας ἵστησι. δεῖ δὲ ἐκδείραντας αὐτὴν, ἀποκόπτειν κεφαλὴν καὶ τὴν οὐρὰν, διὰ τὸ ἐν αὐτοῖς ἄσαρκον. μυθώδης γὰρ ἡ πρὸς τὸ μέτρον ἀποκοπὴ τῶν ἄκρων. τὸ δὲ λοιπὸν πλύναντας καὶ κατατεμαχίσαντας, ἕψειν μετὰ ἐλαίου καὶ οἴνου καὶ ἁλῶν ὀλίγων καὶ ἀνήθου. φασὶ δὲ τοὺς προσφερομένους φθεῖρας γεννᾶν. ὅπερ ἐστὶ ψεῦδος. προσιστοροῦσι δὲ ἔνιοι καὶ μακρογήρους γίνεσθαι τοὺς ἐσθίοντας αὐτάς. κατασκευάζονται δὲ καὶ ἅλες ἐξ αὐτῶν πρὸς τὰ αὐτά. πλὴν οὐχ ὁμοίως ἐνεργοῦσι. καθίεται δὲ ἔχιδνα ζῶσα εἰς καινὴν χύτραν. καὶ μετ' αὐτῆς ἁλῶν ἰσχάδων τετριμμένων ἀνὰ ξέστας α΄. μετὰ μέλιτος κυάθων ς΄. περιχρίεται πηλῷ τὸ πῶμα τῆς χύτρας. καὶ ὀπτᾶται ἐν καμίνῳ, ἄχρις οὗ ἀνθρακωθῶσιν οἱ ἅλες. μετὰ δὲ τοῦτο λεπτοτριβηθέντες, ἀποτίθενται. ἐνίοτε μιγνυμένου πρὸς εὐστομαχίαν αὐτοῖς ναρδοστάχυος ἢ φύλλου ἢ μαλαβάθρου βραχέος.

Περὶ ὄφεως γήρως. Κεφ. σζ΄.

Γῆρας ὄφεως ἑψηθὲν ἐν οἴνῳ, βοήθημά ἐστιν ὠταλγίας ἐγχεόμενον, καὶ ὀδονταλγίας διακλυζόμενον. μίσγουσι δὲ αὐτὸ καὶ εἰς ὀφθαλμικὰς δυνάμεις. μάλιστα δὲ τὸ τῆς ἔχεως.

Περὶ λαγωοῦ θαλαττίου. Κεφ. ση΄.

Λαγωὸς θαλάσσιος ἔοικε μὲν μικρᾷ τευθίδι. δύναται δὲ λεῖος καταπλασθεὶς καθ' ἑαυτὸν καὶ μετὰ ἀκαλύφης τρίχας ψιλοῦν.

Περὶ λαγωοῦ χερσαίου. Κεφ. σθ΄.

Τοῦ δὲ χερσαίου λαγωοῦ ὁ ἐγκέφαλος, ὀπτὸς βιβρωσκόμενος ὠφελεῖ τρόμους τοὺς κατὰ πάθος γινομένους. καὶ ὀδοντιάσεις ἐπὶ παίδων παρατριβόμενος καὶ ἐσθιόμενος. ἡ δὲ κεφαλὴ αὐτοῦ καεῖσα καὶ καταχρισθεῖσα μετὰ στέατος ἀρκείου ἢ ὄξους ἀλωπεκίας θεραπεύει. ἡ δὲ πιτύα ποθεῖσα μετὰ οἰ-

μήτρας ζεῖς, μετὰ τὴν ἄφεδρον, ἀτόκιος εἶναι ἱστορεῖται. ἐπέχει δὲ καὶ τὴν ἐκ μήτρας ῥύσιν. καὶ κοιλίας. ὠφελεῖ δὲ καὶ ἐπιληπτικούς. καὶ πρὸς τὰ θανάσιμα μετ' ὄξους πινομένη. μάλιστα δὲ πρὸς γάλακτος θρόμβωσιν καὶ ἐχιδνῶν δήγματα. τὸ δὲ αἷμα αὐτοῦ θερμὸν καταχριόμενον, ἐφήλιδας καὶ ἀλφοὺς καὶ φακοὺς θεραπεύει.

Περὶ τρυγόνος θαλασσίας. Κεφ. σι.

Τρυγόνος θαλασσίας τὸ κέντρον, ὃ δὴ ἀπὸ τῆς οὐρᾶς αὐτῆς πέφυκεν ἀνεστραμμένον ταῖς φολίσιν, ὀδόντα πονοῦντα πραΰνει. θρύπτει γὰρ καὶ ἀποβάλλει.

Περὶ σηπίας. Κεφ. σια.

Σηπίας ἑψηθείσης μέλαν τὸ βιβρωσκόμενον δύσπεπτον. κοιλίας μαλακτικόν. τὸ δὲ ἀπ' αὐτῆς ὄστρακον σχηματισθὲν εἰς κολλύρια, ἁρμόζει πρὸς παράτριψιν τραχέων βλεφάρων. καυθὲν δὲ ἐν τῷ ἰδίῳ ὀστράκῳ, ἄχρις οὗ τὸ πλακῶδες αὐτοῦ ἀποστῇ, σμήχει λεῖον ἀλφούς. πίτυρα. ὀδόντας. ἐφήλεις. μίγνυται δὲ καὶ εἰς τὰ ὀφθαλμικὰ πλυθέν. ποιεῖ δὲ καὶ πρὸς λευκώματα κτηνῶν ἐμφυσσόμενον. καὶ πτερύγια τὰ ἐν ὀφθαλμοῖς τήκει. σὺν ἁλσὶ λεῖον προσαγόμενον.

Περὶ τρίγλης. Κεφ. σιβ.

Τρίγλα συνεχῶς ἐσθιομένη ἀμβλυωπίας δοκεῖ κατασκευαστικὴ ὑπάρχειν. ὠμὴ δὲ ἀνασχισθεῖσα, καὶ ἐπιτεθεῖσα θαλασσίου δράκοντος καὶ σκορπίου καὶ ἀράχνης δήγματα ἰᾶται.

Περὶ ὄρχεως ἱπποποτάμου. Κεφ. σιγ.

Ὄρχις ἱπποποτάμου ξηρανθεὶς καὶ λειανθεὶς, πίνεται μετ' οἴνου πρὸς ἑρπετῶν δήγματα.

Περὶ τῶν τοῦ κάστορος ὄρχεων. Κεφ. σιδ.

Κάστορος ὄρχις. ζῷόν ἐστιν ἀμφίβιον. τὸ πλεῖστον ἐν ὕδασι, σὺν ἰχθύσι, καὶ καρκίνοις τρεφόμενον. ποιεῖ μὲν καὶ πρὸς ἑρπετά. ἔστι δὲ καὶ πταρμικός. καὶ καθόλου ποικίλην ἔχει τὴν

χρῆσιν. ποθεὶς γὰρ μετὰ γλήχωνος < πλῆθος δυοῖν, ἔμμη
να κινεῖ καὶ ἔμβρυα. καὶ δεύτερα ἐκβάλλει. πίνεται δὲ σὺν
ὄξει καὶ πρὸς ἐμπνευματώσεις. στρόφους λυγμούς. θανά/
σιμα φάρμακα. ἰξίαν. ἀνακαλεῖται δὲ καὶ τοὺς ληθαργικούς.
καὶ τοὺς ὅπως δή ποτε καταφερομένους, ἐμβρεχόμενος.
σὺν ὄξει καὶ ῥοδίνῳ καὶ ὀσφραινόμενος. καὶ ἀποθυμιώ
μενος δὲ τὰ αὐτὰ ποιεῖ. ἁρμόζει δὲ καὶ τρόμοις καὶ σπασμοῖς.
καὶ παντὶ τῷ νευρώδει πινόμενός τε καὶ συγχριόμενος, καὶ κα/
θόλου θερμαντικὴν ἔχει τὴν δύναμιν. ἐκλέγου δὲ ἀεὶ τοὺς συ
νεζευγμένους ὄρχεις ἐκ μιᾶς ἀρχῆς. ἀδύνατον γὰρ δύο φύσ
σας ἐζευγμένας ἐν ἑνὶ ὑμένι εὑρεῖν. καὶ τὸ ἐντὸς ἔχον κηρο/
ειδὲς βαρύοσμον. βρομῶδες. δριμύ. δηκτικόν. εὔθρυπτον.
διαφρασσόμενον τε συνεχῶς φυσικοῖς ὑμέσι. δολοῦσι δέ τι/
νες αὐτὸ, ἀμμωνιακὸν ἢ κόμμι συμπεφυρμένον αἵματι καὶ κα
στορείῳ, ἐγχέοντες εἰς φύσαν καὶ ξηραίνοντες. μάτην δὲ ἱστο/
ρεῖται ὅτι διωκόμενον τὸ ζῶον ἀποσπᾷ τοὺς διδύμους καὶ ῥί
πτει. ἀδύνατον γάρ ἐστιν ἅψασθαι αὐτῶν προσύπων ὄντων
ὥσπερ ὑός. δεῖ δὲ διελόντας τὸ δέρμα κομίσασθαι σὺν τῷ
περιέχοντι ὑμένι τὸ ὑγρὸν, ὂν μελιτῶδες. καὶ οὕτω ξηραίναν
τας ποτίζειν.

Περὶ γαλῆς κατοικιδίου. Κεφ. σιέ.

Γαλῆ κατοικίδιος περιφλεχθεῖσα. καὶ δίχα τῶν ἐντὸς σκελε
τευθεῖσα δι' ἁλὸς καὶ ξηρανθεῖσα ἐν σκιᾷ παντὸς ἑρπετοῦ
ἐνεργέστερόν ἐστι βοήθημα ποθεῖσα, μετὰ οἴνου < β΄ πλή/
θος καὶ τοξικοῦ ἀντιφάρμακον ὁμοίως ληφθεῖσα. ἡ δὲ κοι/
λία αὐτῆς κορίῳ πλησθεῖσα καὶ σκελετευθεῖσα, θηριοδή/
κτοις καὶ ἐπιληπτικοῖς βοηθεῖ πινομένη. ὅλη δὲ καεῖσα ἐν
χύτρᾳ, ποδαγρικοὺς ὠφελεῖ, τῆς τέφρας καταχριομένης μετ'
ὄξους. τὸ δὲ αἷμα αὐτῆς καταχριόμενον, χοιράσι βοηθεῖ. ὠφε
λεῖ δὲ καὶ ἐπιληπτικούς.

Περὶ βατράχων. Κεφ. σις΄.

Βάτραχοι ἀντιφάρμακόν εἰσιν ἑρπετῶν πάντων. ζωμευθέντες
ἐν ἁλσὶ καὶ ἐλαίῳ. τοῦ ζωμοῦ λαμβανομένου ὁμοίως. καὶ
πρὸς χρονίους τῶν τενόντων ἀποστάσεις. καέντες δὲ καὶ αὐθί/

παθόντες, αἱμορραγίαν στέλλουσι, καὶ ἀλωπεκίας θεραπεύουσι σὺν πίσσῃ ὑγρᾷ καταχριόμενοι. τῶν δὲ χλωρῶν βατράχων τὸ αἷμα ἐπισταζόμενον, κωλύει τὰς ἐκτιλθείσας ἀπὸ τῶν βλεφάρων τρίχας φύεσθαι. ὠφελοῦσι καὶ ὀδονταλγίας συνεψόμενοι ὕδατι καὶ ὄξει καὶ διακλυζόμενοι.

Περὶ αἰλούρου. Κεφ. σιζ΄.

Αἴλουρος νεαρὸς βιβρωσκόμενος, τρόφιμός ἐστι καὶ εὐκοίλιος. ταριχηρὸς δὲ ἄτροφος. ἀρτηρίας δὲ καθαίρει καὶ εὐήχους παρασκευάζει. καταπλασθεῖσα δὲ ἡ σὰρξ τοῦ ταριχηροῦ, σκόλοπας ἀνάγει, καὶ ἡ ἐξ αὐτοῦ δὲ ἅλμη ἁρμόζει ἐν ἀρχῇ δυσεντερικοῖς εἰς ἐγκάθισμα. κατάγουσα τοὺς ῥευματισμοὺς εἰς τὴν ἐπιφάνειαν. καὶ ἐγκλυζομένη δὲ ἰσχιαδικοὺς θεραπεύει.

Περὶ σμαρίδος. Κεφ. σιη΄.

Σμαρίδος ταριχηρᾶς ἡ κεφαλὴ καεῖσα, ἕλκη στέλλει ὑπερσαρκοῦντα. καὶ νομὰς ἵστησι. καὶ ἥλους. καὶ θύμους ἀναλίσκει. σκορπιοπλήκτοις τε καὶ κυνοπλήκτοις ἡ σὰρξ ἁρμόζει καθάπερ πᾶς τάριχος.

Περὶ μαινίδος. Κεφ. σιθ΄.

Καὶ τῆς μαινίδος δὲ κεφαλὴ καεῖσα λεία, τὰς ἐν δακτύλῳ τετυλωμένας ῥαγάδας καταπλασθεῖσα ἀφίστησι. τὸ δὲ γάρον αὐτοῦ τὰς ἐν στόματι σηπεδόνας διακλυζόμενον παύει.

Περὶ κωβιοῦ. Κεφ. σκ΄.

Κωβιὸν πρόσφατον ἐὰν ἐμβαλὼν εἰς ὑείαν κοιλίαν καταῤῥάψῃς, καθεψήσῃς τε μεθ' ὕδατος ξεστῶν ιβ΄. ἄχρι δυοῖν ξεστῶν, καὶ διηθήσας καὶ ἐξαιθριάσας ποτίσῃς, κοιλίαν ἀταράχως κάτω ὑπάξεις. καταπλασθεὶς δὲ καὶ τοὺς ὑπὸ κυνῶν δηχθέντας ἢ ἑρπετῶν ὠφελεῖ.

Περὶ ὠμοταρίχου. Κεφ. σκα΄.

Ὁ δὲ ὠμοτάριχος λεγόμενος, σὰρξ ἐστι θύννου τεταριχευμένου. βοηθεῖ δὲ λαμβανόμενος τοῖς ὑπὸ ἐχίδνης τῆς καλουμένης πρηστῆρος δηχθεῖσι. δεῖ δὲ ὡς ὅτι πλεῖστον προσφέρον

τας οἶνον ἀναγκάζειν πίνειν πολὺν καὶ ἐμεῖν. εἴς τε τὰς δρι-
μυφαγίας μάλιστα ἁρμόζει. καταπλάσσεται δὲ καὶ ἐπὶ
κυνοδήκτων ὠφελίμως.

Περὶ γάρου. κεφ. σκβ'.

Γ ἄρον δὲ πᾶν τὸ ἐκ ταριχηρῶν ἰχθύων καὶ κρεῶν καταπλατ-
τόμενον, νομὰς ἐφιστᾷ καὶ κυνοδήκτους ἰᾶται. ἐνίοτε δὲ καὶ
ἐπὶ δυσεντερικοῖς καὶ ἰσχιαδικοῖς. ἐφ' ὧν μὲν ἵνα τὰ ἑλκω-
μένα ἐπικαύσῃ, ἐφ' ὧν δὲ ἵνα τὰ ἀνέλκωτα ἐρεθίσῃ.

Περὶ ζωμοῦ τῶν νεαρῶν ἰχθύων. κεφ. σκγ'.

Ζ ωμὸς δὲ ὁ ἐκ τῶν νεαρῶν ἰχθύων κοιλίας ὑπακτικός. ποτὲ
μὲν καθ' ἑαυτὸν πινόμενος. ποτὲ δὲ μετ' οἴνου. ἰδίως δὲ σκευά-
ζεται πρὸς ταῦτα ὁ ἀπὸ τῶν φωκίων καὶ σκορπίων καὶ ἰου-
λίδων καὶ περκίδων καὶ τῶν ἄλλων πετραίων ἁπαλοσάρκων
καὶ ἀβρώμων λιτῶς μεθ' ὕδατος καὶ ἐλαίου καὶ ἀνήθου.

Περὶ κόρεων. κεφ. σκδ'.

Κ όρεις οἱ ἀπὸ κλίνης ἐντιθέμενοι βρώμασι μετὰ κυάμων τὸν
ἀριθμὸν ζ'. καὶ καταπινόμενοι πρὸ τῆς ἐπισημασίας, ὠφε-
λοῦσι τοὺς τεταρταΐζοντας, καὶ ἀσπιδοδήκτους ἢ δίχα τῶν
κυάμων καταποθέντες. ὑστερικῶς δὲ πνιγομένας ἀνακα-
λοῦνται ὀσφραινόμενοι. σὺν οἴνῳ δὲ οἱ ὄξει ποθέντες βδέλ-
λας ἐξάγουσι. δυσουρίαν τε παύουσιν ἐντιθέμενοι τῷ οὐ-
ρητικῷ πόρῳ λεῖοι.

Περὶ κουβαρίδων. κεφ. σκε'.

Ὀ νοι οἱ ὑπὸ τὰς ὑδρίας, ζῶά εἰσι πολύποδα. σφαιρούμενοι
κατὰ τὰς ἐπαφὰς τῶν χειρῶν. οὗτοι ποθέντες σὺν οἴνῳ
βοηθοῦσι δυσουρίᾳ τε καὶ ἰκτέρῳ. διαχρισθέντες δὲ μετὰ
μέλιτος συναγχικοὺς ὠφελοῦσι καὶ πρὸς ὠταλγίαν δὲ λεῖοι
σὺν ῥοδίνῳ θερμανθέντες ἐν κελύφῳ ῥόας ἐνσταγέντες,
ἁρμόζουσιν

Περὶ σίλφης. κεφ. σκς'.

Σ ίλφης τῆς ἐν τοῖς ἀρτοκοπείοις εὑρισκομένης, τὰ ἐντὸς τριβό-
μενα σὺν ἐλαίῳ ἢ ἑψόμενα καὶ ἐνσταζόμενα ὠταλγίας παύει.

Περὶ πνεύμονος θαλασσίου. Κεφ. σκζ'.

Πνεύμων θαλάσσιος πρόσφατος λεανθεὶς ποδαγριῶντας καὶ χιμετλιῶντας, ὠφελεῖ καταπλασσόμενος.

Περὶ χοιρείου πνεύμονος. Κεφ. σκη'.

Ὁ δὲ χοίρειος καὶ ἄρνειος καὶ ἄρκειος πνεύμων, τὰ ἐκ τῶν ὑποδημάτων παρατρίμματα ἐπιτιθέμενοι, ἀφλέγμαντα τηροῦσιν.

Περὶ πνεύμονος ἀλώπεκος. Κεφ. σκθ'.

Καὶ ὁ τῆς ἀλώπεκος πνεύμων ξηρανθεὶς καὶ ποθεὶς, ἀσθματικοὺς ὀνίνησι. καὶ τὸ στέαρ δὲ αὐτῆς τακὲν καὶ ἐγχυθὲν, ὠτὸς πόνον παύει.

Περὶ ἥπατος ὀνείου. Κεφ. σλ'.

Ἧπαρ ὄνειον ἐσθιόμενον ὀπτὸν, ἐπιληπτικοὺς ὠφελεῖ. νήστεις δὲ λαμβανέτωσαν.

Περὶ αἰδοίου ἄρρενος ἐλάφου. Κεφ. σλα'.

Αἰδοῖον ἄρρενος ἐλάφου σὺν οἴνῳ ποθὲν λεῖον τοῖς ὑπὸ ἐχιδνῶν δηχθεῖσι βοηθεῖ.

Περὶ ὀνύχων ὄνων. Κεφ. σλβ'.

Ὄνυχες ὄνων καέντες ἢ ποθέντες ἐφ' ἡμέρας ἱκανὰς πλῆθος κοχλιαρίων δυοῖν, ἱστοροῦνται ἐπιληπτικοὺς ὠφελεῖν. ἐλαίῳ δὲ φυραθέντες χοιράδας διαφοροῦσιν. ἐπιπλασθέντες δὲ, χιμέθλας θεραπεύουσι.

Περὶ λειχήνων ἵππων. Κεφ. σλγ'.

Λειχῆνες ἵππων, εἰσὶ δὲ τύλοι κατ' ἐπιγραφὴν ἐντετυλωμένοι περὶ τοῖς γόνασι καὶ περὶ ταῖς ὁπλαῖς, ποθέντες λεῖοι μετ' ὄξους, ἐπιληψίας ἱστοροῦνται θεραπεύειν.

Περὶ αἰγῶν ὀνύχων. Κεφ. σλδ'.

Οἱ δὲ τῶν αἰγῶν ὄνυχες καέντες, ἀλωπεκίας καταχριόμενοι σὺν ὄξει θεραπεύουσι.

Περὶ ἥπατος αἰγός. Κεφ. σλε'.

Τοῦ δὲ ἥπατος τῆς αἰγὸς ὀπτωμένου, ὁ ἀπορρέων ἰχὼρ ἐγχριόμενος, νυκτάλωψιν ἁρμόζει. καὶ τὴν ἀτμίδα δέ τινες ἐφο-

μένου αὐτοῦ δέχηται, ἀνεωγόσι τοῖς ὀφθαλμοῖς ὠφελεῖται. ἁρμόζει δὲ καὶ ἐσθιόμενον ὀπτὸν πρὸς τὰ αὐτά. φασὶ δὲ καὶ ἐπιληπτικοὺς ἐλέγχεσθαι. φαγόντας μάλιστα τὸ τράπιον ἧπαρ.

Περὶ ἥπατος κάπρου. Κεφ. σλϛ.

Τὸ δὲ τοῦ κάπρου ἧπαρ νεαρὸν καὶ ξηρὸν λεῖον σὺν οἴνῳ πινόμενον, ἑρπετῶν καὶ πλιωῶν δήγματα ὠφελεῖ.

Περὶ κυνὸς λυσσῶντος. Κεφ. σλζ.

Κυνὸς λυσσῶντος ἧπαρ βιβρωσκόμενον ὀπτὸν ἀπὸ τῶν δηχθέντων ὑπ' αὐτοῦ, ἀπεριπτώτους ὑδροφοβίας τηρεῖν πιστεύεται. χρῶνται δὲ εἰς προφυλακὴν καὶ τῷ κυνόδοντι τοῦ δακόντος ἐπιδοῦντες εἰς κυστίδα καὶ περιάπτοντες τῷ βραχίονι.

Περὶ καττυμάτων. Κεφ. σλη.

Τὰ δὲ ἀπὸ τῶν καττυμάτων παλαιὰ δέρματα, κεκαυμένα καὶ λεῖα καταπλασσόμενα, πυρίκαυτα καὶ παρατρίμματα καὶ τὰ ἐξ ὑποδημάτων θλίμματα, θεραπεύει.

Περὶ ἥπατος αἰθυίας. Κεφ. σλθ.

Αἰθυίας ἧπαρ σκελετευθὲν καὶ ποθὲν μεθ' ὑδρομέλιτος κοχλιαρίων δυοῖν πλῆθος, ἐκβάλλει δεύτερα.

Περὶ ἀλεκτορίδων. Κεφ. σμ.

Ἀλεκτορίδες ἀναχισθεῖσαι καὶ ἐπιτεθεῖσαι ἔνθερμοι, τοῖς ἑρπετῶν δήγμασι βοηθοῦσι. δεῖ δὲ συνεχῶς ἀλλάσσειν.

Περὶ ἐγκεφάλου ἀλεκτορίδος. Κεφ. σμα.

Ὁ δὲ ἐγκέφαλος αὐτῶν ἐν πόματι θηριοδήκτοις σὺν οἴνῳ δίδοται. καὶ τὰς ἐκ μηνίγγος αἱμορραγίας ἐπέχει. τοῦ δὲ ἄρρενος τὸ κατὰ τὰ ἐντὸς ἀποκείμενον τῇ κοιλίᾳ κερατοειδές. ἀποδερόμενον δὲ ἐν ταῖς ἑψήσεσι ξηρανθὲν, ἁρμόζει στομαχικοῖς, λεῖον μετ' οἴνου πινόμενον. ὁ δὲ ζωμὸς τοῦ νόσσακος μάλιστα δίδοται ἐπὶ κράσεως χάριν φαυλοτήτων καὶ ἐπὶ τῶν στόμαχον πυρουμένων λιτῶς σκευασθείς. ὁ δὲ τῶν παλαιῶν

ἀλεκτρυόνων, δίδοται πρὸς κάθαρσιν κοιλίας. ἐξελόντας δὲ τὰ ἐντὸς, δεῖ ἀντεμβάλλειν ἅλας. καὶ καταῤῥάψαντας ἑψεῖν μετὰ ὕδατος ξεστῶν κ΄. κατάγοντας εἰς κοτύλας γ΄. δίδοται δὲ πᾶν ἐξαιθριασθέν. ἔνιοι δὲ συνέψουσι κράμβην θαλασσίαν. ἢ λινόζωστιν. ἢ κνίκον. ἢ πολυπόδιον. ἄγει δὲ πάχος ὠμόν. γλοιῶδες. μέλαν. ἁρμόζει δὲ πυρετοῖς χρονίοις. ἄσθμασιν. ἀρθρητικοῖς. ἐμπνευματουμένοις στομάχοις.

Περὶ ᾠοῦ. Κεφ. σμβ΄.

Ὠὸν τὸ ἁπαλὸν τροφιμώτερον τοῦ ῥοφητοῦ. καὶ τοῦ ἁπαλοῦ τὸ σκληρόν. ἡ δὲ λέκυθος αὐτοῦ χρησίμη, πρὸς ὀφθαλμῶν περιωδυνίας. ὀπτηθεῖσα σὺν κρόκῳ καὶ ῥοδίνῳ. πρός τε τὰς περὶ δακτύλιον φλεγμονὰς καὶ κονδυλώματα, σὺν μελιλώτῳ. μετὰ ῥοὸς δὲ ἢ κηκίδος τηγανισθεῖσα, καὶ βρωθεῖσα ἵστησι κοιλίαν. καὶ καθ᾽ ἑαυτὴν δὲ προσενεχθεῖσα.

Περὶ λευκοῦ τοῦ ᾠοῦ. Κεφ. σμγ΄.

Τὸ δὲ λευκὸν αὐτοῦ ὠμὸν ὂν ψύχει. ἐμπλάττει. παρηγορεῖ ἐγχυματισθὲν ἐπὶ ὀφθαλμῶν φλεγμαινόντων. κατακαύματά τε οὐκ ἐᾷ φλυκταινοῦσθαι παραχρῆμα ἐπιχρισθέν. πρόσωπά τε ἀνεπίκαυτα τηρεῖ. ἀνακόλλημα δέ ἐστι ῥευματιζομένων σὺν λιβανωτῷ κατὰ τοῦ μετώπου τιθέμενον. φλεγμονάς τε ὀφθαλμῶν πραΰνει ἐρίῳ ἀναληφθὲν μιγέντος αὐτῷ ῥοδίνου καὶ οἴνου καὶ μέλιτος. ὠμὸν δὲ ῥοφηθὲν, αἱμοῤῥοΐδος δήγμασι βοηθεῖ. ἀκροχλιαρὸν δὲ πρὸς κύστεως δηγμοὺς καὶ ἑλκώσιν νεφρῶν. καὶ τραχυσμοὺς τραχείας ἀρτηρίας. καὶ αἵματος ἀναγωγὰς καὶ καταῤῥοὺς καὶ θώρακος ῥευματισμοὺς ἁρμόζει.

Περὶ τεττίγων. Κεφ. σμδ΄.

Τέττιγες ὀπτοὶ ἐσθιόμενοι, τοῖς περὶ τὴν κύστιν ἀλγήμασι βοηθοῦσιν.

Περὶ ἀκρίδων. Κεφ. σμε΄.

Ἀκρίδες ὑποθυμιώμεναι, δυσουρίας μάλιστα τὰς ἐπὶ γυναικῶν ὠφελοῦσι. ἡ δὲ λεγομένη ἀκρὶς ἢ ῥιξαχόσκη ἢ ὄνος, ἄπτερός ἐστι καὶ μεγαλόκωλος. πρόσφατος. ξηρανθεῖσα δὲ σφό

δρα

δρας σκορπιοδήκτους ὠφελεῖ πινομένη σὺν οἴνῳ. χρῶνται δὲ αὐτῇ κατακόρως οἱ κατὰ λέπτιν λίβυες.

Περὶ φίνιδος. Κεφ. σμϛʹ.

Φίνις τὸ ὄρνεον ὃ ῥωμαῖοι καλοῦσιν ὀσίφραγον, τούτου ἡ κοιλία κατ' ὀλίγον ποτιζομένη, λίθους ἐξουρεῖσθαι ποιεῖν ἱστορεῖται.

Περὶ κορυδαλλοῦ. Κεφ. σμζʹ.

Κορυδαλλὸς ὀρνίθιόν ἐστι μικρόν. ἔχον κατὰ τῆς κορυφῆς ὑπεροχὴν ὥσπερ ταῶνος. οὗτος βρωθεὶς ὀπτὸς, κοιλιακοὺς ὠφελεῖ.

Περὶ χελιδόνος. Κεφ. σμηʹ.

Χελιδόνος νεοσσοὺς τοὺς ἐκ τῆς πρώτης νεοσσοποιΐας, αὐξομένης τῆς σελήνης ἀνατεμὼν, εὑρήσεις ἐν τῇ γαστρὶ λίθους. ἐξ ὧν δύο λαβὼν, ἕνα ποικίλον καὶ τὸν ἕτερον καθαρὸν, πρὸ τοῦ ἐπιψαῦσαι τῆς γῆς ἐνδύσας εἰς δέρμα δαμάλεως ἢ ἐλάφου, καὶ περιάψας βραχίονι ἢ τραχήλῳ, ἐπιληπτικοὺς ὠφελήσεις. πολλάκις δὲ καὶ παντελῶς ἀποκαταστήσεις. βιβρωσκόμεναι δὲ ὥσπερ αἱ συκαλίδες, ὀξυωπίας εἰσὶ φάρμακον. καὶ ἡ ἀπ' αὐτῶν δὲ τέφρα καὶ ἡ τῶν μητέρων καεισῶν ἐν χύτρᾳ μετὰ μέλιτος χρισθεῖσα, ὀξυδορκίαν ποιεῖ. ἁρμόζει δὲ καὶ συναγχικοῖς διαχριομένη. καὶ πρὸς σταφυλῆς καὶ παρισθμίων φλεγμονάς. σκελετευθεῖσαι δὲ αὗται καὶ οἱ νεοσσοὶ, συναγχικοὺς ὠφελοῦσι πινόμεναι μεθ' ὕδατος πλῆθος. < αʹ.

Περὶ ἐλέφαντος. Κεφ. σμθʹ.

Ἐλέφαντος ὀδόντος ῥίνισμα, παρωνυχίας καταπλασθὲν θεραπεύει. Δύναμιν δὲ ἔχει στυπτικήν.

Περὶ ἀστραγάλου ὑός. Κεφ. σνʹ.

Ἀστράγαλος ὑὸς καεὶς μέχρις ἂν ἐκ μέλανος γένηται λευκὸς, καὶ λεῖος ποθεὶς, ἐμπνευματώσεις κώλου καὶ στρόφους χρονίους ἰᾶται.

Περὶ ἐλάφου κέρατος. Κεφ. σναʹ.

Ἐλάφου κέρας κεκαυμένον καὶ πεπλυμένον, ἁρμόζει πινό-

μενον πλῆθος δυοῖν κοχλιαρίων αἱμοπτοϊκοῖς, δυσεντερικοῖς, κοιλιακοῖς, ἰκτερικοῖς, κύστεως ἀλγήμασι μετὰ φαγακάνθης. ῥοϊκαῖς δὲ γυναιξὶ μετὰ ὑγροῦ τοῦ πρὸς τὸ πάθος ἁρμόζοντος. καίεται δὲ ἐν καμίνῳ καταβληθὲν καὶ κοπὲν εἰς ὠμὴν χύτραν περιπεπλασμένην πηλῷ, ἄχρις ἂν λευκὸν γένηται. πλύνεται δὲ ὡς καδμία. τὸ δὲ τοιοῦτον ἁρμόζει πρὸς τὰ ἐν ὀφθαλμοῖς ἕλκη καὶ ῥεύματα. καὶ ὀδόντας παρατριβόμενον σμήχει. ὠμὸν δὲ θυμιαθὲν, ἑρπετὰ διώκει. ἀποζεσθὲν δὲ μετ᾽ ὄξους καὶ διακλυζόμενον, παρηγορεῖ γομφιάσεις.

## Περὶ καμπῶν. Κεφ. σνβʹ.

Κάμπαι αἱ ἐπὶ τῶν λαχάνων γεννώμεναι, περιχριόμεναι σὺν ἐλαίῳ, ἀδήκτους ἀπὸ τῶν ἰοβόλων φυλάττειν λέγονται.

## Περὶ κανθαρίδων. Κεφ. σνγʹ.

Κανθαρίδες εἰς ἀπόθεσιν εὔθετοι αἱ ἀπὸ τοῦ σίτου. ἃς βαλὼν εἰς ἀκόνιτον ἀγγεῖον, καὶ τὸ στόμα περιδήσας ὀθονίῳ ἀραιῷ καθαρῷ, περικατάστρεψον ἀτμῷ ζέοντος ὄξους δριμυτάτου. καὶ ἕως ἂν πνιγῶσι κράτει. εἶτα διαπείρας λίνῳ ἀπότιθε. ἐνεργέσταται δέ εἰσιν αἱ ποικίλαι. καὶ μηλίνας ἐπικαρσίους ζώνας ἔχουσαι ἐν τοῖς πτεροῖς. ἐπιμήκεις τὸ σῶμα. ἁδραί. ἐμπίμελοι, ὡς αἱ σίλφαι. ἄτονοι δέ εἰσιν αἱ μονόχρωμοι.

## Περὶ βουπρήστου. Κεφ. σνδʹ.

Ὡσαύτως δὲ ἀποτίθενται καὶ αἱ βουπρήστεις, εἶδος οὖσαι κανθαρίδων. καὶ αἱ πιτυοκάμπαι. καὶ αὗται δὲ ἐπὶ κοσκίνου ἐπαιωρουμένου, ὑπὲρ θερμοσποδιᾷ φωγνύμεναι, ἐπὶ βραχὺ ἀποτίθενται. δύναμις δὲ αὐτῶν κοινή, σηπτική. ἑλκωτική. θερμαντική. ὅθεν μίγνυται φαρμάκοις τοῖς πρὸς τὰ καρκινώδη καὶ λέπρας καὶ λειχῆνας ἀγρίους θεραπεύουσιν. ἄγουσι δὲ καὶ ἔμμηνα πεσσοῖς μαλακτικοῖς μιγεῖσαι. ἔνιοι δὲ ἱσόρησαν τὰς κανθαρίδας καὶ ὑδρωπικοῖς βοηθεῖν. μιγνυμένας ἀντιδότοις ὡς οὔρησιν κινούσας. οἱ δέ, τὰ πτερὰ αὐτῶν καὶ τοὺς πόδας τοῖς ποιοῦσιν αὐτὰς ἀντιφάρμακον ἀνέγραψαν.

Περὶ Σαλαμάνδρας. ΚΕΦ. σνε.

Σαλαμάνδρα. εἶδός ἐστι σαύρας. ἔστι δὲ νωχελές. ποικίλον μάτην
πιστευθὲν μὴ καίεσθαι. δύναμιν δὲ ἔχει σηπτικήν. ἑλκωτικήν.
θερμαντικήν. μίγνυται δὲ σηπτικαῖς καὶ λεπρικαῖς ὥσπερ κανθα-
ρίς. καὶ ἀποτίθεται ὁμοίως. ψιλοῖ δὲ καὶ τρίχας τακεῖσα
μετ᾽ ἐλαίου. φυλάσσεται δὲ καὶ ἐν μέλιτι ἐξεντερισθεῖσα.
τῶν ποδῶν καὶ τῆς κεφαλῆς ἀφαιρεθέντων εἰς τὴν αὐτὴν χρῆσιν.

Περὶ Ἀράχνης ΚΕΦ. σνϛ.

Ἀράχνη τὸ ζῶον, ὃ ὁλκὸν ἔνιοι ἢ λύκειον καλοῦσι, συμμαλα-
χθεῖσα σπληνίῳ. καὶ ἐμπλασθεῖσα εἰς ὀθόνην, προστεθεῖσα
μετώπῳ ἢ κροταφοῖς, τριταϊκὰς περιόδους ὑγιάζει. τὸ δὲ
ὕφος αὐτῆς ἐπιτιθέμενον αἷμα ἵστησι. καὶ ἀφλέγμαντα τη-
ρεῖ τὰ ἐπιπόλαια τῶν ἑλκῶν, ἔστι δὲ καὶ ἕτερον εἶδος ἀρά-
χνης, κατασκευάζον τὸν ὑμένα λευκὸν λεπτὸν καὶ πυκνόν. ὃ ἱ-
στορεῖται ἐνδεόμενον εἰς κυτίδα, καὶ περιαπτόμενον βραχίο-
νι, τεταρταϊκὰς περιόδους θεραπεύειν. συνεψηθὲν δὲ ῥο-
δίνῳ ὠταλγίαις βοηθεῖ ἐγχεόμενον.

Περὶ Σαύρας ΚΕΦ. σνζ.

Σαύρας ἡ κεφαλὴ λεία ἐπιτεθεῖσα, σκόλοπας ἐξάγει καὶ
πάντα τὰ ἐμπεπηγότα. αἴρει δὲ καὶ μυρμηκίας. καὶ ἀκρο-
χορδόνας. καὶ ἥλους. τὸ δὲ ἧπαρ αὐτῆς ἐντεθὲν τοῖς τῶν
ὀδόντων βρώμασιν, ἀπονίαν ποιεῖ. ὅλη δὲ ἀνασχισθεῖσα, καὶ
ἐπιτεθεῖσα σκορπιοπλήκτους κουφίζει.

Περὶ Σηπός. ΚΕΦ. σνη.

Σήψ, ἣν ἔνιοι σαύραν ἐκάλεσαν χαλκιδικὴν, ἐν οἴνῳ ποθεῖσα,
τοὺς ὑπ᾽ αὐτῆς δηχθέντας ἰᾶται.

Περὶ Σκίγκου. ΚΕΦ. σνθ.

Σκίγκος ὁ μέν τίς ἐστιν αἰγύπτιος. ὁ δὲ ἰνδικός. ἄλλος ἐν τῇ ἐρυ-
θρᾷ γεννώμενος. ἕτερος δὲ ἐν τῇ λυδίᾳ τῆς μαυρουσιάδος εὑ-
ρίσκεται. ἔστι δὲ κροκόδειλος χερσαῖος. ἰδιογενής. ταρι-
χευόμενος ἐν καρδάμῳ. φασὶ δὲ δύναμιν ἔχειν ποθὲν τὸ περὶ

τοὺς νεφροὺς αὐτοῦ μέρος, ὅσον < πλῆθος μετ᾽ οἴνου, ὁρμητικὴν πρὸς τὰ ἀφροδίσια. ἀναπαύεσθαι δὲ τὴν ἐπίτασιν τῆς προθυμίας, φακοῦ ἀφεψήματι μετὰ μέλιτος πινομένῳ ἢ θρίδακος σπέρματι μεθ᾽ ὕδατος. μίγνυται δὲ καὶ ἀντιδότοις.

### Περὶ τῶν τῆς γῆς ἐντέρων. Κεφ. σξ'.

Γῆς ἔντερα λεῖα ἐπιτεθέντα, νεύρων ἀποκοπαῖς κολλᾷ. λύει δὲ καὶ τεταρταίους, ἑψηθέντα δὲ σὺν χηνείῳ στέατι, διαθέσεις ὤτων ἐγχυματιζόμενα θεραπεύει. συνεψηθέντα δὲ ἐλαίῳ καὶ ἐγχεόμενα εἰς τὸ ἀντικείμενον οὖς ὀδονταλγίαις βοηθεῖ. ἄγει δὲ καὶ οὖρα λεῖα πινόμενα σὺν γλυκεῖ.

### Περὶ Μυγάλης. Κεφ. σξα'.

Μυγάλη ἀνασχισθεῖσα καὶ ἐπιτεθεῖσα, ἄκος ἐστὶ τοῦ ἰδίου δήγματος.

### Περὶ Μυῶν Κεφ. σξβ'.

Μύας τοὺς κατοικιδίους ἀνασχισθέντας, σκορπιοπλήκτοις ὠφελίμως ἐπιτίθεσθαι ὁμολογεῖται. βρωθέντας δὲ ὀπτοὺς ὑπὸ παίδων, ἀναξηραίνειν τὸ ἐν τοῖς στόμασιν αὐτῶν σίελον.

### Περὶ Γάλακτος. Κεφ. σξγ'.

Γάλα κοινῶς μὲν πᾶν, εὔχυμον. τρόφιμον. μαλακτικὸν κοιλίας. φυσητικὸν στομάχου καὶ ἐντέρων. ὑδαρέστερον μέντοι τὸ ἐαρινὸν τοῦ θερινοῦ. καὶ τὸ ἀπὸ χλωρᾶς νομῆς μᾶλλόν ἐστι μαλακτικὸν κοιλίας. ἔστι δὲ καλὸν γάλα, τὸ λευκὸν καὶ ὁμαλὸν τῇ παχύτητι. καὶ συστρεφόμενον ἐπειδὰν ἐπισταγῇ ὄνυχι. τὸ δὲ αἴγειον ἧττον κοιλίας ἅπτεται διὰ τὸ τὰς αἶγας τὸ πλέον στυφούσῃ νομῇ χρῆσθαι. δρυῒ καὶ σχίνῳ. καὶ θαλίᾳ. καὶ τερμίνθῳ. ὅθεν καὶ εὐστόμαχον τυγχάνει. τὸ δὲ προβάτειόν ἐστι παχύ τε καὶ γλυκύ. καὶ πάνυ λιπαρόν. οὐχ οὕτω δὲ εὐστόμαχον. τὸ μέντοι βόειον καὶ ὄνειον καὶ ἵππειον. εὐκοιλιώτερα γίνεται πᾶν δὲ γάλα κοιλίας καὶ στομάχου ἀνατρεπτικόν, ὅπου ἐστὶ νομὴ σκαμμωνία. ἢ ἐλλέβορος. ἢ λινόζωστις ἢ κληματίς. ὡς καὶ ἐν τοῖς ἰουστίνοις ὄρεσιν ὑφ᾽ ἡμῶν ἱστόρηται. αἱ γὰρ αἶγες νεμόμεναι τοῦ λευκοῦ ἐλλεβόρου τὰ

φύλλα, κατὰ τὴν πρώτην ἐκβλάστησιν αὐτῶν, αὗται ἐμοῦ-
σι. καὶ τὸ γάλα ἀνατρεπτικὸν στομάχου καὶ ναυτίας γίνεται·
ἑψηθὲν δὲ πᾶν γάλα στεγνωτικὸν γίνεται κοιλίας καὶ μάλι-
στα τὸ διαπύροις κόχλαξιν ἐξικμασθέν. κοινῶς δὲ καὶ ταῖς ἐν-
τὸς ἑλκώσεσι βοηθεῖ. μάλιστα δὲ βρόγχου. πνεύμονος. ἐντέ-
ρων. νεφρῶν. κύστεως. καὶ πρὸς τοὺς τῆς ἐπιφανείας κνησ-
μούς. ἐξανθήματα. καὶ κακοχυμίας, δίδοται νεαρὸν μετὰ
μέλιτος ὠμοῦ καὶ ὕδατος συνανακραθέντος ὀλίγου μιγνυμέ-
νων καὶ ἁλῶν. ἀφυσότερον δὲ γίνεται ἀποζεσθὲν ἅπαξ. τὰ
δὲ τῆς κοιλίας μεθ᾽ ἑλκώσεως ῥεύματα, ἄχρις ἡμίσεως
τοῖς κόχλαξιν ἑψηθὲν ὠφελεῖ.

Περὶ ὀῤῥοῦ γάλακτος. Κεφ. σξδ΄.

Ἔχει δὲ πᾶν γάλα παραπεπλεγμένον τὸν ὀῤῥόν. ὃς χωριζόμενος
πρὸς κάθαρσιν εὐτονώτερος γίνεται. διδόμενος ἐφ᾽ ὧν δίχα
δριμύτητος ἔκκρισιν βουλόμεθα ποιῆσαι ὡς ἐπὶ μελαγχο-
λικῶν. ἐπιληπτικῶν λέπρας. ἐλεφαντιάσεως. καὶ ἐξανθημάτων
τῶν περὶ ὅλον τὸ σῶμα.

Περὶ σχιστοῦ γάλακτος. Κεφ. σξε΄.

Σχίζεται δὲ πᾶν γάλα ζεννύμενον ἐν καινῇ χύτρᾳ κεραμίᾳ καὶ
κινούμενον κλάδῳ συκίνῳ νεοτμήτῳ. καὶ μετὰ τὸ ζέσαι δὶς
ἢ τρὶς ἐπιῤῥαίνεται ὀξυμέλιτος κύαθος, πρὸς ἑκάστην κοτύ-
λην τοῦ γάλακτος. οὕτω γὰρ διορίζεται ὁ ὀῤῥὸς τοῦ τυρώδους.
δεήσει δὲ πρὸς τὸ μὴ ὑπερζεῖν τὸ γάλα, ἐν τῇ ἑψήσει σπόγ-
γῳ ἐκ ψυχροῦ συνεχῶς ἀποψᾶν τὸ χεῖλος τῆς χύτρας. καὶ
ξέστην ἀργυροῦν πλήρη ὕδατος ψυχροῦ καθιέναι. ποτί-
ζεται δὲ ὁ ὀῤῥὸς ἐκ διαστήματος κατὰ κοτύλην ἄχρι πέντε
κοτυλῶν. ἐν δὲ τοῖς μεταξὺ διαστήμασι περιπατείτωσαν οἱ
πίνοντες. ποιεῖ δὲ τὸ πρόσφατον γάλα καὶ πρὸς τοὺς ἀπὸ τῶν
θανασίμων φαρμάκων δηγμοὺς καὶ πυρώσεις, ὡς κανθαρί-
δας ἢ πιτυοκάμπης, ἢ σαλαμάνδρας, ἢ βουπρήστεως ἢ ὑοσκυά-
μου. ἢ δορυκνίου, ἢ ἀκονίτου, ἢ ἐφημέρου. πρὸς δὲ τοῦτο μάλιστα τὸ
βόειον συμφέρει ἰδίως ἁρμόζον. διακλύζεται δὲ καὶ πρὸς ἑλκώ-
σεις στόματος καὶ παρισθμίων εἰς ἀναγαργάρισμα. ἰδίως δὲ τὸ ὄ-
νειον διακλυζόμενον, οὖλα καὶ ὀδόντας κρατύνει. τοὺς δὲ τῶν κοι-

λίας μεθ' ἑλκώσεως ῥευματισμοὺς καὶ τεινεσμοὺς προβάτειον ἢ βόειον ἢ αἴγειον ἵστησιν, ἑψηθὲν διὰ κοχλάκων. ἐγκλύζεται δὲ καὶ καθ' ἑαυτὸ καὶ μετὰ πτισάνης ἢ χόνδρου χυλοῦ. ἱκανῶς πραΰνων τὴν τῶν ἐντέρων δῆξιν. ἐγκλύζεται δὲ καὶ μήτρα ἑλκουμένη.

Περὶ γυναικείου γάλακτος. Κεφ. σξϛ΄.

Τὸ δὲ τῆς γυναικὸς γάλα γλυκύτατόν ἐστι καὶ τροφιμώτατον. ὠφελεῖ δὲ θηλαζόμενον, στομάχου δῆξιν καὶ φθίσιν. ἁρμόζει δὲ καὶ πρὸς λαγωοῦ θαλασσίου πόσιν. μιγὲν δὲ λιβανωτῷ λείῳ, ἐνστάζεται τοῖς ἐκ πληγῆς αἱμαχθεῖσιν ὀφθαλμοῖς. καὶ ποδαγρικοὺς ὠφελεῖ, σὺν μηκωνείῳ καὶ κηρωτῇ καταχριόμενον. ἄθετον δὲ πᾶν γάλα σπληνικοῖς, ἡπατικοῖς, σκοτωματικοῖς, ἐπιληπτικοῖς, τοῖς τὰ νευρώδη πάσχουσι, πυρέσσουσι, κεφαλαλγοῦσιν. εἰ μή ποτε καθάρσεως ἕνεκα τις προσφέρει τὸ σχιστὸν ὡς προδεδήλωται. ἱστοροῦσι δέ τινες τὸ τῆς πρωτοτόκου κυνὸς γάλα ψιλοῦν τρίχας καταχρισθὲν, καὶ θανασίμων φαρμάκων ἀντιφάρμακον ποθὲν, καὶ τεθνηκότων ἐμβρύων ἐκβόλιον.

Περὶ τυροῦ νεαροῦ. Κεφ. σξζ΄.

Τυρὸς νεαρὸς δίχα ἁλῶν ἐσθιόμενος τρόφιμος, εὐστόμαχος, εὐανάδοτος, σαρκῶν ποιητικός, κοιλίας μετρίως μαλακτικός. διαφέρων αὐτοῦ αὐτὸς παρὰ τὴν τοῦ γάλακτος φύσιν, ἀφ' οὗ σκευάζεται. ἑψηθεὶς δὲ καὶ ἐκθλιβεὶς, εἶτα ὀπτηθεὶς, σταλτικὸς γίνεται κοιλίας. ὠφελεῖ δὲ καταπλασσόμενος ὀφθαλμῶν φλεγμονὰς καὶ ὑπώπια. ὁ δὲ νεαλὴς, εὐτροφώτερος ἐσθιόμενος. καὶ πρὸς καθαίρεσιν σαρκὸς ἐπιτήδειος, κακοστόμαχος, λυπῶν κοιλίαν καὶ ἔντερα. ὁ δὲ παλαιότερος, κοιλίας σταλτικός. καὶ ὁ ἐξ αὐτοῦ ὀρρὸς, κυνῶν τροφιμώτατος.

Περὶ ἱππάκης. Κεφ. σξη΄.

Ἡ δὲ καλουμένη ἱππάκη, τυρός ἐστιν ἵππειος, βρομώδης καὶ πολύτροφος, ἀναλογῶν τῷ βοείῳ. ἔνιοι δὲ ἱππάκην ἐκάλεσαν τὴν ἵππειον πυτίαν.

Περὶ βουτύρου καὶ τῆς ἐξ αὐτοῦ λιγνύος. Κεφ. σξθ΄.

Βούτυρον σκευάζεται καλὸν ἐκ τοῦ λιπαρωτάτου γάλακτος. τοιοῦτον δέ ἐστι τὸ προβάτειον. γίνεται δὲ καὶ ἐκ τοῦ αἰγείου ἐν ἀγγείοις κινουμένου τοῦ γάλακτος. καὶ χωριζομένου τοῦ λίπους. ἔχεται δὲ δυνάμεως μαλακτικῆς. ἐλαιώδους. ὅθεν κοιλίας τε ἐκλύει πλέον ποθέν. καὶ πρὸς τὰ θανάσιμα μὴ παρόντος ἐλαίου χρησιμεύει. μιχθὲν δὲ μέλιτι καὶ παρατριφθὲν, ὀδοντιάσεις ὠφελεῖ. καὶ τοὺς τῶν οὔλων ὀδαξισμοὺς ἐπὶ παίδων καὶ ἄφθας. ἔξωθεν δὲ καταπλασσόμενον, εὔτροφον καὶ ἀψυδρακίωτον τηρεῖ τὸ σῶμα. ποιεῖ δὲ καὶ πρὸς φλεγμονὰς καὶ σκληρίας ὑστέρας τὸ μὴ δυσῶδες μηδὲ παλαιόν. πρός τε δυσεντερίας καὶ πρὸς κώλου ἕλκωσιν ἐγκλυζόμενον. πυοποιοῖς τε μίγνυται χρησίμως. καὶ μάλιστα ἐπὶ τῶν κατὰ τὰ νεῦρα καὶ μήνιγγας καὶ κύστιν καὶ τράχηλον τραυμάτων. τὸ δ᾽ αὐτὸ πληροῖ καὶ καθαίρει καὶ σαρκοῖ, καὶ τοὺς ὑπὸ ἀσπίδος δηχθέντας ἐπιτιθέμενον ὠφελεῖ. μίγνυται δὲ καὶ προσοψήμασιν ἀντὶ ἐλαίου τὸ νεαρόν. καὶ ἐν τοῖς πέμμασιν ἀντὶ στέατος.

Συνάγεται δὲ καὶ λιγνὺς ἐκ τοῦ βουτύρου τοῦτον τὸν τρόπον. εἰς λύχνον καινὸν ἐγχέας τὸ βούτυρον ἅψον. καὶ πωμάσας ἀγγείῳ κεραμέῳ σωληνοειδεῖ στενῷ κατὰ τὰ ἄνωθεν, τρήματα δὲ ἐκ τῶν ὑπὸ πόδας ἔχοντι ὥσπερ οἱ κλίβανοι, ἔα καίεσθαι. ὅταν δὲ ἀναλωθῇ τὸ πρῶτον βούτυρον, ἄλλο ἐπίχει. καὶ ποίει τὸ αὐτὸ ἕως ἂν ὅσον πλῆθος βούλει αἰθαλώσῃς. εἶτα ἀπόσυρον πτερῷ καὶ χρῶ. Δύναμιν δὲ ἔχει εἰς τὰ ὀφθαλμικὰ ξηραίνειν καὶ ἀποστύφειν, ἐφίστησι δὲ τὰ ῥεύματα. καὶ τὰ ἕλκη ἀπουλοῖ ταχέως.

Περὶ Ἐρίων. Κεφ. σό.

Ἔρια οἰσυπηρὰ ἄριστα τὰ ἁπαλά. καὶ τὰ ἀπὸ τοῦ τραχήλου καὶ τῶν μηρῶν. ἁρμόζοντα ἐν ἀρχῇ πρὸς τραύματα, θλάσματα. ἀποσύρματα. πελιώματα, ὀστῶν κατάγματα βρεχόμενα ὄξει καὶ ἐλαίῳ ἢ οἴνῳ. δεκτικὰ γάρ ἐστι τῶν ἐμβρεγμάτων καὶ μαλακτικὰ διὰ τὸν οἴσυπον. ποιεῖ καὶ πρὸς κεφαλαλγίαν καὶ στομάχου πόνους καὶ παντὸς ἄλλου τόπου, σὺν ὄξει καὶ ῥοδίνῳ ἐπιτιθέμενα.

### Περὶ ἐρίων κεκαυμένων. Κεφ. σοα'.

Τὰ δὲ κεκαυμένα ἔρια, δύναμιν ἔχει ἐσχαρωτικήν. ὑπερσαρκωμάτων σταλτικήν. ἀπουλωτικὴν ἑλκῶν. καίεται δὲ καὶ καθαρὰ διαξανθέντα ἐν ὠμῇ χύτρᾳ ὥσπερ τὰ λοιπά. τὸν δ' αὐτὸν τρόπον καὶ κροκύδες καίονται θαλασσίας πορφύρας. τινὲς δὲ σὺν τῷ ῥύπῳ διαξάναντες τὰ ἔρια καὶ μέλιτι δεύσαντες, καίουσιν ὡσαύτως. ἄλλοι δὲ διαθέντες ὀβελίσκους ἐπὶ πλατυστόμου κεραμέου ἀγγείου διεστῶτας ἀπ' ἀλλήλων καὶ ἐπιτιθέντες σχίδακας δᾳδίων ἰσχνάς, καὶ ἐπάνω θέντες τὰ ἔρια διεξασμένα καὶ βεβρεγμένα ἐλαίῳ οὕτως ὥστε μὴ ἀποστάζειν, καὶ πάλιν σχίδακας καὶ ἔρια ἐναλλὰξ ἐπιτιθέντες, ἐκ τῶν δᾳδίων κούφως ὑφάπτουσι. καὶ ἔπειτα δὲ αἴρουσι. καὶ εἴ τι λίπος ἢ πίσσα ἐκ τῶν δᾳδίων ἀπορρέει, συναναιροῦνται καὶ ἀποτίθενται. πλύνεται δὲ εἰς τὰ ὀφθαλμικά. ἐν κεραμέῳ κρατῆρι ὕδατος ἐπιχεομένου. καὶ καταρασσομένου εὐτόνως ταῖς χερσί. καὶ μετὰ τὸ ἀποκαταστῆναι ἀποχεομένου τοῦ ὑγροῦ, καὶ ἄλλου ἐπιχεομένου καὶ πάλιν ἀναταρασσομένου. καὶ τοῦτο γίνεται ἄχρις ἂν προσαγόμενον τῇ γλώττῃ μὴ δάκνῃ. ποσῶς δὲ στύφῃ.

### Περὶ οἰσύπου. Κεφ. σοβ'.

Οἴσυπος δὲ λέγεται τὸ ἐκ τῶν οἰσυπηρῶν ἐρίων λίπος. ὃ κατασκευάσεις οὕτως. λαβὼν ἔρια μαλακὰ οἰσυπηρὰ ἔκπλυνον. ἐστρουθισμένα θερμῷ ὕδατι. ἅμα ἐκθλίβων πᾶσαν τὴν ῥυπαρίαν, ἣν βαλὼν εἰς κρατῆρα πλατύστομον καὶ ἐπιχέας ὕδωρ ἀνάχει. ῥυπτῆρι ῥαγδαίῳ ἕως ἂν ἀφρίσῃ. ἢ ξύλῳ ἀνατάρασσε εὐτόνως, μέχρις ἂν ὁ πολὺς ἀφρὸς καὶ ῥυπαρὸς συλλεγῇ. εἶτα κατάῤῥαινε θαλάσσῃ. καὶ ὅτε κατασταίη τὸ ἐπινηχόμενον λίπος, ἀναλάμβανε εἰς ἕτερον κεραμεοῦν ἀγγεῖον. ἐπιχέας τε ὕδωρ εἰς τὸν κρατῆρα, πάλιν τάρασσε καὶ κατάῤῥαινε τῇ θαλάσσῃ τὸν ἀφρόν. καὶ ἀναλάμβανε. καὶ τοῦτο ποίει ἄχρις ἂν μηκέτι ἀφρὸς ἐφίστηται δαπανηθέντος τοῦ λίπους. τὸν μέντοι ἀνῃρημένον οἴσυπον τῇ χειρὶ μαλάξας, παραχρῆμα ἀναίρου εἴ τινα ἔχει ἀκαθαρσίαν. στραγγίζων τὸ πρῶτον ὕδωρ καὶ ἄλλο ἐπιχέων. καὶ κινῶν τῇ χειρί.

ἄχρις ἂν προσαγόμενος τῇ γλώττῃ μὴ δάκνῃ, πόσως δὲ στύφῃ· λιπαρὸς καὶ καθαρὸς καὶ λευκὸς φανῇ. οὕτω δὴ ἀποτίθεσο εἰς ἀγγεῖον κεραμεοῦν. ἐν ἡλίῳ δὲ θερμῷ γινέσθω πάντα. ἔνιοι δὲ διηθήσαντες τὸ λίπος, πλύνουσιν ἐν ὕδατι ψυχρῷ ταῖς χερσὶν ἀνατρίβοντες, ὡς τὴν κηρωτὴν αἱ γυναῖκες. γίνεται δὲ ὁ τοιοῦτος λευκότερος. οἱ δὲ πλύναντες τὰ ἔρια καὶ ἐκθλίψαντες τὸν ῥύπον, ἕψουσι μεθ' ὕδατος ἐν λέβητι πυρὶ κούφῳ. καὶ τὸ ἐφιστάμενον λίπος ἀφαιροῦντες, πλύνουσιν ὕδατι ὡς προείρηται. καὶ διυλίσαντες εἰς λοπάδιον κεραμεοῦν ἔχον ὕδωρ θερμὸν, λινῷ τε ῥάκει περιπωμάσαντες, τιθέασιν ἐν ἡλίῳ. μέχρις ἂν αὐτάρκως παχὺς καὶ λευκὸς γένηται. ἔνιοι δὲ διὰ δύο ἡμερῶν ἀποχέοντες τὸ πρῶτον ὕδωρ, ἄλλο ἐπιχέουσιν. ἔστι δὲ βελτίων ὁ ἀστρούθιστος καὶ λεῖος. ὄζων ἐρίων οἰσυπηρῶν. ἀνατριβόμενός τε μεθ' ὕδατος ψυχροῦ ἐν μύακι καὶ λευκαινόμενος. καὶ οὐδὲν ἔχων ἐν ἑαυτῷ σκληρὸν ἢ συνεστηκός. ὥσπερ ὁ δολιζόμενος κηρωτῇ ἢ στέατι.

Δύναμιν δὲ ἔχει θερμαντικὴν· πληρωτικὴν ἑλκῶν. μαλακτικὴν μάλιστα τῶν περὶ δακτύλιον καὶ ὑστέραν σὺν μελιλώτῳ καὶ βουτύρῳ. καὶ ἔμβρυα καὶ ἔμμηνα ἐν ἐρίῳ προστιθέμενος ἄγει, πρός τε τὰ ἐν ὠσὶ καὶ ἐν αἰδοίῳ σὺν χηνείῳ στέατι. ποιεῖ δὲ καὶ εἰς τοὺς βεβρωμένους κανθούς. καὶ ψωρώδεις καὶ βλέφαρα τετυλωμένα καὶ τριχορροοῦντα. καίεται δὲ ἐπ' ὀστράκου καινοῦ μέχρις ἂν τεφρωθὲν ἀποβάλῃ τὸ λίπος. συνάγεται δὲ καὶ λιγνὺς ἐξ αὐτοῦ ὡς ὑπεδείξαμεν ἁρμόζουσα πρὸς τὰ ὀφθαλμικά.

ΠΕΡῚ ΠΙΤΎΑΣ ΛΑΓΩΟΥ͂. ΚΕΦ. σογ´.

Πιτύα λαγωοῦ ἁρμόζει σὺν οἴνῳ ὁλκὴ τριωβόλου πρὸς θηριοδήκτους καὶ κοιλιακοὺς καὶ δυσεντερικούς. καὶ πρὸς ῥοϊκὰς γυναῖκας. πρός τε αἵματος θρόμβωσιν καὶ ἀναγωγὰς τὰς ἐκ θώρακος. προστιθεμένη τε μετὰ κάθαρσιν τῇ μήτρᾳ μετὰ βουτύρου σύλληψιν ποιεῖ. ποθεῖσα δὲ φθείρει ἔμβρυα. μετὰ δὲ τὴν ἄφεδρον ἀτόκιός ἐστιν. ἡ δὲ τοῦ ἵππου ὑπ' ἐνίων ἱππάκη καλουμένη, ἰδίως ἁρμόζει ἐπὶ κοιλιακῶν καὶ δυσεντερικῶν. ἐρίφου δὲ καὶ ἀρνὸς καὶ νεβροῦ καὶ δορκάδος καὶ πλα-

τυκόβρωτος καὶ δόρκου καὶ ἐλάφου καὶ μόσχου καὶ βουβάλου, ὁμοίαν ἔχουσι δύναμιν. ἁρμόζουσι πρὸς ἀκονίτου πόσιν σὺν οἴνῳ λαμβανόμεναι. καὶ πρὸς γάλακτος θρόμβωσιν μετ' ὄξους. ἡ δὲ τοῦ νεβροῦ ἰδίως μετὰ τὰς καθάρσεις προστεθεῖσα αὐτῇ τρεῖς ἡμέρας, ἀτόκιόν ἐστιν. ἡ δὲ τῆς φώκης ἔοικε κατὰ τὴν δύναμιν καστορίῳ. δοκεῖ δὲ ἁρμόζειν μάλιστα ἐπιληπτικοῖς καὶ ὑστερικαῖς πνιξὶ πινομένη. δοκιμάζεται δὲ εἰ ἔστι φώκης, τὸν τρόπον τοῦτον. λαβὼν πυτίαν ζώου τινός, μάλιστα δὲ ἀρνός, καὶ ἐπιχέας ὕδωρ, ἔασον βραχὺν χρόνον. καὶ μετὰ ταῦτα ἐπίχει τὸ ἀπόβρεγμα κατὰ τῆς πυτίας τῆς φώκης. ἡ γὰρ ἀληθινὴ ὀξυδοῦται ταχέως. ἡ δὲ μὴ τοιαύτη, διαμένει ὁμοία. λαμβάνεται δὲ ἐκ τῆς φώκης πυτία μήπω δυναμένων συνήχεσθαι τῶν σκύμνων. κοινῶς δὲ πᾶσα πυτία πήσσει μὲν τὰ διαλελυμένα. λύει δὲ τὰ συνεστῶτα.

## Περὶ στέατος. Κεφ. σοδ΄.

Στέαρ πρὸς μὲν τὰ περὶ μήτραν ἁρμόζει τὸ νεαρόν. χήνειον ἢ ὀρνίθειον. καὶ δίχα ἁλῶν τεταριχευμένον. πολέμιον δὲ ὑστέρα τὸ ἡλισμένον καὶ τὸ τῷ χρόνῳ μεταβεβληκὸς εἰς δριμύτητα. πρόσφατον δὲ λαβών τι τούτων καὶ ἐξυμενίσας, ἔμβαλε εἰς λοπάδα καινὴν κεραμέαν. δὶς τοσοῦτον χωροῦσαν ἢ ὅσον ἐστὶ τὸ μέλλον θεραπεύεσθαι. εἶτα θεὶς εἰς ὀξύτατον ἥλιον τὸ ἀγγεῖον κεκαλυμμένον ἐπιμελῶς, τὸ ἀποτηκόμενον ἀπήθει εἰς ἕτερον ἀγγεῖον ὀστράκινον, ἕως ἂν πᾶν δαπανήσῃ. τοῦτο δὲ εἰς κατάψυχρον ἀποτίθεσο τόπον καὶ χρῶ. τινὲς δὲ ἀντὶ ἡλίου ὑπὲρ ὕδατος θερμοῦ ἐπερείδονται τὴν λοπάδα. ἢ αὐτῇ λεπτῆς καὶ μαλακῆς ἀνθρακιᾶς. ἔστι δὲ καὶ ἄλλος τρόπος θεραπείας τοιοῦτος. μετὰ τὸ ἐξυμενισθῆναι τὸ στέαρ λεαίνεται. καὶ εἰς λοπάδα ἐμβληθὲν τήκεται. ἁλὸς ὀλίγου καὶ λεπτοῦ προσεμπλασθέντος. εἶτα διὰ ῥάκους λινοῦ διυλισθὲν ἀποτίθεται. ἁρμόζει δὲ τὸ τοιοῦτον εἰς τὰ ἄκοπα.

## Περὶ στέατος ὑείου καὶ ἀρνείου. Κεφ. σοε΄.

Ὕειον δὲ καὶ ἄρνειον θεραπεύεται οὕτως. λαβὼν τὸ πρόσφατον καὶ καταπίμελον, οἷόν ἐστι τὸ νεφριαῖον, εἰς ὕδωρ διαψε

λὲς ὄμβριον ὡς ὅτι ψυχρότατον ἐξυμενίσον, καὶ τρίβε ταῖς χερσὶν ἐπιμελῶς ἀνατρίβων αὐτὸ καὶ οἱονεὶ ἀναψύχων. εἶτα ἑτέρῳ ὕδατι πολλάκις ἀποκλύσας, δὸς εἰς χύτραν κεραμέαν τὸ διπλάσιον χωροῦσαν. ἐπίχεε δὲ ὕδωρ ὡς ὑπερέχειν τοῦ στέατος, θὲς ἐπὶ κούφης ἀνθρακιᾶς καὶ κίνει σπάθῃ. ὅταν δὲ τακῇ διηθήσας αὐτὸ δι᾽ ἠθμοῦ εἰς ὕδωρ καὶ ἐάσας ψυγῆναι. πάλιν ἐστραγγισμένον ἐπιμελῶς, ἀπόδος εἰς τὴν χύτραν προαποπεπλυμένην, ἐπιχέας δὲ ὕδωρ τῆξον πράως. καὶ καθελὼν, μικρόν τε ἐάσας τὴν τρύγα ὑποστῆναι, κατάχεε εἰς θυΐαν νενοτισμένην σπόγγῳ. ὅταν δὲ παγῇ, ἀνελόμενος καὶ τὴν ἐν τῷ πυθμένι πρὸς ἀκαθαρσίαν ἀφελὼν, τῆξον ἐκ τρίτου χωρὶς ὕδατος. καὶ κατεράσας εἰς θυΐαν, καθαρίσας τε ἔμβαλε εἰς κεραμεοῦν ἀγγεῖον καὶ πωμάσας ἀπόθου, εἰς κατάψυχρον τόπον.

Περὶ στέατος τραγείου καὶ προβατείου καὶ ἐλαφείου. Κεφ. σοςʹ.

Τράγειον δὲ καὶ προβάτειον, ἔτι δὲ καὶ ἐλάφειον, θεραπευτέον οὕτω. λαβὼν ὃ δὴ προείρηται στέαρ οἱουτινοσοῦν αὐτῶν καὶ πλύνας, ἐξυμενίσας τε ὡς προείρηται ἐπὶ τοῦ ὑείου, δὸς εἰς θυΐαν μαλάττειν. καὶ τρίβε κατ᾽ ὀλίγον ὕδωρ ἐπιχέων. ἄχρις ἂν μήτε αἱμάλωψ ἐκκρίνηται, μήτε λίπος ἐπιπλέῃ. λαμπρόν τε γένηται. λοιπὸν ἐμβαλὼν αὐτὸ εἰς κεραμέαν χύτραν, καὶ προσεπιδοὺς ὕδωρ ὥς τε ὑπερέχειν, θὲς ἐπὶ κούφης ἀνθρακιᾶς καὶ κίνει. ὅταν δὲ τακῇ ἅπαν, κατεράσας αὐτὸ εἰς ὕδωρ καὶ ψύξας, πλύνας τε τὴν χύτραν ἐκ δευτέρου τῆκε. καὶ τὰ αὐτὰ τοῖς προειρημένοις ποίει. τὸ δὲ τρίτον χωρὶς ὕδατος τῆξας, εἰς νενοτισμένην θυΐαν ἀπηθήσον. καὶ ψυγὲν ἀποτίθεσο ὡς ἐλέγετο ἐπὶ τοῦ ὑείου.

Περὶ στέατος βοείου. Κεφ. σοζʹ.

Καὶ τοῦ βοείου δὲ στέατος ἐξυμενιστέον τὸ νεφριαῖον καὶ θαλάττῃ πελαγίᾳ πλυτέον, εἶτα εἰς ὅλμον ἐμβλητέον καὶ κοπτέον ἐπιμελῶς, ἐπιρραινομένης τῆς θαλάττης. ὅταν δὲ διαλυθῇ ἅπαν, ἐμβλητέον αὐτὸ εἰς χύτραν κεραμέαν. καὶ θάλασσαν ἐπιχυτέον ὅσον ὑπερέχειν μὴ ἧττον σπιθαμῆς. ἑψητέον τε

ἄχρις ἂν τὴν ἰδίαν ὀσμὴν ἀποβάλῃ. εἶτα πρὸς μίαν μνᾶν ἀττικὴν τοῦ στέατος, κηροῦ τυρρηνικοῦ ὁλκὰς τέτταρας ἐμβλητέον καὶ διηθητέον. ἀφαιρετέον δὲ τὴν προσκαθημένην ἐν τῷ πυθμένι ἀκαθαρσίαν. καὶ εἰς λοπάδα καινὴν ἀποθετέον. εἶτα εἰς ἥλιον καθ' ἡμέραν κομιστέον ὠδὶ ἐσκεπασμένον, ὅπως ἀπολευκανθῇ, καὶ δυσωδίαν ἀποβάλῃ.

Περὶ στέατος ταυρείου παρδαλείου καὶ λεοντείου. Κεφ. σοη΄.

Τὸ δὲ ταύρειον θεραπευτέον οὕτω. λαβὼν καὶ τοῦδε τὸ πρόσφατον καὶ νεφριαῖον ἔκπλυνον ποταμίῳ ῥεύματι. ἐξυμενίσας τε δὶς εἰς χύτραν κεραμέαν καινὴν, ἅλας ὀλίγον προσεμπάσας. καὶ τῆκε. εἶτα εἰς ὕδωρ διαυγὲς ἀπηθήσας ὅταν ἀρχὴν λαμβάνῃ πήξεως, ταῖς χερσὶ πάλιν ἐκτρίβων σφοδρῶς πλῦνον. τοῦ μὲν ἀποχεομένου ὕδατος, τοῦ δὲ ἐπιχεομένου. ἄχρις ἂν πλυθῇ καλῶς. καὶ πάλιν εἰς χύτραν ἐμβάλλων ἕψε μετ' οἴνου ἴσου εὐώδους. ὡς δ' ἂν ζέσῃ δὶς, ἄρας ἀπὸ τοῦ πυρὸς τὴν χύτραν, ἔασον νυκτερεῦσαι τὸ στέαρ ἐνθάδε. τῇ δὲ ἐχομένῃ ἐάν τι τῆς δυσωδίας ὑπολίπηται, ἀνελόμενος τὸ προειρημένον εἰς ἑτέραν χύτραν καινὴν, προσεπίχεε οἶνον εὐώδη. καὶ τὰ αὐτὰ τοῖς προειρημένοις ποίει. ἕως ἂν ἅπασαν τὴν δυσωδίαν ἀποβάλῃ. τήκεται δὲ καὶ χωρὶς ἁλῶν ἐπ' ἐνίαις διαθέσεσιν ἐν αἷς οὗτοι ἐναντιοῦνται. γίνεται μέντοι τὸ οὕτω σκευασθὲν οὐκ ἄγαν λευκόν. ὡσαύτως δὲ καὶ παρδάλειον σκευαστέον καὶ λεόντειον συάγρειόν τε καὶ καμήλιον καὶ ἵππειον καὶ τὰ ὅμοια.

Πῶς τὸ στέαρ ἀρωματιστέον. Κεφ. σοθ΄.

Ἀρωματιστέον δὲ στέαρ μόσχειον καὶ ταύρειον. ἔτι δὲ ἐλάφειον. καὶ μυελὸν τοῦ δὲ τοῦ ζώου τὸν τρόπον τοῦτον. ἐξυμενίσας τὸ μέλλον εὐωδιάζεσθαι καὶ πλύνας ὡς προείπομεν καὶ ζέσας οἴνῳ ἀθαλάσσῳ τε καὶ εὐώδει, εἶτα ἀνελόμενος καὶ ἐν νυκτερεῦσαι ἀφεὶς, ἕτερον οἶνον ἐκ τοῦ αὐτοῦ γένους ἐπιχέων, τοσοῦτον τῷ πλήθει ὅσος ἦν ὁ ἔμπροσθεν δοθεὶς, καὶ τήξας ἀφυλίσας τε ἐπιμελῶς πρὸς κοτύλας ἐννέα τοῦ στέατος ἔμβαλε σχίνου ἀραβικῆς ὁλκὰς ζ΄. ἐὰν δὲ εὐωδέστερον ποιῆσαι

ἐθέλης, τοῦ ἄνθους ὁλκὰς μ΄. προσαπόδος δὲ καὶ φοίνικος καὶ
κασσίας καὶ καλάμου τὰς ἴσας ὁλκάς. ἀσπαλάθου τε καὶ
ξυλοβαλσάμου ἀνὰ ὁλκὴν μίαν. μίξον δὲ καὶ κινναμώμου
καὶ καρδαμώμου καὶ νάρδου ἀνὰ οὐγγίαν μίαν. πάντα δὲ
ἔστω ὁλοσχερέστερα κεκομμένα. εἶτα ἐπίχει οἶνον εὐώδη. καὶ
ὑπέρειδε ἐπ᾽ ἀνθράκων πεπωματισμένον τὸ ἀγγεῖον. καὶ σύζε
σον τρίς. ἄρας τε ἀπὸ τοῦ πυρὸς ἔασον ἐν νυκτὸς εὖσαι αὐ
τό. τῇ δὲ ἐχομένῃ ἀπόχεε τὸν οἶνον καὶ ἄλλον ἐπιδοὺς τοῦ αὐ
τοῦ γένους, σύζευξον ὁμοίως ἕως τρίς, καὶ ἄφες. πρωῒ δὲ ἀνε
λόμενος τὸ στέαρ, ἀπόχει τὸν οἶνον. ἐκπλύνας τε τὸ ἀγγεῖον
καὶ καθάρας τὸ πρὸς τῷ πυθμένι καὶ τήξας, διϋλίσας τε
αὐτὸ ἀπόθου καὶ χρῶ. ἀρωματίζεται δὲ καὶ τὸ τεθεραπευ
μένον τὸν αὐτὸν τρόπον. προσυφίεται δὲ τὰ προειρημένα στέα
τα πρὸς τὸ ῥᾳδίως δέξασθαι τὴν τῶν ἀρωμάτων δύναμιν
οὕτω. λαβὼν αὐτῶν ὅ τι ἂν βούλοιο, ζέσον ἅμα οἴνῳ. συγκα
θεὶς μυρσίνης κλάδον. ἕρπυλλόν τε καὶ κύπειρον, ἔτι δὲ ἀσπά
λαθον ὁλοσχερέστερον κοπέντα. τινὲς δὲ ἐν τούτων ἀρκοῦν
ται τῇ χρήσει. ὅταν δὲ εἰς ζίτον ἀναζέσῃ, ἀνελόμενος πράως
καὶ διὰ ὀθόνης ὑλίσας, ἀρωμάτιζε ὡς δεδήλωται. ἔτι δὲ καὶ
οὕτω προσυφίεται στέατα. κόψας ὅ,τι ἂν αὐτῶν ἐθέλης,
πρόσφατον δὲ καὶ ἀμιγὲς αἵματος, τά τε ἄλλα ἔχον ἃ πολ
λάκις εἴρηται, ἔμβαλε εἰς λοπάδα καινήν. ἐπιχέας τε οἶ
νον λευκὸν εὐώδη παλαιόν, ὡς ὑπερέχειν δακτύλους ὀκτώ,
σύζεσον ἐλαφρῷ χρώμενος πυρὶ ἕως τὴν σύμφυτον ὀσμὴν
ἀποβάλῃ καὶ μᾶλλον οἰνίζῃ. εἶτα καθελὼν τὸ ἀγγεῖον καὶ ψύ
ξας, ἀνελοῦ στέατος μνᾶς β΄. καὶ βαλὼν εἰς λοπάδα προ
σεπιδοὺς τε τοῦ αὐτοῦ οἴνου κοτύλας δ΄. καὶ λωτίνου καρ
ποῦ, οὗ τοῖς ξύλοις οἱ αὐλοποιοὶ χρῶνται κεκομμένου, μνᾶς
δ΄. ἕψε πυρὶ κούφῳ διηνεκῶς κινῶν. ὅταν δὲ τὴν στεατώδη ἀ
ποφορὰν ἀποβάλῃ πᾶσαν, διϋλίσας αὐτὸ ψύχε. καὶ λαβὼν
ἀσπαλάθου κεκομμένου μνᾶν μίαν, ἀμαρακίνου δὲ ἄνθους
μνᾶς τέτταρας, οἴνῳ φύρασον παλαιῷ. καὶ ἔασον μίαν
νύκτα πιεῖν. τῇ δὲ ἐχομένῃ εἰς χύτραν κεραμέαν τριχοινιαί
αν καινήν, καθεὶς αὐτὰ καὶ τὸ στέαρ. προσεπιδοὺς δὲ καὶ
χοὸς ἥμισυ οἴνου. καὶ σύζεσον ἅπαντα ὁμοῦ. ὅταν δὲ παύ

των τὴν δύναμιν καὶ τὴν ὀσμὴν ἀπολάβῃ τὸ στέαρ. καθελὼν αὐτὸ καὶ διυλίσας, τῆξον καὶ ἀπόθου. ἐὰν δὲ εὐωδέστερον ποιῆσαι θέλῃς, μίσγε σμύρνης τῆς λιπαρωτάτης ὀλίγας ἢ οἴνῳ διειμένας πολυετεῖ. Τὸ δὲ ὀρνίθειον καὶ χοίρειον στέαρ οὕτως ἂν εὐωδιασθῇ. λαβὼν οἱουτινος αὐτῶν τεθεραπευμένου κοτύλας δ΄. καὶ καθεὶς εἰς ὀστρακίνην χύτραν, πρόσμιξον ὀρυσισκυπέρου καὶ ξυλοβαλσάμου. ἔτι δὲ φοίνικος ἐλάτης καὶ καλάμου ὁλοσχερῶς κεκομμένου ἀνὰ < ιβ΄. ἐπιδούς τε οἴνου λεσβίου παλαιοῦ κύαθον α΄. θὲς ἐπ' ἀνθρακιᾶς. καὶ σύζεσον τρίς. εἶτα ἀνελόμενος ἀπὸ τοῦ πυρὸς τὸ ἀγγεῖον, καὶ ἐάσας ψυγῆναι τὰ ἐν αὐτῷ ἡμέραν μίαν καὶ νύκτα, τῇ ἐχομένῃ τῆξον αὐτά. καὶ διὰ ῥάκους λινοῦ καθαροῦ χύλισον εἰς καθαρὸν ἀγγεῖον. ὅταν δὲ παγῇ ἀνελόμενος κόγχῳ τὸ προειρημένον εἰς κεραμεοῦν ἀγγεῖον βάλε καινόν. καὶ πωμάσας στεγανῶς, ἀπόθου ἐν καταψύχρῳ τόπῳ. χειμῶνος δὲ ταῦτα δραστέον. ἐν γὰρ θέρει οὐ πήγνυται. τινὲς δὲ πρὸς τὴν σύστασιν αὐτῶν καὶ τὴν πῆξιν, βραχὺ κηροῦ τυρρηνικοῦ μίσγουσι. τῷ δ' αὐτῷ τρόπῳ ἀρωματιστέον καὶ τὸ ὕειον. ἀρνειόν τε καὶ τὰ ὅμοια.

Πῶς σαμψυχίζεται τὸ στέαρ. Κεφ. σπ΄.

Σαμψυχίζεται δὲ στέαρ οὕτω. λαβὼν τοῦ καλῶς τεθεραπευμένου ὅσον μνᾶν μίαν, ἔστω δὲ μᾶλλον ταύρειον, καὶ σαμψύχου ὡρίμου τεθλασμένου ἐπιμελῶς μνᾶν μίαν ἥμισυ, μίξον καὶ μαγίδας ἀνάπλασον, ἐπιρραίνων δαψιλέστερον οἶνον. εἶτα ἀποθέμενος αὐτὰς εἰς ἀγγεῖον καὶ σκεπάσας, ἔασον νυκτερεῦσαι. πρωῒ δὲ εἰς κεραμέαν χύτραν ἐμβαλὼν, καὶ ὕδωρ ἐπιχέας, ἕψε κούφως. ὅταν δὲ τὴν ἰδίαν ὀσμὴν ἀποβάλῃ τὸ στέαρ, διυλίσας αὐτὸ καὶ ἐάσας μεῖναι ὅλην τὴν νύκτα πεπωμασμένον καλῶς, τῇ ἐπιούσῃ ἀνελόμενος τὸν τροχίσκον, καὶ προσαποψύξας τὴν ἐν τῷ πυθμένι ῥυπαρίαν, μίξον πάλιν σαμψύχου κεκομμένου ὡς εἴρηται ἄλλην μνᾶν μίαν ἥμισυ. καὶ ὡσαύτως ἀνάπλασε μαγίδας. ποιῶν καὶ τὰ ἄλλα ἃ προείρηται. ἔπειτα πᾶσι δὲ ἑψήσας καὶ διυλίσας, ἀφελών τε, εἴ τις ἐν τῷ πυθμένι ῥυπαρία

ὑπάρχει, ἀπόθου ἐν καταψύχρῳ τόπῳ.

Περὶ στέατος χηνείου καὶ ὀρνιθείου. Κεφ. σπα΄.

Εἰ δὲ ἀθεράπευτον στέαρ ἢ χήνειον ἢ ὀρνίθειον ἢ μόσχειον θέλη-
τις ἄσηπτον διατηρῆσαι, οὕτω ποιητέον αὐτό. λαβὼν πρό-
σφατον ὁποῖον ἂν βούλοιο, ἔκπλυνον ἐπιμελῶς. καὶ διαψύ-
ξας ἐπὶ κοσκίνου ἐν σκιᾷ μετὰ τὸ ξηρανθῆναι, ἔμβαλε εἰς
ὀθόνην καθαράν. καὶ ταῖς χερσὶν ἔκπιεσον βιαίως. εἶτα λί-
νῳ διείρας κρέμασον ἐν τόπῳ σκιερῷ. μετὰ δὲ ἡμέρας πολ-
λὰς καινῷ ἀποδήσας χάρτῃ, ἀποτίθεσο ἐν καταψύχρῳ τό-
πῳ. ἄσηπτα διαμένει καὶ ἐν μέλιτι ἀποτεθέντα.

Στεάτων δύναμις. Κεφ. σπβ΄.

Δύναμιν δὲ ἔχει τὰ στέατα πάντα θερμαντικήν. μαλακτικήν.
ἀραιωτικήν. τὸ μέν τοι ταύρειον στύφει ποσῶς. καὶ τὸ βό-
ειον. καὶ τὸ μόσχειον. καὶ τὸ λεόντειον δὲ ἀναλογεῖ τούτοις.
φασὶ δὲ αὐτὸ καὶ ἀντιφάρμακον τοῖς ἐπιβουλεύουσιν
εἶναι. τὸ δὲ ἐλεφάντειον καὶ ἐλάφειον, ἑρπετὰ διώκει κα-
ταχριόμενον. τὸ δὲ αἴγιον στυπτικώτερον. ὅθεν δυσεντερικοῖς
δίδοται σὺν ἀλφίτῳ καὶ ῥοῒ καὶ τυρῷ καθεψόμενον. ἐγ-
κλύζεταί τε μετὰ πτισάνης χυλοῦ. εὐθετεῖ δὲ καὶ φθισι-
κοῖς ἐν ῥοφήμασιν ὁ ἐξ αὐτῶν ζωμός. καὶ τοῖς κανθαρίδας
πεπωκόσιν ὠφελίμως δίδοται. τὸ δὲ τράγειον διαλυτικώ-
τατον ὃν βοηθεῖ ποδαγρικοῖς, φυραθὲν σὺν αἰγὸς σπυρά-
θοις καὶ κρόκῳ καὶ ἐπιτιθέμενον. καὶ τὸ προβάτειον δὲ ἀ-
ναλογεῖ τούτῳ. ὕειον δὲ ἀναλογεῖ τοῖς περὶ ὑστέραν. καὶ ἕ-
δραν. ὃ καὶ πυρικαύτοις ἁρμόζει. τὸ δὲ ταριχηρὸν ὕειον
ὡς ὅτι παλαιότατον, θερμαίνει καὶ μαλάσσει, οἴνῳ δὲ πλυν-
θὲν ἁρμόζει πλευριτικοῖς. σὺν τέφρᾳ ἢ ἀσβέστῳ ἀναλη-
φθέν. καὶ πρὸς οἰδήματα καὶ φλεγμονὰς καὶ συειπας
τὸ δὲ ὄνειόν φασιν οὐλὰς ὁμόχρους ποιεῖν. χήνειον δὲ καὶ ὀρ-
νίθειον πρὸς τὰ γυναικεῖα. καὶ ἐπὶ ῥήξεις χειλῶν καὶ προ-
σώπων ἐπιμέλειαν καὶ ὠταλγίας ἁρμόζει. τὸ δὲ ἄρκειον
δοκεῖ τριχοφυὲς εἶναι ἀλωπεκιῶν. καὶ χυμεθλιῶσιν ἁρμό-
ζει. τὸ δὲ τῆς ἀλώπεκος στέαρ πρὸς ὠταλγίας. τὸ δὲ τῶν πο

ταμίων ἰχθύων ὀξυδερκὲς ἐγχριόμενον. ἀρτᾶται καὶ ἐν ἡλίῳ, καὶ μέλιτι μιγέν. τὸ δὲ τῆς ἐχίδνης πρὸς ἀμβλυωπίας. ἔτι δὲ ὑποχύσεις ἐνεργεῖ, μιγὲν κεδρίᾳ καὶ μέλιτι ἀττικῷ. καὶ ἐλαίῳ παλαιῷ ἴσον. ἐκτιλθείσας δὲ τὰς ἐν μασχάλῃ τρίχας, πρὸς τὰς ῥίζας καταχρισθὲν καθ᾽ ἑαυτὸ πρόσφατον, ἐξιτήλους ποιεῖ.

## Περὶ μυελῶν. Κεφ. σπγ΄.

Μυελῶν δὲ κράτιστός ἐστιν ἐλάφειος. εἶτα μόσχειος καὶ μετὰ τοῦτον ταύρειος. εἶτα αἴγειος καὶ προβάτειος. συνίσταται δὲ θέρους τοῦ συνεγγίζοντος τῷ φθινοπώρῳ. ἐν γὰρ τοῖς ἄλλοις καιροῖς αἱμαλώδεις καὶ οἱονεὶ σὰρξ εὔθρυπτος ἐν τοῖς ὀστέοις εὑρίσκεται. ἔστι δὲ εὔγνωστος ἐὰν μή τις αὐτὸν ἐξωστεΐσας εἴδῃ, καὶ ἀπόθηται. ἅπαντες δὲ εἰσὶ μαλακτικοί. ἀραιωτικοί. θεραπευτικοί. πληρωτικοί ἑλκῶν. ὁ δὲ ἐλάφειος προσχρισθεὶς καὶ θηρία διώκει. θεραπεύεται ὁ πρόσφατος μαλαχθεὶς ὡς στέαρ παραχεόμενον ὕδατι ἐκ λεγομένων τῶν ὀστέων. εἶτα δι᾽ ὀθόνης ὑλλισθεὶς καὶ ὡσαύτως πλυθεὶς, ἄχρις ἂν τὸ ὕδωρ καθαρὸν γένηται. ἔπειτα ἐν διπλώματι τακεὶς, ἐπαναληφθήσης πτερῷ τῆς ἐπινηχομένης ῥυπαρίας, καὶ διυλλισθεὶς εἰς θυίαν μετὰ τὸ παγῆναι, ἀποτίθεται ἐν ὀστρακίνῳ ἀγγείῳ καινῷ. ἀπεξυσμένης ἐπιμελῶς τῆς ὑποστάθμης. εἰ δ᾽ ἀθεράπευτον ἀποτίθεσθαι βούλει. ποίει πάντα ὡς ἐπὶ τοῦ ὀρνιθείου καὶ χηνίου. στέατος ὑπεδείξαμεν.

## Περὶ χολῆς πάσης. Κεφ. σπδ΄.

Χολὴ πᾶσα ἀποτίθεται τούτῳ τῷ τρόπῳ. λαβὼν τὴν πρόσφατον καὶ ἀποδήσας τὸ στόμα αὐτῆς λίνῳ, κάθεσο εἰς ὕδωρ ζέον. διαλιπὼν χρόνον τοσοῦτον, ὅσον ἄν τις τριῶν σταδίων δρόμον ἀνύσειεν. εἶτα ἐξελὼν, ξήρανον ἐν τόπῳ σκιερῷ καὶ ἀνοτίστῳ. τὰς δὲ εἰς τὰ ὀφθαλμικὰ λίνῳ ἀποδήσας, βάλε εἰς βυκίον ὑελοῦν ἔχον μέλι. καὶ τὴν ἀρχὴν τοῦ λίνου περιδήσας τῷ στόματι τοῦ βυκίου, πωμάσας ἀπόθου. εἰσὶ δὲ πᾶσαι αἱ χολαὶ δριμεῖαι. θερμαντικαὶ τὸ μᾶλλόν τε καὶ ἧττον κατὰ δύναμιν ἀλλήλων διαφέρουσαι. δοκοῦσι δὲ ἐπιτετάσθαι.

τετάσθαι ἤ, τε τοῦ θαλασσίου σκορπίου καὶ ἰχθύος τοῦ λεγο-
μένου καλλιονίου. χελώνης τε θαλασσίας καὶ ὑαίνης. ἔτι δὲ
πέρδικος καὶ ἀετοῦ. καὶ ἀλεκτορίδος λευκῆς. καὶ αἰγὸς ἀγρίας. ἰδί-
ως ἁρμόζουσα πρὸς ἀρχομένας ὑποχύσεις καὶ ἀχλῦς. ἀργέ-
μά τε καὶ τραχέα βλέφαρα. τῆς δὲ τοῦ προβάτου καὶ τοῦ
τράγου καὶ τοῦ συὸς, ἔτι δὲ ἄρκτου, ἐμπρακτικωτάτη δέ ἐστιν
ἡ ταυρεία. πᾶσαι δὲ προθυμίαν πρὸς διαχώρησιν ἐργάζον-
ται. καὶ μᾶλλον παιδίων. εἴ τις κροκίδα βάψας προσθείη
τῷ δακτύλῳ. ἡ δὲ ταυρεία ἰδίως ἐπὶ συναγχικῶν διαχρίε-
ται σὺν μέλιτι. ἀποθεραπεύει τε τὰ ἐν δακτύλῳ μέχρις οὐ-
λῆς. πυρρόουσι τά τε ὦτα. καὶ τὰς ἐπ' αὐτῶν ῥήξεις σὺν γά-
λακτι αἰγείῳ ἢ γυναικείῳ ἐνσταζομένη. πρὸς δὲ συριγμοὺς
σὺν πράσου χυλῷ. εἴς τε τὰς τραυματικὰς ἐμπλάστρους μι-
γνυμένη, καὶ θηριακὰς περιχρίσους. καὶ πρὸς φαγεδαι-
νικὰ ἕλκη καὶ ὀδύνας αἰδοίου. καὶ ὄσχεον σὺν μέλιτι πρὸς
δὲ λέπρας καὶ πίτυρα, σὺν νίτρῳ ἢ γῇ κιμωλίᾳ σμῆγμα
κράτιστον καὶ ἡ προβατεία δὲ πρὸς αὐτὰ καὶ ἡ ἀρκεία, ἐνδεέ-
στεραι δὲ τυγχάνουσιν. ἐκλειχομένη δὲ ἡ ἀρκεία ἐπιληπτικοὺς
ὠφελεῖ. ἡ δὲ τῆς χελώνης πρὸς συνάγχας καὶ τὰς ἐπὶ τῶν
παίδων νομὰς ἐν στόματι. καὶ ἐπιληπτικοῖς ἐντεθεῖσα ταῖς
ῥισίν. αἰγὸς δὲ ἀγρίας ἰδίως νυκτάλωπας θεραπεύει ἐγχρι-
σθεῖσα. καὶ ἡ τοῦ τράγου δὲ τὸ αὐτὸ ποιεῖ θύμιά τε αἴρει. καὶ
τὰς ἐπὶ τῶν ἐλεφαντιώντων ὑποδροχὰς καταχριομένη,
καταστέλλει. ἡ δὲ ὑεία πρὸς τὰ ἐν ὠσὶν ἕλκη καὶ πρὸς τὰ
λοιπὰ πάντα ὠφελίμως παραλαμβάνεται.

## Περὶ αἵματος. Κεφ. σπε΄.

Αἷμα χηνὸς καὶ ἐρίφου καὶ νήσσης, ἀντιδότοις χρησίμως μί-
γνυται. φάσσης δὲ καὶ τρυγόνος καὶ περιστερᾶς καὶ πέρδι-
κος, εἰς προσφάτους ὀφθαλμῶν τρώσεις καὶ ὑποδρομὰς
αἵματος καὶ νυκτάλωπας ἐγχρίεται. ἰδίως δὲ τὸ τῆς πε-
ριστερᾶς, αἱμοῤῥαγίας τὰς ἐκ μηνίγγων ἐπέχει. τὸ δὲ τοῦ τρά-
γου καὶ αἰγὸς καὶ λαγωοῦ, ὀπτὸν ἀπὸ τηγάνου λαμβανόμε-
νον, δυσεντερίας καὶ κοιλιακὰς ῥύσεις ἐφίστησι. μετ' οἴνου δὲ

ποθὲν πρὸς τοξικὰ ποιεῖ. τὸ δὲ τῶν λαγωῶν θερμὸν καταχριόμενον, ἐφηλίδας καὶ φακοὺς θεραπεύει. καὶ τὸ αἷμα τῶν κυνῶν δὲ ποθὲν, λυσσοδήκτους καὶ τοξικὸν πεπωκόσιν ἁρμόζει. τὸ δὲ τῆς χερσαίας χελώνης ποθὲν, ἐπιληπτικοῖς ἱστορεῖται ἁρμόζειν. θαλασσίας δὲ χελώνης σὺν οἴνῳ καὶ πιτύα λαγωοῦ καὶ κυμίνῳ πινόμενον, ἁρμόζει πρὸς θηριοδήγματα καὶ φρύνου πόσιν. ταύρου δὲ αἷμα διαφορεῖ καὶ μαλάσσει σκληρίας καταπλασσόμενον μετὰ ἀλφίτων. τὸ δὲ τῶν ὀχευτῶν ἵππων σηπταῖς μίγνυται. τὸ δὲ τοῦ χαμαιλέοντος, τρίχας ψιλοῦν ἐπὶ τῶν βλεφάρων πεπίστευται. καὶ τὸ τῶν χλωρῶν βατράχων ὁμοίως. γυναικὸς δὲ τὸ ἐπιμήνιον περιαλειφόμενον καὶ ὑπερβαινόμενον, ἀσυλλήπτους δοκεῖ ποιεῖν γυναῖκας. ποδαγρικὰς δὲ ὀδύνας καὶ ἐρυσιπέλατα κουφίζει καταχριόμενον.

## Περὶ ἀποπάτου. Κεφ. σπϛ'.

Ἀπόπατος βοὸς νομάδος πρόσφατος ἐπιτεθεὶς, φλεγμονὰς τὰς ἐκ τραυμάτων πραΰνει. ἐνειλεῖται δὲ φύλλοις καὶ θερμαίνεται ἐπὶ θερμοσποδιᾶς. καὶ οὕτως ἐπιτίθεται. ἰσχιάδος ἐστὶ πυρία πραϋντικὴ ἡ τοιαύτη ἐπίθεσις. σὺν ὄξει δὲ καταπλασθεῖσα, σκληρίας καὶ χοιράδας διαλύει καὶ φύγεθλα. ἰδίως δὲ ἄρρενος βοὸς βόλβιτον ὑστέραν προπεπτωκυῖαν ὑποθυμιώμενον, ἀποκαθίστησι. διώκει δὲ καὶ κώνωπας θυμιαθέν. αἰγῶν δὲ σπύραθοι μάλιστα ὀρεινῶν πινόμεναι σὺν οἴνῳ, ἴκτερον ἀποκαθαίρουσι. σὺν ἀρώματι δὲ ποθεῖσαι ἔμμηνα κινοῦσι. καὶ ἔμβρυα ἐκβάλλουσι. ξηραὶ δὲ λεῖαι σὺν λιβανωτῷ προστεθεῖσαι ἐν ἐρίῳ, γυναικεῖον ῥοῦν ἐπέχουσι. καὶ τὰς ἄλλας αἱμορραγίας σὺν ὄξει στέλλουσι. καεῖσαι δὲ ἀλωπεκίας θεραπεύουσι, μετ᾽ ὄξους ἢ ὀξυμέλιτος καταχριόμεναι. σὺν ὀξυγγίῳ δὲ καταπλασσόμεναι, ποδαγρικοὺς ὠφελοῦσιν. ἑψηθεῖσαι δὲ μετ᾽ ὄξους ἢ οἴνου, ἐπιτίθενται πρὸς ἑρπετῶν δήγματα καὶ ἕρπητας, καὶ ἐρυσιπέλατα, καὶ παρωτίδας. καὶ ἐπὶ ἰσχιαδικῶν δὲ ἡ δι᾽ αὐτῶν καῦσις ὠφελίμως παραλαμβάνεται τοῦτον τὸν τρόπον. ἐπὶ τὸ μεταξὺ μέρος τοῦ ἀντίχειρος. συνεπίζον δὲ τῷ

καρπάσῳ κοῖλον, πρὸ ὑποθεὶς ἔριον ἐλαίῳ βεβρεγμένον,
ἐπιτίθει κατὰ μίαν σπύραθον πυρῶν, ἄχρις ἂν ἡ αἴσθησις
διὰ τοῦ βραχίονος ἐπὶ τὸ ἰσχίον ἔλθῃ καὶ παύῃ. καλεῖται
δὲ ἡ τοιαύτη καῦσις ἀραβική. ἡ προβάτων δὲ ἄφοδος σὺν
ὄξει καταπλασθεῖσα, ἐπινυκτίδας, ἥλους, θύμους ἀκρο-
χορδόνας ἰᾶται. πυρίκαυτα δὲ κηρωτῇ ῥοδίνῃ ληφθεῖσα.
ὑὸς δὲ ἀγρίου ξηρὰ μεθ' ὕδατος ἢ οἴνου ποθεῖσα, αἵματος ἀνα-
γωγὴν ἴσχει καὶ χρόνιον ἄλγημα πλευρᾶς πραΰνει. ῥήγματα
δὲ καὶ σπάσματα μετ' ὄξους πινομένη. στρέμματα δὲ θερα-
πεύει ἀναληφθεῖσα κηρωτῇ ῥοδίνῃ. ὄνων δὲ καὶ ἡ τῶν ἵππων,
αἱμορραγίας ἵστησιν. ὠμή τε καὶ κεκαυμένη ὄξει μιγεῖσα
ἡ δὲ τοῦ ἐξ ἀγέλης ὄντος ποηφάγου, ξηρὰ χυλισθεῖσα ἐν οἴ-
νῳ καὶ ποθεῖσα, σκορπιοπλήκτοις σφόδρα βοηθεῖ. περι-
στερᾶς δὲ, θερμαντικωτέρα καὶ καυστικωτέρα. χρησίμως ὠ-
μηλύσει μιγνυμένη. σὺν ὄξει δὲ χοιράδας διαφορεῖ. ἄνθρα-
κάς τε περιρρήττει σὺν μέλιτι καὶ λινοσπέρμῳ καὶ ἐλαίῳ
λεανθεῖσα. πυρίκαυτά τε θεραπεύει. καὶ ἡ τῶν ἀλεκτορίδων
δὲ ταυτὰ ποιεῖ. ἐνδεέστερον μέν τοι. πλὴν ἰδίως πρὸς μύκη-
τας θανασίμους καὶ κώλου ἀλγήματα ἁρμόζει μετ' ὄξους
ἢ οἴνου πινομένη. πελαργοῦ δὲ σὺν ὕδατι ποθεῖσα ἐπιλη-
πτικοῖς ἁρμόζειν πιστεύεται. γυπὸς ὑποθυμιαθεῖσα, ἔμ-
βρυα ἐκτινάσσειν παραδέδοται. μυῶν, λεία σὺν ὄξει ἀλω-
πεκίας καταχριομένη θεραπεύει. σὺν λιβανωτῷ δὲ καὶ οἰ-
νομέλιτι πινομένη λίθους ἐκκρίνει. προστιθέμενα δὲ παιδίοις
τὰ μυόχοδα κοιλίαν πρὸς ἔκκρισιν ἐρεθίζει. κυνὸς δὲ ἡ ἐν
τοῖς κυνοκαύμασι ληφθεῖσα, ξηρὰ πινομένη μεθ' ὕδατος ἢ
οἴνου, κοιλίαν ἐφίστησιν. ἡ δὲ τῶν ἀνθρώπων πρόσφατος κα-
ταπλασθεῖσα, ἀφλέγμαντα μετὰ τοῦ παρακολλᾶν φυ-
λάττει τὰ τραύματα. ξηρὰ δὲ μετὰ μέλιτος διαχριομένη τῶν συ-
ναγχικῶν, βοηθεῖν παραδέδοται. ἡ δὲ τοῦ χερσαίου κροκο-
δείλου, ἁρμόζει ἐπὶ τῶν γυναικῶν, πρὸς εὐχροίαν καὶ στίλ-
βωσιν τῶν προσώπων. καλλίστη δέ ἐστιν ἡ λεπτοτάτη καὶ εὔ-
θρυβής. κούφη τε ὡς πρὸς ἄμυλον. ταχέως τε χυλουμένη
ὑπὸ ὑγροῦ. διατριβεῖσά τε ὑπόξις καὶ ζυμίζουσα τὴν
ὀσμήν. δολίζουσι δὲ αὐτήν, ψάρας ὀρύζῃ τρέφοντες, καὶ τὴν

ἄφοδον ὁμοίαν οὖσαν πωλοῦντες. οἱ δὲ, ἄμυλον ἢ κιμωλίαν φυρῶντες, καὶ χρώζοντες ἀγχούσῃ δι' ἀραιοῦ κοσκίνου, εἰς ὀλίγον ἀπηθοῦσι. καὶ ξηράναντες ὡς σκωλήκια πωλοῦσιν ἀντὶ ταύτης.

Περὶ οὔρων. Κεφ. σπζ'.

Οὖρον ἀνθρώπου τὸ ἴδιον ποθὲν, πρὸς ἐχίδνης δήγματα ἁρμόζει. καὶ πρὸς θανάσιμα καὶ ἀρχομένους ὕδρωπας. καὶ πρὸς δῆξιν τῶν θαλασσίων ἐχιδνῶν. καὶ σκορπίου θαλασσίου καὶ δράκοντος ἐπαντλούμενον. τὸ δὲ κυνῶν ἐπάντλημα, κυνοδήκτοις. καὶ πρὸς λέπρας καὶ κνησμοὺς σμῆγμα σὺν νίτρῳ. τὸ παλαιὸν σμηκτικώτερον ἀχώρων. πιτύρων. ψωρῶν. ἐκζεσμάτων. νομάς τε ἐπέχει. καὶ τὰς ἐν αἰδοίοις ἐγκλυζόμενον, καὶ ὦτα πυορροοῦντα στεγνοῖ. ἐκβάλλει δὲ καὶ τοὺς ἐν αὐτοῖς σκώληκας ἑψόμενον ἐν σιδίοις ῥόας. τὸ δὲ τοῦ ἀφθόρου παιδὸς καταρροφούμενον, ὀρθοπνοίαις ἁρμόζει. ἑψηθὲν δὲ ἐν χαλκῷ σὺν μέλιτι, οὐλὰς καὶ ἄργεμα καὶ ἀχλῦς ἀποσμήχει. κατασκευάζεται δὲ δι' αὐτοῦ καὶ τοῦ κυπρίου χαλκοῦ ἁρμόζουσα ἐπὶ τοῦ χρυσίου κόλλα. ἡ δὲ ὑπόστασις τοῦ οὔρου καταχρισθεῖσα, ἐρυσιπέλατα παύει. ἀναζεσθεῖσα δὲ σὺν κυπρίνῳ καὶ προστεθεῖσα, ὀδύνην ὑστέρας παρηγορεῖ. ὑστερικῶς πνιγομένας κουφίζει. βλέφαρά τε ἀποσμήχει καὶ οὐλὰς τὰς ἐν ὀφθαλμοῖς ἀποκαθαίρει. τὸ δὲ ταύρειον σὺν σμύρνῃ λεανθὲν καὶ ἐνσταχθὲν, ὠταλγίας παρηγορεῖ καὶ τὸ συάγριον δὲ τῆς αὐτῆς ἔχεται δυνάμεως. ἰδιαίτερον δὲ τοὺς ἐν κύστει λίθους θρύπτει καὶ ἐκκρίνει πινόμενον. αἰγὸς δὲ ὕδρωπα τὸν ὑπὸ σαρκὸς πινόμενον μετὰ νάρδου στάχυος καθ' ἑκάστην ἡμέραν σὺν ὕδατι κυάθων πλῆθος β'. ἄγειν οὖρα κατὰ κοιλίαν. ἰᾶσθαι δὲ καὶ ὠταλγίας ἐνσταζόμενον. ὄνου δὲ παραδέδοται νεφριτικοὺς ὑγιάζειν.

Περὶ λυγκουρίου. Κεφ. σπη'.

Τὸ δὲ τῆς λυγκὸς ὃ δὴ λυγκούριον καλεῖται, ἅμα τῷ οὐρηθῆναι λιθοῦσθαι πεπίστευται. διὸ καὶ ματαίαν ἔχει τὴν ἱστορίαν. ἔστι γὰρ τὸ καλούμενον ὑπ' ἐνίων ἤλεκτρον πτερυγοφόρον. ὅπερ ποθὲν σὺν ὕδατι, στομάχῳ καὶ ῥευματιζομένῃ κοι

λίᾳ ἁρμόζει. ὄνου δὲ οὖρον παραδέδοται πινόμενον νεφριτικοὺς ὑγιάζειν.

Περὶ μέλιτος. Κεφ. σπθ.

Μέλι πρωτεύει τὸ ἀττικόν. καὶ τούτου τὸ ὑμήττιον καλούμενον. εἶτα τὸ ἀπὸ τῶν κυκλάδων νήσων. καὶ τὸ ἀπὸ τῆς σικελίας σίμβλιον καλούμενον. ἔστι δὲ δοκιμώτερον τὸ γλυκύτερον καὶ δριμύ. εὐωδέστερον. ὑπόξανθον. οὐχ ὑγρόν. ὅλκιμον δὲ καὶ εὔτονον. καὶ ἐν τῷ ἑλκυσθῆναι ἀναβρέχον ὡς αὐτὶ τὸν δάκτυλον. δύναμιν δὲ ἔχει σμηκτικὴν. ἀναστομωτικὴν. ὑγρῶν προκλητικὴν. ὅθεν ἁρμόζει ἕλκεσι ῥυπαροῖς καὶ κόλποις ἐγκλυζόμενον. ἑψηθὲν δὲ καὶ ἐπιτεθὲν, παρακολλᾶ τὰ ἀφεστῶτα σώματα. λειχῆνάς τε θεραπεύει ἑψόμενον μετὰ στυπτηρίας ὑγρᾶς καὶ καταχριόμενον. ἤχους τε τοὺς ἐν ὠσὶ καὶ ἀλγήματα σὺν ἅλσιν ὀρυκτοῖς λείοις ἐνσταζόμενον χλιαρόν. καὶ φθεῖρας καὶ κόνιδας φθείρει καταχριόμενον. λειποδέρμους τε τοὺς μὴ ἐκ περιτομῆς, ἀποκαθίστησι μαλασσομένης τῆς πόσθης τῷ μέλιτι, μάλιστα ἀπὸ βαλανείου ἐφ' ἡμέρας λ'. ἀποκαθαίρει δὲ καὶ τὰ ἐπισκοτοῦντα ταῖς κόραις. καὶ τὰ περὶ βρόγχον καὶ παρίσθμια καὶ συνάγχας διαχριόμενον καὶ ἀναγαργαριζόμενον θεραπεύει. κινεῖ δὲ καὶ οὖρα καὶ βηξὶν ἁρμόζει. καὶ τοῖς ὑπὸ ἑρπετῶν δηχθεῖσι. καὶ πρὸς μήκωνος πόσιν μετὰ ῥοδίνου θερμὸν λαμβανόμενον. καὶ πρὸς μύκητας καὶ λυσσοδήκτους ἐκλειχόμενον ἢ πινόμενον. ἔστι μέντοι τὸ ὠμὸν, φυσῶδες κοιλίας. καὶ βηχὸς ἐρεθιστικόν. ὅθεν ἀπηφρισμένῳ δεῖ χρῆσθαι. πρωτεύει δὲ τὸ ἐαρινόν. εἶτα τὸ θερινόν. τὸ δὲ χειμερινὸν παχύτερον ὂν χεῖρον. καὶ ἐξανθισμοὺς ποιοῦν.

Περὶ μέλιτος ἐν σαρδωνίᾳ. Κεφ. σϛ.

Τὸ δὲ ἐν σαρδωνίᾳ γεννώμενον μέλι, πικρὸν διὰ τὴν τοῦ ἀψινθίου νομήν. ἁρμόζει δὲ πρὸς ἐφήλιδας καὶ σπίλους τοὺς ἐν προσώπῳ καταχρισθέν.

Περὶ μέλιτος ποντικοῦ. Κεφ. σϛα.

Γεννᾶται δὲ καὶ ἐν ἡρακλείᾳ τῇ ποντικῇ κατά τινας καιροὺς

διά τινων ἀνθῶν ἰδιότητα μέλι, ὃ τοὺς φαγόντας ἐξίστησι μετὰ ἐφιδρώσεως. βοηθοῦνται δὲ πήγανον ἐσθίοντες καὶ τάριχος, καὶ οἰνόμελι πίνοντες, ὁσάκις ἂν ἐμέσωσι τὰ αὐτὰ προσφερόμενοι. ἔστι δὲ δριμὺ καὶ πταρμοὺς κατὰ τὴν ὄσφρησιν κινοῦν. θεραπεῦον ἔφηλιν καταχρισθὲν μετὰ κόστου. μετὰ δὲ ἁλὸς, πελιώματα αἴρον.

Περὶ σακχάρου μέλιτος. Κεφ. σϛβʹ.

Καλεῖται δέ τι καὶ σάκχαρον εἶδος ὂν μέλιτος ἐν Ἰνδίᾳ πεπηγότος καὶ τῇ εὐδαίμονι Ἀραβίᾳ, εὑρισκόμενον ἐπὶ τῶν καλάμων, ὅμοιον τῇ συστάσει ἁλσί, καὶ θραυόμενον ὑπὸ τοῖς ὀδοῦσι καθάπερ οἱ ἅλες. ἔστι δὲ εὐκοίλιον, εὐστόμαχον, διεθὲν ὕδατι καὶ ποθέν, ὠφελοῦν κύστιν κεκακωμένην καὶ νεφρούς. καθαίρει δὲ καὶ τὰ τὰς κόρας ἐπισκοτοῦντα ἐγχριόμενον.

Περὶ κηροῦ. Κεφ. σϛγʹ.

Κηρὸς ἄριστός ἐστιν ὁ ὑπόκιῤῥος καὶ ὑπολίπαρος, εὐώδης τε καὶ ποσὴν μελιτώδη ἀποφορὰν ἔχων, ἔτι δὲ καθαρὸς καὶ γένει ποντικὸς ἢ κρητικός. ὁ δὲ ἔκλευκος, τῇ φύσει δὲ λιπαρὸς, δευτερεύει. λευκαντέον δὲ κηρὸν οὕτω. κατακνίσας αὐτοῦ τὸ λευκὸν καὶ καθαρὸν, ἔμβαλε εἰς χύτραν καινήν. καὶ ἐπιχέας θαλάσσης πελαγίας τὸ αὔταρκες, ἕψε βραχὺ νίτρον προσεμπάσας. ὅτε δὲ ἀναζέσει δὶς ἢ τρὶς, καθελὼν τὴν χύτραν καὶ ἐάσας ψυχθῆναι, ἀνελοῦ τὸν τροχίσκον. καὶ ἀποξύσας εἴ τις περὶ αὐτὸν ὑπάρχει ῥυπαρία, ἕψε ἐκ δευτέρου ἄλλο θαλάσσιον ὕδωρ ἐπιδούς. ἀναζέσαντος δὲ πάλιν τοῦ κηροῦ ὡς δεδήλωται, ἀνελοῦ τὸ ἀγγεῖον ἀπὸ τοῦ πυρός. καὶ λαβὼν καινοῦ χυτριδίου τὸν πυθμένα, προενοτισμένον ὕδατι ψυχρῷ, κάθες πράως εἰς τὸν κηρόν, ἀκροθιγῶς ἐμβάπτων, πρὸς τὸ ἐλάχιστόν τι αὐτοῦ ἀφέλκεσθαι, καὶ καθ᾽ ἑαυτοῦ πήγνυσθαι. ἀνελόμενος δὲ τὸν πρῶτον κυκλίσκον ἀφαιροῦ, καὶ ἐκ δευτέρου κάθες τὸν πυθμένα ψύχων ὕδατι. καὶ τὸ αὐτὸ ποίει ἕως ἂν ἅπαντα ἀναλάβῃς. λοιπὸν λίνῳ διαπείρας τὰ κυκλίσκια διεστῶτα ἀπ᾽ ἀλλήλων κρέμασον, ἡμέραν μὲν εἰς ἥλιον συνεχῶς ἐπινοτίζων αὐτά, νυκτὸς δὲ ὑπὸ τὴν σελή-

ἡλίῳ τίθει, ἕως ἂν λευκὸς γένηται. εἰ δὲ ἄγαν τις θέλει λευκὸν ποιῆσαι. τὰ μὲν λοιπὰ ὡσαύτως ἐνεργείτω. ἑψέτω δὲ πλεονάκις. τινὲς δὲ ἀντὶ πελαγίας θαλάσσης, ἐν ἅλμῃ δριμυτάτῃ ἕψουσι τὸν προειρημένον τρόπον ἅπαξ ἢ δίς. εἶτα ἀναιροῦνται λαγηνίῳ λεπτῷ, καὶ περιφορεῖ. λαβὼν ἐν ἑαυτῷ ἔχοντι. εἶτα κυκλίσκια ἐπὶ πόας πυκνῆς ἐπιθέντες ἡλιάζουσιν, ἕως ἂν λευκότατος γένηται. παραινοῦσι δὲ ἔαρος ἐπὶ τοῦτο ἐργάζεσθαι. ὅτι καὶ ὁ ἥλιος τῇ σφοδρότητι ἀνίεται, καὶ νοτίδα παρέχει. πρὸς τὸ μὴ τήκεσθαι. δύναμιν δ' ἔχει πᾶς κηρὸς θερμαντικὴν. μαλακτικὴν. πληρωτικήν τε μετρίως. μίγνυται δὲ καὶ ἐν ῥοφήμασιν ἐπὶ τῶν δυσεντερικῶν. καταπινόμενος δὲ μεγέθη κεγχριαῖα δέκα, οὐκ ἐᾷ τυροῦσθαι ἐπὶ τῶν τιθηνουσῶν τὸ γάλα.

### Περὶ προπόλεως. κεφ. σϛδ'.

Πρόπολιν παραληπτέον τὴν ξανθὴν καὶ εὐώδη καὶ στυρακίζουσαν. μαλακήν τε ἐν τῷ ὑπερξήρῳ. καὶ μαστίχης τρόπον ἑφελκομένην. ἔστι δὲ θερμαντικὴ ἄγαν καὶ ἐπισπαστική. καὶ σκολόπων ἑλκυστική. ἀρήγει δὲ καὶ βηξὶ παλαιαῖς ὑποθυμιωμένη. αἴρει δὲ καὶ λειχῆνας ἐπιτιθεμένη. εὑρίσκεται δὲ περὶ τοῖς στόμασι τῶν σμηνίων φύσει κηροειδής.

### Περὶ τυρῶν. κεφ. σϛε'.

Τυροὶ πρὸς ὑγείας χρῆσιν ἄριστοι. οἱ πρόσφατοι καὶ τελείως ἡδρηκότες, τῇ χρόᾳ μηλίζουσιν. εἶτα μετὰ τούτους οἱ τριμηνιαῖοι. λεγόμενοι δὲ ὑπό τινων σιτάνιοι. ὠμοὶ οὖν βρωθέντες, ἕλμινθας στρογγύλας γεννῶσι. μασσηθέντες δὲ καὶ καταπλασθέντες, ὠφελοῦσι κυνοδήκτους. ὁ δὲ ἐκ τῆς σεμιδάλεως αὐτῶν γινόμενος ἄρτος, εὐτροφώτερός ἐστι τοῦ συγκομιστοῦ. ὁ δὲ ἐκ τῶν σιτανίων ἀλεύρων, κουφότερος καὶ εὐανάδοτος. τὸ δὲ ἐξ αὐτῶν ἄλευρον σὺν ὑοσκυάμου χυλῷ, καταπλάσσεται πρὸς νεύρων ῥευματισμούς. καὶ πρὸς ἐμπνευματώσεις ἐντέρων. σὺν ὀξυμέλιτι δὲ φακοὺς αἴρει. τὸ δὲ πίτυρον σὺν ὄξει δριμεῖ λέπρας ἀφίστησι καταπλασσόμενον θερμόν. καὶ πάσης φλεγμονῆς ἐν ἀρχῇ κατάπλασμα σύμφορον, μετὰ

ἢ πηγάνου ἀφεψήματος ἑψηθὲν, μαστοὺς σπαργῶντας παύει, καὶ ἐχιοδήκτοις ἁρμόζει, καὶ στροφουμένοις. ἡ δὲ ἐκ τῶν ἀλεύρων ζύμη θερμαντικὴ οὖσα καὶ ἐπισπαστικὴ, ἰδίως τὰ ἐν πέλμασι λεπτύνει. καὶ τὰ ἄλλα φύματα. καὶ δοθιῆνας σὺν ἁλσὶν ἐκπέσσει καὶ ἀναστομοῖ. τὸ δὲ τῶν σητανίων πυρῶν ἄλευρον, ἰοβόλοις ἁρμόζει καταπλαττόμενον ἐν ὄξει ἢ οἴνῳ. ἑψηθὲν δὲ τρόπον κόλλης καὶ ἐκλειχόμενον, αἱμοπτοϊκοὺς ὠφελεῖ. καὶ πρὸς βῆχας καὶ ἀρτηρίας τραχυσμοὺς, σὺν ἡδυόσμῳ καὶ βουτύρῳ ἑψηθὲν ποιεῖ. καὶ ἡ ἐξ αὐτῶν τῶν πυρῶν γύρις ἑψηθεῖσα σὺν μελικράτῳ, ἢ ὑδρελαίῳ, πᾶσαν διαφορεῖ φλεγμονήν. καὶ ὁ ἄρτος σὺν μελικράτῳ ἑφθὸς καὶ ὠμὸς καταπλασσόμενος, πᾶσαν φλεγμονὴν παραμυθεῖται μαλακτικώτατος ὑπάρχων. καὶ παρυποψύχων. μιγεὶς πόαις ἢ χυλοῖς τισίν. ὁ δὲ παλαιὸς καὶ ξηρὸς καθ' ἑαυτὸν μιγεὶς τισὶν, ἵστησι κοιλίαν ῥέουσαν. ἅλμῃ δὲ βραχεὶς ὁ πρόσφατος καὶ καταπλασθεὶς, παλαιοὺς λειχῆνας ἰᾶται. κόλλα δὲ ἡ γινομένη ἐκ τῆς σεμιδάλεως καὶ γύρεως πρὸς τὴν τῶν βιβλίων κόλλησιν, ἁρμόζει ἐπὶ αἱμοπτοϊκῶν ὑγροτέρα καὶ χλιαρὰ καταρροφουμένη, κοχλιαρίου πλῆθος.

## Περὶ κριθῆς. κεφ. σϛϛ'.

Κριθὴ δὲ ἀρίστη ἡ λευκὴ καὶ καθαρά. ἀτροφωτέρα δὲ πυροῦ. τοῦ μέντοι γινομένου ἐξ αὐτῆς ἀλφίτου ἡ πτισάνη τροφιμωτέρα διὰ τὴν ἐν τῇ ἑψήσει χύλωσιν. ποιοῦσα δὲ πρὸς τὰς δριμύτητας καὶ τὰς περὶ ἀρτηρίαν τραχύτητας καὶ ἑλκώσεις. πρὸς ἃς καὶ ἡ πυρίνη πτισάνη ἁρμόζει τροφιμωτέρα καὶ οὐρητικωτέρα οὖσα. καταπαύει δὲ καὶ γάλα συνεψηθεῖσα μαράθρου σπέρματι καὶ ῥοφουμένη. ἔστι δὲ οὐρητική. σμηκτική. φυσώδης. κακοστόμαχος. συμπεπτικὴ οἰδημάτων. διαφορεῖ δὲ τὸ ἄλευρον αὐτῆς μετὰ σύκων καὶ μελικράτου ἑψηθὲν, οἰδήματα καὶ φλεγμονάς. συμπέσσει δὲ καὶ τὰς σκληρίας μετὰ πίσσης καὶ ῥητίνης καὶ περιστερᾶς κόπρου. σὺν μελιλώτῳ δὲ καὶ κωδίαις ἀνωδυνίαν παρέχει τοῖς πλευραλγοῦσι. καταπλάσσεται δὲ καὶ πρὸς ἐμπνευματώσεις ἐντέρων. μετὰ λινοσπέρμου καὶ τήλεως καὶ πηγάνου. μετὰ δὲ πίσσης

ὑγρᾶς καὶ κηροῦ καὶ οὔρου παιδὸς ἀφθόρου καὶ ἐλαίου, χοιράδας ἐκπέττει. σὺν μυρσίνῃ δὲ ἢ οἴνῳ ἢ ἀχράσιν ἢ βάτῳ ἢ σιδίοις, κοιλίας ῥεύματα ἵστησι. σὺν κυδωνίῳ δὲ ἢ ὄξει, ποδαγρικὰς φλεγμονὰς ὠφελεῖ. ἑψηθὲν δὲ μετὰ ὄξους δριμέως ὃν τρόπον ὠμὴ λύσις, καὶ θερμὸν ἐπιτιθέμενον, λέπρας ὑγιάζει. χυλωθὲν δὲ τὸ ἄλευρον σὺν ὕδατι καὶ ἑψηθὲν σὺν πίσσῃ καὶ ἐλαίῳ, πυοποιόν ἐστι. σὺν ὄξει δὲ χυλωθὲν καὶ ἑψηθὲν μετὰ πίσσης, πρὸς τὰ τῶν ἄρθρων ῥεύματα ἁρμόζει. τὸ δὲ ἐξ αὐτῶν ἄλευρον κοιλίας σταλτικόν. καὶ φλεγμονῶν πραϋντικόν.

## Περὶ ζύθου. Κεφ. σϟζ΄.

Ζύθος σκευάζεται ἐκ τῆς κριθῆς. ἔστι δὲ διουρητικός. καὶ νεφρῶν καὶ νεύρων ἁπτικός. καὶ μάλιστα μηνίγγων κακωτικός. πνευματωτικός τε καὶ γεννητικὸς κακοχυμιῶν. καὶ ἐλεφαντιάσεως ποιητικός. εὐεργὴς δὲ καὶ ὁ ἐλέφας γίνεται βρεχόμενος αὐτῷ.

## Περὶ κούρμιθος. Κεφ. σϟη΄.

Καὶ τὸ καλούμενον δὲ κοῦρμι, σκευαζόμενον δὲ ἐκ τῆς κριθῆς. ᾧ καὶ ἀντὶ οἴνου πόματι πολλάκις χρῶνται, κεφαλαλγές ἐστι καὶ κακόχυμον. καὶ τοῦ νεύρου βλαπτικόν. σκευάζεται δὲ καὶ ἐκ πυρῶν τοιαῦτα πόματα, ὡς ἐν τῇ πρὸς ἑσπέραν ἰβηρείᾳ καὶ βρετανίᾳ.

## Περὶ ζειᾶς. Κεφ. σϟθ΄.

Ζειὰ διττή. ἡ μὲν, γὰρ ἁπλῆ. ἡ δὲ, δίκοκκος καλεῖται. ἐν δυσὶν ἐλύτροις ἔχουσα συνεζευγμένον τὸ σπέρμα. ἔστι δὲ τροφιμωτέρα μὲν κριθῆς. εὔστομος. ἀτροφωτέρα δὲ πυρῶν ἀρτοποιουμένη.

## Περὶ κρίμνου. Κεφ. τ΄.

Κρίμνον. ἀδρότερόν ἐστι τῇ κατεργασίᾳ τοῦ ἀλεύρου γινόμενον ἔκ τε ζειᾶς καὶ πυροῦ ἐξ οὗ ὁ πολτὸς γίνεται. ἔστι δὲ ἱκανῶς τρόφιμον καὶ δυσκατέργαστον. σταλτικώτερον δὲ κοιλίας τὸ ἀπὸ τῆς ζειᾶς μάλιστα προφωχθείσης.

## Περὶ ὀλύρας. Κεφ. τα΄.

Καὶ ἡ ὄλυρα δὲ ἐκ τοῦ αὐτοῦ γένους ἐστὶ τῆς ζειᾶς. ἀτροφωτέρα

δὲ κατὰ ποσὸν ἐκείνης. ἀρτοποιεῖται δὲ καὶ αὐτή. καὶ κρίμνον ἐξ αὐτῆς ὡσαύτως γίνεται.

Περὶ Ἀθήρας. Κεφ. τβ'.

Ἀθήρα δὲ ἐκ τῆς ἀληλεσμένης εἰς λεπτὸν ζειᾶς, σκευάζεται. ἔστι δὲ ῥόφημα ὥσπερ πολτάριον ὑγρόν. παιδίοις ἁρμόδιον. ποιεῖ δὲ καὶ εἰς τὰ καταπλάσματα.

Περὶ Τράγου. Κεφ. τγ'.

Τράγος. τὸ σχῆμα μὲν παραπλησίως τῷ χόνδρῳ ἔοικεν. ἀτροφώτερος δὲ παραπολὺ ζειᾶς. διὰ τὸ πολὺ ἔχειν τὸ ἀχυρῶδες. διὸ καὶ δυσκατέργαστός ἐστι. καὶ κοιλίας μαλακτικός.

Περὶ Βρώμου. Κεφ. τδ'.

Βρῶμος καλαμός ἐστι πυροῖς ὅμοιος καὶ τοῖς φύλλοις. γόνασι δὲ διειλημμένος. καρπὸν δὲ ἔχει ἐπ' ἄκρῳ ὥσπερ ἀκρίδια δίκωλα. ἐν οἷς τὸ σπέρμα χρήσιμον εἰς καταπλάσματα ὡς ἡ κριθή. ὁ πόλτος δὲ ἐξ αὐτοῦ γίνεται σταλτικὸς κοιλίας. ὁ δὲ ἐξ αὐτοῦ χυλὸς ῥοφούμενος, βήσσουσιν ἁρμόζει.

Περὶ Ὀρύζης. Κεφ. τε'.

Ὄρυζα τῶν σιτηρῶν ἐστιν εἶδος. φυομένη ἐν ἑλώδεσι τόποις καὶ ὑγροῖς. τρόφιμος δὲ μετρίως καὶ κοιλίας σταλτική.

Περὶ Χόνδρου. Κεφ. τϛ'.

Ὁ δὲ χόνδρος γίνεται μὲν ἐκ τῆς καλουμένης δικόκκου ζέας. τροφιμώτερος δὲ ὀρύζης στεγνωτικώτερος κοιλίας. εὐστομαχώτερος δὲ μᾶλλον. αἴρει δὲ καὶ λέπρας σὺν ὄξει ἑψηθεὶς καὶ καταχρισθείς. καὶ λεπροὺς ὄνυχας ἀφίστησι. καὶ αἰγίλωπα ἀρχόμενα θεραπεύει. ἐγκλυσμάτι τε τὸ ἀφέψημα αὐτοῦ τοῖς μετὰ ἀλγήματος δυσεντερικοῖς εὔθετον.

Περὶ Κέγχρου. Κεφ. τζ'.

Κέγχρος. ἀτροφωτέρα τῶν λοιπῶν σιτηρῶν. ἀρτοποιηθεῖσα δὲ ἢ ὥσπερ πόλτος σκευασθεῖσα κοιλίαν ἵστησιν. οὖρα δὲ κινεῖ.

φωχθεῖσα δὲ καὶ βληθεῖσα εἰς σάκκους πυριωμένη, στρόφων καὶ τῶν ἄλλων ἀλγημάτων ἐστὶ βοήθημα.

### Περὶ ἐλύμου. ΚΕΦ. τη.

Ἔλυμος. οἱ δὲ, μελίνην. τῶν σιτηρῶν ἐστι σπερμάτων. κέγχρῳ ὁμοία. ὡσαύτως σιτοποιουμένη καὶ πρὸς τὸ αὐτὸ ἁρμόζουσα. ἀτροφωτέρα μέντοι τῆς κέγχρου καὶ ἧττον στυπτική.

### Περὶ σησάμου. ΚΕΦ. τθ.

Σήσαμον κακοστόμαχον. καὶ δυσωδίας στόματος ποιητικόν. ὁπόταν βιβρωσκόμενον ἐμμείνῃ μεταξὺ τῶν ὀδόντων. καταπλασθὲν δὲ διαφορεῖ τὰς ἐν νεύροις παχύτητας. καὶ τὰ ἐν ὠσὶ θλάσματα, καὶ φλεγμονὰς καὶ πυρίκαυτα. καὶ κώλων ἀλγήματα. καὶ κεράστου δῆγμα θεραπεύει. σὺν ῥοδίνῳ δὲ κεφαλῆς ἀλγήματα ἐξ ἐγκαύσεως γινόμενα παραμυθεῖται. ἡ δὲ πόα καθεψηθεῖσα ἐν οἴνῳ τὰ αὐτὰ ποιεῖ. μάλιστα δὲ φλεγμοναῖς ὀφθαλμῶν καὶ περιωδυνίαις ἁρμόζει. γίνεται δὲ καὶ ἔλαιον ἐξ αὐτοῦ ᾧ οἱ αἰγύπτιοι χρῶνται.

### Περὶ αἴρας. ΚΕΦ. τι.

Αἶρα. οἱ δὲ, θύαρος. αἶρα ἡ γινομένη ἐν τοῖς πυροῖς ἀλεσθεῖσα, δύναμιν ἔχει περιχαρακτικὴν νομῶν καὶ σηπεδόνων καὶ γαγγραίνης. μετὰ ῥαφανίων καὶ ἁλῶν καταπλασσομένη καὶ λειχῆνας ἀγρίους καὶ λέπρας σὺν θείῳ ἀπύρῳ καὶ ὄξει θεραπεύει. σὺν κόπρῳ δὲ περιστερᾶς καὶ λινοσπέρμῳ ἑψομένη ἐν οἴνῳ χοιράδας διαλύει. καὶ τὰ δυσέκπυα ῥήσσει. ἰσχιαδικούς τε σὺν μελικράτῳ ἑψηθεῖσα καὶ καταπλασσομένη ὠφελεῖ. σὺν ἀλφίτῳ δὲ ἢ σμύρνῃ ἢ κρόκῳ ἢ λιβανωτῷ ὑποθυμιωμένη συνεργεῖ ταῖς συλλήψεσιν.

### Περὶ ἀμύλου ΚΕΦ. τια.

Ἄμυλον ὀνόμασται, διὰ τὸ χωρὶς μύλου κατασκευάζεσθαι. ἄριστον δέ ἐστι τὸ σκευαζόμενον ἐκ πυροῦ σητανίου, κρητικὸν δὲ ἢ αἰγύπτιον. σκευάζεται δὲ ἐκ πυροῦ σητανίου καθαροῦ. βρεχομένου πεντάκις τῆς ἡμέρας. εἰ δυνατὸν δὲ καὶ τῆς νυκ

τός. ὅταν δὲ μαλακὸς γένηται, δεῖ πραέως τὸ ὕδωρ ἐκχεῖν χωρὶς τοῦ κινεῖν. ἵνα μὴ συνεκκλύζηται τὸ νόσιμον. ἐπὰν δὲ παραστῇ μαλακώτατος γενόμενος, ἀποχέας τὸ ὕδωρ τρίβειν τοῖς ποσίν, εἶτα ὕδωρ ἐπιχέοντας τρίβειν. εἶτα ἀναιρεῖσθαι τὸ ὑφιστάμενον πίτυρον ἰθμῷ. καὶ τὸ λοιπὸν διηθήσαντας ἐμβαλεῖν εἰς ὑλιστῆρα. διυλίσαντάς τε εὐθέως ψύχειν ἐπὶ κεραμίδων καινῶν ἐν ἡλίῳ ὀξυτάτῳ. ἔνικμον γὰρ καὶ ἐπ' ὀλίγον μένη ὀξίζει. ποιεῖ δὲ πρὸς ὀφθαλμῶν ῥεύματα καὶ κοιλότητας καὶ φλυκταίνας. στέλλει δὲ καὶ αἵματος ἀναγωγὰς πινόμενον. καὶ πρὸς περὶ ἀρτηρείαν πραΰνει. μίγνυται δὲ καὶ γάλακτι καὶ προσοψήμασι. σκευάζεται δὲ καὶ ἐκ ζειᾶς βραχείσης καὶ πλυθείσης πρὸς μίαν ἢ δευτέραν ἡμέραν. καὶ σταιτὸς τρόπον ἀποθλιβείσης διὰ τῶν χειρῶν καὶ ξηρανθείσης ἐν ὀξυτάτῳ ἡλίῳ ὡς προείρηται. τὸ δὲ τοιοῦτον ἄθετον μὲν πρὸς ἰατρικὴν χρῆσιν πρὸς δὲ τὰ λοιπὰ εὔθετον.

Περὶ Τήλεως ἀλεύρου. ΚΕΦ. πιβ´.

Τῆλις. καὶ τὸ ἐκ τῆς τήλεως ἄλευρον μαλακτικὴν καὶ διαχυτικὴν ἔχει δύναμιν. καταπλασσόμενον δὲ λεῖον σὺν μελικράτῳ ἑφθῷ, ποιεῖ πρὸς φλεγμονὰς τὰς ἐντὸς καὶ ἐκτός. σὺν νίτρῳ δὲ καὶ ὄξει λεῖον καταπλασθέν, σπλῆνα μειοῖ. τὸ δὲ ἀφέψημα αὐτῆς ἐγκάθισμα εἰς τὰ γυναικεῖα. ὅσα κατὰ φλεγμονὰς ἢ μύσιν συνίσταται. σμήχει δὲ καὶ τρίχας καὶ πίτυρα. καὶ ἀχῶρας τὸ ἀπόθλιμμα αὐτῆς ἐν ὕδατι ἑψηθείσης. σὺν στέατι δὲ χηνείῳ προστίθεται ἀντὶ πεσσοῦ. μαλάσσον καὶ ἀνευρῦνον τοὺς περὶ τὴν ὑστέραν τόπους. χλωρὰ δὲ μετ' ὄξους ἀτονοῦσι τόποις καὶ ἑλκουμένοις ἁρμόζει. τὸ δὲ ἀφέψημα αὐτῆς πρὸς τεινεσμοὺς καὶ δυσώδη ἀπὸ χωρήματα δυσεντερικά. τὸ δὲ ἀπ' αὐτῆς ἔλαιον μετὰ μυρσίνης. σμήχει τρίχας. οὐλάς τε τὰς ἐν αἰδοίοις.

Περὶ Λίνου. ΚΕΦ. τιγ´.

Λίνον. γνώριμον. δύναμιν δὲ ἔχει τὸ σπέρμα τὴν αὐτὴν τῇ τήλει. διαφοροῦν καὶ μαλάσσον πᾶσαν φλεγμονὴν ἐντός τε καὶ ἐκτός, σὺν μέλιτι καὶ ἐλαίῳ καὶ ὕδατι ὀλίγῳ ἑψη-

θέν. ἢ ἑφθῷ μέλιτι ἀναληφθέν. αἴρει δὲ καὶ ἐφήλεις ὠμὸν καὶ ἰόνθους σὺν νίτρῳ καταπλασθὲν καὶ σύκοις. σὺν κονίᾳ δὲ, παρωτίδας καὶ σκληρίας διαφορεῖ. ἕρπητάς τε σὺν οἴνῳ ἑψηθὲν καὶ κηρίᾳ ἐκκαθαίρει. ὄνυχάς τε λεπροὺς ἀφίστησι σὺν καρδάμῳ ἴσῳ καὶ μέλιτι. ἀνάγει δὲ καὶ τὰ ἐκ θώρακος σὺν μέλιτι ἀντὶ ἐκλείγματος ληφθέν. καὶ βῆχας παρηγορεῖ. παρορμᾷ δὲ καὶ πρὸς ἀφροδίσια μιγὲν μέλιτι καὶ πεπέρει ἀντὶ κόπτης πολὺ λαμβανόμενον. καὶ τὸ ἀφέψημα δὲ αὐτοῦ ἐνίεται πρὸς ἐντέρων καὶ ὑστέρας δηγμούς. καὶ ἐκκομιδὴν ἀπολειμμάτων καὶ φλεγμονὰς τὰς ἐν μήτρᾳ εἰς ἐγκάθισμα, ὥσπερ τὸ τῆς τήλεως εὐχρηστεῖ.

## Περὶ ἐρεβίνθου. Κεφ. τιδ.

Ἐρέβινθος ὁ ἥμερος, εὐκοίλιος. οὐρητικός. πνευμάτων γεννητικός. εὐχροίας ποιητικός. καταμηνίων ἀγωγὸς καὶ ἐμβρύων. καὶ γάλακτος γεννητικός. καταπλάσσεται δὲ μάλιστα σὺν ὀρόβοις ἑφθὸς. πρὸς ὄρχεων φλεγμονὰς καὶ μυρμηκίας. πρός τε ψώρας καὶ ἀχῶρας καὶ λειχῆνας καὶ τὰ καρκινώδη ἕλκη καὶ κακοήθη σὺν κριθῇ καὶ μέλιτι. καλεῖται δὲ τὸ ἕτερον αὐτῶν εἶδος, κριός. ἀμφότεροι δέ εἰσι διουρητικοί, διδόμενοι πρὸς ἴκτερον καὶ ὕδρωπα τοῦ ἀφεψήματος αὐτῶν σὺν λιβανωτίδι. βλάπτουσι δὲ καὶ κύστην ἡλκωμένην καὶ νεφρούς. πρὸς δὲ μυρμηκίας καὶ ἀκροχορδόνας νεομηνίας οὔσης, ἔνιοι ἑκάστης ἐξοχῆς ἐρεβίνθῳ ψαύοντες ἄλλῳ καὶ ἄλλῳ, εἶτα ὀθονίῳ ἀποδήσαντες αὐτούς, ῥίπτειν εἰς τοὐπίσω κελεύουσιν. ὡς ἀποπιπτουσῶν τῶν ἀκροχορδόνων. Γίνεται δὲ καὶ ἄγριος, ἐρέβινθος ὅμοιος τοῖς φύλλοις τῷ ἡμέρῳ. ὀσμῇ δριμύς. τῷ καρπῷ διάφορος. ποιῶν πρὸς ὅσα καὶ ὁ ἥμερος.

## Περὶ κυάμου ἑλληνικοῦ. Κεφ. τιε.

Κύαμος ἑλληνικὸς πνευματώδης. φυσώδης. δύσπεπτος. δυσόνειρος. βηχὶ δὲ σύμφορος καὶ σαρκῶν γεννητικὸς, μέσος θερμοῦ καὶ ψυχροῦ. ἑψηθεὶς δὲ σὺν ὀξυκράτῳ, καὶ σὺν τῷ λέπει ἐσθιόμενος, δυσεντερίας καὶ κοιλιακὰς ῥύσεις ἐπέχει. καὶ πρὸς ἐμέτους δὲ εὔθετος βρωθείς. γίνεται δὲ ἀφυσότερος τοῦ πρώτου ὕδατος κατὰ τὴν ἕψησιν ἀποχεομένου. ὁ δὲ

χλωρὸς καὶ κακοστομαχώτερος καὶ φυσωδέστερος. τὸ δὲ ἄλευρον τοῦ κυάμου καταπλασθὲν καθ' ἑαυτό τε καὶ σὺν ἀλφίτῳ, τὰς ἐκ πληγῆς φλεγμονὰς πραΰνει. καὶ οὐλὰς ὁμοχρόους ποιεῖ. καὶ μαστοὺς χονδριῶντας καὶ φλεγμαίνοντας ὠφελεῖ. γάλα τε σβέννυσι. σὺν μέλιτι δὲ καὶ τηλίνῳ ἀλεύρῳ δοθιῆνας καὶ παρωτίδας καὶ ὑπώπια διαφορεῖ. σὺν ῥόδῳ τε καὶ λιβάνῳ καὶ τῷ τοῦ ᾠοῦ λευκῷ, ὀφθαλμῶν προπτώσεις καὶ σταφυλώματα καὶ οἰδήματα στέλλει. φυραθὲν δὲ σὺν οἴνῳ, συγχύσεις καὶ πληγὰς ὀφθαλμῶν καθίστησιν. εἴς τε ἀνακόλλημμα ῥεύματος χωρὶς τοῦ λέπους μασσηθεὶς, ἐπιτίθεται κατὰ τοῦ μετώπου. καὶ διδύμων φλεγμονὰς ἑψηθεὶς ἐν οἴνῳ θεραπεύει. καὶ τοῖς ἐφηβαίοις δὲ τῶν παίδων καταπλασσόμενος, ἀνήβους ἐπὶ πολὺ τηρεῖ. σμήχει δὲ καὶ ἀλφούς. τὰ δὲ λέπη καταπλασσόμενα, τὰς ἐκτιλθήσας τρίχας ἀτρόφους καὶ ἰσχνὰς κατασκευάζει. μετὰ δὲ ἀλφίτου καὶ σχιστῆς καὶ ἐλαίου καταπλασθέντα παλαιοῦ, χοιράδας διαφορεῖ. καὶ ἔρια βάπτει τὸ ἀφέψημα αὐτῶν. ἐπιτίθεται δὲ καὶ πρὸς τὰς ἀπὸ τῶν βδελλῶν αἱμορραγίας λελεπισμένος εἰς δύο διαιρεθεὶς καθὰ προσπέφυκεν, ἐπέχει προστυπούμενος κατὰ τὸ ἡμιτόμιον.

Περὶ κυάμου αἰγυπτίου. ΚΕΦ. ΤΙϚ΄.

Ὁ δὲ αἰγύπτιος κύαμος ὃν ἔνιοι ποντικὸν καλοῦσι, πλεῖστος μὲν γίνεται ἐν αἰγύπτῳ. καὶ ἐν ἀσίᾳ δὲ καὶ ἐν κιλικίᾳ ἐν ταῖς λίμναις εὑρίσκεται. ἔχει δὲ φύλλον μέγα ὡς πέτασον, καυλὸν δὲ πηχυαῖον. περὶ δάκτυλον τὸ πάχος. ἄνθος δὲ ῥοδόχρουν. διπλάσιον μήκωνος. ὅπερ ἀπανθῆσαν φέρει φυσκία παραπλήσια θυλακίσκοις. ἐν οἷς κύαμος μικρὸς ὑπεραίρων τὸ πῶμα ὡς πομφόλυξ. καλεῖται δὲ κιβώριον ἢ κιβώτιον. διὰ τὸ τὴν φυτείαν τοῦ κυάμου γίνεσθαι αὐτοῦ ἐντιθεμένου ἐν ἰκμοβώλῳ. οὕτω τε εἰς τὸ ὕδωρ ἀφιεμένου. ῥίζα δὲ ὕπεστι παχυτέρα καλάμου. βιβρωσκομένη ἑφθή τε καὶ ὠμή. κολοκασία καλουμένη. ὁ δὲ κύαμος βιβρώσκεται μὲν καὶ χλωρός. ξηρανθεὶς δὲ γίνεται μέλας. καὶ μείζων τοῦ ἑλληνικοῦ. ἔχων δύναμιν στυπτικὴν καὶ εὐστόμαχον. ἁρμό-

ζει δὲ δυσεντερικοῖς. καὶ κοιλιακοῖς τὸ ἐξ αὐτῶν ἄλευρον ἐπιπασ-
σόμενον ἀντὶ ἀλφίτου. καὶ πολτοποιούμενον δὲ δίδοται. τὰ δὲ λέ-
πη μᾶλλον ποιεῖ ἑψόμενα ἐν οἰνομέλιτι. καὶ ποτιζόμενα πλῆ-
θος κυάθων τεσσάρων. καὶ πρὸς ὠταλγίαν δὲ ποιεῖ τὸ ἐν μέ-
σῳ χλωρὸν αὐτῶν. πικρὸν δὲ κατὰ τὴν γεῦσιν. λεῖον σὺν ῥο-
δίνῳ συνεψόμενόν τε καὶ ἐνσταζόμενον.

## Περὶ φακοῦ. ΚΕΦ. τιζʹ.

Φακὸς βιβρωσκόμενος συνεχῶς, ἀμβλυωπός. δύσπεπτος.
κακοστόμαχος. πνευματικὸς στομάχου καὶ ἐντέρων. κοιλίας
δὲ σταλτικὸς σὺν τῷ λέπει ἐσθιόμενος. διαφέρει δὲ αὐτοῦ ὁ ἑ-
ψανὸς καὶ μηδὲν ἀνιεὶς ἐν τῇ διαβροχῇ μέλαν. Δύναμιν
δὲ ἔχει στυπτικήν. ὅθεν κοιλίαν ἵστησι, προαπολεπισθεὶς καὶ ἑ-
ψηθεὶς ἐπιμελῶς, τοῦ πρώτου ἐν τῷ ἀφέψεσθαι ὕδατος ἀπο-
χεομένου. λυτικὸν γὰρ κοιλίας τὸ πρῶτον ἀφέψημα αὐ-
τοῦ. ἔστι δὲ δυσόνειρος. ἄθετος πρὸς τὰ νευρώδη καὶ πνεύμο-
να καὶ κεφαλήν. βέλτιον δὲ τὸ ἴδιον ἔργον ἀποτελεῖ πρὸς
τὰ ῥεύματα τῆς κοιλίας. μιγείσης αὐτῷ μετ᾽ ὄξους σέρεως
ἢ ἀνδράχνης, ἢ σεύτλου μέλανος, ἢ μύρτων, ἢ σιδίων, ἢ ῥό-
δων ξηρῶν. ἢ μεσπίλων, ἢ οὔων, ἢ ἀπίων θηβαϊκῶν, ἢ κυδω-
νίων μήλων, ἢ κιχωρίου, ἢ ἀρνογλώσσου, ἢ κηκίδων ὁλοκλή-
ρων, αἵτινες μετὰ τὴν ἕψησιν ῥίπτονται, ἢ ῥοὸς τοῦ ἐπὶ τὰ
ὄψα. δεῖ δὲ τὸ ὄξος ἐπιμελῶς συγκαθεψεῖν αὐτῷ. εἰ δὲ μὴ,
ταράττει τὴν κοιλίαν. καὶ ἀναστροφὴν δὲ στομάχου περιλεπι-
σθέντες τεσσαράκοντα φακοὶ καὶ καταποθέντες ὠφελοῦσι.
παρηγορεῖ δὲ καὶ ποδάγραν σὺν ἀλφίτῳ ἑφθὸς κατε-
ψηθεὶς καὶ καταπλασθείς. μετὰ δὲ μέλιτος κόλπους κολ-
λᾷ. ἐσχάρας περιῤῥήττει καὶ ἕλκη ἀνακαθαίρει. σὺν ὄξει
δὲ ἑψηθεὶς σκληρώματα καὶ χοιράδας διαφορεῖ. σὺν μελι-
λώτῳ δὲ ἢ κυδωνίῳ. ὀφθαλμῶν φλεγμονὰς καὶ δακτυ-
λίου θεραπεύει. ῥοδίνου μιγνυμένου. ἐπὶ δὲ τῶν μειζόνων
ἐν δακτύλῳ φλεγμονῶν καὶ κόλπων μεγάλων, σὺν σιδί-
οις ἢ ῥόδοις ξηροῖς ἀφεψόμενος μιγνυμένου καὶ μέλιτος.
πρὸς νομὰς δὲ γαγγραινικὰς ὁμοίως. ἢ καὶ θαλάσσης μιγνυ-
μένης. πρὸς δὲ φλυκταίνας καὶ ἕρπητας καὶ ἐρυσιπέλα

τα καὶ χυμέθλας ὡς προείρηται. πρὸς δὲ χονδριῶντας μαστοὺς καὶ σπαργανώσεις ἑψόμενος ἐν θαλάττῃ ἁρμόζει καταπλασθείς.

Περὶ φασιόλου. κεφ. τιη.

Φασίολος φυσώδης. πνευμάτων κινητικός. δυσέκπεπτος. ἑψηθεὶς δὲ χλωρὸς καὶ ἐσθιόμενος, κοιλίας μαλακτικός. πρὸς δὲ ἐμέτους εὔθετος.

Περὶ ὀρόβου. κεφ. τιθ.

Ὄροβος. γνώριμος θαμνίσκος. στενόφυλλος. λεπτὸς, ἔχων σπέρματια ἐν λοβοῖς. ἐξ ὧν γίνεται τὸ καλούμενον ὀρόβινον ἄλευρον. ὃ πρὸς τὴν ἰατρικὴν χρῆσιν ἁρμόζει. ἔστι δὲ καρηβαρικός. κοιλίας ταρακτικὸς εἰ βρωθείη. αἷμα τε δι' οὔρων ἄγει. βόας δὲ λιπαίνει ἑφθὸς παρατιθέμενος. σκευάζεται δὲ τὸ ἐξ αὐτοῦ ὀρόβινον οὕτω. ἐκλέξας τοὺς εὐτρόφους καὶ λευκοὺς ῥαῖνε ὕδατι ἀναφυρῶν. ἐάσας τε ἐφ' ἱκανὸν συμπιεῖν, φρύγε ἄχρις ἂν περιρραγῇ ὁ φλοιός. εἶτα ἀλέσας καὶ διασείσας κοσκίνῳ λεπτῷ ἀπόθες. ἔστι δὲ εὐκοίλιον. οὐρητικόν. εὐχροίας ποιητικόν. πλεονασθὲν δὲ ἐν βρωτῷ ἢ ἐν ποτῷ, μετὰ στρόφων αἷμα ἄγει διὰ κοιλίας καὶ κύστεως. καθαίρει δὲ ἕλκη σὺν μέλιτι. καὶ φακοὺς καὶ ἐφήλεις καὶ σπίλους. καὶ τὸ λοιπὸν σῶμα. νομάς τε ἵστησι καὶ σκληρώματα καὶ γαγγραίνας. καὶ σκληρίας μαλάσσει τὰς ἐν μαστοῖς. καὶ θηριώδη καὶ ἄνθρακας καὶ κηρία περιρρήττει. φυραθεὶς δὲ σὺν οἴνῳ κυνόδηκτα καὶ ἀνθρωπόδηκτα καὶ ἐχιόδηκτα θεραπεύει καταπλασσόμενος. σὺν ὄξει δὲ δυσουρίας. καὶ στρόφους καὶ τεινεσμοὺς παύει. ἁρμόζει δὲ καὶ τοῖς ἀτροφοῦσι, καρύου μέγεθος φρυκτὸν ληφθὲν σὺν μέλιτι. τὸ δὲ ἀφέψημα αὐτοῦ καταντλούμενον, χυμέθλας καὶ κνησμοὺς τοὺς ἐν σώματι θεραπεύει.

Περὶ θέρμου. κεφ. τκ.

Θέρμος ἥμερος. γνώριμος. οὗ τὸ ἄλευρον σὺν μέλιτι ἐκλειχόμενον, ἕλμινθας ἐκτινάσσει. καὶ αὐτοὶ δὲ ἀποβραχέντες, καὶ ἔμπικροι ἐσθιόμενοι, τὰ αὐτὰ δρῶσι. καὶ τὸ ἀφέψημα αὐτῶν τὰ αὐτὰ ποιεῖ μετὰ πηγάνου καὶ πεπέρεως ποθέν. ὅ-

θεν καὶ

θεν καὶ σπληνικοὺς ὠφελεῖ. ἐπάντλημά τε γαγγραίνης ἐστὶ χρήσιμον. καὶ θηριωμάτων ψώρας ἀρχομένης. ἀλφῶν. σπίλων ἐξανθημάτων τε καὶ ἀχώρων. τὸ δ' αὐτὸ καὶ καταμηνίων καὶ ἐμβρύων ἐπισπαστικόν. μετὰ σμύρνης καὶ μέλιτος ἐν προσθέτῳ. καθαίρει δὲ τὸ ἄλευρον χρῶτα καὶ πελιώματα. καὶ φλεγμονὰς πραΰνει σὺν ἀλφίτῳ καὶ ὕδατι. σὺν ὄξει δὲ ἰσχιάδας παρηγορεῖ καὶ φύματα. χοιράδας δὲ μεταβάλλει ἐν ὄξει ἑψηθεὶς καὶ καταπλασθείς. καὶ ἄνθρακας περιρρήσσει. μεθ' ὕδατος δὲ ὀμβρείου ἑψηθέντες οἱ θέρμοι ἄχρι χυλώσεως, σμήχουσι τὸ πρόσωπον. μετὰ δὲ χαμαιλέοντος ῥίζης τοῦ μέλανος ἑψηθέντες, προβάτων ψώρας ἰῶνται. ἐκλελουμένων τῷ ἀφεψήματι χλιαρῷ. ἡ δὲ ῥίζα ἑψηθεῖσα σὺν ὕδατι καὶ ποθεῖσα, οὔρησιν κινεῖ. οἱ δὲ ἀπογλυκανθέντες λεῖοι σὺν ὄξει ποθέντες στομάχου ἄσην πραΰνουσι. καὶ ἀνορεξίαν ἰῶνται.

### Περὶ θέρμου ἀγρίου. Κεφ. τκα΄.

Γίνεται δὲ καὶ θέρμος ἄγριος. ἐμφερὴς τῷ ἡμέρῳ. κατὰ πάντα δὲ μικρότερος. ποιῶν ὅσα καὶ ὁ ἥμερος.

### Περὶ γογγύλης. Κεφ. τκβ΄.

Γογγύλης ἡ ῥίζα ἑφθή, τρόφιμος. πνευματική. σαρκὸς πλαδαρᾶς γεννητική. ἀφροδισίων παρορμητική. τὸ δὲ ἀφέψημα αὐτῆς, ποδάγρας καὶ χυμέθλων ἐστὶ κατάντλημα. καὶ αὐτὴ δὲ λεία καταπλασσομένη ὠφελεῖ. εἰ δέ τις ἐγγλύψας τὴν ῥίζαν κηρωτὴν ῥοδίνην ἐν αὐτῇ ἐπὶ θερμοσποδιᾶς τήξει, ποιεῖ πρὸς τὰ ἡλκωμένα χύμεθλα. ὁ δὲ ἐξ αὐτῆς ἀσπάραγος βιβρώσκεται ἑφθός. ἔστι δὲ διουρητικός. τὸ δὲ σπέρμα εἰς ἀντιδότους καὶ θηριακὰς ἀνωδύνους ἐντίθεται. βοηθεῖ δὲ καὶ τοῖς θανασίμοις ποθὲν παρορμᾷ καὶ πρὸς ἀφροδίσια. ἁλμευθεῖσα δὲ ἀτροφωτέρα γίνεται βιβρωσκομένη. τὰς μέντοι ὀρέξεις ἀναλαμβάνει.

### Περὶ γογγύλης ἀγρίας. Κεφ. τκγ΄.

Ἡ μέντοι ἀγρία γογγύλη, φύεται ἐν ἀρούραις. θάμνος πη-

χυαῖος τὸ ὕψος. πολύκλαδος. ἐξ ἄκρου λεῖος. φύλλα ἔχουσα λεῖα. δακτύλου τὸ πάχος. ἢ καὶ μείζονα. καρπὸν δὲ ἐν λοβοῖς καλυκώδεσιν. ἀνοιχθέντων δὲ τῶν περικαρπίων, ἔσωθεν ἄλλος κεφαλοειδής ἐστι λοβός. ἐν ᾧ σπερμάτια μέλανα. θραυσθέντα δὲ λευκὰ ἔνδοθεν. μίγνυται δὲ σμήγμασι προσώπου καὶ τοῦ ἄλλου χρωτός. ὅσα δι' ἀλεύρων γίνεται θερμίνων. ἢ πυρίνων ἢ αἰρίνων ἢ ὀροβίων.

Περὶ βουνιάδος. ΚΕΦ. ΤΚΔ.

Βουνιάς. καὶ ταύτης ἡ ῥίζα ἑφθή. φυσώδης ἐστίν. ἧττον δὲ εὔστομος. ποιεῖ γὰρ τὸ σπέρμα αὐτῆς ἀνενεργῆ τὰ θανάσιμα προπινόμενον. μίγνυται δὲ καὶ ἀντιδότοις. ἁλμεύεται καὶ ταύτης ἡ ῥίζα.

Περὶ ῥαφανίδος. ΚΕΦ. ΤΚΕ.

Ῥαφανίς. καὶ αὕτη πνευμάτων γεννητικὴ καὶ θερμαντική. εὔστομος. οὐκ εὐστόμαχος. ἐρευκτικὴ δέ ἐστι καὶ οὐρητική. εὐκοίλιος εἴ τις αὐτὴν ἐπιλαμβάνει μᾶλλον συνεργοῦσαν τῇ ἀναδόσει. προεσθιομένη δὲ μετεωρίζει τὴν τροφήν. ἁρμόζει δὲ καὶ τοῖς ἐμεῖν μέλλουσι προεσθιομένη. ἀκριβοῖ δὲ καὶ τὰς αἰσθήσεις. ἑφθὴ δὲ ποιεῖ λαμβανομένη βήσσουσι χρονίως. καὶ τοῖς πάχος γεννῶσιν ἐν θώρακι. ὁ δὲ φλοιὸς αὐτῆς μετ' ὀξυμέλιτος λαμβανόμενος, ἐμετικώτερος. ἁρμόζων ὑδρωπικοῖς. καταπλασθεὶς δὲ εὐθετεῖ καὶ σπληνικοῖς σὺν μέλιτι δὲ νομὰς ἐφίστησι καὶ ὑπώπια αἴρει. βοηθεῖ καὶ ἐχιοδήκτοις. εὔστομος, εὐστόμαχος, ἐρευτική, καὶ ἀλωπεκίας δασύνει. φακοὺς ἀποσμήχει σὺν αἰρίνῳ ἀλεύρῳ. βοηθεῖ καὶ τοῖς ἀπὸ μυκήτων πνιγομένοις καὶ ἔμμηνα ἄγει. τὸ δὲ σπέρμα αὐτῆς ἐμετικόν. οὐρητικόν. σπληνὸς καθαιρετικὸν πινόμενον μετ' ὄξους. συναγχικοῖς τε βοηθεῖ ἀφεψηθὲν σὺν ὀξυμέλιτι θερμῷ εἰς ἀναγαργάρισμα. καὶ πρὸς κεράστου δῆγμα σὺν οἴνῳ πινόμενον βοηθεῖ, ἐπιπλασθὲν δὲ μετ' ὄξους καὶ γαγγραίνας αὐτόνως περιχαράσσει.

Περὶ ῥαφανίδος ἀγρίας. ΚΕΦ. ΤΚϚ.

Ῥαφανὶς ἀγρία φύλλα ἔχει ὅμοια τῇ ἡμέρῳ. πρὸς τὰ τῆς λαμψάνης μᾶλλον. ῥίζα δὲ ἰσχνή. μαλακή. ὑπόδριμυς. λαχανεύε-

ται δὲ τὰ φύλλα καὶ ἡ ῥίζα ἑφθά. ἔστι δὲ θερμαντική. οὐρητική. καυματώδης.

Περὶ Σισάρου. Κεφ. τκζ.

Σίσαρον γνώριμον. οὗ ἡ ῥίζα ἑφθὴ, εὔστομος. εὐστόμαχος. οὐρητική. ὀρέξεως προκλητική.

Περὶ Λαπάθου. Κεφ. τκη.

Λάπαθον. τὸ μὲν αὐτοῦ ὀξυλάπαθον λέγεται. φυόμενον ἐν ἕλεσι. σκληρὸν κατὰ ἄκρα. ὑπόξυ. τὸ δέ τι κηπευτὸν οὐχ ὅμοιον τῷ προτέρῳ. τρίτον δ' ἐστὶν ἄγριον. μικρόν. παρόμοιον ἀρνογλώσσῳ. μαλακόν. ταπεινόν. ἔστι δὲ καὶ τέταρτον εἶδος αὐτοῦ. ὃ ἔνιοι ὀξαλίδα ἢ ἀναξυρίδα ἢ λάπαθον καλοῦσιν. οὗ φύλλα ὅμοια τῷ ἀγρίῳ καὶ μικρῷ λαπάθῳ. καυλὸς οὐ μέγας ἄποξυς. καρπὸς ἐρυθρὸς δριμὺς ἐπὶ τοῦ καυλοῦ. εἰσὶ παραφυάδες. πάντων δὲ τὸ λάχανον μαλάσσει κοιλίαν ἑψηθέν. ὠμὸν δὲ καταπλασσόμενον, μελικηρίδας σὺν ῥοδίνῳ ἢ κρόκῳ διαφορεῖ. τὸ δὲ σπέρμα τοῦ ἀγρίου καὶ τοῦ ὀξυλαπάθου καὶ τῆς ὀξαλίδος, πίνεται ὠφελίμως μεθ' ὕδατος ἢ οἴνου, πρὸς δυσεντερίας καὶ κοιλιακὰς διαθέσεις, καὶ ἄσην στομάχου. καὶ πρὸς σκορπίου πληγήν. καὶ εἰ προπίοι δέ τις οὐδὲν πείσεται πληγείς. αἱ δὲ ῥίζαι αὐτῶν ἑφθαὶ σὺν ὄξει καὶ ὠμαὶ καταπλασθεῖσαι, θεραπεύουσι λέπρας. λειχῆνας. ὄνυχας λεπρούς. δεῖ δὲ προανατρίβειν τὸν τόπον ἐν ἡλίῳ νίτρῳ καὶ ὄξει. πραΰνει δὲ καὶ κνησμοὺς τὸ ἀφέψημα αὐτῶν προσαντλούμενον. παρηγοροῦσι δὲ ὠταλγίαν καὶ ὀδονταλγίαν ἑψηθεῖσαι ἐν οἴνῳ καὶ διακλυζόμεναι. διαφοροῦσι καὶ χοιράδας καὶ παρωτίδας ἑφθαὶ σὺν οἴνῳ καταπλασθεῖσαι. σπλῆνα δὲ σὺν ὄξει. καὶ ἐνδέσματι δέ τινες χρῶνται ταῖς ῥίζαις πρὸς χοιράδας. περιάπτοντες τῷ τραχήλῳ, ἱστᾶσι καὶ ῥοῦν γυναικεῖον προστεθεῖσαι λεῖαι. ἀφεψηθεῖσαι δὲ σὺν οἴνῳ καὶ πινόμεναι, ἰκτερικοὺς ἀποθεραπεύουσι. καὶ λίθους τοὺς ἐν κύστει θρύπτουσιν. ἔμμηνά τε ἄγουσι. καὶ σκορπιοπλήκτοις βοηθοῦσιν.

Περὶ Ἱππολαπάθου. Κεφ. τκθ.

Ἱππολάπαθον λάχανόν ἐστι μέγα ἐν ἕλεσι γεννώμενον. δύνα

μην δὲ ἔχει τὴν αὐτὴν τοῖς προειρημένοις.

Περὶ λαμψάνης. Κεφ. τλ΄.

Λαμψάνη λάχανόν ἐστιν ἄγριον. τροφιμώτερον καὶ εὐστομαχώτερον τοῦ λαπάθου. οὗ τὰ φύλλα καὶ ὁ καυλὸς ἐσθίεται ἑφθά.

Περὶ βλίτου. Κεφ. τλα΄.

Βλῖτον. λαχανεύεται καὶ τοῦτο. ἔστι δὲ εὐκοίλιον. οὐδεμίαν ἔχον φαρμακώδη δύναμιν.

Περὶ μαλάχης. Κεφ. τλβ΄.

Μαλάχη. ἐδωδιμωτέρα μᾶλλον ἡ κηπευτὴ, τῆς χερσαίας. κακοστόμαχος δὲ καὶ εὐκοίλιος. καὶ μᾶλλον οἱ καυλοί. ἐντέροις δὲ καὶ κύστει ὠφέλιμοι. Δύναμιν δὲ ἔχει τὰ φύλλα ὠμὰ καταπλασθέντα καὶ μετὰ ὀλίγων ἁλῶν μασηθέντα αἰγίλωπια ἀνασκευάζειν σὺν μέλιτι. πρὸς μέντοι τὴν ἀπουλώσει, δίχα τῶν ἁλῶν χρηστέον αὐτῇ. ποιεῖ καὶ πρὸς μελισσῶν καὶ σφηκῶν πληγὰς καταπλασσομένη. κἂν προεγχρίσηται δέ τις αὐτὴν ὠμὴν λείαν σὺν ἐλαίῳ, ἄπληκτος διαμένει. μετὰ δὲ οὔρου καταπλασθεῖσα, ἰχῶρας καὶ πίτυρα ἰᾶται. ἑφθὰ δὲ λεῖα τὰ φύλλα καὶ σὺν ἐλαίῳ ἐπιτιθέμενα, πυρίκαυτα καὶ ἐρυσιπέλατα ὠφελεῖ. τὸ δὲ ἀφέψημα αὐτῆς μαλακτικὸν ἐγκάθισμα ὑστέρας. εἴς τε ἐνέματα. πρὸς δηγμοὺς ἐντέρων καὶ μήτρας καὶ δακτυλίου ἁρμόδιον. ὁ δὲ ζωμὸς σὺν ταῖς ῥίζαις βοηθεῖ ἑψόμενος πᾶσι τοῖς θανασίμοις. ἐξεραῖν δὲ δεῖ συνεχῶς πίνοντας. ὠφελεῖ δὲ καὶ φαλαγγιοδήκτοις. καὶ γάλα κατασπᾷ. ὁ δὲ καρπὸς μι ντος αὐτῷ λωτοῦ ἀγρίου σπέρματος, πινόμενος μετὰ οἴνου, τὰ περὶ κύστιν ἀλγήματα πραΰνει.

Περὶ ἀτραφάξυος. Κεφ. τλγ΄.

Ἀτράφαξις. οἱ δὲ, χρυσολάχανον. λάχανον γνώριμον. διττόν. τὸ μὲν, ἄγριον. τὸ δὲ, κηπευτόν. λαχανεύεται δὲ ἑφθόν. ἔστι δὲ κοιλίας μαλακτικόν. καταπλασσόμενον δὲ ὠμόν τε καὶ ἑφθὸν, φύγεθλα διαφορεῖ. ὁ δὲ καρπὸς αὐτοῦ πινόμενος μετὰ μελικράτου, ἴκτερον θεραπεύει.

Περὶ κράμβης. Κεφ. τλδ΄.

Κράμβη ἡ ἥμερος, εὐκοίλιος, ἀκρόζεστος ἐσθιομένη, καθεψηθεῖσα δὲ κοιλίαν ἵστησι. καὶ μᾶλλον ἡ δίσεφθος καὶ ἐν κονίᾳ ἑψηθεῖσα. κακοστόμαχος δὲ καὶ δριμυτέρα ἡ θερινή. ἡ δὲ ἐν αἰγύπτῳ διὰ πικρίαν ἄβρωτος. ἀμβλυωποῦσι δὲ βοηθεῖ καὶ τρομώδεσιν ἐσθιομένη. καὶ τὰς ἐκ κραιπάλης καὶ οἴνου κακίας σβεννύουσιν ἐπιλαμβανομένη. τὸ δὲ ἐξ αὐτῆς κύημα εὐστομαχώτερον μέν. δριμύτερον δὲ καὶ οὐρητικώτερον. ταριχευθὲν δὲ κακοστόμαχον. καὶ κοιλίας ταρακτικόν. ὁ δὲ χυλὸς αὐτῆς ὠμὸς μετὰ ἴρεως καὶ νίτρου καταπινόμενος, κοιλίαν μαλάττει. μετ᾽ οἴνου δὲ ποθεὶς ἐχιοδήκτοις βοηθεῖ. σὺν τηλίνῳ δὲ ἀλεύρῳ καὶ ὄξει, ποδαγρικοῖς καὶ ἀρθριτικοῖς. ἕλκεσί τε ῥυπαροῖς ἐπιπλαττόμενος καὶ παλαιοῖς ἁρμόζει. ἐγχεόμενός τε καθ᾽ ἑαυτὸν ταῖς ῥισί, κεφαλὴν καθαίρει. μετὰ δὲ αἰρίνου ἀλεύρου προστεθείς, καταμήνια ἄγει. τὰ δὲ φύλλα καταπλασσόμενα καθ᾽ ἑαυτὰ ἢ μετὰ ἀλφίτου λεῖα, ποιεῖ πρὸς πᾶσαν φλεγμονὴν καὶ οἰδήματα. καὶ ἐρυσιπέλατα δὲ καὶ ἐπινυκτίδας καὶ λέπρας ἰᾶται. μεθ᾽ ἁλῶν δὲ ἄνθρακας περιρρήττει. ἴσχει δὲ καὶ ῥύσιν τῶν ἐν κεφαλῇ τριχῶν. ἑψόμενα δὲ καὶ μιγνύμενα μέλιτι, πρὸς νομὰς γαγγραινῶν ποιοῦσι. ὠμὰ δὲ ἐσθιόμενα μετ᾽ ὄξους, σπληνικοὺς ὠφελεῖ. διαμασώμενα δέ, φωνῆς ἀποκοπὴν καθίστησι τοῦ χυλοῦ καταπινομένου. καὶ τὸ ἀφέψημα δὲ αὐτῆς, κοιλίαν καὶ ἔμμηνα κινεῖ πινόμενον. τὸ δὲ ἄνθος ἀτόκιον μετὰ τὴν ἀποκύησιν προστεθὲν ἐν πεσσῷ. τὸ δὲ σπέρμα μάλιστα τῆς ἐν αἰγύπτῳ γινομένης πινόμενον, ἕλμινθας ἐκτινάσσει. μίσγεται δὲ καὶ εἰς ἀντιδότους κοιλιακάς. πρόσωπόν τε ἀποκαθαίρει καὶ φακούς. οἱ δὲ καυλοὶ χλωροὶ καέντες σὺν ταῖς ῥίζαις καὶ ἀναληφθέντες στέατι χοιρείῳ παλαιῷ, πλευρᾶς χρόνια ἀλγήματα ἐπιτεθέντες παύουσιν.

Περὶ κράμβης ἀγρίας. Κεφ. ρλε΄.

Κράμβη ἀγρία φύεται ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον ἐν παραθαλασσίοις καὶ κρημνώδεσι τόποις. ἐοικυῖα τῇ ἡμέρῳ. λευκοτέρα δέ ἐστι καὶ δασυτέρα καὶ πικρά. τὸ δὲ κύημα αὐτῆς ἐν κονίᾳ ἑψηθὲν οὐκ ἄστομον. Δύναμιν δὲ ἔχει τὰ φύλλα καταπλασσόμε-

να, κολλητικὴν τραυμάτων, καὶ διαφορητικὴν οἰδημάτων τε καὶ φλεγμονῶν.

Περὶ κράμβης θαλασσίας. Κεφ. τλϛ΄.

*Fortasse haec erit q̄ vulgo soldanella appellāt*

Ἡ δὲ θαλασσία λεγομένη κράμβη, ἐξήλλακται τῷ παντὶ τῆς ἡμέρου. ἔχουσα φύλλα μακρὰ τῇ στρογγύλῃ ἀριστολοχίᾳ ὅμοια. ἐκπέφυκε δὲ ἕκαστον αὐτῶν ἀπὸ κλωνίων ὑπερύθρων. ἐξ ἑνὸς μόσχου ὥσπερ κισσός. ἔχει δὲ καὶ ὀπὸν λευκόν, οὐ πολύν. ἔστι δὲ τῇ γεύσει ὑφάλμυρος, καὶ ποσῶς ἔμπικρος. λιπαρὰ τὴν σύστασιν. ὅλη δὲ ἡ πόα, κακοστόμαχος, δριμεῖα. κοιλίας λυτικωτάτη ἑφθὴ βρωθεῖσα. συνέψουσι δὲ αὐτῇ ἔνιοι διὰ τὴν δριμύτητα τὰ λιπαρὰ τῶν κρεῶν.

Περὶ τεύτλου. Κεφ. τλζ΄.

Τεῦτλον διττόν ἐστιν. ὧν τὸ μὲν μέλαν σταλτικώτερον κοιλίας σὺν φακῇ ἑψηθέν. καὶ μᾶλλον ἡ ῥίζα. τὸ δὲ λευκὸν εὐκοίλιον. ἀμφότερα δὲ κακόχυμα διὰ τὸ ἐν αὐτοῖς νιτρῶδες. ὅθεν ὁ χυλὸς αὐτῶν καθαίρει κεφαλὴν ῥινὶ ἐγχεόμενος μετὰ μέλιτος. καὶ ὠταλγίας ὠφελεῖ. τὸ δὲ τῶν ῥιζῶν καὶ τῶν φύλλων ἀφέψημα, πιτύρων καὶ κονίδων σμηκτικόν. καὶ χυμέθλης πραϋντικὸν καταντλούμενον. ὠμοῖς δὲ τοῖς φύλλοις καταπλάσσειν δεῖ ἀλφοὺς προεκνιτρωθέντας. καὶ ἀλωπεκίας κατακνησθείσας. καὶ τὰ νεμόμενα ἕλκη. ἑφθὴ δὲ ἐξανθήματα καὶ πυρίκαυτα καὶ ἐρυσιπέλατα ἰᾶται.

Περὶ Ἀνδράχνης. Κεφ. τλη΄.

Ἀνδράχνη δύναμιν ἔχει στυπτικήν. καταπλασσομένη δὲ μετὰ ἀλφίτων, κεφαλῆς ἀλγήμασι καὶ ὀφθαλμῶν φλεγμοναῖς καὶ ταῖς ἄλλαις. καὶ στομάχου πυρώσεσι καὶ ἐρυσιπέλασι, καὶ κύστεως ἀλγήμασι βοηθεῖ. βρωθεῖσα δέ, αἱμωδίαν καὶ στομάχου καὶ ἐντέρων πύρωσιν καὶ ῥευματισμὸν πραΰνει. νεφρούς τε δακνομένους καὶ κύστιν εὖ διατίθησι. καὶ τὰς πρὸς συνουσίαν ὁρμὰς ἐκλύει. παραπλησίως δὲ καὶ ὁ χυλὸς αὐτῆς ἐνεργεῖ πινόμενος καὶ ἐν πυρετοῖς ποιῶν. καὶ πρὸς ἕλμινθας στρογγύλας. αἵματός τε πτύσιν καὶ δυσεντερίας. καὶ πρὸς αἱμορροΐδας καὶ αἱμορραγίας, πολύεφθος γινο

μένη. καὶ πρὸς σηπτῶν δήγματα. καὶ εἰς τὰ ὀφθαλμικὰ δὲ
χρησίμως μίγνυται. ἔγκλυσμά τε ἐστὶ ἐντέρων ῥευματιζο-
μένων. ἢ διαξεομένης μήτρας, καὶ πρὸς τὰς ἐξ ἐγκαύσεως
κεφαλαλγίας σὺν ῥοδίνῳ ἢ ἐλαίῳ ἔμβρεγμα. πρός τε τὰ
ἐν κεφαλῇ ἐξανθήματα, σὺν οἴνῳ σμῆγμα. πρὸς ῥαύμα-
τα δὲ σφακελίζοντα, σὺν ἀλφίτῳ καταπλασσομένη.

Περὶ Ἀνδράχνης ἀγρίας. Κεφ. τλθ´

Ἀνδράχνη ἀγρία λεγομένη. ἔχει αὕτη πλατύτερα φύλλα-
εια πρὸς τὰ τῆς ἀνδράχνης καὶ δασέα. φύεται ἐν πετρώδε-
σι τόποις. ἔστιν ὅτε καὶ ἐν κήποις. φύλλα ἔχει ὅμοια ἐλαίᾳ. μι-
κρότερα δὲ πολλῷ. πλείονα ἢ καὶ ἁπαλά. καυλία ἐρυθρά.
ἀπὸ μιᾶς ῥίζης πολλὰ ἐπὶ γῆν κεκλιμένα. μασσώμενα δὲ εὔ-
χυμα καὶ γλίσχρα καὶ ὑφάλμυρα. δύναμιν δὲ ἔχει θερμαν-
τικήν. δριμεῖαν. ἑλκωτικήν. χοιράδων διαφορητικὴν σὺν
ἀξουγγίῳ καταπλαττομένη.

Περὶ Ἀσπαράγου. Κεφ. τμ´.

Ἀσπάραγος πετραῖος ἢ μυάκανθα καλοῦσι. γνώριμος. τὸ
καυλίον ἑψηθέν, καὶ βρωθέν, κοιλίαν μαλάσσει καὶ οὖρα
κινεῖ. τῶν δὲ ῥιζῶν τὸ ἀφέψημα πινόμενον, βοηθεῖ δυσουροῦ-
σιν. ἰκτερικοῖς. νεφριτικοῖς. ἰσχιαδικοῖς. φαλαγγιοδήκτοις ἢ
μετ᾽ οἴνου ἀφεψόμενον. καὶ ὀδονταλγοῦσι δὲ κρατουμένου τοῦ
ἀφεψήματος ἐπὶ τῷ πονοῦντι ὀδόντι. ποιεῖ δὲ πρὸς τὰ αὐ-
τὰ καὶ τὸ σπέρμα πινόμενον. φασὶ δὲ καὶ τοὺς κύνας πιόν-
τας τὸ ἀφέψημα αὐτῶν ἀποθνήσκειν. ἔνιοι δὲ ἱστόρησαν ὅτι
ἐάν τις κριοῦ κέρατα συγκόψας κατορύξῃ, φύεται ἀσπά-
ραγος. ἐμοὶ δὲ ἀπίθανον. ὁ μέντοι ἀσπάραγος οὗτος, θά-
μνος ἐστὶ πολύκλαδος. φύλλα ἔχων πολλά. μακρά. ὅμοια μα-
ράθρῳ. ῥίζα στρογγύλη μεγάλη. ἔχουσα κόνδυλον. οὗ τινος τὸ
καυλίων λειούμενον μετὰ οἴνου λευκοῦ, παύει φρενίτιδας.
ἑφθὸς δὲ ἢ ὀπτὸς λαμβανόμενος, παύει στραγγουρίας καὶ δυ-
σουρίας. καὶ δυσεντερίας. ἡ δὲ ῥίζα αὐτοῦ ἑψηθεῖσα ἐν ὄξει
ἢ οἴνῳ, παύει στρέμματα. ἑφθὴ δὲ μετὰ σύκων καὶ ἐρεβίν-
θων λαμβανομένη, ἰᾶται ἴκτερον. καὶ παύει ἰσχιάδα καὶ
στραγγουρίαν. περιαπτομένη δὲ καὶ τὸ ἀπόζεμα αὐτῆς πινό-

μένον, ποιεῖ ἀτόκιον καὶ ἄγονον.

## Περὶ Ἀρνογλώσσου. Κεφ. τμα.

Ἀρνόγλωσσον διττόν ἐστι. τὸ μὲν μικρόν. τὸ δὲ, μεῖζον. ἔχει δὲ τὸ μὲν μικρὸν φύλλα στενώτερα καὶ μικρότερα. καὶ μαλακώτερα καὶ λειότερα καὶ λεπτότερα. καυλίῳ δὲ γωνιοειδεῖ κεκλιμένα ὡς ἐπὶ τὴν γῆν. ἄνθη ὠχρά. τὸ δὲ σπέρμα ἐπ' ἄκρων τῶν καυλῶν. Τὸ δὲ μεῖζον εὐερνέστερον. πλατύφυλλον. λαχανῶδες. καυλὸς δὲ ἐστι τούτου γωνιώδης. ὑπέρυθρος. ὕψος πήχεως. ἐκ μέσου μέχρι κορυφῆς σπέρματι περιεχόμενος λεπτῷ. ῥίζαι δὲ ὕπεισιν ἁπαλαί. δασεῖαι. λευκαί. πάχος δακτύλου. γεννᾶται δὲ πρὸς τοῖς τέλμασι καὶ φραγμοῖς καὶ ἐνίκμοις τόποις. εὐχρηστότερον δὲ τὸ μεῖζον. Δύναμιν δὲ ἔχει τὰ φύλλα ξηραντικὴν. στυπτικήν. ὅθεν καὶ καταπλασσόμενα πρὸς πάντα τὰ κακοήθη καὶ ἐλεφαντιῶντα ῥευματικὰ καὶ ἀκάθαρτα ἕλκη ἁρμόζει. ἴσχει δὲ καὶ αἱμορραγίαν. νομάς. ἄνθρακας. ἕρπητας. ἐπινυκτίδας. ἀπουλοῖ καὶ ἕλκη χρόνια καὶ ἀνώμαλα. καὶ τὰ χειρώνεια ἰᾶται. καὶ κόλπους παρακολλᾷ. καὶ τὰ κυνόδηκτα καὶ πυρίκαυστα. φλεγμονάς. παρωτίδας. φύγεθλα. χοιράδας δὲ καὶ αἰγίλωπας σὺν ἁλσὶν ἐπιπλασσόμενα ὠφελεῖ. ἑφθὸν δὲ τὸ λάχανον μεθ' ἁλῶν καὶ ὄξους λαμβανόμενον, δυσεντερικοῖς καὶ κοιλιακοῖς ἁρμόζει. δίδοται δὲ καὶ μετὰ φακῆς ἀντὶ σεύτλων συνεψόμενον. καὶ πρὸς λευκοφλεγματίαν μετὰ τὸ ξηροφαγῆσαι, μέση δίδοται ἡ πόα ἑφθή. ποιεῖ δὲ καὶ ἐπιληπτικοῖς, καὶ ἀσθματικοῖς διδομένη. ὁ δὲ χυλὸς τῶν φύλλων, τὰ ἐν στόματι ἕλκη ἀνακαθαίρει συνεχῶς διακλυζόμενος. σὺν δὲ κιμωλίᾳ ἢ ψιμμυθίῳ, ἰᾶται τὰ ἐρυσιπέλατα. σύριγγάς τε ἐγκλυζόμενος ὠφελεῖ. καὶ πρὸς ὠταλγίας καὶ ὀφθαλμίας ἐνσταζόμενος ὁ χυλός. καὶ κολλουρίοις μισγόμενος. καὶ πρὸς οὖλα αἱμασσόμενα. καὶ πρὸς αἷμα ἀνάγοντας πινόμενος. καὶ πρὸς δυσεντερικοὺς ἐγκλυζόμενος. πίνεται δὲ καὶ πρὸς φθίσιν καὶ πρὸς ὑστερικὰς πνίγας προστίθεται ἐν ἐρίῳ. καὶ ὑστέρᾳ ῥευματιζομένῃ. καὶ ὁ καρπὸς δὲ πινόμενος μετ' οἴνου, τοὺς τῆς κοιλίας ῥευματισμοὺς καὶ πτύσεις αἵματος

ἐπέχει. ἡ δὲ ῥίζα ἀφεψηθεῖσα καὶ διακλυζομένη καὶ διαμασωμένη, ὀδονταλγίας παύει. πρὸς δὲ τὰ ἐν κύστει ἕλκη καὶ νεφροῖς, δίδοται ἡ ῥίζα καὶ τὰ φύλλα μετὰ γλυκέος. φασὶ δὲ ῥίζας τρεῖς ποθείσας μετ᾽ οἴνου κυάθων τριῶν καὶ ὕδατος ἴσου, τριταίῳ βοηθεῖν. τεταρταίῳ δὲ τέσσαρας ῥίζας. ἔνιοι δὲ καὶ ἐν δέματι χρῶνται τῇ ῥίζῃ πρὸς χοιράδας καὶ διαφοροῦσιν.

Περὶ Σίου. κεφ. τμβ΄.

Σίον τὸ ἐν ὕδασιν. εὑρίσκεται ἐν τοῖς ὕδασι θαμνίον ὀρθὸν λιπαρόν. φύλλα ἔχον πλατέα ἱπποσελίνῳ ἐοικότα. μικρότερα δὲ καὶ ἀρωματίζοντα. ἅπερ ἐσθιόμενα ἑφθά τε, καὶ ὠμά, λίθους θρύπτει καὶ ἐκκρίνει. οὖρά τε κινεῖ. καὶ ἔμβρυα καὶ ἔμμηνα ἄγει. δυσεντερικοῖς τε χρήσιμα βρωθέντα. Κρατεύας δὲ ἱστορεῖ περὶ αὐτοῦ οὕτω. πόα θαμνοειδὴς ὀλίγη ἔχουσα φύλλα πολλὰ περιφερῆ μείζονα ἢ ἡδυόσμου, μέλανα. παρεγγίζοντα εὐζώμῳ.

Περὶ Σισυμβρίου. κεφ. τμγ΄.

Σισύμβριον. οἱ δὲ ἕρπυλλον ἀγρίαν καλοῦσιν. ἐν χέρσοις φύεται. ἔοικε δὲ ἡδυόσμῳ κηπαίῳ. πλατυφυλλότερον δὲ καὶ εὐωδέστερον. στεφανωματικόν. Δύναμιν δὲ ἔχει θερμαντικήν. ἁρμόζει δὲ πρὸς στραγγουρίας καὶ λιθιάσεις τὸ σπέρμα, σὺν οἴνῳ πινόμενον. καὶ στρόφους καὶ λυγμοὺς παύει. τὰ δὲ φύλλα ἐπιπλάσσεται πρὸς κεφαλαλγίαν κατὰ τῶν κροτάφων καὶ τοῦ μετώπου. πρός τε σφηκῶν πληγὰς καὶ μελιττῶν. ἵστησι δὲ καὶ ἐμέτους ποθέν.

Περὶ ἑτέρου σισυμβρίου. κεφ. τμδ΄.

Σισύμβριον ἕτερον. οἱ δὲ, καρδαμίνην. οἱ δὲ, καὶ τοῦτο σίον καλοῦσιν. ἔνυδρός ἐστι πόα. κατὰ τὰ αὐτὰ τῷ σίῳ γεννωμένη. καρδαμίνην δ᾽ ἔνιοι λέγουσι, διὰ τὸ ἐοικέναι καρδάμῳ τὴν γεῦσιν. φύλλα ἔχει τὸ μὲν πρῶτον περιφερῆ, αὐξόμενα δὲ σχίζεται ὡς τὰ τοῦ εὐζώμου. ἔστι δὲ θερμαντικόν. οὐρητικόν. βιβρώσκεται δὲ καὶ ὠμόν. ἀποκαθαίρει δὲ καὶ φακούς. καὶ ἐφήλιν καταπλασθέντα δι᾽ ὅλης τῆς νυκτός, ἕωθεν δὲ ἀποκλυσθέντος.

Περὶ κείθμου. Κεφ. τμε΄.

Κείθμον. οἱ δὲ, κρίταμον. θαμνῶδές ἐστι βοτάνιον, ἀμφιλαφὲς, περὶ πῆχυν τὸ ὕψος. φυόμενον ἐν πετρώδεσι καὶ παραθαλασσίοις τόποις. φύλλοις περιπλέων λιπαροῖς καὶ ὑπολεύκοις. τοῖς τῆς ἀνδράχνης παρεοικόσι. πλατυτέροις μέντοι καὶ ἐπιμηκεστέροις. ἁλμυρίζουσι δὲ πρὸς τὴν γεῦσιν. ἄνθη λευκά. τὸν δὲ καρπὸν ὥσπερ λιβανωτίδος μαλακόν. εὐώδη, στρογγύλον. ὃς ξηρανθεὶς διΐσταται. καὶ ἔνδον ὡς πυρὸν ἔχει τὸ σπέρμα. ῥίζας δὲ δακτύλου τὸ πάχος, τρεῖς ἢ τέσσαρας. εὐώδεις, ἡδείας. δύναται δὲ ὁ καρπὸς καὶ ἡ ῥίζα καὶ τὰ φύλλα ἀφεψηθέντα οἴνῳ καὶ πινόμενα, βοηθεῖν δυσουροῦσι καὶ ἰκτερικοῖς. κινεῖ καὶ καταμήνια. λαχανεύεται ἑφθόν τε καὶ ὠμὸν ἐσθιόμενον. καὶ ταριχεύεται ἐν ἅλμῃ.

Περὶ κορονώποδος. Κεφ. τμϛ΄.

Κορωνόπους. πρόμηκες βοτάνιον κατὰ τοῦ ἐδάφους ἐστρωμένον. κατεσχηματισμένον τὰ φύλλα. λαχανεύεται δὲ καὶ τοῦτο ἑφθόν. ῥίζαν λεπτὴν ἔχον. στυπτικήν. ἐσθιομένην. πρὸς κοιλιακοὺς ποιοῦσαν. γίνεται δὲ ἐν χέρσοις τόποις. καὶ ἐν δώμασι καὶ ἐν ταῖς ὁδοῖς.

Περὶ σόγχου. Κεφ. τμζ΄.

Σόγχου δύο εἴδη. τὸ μὲν, γάρ ἐστιν ἀγριοδέστερον καὶ ἀκανθωδέστερον. τὸ δὲ, τρυφερώτερον καὶ ἐδώδιμον. καυλὸς δὲ γωνιοειδὴς ἐνίοτε καὶ ὑπέρυθρος. φύλλα ἔχει ἐκ διαστημάτων ἐσχισμένα τὴν περιφέρειαν. δύναμις δὲ αὐτῶν ἐστι ψυκτική. μετρίως ὑποστύφουσα. ὅθεν στομάχῳ καυσουμένῳ. καὶ φλεγμοναῖς, καταπλασσόμενοι ἁρμόζουσιν. ὁ δὲ χυλὸς καταρροφούμενος, δηγμὸν στομάχου καταπραΰνει. καὶ γάλα κατασπᾷ. προστεθεὶς δὲ ἐν ἐρίῳ, δακτύλων καὶ μήτρας φλεγμοναῖς βοηθεῖ. ἡ δὲ πόα καὶ ἡ ῥίζα καταπλασθεῖσα σκορπιοπλήκτοις ἀρήγει. ὁ δὲ ἕτερος σόγχος ὁ καὶ τρυφερὸς, δενδρώδης ἐστί. καὶ πλατύφυλλος. τὰ δὲ φύλλα διεῖλε τὸν καυλόν. καὶ οὗτος δὲ τὰ αὐτὰ ποιεῖ.

Περὶ σέρεως. Κεφ. τμη΄.

Σέρις ἀγρία καὶ ἥμερος. ὧν ἡ μὲν ἀγρία, πικρὶς ἡ καὶ κιχώριον καλουμένη. ἡ δέ τις ἐστὶ καὶ πλατυφυλλοτέρα, καὶ εὐστομαχωτέρα τῆς κηπευτῆς. καὶ ταύτης δὲ διττὸν εἶδος. ἡ μὲν γάρ τις ἐστὶ θριδακωδεστέρα καὶ πλατύφυλλος. ἡ δὲ, στενόφυλλος καὶ ἔμπικρος. πᾶσαι δὲ στυπτικαί. ψυκτικαί. καὶ εὐστόμαχοι. ἱστᾶσι δὲ καὶ κοιλίαν ἑφθαί. μετ᾽ ὄξους λαμβανόμεναι. καὶ μάλιστα αἱ ἄγριαι εὐστομαχώτεραι. βρωθεῖσαι γὰρ, ἀτονοῦντα στόμαχον παρηγοροῦσι καὶ καυσούμενον. καταπλασσόμεναι δὲ σὺν ἀλφίτῳ καὶ καθ᾽ ἑαυτὰς καρδιακοῖς εἰσὶ χρήσιμοι. ποδάγραις καὶ ὀφθαλμῶν φλεγμοναῖς βοηθοῦσιν. ἡ δὲ πόα καὶ ἡ ῥίζα καταπλασθεῖσα, σκορπιοπλήκτοις ἀρήγει. καὶ ἐρυσιπέλατα σὺν ἀλφίτῳ ἰᾶται. σὺν ψιμμυθίῳ δὲ καὶ ὄξει ἐστὶν ὁ χυλὸς αὐτῶν ἐπίχρηστος τῶν ψύξεως δεομένων.

## Περὶ κονδρίλλης. κεφ. τμθ΄.

Κονδρίλλη. οἱ δὲ, καὶ τοῦτο κιχώριον καλοῦσιν ἢ σέριδα. τὰ μὲν φύλλα καὶ τὸν καυλόν. καὶ τὰ ἄνθη ἔχει κιχωρίῳ ὅμοια. ὅθεν καὶ εἶδος αὐτὸ τινὲς εἶπον σέριδος ἀγρίας λεπτότερον δὲ τὸ ὅλον. περὶ δὲ τοῖς κλωναρίοις αὐτοῖς εὑρίσκεται κόμμι ὅμοιον μαστίχῃ. μεγέθει κυαμιαῖα. ἅτινα προστεθέντα μετὰ σμύρνης λεῖα, ἐν ὀθονίῳ, μέγεθος ἐλαίας, ἔμμηνα ἄγει. ἡ δὲ πόα σὺν τῇ ῥίζῃ κοπεῖσα, εἰς τροχίσκους ἀναπλάσσεται μιγνυμένου μέλιτος. οἵτινες διεθέντες καὶ νίτρῳ μιχθέντες, ἀλφοὺς ἀποσμήχουσιν. ἀνακολλᾷ δὲ καὶ τρίχας τὸ κόμμι. καὶ ἡ ῥίζα δὲ πρόσφατος ποιεῖ εἰς τὰ αὐτά. βαπτομένης εἰς αὐτὴν βελόνης. καὶ προσαγομένης ταῖς θριξίν. ἁρμόζει δὲ καὶ πρὸς ἔχεις σὺν οἴνῳ πινομένη. καὶ κοιλίαν ἵστησιν ὁ χυλὸς αὐτῆς ἑψηθεὶς σὺν οἴνῳ καὶ ποθεὶς, καὶ καθ᾽ αὑτόν. ἔστι δὲ καὶ ἕτερον εἶδος χονδρίλλης φύλλον δὲ ἔχει περιβεβρωμένον. πρόμηκες. ἐπὶ γῆς ἐστρωμένον. καυλὸν δὲ ὀποῦ μεστόν. ῥίζαν δὲ λεπτὴν. ἔπακμον. κούφην. στρογγύλην. ὑπόξανθον. ὀποῦ μεστήν. Δύναμιν δὲ ἔχει ὁ καυλὸς καὶ τὰ φύλλα πεπτικήν. ὁ δὲ ὀπὸς τριχῶν τῶν ἐν βλεφάροις ἀνακολλητικός. φύεται δὲ ἐν γεώδεσι καὶ ἐργασίμοις χωρίοις.

Περὶ κολοκύνθης. Κεφ. τν'.

Κολόκυνθα ἐδώδιμος. ὠμὴ καταπλασθεῖσα λεία, οἰδήματα καὶ ἀποστήματα πραΰνει. τὸ δὲ ξέσμα αὐτῆς παιδίοις σειριῶσιν, ὠφελίμως κατὰ τοῦ βρέγματος καταπλάσσεται. καὶ πρὸς ὀφθαλμοῦ φλεγμονὰς καὶ ποδαγρικὰς ὁμοίως. ὁ δὲ χυλὸς τῶν ξυσμάτων θλιβέντων, πρὸς ὠταλγίας καθ' ἑαυτὸν καὶ μετὰ ῥοδίνου ἐγχυματιζόμενος ὠφελεῖ. καὶ πρὸς καυσουμένων ἐπιφάνειαν ἐγχριόμενος ὠφελεῖ. ὅλης δὲ αὐτῆς ἀποζεσθείσης καὶ ἐκθλιβείσης ὁ χυλὸς πινόμενος μετὰ μέλιτος βραχέος καὶ νίτρου, κοιλίαν λύει κούφως. καὶ εἴ τις κοιλάνας αὐτὴν ὠμὴν, ἐγχέας τε οἶνον καὶ ἐξαιθριάσας, κεράσας τε πίῃ νῆστις, μαλάττει κοιλίαν κούφως.

Περὶ ἡμέρου σικύου. Κεφ. τνα'.

Σίκυος ἥμερος. εὐκοίλιος. εὐστόμαχος. ψυκτικός. οὐ φθειρόμενος. κύστει ἁρμόδιος. ἀνακτητικὸς λειποθυμιῶν ὀσφραινόμενος. καὶ τὸ σπέρμα αὐτοῦ μετρίως οὐρητικὸν ἁρμόζον σὺν γάλακτι ἢ γλυκεῖ πρὸς τὰς ἐν κύστει ἑλκώσεις. τὰ δὲ φύλλα αὐτοῦ σὺν οἴνῳ καταπλασθέντα, κυνόδηκτα ἰᾶται. σὺν μέλιτι δὲ ἐπινυκτίδας.

Περὶ πέπονος. Κεφ. τνβ'.

Ἡ δὲ τοῦ πέπονος σὰρξ καὶ αὐτὴ οὐρητικὴ ἐσθιομένη. καταπλασθεῖσα δὲ ὀφθαλμοῦ φλεγμονὰς πραΰνει. τὸ δὲ βρέγμα αὐτοῦ σειριῶσι παιδίοις κατὰ τοῦ βρέγματος ἐπιτίθεται, καὶ ῥευματιζομένοις ὀφθαλμοῖς ἀντὶ ἀνακολλήματος κατὰ τοῦ μετώπου. ὁ δὲ χυλὸς σὺν τῷ σπέρματι μιγεὶς ἀλεύρῳ καὶ ξηρανθεὶς ἐν ἡλίῳ, σμῆγμα γίνεται ῥυπτικὸν καὶ λαμπρυντικὸν προσώπου. ἡ δὲ ῥίζα ξηρὰ ποθεῖσα σὺν ὑδρομέλιτι < ὁλκῇ, ἐμέτους κινεῖ. εἰ δέ τις πραέως ἀπὸ δείπνου ἐμέσαι θελήσειεν, ἀρκέσουσιν ὀβολοὶ β'. ὑγιάζει δὲ καὶ κηρία καταπλασθεῖσα μετὰ τοῦ μέλιτος.

Περὶ θρίδακος ἡμέρου. Κεφ. τνγ'.

Θρίδαξ ἥμερος. εὐστόμαχος ὑποψύχουσα. ὑπνοτική. κοιλί

ας μαλακτική. γάλακτος καταπαστική. ἑψηθεῖσα δὲ γίνεται τροφιμωτέρα. ἄπλυτος δὲ ἐσθιομένη, στοματικοῖς ἁρμόζει. τὸ δὲ σπέρμα αὐτοῦ πινόμενον, τοῖς συνεχῶς ὀνειρώττουσι βοηθεῖ. καὶ συνουσίαν ἀποστρέφει. αὗται δὲ συνεχῶς ἐσθιόμεναι, ἀμβλυωπίας εἰσὶ ποιητικαί. ταριχεύονται δὲ ἐν ἅλμῃ. ἐκκαυλίσασαι δὲ, ἔχουσί τι παρεμφερὲς τῇ τοῦ χυλοῦ καὶ ὀποῦ δυνάμει τῆς ἀγρίας θρίδακος.

Περὶ ἀγρίας θρίδακος. Κεφ. τνδ'.

Η δ' ἀγρία θρίδαξ, ἔοικε τῇ ἡμέρῳ, καυλωδεστέρα δὲ καὶ τοῖς φύλλοις λευκοτέρα. καὶ ἰσχνοτέρα καὶ τραχυτέρα ὑπάρχουσα. πικρὰ δὲ πρὸς τῇ γεύσει. ὁμοιοῦται δὲ κατὰ πᾶσαν τὴν δύναμιν μήκωνι. ὅθεν καὶ τὸν ὀπὸν αὐτῆς ἔνιοι μίσγουσι τῷ μηκωνίῳ. καθαίρει δὲ μετ' ὀξυκράτου ποθεὶς ὁ ὀπὸς δυοῖν ὀβολῶν ὁλκῇ, ὑδατώδη κατὰ κοιλίαν, ἀποκαθαίρει δὲ καὶ ἄργεμα καὶ ἀχλύν. ποιεῖ καὶ πρὸς ἐπικαύσεις ἐγχριομένη σὺν γυναικείῳ γάλακτι. ἔστι δὲ καθόλου ὑπνωτικὴ καὶ ἀνώδυνος. ἄγει δὲ ἔμμηνα. ποτίζεται δὲ καὶ πρὸς σκορπιοπλήκτους καὶ φαλαγγιοδήκτους. τὸ δὲ σπέρμα ὥσπερ τὸ τῆς ἡμέρου ποθὲν, ὀνειρωγμοὺς καὶ συνουσίαν ἀποστρέφει. δύναται δὲ καὶ ὁ χυλὸς πρὸς τὰ αὐτά. ἀσθενέστερος μέντοι. ἀποτίθεται δὲ ὁ ὀπὸς ἐν κεραμίοις ἀγγείοις προηλιαζόμενος ὥσπερ καὶ τὰ λοιπὰ χυλίσματα.

Περὶ γιγγιδίου. Κεφ. τνε'.

Γιγγίδιον, οἱ δὲ, λεπίδιον. φύεται πλεῖστον ἐν Κιλικίᾳ τε καὶ Συρίᾳ. βοτάνιον σταφυλίνῳ μὲν ἐοικὸς ἀγρίῳ. λεπτότερον δὲ καὶ πυκνότερον. ῥίζιον ὑπόλευκον. πικρίζον. λαχανεύεται δὲ ὠμόν τε καὶ ἑφθόν. καὶ ταριχευθὲν ἐσθίεται. ἔστι δὲ εὐστόμαχον. οὐρητικόν. καὶ τὸ ἀφέψημα αὐτοῦ πινόμενον μετὰ οἴνου κύστει χρήσιμον.

Περὶ σκάνδικος. Κεφ. τνϛ'.

Σκάνδιξ. καὶ τοῦτο ἄγριον λάχανον. ὑπόδριμυ. καὶ ἔμπικρον. ἐδώδιμον. ἑφθὸν καὶ ὠμὸν ἐσθιόμενον. εὐκοίλιον καὶ εὐστόμαχον. τὸ δὲ ἀφέψημα αὐτοῦ κύστει χρήσιμον καὶ νεφροῖς πινόμενον καὶ ἥπατι.

Περὶ καυκαλίδος. Κεφ. τνζ'.

Καυκαλίς. ἔνιοι δὲ δαῦκον ἄγριον καλοῦσι, καυλίον ἐστὶ σπιθαμιαῖον ἢ καὶ μεῖζον. ὑπόδασυ. φύλλα ἔχον μαράθρῳ ὅμοια πολυσχιδῆ. δασέα. καὶ ἐπ' ἄκρου σκιάδιον λευκόν. εὐῶδες. λαχανεύεται δὲ καὶ τοῦτο ὠμόν τε καὶ ἑφθὸν ἐσθιόμενον. ἔστι δὲ διουρητικόν.

Περὶ εὐζώμου. Κεφ. τνη'.

Εὔζωμον. τοῦτο ὠμὸν πλεῖον βρωθέν, συνουσίαν παρορμᾷ. καὶ τὸ σπέρμα δὲ αὐτοῦ τὸ αὐτὸ ποιεῖ. οὐρητικὸν ὑπάρχον καὶ πεπτικὸν καὶ εὐκοίλιον. χρῶνται δὲ τῷ σπέρματι αὐτοῦ καὶ εἰς τὰς ἀρτύσεις. ἀποτίθενται δὲ αὐτὸ πρὸς τὸ πλείονα διαμένειν χρόνον, ὄξει φυρῶντες ἢ γάλακτι. καὶ ἀναπλάσσοντες τροχίσκους. Γίνεται δὲ καὶ ἄγριον εὔζωμον. μάλιστα ἐν τῇ κατὰ τὴν ἑσπέραν Ἰβηρίᾳ. οὗ τῷ σπέρματι καὶ ἀντὶ σινήπεος οἱ τῇδε ἄνθρωποι χρῶνται. ἔστι δὲ διουρητικώτερον καὶ δριμύτερον πολλῷ τοῦ ἡμέρου.

Περὶ ὠκίμου. Κεφ. τνθ'.

Ὤκιμον. γνώριμον βιβρωσκόμενον πολὺ, ἀμβλυωπές ἐστιν. ἔστι δὲ κοιλίας μαλακτικόν. πνευμάτων κινητικόν. οὐρητικόν. γάλακτος προκλητικόν. δυσμετάβλητον. καταπλασσόμενον δὲ σὺν ἀλφίτου παιπάλῃ. καὶ ῥοδίνῳ καὶ ὄξει, φλεγμοναῖς βοηθεῖ. καὶ δράκοντος θαλασσίου καὶ σκορπίου πληγῇ. καθ' ἑαυτὸ δὲ σὺν οἴνῳ χίῳ, πρὸς ὀφθαλμῶν ὀδύνας. ὁ δὲ χυλὸς αὐτοῦ ἀποκαθαίρει ἀχλῦς τὰς ἐν ὀφθαλμοῖς. καὶ τὰ ῥεύματα ξηραίνει. τὸ δὲ σπέρμα πινόμενον, ἁρμόζει τοῖς μέλαιναν χολὴν γεννῶσι καὶ δυσουροῦσι καὶ πνευματουμένοις. ποιεῖ δὲ καὶ πταρμοὺς πλείονας ἀνασπώμενον διὰ ὀσφρήσεως. καὶ ἡ πόα δὲ τὸ αὐτὸ ποιεῖ. συμπιέζειν δὲ τοὺς ὀφθαλμοὺς δεῖ ἐπιόντος τοῦ πταρμοῦ. φυλάσσονται δέ τινες αὐτὸ καὶ οὐκ ἐσθίουσι, διὰ τὸ μασσηθὲν καὶ τεθὲν ἐν ἡλίῳ, σκωλήκια γεννᾶν. λίβυες δὲ προσειλήφασιν ὅτι οἱ φαγόντες αὐτὸ καὶ πληγέντες ὑπὸ σκορπίου, ἄπονοι διαμένουσιν.

Περὶ ὀροβάγχης. Κεφ. τξ'.

Ὀροβάγχη. καυλίον ἐστὶν ὑπέρυθρον ὡς δισπιθαμιαῖον. ἐνίοτε

δὲ καὶ μεῖζον. φύλλοις ὑπολίπαρον. ἔνδασυ. ζυφερόν. ἄνθεσιν ὑπολεύκοις ἢ μηλίζουσι κεχρημένον. ῥίζα δὲ ὕπεστι δακτύλου τὸ πάχος κατατετραμμένη πρὸς τὴν τοῦ καυλοῦ ξηρασίαν. δοκεῖ δὲ φυόμενον ἐν ὀσπρίοις τισὶ πνίγειν αὐτά. ὅθεν καὶ τὴν προσωνυμίαν ἔσχηκε. λαχανεύεται δὲ καὶ ὠμὸν καὶ ἑφθὸν, ἐκ λοπάδος ὡς ἀσπάραγος ἐσθιόμενον. καὶ ὀσπρίοις συνεψηθὲν, τάχιον αὐτὰ δοκεῖ ἕψειν.

Περὶ Τραγοπώγωνος. Κεφ. τξά.

Τραγοπώγων ἢ τετραπώγων. οἱ δὲ, κόμην καλοῦσι. καυλὸς βραχύς. φύλλα κρόκῳ ὅμοια. ῥίζα μακρὰ γλυκεῖα. ἐπὶ δὲ τοῦ καυλοῦ κάλυξ μέγας. καὶ ἐξ ἄκρου καρπὸς μέλας. ἀφ᾽ οὗ καὶ τὸ ὄνομα ἔσχων. ἔστι δὲ ἡ πόα ἐδώδιμος.

Περὶ Ὀρνιθογάλου. Κεφ. τξβ́.

Ὀρνιθόγαλον. καυλίον ἐστὶ ζυφερόν. λεπτόν. ὑπόλευκον ὡς δισπιθαμιαῖον. ἄνω παραφυάδας ἔχον. τρεῖς ἢ τέσσαρας ἁπαλάς. ἀφ᾽ ὧν ἄνθη ἔξωθεν μὲν βοτανώδη. διανοιχθέντα δὲ γαλακτίζοντα. καὶ μεταξὺ αὐτῶν κεφάλιον ὡς κάγχρυ ἐντετμημένον. μετὰ ἄρτου συνοπτόμενον ὡς μελάνθιον. ῥίζα δὲ βολβώδης. ἐσθιομένη ὠμή τε καὶ ἑφθή.

Περὶ Ὕδνου. Κεφ. τξγ́.

Ὕδνον ῥίζα ἐστὶ περιφερής. ἄφυλλος. ἄκαυλος. ὑπόξανθος. ἔαρος ὀρυττομένη. ἐδώδιμος δέ ἐστιν ὠμή τε καὶ ἑφθὴ ἐσθιομένη.

Περὶ Σμίλακος. Κεφ. τξδ́.

Σμίλαξ κηπαία. ἧς ὁ καρπὸς λόβια. ὑπ᾽ ἐνίων δὲ ἀσπάραγος καλεῖται. φύλλα ἔχει κισσῷ ὅμοια. μαλακώτερα μέντοι. καυλοὺς δὲ λεπτοὺς καὶ ἕλικας περιπεπλεγμένους τοῖς παρακειμένοις θαμνίοις. αὐξανομένας τε ἐφ᾽ ἱκανόν. ὥς τε καὶ σκηνοποιεῖσθαι. καρπὸν δὲ φέρει ὅμοιον τήλει. μακρότερον δὲ καὶ ἐπισημότερον ἐν οἷς σπέρματα ὅμοια νεφροῖς. οὐκ ἰσόχροα. ἐκ μέρους δὲ ὑποπυρίζοντα. λαχανεύεται δὲ εἰς βρῶσιν ὁ καρπὸς ἑψόμενος σὺν τῷ σπέρματι ὡς ἀσπάραγος. οὐ

ἐρητικὸς ὢν καὶ δυσόνειρος.

## Περὶ Μηδικῆς. Κεφ. τξε.

Μηδική. ἔοικε μὲν ἄρτι φυομένη τριφύλλῳ τῷ ἐν χορτοκοπίοις. προάγουσα δὲ στενοφυλλοτέρα γίνεται. καυλοὺς ἀνιεῖσα τριφύλλῳ ὁμοίους. ἐφ' οἷς τὸ σπέρμα προσπέφυκε φακοῦ τὸ μέγεθος. ἐπεστραμμένον ὡς κεράτιον. ὅπερ ξηρανθὲν, μίγνυται ἡδύσματος χάριν τοῖς ἀρτυτοῖς ἁλσί. χλωρὸν δὲ καταπλασθὲν ὠφελεῖ τὰ ψύξεως δεόμενα. ὅλῃ δὲ τῇ πόᾳ χρῶνται οἱ κτηνοτρόφοι ἀντὶ ἀγρώστεως.

## Περὶ Ἀφάκης. Κεφ. τξϛ.

Ἀφάκη. θαμνίον ἐστὶ φυόμενον ἐν ἀρούραις, φακοῦ ὑψηλότερον, λεπτόφυλλον. τὰ δὲ ἐπ' αὐτοῦ φυόμενα μείζονα θυλάκια τοῦ φακοῦ περιεκτικὰ τῶν σπερματίων τριῶν ἢ τεσσάρων μεγάλων καὶ μικροτέρων φακοῦ. δύναμιν δὲ ἔχει τὰ σπερμάτια στυπτικήν. ὅθεν ἵστησι καὶ ῥεῦμα κοιλίας καὶ στομάχου φρυττόμενα καὶ ἐρεικόμενα καὶ ἑψόμενα ὥσπερ φακός.

## Περὶ Πράσου κεφαλωτοῦ. Κεφ. τξζ.

Πράσον κεφαλωτόν. φυσῶδες, κακόχυμον, δυσόνειρον, οὐρητικὸν, εὐκοίλιον, λεπτυντικὸν, ἀμβλυωπίας ποιητικὸν, καταμηνίων ἀγωγὸν, βλαπτικὸν κύστεως ἡλκωμένης καὶ νεφρῶν. συνεψηθὲν δὲ πτισάνῃ καὶ βρωθὲν ἀνάγει τὰ ἐκ θώρακος. ἡ δὲ κόμη αὐτοῦ ἑψηθεῖσα ἐν θαλάσσῃ καὶ ὄξει, εἰς ἐγκάθισμα χρησιμεύει πρὸς μύσιν καὶ σκληρίαν ὑστέρας. ἀπογλυκαίνεται δὲ καὶ ἀφυσότερον γίνεται δυσὶν ὕδασιν ἑψηθέν. καὶ ἀποβρεχὲν ἐν ὕδατι ψυχρῷ. ὁ δὲ καρπὸς δριμύτερος ἔχων τι καὶ στύψεως. ὅθεν αἷμα ὁ χυλὸς αὐτοῦ ἵστησι σὺν ὄξει. καὶ μάλιστα τὸ ἐκ μυκτήρων φερόμενον, μάννης ἢ λιβανωτοῦ μιγέντος. ἀφροδίσιά τε παρορμᾷ. καὶ πρὸς τὰ ἐν θώρακι πάντα σὺν μέλιτι ἀντὶ ἐκλεικτοῦ ποιεῖ καὶ πρὸς φθίσεις βρωθέν. καθαίρει δὲ καὶ τὴν ἀρτηρίαν, ἐσθιόμενον δὲ συνεχῶς ἀμαυρωτικὸν ὄψεως γίνεται. κακοστόμαχον δὲ ἐστίν. ἀρήγει καὶ θηριοδήκτοις σὺν μέλιτι πινόμενος ὁ χυλός. καὶ αὐτὸ δὲ καταπλασσόμενον ὠφελεῖ. βοηθεῖ καὶ ὠταλγίαις

ὁ χυλὸς καὶ ἡ χρῖσις. σὺν ὄξει καὶ λιβανωτῷ καὶ γάλακτι ἢ ῥοδίνῳ ἐνσταγείς. αἴρει δὲ καὶ ἰόνθους τὰ φύλλα μετὰ ῥοῦ τοῦ ἐπὶ τὰ ὄψα καταπλασθέντα. καὶ ἐπινυκτίδας ἰᾶται. ἐσχάρας τε περιρρήττει σὺν ἅλσιν ἐπιπλαττόμενον. τοῦ μέντοι σπέρματος < β΄. μετὰ μύρτων ἴσων ποθεῖσαι, τὰς χρονίους ἀναγωγὰς τοῦ αἵματος ἐπέχουσιν.

## Περὶ ἀμπελοπράσου. Κεφ. τξη΄.

Ἀμπελόπρασον, κακοστομαχώτερον τοῦ πράσου. θερμαντικώτερον δὲ καὶ οὐρητικώτερον. καταμηνίων ἀγωγόν. θηριοδήκτοις δὲ βιβρωσκόμενον ἁρμόζει.

## Περὶ κρομμύων. Κεφ. τξθ΄.

Κρόμμυον. δριμύτερον τὸ μακρὸν τοῦ στρογγύλου. καὶ τὸ ξανθὸν τοῦ λευκοῦ. καὶ τὸ ξηρὸν τοῦ χλωροῦ. καὶ τὸ ὠμὸν τοῦ ὀπτοῦ καὶ ταριχηροῦ. ἔστι δὲ ἅπαντα δηκτικὰ καὶ πνευματωτικά. ὀρέξεως ἐκκλητικά. λεπτυντικά. διψώδη. ἀσώδη. ἀνακαθαρτικά. εὐκοίλια. ἀναστομωτικὰ ἐκκρίσεων τῶν τε ἄλλων καὶ αἱμορροΐδων. ἀντὶ βαλάνου δὲ προστίθεται λεπισθέντα καὶ εἰς ἔλαιον ἐμβληθέντα. ὁ δὲ χυλὸς ἐγχριόμενος σὺν μέλιτι βοηθεῖ ἀμβλυωποῦσιν. ἀργέμοις, νεφελίοις, καὶ ἀρχομένοις ὑποχεῖσθαι. καὶ συναγχικοῖς διαχρισθείς. κινεῖ τε καταμήνια καὶ ἄγει. ἐγχυτίς τε καθαρτικὸς διὰ ῥινὸς κεφαλῆς. κυνοδήκτοις δὲ καταπλάσμα μεθ᾽ ἁλὸς καὶ πηγάνου καὶ μέλιτος. σὺν ὄξει δὲ ἐν ἡλίῳ καταχρισθεὶς ἀλφοὺς ἰᾶται. μετ᾽ ἴσου δὲ σποδίου ψωροφθαλμίας παύει, καὶ ἰόνθους σὺν ἁλσὶ στέλλει. σὺν ὀρνιθείῳ δὲ στέατι πρὸς ἐκτρίμματα ὑποδημάτων χρήσιμος. καὶ πρὸς ῥύσιν κοιλίας καὶ δυσηκοΐαν καὶ συριγμούς. καὶ πυορροοῦντα ὦτα. καὶ πρὸς τὰς ἀπολήψεις τῶν ὑδάτων τῶν ἐν τοῖς ὠσὶν ἁρμόζει. καὶ πρὸς ἀλωπεκίας παρατριβόμενος. τάχιον γὰρ ἀλκυονίου προσκαλεῖται τρίχας. ἔστι δὲ τὸ κρόμμυον κεφαλαλγὲς πλεῖον βρωθέν. ἑψηθὲν δὲ οὐρητικώτερον γίνεται. πλέον δὲ ἐσθιόμενον ἐν νόσοις ληθάργους ποιεῖ. ὀπτὸν τοίνυν ἑψηθέν. ἑφθόν. καὶ καταπλασθὲν σὺν σταφίδι ἢ σύκῳ, φύ-

ματα περιτεθὲν καὶ διαῤῥήγνυσι.

Περὶ Σκορόδου. Κεφ. το'.

Σκόροδον. τὸ μέν, ἐστιν ἥμερον καὶ κηπευτόν, καὶ τὸ ἐν αἰγύπτῳ μονοκέφαλόν ἐστιν. καλοῦσι δὲ τὰς ἐν αὐτῷ ῥᾶγας ἄγλιθας. ἔστι δὲ καὶ ἄλλο ἄγριον ὀφιόσκορδον καλούμενον. Δύναμιν δὲ ἔχει δριμεῖαν. θερμαντικήν. ἑλκτικὴν φυσῶν. καὶ κοιλίας ταρακτικήν. ξηραντικὴν στομάχου. δίψης ποιητικήν. ἐμπνευματώσεως ἀλλοιωτικήν. καὶ ἐπιφανείας ὀμμάτων ἀμβλυωτικήν, βιβρωσκόμενον. καὶ πρὸς τοὺς ξενισμοὺς τῶν ὑδάτων ἁρμόζει. ἀρτηρίας λαμπρύνει. καὶ βῆχας χρονίας παρηγορεῖ. ὠμόν τε καὶ ἑφθὸν ἐσθιόμενον. φθεῖρας δὲ καὶ κόνιδας φθείρει σὺν ἀφεψήματι ὀριγάνου πινόμενον. καυθὲν δὲ καὶ μέλιτι φυραθέν, ὑπώπια καὶ ἀλωπεκίας ἰᾶται καταχριόμενον. ἐπὶ δὲ τῶν ἀλωπεκιῶν σὺν ναρδίνῳ μύρῳ καὶ ἁλσὶ καὶ ἐλαίῳ, ἐξανθήματα θεραπεύει. ἀφίστησι δὲ καὶ ἀλφοὺς καὶ λειχῆνας καὶ φακούς. ἀχῶράς τε καὶ πίτυρα καὶ λέπρας σὺν μέλιτι. μετὰ δαδίου δὲ καὶ λιβανωτοῦ ἑψηθέν, ὀδονταλγίαν διακρατούμενον ἐν τῷ στόματι κουφίζει. μυγαλῆς τε ἐστὶ κατάπλασμα σὺν συκῆς φύλλοις καὶ κυμίνῳ. τῆς δὲ κόμης τὸ ἀπόζεμα ἐγκάθισμα ἐμμηνίων καὶ δευτέρων ἀγωγόν. πρὸς τὸ αὐτὸ δὲ καὶ ὑποθυμιᾶται. τὸ δὲ ἐξ αὐτοῦ καὶ τῆς μελαίνης ἐλαίας γινόμενον τρίμμα, καλούμενον δὲ μύστον, οὔρησιν κινεῖ καὶ ἀναστομοῖ. χρήσιμον δὲ καὶ ὑδρωπικοῖς ἐστιν.

Περὶ Σκοροδοπράσου. Κεφ. τοα'.

Σκοροδόπρασον φύεται ὡς πράσον μέγα. μετέχον τῆς τοῦ σκορόδου καὶ τοῦ πράσου ποιότητος. ὅθεν καὶ τὴν δύναμιν μικτὴν ἔχει ποιοῦν ὅσα καὶ τὸ σκόροδον καὶ τὸ πράσον. ἀνειμένως μέντοι. λαχανεύεται δὲ εἰς βρῶσιν ὡς τὸ πράσον ἑψόμενον καὶ ἀπογλυκαινόμενον.

Περὶ Σινήπεως. Κεφ. τοβ'.

Σίνηπι ἢ νάπυ. ἐκλέγου τὸ μὴ κατάξηρον καὶ κατάπυῤῥον. ἁδρόν. ἀλλ' ὃ δὴ θλασθέν, ἔνδοθεν χλωρὸν καὶ οἱονεὶ ἔγχυλον. γλαυκόν. πρόσφατον γὰρ καὶ ἀκμαῖον τὸ τοιοῦτον. δύναται δὲ θερμαίνειν, λεπτύνειν, ἐπισπᾶσθαι, ἀποφλεγμα-

πτίζειν διαμασσηθέν. μιγεὶς δὲ ὁ χυλὸς αὐτοῦ ὑδρομέλιτι, πρὸς ἀντιάδας καὶ τὰς χρονίους τραχύτητας τῆς ἀρτηρίας καὶ τυλώδεις, ἀναγαργαριζόμενος ἁρμόζει. προστεθὲν δὲ τοῖς μυκτῆρσι λεῖον, πταρμοὺς κινεῖ. ἐπιληπτικοῖς τε βοηθεῖ. καὶ ὑστερικῶς πνιγομένας διεγείρει. καὶ ἰᾶται ληθαργικῶν καταπλάττεται ξυρηθείσαις τῆς κεφαλῆς. μιγὲν δὲ σύκοις καὶ ἐπιτεθὲν ἄχρι φοινίξεως, ἁρμόζει πρὸς ἰσχιάδας καὶ σπλῆνας. καὶ καθόλου εἰς πᾶν χρόνιον ἄλγημα. ὅπου μετάγειν τι ἐκ τοῦ βάθους εἰς τὴν ἐπιφάνειαν βουλόμεθα τῷ τῆς ἑτεροπαθείας λόγῳ. θεραπεύει καὶ ἀλωπεκίας καταπλασθέν. πρόσωπον δὲ καθαίρει. καὶ ὑπώπια αἴρει σὺν μέλιτι ἢ στέατι ἢ κηρωτῇ. σὺν ὄξει δὲ πρὸς λέπρας καὶ λειχῆνας ἀγρίους περιχρίεται. πίνεται δὲ καὶ πρὸς περιόδους ξηρόν. ὡς ἄλφιτα ἐπιπασσόμενον τῷ ποτῷ, ἐπισπαστικαῖς τε ἐμπλάστροις καὶ ψωρικαῖς μίγνυται χρησίμως. δυσηκοΐαις τε καὶ ἤχοις λεῖον ἐπιτιθέμενον τῇ ἀκοῇ, μετὰ σύκου ὠφελεῖ. ὁ δὲ χυλὸς αὐτοῦ σὺν μέλιτι ἁρμόζει πρός τε ἀμβλυωπίας καὶ τραχέα βλέφαρα ἐγχριόμενος. χυλίζεται δὲ ἔτι χλωρὸν τὸ σπέρμα. καὶ τὸ ἀποθλιβὲν ξηραίνεται ἐν ἡλίῳ.

## περὶ καρδάμου. κεφ. ΤΟΓ.

Κάρδαμον. κάλλιστον μὲν εἶναι δοκεῖ τὸ ἐν τῇ βαβυλῶνι. καρδάμου. παντὸς δὲ τὸ σπέρμα θερμαντικόν. δριμύ. κακοστόμαχον. κοιλίαν ταράσσον. καὶ ἕλμινς ἐκτινάσσον. σπλῆνα μειοῦν. ἔμβρυα φθεῖρον. ἔμμηνα κινοῦν. συνουσίαν παρορμῶν. ἔοικε δὲ σινήπει καὶ εὐζώμῳ. ἀποσμήχει λέπρας. λειχῆνας. σὺν μέλιτι δὲ σπλῆνα ταπεινοῖ καταπλασσόμενον. καὶ κηρία ἀποκαθαίρει. καὶ τὰ ἐκ θώρακος ἀνάγει ἐγκαθεψόμενον ῥοφήμασιν. ἑρπετῶν τε ἐστὶν ἀντιφάρμακον πινόμενον. θυμιαθὲν δὲ ἑρπετὰ διώκει. τρίχας τε ῥεούσας ἐπέχει. καὶ ἄνθρακας περιρρήγνυσιν ἐμπυοποιεῖν. σὺν ὄξει δὲ καὶ ἀλφίτοις καταπλασθὲν, ἰσχιαδικοὺς ὠφελεῖ καὶ οἰδήματα καὶ φλεγμονὰς διαφορεῖ. δοθιῆνάς τε ἐκπυοῖ σὺν ἅλμῃ καταπλασθέν. καὶ ἡ πόα δὲ τὰ αὐτὰ ποιεῖ. ἔλασσον μέντοι δύναται.

Περὶ θλάσπεως. Κεφ. τοδʹ.

Θλάσπι. βοτάνιόν ἐστι στενὸν τοῖς φύλλοις ὡς δακτύλου μῆκος πεπτωκόσιν ἐπὶ τῆς γῆς. ἀκροσχιδέσιν ὑπολιπάροις. καυλὸν δὲ λεπτὸν ἀνίησι διςπιθαμιαῖον. ἀκρέμονας ὀλίγας ἔχοντα. καὶ περὶ ὅλον αὐτὸν καρπὸς ὑπόπλατυς ἐξ ἄκρου. ἐν ᾧ σπερμάτιον ἐμφερὲς καρδάμῳ. δισκοειδές. οἱονεὶ ἐντεθλασμένον. ἐξ οὗ καὶ τὸ ὄνομα ἔσχηκεν. ἄνθος δὲ ὑπόλευκον. ἐν ὁδοῖς καὶ τοιχῶν καὶ ἐπὶ θριγκῶν φυόμενον. σπέρμα δριμύ. θερμαντικόν. χολὴν ἄνω τε καὶ κάτω καθαῖρον. ποθὲν πλῆθος ὀξυβάφου. ἐγκλύζεται δὲ καὶ πρὸς ἰσχιαδικούς. ἄγει δὲ καὶ αἷμα ποθέν. καὶ τὰς ἐντὸς ἀποστάσεις ῥήγνυσι. κινεῖ δὲ καὶ καταμήνια. καὶ ἔμβρυα φθείρει. Ἱστορεῖ δὲ Κρατεύας καὶ ἕτερον θλάσπι. ὅ τινες περσικὸν σίναπι καλοῦσι. πλατύφυλλον καὶ μεγαλόῤῥιζον. καὶ τοῦτο δὲ μίγνυται τοῖς πρὸς ἰσχιάδα διακλυσμοῖς.

Περὶ Δράβης. Κεφ. τοεʹ.

Δράβη ἡ πόα πηχυαῖος ἔχουσα ὕψος. ῥάβδους λεπτάς. παρ' ἑκάτερα δὲ τὰ φύλλα ὥσπερ λεπιδίου. ἁπαλώτερα δὲ καὶ λευκότερα. ἐπ' ἄκρου δὲ σκιάδιον καθάπερ ἀκτίς. ἔχον ἄνθη λεπτά. ταύτης ἡ πόα συνέψεται τῇ πτισάνῃ μάλιστα ἐν Καππαδοκίᾳ. ὁ δὲ καρπὸς αὐτῆς ξηρὸς ἀντὶ πεπέρεως μίγνυται τοῖς προσοψήμασιν.

Περὶ ἐρυσίμου. Κεφ. τοϛʹ.

Ἐρύσιμον. φύεται περὶ τὰς πόλεις, καὶ οἰκόπεδα, καὶ κήπους. φύλλα δὲ ὅμοια εὐζώμῳ ἀγρίῳ. ἔχει καυλία ἱμαντώδη. ἄνθη μηλίζοντα. ἐπ' ἄκρων δὲ λοβοὶ κερατοειδεῖς. ἰσχνοὶ ὡς τήλιδος. ἐν οἷς σπερμάτια μικρὰ καρδάμῳ παραπλήσια. πυρώδη κατὰ τὴν γεῦσιν. ποιοῦντα πρὸς θώρακος ῥευματισμόν. ἐμπύους. βῆχας. ἴκτερον. ἰσχιάδας. ἐκλειχόμενον δὲ σὺν μέλιτι πίνεται καὶ πρὸς τὰ θανάσιμα φάρμακα. καταπλασσόμενον δὲ μεθ' ὕδατος ἢ μέλιτος, ὠφελεῖ καρκινώματα κρυπτά. σκληρίας. παρωτίδας διδύμων καὶ μαστῶν φλεγμονάς. λεπτύνει τε καὶ καθόλου θερμαίνει. ἐπιεικέστερον δὲ γίνεται εἰς τὰ ἐγκλύσματα. ἀποβραχὲν ὕδατι καὶ φωχθέν. ἢ ἐνδεθὲν εἰς ὀθόνιον καὶ ὀπτηθὲν στέατος περιπλασθέντος.

## Περὶ πεπέρεως. Κεφ. ροζ'.

Πέπερι δένδρον ἱστορεῖται φυόμενον ἐν ἰνδίᾳ. βραχύ. καρπὸν δὲ ἀνίησι. κατ' ἀρχὰς μὲν προμήκη καθάπερ λοβούς. ὅπερ ἐστὶ μακρὸν πέπερι. ἔχον τὸ ἐντὸς κέγχρῳ παραπλήσιον, τὸ μέλλον ἔσεσθαι τέλειον πέπερι. ὅπερ κατὰ τοὺς οἰκείους καιροὺς ἀναπλούμενον, βότρυς ἀνίησι. κόκκους φέροντας οἵους ἴσμεν. τοὺς δὲ, καὶ ὀμφακώδεις. οἵτινες εἰσὶ τὸ λευκὸν πέπερι. εὔθετον μάλιστα εἰς τὰ ὀφθαλμικὰ καὶ ἀντιδότους καὶ θηριακὰς δυνάμεις. ἔστι δὲ τὸ μὲν μακρὸν ἐπιτεταμένον τῇ δήξει, καὶ ὑπόπικρον, διὰ τὸ ἄωρον. καὶ ἐπιτήδειον εἰς τὰς ἀντιδότους καὶ θηριακάς. τὸ δὲ μέλαν ἥδιον καὶ δριμύτερον τοῦ λευκοῦ. καὶ εὐστομώτερον. καὶ μᾶλλον διὰ τὸ εἶναι ὥριμον ἀρωματίζον. εὐχρηστότερόν τε εἰς τὰς ἀρτύσεις. τὸ δὲ λευκὸν καὶ ὀμφακίζον, ἀσθενέστερον τῶν προειρημένων. ἐκλέγου δὲ τὸ βαρύτατον καὶ πλῆρες. μέλαν. μὴ σφόδρα ῥυσσόν. πρόσφατον δὲ καὶ μὴ πιτυρῶδες. εὑρίσκεται δέ τι ἐν τῷ μέλανι ἄζοφον. κενὸν καὶ κοῦφον. ὃ καλεῖται βράσμα. δύναμιν δὲ ἔχει κοινῶς θερμαντικὴν, οὐρητικὴν, πεπτικὴν, ἐπισπαστικὴν. διαφορητικὴν, σμηκτικὴν τῶν ταῖς κόραις ἐπισκοτούντων. ἁρμόζει καὶ ῥίγεσι περιοδικοῖς πινόμενόν τε καὶ συγχριόμενον. καὶ θηριοδήκτοις ἀρήγει. ἄγει καὶ ἔμβρυα. δοκεῖ δὲ καὶ ἀτόκιον εἶναι μετὰ συνουσίαν προστιθέμενον. βηξί τε καὶ πᾶσι τοῖς περὶ θώρακα πάθεσιν ἁρμόζει. ἔν τε ἐκλεικτοῖς καὶ ποτήμασι λαμβανόμενον. καὶ συνάγχαις ἁρμόζει διαχριόμενον σὺν μέλιτι. καὶ στρόφους λύει πινόμενον μετὰ δάφνης φύλλων ἁπαλῶν. ἀποφλεγματίζει δὲ σὺν σταφίδι διαμασηθέν. ἀνώδυνόν τε ἐστὶ καὶ ὑγιεινόν. καὶ ὄρεξιν κινεῖ. πέψει τε συνεργεῖ μιγνύμενον ἐν βάμμασιν. ἀναληφθὲν δὲ πίσσῃ χοιράδας διαφορεῖ. σμήχει δὲ ἀλφοὺς σὺν νίτρῳ. φώγνυται δὲ ἐπ' ὀστράκου καινοῦ ἐπ' ἀνθράκων, κινούμενον ὡς φασίν. ἡ δὲ ῥίζα αὐτοῦ, οὐκ ἔστι ζιγγίβερ καθάπερ ἔνιοι ὑπέλαβον. ὡς αὐτίκα δηλώσομεν. ἔοικε μέντοι κόστῳ ἡ τοῦ πεπέρεως ῥίζα. θερμαίνουσα τὴν γεῦσιν καὶ ὑγρὰ προσκαλουμένη. ταπεινοῖ δὲ σπλῆνα σὺν ὄξει καταπλασσομένη. καὶ πινομένη ἀποφλεγματίζει δὲ μετὰ σταφίδος ἀγρίας μασσω-

σηθεῖσα.

### Περὶ ζιγγιβέρεως. ΚΕΦ. ΤΟΗ.

Ζ ιγγίβερις, ἴδιόν ἐστι φυτόν. γεννώμενον ἐν τῇ τρωγλοδυτικῇ ἀραβίᾳ πλεῖστον. οὗ χρῶνται τῇ χλόῃ εἰς πολλὰ καθάπερ ἡμεῖς τῷ πηγάνῳ ἕψοντες εἰς προποτισμοὺς καὶ ἑψήματα μιγνῦντες. ἔστι δὲ ῥιζία μικρὰ ὥσπερ κυπείρου, ὑπόλευκα, πεπερίζοντα τῇ γεύσει, καὶ εὐώδη. ἐκλέγου δὲ τὰ ἀτερηδόνιστα. ὑπ' ἐνίων μέντοι ταριχεύεται διὰ τὸ εὔσηπτον. καὶ διακομίζεται κεραμίοις εἰς ἰταλίαν. εὐχρηστοῦσι εἰς βρῶσιν. λαμβάνεται δὲ μετὰ ταρίχου. Δύναμιν δὲ ἔχει θερμαντικὴν, πεπτικὴν, μαλακτικὴν κοιλίας. ἐπιεικῶς εὐστόμαχον. ποιεῖ καὶ πρὸς τὰ ἐπισκοτοῦντα ταῖς κόραις. μίγνυται καὶ ἀντιδότοις. καὶ καθόλου παρέοικέ πως τῇ τοῦ πεπέρεως δυνάμει.

### Περὶ ὑδροπεπέρεως. ΚΕΦ. ΤΟΘ.

Υ δροπέπερι. φύεται μὲν μάλιστα παρὰ στασίμοις ὕδασιν ἢ ἐπὶ βραδέσι ῥείθροις. καυλὸν δὲ ἀνίησι γονατώδη. στερεὸν, περὶ ὃν μασχάλαι καὶ φύλλα ἐοικότα ἡδυόσμῳ. μείζονα δὲ καὶ ὑφερώτερα καὶ λευκότερα. δριμέα ἐν τῇ γεύσει ὥσπερ τὸ πέπερι. οὐ μὴν ἀρωματίζοντα. καρπὸν δὲ ἔχει ἐπὶ κλωναρίων μικρῶν ἐκφυόμενον παρὰ τὰ φύλλα. συνεχῆ καὶ βοτρυώδη. δριμὺν καὶ αὐτόν. Δύναμιν δὲ ἔχει τὰ φύλλα σὺν τῷ καρπῷ καταπλασσόμενα, οἰδήματα καὶ χρονίους σκληρίας διαφορεῖν. ὑπώπιά τε ἄχροια ἀφαιρεῖν. ξηρανθέντα δὲ καὶ κοπέντα, μίγνυται ἀντὶ πεπέρεως ἁλσὶ καὶ προσοψήμασι. ῥίζαν δὲ ἔχει μικρὰν ἄχρηστον.

### Περὶ πταρμικῆς. ΚΕΦ. ΤΠ.

Π ταρμική. θαμνίον ἐστὶ κλῶνας ἔχον μικροὺς πολλοὺς, περιφερεῖς, ὁμοίους ἀβροτόνῳ. περὶ οὓς φύλλα ἐπιμήκη, ἐοικότα τοῖς τῆς ἐλαίας, πολλὰ, ἐπ' ἄκρῳ δὲ ὥσπερ ἀνθέμιδος κεφάλιον μικρὸν, περιφερὲς, δριμὺ κατὰ τὴν ὀσμήν. ἐρεθιστικὸν πταρμοῦ. ὅθεν καὶ ὀνόμασται. δύναται δὲ καταπλασσόμενα τὰ φύλλα μετὰ τῶν ἀνθῶν ὑπώπια αἴρειν. τὰ δὲ ἄνθη, πταρμοὺς ἐναργέστατα κινεῖ. φύεται δὲ ἐν ὀρεινῆς

καὶ πετρώδεσι τόποις.

Περὶ Στρουθίου. Κεφ. τπα.

Σ τρούθιον. ᾧ οἱ ἐριοπλύται χρῶνται πρὸς κάθαρσιν τῶν ἐρίων. οὗ ἡ ῥίζα δριμεῖα καὶ οὐρητική. βοηθεῖ δὲ ἡπατικοῖς, βηξίν. ὀρθοπνίαις σὺν μέλιτι, κοχλιαρίου πλῆθος λαμβανομένη. κοιλίαν τε ὑπάγει. σὺν δὲ πάνακι καὶ καππάρεως ῥίζῃ ληφθὲν, λίθους θρύπτει. καὶ ἐξουρεῖν ποιεῖ. καὶ σπλῆνα ἐσκιῤῥωμένον τήκει. προστεθὲν δὲ ἔμμηνα ἄγει, καὶ ἔμβρυα φθείρει ἐναρτεῖς. σὺν ἀλφίτῳ δὲ καὶ ὄξει καταπλασθὲν, λέπραν αἴρει. διαφορεῖ καὶ τὰ φύματα σὺν ἀλεύρῳ κριθίνῳ καὶ οἴνῳ ἑψηθέν. μίγνυται δὲ καὶ κολλυρίοις ὀξυδερκέσι καὶ μαλάγμασι. κινεῖ δὲ καὶ πταρμούς. καὶ εἰς τὰς ῥῖνας ἐγχεόμενον λεῖον μετὰ μέλιτος, καθαίρει διὰ στόματος.

Περὶ κυκλαμίνου. Κεφ. τπβ.

Κ υκλάμινος. φύλλα ἔχει ὅμοια κισσῷ, πορφυρᾶ, ποικίλα, κάτωθεν δὲ καὶ ἄνωθεν κιλήσιν ὑπολεύκοις. καυλὸν δὲ τετραδάκτυλον, γυμνόν. ἐφ' οὗ ἄνθη ῥοδοειδῆ πορφυρίζοντα. ῥίζαν μέλαιναν γογγυλίδι παραπλησίαν, ὑπόπλατυν, ἥτις ποθεῖσα μετὰ ὑδρομέλιτος, ἄγει φλέγμα καὶ ὕδωρ κάτω. καὶ ἔμμηνα δὲ κινεῖ πινομένη καὶ προστιθεμένη. φασὶ δὲ ὅτι ἂν ὑπερβῇ τὴν ῥίζαν ἐγκύμων γυνὴ, ἐξαμβλώττειν αὐτήν. ἔστι δὲ καὶ ὀξυτόκιον περιαπτομένη. πίνεται δὲ πρὸς τὰ θανάσιμα μετ' οἴνου. καὶ μάλιστα πρὸς λαγωὸν θαλάσσιον. καὶ ἑρπετῶν ἐστὶν ἀντιφάρμακον καταπλασσομένη. μεθύσκει τε οἴνῳ μιχθεῖσα. καθίστησι δὲ καὶ ἴκτερον τριῶν δραχμῶν πλῆθος ποθεῖσα μετὰ γλυκέος ἢ μελικράτου ὑδαροῦς. κατακλίνειν δὲ δεῖ ἐν οἴκῳ θερμῷ τὸν πίνοντα. καὶ πλείοσιν ἱματίοις περιβάλλειν ὅπως ἱδρώσῃ. ὁ δὲ ἀποκρινόμενος ἱδρὼς, χολώδης εὑρίσκεται τῇ χροιᾷ. ἐγχυματίζεταί τε ὁ χυλὸς αὐτῆς μετὰ μέλιτος εἰς τὰς ῥῖνας πρὸς κάθαρσιν κεφαλῆς. καὶ σὺν δακτυλίῳ ἐν ἐρίῳ προστίθεται πρὸς κομιδὴν περιττωμάτων. καταχρισθέντος δὲ αὐτοῦ ἐπ' ὀμφαλοῦ καὶ ὑπογαστρίου, καὶ ἰσχίου, κοιλίαν μαλάσσει. καὶ ἐκτρωσμοὺς ἐργάζεται. καὶ πρὸς τοὺς ὑποκεχυμένους καὶ ἀμβλυωποῦντας ὀ-

φθαλμοὺς ἐγχριόμενος ὁ χυλὸς σὺν μέλιτι ἁρμόζει. μί-
γνυται καὶ εἰς τὰ φθόρια. ἕδραν δὲ προπεσοῦσαν σὺν ὄξει
καταχριόμενος ὁ χυλὸς καθίστησι. χυλίζεται δὲ ἡ ῥίζα κο-
πτομένη καὶ ἐκθλιβομένη. ἑψομένου τοῦ χυλοῦ ἄχρι μελιτώ-
δους συστάσεως. ῥύπτει δὲ καὶ χρῶτα ἡ ῥίζα. καὶ ἐξανθήμα-
τα στέλλει καὶ τραύματα μετ' ὄξους καθ' ἑαυτήν τε καὶ μετὰ
μέλιτος ἰᾶται. καταπλασσομένη δὲ καὶ σπλῆνα τήκει. ἀπο-
καθαίρει δὲ καὶ ἔφηλιν καὶ ἀλωπεκίας. εὐθετεῖ δὲ καὶ
πρὸς στρέμματα καὶ ποδάγραν. καὶ τὰ ἐν κεφαλῇ ἑλκύ-
δρια καὶ χύμεθλα τὸ ἀφέψημα αὐτῆς καταντλούμενον.
αὐτή τε δι' ἐλαίου παλαιοῦ ἀναζεσθεῖσα, ἀπουλοῖ κατα-
χριομένου τοῦ ἐλαίου. ἐγκοιλανθεῖσα δὲ πληροῦται τοῦ ἐ-
λαίου, καὶ τίθεται ἐπὶ θερμοσποδιᾶς. προσεμβάλλεται
δὲ ἐνίοτε καὶ κηροῦ τυῤῥηνικοῦ ὀλίγον, ὡς γλοιῶδες γενέ-
σθαι κατάχρισμα ἄριστον χυμεθλιῶσιν. ἀποτίθεται δὲ ἡ ῥί-
ζα τμηθεῖσα ὥσπερ σκίλλα. ἱστορεῖται δὲ καὶ πρὸς φίλτρα
αὐτὴν λαμβάνεσθαι κοπεῖσαν ἀναπλασθεῖσάν τε εἰς τρο-
χίσκους. φύεται δὲ ἐν συσκίοις τόποις μάλιστα ὑπὸ τὰ δένδρα.

## Περὶ ἑτέρας κυκλαμίνου. Κεφ. τπγ΄.

Κυκλάμινος ἑτέρα. ἣν ἔνιοι κισσάνθεμον καλοῦσι. φύλλα ἔ-
χει κισσῷ ἐοικότα. ἐλάσσονα δέ. καυλοὺς παχεῖς γονατώ-
δεις. περιειλισσομένου τοῖς παρακειμένοις δένδρεσιν ἑλικοει-
δῶς. ἄνθη λευκά. εὐώδη. καρπὸς δὲ ὡς ῥάγες σταφυλῆς. ὅ-
μοιος κισσῷ, μαλακὸς, δριμὺς ἐν τῇ γεύσει ἠρέμα, καὶ γλί-
σχρος. ῥίζα ἄχρηστος. φύεται δὲ ἐν τραχέσι χωρίοις. ταύτης ὁ
καρπὸς ὅσον < μία τὸ πλῆθος πινόμενος μετ' οἴνου λευ-
κοῦ κυάθων β ἐπὶ ἡμέρας μ΄, σπλῆνα τήκει δι' οὔρων καὶ
κοιλίας δαπανόμενον. πίνεται δὲ καὶ πρὸς ὀρθόπνοιαν.
καὶ τὰς ἐκ τοκετῶν καθαίρει ποθεῖσα.

## Περὶ δρακοντίου. Κεφ. τπδ΄.

Δρακόντιον ἔχει φύλλα κισσοειδῆ, μεγάλα. σπίλους ἔχοντα λευ-
κούς. καυλὸν δὲ ὀρθὸν, δίπηχυν, ποικίλον, ὀφιοειδῆ, διαπόρφυρον
τοῖς σπίλοις. βακτηρίας τὸ πάχος. καρπὸς δὲ ἐπ' ἄκρου βο-

θυώδης. χρώματι τὸ μὲν πρῶτον χλοώδης. πεπανθεὶς δὲ κροκίζων. εὐθὺ δάκνων τὴν γεῦσιν. ῥίζα ποσῶς στρογγύλη, βολβοειδής, ὁμοία ἄρῳ φλοιὸν ἔχουσα λεπτόν. φύεται ἐν συσκίοις περὶ φραγμοῖς καὶ αἱμασιαῖς. Δύναμιν δὲ ἔχει ὁ καρπὸς ἐγχυλισθεὶς καὶ ἐγχυματισθεὶς μετ' ἐλαίου εἰς τὸ οὖς, ὠταλγίαν παύειν. εἰς δὲ τὰς ῥῖνας προστιθέμενος ἐν ἐρίῳ πολύπους δαπανᾷ. καταχριόμενος δὲ στέλλειν καὶ καρκινώματα. ποθέντες δὲ ὅσον λ. κόκκοι μετὰ ὀξυκράτου ἐξαμβλώσκουσι. καὶ τὴν ὀσμὴν δέ φασι μετὰ τὸν μαρασμὸν τῆς ἀνθήσεως, τῶν ἄρτι συνειλημμένων ἐμβρύων φθαρτικὴν εἶναι. ἡ δὲ ῥίζα θερμαντικὴ οὖσα, βοηθεῖ ὀρθοπνοίαις. ῥήγμασι. σπάσμασι. βηξί. καταῤῥῷ. καὶ τὰ ἐν θώρακι ὑγρὰ ἀνάγωγα ποιεῖ ἑφθή τε καὶ ὀπτὴ μετὰ μέλιτος καὶ καθ' ἑαυτὴν βιβρωσκομένη. ξηρὰ δὲ λεία σὺν μέλιτι ἐκλείχεται. ἔστι δὲ οὐρητική. ὁρμάς τε πρὸς συνουσίαν ἐγείρει πινομένη μετ' οἴνου. καὶ ἕλκη κακοήθη καὶ φαγεδαινικὰ μετὰ βρυωνίας λευκῆς σὺν μέλιτι λεανθεῖσα, ἀνακαθαίρει καὶ ἀπουλοῖ. καὶ κολλύρια ἐξ αὐτῆς ἀναπλάττεται πρὸς σύριγγας, καὶ ἐμβρύων κομιδήν. φασὶ δὲ ὅτι καὶ εἰ διατρίψει τις τὰς χεῖρας τῇ ῥίζῃ, ὑπὸ ἐχίδνης ἄδηκτος μένει. ἀποκαθαίρει δὲ καὶ ἀλφοὺς σὺν ὄξει καταχρισθεῖσα. τὰ δὲ φύλλα λεῖα εὐθὺ τῶν νεοτρώτων ἀντὶ μοτῶν ἐπιτιθέμενα ἁρμόζει. καὶ πρὸς χίμετλα ἑψηθέντα ἐν οἴνῳ καὶ ἐπιτεθέντα. τυρός τε συνειλούμενος τοῖς φύλλοις, ἄσηπτος διαμένει. ὁ δὲ χυλὸς τῆς ῥίζης ἁρμόζει πρὸς νεφέλια. καὶ λευκώματα καὶ ἀχλῦς. λαχανεύεται δὲ ἡ ῥίζα καὶ πρὸς τὴν ἐν ὑγείᾳ χρῆσιν, ἑφθή τε καὶ ὠμὴ ἐσθιομένη. ἡ δὲ ἐν ταῖς γυμνήτισι νήσοις, καλουμέναις δὲ καλλαρίσιν, ἑφθὴν τὴν ῥίζαν μιγνύντες μέλιτι πολλῷ ἐν τοῖς συνδείπνοις, ἀντὶ πλακούντων παρατιθέασιν. ἀποτίθεσθαι δὲ δεῖ τὴν ῥίζαν ἐν πυραμητῷ ὀρύξαντας καὶ πλύναντας καὶ κατατεμόντας. συνείραντάς τε λίνῳ καὶ ξηράναντας ἐν σκιᾷ.

## Περὶ Ἄρου. Κεφ. τπε΄.

Ἄρον τὸ καλούμενον παρὰ σύροις λούφα φύλλα ἀνίησιν ὁ-

μοια τοῖς τοῦ δρακοντίου. μακρότερα δὲ καὶ ἀσπιλότερα. καυλὸν σπιθαμιαῖον. ὑποπόρφυρον. ὑπεροειδῆ. ἐφ' οὗ ὁ καρπὸς κροκίζων. ῥίζα λευκὴ πρὸς τὴν τοῦ δρακοντίου. ἥτις καὶ ἐσθίεται ἑψομένη ἧττον οὖσα δριμεῖα. ταριχεύεται δὲ τὰ φύλλα εἰς βρῶσιν. καὶ καθ' ἑαυτὰ ξηρανθέντα ἑψόμενα ἐσθίεται. Δύναμιν δὲ ἔχει ἡ ῥίζα καὶ τὸ σπέρμα καὶ τὰ φύλλα τὴν αὐτὴν τῷ δρακοντίῳ. ποιεῖ δὲ ἡ ῥίζα καταπλασσομένη σὺν βολβίτῳ ἐυθὺ ποδαγρικῶν. ἀποτίθεται δὲ ὡς ἡ τοῦ δρακοντίου καὶ καθόλου ἐστὶ διὰ τὸ μὴ λίαν δριμὺ ἐδώδιμος.

## Περὶ Ἀρισάρου. ΚΕΦ. τπϛ.

Ἀρίσαρον ἐστὶ μικρὸν βοτάνιον. ῥίζαν ἔχον ὡς ἐλαίας. ἔστι δὲ δριμύτερον τοῦ ἄρου. ὅθεν νομὰς ἵστησι καταπλασσομένη. κολλύρια τε πρὸς σύριγγας ἐν ἀρχῇ ἐξ αὐτῆς γίνεται. φθείρει δὲ καὶ αἰδοῖον παντὸς ζώου ἐντεθεῖσα.

## Περὶ ἀσφοδέλου. ΚΕΦ. τπζ.

Ἀσφόδελος. φυτὸν τοῖς πλείστοις γνώριμον. φύλλα ἔχων πράσῳ μεγάλῳ ὅμοια. καυλὸν δὲ λεῖον. ἔχοντα ἐπ' ἄκρου ἄνθος καλούμενον ἀνθέρικον. ῥίζαι δὲ ὕπεισιν ἐπιμήκεις. στρογγύλαι. βαλάνοις ὅμοιαι δριμεῖαι κατὰ τὴν γεῦσιν. καὶ τὴν δύναμιν θερμαντικαί. κινοῦσι δὲ καὶ οὔρησιν. καὶ ἔμμηνα ποθεῖσαι. ἰῶνται καὶ πλευρᾶς ἀλγήματα καὶ βῆχας καὶ σπάσματα καὶ ῥήγματα < α πλῆθος τῆς ῥίζης ἐν οἴνῳ πινομένης. ποιεῖ δὲ καὶ ἐυεμεστέρους ὅσον ἀστράγαλος βρωθεῖσα. καὶ ἑρπετοδήκτοις δίδοται ὠφελίμως ὅσον < γ. τὸ πλῆθος. καταπλάττειν δὲ δεῖ τὰ δήγματα τοῖς τε φύλλοις καὶ τῇ ῥίζῃ καὶ τοῖς ἄνθεσι σὺν οἴνῳ. καὶ τὰ ῥυπαρὰ καὶ νεμόμενα ἕλκη καὶ μαστῶν καὶ διδύμων φλεγμονὰς καὶ φύματα καὶ δοθιῆνας. συγκαθεψομένης τρυγὸς οἴνου τῇ ῥίζῃ. πρὸς δὲ τὰς προσφάτους φλεγμονὰς μετὰ ἀλφίτου. ὁ δὲ χυλὸς τῆς ῥίζης προσλαβὼν οἴνου παλαιοῦ γλυκέος, καὶ σμύρνης καὶ κρόκου, συνεψηθέντα ἐπὶ τὸ αὐτὸ, ἔγχριστον γίνεται ὀφθαλμοῖς φάρμακον. καὶ πρὸς ὦτα πυορροοῦντα καθ' ἑαυτόν. καὶ σὺν λιβανωτῷ καὶ μέλιτι καὶ οἴνῳ καὶ

σμύρνῃ χλιανθεὶς ἁρμόζει. ὀδονταλγίαις τε καθ' ἑαυτὸν ἐγχυθεὶς ὁ χυλὸς τῷ ἀντικειμένῳ ὠτίῳ, πραΰνει. καεῖσα δὲ ἡ ῥίζα τῆς τέφρας ἐπιπλασσομένης, ἀλωπεκίας δασύνει. συνεψηθὲν δ' ἔλαιον, κεκοιλωμέναις ταῖς ῥίζαις ἐπὶ πυρὸς, ἑλκωμένας χιμέθλας καὶ πυρίκαυτα ἐπαλειφόμενον ὠφελεῖ καὶ ὠταλγιῶσι βοηθεῖ ἐγχεόμενον εἰς τὸ οὖς. ἀλφόν τε λευκὸν προανατριφθέντα ἐν ὀθονίῳ ἐν ἡλίῳ, καταχρισθεῖσα ἡ ῥίζα σμήχει. ὁ δὲ καρπὸς καὶ τὰ ἄνθη κατ' ἐξωχὴν, σκολοπένδρων καὶ σκορπίων ἀντιφάρμακόν ἐστιν ἐν οἴνῳ ποθέντα. καταῤῥήττει δὲ καὶ τὴν κοιλίαν.

Περὶ βολβοῦ. Κεφ. τπη΄.

Βολβὸς ὁ καλούμενος ἐμετικὸς, ἔχει τὰ φύλλα ἱμαντωδέστερα. καὶ πολλῷ μακρότερα τοῦ ἐδωδίμου. ῥίζαν ἐοικυῖαν βολβῷ. περὶ ὃν φλοιὸς μέλας. αὕτη ἐσθιομένη καθ' αὑτὴν καὶ τὸ ἀφέψημα αὐτοῦ πινόμενον. τὰ περὶ κύστιν ἰᾶται καὶ ἔμετον κινεῖ.

Περὶ βολβοῦ ἐδωδίμου. Κεφ. τπθ΄.

Βολβὸς ἐδώδιμος. γνώριμος πᾶσιν ὃν ἐσθίομεν. εὐστόμαχος. εὐκοίλιος. πυῤῥὸς, καὶ ἀπὸ λιβύης κομιζόμενος. ὁ δὲ πικρὸς, καὶ σκιλλώδης, εὐστομαχώτερος. πεπτικός. πάντες δὲ δριμεῖς καὶ θερμαντικοί. καὶ πρὸς συνουσίαν παρορμῶντες. τραχύνοντες γλῶσσαν καὶ παρίσθμια. πολύτροφοι. σαρκῶν γεννητικοί. ἐμπνευματοῦντες. ποιοῦσι δὲ καταπλασσόμενοι πρὸς στρέμματα. θλάσματα. σκόλοπας καὶ πρὸς τὰς τῶν ἄρθρων ὀδύνας. γαγγραίνας τε καὶ ποδάγρας σὺν μέλιτι καὶ καθ' ἑαυτοὺς καὶ τὰ ὑπὸ τῶν ὑδρωπικῶν οἰδήματα καὶ κυνόδηκτα, ὁμοίως σὺν μέλιτι καὶ πεπέρει λείῳ καταπλασθέντες, ἐπέχουσιν ὑδρῶτας. καὶ στομάχων ὀδύνας παύουσι. καὶ πίτυρα καὶ ἄχωρας ἀποσμήχουσι σὺν ὀπτῷ νίτρῳ. καθαίρουσι δὲ καὶ ὑπώπια καὶ ἴονθους. καθ' ἑαυτοὺς ἢ σὺν ᾠοῦ λεκύθῳ. καὶ φακοὺς σὺν μέλιτι ἢ ὄξει. πρὸς δὲ ὤτων θλάσματα σὺν ἀλφίτῳ καὶ πρὸς θλάσεις ὀνύχων. ἀφαιροῦσι δὲ καὶ συνεχὲς ὀπτηθέντες ἐν θερμοσποδιᾷ. καὶ μετὰ μαινίδων κεφαλῶν κεκαυμένων ἐπιτεθέντες. καέντες δὲ καὶ μιγέντες ἀλκυονίῳ, ἔφηλιν καὶ οὐλὰς μελαίνας ἀποκαθαί-

ρουσιν ἐν ἡλίῳ καταχριόμενοι. σὺν ὄξει δὲ ἑφθοὶ βιβρωσκό-
μενοι ποιοῦσι πρὸς ῥήγματα. φυλάσσεσθαι δὲ αὐτῶν
τὸ πλῆθος ἐν τῇ βρώσει δεῖ διὰ τὸ ἅπτεσθαι τοῦ νευρώδους.

## Περὶ σκίλλης. Κεφ. ΤϚ.

Σκίλλα. δύναμιν ἔχει δριμεῖαν καὶ πυρωτικήν. πολύχρηστος
δὲ γίνεται ὀπτηθεῖσα. σταιτὶ δὲ ἢ πηλῷ περιπλάσσεται. καὶ
δίδοται εἰς κλίβανον. ἢ ἄνθραξιν ἐγκρύπτεται μέχρις ἂν
ὀπτηθῇ ἱκανῶς τὸ περικείμενον σταῖς. οὗ περιαιρεθέντος, εἰ
μὴ τακηρὰ γέγονεν, ἕτερον σταῖς ἢ πηλὸν περιπλάσαντες,
τὰ αὐτὰ ποιήσομεν. ἡ γὰρ μὴ οὕτως ὀπτηθεῖσα, βλαβερὰ
τὴν δόσιν, πρὸς τὰ ἐντόσθια μάλιστα προσφερομένη. ὀπτᾶ-
ται δὲ καὶ ἐν χύτρᾳ πεπωμασμένῃ καὶ καθιεμένῃ εἰς κλί-
βανον. λαμβάνεται δὲ αὐτῆς τὸ μεσαίτατον τῶν ἔξωθεν
περιαιρουμένων. καὶ ἕψεται δὲ ἐντμηθεῖσα ἀποχεομένου τοῦ
πρώτου ὕδατος. ἑτέρου τε ἐπιχεομένου ἄχρις, ἂν μὴ πικρὸν ἢ
δριμὺ γένηται τὸ ὕδωρ. καὶ ξηραίνεται δὲ ἐν σκιᾷ. τμηθεῖσα,
καὶ διαιρεθεῖσα λιναρίῳ. ὡς μὴ ἅπτεσθαι ἀλλήλων τοὺς τό-
μους. τῇ μὲν οὖν τμητῇ, εἰς ἔλαιον καὶ οἶνον καὶ ὄξος σκιλ-
λητικὸν χρώμεθα. πρὸς δὲ ῥαγάδας τὰς ἐν ποσί, τὸ ἔνδον
τῆς ὠμῆς σὺν ἐλαίῳ ζεσθέν. ἢ σὺν τῇ ῥητίνῃ τηχθέν, ἐπιτί-
θεται. ἐχιοδήκτοις δὲ κατάπλασμα ἑψηθεῖσα σὺν ὄ-
ξει. τῆς δὲ ὀπτῆς πρὸς ἓν μέρος τῆς σκίλλης. συνεκλεαίναν-
τες ἁλῶν ὀπτῶν μέρη ὀκτώ, δίδομεν κοχλιάριον ἓν ἢ δύο νή-
στεσι πρὸς μάλαξιν κοιλίας. εἰς πόματά τε καὶ ἀρωμα-
τικὰς δυνάμεις. καὶ ἐφ᾽ ὧν οὔρησιν κινῆσαι θέλομεν. καὶ τῶν
ὑδρωπικῶν καὶ στομαχικῶν. οἷς ἐπιπολάζει τὰ σιτία. καὶ ἐπὶ
ἰκτέρου. στροφουμένων. βησσόντων χρονίως. ἀσθματικῶν.
ἀναφορικῶν. αὐτάρκης δὲ ὁλκὴ τριωβόλου σὺν μέλιτι ἐκ-
λειχθεῖσα. καὶ συγκαθέψεται δὲ τῷ μέλιτι. καὶ βιβρώσκε-
ται πρὸς τὰ αὐτὰ μάλιστα πέψει συνεργοῦσα. ἄγει δὲ,
γλιῶδες κατὰ κοιλίαν. ἑφθὴ δὲ πρὸς τὰ αὐτὰ ποιεῖ ὁμοίως
λαμβανομένη. φυλάττεσθαι δὲ καὶ αὐτῆς τὴν δόσιν δεῖ. ἐφ᾽
ὧν ἑλκωσίς τις ἐστὶν ἐντός. καὶ πρὸς ἀκροχορδόνας ποιεῖ καὶ
χυμέθλας ἐγχρισθεῖσα ὀπτή. τὸ δὲ σπέρμα αὐτῆς λεῖον ἀ-

ναληφθὲν ἐν ἰσχάδι ἢ μέλιτι καὶ βρωθέν, μαλάσσει κοιλίαν. ἔστι δὲ καὶ ἀλεξιφάρμακον ὅλη πρὸ τῶν θυρῶν κρεμαμένη.

Περὶ παγκρατίου. Κεφ. τξα.

Παγκράτιον. οἱ δὲ καὶ τοῦτο σκίλλαν ὀνομάζουσι. ῥίζα ἐστὶ βολβῷ μεγάλῳ ὁμοία ὑπόπυρος ἢ ὑποπόρφυρος. πικρὰ καὶ πυρώδης τὴν γεῦσιν. φύλλα κρίνῳ ὅμοια. μακρότερα δέ. ἔχει δὲ δύναμιν τὴν αὐτὴν τῇ σκίλλῃ. καὶ σκευασίαν, καὶ δόσιν ποιοῦνται ἐπὶ τῶν αὐτῶν παθῶν. ἐπιεικεστέρα μέντοι τῆς σκίλλης ἡ ταύτης δύναμις. ὅθεν καὶ χυλιζομένη ἡ ῥίζα ταύτης, μιγνυμένη τε ὀροβίνῳ ἀλεύρῳ καὶ ἀναπλασσομένη εἰς ἀρτίσκους, δίδοται σὺν ὑδρομέλιτι σπληνικοῖς καὶ ὑδρωπικοῖς ὠφελίμως.

Περὶ καππάρεως. Κεφ. τξβ.

Κάππαρις θάμνος ἐστὶν ἀκανθώδης. ἐπὶ γῆς γυροειδῶς ἐστρωμένος. ἀκάνθας ἀγκιστροειδεῖς ἔχων ὡς βάτος. φύλλα στρογγύλα, μηλέᾳ κυδωνίᾳ ὅμοια. καρπὸν δὲ οἷον ἐλαίας. ὃς ἀνοιχθεὶς λευκὸν προΐεται ἄνθος. οὗ πεσόντος, εὑρίσκεταί τι οἷον βάλανος ἐπιμήκης. ὅπερ ἀνοιχθὲν ἔχει κόκκους ὥσπερ ῥοιᾶς, μικρούς, ἐρυθρούς. ῥίζας ξυλώδεις καὶ μεγάλας πλείστας. φύεται τοὐπίπαν ἐν τραχέσι καὶ λεπτογείοις τόποις. καὶ νήσοις καὶ οἰκοπέδοις. ταριχεύεται δὲ ὁ καυλὸς αὐτοῦ καὶ ὁ καρπὸς εἰς βρῶσιν. ταράττει δὲ κοιλίαν. κακοστόμαχός τε ἐστὶ καὶ διψώδης. βρωθεῖσα δὲ ἑφθή, εὐστομαχωτέρα τοῦ ὠμῆς. ὁ μὲν οὖν καρπὸς αὐτῆς σπλῆνα τήκει. ὁλκὴ δυοῖν
< μετ' οἴνου πινόμενος ἐπὶ ἡμέρας λ'. ἄγει δὲ οὖρον καὶ διαχώρημα αἱματῶδες. ἰσχιάδι τε καὶ παραλύσει βοηθεῖ πινόμενος ὁ καρπός. καὶ πρὸς ῥήγματα καὶ σπάσματα. ἔμμηνά τε ἄγει καὶ ἀποφλεγματίζει. καὶ ὀδόντων πόνον παύει ὁ καρπὸς σὺν ὄξει ἑψόμενος καὶ διακλυζόμενος. τῆς δὲ ῥίζης ὁ φλοιὸς ξηρός, πρός τε τὰ προειρημένα ἁρμόζει. καὶ ἀνακαθαίρει πᾶν χρόνιον καὶ ῥυπαρὸν καὶ τετυλωμένον ἕλκος. καταπλάσσεται δὲ καὶ ἐπὶ τῶν σπληνικῶν σὺν ὠμῇ λύσει. διακνωμένη τε τῷ πονοῦντι ὀδόντι βοηθεῖ. ἀλφοὺς τε λευκοὺς ἀποσμήχει σὺν ὄξει λεῖα. τὰ δὲ φύλλα καὶ ἡ ῥί-

ξα λεανθέντα, σκληρίας καὶ χοιράδας διαφορεῖ. σκώλη-
κάς τε τοὺς ἐν ὠσὶν ὁ χυλὸς ἐγχυματισθεὶς κτείνει. Ἡ μέν-
τοι λιβυκὴ κάππαρις, γινομένη δὲ κατὰ τοὺς μαργαρί-
τας λεγομένους, ἐμπνευματοῖ ἰσχυρῶς. ἐμετικὴ δὲ τυγχάνει
ἡ ἐν ἀπουλίᾳ. ἡ δὲ ἐκ τῆς ἐρυθρᾶς θαλάσσης καὶ λιβύης, δρι-
μυτάτη. φλυκταινοῦσα τὸ στόμα. καὶ κατεσθίουσα τὰ οὖλα
ἄχρι γυμνώσεως. ὅθεν πρὸς βρῶσιν ἐστὶν ἀνεπιτήδειος.

Περὶ λεπιδίου. κεφ. τϛγ΄.

Λ επίδιον. ὃ ἔνιοι γιγγίδιον καλοῦσι. γνώριμον βοτάνιον. ταρι-
χευόμενον εἰς ἁλμαίας μετὰ γάλακτος. Δύναμις δὲ ἐστὶ τῶν
φύλλων δριμεῖα. ἑλκωτική. ὅθεν ἰσχιαδικόν ἐστιν ἐπίπλασμα.
ἀμυντικώτατον. λεῖον σὺν ἐλενίου ῥίζῃ ἐπιτιθέμενον πρὸς
τέταρτον ὥρας. καὶ ἐπὶ σπληνικῶν ὁμοίως. ἀφίστησι δὲ καὶ
λέπρας. ἡ δὲ ῥίζα δοκεῖ ὀδόντων ἀλγήματα παραιτεῖσθαι,
περιαπτομένη τῷ τραχήλῳ.

Περὶ βατραχίου. κεφ. τϛδ΄.

Β ατράχιον. οἱ δὲ, σέλινον ἄγριον καλοῦσι. τούτου πλείονα μέν
ἐστιν εἴδη. Δύναμις δὲ μία δριμεῖα. καὶ ἄγαν ἑλκωτική. ἔ-
χει δὲ τὸ μὲν αὐτῶν, φύλλα ὅμοια κορίῳ. πλατύτερα δὲ καὶ
ὑπόλευκα καὶ λιπαρά. ἄνθος μήλινον. ἐνίοτε πορφυροῦν.
καυλὸν δὲ οὐ παχύν. ὕψος δὲ ὅσον πήχεως. ῥίζαν μικρὰν
λευκὴν πικράν. ἔχουσαν ἀποφύσεις ὡς ἐλλεβόρου. φύεται
δὲ παρὰ ῥείθροις. Ἔστι δὲ καὶ ἕτερον εἶδος χνοωδέστερον. καὶ
μακροκαυλότερον. ἐντομὰς ἔχον πλείους τῶν φύλλων. πλεῖ-
στον ἐν σαρδωνίᾳ γινόμενον, δριμύτατον. ὃ δὴ καὶ σέλινον
ἄγριον καλοῦσι. καὶ τρίτον σφόδρα μικρὸν καὶ δύσοσμον.
τὸ ἄνθος τὸ εἶδος χρυσῷ ὅμοιον. καὶ τέταρτον ἐοικὸς τούτῳ.
ἄνθος γαλακτίζον. Δύναμιν δὲ ἔχει τὰ φύλλα καὶ οἱ καυ-
λοί, ἁπαλοὶ καταπλασσόμενοι, ἑλκωτικὴν καὶ ἐσχαρωτι-
κὴν μετὰ πόνου. ὅθεν ὄνυχας λεπροὺς καὶ ψώρας ἀφίστη-
σι. καὶ στίγματα ἐξαίρει. καὶ μυρμηκίας καὶ ἀκροχορδόνας
καὶ ἀλωπεκίας πρὸς ὀλίγον καταπλασθέντα. ἑψόμενα δὲ
κατάντλημα χυμεθλιώντων ἐστὶ χλιαρόν. ἡ δὲ ῥίζα πταρ-
μὸν κινεῖ ξηρὰ λεία προσφερομένη τοῖς μυκτῆρσι. καὶ ὀδο-

ταλγίας κουφίζει προσαπτομένη· θρύπτει μὲν τοιαύτους.

Περὶ Ἀνεμώνης. Κεφ. τξε.

Ἀνεμώνη διττή· ἡ μὲν, ἀγρία· ἡ δὲ ἥμερος. καὶ τῆς ἡμέρου ἡ μέν τις φοινικᾶ φέρει τὰ ἄνθη· ἡ δὲ, ὑπόλευκα ἢ γαλακτίζοντα· ἢ πορφυρᾶ. φύλλα δὲ κοριοειδῆ, λεπτοσχιδέστερα πρὸς τῇ γῇ· καυλία χνοώδη λεπτά· ὑπὲρ ὧν τὰ ἄνθη ὥσπερ μήκωνος· καὶ μέσα κεφάλια μέλανα· ἢ κυανίζοντα. ῥίζα κατὰ μέγεθος ἐλαίας ἢ μείζων· οἱονεὶ γόνασι διειλημμένη· ἡ δὲ ἀγρία κατὰ πάντα μείζων τῆς ἡμέρου· καὶ τοῖς φύλλοις πλατυτέρα καὶ σκληροτέρα· τήν τε κεφαλὴν ἐπιμηκεστέραν ἔχει· ἄνθος φοινικοῦν· ῥιζία λεπτὰ καὶ πλείω· ἡ δέ τις ἔχει φύλλα μέλανα δριμυτέρα οὖσα. Δύναμιν δὲ ἔχουσι δριμεῖαν ἀμφότεραι· ὅθεν ὁ χυλὸς τοῦ ῥίζης αὐτοῦ ῥινὶ ἐγχυθεὶς, πρὸς κεφαλῆς κάθαρσιν ἁρμόζει. μασηθεῖσα δὲ ἡ ῥίζα, φλέγμα ἄγει. ἑψηθεῖσα δ' ἐν γλυκεῖ καὶ καταπλασσομένη, ὀφθαλμῶν φλεγμονὰς ἰᾶται. καὶ τὰς ἐν ὀφθαλμοῖς οὐλὰς καὶ ἀμβλυωπίας ἀποσμήχει. ἀνακαθαίρει δὲ καὶ τὰ ῥυπαρὰ τῶν ἑλκῶν. τὰ δὲ φύλλα καὶ οἱ καυλοὶ συνεψηθέντες πτισάνῃ καὶ ἐσθιόμενα, γάλα κατάγουσι. ἐν προσθέτῳ δὲ ἔμμηνα ἄγει. καταπλασθέντα δὲ λέπρας ἀφίστησιν. Ἔνιοι δὲ μὴ δυνάμενοι διορίζειν ἀπὸ τῆς ἀγρίας ἀνεμώνης, τὴν λεγομένην ἀργεμώνην καὶ τὴν ῥοιάδα μήκωνα περὶ ἧς ἐν ταῖς μήκωσιν ἱστορήσομεν, διὰ τὸ τῶν ἀνθῶν ὁμόχροον φοινικοῦν ὑπάρχον, πλανῶνται τὴν ἀργεμώνην εὐπατώριον ὀνομάζοντες. πλὴν τῆς ἀργεμώνης ἧττον βαθὺ τὸ φοινικοῦν ἐστι καὶ τῆς ῥοιάδος. ὀψιαίτερον δὲ αὕτη καὶ ἡ ἀργεμώνη ἀνθοῦσι. καὶ ἡ μὲν ἀργεμώνη ὀπὸν ἀνίησι κροκίζοντα καὶ δριμὺν πρὸς τὴν γεῦσιν ἰσχυρῶς. ἡ δὲ ῥοιὰς λευκότερον καὶ δριμύν. ἀμφότεραι δὲ μεταξὺ κεφάλια μήκωνι ἀγρίᾳ παραπλήσια ἔχουσι. πλὴν τὸ μὲν τῆς ἀνεμώνης ἄνωθεν ὑπόπαχυ. τὸ δὲ τῆς ῥοιάδος ὑπόστενον. αἱ δὲ ἀνεμῶναι οὔτε ὀπὸν ἀνιᾶσιν, οὔτε κωδίαν ἔχουσιν. ἀλλ' οἱονεὶ ἀσπαράγου ἄκρον. ἐν ἀρούραις τε τὸ πλεῖον ἐκεῖναι φύονται.

Περὶ Ἀργεμώνης. Κεφ. τξϛ.

Ἀργεμώνη. ὅλον μέν ἐστι ὅμοιον ἀγρίᾳ μήκωνι. τὸ δὲ φύλλον ἀνεμώνῃ ἔχει ὅμοιον. ἄνθος, ἐσχισμένον. ἄνθος φοινικοῦν. κεφαλὴν δὲ ἐοικυῖαν μήκωνι ῥοιάδι. ἐπιμηκεστέροις δὲ καὶ πλατεῖαν κατὰ τὰ ἄνωθεν μέρη. ῥίζαν στρογγύλην. ὀπὸν δὲ ἀνίησι κροκίζοντα. δριμύν. καθαίρει δὲ ἄργεμα καὶ νεφέλια. καὶ φλεγμονὰς παρηγορεῖ τὰ φύλλα καταπλασσόμενα.

## Περὶ Ἀναγαλλίδος. Κεφ. τϛζ´.

Ἀναγαλλὶς τῆς ἀναγαλλίδος διπλοῦν εἶδός ἐστι, διάφορον ἄνθει. ἡ μὲν γὰρ κυάνεον ἔχουσα τὸ ἄνθος, θήλεια λέγεται. ἡ δὲ τὸ φοινικοῦν, ἄῤῥην. θαμνία δέ ἐστι κεχυμένα ἐπὶ γῆς. φύλλα ἔχοντα ἐπὶ τετραγώνων καυλίων μικρά. ὑποστρόγγυλα πρὸς τὰ τῆς ἐλξίνης. καρπὸν περιφερῆ. εἰσὶ δὲ ἀμφότεραι πραϋντικαί. ἀφλέγμαντοι. σκολόπων ἐπισπαστικαί. νομῶν ἐφεκτικαί. ὁ δὲ χυλὸς αὐτῶν ἀναγαργαριζόμενος, ἀποφλεγματίζει κεφαλήν. καὶ ῥισὶν ἐγχεόμενος, ὀδόντων πόνον παύει. ἐὰν εἰς τὸν ἀντικείμενον μυξωτῆρα τῷ ἀλγοῦντι ἐμβληθῇ. καθαίρει καὶ ἄργεμα μετὰ μέλιτος ἀττικοῦ. καὶ ἀμβλυωπίαις βοηθεῖ. ὠφελεῖ καὶ ἐχιοδήκτους μετ᾽ οἴνου πινόμενος. καὶ νεφρητικοὺς, καὶ ἡπατικούς. φασὶ δὲ ἄλλοι τὴν μὲν ἔχουσαν τὸ κυάνεον ἄνθος, προπτώσεις δακτυλίου στέλλειν. τὴν δὲ τὸ φοινικοῦν ἐρεθίζειν καταπλασθεῖσαν.

## Περὶ κισσοῦ. Κεφ. τϛη´.

Κισσὸς πολλὰς ἔχει διαφορὰς τὰς κατ᾽ εἶδος. τὰς δὲ γενικωτάτας τρεῖς. λέγεται γὰρ ὁ μέν τις λευκός. ὁ δὲ, μέλας. ὁ δὲ, ἕλιξ. ὁ μὲν οὖν λευκὸς, φέρει τὸν καρπὸν, λευκόν. ὁ δὲ μέλας, μέλανα ἢ κροκίζοντα. ὃν δὴ καὶ ἰδιῶται διονύσιον καλοῦσιν. ὁ δὲ ἕλιξ ἄκαρπός τε ἐστί. καὶ λευκὰ ἔχει τὰ κλήματα. καὶ τὰ φύλλα λεπτὰ καὶ γωνιώδη καὶ ἐρυθρά. πᾶς δὲ κισσὸς, δριμύς ἐστι. στυπτικός. τοῦ νευρώδους ἁπτικός. ποιεῖ δὲ αὐτοῦ τὰ μὲν ἄνθη τοῖς τρισὶ δακτύλοις ληφθέντα καὶ ποθέντα ἐν οἴνῳ, πρὸς δυσεντερικούς. δὶς δὲ τῆς ἡμέρας δεῖ πίνειν. καὶ πρὸς πυρίκαυτα δὲ ἁρμόζει σὺν κηρωτῇ λεανθέντα. τὰ δὲ ἁπαλὰ τῶν φύλλων σὺν ὄξει ἑψόμενα, ἢ ὠμὰ συλλεαινόμενα,

νόμενα, πάλιν ἰῶνται. ῥινεγχυτεῖται δὲ ὁ χυλὸς τῶν φύλλων καὶ τῶν κορύμβων σὺν ἰρίνῳ, ἢ μέλιτι, ἢ νίτρῳ. καὶ πρὸς τὰ χρόνια τῆς κεφαλῆς ἀλγήματα ἁρμόζει. καὶ ἐπιβρέχεται σὺν ὄξει καὶ ῥοδίνῳ. ὠταλγίας δὲ καὶ πυορροοῦντα ὦτα σὺν ἐλαίῳ ἰᾶται. τοῦ δὲ μέλανος κισσοῦ ὁ χυλὸς καὶ οἱ κόρυμβοι ποθέντες, ἀτονίαν ποιοῦσι. καὶ ταράσσουσι τὴν διάνοιαν πλεονασθέντες. λεῖα δὲ σφαιρία πέντε τῶν κορύμβων θερμανθέντα σὺν ῥοδίνῳ ἐν σιδίῳ καὶ ἐνσταχθέντα εἰς τὸ ἀντικείμενον οὖς τῆς ὀδονταλγίας, τὸ ἄλγημα πραΰνει. μελαίνουσι δὲ καὶ τὰς τρίχας οἱ κόρυμβοι. καταπλάσσεται δὲ τὰ φύλλα πρὸς πᾶν ἕλκος ἑψηθέντα σὺν οἴνῳ καὶ καταπλασσόμενα, καὶ τὰ καύματα κακοήθη καὶ ἐφηλίδας θεραπεύει ὡς προείρηται ἑφθά. κινοῦσι δὲ καὶ καταμήνια ἀποτεθέντες οἱ κόρυμβοι λεῖοι. καὶ ποθέντες δὲ μετὰ τὴν κάθαρσιν < πλῆθος, ἀτόκιόν ἐστι. καὶ ὁ μόσχος δὲ τῶν φύλλων μέλιτι δευθεὶς καὶ προστεθεὶς τῇ μήτρᾳ, ἔμμηνα ἄγει καὶ ἔμβρυα. ὁ δὲ χυλὸς ἐνσταζόμενος τὰς ἐν τοῖς ῥώθωσι δυσωδίας καὶ σηπεδόνας ἐκκαθαίρει. τὸ δὲ δάκρυον αὐτοῦ ψιλοῖ τρίχας. καὶ κτείνει φθεῖρας ἐπαλειφόμενον. ὁ δὲ τῶν ῥιζῶν χυλὸς σὺν ὄξει ποθεὶς, φαλαγγιοδήκτοις βοηθεῖ.

Περὶ χελιδονίου τοῦ μεγάλου. ΚΕΦ. τςθ'.

Χελιδόνιον μέγα καυλὸν ἀνίησι πηχυαῖον, ἢ καὶ μείζονα. ἰσχνὸν ἔχοντα παραφυάδας φύλλων μεστάς. φύλλα ὅμοια βατραχίῳ, ἁπαλώτερα μέντοι τὰ τοῦ χελιδονίου καὶ ὑπόχλωρα τὴν χρόαν. καὶ παρ᾽ ἕκαστον φύλλον ἄνθος ὥσπερ τὸ λευκόϊον. χυλὸς δὲ κροκώδης. δριμὺς δηκτικός. ποσῶς ὑπόπικρος καὶ δυσώδης. ῥίζα ἄνωθεν μὲν ἐστὶ μία. κάτωθεν δὲ πλείονες. καρπὸς δὲ ὥσπερ τοῦ κερατίτιδος μήκωνος. λεπτός. μακρὸς ὡς κῶνος. ἐν ᾧ σπερμάτια μείζονα μήκωνος. ταύτης ὁ χυλὸς μιγεὶς μέλιτι καὶ ἑψηθεὶς ἐν χαλκῷ ἐπ᾽ ἀνθράκων, ἁρμόζει πρὸς ὀξυδορκίαν. χυλίζεται δὲ τὰ φύλλα καὶ ἡ ῥίζα καὶ ὁ καρπὸς, ἀρχομένου θέρους. καὶ ξηραίνεται ἐν σκιᾷ καὶ ἀναπλάσσεται. ἡ δὲ ῥίζα πινομένη σὺν ἀνίσῳ καὶ οἴνῳ λευκῷ, ἰκτερικοὺς θεραπεύει καὶ ἕρπητας. καὶ καταπλασσομένη σὺν οἴνῳ ὀδονταλγίας τε παύει διαμασωμένη. δι-

καὶ δὲ ὠνομάσθαι χελιδόνιον, ἐπειδὴ ἅμα ταῖς χελιδόσι φαινομέναις ἀναφύεται. ληγούσαις δὲ συμπαρακμάζει. τινὲς δὲ ἱστόρησαν ὡς ἐάν τις τυφλωθῇ τῶν τῆς χελιδόνος νεοσσῶν, αἱ μητέρες προσφέρουσαι τὴν πόαν, ἰῶνται τὴν πήρωσιν αὐτοῦ.

Περὶ χελιδονίου τοῦ μικροῦ. Κεφ. ν΄.

Χελιδόνιον τὸ μικρόν. οἱ δὲ, σύκινον ἄγριον ἐκάλεσαν. βοτάνιον ἐστὶν ἐκ μόσχων ἀπηρτισμένον. ἄκαυλον, φύλλοις κισσοειδέσι, περιφερεστέροις δὲ μᾶλλον καὶ μικροτέροις. καὶ τρυφεροῖς καὶ ὑπολιπάροις περιεχόμενον. ῥίζας δὲ ἔχει ἐκ τοῦ αὐτοῦ μικρὰς πολλάς. ὥσπερ πυροὺς σεσωρευμένας. τρεῖς δὲ εἰσὶν ἢ τέσσαρες αὐτῶν μακραὶ πεφυκυῖαι. φύεται δὲ παρ' ὕδασι καὶ τέλμασιν. ἔχει δὲ τὴν δύναμιν δριμεῖαν. παραπλησίαν ἀνεμώνῃ ἑλκοῦσαν τὴν ἐπιφάνειαν. ψώρας τε καὶ ὄνυχας λεπροὺς ἀφίστησιν. αἱ δὲ ῥίζαι χυλωθεῖσαι. χρήσιμοι εἰς ῥινεγχυσίαν μετὰ μέλιτος πρὸς κάθαρσιν κεφαλῆς.

Περὶ ὀθόννης. Κεφ. να΄.

Ὀθόννα. οἱ μὲν φασὶ τοῦ μεγάλου χελιδονίου χυλὸν εἶναι. οἱ δὲ, γλαυκίου. οἱ δὲ, τῆς κερατίτιδος μήκωνος τῶν ἀνθέων χυλόν. ἔνιοι δὲ μίγμα ἀναγαλλίδος τῆς κυανέας καὶ ὑοσκυάμου καὶ μήκωνος χυλόν. οἱ δὲ βοτάνης τρωγλοδυτικῆς τινός. ἥτις ὀθόννα καλεῖται, εἶναι χυλόν. γεννᾶσθαι δὲ αὐτὴν καὶ ἐν τῇ κατ' αἴγυπτον ἀραβίᾳ. ἔχει δὲ τὰ φύλλα εὐζώμῳ ἐμφερῆ. πολύτρητα ὥσπερ σητόκοπα. ψαφαρά. ὀλιγόφυλλα. ἄνθος δὲ φέρει κρόκινον. πλατύφυλλον. ὅθεν ἔδοξαν ἀνεμώνης αὐτὸ τινὲς εἶδος εἶναι. χυλίζεται δὲ καὶ εἰς τὰ ὀφθαλμικὰ ὅπου δεῖ ἀποκαθαίρειν δάκνουσα. καὶ πάντα τὰ ἐπισκοτοῦντα ταῖς κόραις ἀποσμήχουσα. φασὶ δέ τινα καὶ ὑγρασίαν ἀποῤῥεῖν τῆς βοτάνης. ἣν πλύναντές τινες καὶ χωρίσαντες τῶν λίθων, ἀναπλάσσουσι τροχίσκους πρὸς τὰ αὐτά. ἔνιοι δὲ φασὶν αὐτὴν λίθον εἶναι αἰγύπτιον ἐν τῇ θηβαΐδι γεννώμενον. χαλκόχροον. μικρὸν τῷ μεγέθει. δάκνοντα τὴν γεῦσιν μετὰ πυρώσεως καὶ στύψεως.

Περὶ μυὸς ὤτων. Κεφ. νβ΄.

Μυὸς ὦτα. οἱ δὲ μυὸς ὠτίδα καλοῦσιν. ἀνίησι καυλοὺς ἀπὸ

μιᾶς ῥίζης πλείονας, ὑπερύθρους τὰ κάτωθεν καὶ κοίλους. φύλλα δὲ ἐπιμήκη καὶ στενά· ῥάχιν ἐπηρτημένην ἔχοντα μελανίζοντα, ἀνὰ δύο πεφυκότα ἐκ διαστημάτων· εἰς ὀξὺ ἀπολήγοντα. ἐκφύεταί τε λεπτὰ καυλία ἐκ τῶν μεγάλων· ἐφ' ὧν ἀνθήλια κυανίζοντα μικρὰ ὡς τὰ τῆς ἀναγαλλίδος. ῥίζα δὲ δακτύλου τὸ πάχος· ἔχουσα πολλὰς ἀποβλαστήσεις. καθόλου δέ ἐστιν ὁμοία ἡ πόα τῷ σκολοπενδρίῳ. λειοτέρα δὲ καὶ ἐλάσσων ταύτης ἡ ῥίζα καταπλασθεῖσα αἰγίλωπα ἰᾶται. τινὲς δὲ καὶ τὴν ἑλξίνην μυὸς ὠτίδα καλοῦσιν.

Περὶ ἰσάτιδος ἡμέρου. Κεφ. υγʹ.

Ἰσάτις ἥμερος, ᾗ οἱ βαφεῖς χρῶνται φύλλον ἔχει ἀρνογλώσσῳ ἐμφερές. λιπαρώτερον δὲ καὶ μελάντερον. καυλὸν δὲ ὑπερπηχιαῖον. δύναται δὲ τὰ φύλλα καταπλασσόμενα πᾶν οἴδημα διαφορεῖν. καὶ φύματα καὶ ἔναιμα τραύματα κολλᾶν. αἱμορραγίας τε στέλλειν. καὶ φαγεδαινικὰ καὶ ἕρπητας ἐρυσιπέλατά τε καὶ σηπεδόνας θεραπεύειν.

Περὶ ἰσάτιδος ἀγρίας. Κεφ. υδʹ.

Ἰσάτις ἀγρία. παραπλησία οὖσα τῇ πρὸ αὐτῆς, φύλλα ἔχει μείζονα πρὸς τὰ τῆς θρίδακος, καυλοὺς δὲ λεπτοτέρους πολυσχιδεῖς. ὑπερύθρους. ἔχοντας ἐξ ἄκρου ὡς πτερὰ θυλάκια γλωσσοειδῆ πολλὰ ἀποκρεμάμενα. ἐν οἷς τὸ σπέρμα ἄνθος μήλινον λεπτόν. δύναται δὲ τὰ αὐτὰ τῇ πρὸ αὐτῆς. ὠφελοῦσα καὶ σπληνικοὺς πινομένη καὶ καταπλασσομένη.

Περὶ τηλεφίου. Κεφ. υεʹ.

Τηλέφιον. ἔοικε καὶ τοῖς φύλλοις καὶ τῷ καυλῷ ἀνδράχνῃ. μασχάλας ἔχον δύο παρ' ἕκαστον γόνυ τῶν φύλλων ἐμφυομένας. ἀφ' ὧν κλωνία ϛʹ. ἢ ζʹ. ἀπὸ τῆς ῥίζης πλήρη φύλλων κυανοειδῶν. παχέων τε καὶ γλίσχρων καὶ σαρκωδῶν. ἄνθη μήλινα ἢ λευκά. φύεται δὲ ἐν ἀμπελῶσι καὶ τόποις ἐργασίμοις ἔαρος. θεραπεύει δὲ καταπλασσόμενα τὰ φύλλα ἐπὶ ὥρας ἓξ λεύκην. δεῖ δὲ μετὰ ταῦτα ὠμῇ λύσει χρῆσθαι. αἴρει δὲ καὶ ἀλφοὺς ἐπιχρισθέντα σὺν ὄξει ἐν ἡλίῳ. δεῖ μέντοι μετὰ τὸ ἀποξηρανθῆναι αὐτὰ ἀποψᾶν.

# ΠΕΔΑΚΙΟΥ ΔΙΟΣΚΟΡΙΔΟΥ ἈΝΑΖΑΡΒΕΩΣ ΠΕΡῚ ὙΛΗΣ ἸΑΤΡΙΚΗ͂Σ ΒΙΒΛΙΟΝ ΤΡΙΤΟΝ.

ε Ν μὲν τοῖς πρὸ τούτου βιβλίοις φίλτατε Ἄρειε παρεδώκαμεν περὶ ἀρωμάτων καὶ μύρων, καὶ ἐλαίων, καὶ δένδρων, καὶ τῶν ἀπ' αὐτῶν καρπῶν τε καὶ δακρύων. ἔτι τε ζώων καὶ σιτηρῶν καὶ λαχάνων, καὶ τῶν δριμύτητα κεκτημένων βοτανῶν. ἐν δὲ τούτῳ τρίτῳ ὑπάρχοντι, περὶ ῥιζῶν καὶ χυλισμάτων καὶ βοτανῶν καὶ σπερμάτων. συμφύλλων τε καὶ φαρμακωδῶν ἐπελευσόμεθα.

## Περὶ ἀγαρικοῦ. Κεφ. ϛ΄.

ἀ γαρικόν. ῥίζα φέρεται σιλφίῳ ἐμφερής. οὐ πυκνὴ τὴν ἐπιφάνειαν ὥσπερ τὸ σίλφιον. ἀραιὰ δέ ἐστιν ὅλη. ἔστι δὲ τὸ μὲν, αὐτοῦ ἄρρεν. τὸ δὲ, θῆλυ. ὧν διαφέρει τὸ θῆλυ ἔχον κτηδόνας εὐθείας ἐντός. τὸ δὲ ἄρρεν περιφερές ἐστι καὶ πανταχόθεν συμφυές. γεύσει δ' ἀμφότερα ὅμοια κατ' ἀρχὰς μὲν γλυκάζοντα εἶτα ἐξ ἀναδόσεως ἔμπικρα. γεννᾶται δὲ ἐν τῇ ἀγαρίᾳ τῆς σαρματικῆς. λέγουσι δὲ οἱ μὲν, φυτοῦ ῥίζαν εἶναι. τινὲς δὲ ἐν τοῖς στελέχεσι τῶν δένδρων κατὰ σῆψιν γίνεσθαι. ὥσπερ οἱ μύκητες. γεννᾶται δὲ καὶ ἐν τῇ κατὰ τὴν ἀσίαν γαλατίᾳ καὶ κιλικίᾳ ἐπὶ τῶν κέδρων. εὔθρυπτον μέντοι καὶ ἀσθενές. Τὴν μέντοι δύναμίν ἐστι στυπτικὸν θερμαντικὸν ποιοῦν πρός τε στρόφους καὶ ὠμότητας. ῥήγματά τε καὶ πτώματα. ὀβολῶν δὲ δυοῖν πλῆθος διδόμενον μετ' οἰνομέλιτος ἀπυρέτοις. πυρέσσουσι δὲ ἐν μελικράτῳ. καὶ ἡπατικοῖς δὲ καὶ ἀσθματικοῖς. καὶ ἰκτεριῶσι καὶ δυσεντερικοῖς. καὶ νεφριτικοῖς καὶ δυσουροῦσι. καὶ ὑστερικαῖς πνιξὶ καὶ κακοχροίαις < α. διδόμενον. φθισικοῖς δὲ μετὰ γλυκέος. σπληνικοῖς δὲ μετ' ὀξυμέλιτος. καὶ στομαχικοῖς ὡς ἔστι διαμασώμενον καὶ καταπινόμενον. μηδενὸς ὑγροῦ ἐπιῤῥοφουμένου. ὁμοίως δὲ καὶ ὀξυρεγμιῶσιν. ἵστησι δὲ καὶ αἵματος ἀναγωγάς, ὁλκὴ διω

βόλου μεθ' ὕδατος λαμβανόμενον. ποιεῖ καὶ πρὸς ἰσχίων καὶ ἄρθρων ἀλγήματα. καὶ ἐπιληψίας μετ' ὀξυμέλιτος λαμβανόμενον τὸ ἴσον πλῆθος. ἄγει δὲ καὶ ἔμμηνα. καὶ ταῖς ἐμπνευματουμέναις ὑστέραν γυναιξίν, ὠφελίμως τὸ ἴσον δίδοται. λύει δὲ καὶ ῥίγος πρὸ τῆς ἐπισημασίας διδόμενον. καθαίρει δὲ καὶ κοιλίαν < α. ἢ β. μετὰ μελικράτου πινόμενον. ἔστι δὲ καὶ θανασίμων ἀντίδοτον μετὰ κράματος < μιᾶς ὁλκὴ λαμβανόμενον. καὶ πρὸς ἑρπετῶν δὲ πληγὰς καὶ δήγματα, ὁλκὴ τριωβόλου μετ' οἴνου πινόμενον βοηθεῖ. καὶ καθόλου πρὸς τὰ ἐντὸς πάντα πάθη ἁρμόζει, πρὸς δύναμιν καὶ ἡλικίαν διδόμενον, οἷς μὲν μεθ' ὕδατος. οἷς δὲ μετ' οἴνου. οἷς δὲ μετ' ὀξυμέλιτος ἢ μελικράτου.

## Περὶ ῥᾶ. Κεφ. νζ.

Ρᾶ. οἱ δὲ ῥῆον καλοῦσι, γεννᾶται ἐν τοῖς ὑπὲρ βόσπορον τόποις. ὅθεν καὶ κομίζεται. ῥίζα μέλαινα. κενταυρείῳ τῷ μεγάλῳ ἐοικυῖα. μικροτέρα μέντοι καὶ ἐνερευθεστέρα ἄοσμος. χαύνη. ὑπόκουφος. ἔστι δὲ αὐτοῦ κράτιστον τὸ ἀτερηδόνιστον. ἔγγλισχρόν τε κατὰ τὴν γεῦσιν μετὰ ἀνειμένης στύψεως. διαμασηθέντα τε ἔνωχρον καὶ κροκίζον πως τῷ χρώματι. Ποιεῖ δὲ πινόμενον πρὸς ἐμπνευματώσεις στομάχου. ἀτονίαν. ἄλγημα παντοῖον. σπάσματα. σπληνικούς. ἡπατικούς. νεφριτικούς. στροφουμένους. καὶ τὰ περὶ κύστιν καὶ θώρακα. καὶ ὑποχονδρίων ἐντάσεις. καὶ τὰ περὶ ὑστέραν πάθη. ἰσχιάδας. αἵματος πτύσεις. ἄσθματα. λυγμούς. δυσεντερίας. κοιλιακὰς διαθέσεις. καὶ περιόδους. καὶ θηρίων δήγματα. δώσεις δὲ ὁμοίως τῷ ἀγαρικῷ πρὸς ἕκαστον πάθος. τῇ αὐτῇ ὁλκῇ, καὶ ὑγροῖς χρώμενος. μετ' οἰνομέλιτος μὲν ἀπυρέτοις, πυρέσσουσι τὸ μετὰ μελικράτου. φθισικοῖς μετὰ γλυκέος. σπληνικοῖς μετ' ὀξυμέλιτος. στομαχικοῖς ὡς ἔστι διαμασώμενον καὶ καταπινόμενον. μηδενὸς ὑγροῦ ἐπιρροφουμένου. αἴρει δὲ, καὶ πελιώματα καὶ λειχῆνας μετ' ὄξους καταχρισθέν. καὶ φλεγμονὰς παύει διαχεῖ χρονίας σὺν ὕδατι καταπλασσόμενον. ἡ δὲ ἀνωτάτω αὐτοῦ δύναμις, στυπτικὴ μετὰ ποσῆς θερμασίας.

## Περὶ γεντιανῆς. Κεφ. νθ.

Γεντιανή. δοκεῖ μὲν ἀπὸ πρώτου εὑρῆσθαι γεντίδος τοῦ ἰλλυριῶν βασιλέως. ἀφ' οὗ καὶ τὴν ἐπωνυμίαν ἔσχηκεν. ἧς τὰ φύλλα τὰ μὲν πρὸς τῇ ῥίζῃ καρύᾳ ἢ ἀρνογλώσσῳ ὅμοια ὑπέρυθρα. τὰ δὲ ἐν μέσῳ τῷ καυλῷ, καὶ μάλιστα τὰ κατ' ἄκρον ἐσχισμένα, μικρῶς. καυλὸς δὲ κενὸς, λεῖος πάχος δακτύλου, τὸ δὲ ὕψος δίπηχυς, γόνασι διειλημμένος, ἐκ διαστημάτων μειζόνων περικείμενος τὰ φύλλα. καρπὸν δὲ ἔχων ἐν κάλυξι πλατὺν, κοῦφον, ἀχυρώδη, πρὸς τὸν τοῦ σφονδύλου. ῥίζαν μακράν. ὁμοίαν ἀριστολοχίᾳ τῇ μακρᾷ. παχεῖαν. πικράν. γεννᾶται δὲ ἐν ὑψηλοτάταις ἀκρωρείαις. καὶ συσκίοις τόποις καὶ ἐνύδροις. Δύναμιν δὲ ἔχει ἡ ῥίζα θερμαντικήν. στυπτικήν. βοηθεῖ δὲ θηριοδήκτοις ποτιζομένη < β. τὸ πλῆθος. μετὰ πεπέρεως καὶ πηγάνου. καὶ οἴνου. τοῦ δὲ χυλίσματος ὅσον < α. καὶ πρὸς ὀδύνας πλευρῶν, καὶ πτώματα, ῥήγματά τε καὶ σπάσματα. εὐθετεῖ, καὶ ἡπατικοῖς, καὶ στομαχικοῖς πινομένη μεθ' ὕδατος. ἐκβάλλει δὲ ἔμβρυα ἡ ῥίζα ὡς κολλύριον προστιθεμένη. ἔστι δὲ καὶ τραυματικὴ ἐπιτιθεμένη ὡς τὸ λύκιον, ἀπονόμων τε ἑλκῶν ἴαμα καὶ μάλιστα τὸ χύλισμα. καὶ ὀφθαλμῶν ἐπίχρισμα φλεγμαινόντων. μίγνυται δὲ καὶ εἰς τὰ δριμέα τῶν κολλυρίων τὸ χύλισμα ἀντὶ μηκωνίου. ἔστι δὲ καὶ ἀλφῶν σμηκτικὴ ἡ ῥίζα. χυλίζεται δὲ θλασθεῖσα καὶ βραχεῖσα ἐν ὕδατι ἐπὶ ἡμέρας ε. εἶτα ἑψηθεῖσα ἐν τῷ ὕδατι, ἄχρις ἂν ὑπερέχωσιν αἱ ῥίζαι, καὶ μετὰ τὸ ψυγῆναι τὸ ὕδωρ διηθεῖται δι' ὀθονίου. καὶ ἕψεται ἄχρις ἂν γένηται μελιτώδους τῇ συστάσει. καὶ ἀποτίθεται ἐν ὀστρακίνῳ ἀγγείῳ.

### Περὶ ἀριστολοχίας στρογγύλης. Κεφ. υθ.

Ἀριστολοχία ὠνόμασται μὲν ἀπὸ τοῦ δοκεῖν ἄριστα βοηθεῖν ταῖς λοχοῖς. ἔστι δὲ ἡ μὲν στρογγύλη, θήλεια καλουμένη. φύλλα δὲ ἔχει κισσοειδῆ. εὐώδη μετὰ δριμύτητος. ὑποστρόγγυλα ἁπαλά. παρὰ πολλοῖς βλαστοῖς ἐν μιᾷ ῥίζῃ. τὰ δὲ κλήματα ἐπιμήκη. ἄνθη λευκά. οἱονεὶ πιλίσκους τὸ δὲ ἐν αὐτοῖς ἐρυθρὸν, δυσῶδες.

### Περὶ ἀριστολοχίας μακρᾶς. Κεφ. υι.

Ἡ δὲ μακρὰ ἀριστολοχία ἄρρεν καλεῖται καὶ δακτυλῖτις. φύλλα ἔχουσα ἐπιμηκέστερα τῆς στρογγύλης. κλωνία λεπτὰ ὡς σπιθαμῆς τὸ μέγεθος, ἄνθος πορφυροῦν, δυσῶδες, ὅπερ ἐξανθῆσαν ἀπίῳ παραπλήσιον γίνεται. ῥίζα δὲ τῆς μὲν στρογγύλης περιφερὴς γογγυλίδι ὁμοία, ἡ δὲ τῆς μακρᾶς δακτύλου. ἔχει τὸ πάχος σπιθαμιαία ἢ καὶ μείζων. ἀμφότεραι δὲ τὰ πολλὰ πυξοειδεῖς ἔνδοθεν. πικραί τε τὴν γεῦσιν καὶ βρωμώδεις.

Περὶ ἀριστολοχίας κληματίτιδος. Κεφ. υ ια.

Ἔστι δέ τις καὶ τρίτη μακρά. ἥτις καὶ κληματῖτις καλεῖται. κλωνία ἔχουσα λεπτά. φύλλοις ὑποστρογγύλοις ἀειζώου μικροῦ ἐοικόσι. περίπλεα ἄνθη. ἐοικότα πηγάνῳ. ῥίζας μακροτέρας λεπτάς. φλοιὸν ἐχούσας παχὺν καὶ ἀρωματίζοντα, ἰδίως χρησιμευούσας μυρεψοῖς εἰς τὰς τῶν μύρων στύψεις. ποιεῖ δὲ πρὸς μὲν τὰ ἄλλα φαρμακικὰ ἡ στρογγύλη. πρὸς δὲ τὰ ἑρπετὰ καὶ θανάσιμα ἡ μακρά. < α. ὁλκὴ πινομένη μετ' οἴνου καὶ καταπλαττομένη. καὶ τὰ ἐν μήτρᾳ συνιστάμενα πάντα λόχια καὶ ἔμμηνα καὶ ἔμβρυα ἐκβάλλει. ποθεῖσα μετὰ πεπέρεως καὶ σμύρνης. καὶ ἐν πεσσῷ δὲ προστεθεῖσα τὰ αὐτὰ δρᾷ. ἡ δὲ στρογγύλη ποιεῖ μὲν πρὸς ἃ καὶ ἡ προειρημένη. ἐκ περισσοῦ δὲ βοηθεῖ ἄσθματι. λυγμῷ ῥίγει. σπληνί. ῥήγμασι. σπάσμασιν. ἀλγήμασι πλευρᾶς ποθεῖσα μεθ' ὕδατος. ἀνάγει δὲ, καὶ σκόλοπας. ἀκίδας. λεπίδας ὀστῶν καταπλασσομένη ἀφίστησι. καὶ σηπεδόνας περιχαράσσει καὶ τὰ ῥυπαρὰ περικαθαίρει ἕλκη. καὶ τὰ κοῖλα πληροῖ σὺν ἴριδι καὶ μέλιτι. σμήχει δὲ καὶ οὖλα καὶ ὀδόντας. δοκεῖ δὲ καὶ ἡ κληματῖτις πρὸς τὰ αὐτὰ ποιεῖν. ἐλαττουμένη τοι τῇ δυνάμει τῶν προειρημένων.

Περὶ γλυκυρρίζης. Κεφ. υ ιβ.

Γλυκύρριζα γεννᾶται πλείστη ἐν καππαδοκίᾳ, καὶ πόντῳ. ἔστι δὲ θαμνίσκος, ῥάβδους ἔχων διπήχεις, περὶ οὓς τὰ φύλλα πυκνὰ ἐοικότα σχίνῳ. λιπαρὰ καὶ κολλώδη ἁπτομένῳ. τὸ δὲ ἄνθος ὑακίνθῳ ὅμοιον. καρπὸς δὲ πλατάνου σφαιρίων μέγεθος τραχύτερος. λοβοὺς ἔχων ὡς φακοῦ, πυρροὺς, μι-

κρούς. ῥίζαι μακραί. πυξοειδεῖς ὡς γεντιανῆς. ὑπόστρυφνοι. γλυκεῖαι. χυλιζόμεναι ὥσπερ τὸ λύκιον. ποιεῖ δὲ τὸ χύλισμα πρὸς τραχύτητας ἀρτηρίας. δεῖ δὲ ὑποτιθέντας τῇ γλώττῃ ἀποχυλίζειν, ἁρμόζει δὲ καὶ πρὸς καῦσον στομάχου. καὶ πρὸς τὰ ἐν θώρακι καὶ ἥπατι. φλεγμασίας τε κύστεως καὶ νεφρίτιδας πινόμενον μετὰ γλυκέως. ἄδιψόν τε ἐστὶν ἀποχυλιζόμενον. καὶ τραυματικὸν περιχριόμενον. καὶ στομαχικὸν διαμασώμενον. καὶ τὸ ἀφέψημα δὲ τῶν ῥιζῶν προσφάτως πρὸς τὰ αὐτὰ, ἁρμόζει. ἡ δὲ ῥίζα ξηρὰ λειοτριβηθεῖσα, πτερυγίοις καταπλαστὸς ἐστὶν ἐπιτήδειος.

Περὶ κενταυρίου τοῦ μεγάλου. κεφ. υιγ.

Κενταύριον τὸ μέγα. οἱ δὲ, νάρκην καλοῦσι. φύλλα ἔχει καρύᾳ βασιλικῇ ὅμοια. προμήκη. χρώματι χλωρὰ ὡς κράμβης. τὸ δὲ περιφερὲς αὐτῶν ἐντέτμηται ὥσπερ πρίων. καυλὸν δὲ ἔχει ὡς λαπάθου δίπηχυν. ἢ καὶ τρίπηχυν. παραφυάδας ἀπὸ τῆς ῥίζης ἔχοντα πολλάς. ἐφ' ὧν κεφαλαὶ ὅμοιαι μήκωνι. ὑπομήκεις ἐν τῷ περιφερεῖ. ἄνθος κυανίζον. καρπὸς δὲ ὅμοιος κνίκῳ. ἐγκείμενος ὥσπερ ἐν ἐριώδεσι τοῖς ἄνθεσι. ῥίζα, παχεῖα. στερρά. βαρεῖα. περὶ πήχεις δύο. μεστὴ χυλοῦ. δριμεῖα μετὰ ποσῆς στύψεως καὶ γλυκύτητος. ὑπέρυθρος. φιλεῖ δὲ λιπαρὰν γῆν. εὐήλιον. καὶ δρυμοὺς καὶ γεώλοφα. πλεονάζει δὲ ἐν λυκίᾳ καὶ πελοποννήσῳ. ἐν ἤλιδι καὶ ἀρκαδίᾳ καὶ μεσσηνίᾳ καὶ περὶ φολόην καὶ λυκίαν καὶ σμύρνην. Ἁρμόζει δὲ ἡ ῥίζα, ῥήγμασι. σπάσμασι. περιπνευμονικοῖς. δυσπνοίᾳ. βηχὶ παλαιᾷ. αἱμοπτοϊκοῖς ἀπυρέτοις μετ' οἴνου. πυρέσσουσι δὲ μεθ' ὕδατος < β. πλῆθος τῆς ῥίζης λείας διδομένης. πρὸς στρόφους ὁμοίως καὶ ὑστέρας ἀλγήματα. ἄγει δὲ καὶ ἔμμηνα καὶ ἔμβρυα εἰς σχῆμα κολλυρίου ξυσθεῖσα, καὶ προστεθεῖσα τῇ ὑστέρᾳ. ὅ, τε χυλὸς τὰ αὐτὰ ποιεῖ. ἔστι δὲ καὶ τραυματική. ὑγρὰ μὲν κοπεῖσα. ξηρὰ δὲ προβραχεῖσα καὶ οὕτω κοπεῖσα. συνάγει γὰρ καὶ κολλᾷ καὶ τὰ ἑψόμενα δὲ κρέα συνάγει. ἐάν τις αὐτὴν κόψας συνεψήσῃ. οἱ δὲ ἐν λυκίᾳ αὐτὴν χυλίζοντες, χρῶνται αὐτῇ ἀντὶ λυκίου. ἐκλήθη δὲ πανάκεια, ἐπειδὴ πάντα τὰ φλεγμαίνοντα πάθη

παύει. καὶ κρούσματα πληκτῶν στραγγουρίας τε παύει ἐν ἐνέγμασι καὶ λιθιῶντας. συνάγεται δὲ πρὸ ἡλίου μέλλοντος ἀνατέλλειν. ὥρα ἀγνὴ ὅτε πληροῦνται ἅπαντα.

### Περὶ κενταυρείου τοῦ μικροῦ. Κεφ. υιδ΄.

Κενταύρειον τὸ μικρόν. ὅ τινὲς λιμναῖον καλοῦσιν. ἐπειδὴ ἐνίκμους φιλεῖ τόπους. πόα ὑπερικῷ ἢ ὀριγάνῳ παραπλήσιός ἐστι. καυλὸν ἔχουσα ὑπὲρ σπιθαμὴν γεγωνιωμένην. ἄνθη ἐν τῷ φοινικῷ ὑποπόρφυρα πρὸς τὰ τῆς λυχνίδος. φύλλα μικρά. ὑπομήκη ὡς πηγάνου. καρπὸς ὅμοιος πυρῷ. ῥίζα μικρὰ ἄχρηστος λεία. Αὕτη κοπτομένη χλωρὰ καὶ καταπλασσομένη, τραυμάτων ἐστὶ κολλητική. ἀνακαθαρτικὴ ἑλκῶν παλαιῶν καὶ ἀπουλωτική. ἀφεψηθεῖσα δὲ καὶ καταπινομένη, ἄγει κατὰ κοιλίαν χολώδη καὶ παχέα. ἔγκλυσμά τε τὸ ἀφέψημα αὐτῆς ἐστι τῶν ἰσχιαδικῶν ἁρμόδιον. ἄγον αἷμα καὶ κουφίζον. ὁ δὲ χυλὸς πρός τε τὰ ὀφθαλμικὰ εὔχρηστος. ἀποκαθαίρων τὰ ἐπισκοτοῦντα ταῖς κόραις σὺν μέλιτι. καὶ ἐν προσθέτῳ ἐμμηνίων ἀγωγὸς καὶ ἐμβρύων. ποθεὶς δὲ ἁρμόζει τοῖς περὶ τὰ νεῦρα πάθεσιν ἰδίως. χυλίζεται δὲ ἡ πόα συλλεγομένη ἐγκύμων οὖσα σπέρματος. καὶ ἀποβρεχομένη ἡμέρας ε΄. εἶτα ἕψεται ἄχρις ἂν ὑπερέχοι τὸ ὕδωρ. ἔπειτα τούτου ψυχθέντος, ὑλίζεται διὰ ὀθονίου θλιβείσης τῆς πόας καὶ πάλιν ἕψεται μέχρι μελιτώδους συστάσεως. ἔνιοι δὲ χλωρὰν ἐγκύμονα αὐτὴν κόψαντες, ἐκθλίβουσι τὸν χυλὸν καὶ βαλόντες εἰς κεραμεοῦν ἀγγεῖον ἀκόνιτον, ἐν ἡλίῳ συστρέφουσι κινοῦντες ἀεὶ ξύλῳ. καὶ τὸ περιπεπηγμένον ἀεὶ ξύοντες καὶ τῷ ὑγρῷ μίσγοντες. σκεπάζοντές τε νυκτὸς ἐπιμελῶς. ἡ γὰρ δρόσος κωλυτικὴ τῆς τῶν ὑγρῶν χυλῶν συστάσεως καθέστηκεν. ὅσα μὲν οὖν ἐκ ξηρῶν τῶν ῥιζῶν ἢ τῶν βοτανῶν ἐγχυλίζεται, ἑψόμενα σκευάζεται. ὡς ἡ γεντιανή. ὅσα δὲ ἐκ φλοιῶν ὑγρῶν ἢ ῥιζῶν ἢ βοτανῶν ἐκθλιβομένων ἐν ἡλίῳ, συστρέφονται ὡς προείρηται. οὕτω καὶ ἡ θαψία καὶ μανδραγόρα καὶ ὀμφάκιον. καὶ τὰ ὅμοια τούτοις χυλίζεται. λύκιον μέντοι καὶ ἀψίνθιον καὶ ὑποκιστὶς

καὶ τὰ ὅμοια τούτοις ἑψόμενα, συστρέφονται ὃν τρόπον προείρηται.

Περὶ χαμαιλέοντος λευκοῦ. Κεφ. υιε΄.

Χαμαιλέων λευκός. ἰξίαν ἔνιοι ἐκάλεσαν, διὰ τὸ ἔν τισι τόποις ἰξὸν εὑρίσκεσθαι πρὸς ταῖς ῥίζαις αὐτοῦ. ᾧ καὶ ἀντὶ μαστίχης χρῶνται αἱ γυναῖκες. ἔχει φύλλα ὅμοια σιλύβῳ ἢ σκολύμῳ. τραχύτερα δὲ καὶ ὀξύτερα καὶ ἰσχυρότερα τοῦ μέλανος. καυλὸν δὲ οὐκ ἔχει. ἀλλ' ἀφίησιν ἐκ τοῦ μέσου ἄκανθαν ὁμοίαν ἐχίνῳ θαλασσίῳ ἢ κινάρᾳ. ἄνθη δὲ πορφυροειδῆ ὥσπερ τρίχας ἐκπαπτουμένας. καρπὸν δὲ κνίκῳ παραπλήσιον. ῥίζαν ἐν μὲν τοῖς εὐγείοις γεωλόφοις παχεῖαν. ἐν δὲ τοῖς ὀρεινοῖς ἰσχνοτέραν. λευκὴν διὰ βάθους. ὑπαρωματίζουσαν. βαρύοσμον. γλυκεῖαν. Ἥτις ποθεῖσα ὀξυβάφου πλῆθος. ἄγει ἕλμινθα πλατεῖαν. λαμβάνεται δὲ σὺν οἴνῳ αὐστηρῷ μετὰ ὀριγάνου ἀποζέματος. καὶ ὑδρωπικοῖς δὲ ἐπιτηδείως δίδοται ὁλκὴ σὺν οἴνῳ. ἰσχναίνει γὰρ αὐτούς. καὶ πρὸς δυσουρίαν τὸ ἀφέψημα αὐτῆς πίνεται. ἔστι δὲ καὶ θηριακὴ σὺν οἴνῳ ποθεῖσα. ἀποκτείνει καὶ κύνας καὶ ὗς. καὶ μύας σὺν ἀλφίτῳ πεφυραμένη, καὶ ὑδρελαίῳ δευθεῖσα.

Περὶ χαμαιλέοντος μέλανος. Κεφ. υις΄.

Χαμαιλέων μέλας. καὶ αὐτὸς τοῖς φύλλοις σκολύμῳ ἔοικεν. ἐλάττονα μέντοι καὶ λεπτότερα καὶ διέρυθρα ἔχει ταῦτα. καυλὸν δὲ ἀνίησι δακτύλου τὸ πάχος, σπιθαμιαῖον, ὑπέρυθρον. ἔχον σκιάδιον καὶ ἄνθη ἀκανθώδη λεπτά, ὑακινθίζοντα ποικίλα. ῥίζα δὲ παχεῖα, μέλαινα, πυκνή, ἐνίοτε δὲ καὶ βεβρωμένη. κλασθεῖσα δὲ ὑπόξανθος. διαμασηθεῖσα δηκτική. φύεται δὲ ἐν πεδίοις ξηροῖς καὶ βουνώδεσι τόποις καὶ παραθαλασσίοις. Δύναται δὲ ἡ ῥίζα λεία μιγέντος αὐτῇ χαλκάνθου ὀλίγου καὶ κεδρίνου ἐλαίου καὶ ὀξυγγίου ψώρας ἐξάγειν. σμήχει δὲ καὶ λειχῆνας θεῖον καὶ ἄσφαλτον προσλαβοῦσα. καὶ συνεψηθεῖσα ὄξει καὶ καταχρισθεῖσα. διακλυζόμενον δὲ τὸ ἀφέψημα αὐτῆς ὀδονταλγίας παύει. μετ' ἴσου δὲ πεπέρεως καὶ κηροῦ διαπλασσομένη τοῖς ἀλγοῦσιν ὀ-

λοῦσι βοηθεῖ. καὶ πυριῶνται δὲ δι' αὐτῆς οἱ ὀδόντες, καθε-
ψηθείσης σὺν ὄξει καὶ καταντληθείσης. προσαγομένη τε διὰ
γραφείου θερμὴ τῷ ἀλγοῦντι ὀδόντι, θρύπτει αὐτόν. ἔφηλιν
δὲ ἀποκαθαίρει καὶ ἀλφοὺς μετὰ θείου. μίγνυται δὲ ταῖς
δυνάμεσι ταῖς σηπτικαῖς. καὶ τὰ φαγεδαινικὰ ἕλκη καὶ τὰ
τεθηριωμένα καταπλασθεῖσα, ἀνασκευάζουσα θεραπεύει.
ὠνόμασται δὲ χαμαιλέων, διὰ τὸ ποικίλον τῶν φύλλων. εὑ-
ρίσκεται γὰρ ἢ λίαν χλωρὰ τὰ τοιαῦτα, ἢ ὑπόλευκα, ἢ κυα-
νοειδῆ. ἢ ἐρυθρά. παρὰ τὰς τῶν τόπων διαφοράς.

Περὶ κροκοδειλίου. Κεφ. υιζ΄.

Κροκοδείλιον. ὅμοιόν ἐστι τῷ μέλανι χαμαιλέοντι. φύεται δὲ
ἐν τόποις δρυμώδεσι. ῥίζαν ἔχον μακράν. ἐλαφράν. ὑπόπλα-
τυν. ὀσμὴν δριμεῖαν, ὁμοίως καρδάμῳ. ἰσχύει δὲ ἡ ῥίζα ζε-
σθεῖσα ἐν ὕδατι καὶ πινομένη, ἄγειν πολὺ αἷμα διὰ ῥωθώ-
νων. δίδοται δὲ καὶ σπληνικοῖς ἐναργῶς ὠφελοῦσα. καὶ τὸ
σπέρμα αὐτῆς, διουρητικῆς ὑπάρχει δυνάμεως. περιφερὲς
ὂν καὶ διπλοῦν ὡς ἀσπίς.

Περὶ διψάκου. Κεφ. υιη΄.

Δίψακος τῶν ἀκανθωδῶν ἐστι καὶ αὕτη. καυλὸν δὲ ἔχει ὑψη-
λόν. ἀκανθώδη. καὶ φύλλα περιειληφότα τὸν καυλόν. ἐμφε-
ρῆ θριδακίνῃ, δύο καθ' ἕκαστον γόνυ, προμήκη, ἀκανθώδη καὶ
αὐτά. ὥσπερ τινὰς πομφόλυγας ἐπὶ μέσης τῆς ῥάχεως, ἔ-
σωθέν τε καὶ ἔξωθεν ἔχοντα ἀκανθώδεις. κοιλίδας δὲ περὶ
τὰ δύο μέρη τῶν φύλλων ὥς τε ὕδατα ἀπὸ τῶν δρόσων καὶ
τῶν ὄμβρων συλλέγειν. ὅθεν καὶ τὸ ὄνομα εἵλκυσεν. ἐπ' ἄκρου
δὲ τοῦ καυλοῦ καθ' ἑκάστην ἀπόφυσιν, κεφαλὴ μία ἐοικυῖα ἐ-
χίνῳ. ὑπομήκης. ἀκανθώδης. ξηρανθεῖσα δὲ λευκὴ φαίνεται.
ἔχει δὲ καὶ σκωλήκια κατὰ μέσην τὴν ἐντεριώνην διαιρεθεῖ-
σα ἡ κεφαλή. Ἡ ῥίζα δὲ ταύτης σὺν οἴνῳ ἀφεψηθεῖσα, καὶ
κοπεῖσα, κηρωτῆς λαβοῦσα πάχος, τὰς ἐν δακτυλίῳ ῥα-
γάδας καὶ σύριγγας ἐντιθεμένη θεραπεύει. ἀποτίθεσθαι
δὲ δεῖ τὸ φάρμακον εἰς χαλκῆν πυξίδα. φασὶ δὲ καὶ μυρμη-
κίας αὐτὸ καὶ ἀκροχορδόνων ἴαμα εἶναι. οἱ δὲ τῆς κεφαλῆς
σκώληκες εἰς κύστιδα ἐνδεόμενοι καὶ περιαπτόμενοι βραχί-

λῷ ἢ βραχίονι, ἱστοροῦνται τεταρταϊκοὺς θεραπεύειν.

Περὶ ἀκάνθης λευκῆς. Κεφ. υιθ.

Ἄκανθα λευκή. φύεται ἐν ὄρεσι καὶ ὑλώδεσι τόποις. φύλλα ἔχουσα χαμαιλέοντι λευκῷ ἐμφερῆ. στενότερα δὲ καὶ λευκότερα. ὑπόδασέα. ἀκανθώδη. καυλὸν ὑπὲρ δύο πήχεις, δακτύλου τοῦ μεγάλου ἢ καὶ μείζονος πάχος. ὑπόλευκον, κενὸν ἔνδοθεν. ἐπ' ἄκρου δὲ αὐτοῦ κεφαλὴ πρόσεστιν ἀκανθώδης, ἐχίνῳ θαλασσίῳ ἐμφερής. πλὴν ἐλάσσων καὶ ὑπομήκης. ἄνθη πορφυρᾶ. ἐν οἷς τὸ σπέρμα ὡς κνίκος. στρογγυλώτερον δέ. Ταύτης ἡ ῥίζα πινομένη, ποιεῖ πρὸς αἱμοπτοϊκούς. στομαχικούς, κοιλιακούς. οὖρά τε κινεῖ. καταπλάσσεταί τε πρὸς οἰδήματα. καὶ τὸ ἀφέψημα δὲ αὐτῆς πρὸς ὀδονταλγίαν ποιεῖ διακλυζόμενον. τὸ δὲ σπέρμα πινόμενον, παιδίοις σπωμένοις βοηθεῖ. καὶ ἑρπετοδήκτοις. φασὶ δὲ ὅτι περίαπτον ἐξ αὐτοῦ θηρία διώκει.

Περὶ ἀκάνθης ἀραβικῆς. Κεφ. υκ.

Ἄκανθα ἀραβική. ἐοικυῖα τὴν φύσιν εἶναι δοκεῖ τῇ λευκῇ ἀκάνθῃ. στύφουσα. καὶ πρὸς ῥοῦν γυναικεῖον καὶ πρὸς ἀναγωγὴν αἵματος καὶ πρὸς τοὺς ἄλλους ῥευματισμοὺς ἡ ῥίζα, παραπλησίως εὐθετεῖ.

Περὶ σκολύμου. Κεφ. υκα.

Σκόλυμος φύλλα ἔχει χαμαιλέοντος καὶ τῆς λευκῆς ἀκάνθης λεγομένης. μελάντερα δὲ καὶ παχύτερα. καυλὸν ἀνίησι μακρόν. περιπλέων φύλλων. ἐφ' οὗ κεφαλὴ ἀκανθώδης. ῥίζα δὲ ὕπεστι μέλαινα παχεῖα. ἧς δύναμις ποιεῖ πρὸς τοὺς ἔχοντας τὰς μασχάλας καὶ τὸ λοιπὸν σῶμα δυσώδες καταπλασσομένη. καὶ ἀφεψηθεῖσα ἐν οἴνῳ καὶ πινομένη. ἄγει δὲ οὖρα πολλὰ καὶ δυσώδη. ἡ δὲ πόα ἀρτιφυὴς οὖσα, λαχανεύεται ἑφθὴ ὥσπερ ἀσπάραγος.

Περὶ ποτηρίου. Κεφ. υκβ.

Ποτήριον. ἴωνες δὲ νευράδα. θάμνος ἐστὶ μέγας. κλῶνας ἔχων μακρούς. μαλακούς. ἱμαντώδεις. λεπτούς. ἐμφερεῖς τραγακάνθῃ. φύλλα μικρά. περιφερῆ. ὅλος δὲ ὁ θάμνος περιείληται

λεπτὸν χνοῦν ἐριώδη. καὶ ἔστιν ἀκανθώδης. ἄνθη μικρὰ, λευκά. καρπὸν δὲ γευομένῳ εὐώδη καὶ δριμύν. ἄχρηστον. φύεται ἐν ἑλώδεσι καὶ γεωλόφοις χωρίοις. ῥίζαι δὲ ὕπεισι πήχεων δύο ἢ τριῶν. ἰσχυραὶ νευρώδεις. αἵ τινες πρὸς τῇ γῇ ἀποτμηθεῖσαι, ἀνιᾶσι δάκρυον κόμμει ὅμοιον. κοπεῖσαι δὲ καὶ αὐταὶ καταπλασθεῖσαι νεύρων διακοπὰς καὶ ῥαύματα κολλῶσι. καὶ τὸ ἀφέψημα δὲ αὐτῶν πινόμενον, ταῖς περὶ τὰ νεῦρα διαθέσεσιν ἁρμόζει.

### Περὶ ἀκανθίου. κεφ. υκγ΄.

Ἀκάνθιον, ἐμφερῆ τὰ φύλλα ἔχει τῇ λευκῇ ἀκάνθῃ. ἐπ' ἄκρῳ δὲ ἀκανθώδεις ἐξοχάς. οὗ συλλεγομένου καὶ ὑφ' ἓν τιθεμένου, βαμβακοειδὴς γίνεται. ταύτης ἡ ῥίζα καὶ τὰ φύλλα, ὀπισθοτονικοῖς βοηθεῖ πινόμενα.

### Περὶ ἀκάνθης. κεφ. υκδ΄.

Ἄκανθα. ἢ ἑρπάκανθα. οἱ δὲ, μελάμφυλον παιδέρωτα. φύεται ἐν παραδείσοις. καὶ ἐν πετρώδεσι, καὶ παρύγροις χωρίοις. ἔχει δὲ πλατύτερα φύλλα πολλῷ καὶ μακρότερα θρίδακος. ἐσχισμένα ὡς τὰ τοῦ εὐζώμου ὑπομέλανα. λιπαρά. λεῖα καυλὸν, λεῖον. δίπηχυν. πάχος δακτύλου. ἐκ διαστημάτων πρὸς τῇ κορυφῇ περιειλημμένον φυλλαρίοις τισίν. οἱονεὶ κυτταρίοις ὑπομήκεσιν. ὑακινθώδεσιν. ἐξ ὧν τὸ ἄνθος προΐεται λευκόν. σπέρμα ὑπόμηκες. μήλινον. θυρσοειδὴς δὲ ἡ κεφαλή. ῥίζαι δὲ ὕπεισι γλίσχραι. μυξώδεις. ἔμπυροι. μακραί. αἵ τινες πυρικαύστοις καὶ στρέμμασιν ἁρμόζουσι καταπλασσόμεναι πινόμεναι δὲ οὖρα ἄγουσι, καὶ κοιλίας ἱστᾶσι. φθισικοῖς τε καὶ ῥήγμασι καὶ σπάσμασιν εὐθετοῦσιν.

### Περὶ ἀγρίας ἀκάνθης. κεφ. υκε΄.

Γίνεται δὲ καὶ ἀγρία ἄκανθα. ὁμοία σκολίμῳ. ἀκανθώδης. βραχυτέρα τῆς ἐν παραδείσῳ καὶ ἡμέρου. δύναται δὲ καὶ ἡ ταύτης ῥίζα ὅσα καὶ ἡ πρὸ αὐτῆς.

### Περὶ ἀνωνίδος. κεφ. υκς΄.

Ἀνωνίς. οἱ δὲ, ὠνωνίδα καλοῦσι. κλῶνες σπιθαμιαῖοι καὶ μεί-

ζονες, θαμνοειδεῖς. πολυγόνατοι. μασχάλας ἔχοντες πολλάς. κεφάλια περιφερῆ. φυλλάρια μικρά. λεπτά. ὥσπερ φακοῦ. πρὸς τὰ τοῦ πηγάνου ἢ λωτοῦ τοῦ ἐγχορτοκηπείοις, ὑπόδασεα. εὐώδη, οὐκ ἀηδὲς ὄζοντα. ἁλμεύεται δὲ πρὸ τοῦ ἀκανθοφυῆσαι. καὶ ἔστιν ἡ δίση. ἔχουσι δὲ οἱ κλάδοι ἀκάνθας ὀξείας. σκολοποειδεῖς, στερεάς. ῥίζαν δὲ λευκήν. θερμαντικήν. λεπτυντικήν. ἧς ὁ φλοιὸς πινόμενος σὺν οἴνῳ, οὖρα ἄγει καὶ λίθους θρύπτει. ἐσχάρας περιῤῥήττει. ἀφεψηθεῖσα δὲ ἐν ὀξυκράτῳ καὶ διακλυζομένη, πόνον ὀδόντων πραΰνει.

Περὶ λευκακάνθης. ΚΕΦ. υκζ΄

Λευκάκανθα. τούτου ἡ ῥίζα ὁμοία κυπείρῳ, πικρὰ ἰσχυρά. ἥτις μασσηθεῖσα, ὀδονταλγίας παραμυθεῖται. τὸ δὲ ἀπόζεμα αὐτῆς σὺν οἴνῳ κυάθων τριῶν ποθὲν, βοηθεῖ πλευριτικοῖς χρονίοις, καὶ ἰσχιαδικοῖς, ῥήγμασι, σπωμένοις. καὶ τὸ χυλῶδες δὲ τῆς ῥίζης, τὰ αὐτὰ ποιεῖ πινόμενον.

Περὶ τραγακάνθας. ΚΕΦ. υκη΄

Τραγάκανθα. ῥίζα ἐστὶ πλατεῖα καὶ ξυλώδης. φαινομένη δὲ καὶ ὑπὲρ γῆς. ἀφ᾽ ἧς κλάδοι ταπεινοί. ἰσχυροί. χεόμενοι δὲ ἐπιπολύ. καὶ ἐπ᾽ αὐτῶν φυλλάρια πολλὰ μεταξὺ λεπτὰ ἀκάνθας ἔχοντα ἐγκρυπτομένας τοῖς φύλλοις, λευκὰς, ἰσχυρὰς ὀρθάς. ἔστι δὲ ἡ τραγάκανθα, δάκρυον τῆς ῥίζης ἀποτμηθείσης ἐπισυνιστάμενον, ἧς διαφέρει ἡ διαυγὴς καὶ λεία καὶ ἰσχνὴ καὶ καθαρὰ καὶ ὑπόγλυκυς. δύναμιν δὲ ἔχει ὁμοίαν κόμμι, περιεμπλαστικήν. χρῆσις δ᾽ αὐτῆς εἰς τὰ ὀφθαλμικά. καὶ πρὸς βῆχας, καὶ πρὸς τὰς περὶ ἀρτηρίαν τραχύτητας. καὶ φωνῆς ἀποκοπάς. καὶ ἐπισταγμοὺς ἐν ἐκλεικτῷ σὺν μέλιτι. ἀποχυλίζεταί τε ὑποτεθεῖσα τῇ γλώσσῃ. καὶ πίνεται δὲ ἀποβραχεῖσα ἐν γλυκεῖ < α. πλῆθος, πρὸς νεφρῶν ὀδύνην καὶ κύστεως δῆξιν, μιγέντος αὐτῇ κέρατος ἐλαφείου κεκαυμένου καὶ πεπλυμένου, ἢ στυπτηρίας σχιστῆς ὀλίγης.

Περὶ ἠρυγγίου. ΚΕΦ. υκθ΄

Ἠρύγγιον. τῶν ἀκανθωδῶν ἐστίν, ἧς ἐν ἀρχῇ τὰ φύλλα λαχα-

νύεται εἰς ἀλμαίας συντιθέμενα. ἔστι δὲ πλατέα, τραχέα
τοῖς περὶξ, ἀρωματίζοντα τῇ γεύσει, αὐξανόμενα δὲ ἀκαν-
θοῦται κατὰ πλείονας ἐξοχὰς καυλῶν, ἐφ᾽ ὧν κατὰ τὰ
ἄκρα κεφάλιά ἐστι σφαιροειδῆ, ἀκάνθας περικείμενα ὥσπερ
ἀστὴρ ὀξυτάτας κύκλῳ, σκληράς, ὧν τὸ χρῶμα χλωρὸν ἢ λευ-
κόν. ἐνίοτε δὲ καὶ κυανοῦν εὑρίσκεται. ῥίζα δὲ ἐπιμήκης. πλα-
τεῖα μέλαινα κατὰ τὴν ἐπιφάνειαν. ἔνδοθεν λευκή, δακτύ-
λου μεγάλου τὸ πάχος. καὶ αὐτὴ εὐώδης καὶ ἀρωματίζου-
σα. φύεται δὲ ἐν πεδίοις καὶ τραχέσι τόποις. Δύναμιν δὲ
ἔχει θερμαντικήν. πινομένη ἄγει καὶ οὖρα καὶ ἔμμηνα, στρό-
φους τε καὶ ἐμπνευματώσεις λύει. ἠπατικοῖς δὲ καὶ θη-
ριοδήκτοις, καὶ θανάσιμον εἰληφόσιν, ἁρμόζει σὺν οἴνῳ. πί-
νεται δὲ πρὸς τὰ πλεῖστα σὺν σταφυλίνου σπέρματι, < α.
τὸ πλῆθος. ἱστορεῖται δὲ ὅτι περιαπτομένη καὶ καταπλασ-
σομένη, φύματα διαφορεῖ. ῥίζα δὲ αὐτῆς πινομένη μετὰ ὑδρο-
μέλιτος, ὀπισθοτονικοὺς ἰᾶται καὶ ἐπιληπτικούς.

## Περὶ Ἀλόης. Κεφ. υλ΄.

Ἀλόη φύλλον ἔχει σκύλλῃ παραπλήσιον, παχὺ λιπαρόν,
ὑπόπλατυ. περιφερές, εἰς τοὐπίσω κλώμενον. παρ᾽ ἑκά-
τερα δὲ τὰ μέρη ἔχει τὰ φύλλα ἐκ πλαγίων ἀκανθώδη. ἀ-
ραιῶς ἐξέχοντα. κολοβά. καυλὸν δὲ ἀνίησιν ἀνθερικῷ ὅ-
μοιον. ἄνθος δὲ λευκόν. καὶ καρπὸν ἀσφοδέλῳ ἐοικότα. βαρύο-
σμος δὲ ὅλη, καὶ ἀπογευομένῳ πικροτάτη. ἔστι δὲ μονόρριζος
ὥσπερ πάσσαλον ἔχουσα τὴν ῥίζαν. γεννᾶται δὲ ἐν τῇ ἰν-
δίᾳ πλείστη λιπαρά. ἐξ ἧς καὶ τὸ ὄπισμα κομίζεται. φύε-
ται δὲ καὶ ἐν ἀραβίᾳ καὶ ἀσίᾳ. καὶ ἔν τισι παραθαλασσίοις
τόποις καὶ νήσοις, ὡς ἐν ἄνδρῳ οὐκ εὔχρηστος εἰς ὀπισμόν.
πρὸς δὲ κόλλησιν τραυμάτων ἐπιτήδειος. λεία καταπλασσο-
μένη. διττὸν δέ ἐστι τὸ εἶδος τοῦ χυλίσματος. τὸ μέν τοι ψαμ-
μῶδες, ὅπερ ὑποστάθμη τῆς καθαρωτάτης ἔοικεν εἶναι.
τὸ δέ, ἡπατίζον. ἐκλέγου δὲ τὴν καθαρὰν καὶ ἄδολον καὶ ἀ-
λιθον. στίλβουσαν. ὑπόξανθον. εὔθρυπτον. ἡπατίζουσαν ῥᾳ-
δίως ὑγραινομένην. ἐπιτεταμένην τῇ πικρίᾳ. τὴν μέν τοι
μέλαιναν καὶ δυσκάτακτον ἀπεκλέγου. δολίζουσι δὲ αὐτὴν

κόμμει. ὅπερ ἐλέγχεται γεύσει καὶ πικρίᾳ καὶ ὀσμῆς ἐ-
πιτάσει. καὶ τὸ μὴ διαλύεσθαι μέχρις ἐλαχίστου ψήγματος
θλιβομένη ὑπὸ τῶν δακτύλων. ἔνιοι δὲ καὶ ἀκακίαν μίσ-
γουσι. Δύναμιν δὲ ἔχει στυπτικὴν, ὑπνωτικὴν, ξηραντικὴν.
πυκνωτικὴν τῶν σωμάτων. κοιλίας τε λυτικὴν. καὶ στομά-
χου ἀποκαθαρτικήν. κοχλιαρίων β΄. πλῆθος, μεθ' ὕδατος
ψυχροῦ. ἢ γαλακτώδους πινομένη. αἵματός τε ἀναγωγὰς ἐ-
πέχει. καὶ ἴκτερον ἀποκαθαίρει. μεθ' ὕδατος τριωβόλου.
ἢ < α. ὁλκῆς ἐν ποτῷ. καὶ μετὰ ῥητίνης δὲ καταπινομένη
ἢ ὕδατος ἢ μέλιτος ἑφθοῦ ἀναληφθεῖσα κοιλίαν λύει. δρα-
χμῶν δὲ τριῶν πλῆθος τελείως καθαίρει. μιγεῖσα δὲ τοῖς
ἄλλοις καθαρτικοῖς, ἧσσον αὐτὰ κακοστόμαχα ποιεῖ, ξηρὸν
δὲ ἐπιπλασθὲν, τραύματα κολλᾷ. καὶ ἐπουλοῖ ἕλκη καὶ κα-
ταστέλλει. αἰδοῖα δὲ ἑλκωμένα ἰδίως θεραπεύει. καὶ ἐπα-
ρώγια παίδων ῥηχθέντα παρακολλᾷ. θεραπεύει δὲ καὶ κον-
δυλώματα καὶ ῥαγάδας κιρναμένη σὺν γλυκεῖ οἴνῳ. αἱ-
μορραγίας τε ἵστησι τὰς ἐξ αἱμορροΐδων. καὶ πτερύγια ἀ-
πουλοῖ. αἴρει καὶ πελιώματα καὶ ὑπώπια σὺν μέλιτι. ψω-
ροφθαλμίας τε καὶ ἀκανθῶν κνησμοὺς παρηγορεῖ. καὶ κε-
φαλαλγίαν μετ' ὄξους καὶ ῥοδίνου, μετώπῳ καὶ κροτάφοις
ἐπιχριομένη. ἐπέχει καὶ ῥεούσας τρίχας σὺν οἴνῳ. καὶ πρὸς
παρίσθμια δὲ καὶ οὖλα, καὶ πάντα τὰ ἐν τῷ στόματι ἁρ-
μόζει σὺν μέλιτι καὶ οἴνῳ. φώγνυται δὲ καὶ εἰς τὰ ὀφθαλ-
μικὰ ἐπὶ καθαροῦ καὶ διαπύρου ὀστράκου. μεταβαλλό-
μενον μύστρῳ, μέχρις ἂν ὁμαλῶς πυρωθῇ. πλύνεται δὲ χω-
ριζομένου τοῦ ψαμμώδους ὡς ἀχρήστου. λαμβανομένου δὲ
τοῦ λιπαρωτάτου. καὶ λείου.

## Περὶ Ἀψινθίου. ΚΕΦ. υλα΄.

Α Ψίνθιον. βαθύπικρον. γνώριμος ἡ πόα. ἔστι δὲ αὐτῆς βελ-
τίων τὸ ἐν Πόντῳ καὶ Καππαδοκίᾳ. ἐν ὄρει τῷ καλουμένῳ
Ταύρῳ γεννώμενον. Δύναμιν δὲ ἔχει θερμαντικὴν, συ-
πτικὴν, καὶ ἀποκαθαρτικὴν τῶν ἐνηρηκότων στομάχῳ καὶ κοι-
λίᾳ χολωδῶν. ἔστι δὲ καὶ οὐρητικὸν καὶ ἀκραίπαλον, προπι-
νόμενον. καὶ πρὸς ἐμπνευματώσεις δὲ ἁρμόζει καὶ κοιλίας

καὶ στομάχου

καὶ στομάχου ἀλγήματα. πινόμενον μετὰ σεσέλεως ἢ νάρδου κελτικῆς. καὶ ἀνορεξίας καὶ ἰκτερικοὺς θεραπεύει. τὸ ἀπόβρεγμα αὐτοῦ ἢ τὸ ἀφέψημα, καθ' ἑκάστην ἡμέραν λαμβανόμενον εἰς πλῆθος κυάθων τριῶν. ἄγει δὲ καὶ ἔμμηνα. πινόμενόν τε καὶ προστιθέμενον μετὰ μέλιτος. πρός τε τοὺς ἀπὸ μυκήτων πνιγμοὺς, ἁρμόζει σὺν ὄξει πινόμενον, σὺν οἴνῳ δὲ πρὸς ἰξίαν καὶ κώνειον καὶ μυγαλῆς δήγματα, καὶ δράκοντα θαλάσσιον. συναγχικοῖς τε διάχρισμα σὺν μέλιτι καὶ νίτρῳ καὶ πρὸς ἐπινυκτίδας σὺν ὕδατι. πρὸς δὲ ὑπώπια σὺν μέλιτι. καὶ πρὸς ἀμβλυωπίας. καὶ πρὸς ἰχωροῦντα ὦτα ὁμοίως. καὶ ὁ ὑπατμισμὸς δι' αὐτοῦ τοῦ ἀφεψήματος πρὸς ὠταλγίαν καὶ ὀδονταλγίαν. ἀφεψόμενόν τε σὺν γλυκεῖ, κατάπλασμα ὀφθαλμῶν περιωδυνώντων ἐστί. καταπλάσσεται δὲ καὶ πρὸς ὑποχόνδρια, καὶ ἧπαρ καὶ στόμαχον ἐπαλγῆ καὶ χρονίως πάσχοντα. συνεκλεαινόμενον κηρωτῇ κυπρίνῃ. πρὸς δὲ στόμαχον ῥοδίνῃ. ἁρμόζει καὶ ὑδρωπικοῖς. καὶ σπληνικοῖς. μιγέντων αὐτῷ σύκων, καὶ νίτρου, καὶ αἰρίνου ἀλεύρου. Σκευάζεται δὲ ἐξ αὐτοῦ καὶ οἶνος ὁ λεγόμενος ἀψινθίτης. μάλιστα περὶ τὴν προποντίδα καὶ θρᾴκην. ᾧ πρὸς τὰ προειρημένα χρῶνται ἐν ἀπυρεξίᾳ. καὶ ἄλλως δὲ, προπίνουσιν ἐξ αὐτοῦ θέρους ὑγείας ποιητικὸν εἶναι νομίζοντες. δοκεῖ δὲ καὶ περιπλαττόμενον εἰς τὰς κιβωτοὺς ἄβρωτα τηρεῖν τὰ ἱμάτια. ἀλειφόμενόν τε μετὰ ἐλαίου, κώνωπας κωλύειν ἅπτεσθαι τοῦ σώματος. τὸ δὲ μέλαν ᾧ γράφομεν τῷ ἀποβρέγματι αὐτοῦ γραφὲν, ἄβρωτα μυσὶ τηρεῖ τὰ γράμματα. ἔοικε δὲ καὶ τὸ τοῦ χυλίσματος ἔργα ποιεῖν τὰ αὐτά. πλὴν εἰς τὰς πόσεις οὐ δοκιμάζομεν αὐτό. κακοστόμαχον καὶ κεφαλαλγὲς ὄν. τὸ δὲ χύλισμα ἀμόργῃ ἑψηθείσῃ καὶ μιγνυμένῃ δολοῦσί τινες.

## Περὶ ἀψινθίου θαλασσίου. Κεφ. υλβ'.

Καλοῦσι τινὲς καὶ σέριφον ἀψίνθιον θαλάσσιον. ὃ πλεῖστον ἐν τῷ περὶ καππαδοκίαν ταύρῳ ὄρει γεννᾶται. καὶ ἐν ταφουσίρει τῆς αἰγύπτου. ᾧ ἀντὶ θαλλοῦ οἱ ἰσιακοὶ χρῶνται. ἔστι δὲ ἡ πόα λεπτόκαρφος. ἐοικυῖα ἀβροτόνῳ μικρῷ. περὶ

πληθὴς σπερματίων. ὑπόπικρος καὶ κακοστόμαχος, βαρύοσμος, στύφουσα μετὰ ποσῆς θερμασίας. ἥτις ἑψηθεῖσα καθ᾽ ἑαυτὴν, ἢ μετὰ ὀρύζης καὶ ληφθεῖσα μετὰ μέλιτος, ἀσκαρίδας καὶ ἕλμινθας στρογγύλας κτείνει. ὑπάγουσα κοιλίαν κούφως. δύναται δὲ καὶ σὺν ἑψήματι, ἢ φακῆ καθεψηθεῖσα τὰ αὐτὰ ποιεῖν. λιπαίνεται δὲ μάλιστα τὰ πρόβατα νεμόμενα.

Περὶ ἀψινθίου σαρδονίου. Κεφ. υλγ΄.

Ἔστι δὲ καὶ τρίτον εἶδος ἀψινθίου. γεννώμενον ἐν τῇ κατὰ τὰς ἄλπεις γαλατίᾳ πλεῖστον. ὃ ἐπιχωρίως σαρδόνιον καλοῦσιν ἐπωνύμως τῇ γεννώσῃ αὐτὸ σαρδονίδι χώρᾳ. ἐοικὸς ἀψινθίῳ. οὐ μὴν οὕτω γε ἔνσπερμον. ὑπόπικρον δὲ, καὶ δυνάμενον τὰ αὐτὰ τῷ σεριφίῳ.

Περὶ ἀβροτόνου. Κεφ. υλδ΄.

Ἀβρότονον. ἔστι δὲ αὐτοῦ τὸ μὲν θῆλυ θάμνος δενδροειδής. ὑπόλευκος φύλλοις λεπτοσχιδέσιν ὡς τὰ τοῦ σεριφίου περὶ τὰ κλωνία πλῆρες ἀνθοῦς. ἐπ᾽ ἄκρου ἔχον κορυμβῶδες χρυσοειδές. θερείας γεννώμενον εὐῶδες μετὰ ποσοῦ βάρους. πικρὸν τῇ γεύσει, δοκεῖ δὲ τὸ σικελιωτικὸν εἶναι τοιοῦτον. τὸ δὲ ἕτερον ἄρρεν καλεῖται. κληματῶδες λεπτόκαρπον ὡς ἀψίνθιον. πλεῖστον δὲ ἐν καππαδοκίᾳ γεννᾶται καὶ γαλατίᾳ τῇ κατὰ τὴν ἀσίαν. καὶ ἐν ἱεραπόλει τῇ κατὰ τὴν συρίαν.

Τούτου ὁ καρπὸς ἀποζεννύμενος ἢ ὠμὸς τριβεὶς μεθ᾽ ὕδατος πινόμενος, βοηθεῖ ὀρθοπνοίᾳ ῥήγμασι σπάσμασιν. ἰσχιάσι. δυσουρίαις. ἐμμηνίων ἐπισχέσει. καὶ θανασίμων φαρμάκων ἐστὶν ἀντίδοτος. ποθὲν σὺν οἴνῳ σύγκρισμά τε ῥιγούντων μετ᾽ ἐλαίου ἐστί. διώκει δὲ καὶ ἑρπετὰ στιβαδούμενον καὶ θυμιώμενον καὶ πινόμενον δὲ σὺν οἴνῳ ὠφελεῖ τοὺς δηχθέντας ἰδίως δὲ ἁρμόζει ἐπὶ φαλαγγίων καὶ σκορπίων. βοηθεῖ δὲ καὶ ὀφθαλμῶν φλεγμοναῖς σὺν ἑφθῷ κυδωνίῳ ἢ μετὰ ἄρτου καταπλασθέν. διαφορεῖ καὶ φύματα μετὰ ὠμῆς λύσεως λεῖον ἑψηθέν. μίγνυται δὲ καὶ εἰς τὴν τοῦ ἰρίνου ἐλαίου σκευασίαν.

Περὶ ὑσσώπου. Κεφ. υλε΄.

Ὕσσωπος. πόα γνώριμος. διττή. ἡ μὲν γάρ τίς ἐστιν ὀρεινή. ἡ δὲ κηπευτή. ἀρίστη δέ ἐστιν ἡ ἐν κιλικίᾳ γενομένη. Δύναμιν δὲ ἔχει λεπτυντικήν. θερμαντικήν. ἀφεψηθεῖσα δὲ μετὰ σύκων, καὶ ὕδατος. μέλιτός τε καὶ πηγάνου καὶ πινομένη, ἀρήγει περιπνευμονικοῖς. ἀσθματικοῖς. βηχὶ χρονίᾳ. καταῤῥῷ ὀρθοπνοίᾳ. κτείνει δὲ καὶ ἕλμινθας. σὺν μέλιτι δὲ ἐκλειχομένη τὸ αὐτὸ ποιεῖ ἄγει δὲ καὶ πάχος κατὰ κοιλίαν τὸ ἀφέψημα αὐτῆς σὺν ὀξυμέλιτι πινόμενον. βιβρώσκεται δὲ καὶ μετὰ χλωρῶν σύκων λύων πρὸς ὑπαγωγὴν κοιλίας σφοδρότερον δὲ καθαίρει μιγέντος αὐτῷ καρδαμώμου, ἢ ἴριδος ἢ ἐρυσίμου. ποιεῖ δὲ καὶ εὔχροιαν. καταπλάσσεται δὲ μετὰ σύκου καὶ νίτρου πρὸς σπλῆνα καὶ ὕδρωπα. σὺν οἴνῳ δὲ πρὸς φλεγμονάς. διαφορεῖ δὲ καὶ ὑπώπια σὺν ὕδατι ζεστῷ καταπλασθεῖσα. συνάγχαις δὲ ἀναγαργάρισμα μετὰ σύκων ἀφεψήματος ἄριστον. ὀδόντων τε πόνον πραΰνει σὺν ὄξει ἑψηθεῖσα καὶ διακλυζομένη. λύει δὲ καὶ τὰς περὶ ὦτα ἐμπνευματώσεις ὑπατμισθεῖσα.

### Περὶ Στιχάδος. ΚΕΦ. υλϛ΄.

Στιχάς. γεννᾶται μὲν ἐν ταῖς κατὰ γαλατίαν νήσοις ἀντικρὺ μασσαλίας. καλουμέναις δὲ στυχάσιν. ὅθεν καὶ τὴν ἐπωνυμίαν ἔσχηκε. πόα λεπτόκαρπος ἐστιν. ὁμοίαν ἔχουσα κόμην θύμῳ. μακροφυλλοτέρα μέντοι γε καὶ δριμεῖα ἐν τῇ γεύσει. καὶ ὑπόπικρος πως. ποιεῖ δὲ τὸ ἀφέψημα αὐτῆς καθὼς ὁ ὕσσωπος πρὸς τὰ ἐν θώρακι. μίγνυται δὲ καὶ ἀντιδότοις χρησίμως.

### Περὶ ὀριγάνου. ΚΕΦ. υλζ΄.

Ὀρίγανος ἡρακλεωτική. οἱ δὲ κονίλην καλοῦσι. φύλλον ἔχει ἐμφερὲς ὑσσώπῳ. σκιάδιον δὲ οὐ τροχοειδές. ἀλλ᾽ ὥσπερ διῃρημένον. καὶ ἐπ᾽ ἄκρων τῶν ῥάβδων τὸ σπέρμα οὐ πυκνόν.

Ἔστι δὲ θερμαντική. ὅθεν τὸ ἀφέψημα αὐτῆς σὺν οἴνῳ ποθὲν, ἁρμόζει θηριοδήκτοις σὺν γλυκεῖ δὲ τοῖς κώνειον ἢ μηκώνιον πεπωκόσι. σὺν ὀξυμέλιτι δὲ τοῖς πεπωκόσι γύψον ἢ ἐφήμερον. πρὸς δὲ τὰ σπάσματα, καὶ ῥήγματα καὶ ὕδρωπας μετὰ σύκου βιβρωσκομένη. ξηρὰ δὲ ποθεῖσα ὀξυβάφου πλῆθος, σὺν μελικράτῳ μέλανα κατὰ κοιλίαν ἄγει. ἔμμηνά τε κινεῖ

καὶ βῆχας θεραπεύει σὺν μέλιτι ἐκλειχομένη. κνησμοὺς δὲ
καὶ ψώρας καὶ ἴκτερον τὸ ἀφέψημα αὐτῆς ἐν λουτρῷ ὠφε-
λεῖ. ὁ δὲ χυλὸς αὐτῆς χλωρᾶς οὔσης, καὶ παρίσθμια καὶ κιο-
νίδας καὶ ἄφθας θεραπεύει. καὶ διὰ ῥινὸς ἄγει σὺν ἐλαίῳ
ἰρίνῳ ἐγχυματιζόμενος. σὺν γάλακτι δὲ καὶ ὠταλγίας παρ-
ηγορεῖ. ἐμμετικόν τε φάρμακον σκευάζεται δι' αὐτῆς καὶ
κρομμύων, καὶ ῥοὸς τοῦ εἰς τὰ ὄψα, πάντων ἐν χαλκῷ κυ-
πρίῳ. ἐν τοῖς ὑπὸ κύνα καύμασιν ἡλιαθέντων. εἰς ἡμέ-
ρας μ. ὑποστρωννυμένη δὲ ἡ πόα, ἑρπετὰ διώκει.

### Περὶ ὀνίτιδος. Κεφ. υλη΄.

Ἡ δὲ ὀνῖτις καλουμένη, λευκοτέρα τοῖς φύλλοις ἐστί. καὶ μᾶλ-
λον ἐοικυῖα ὑσσώπῳ. καὶ τὸ σπέρμα ὡς περὶ κορύμβους συνε-
χεῖς ἐπικειμένους ἔχει. δύναται μέντοι τὰ αὐτὰ τῇ ἡρα-
κλεωτικῇ. οὐχ οὕτω μέντοι δραστικὴ καθέστηκεν.

### Περὶ ἀγριοριγάνου. Κεφ. υλθ΄.

Ἡ δὲ ἀγριορίγανος ἣν πάνακες ἡράκλειον. οἱ δὲ κονύλην καλοῦ-
σιν. ὧν ἐστι καὶ Νίκανδρος ὁ κολοφώνιος, ἔχει τὰ μὲν φύλλα
ὅμοια ὀριγάνῳ. ῥαβδία δὲ σπιθαμιαῖα λεπτά. ἐφ' ὧν σκιάδια
ὅμοια ἀνήθῳ. ἄνθη δὲ λευκά. ῥίζα λεπτὴ ἄχρηστος. ἰδίως δὲ
βοηθεῖ θηριοδήκτοις, τὰ φύλλα καὶ τὰ ἄνθη σὺν οἴνῳ πινό-
μενα.

### Περὶ τραγοριγάνου. Κεφ. υμ΄.

Τραγορίγανος θαμνίσκος ἐστίν. ὀριγάνῳ ἢ ἑρπύλλῳ ἀγρίῳ ὅμοιος
τὰ φύλλα καὶ τὰ κλωνία. ἡ μέν τις εὑρίσκεται κατὰ τό-
πους εὐερνεστέρα. καὶ πλατύφυλλος. κομμώδης ἱκανῶς. ἡ δέ
τις λεπτόκαρφος καὶ λεπτόφυλλος. ἣν καὶ πράσιον ἔνιοι κα-
λοῦσιν. ἀρίστη δὲ ἡ κιλίκιος. καὶ ἡ ἐν κῷ καὶ χίῳ καὶ σμύρνῃ
καὶ κρήτῃ. θερμαντικαὶ δὲ πᾶσαι καὶ οὐρητικαὶ καὶ εὐκοί-
λιοι. πινομένου τοῦ ἀφεψήματος. ὑποβιβάζουσι γὰρ τὰ χο-
λώδη. εὔθετοι καὶ σπληνικοῖς πινόμεναι μετ' ὄξους. καὶ τοῖς
ἰξίαν πεπωκόσι μετ' οἴνου. καὶ ἔμμηνα δὲ ἄγουσι. βηξί τε καὶ
περιπνευμονίαις, σὺν μέλιτι ἐν ἐκλείκτῳ δίδοται. ἔστι δὲ
καὶ τὸ πότημα ἐπιεικές. ὅθεν τοῖς ἀσώδεσι καὶ κακοστομάχοις

καὶ ὀξυρεγμιῶσι δίδοται. καὶ ἐφ' ὧν ἀλυσμὸς καὶ ναυτία
καὶ θέρμη τῶν ὑποχονδρίων παρακολουθεῖ. διαφορεῖ δὲ καὶ
οἰδήματα καταπλασθεῖσα μετὰ ἀλφίτων.

Περὶ γλίχωνος. Κεφ. υμα.

Γλίχων. πόα γνώριμος. λεπτυντική. θερμαντική. πεπτική.
ποθεῖσα δὲ ἔμμηνα καὶ δεύτερα καὶ ἔμβρυα ἄγει. ἀνάγει δὲ
καὶ τὰ ἐκ πνεύμονος μετὰ ἀλόης καὶ μέλιτος ποθεῖσα, καὶ
σπωμένοις βοηθεῖ. ναυτίας τε καὶ δηγμοὺς στομάχου μετὰ
ὀξυκράτου ποθεῖσα παραμυθεῖται. ἄγει δὲ καὶ κατὰ κοιλίαν
μέλαιναν. βοηθεῖ δὲ καὶ θηριοδήκτοις πινομένη μετ' οἴνου. λει-
ποθυμοῦντάς τε ἀνακτᾶται σὺν ὄξει ταῖς ῥισὶ προσφε-
ρομένη. κρατύνει δὲ καὶ οὖλα ξηρὰ λεῖα κεκαυμένη. ἐπιπλα-
σθεῖσα δὲ πραΰνει πᾶσαν φλεγμονὴν σὺν ἀλφίτῳ. καθ' ἑ-
αυτὴν δὲ ποδαγρικοῖς ἁρμόζει, ἄχρι φοινίξεως τῆς ἐπιφα-
νείας. σὺν κηρωτῇ δὲ ἰόνθους σβέννυσιν. ὠφελεῖ δὲ καὶ σπλη-
νικοὺς μεθ' ἁλὸς καταπλασσομένη. τὸ δὲ ἀφέψημα αὐτῆς κνη-
σμοὺς λουομένων παύει. καὶ εἰς ἐγκάθισμα. καὶ πρὸς ἐμπνευ-
ματώσεις καὶ σκληρείας καὶ ἀποστροφὰς ὑστέρας ἁρμόζει.
καλοῦσι δέ τινες αὐτὴν βλήχωνα. ἐπειδὴ τὰ γευσάμενα κα-
τὰ τὴν αὔξησιν τῶν ποιμνίων, βληχῆς ὑποπίμπλανται.

Περὶ δικτάμου. Κεφ. υμβ.

Δίκταμος ἣν καλοῦσί τινες γλήχωνα ἀγρίαν. οἱ δὲ βέτιον. πόα ἐστὶ
κρητικὴ δριμεῖα. λεία. ὁμοία γλήχωνι. μείζω δὲ καὶ γναφαλοειδῆ
τὰ φύλλα ἔχει. καὶ βρυώδη τινὰ ἐπίφυσιν. οὔτε δὲ ἄνθος οὔ-
τε καρπὸν φέρει. ποιεῖ δὲ πάντα ὅσα καὶ ἡ ἥμερος γλήχων.
ἐνεργέστερον δὲ πολλῷ. οὐ μόνον γὰρ πινομένη ἀλλὰ καὶ προ-
στιθεμένη καὶ ὑποθυμιωμένη, τὰ τεθνηκότα ἔμβρυα ἐκτι-
νάσσει. φασὶ δὲ καὶ τὰς αἶγας ἐν κρήτῃ τοξευθείσας καὶ νεμη-
θείσας τὴν πόαν ἐκβάλλειν τὰ τοξεύματα. ἔχει δὲ καὶ καθαρ-
τικὴν δύναμιν ὁ χυλὸς αὐτῆς, καταχριόμενος ἢ τριβόμε-
νος ὥσπερ μετ' ἀλφίτων. καταπλασσομένη δὲ ἡ βοτάνη τοῦ-
ὑποκάτω τῶν ποδῶν ἢ τοῦ λοιποῦ σώματος θεραπεύει σκόλο-
πας. ποιεῖ δὲ καὶ πρὸς πόνον σπληνός. μειοῖ γὰρ αὐτόν. καρ-

ἀνθίζουσι δὲ αὐτὴν ἐν θέρει καὶ φθινοπώρῳ. ἡ δὲ ῥίζα αὐτῆς γευομένῳ θερμαίνει. ἔστι δὲ καὶ ὀξυτόκιον. βοηθεῖ δὲ καὶ θηριοδήκτοις ὁ χυλὸς αὐτῆς μετ' οἴνου πινόμενος. τοιαύτη δὲ τῆς βοτάνης ἡ δύναμις, ὡς καὶ ὀσφραινομένη διώκειν, καὶ προσαπτομένη ἀναιρεῖν τὰ ἰοβόλα θηρία. τὸ δὲ αὐτῆς χύλισμα ἐπιχεόμενον πληγῇ σιδήρου ἢ ἰοβόλου δήγματι, καὶ πρὸς τὸ ἐπιχυθῆναι καὶ λαμβανόμενον πόσει, εὐθέως ὑγιάζει.

Περὶ ψευδοδικτάμου. Κεφ. υμγ.

Τὸ δὲ ψευδοδίκταμον καλούμενον, φύεται ἐν πολλοῖς τόποις. ἐμφερὲς δὲ τῷ προ αὐτοῦ ἔλαττον δὲ δριμύ. ποιεῖ δὲ τὰ αὐτὰ τῷ δικτάμῳ οὐχ ὁμοίως ἐνεργοῦν.

Περὶ τοῦ ἀπὸ κρήτης δικτάμου. Κεφ. υμδ.

Φέρεται δὲ καὶ ἀπὸ κρήτης ἕτερον εἶδος δικτάμου. φύλλοις ἐοικὸς σισυμβρίου. κλῶσι δὲ μεῖζον. ἐφ' ὧν ἄνθος ὀριγάνῳ ἀγρίῳ ἐοικός, μέλαν, μαλακόν. ὀσμὴ δὲ τῶν φύλλων μεταξὺ σισυμβρίου, καὶ ἐλελισφάκου, ἡδίστη. ποιεῖ δὲ πρὸς ὅσα καὶ ἡ προ αὐτῆς. ἧσσον πληκτικὴ ὑπάρχουσα. μίγνυται δὲ καὶ ἐμπλάστροις καὶ θηριακαῖς.

Περὶ ἐλελισφάκου. Κεφ. υμε.

Ἐλελίσφακον. οἱ δὲ ἐλαφόβοσκον. οἱ δὲ σφακόν. θάμνος ἐστὶν ἐπιμήκης. πολύκλονος. ῥάβδους τετραγώνους καὶ ὑπολεύκους ἔχων. φύλλα δὲ μηλέᾳ κυδωνίᾳ ἐοικότα. ἐπιμηκέστερα μέντοι καὶ τραχύτερα καὶ παχύτερα λεληθότως ὥσπερ τὰ ἀνάξιπτα τῶν ἱματίων δασέα. ὑπόλευκα, σφοδρῶς εὐώδη, βρωμώδη. καρπὸν δὲ ἐπ' ἄκρων τῶν καυλῶν ὥσπερ ὁρμίνου ἀγρίου ἔχει. φύεται δὲ ἐν τραχέσι χωρίοις. Δύναμιν δὲ ἔχει τὸ ἀφέψημα τῶν φύλλων καὶ τῶν κλάδων οὖρα ἄγειν πινόμενον. καὶ ἔμμηνα καὶ ἔμβρυα κατασπᾶν. καὶ ζυγόνος πληγαῖς ἀρήγειν. μελαίνει δὲ καὶ τρίχας. καὶ τραυματική. καὶ ἴσχαιμος. καὶ ἀποκαθαρτικὴ τῶν θηριωδῶν ἐστὶν ἑλκῶν. παύει δὲ σὺν οἴνῳ τὸ ἀφέψημα τῶν φύλλων καὶ τῶν κλάδων αὐτῶν προσκλυζόμενον. τοὺς περὶ τὰ αἰδοῖα κνησμούς.

Περὶ ἡδυόσμου ἡμέρου. Κεφ. υμϛ'.

Ἡδύοσμος. οἱ δὲ, μίνθην. γνώριμον βοτάνιον. δύναμιν ἔχον θερμαντικὴν, στυπτικὴν, ξηραντικήν. ὅθεν αἷμα ἵστησι πινόμενος ὁ χυλὸς αὐτοῦ μετ' ὄξους. καὶ ἕλμινθας κτείνει στρογγύλας. ἀφροδίσιά τε ἐρεθίζει. καὶ λυγμοὺς, καὶ ἐμέτους, καὶ χολέραν παύει δύο ἢ τρία κλωνάρια σὺν ῥοᾶς ὀξείας χυλῷ ποθέντα. διαφορεῖ δὲ καὶ ἀποστήματα μετὰ ἀλφίτου καταπλασθέν. καὶ κεφαλαλγίας παρηγορεῖ ἐπιτεθὲν τῷ μετώπῳ. μαστῶν τε περίτασιν καὶ σπαργῶσιν πραΰνει. σὺν ἁλσὶ δὲ τοῖς κυνοδήκτοις κατάπλασμα. ὠταλγίαις δὲ ὁ χυλὸς σὺν μελικράτῳ ἀρήγει. γυναιξὶ δὲ πρὸ τοῦ πλησιάζειν προστιθέμενον, ἀσυλληψίαν ἐργάζεται. γλῶσσάν τε τραχεῖαν παρατριβόμενον λεαίνει. καὶ γάλα ἄτυρον φυλάσσει ἐναποκλυσθέντων αὐτῷ τῶν φύλλων. καὶ καθόλου ἐστὶν εὐστόμαχον καὶ ἀρτυματῶδες.

Περὶ ἡδυόσμου ἀγρίου. Κεφ. υμζ'.

Τὸ δὲ ἄγριον ἡδύοσμον γίνεται δασύτερον τοῖς φύλλοις. καὶ πάντη μεῖζον σισυμβρίου. ἐν ὀσμῇ δὲ βρωμωδέστερον. καὶ ἧττον εἰς τὴν ἐν ὑγείᾳ χρῆσιν εὔθετον.

Περὶ καλαμίνθης. Κεφ. υμη'.

Καλαμίνθη. ἡ μέν τις ὀρεινοτέρα ἐστίν. ἔχει δὲ φύλλα ὅμοια ὠκίμῳ, ὑπόλευκα. κλωνία δὲ καὶ κάρφη γεγωνιωμένα. ἄνθος πορφυροῦν. Ἡ δέ τις γλήχωνι ἔοικε. μείζων δέ. ὅθεν τινὲς ἀγρίαν αὐτὴν γλήχωνα ἐκάλεσαν. διότι καὶ τῇ ὀσμῇ παρέοικε. ταύτην Ῥωμαῖοι νεπέταν καλοῦσιν. Ἡ δὲ τρίτη ἔοικεν ἡδυόσμῳ ἀγρίῳ. ἐπιμηκεστέρα τοῖς φύλλοις. καυλῷ καὶ κλάδῳ μείζων τῶν προειρημένων. καὶ ἧττον ἐνεργής. Πασῶν δὲ τὰ φύλλα γευομένῳ, πυρωτικὰ ἰσχυρῶς καὶ δριμέα. ῥίζα ἄχρηστος. φύεται δὲ ἐν πεδίοις καὶ ἐν τραχέσι τόποις καὶ καθύγροις. πινομένη δὲ καὶ καταπλασσομένη, ἀρήγει ἑρπετοδήκτοις. ἄγει δὲ καὶ οὖρα τὸ ἀφέψημα πινόμενον. βοηθεῖ δὲ καὶ ῥήγμασι. σπάσμασιν. ὀρθοπνοίαις, στρόφοις, χολέρᾳ, καὶ ῥίγει. καὶ πρὸς τὰ θανάσιμα προπινομένη ποιεῖ σὺν οἴνῳ, καὶ

ἴκτερον ἀρχὴν καθαίρει. ἕλμινθάς τε κτείνει καὶ ἀσκαρίδας σὺν ἁλσὶ καὶ μέλιτι πινομένη. ἑφθή τε καὶ ὠμὴ τετριμμένη. ὠφελεῖ καὶ ἐλεφαντιῶντας βρωθεῖσα. ἐπιπινομένου ὀῤῥοῦ γάλακτος. φθείρει δὲ καὶ ἔμβρυα, καὶ ἔμμηνα ἄγει τὰ φύλλα λεῖα ἐν προσθέτῳ. θυμιαθέντα δὲ ἑρπετὰ διώκει καὶ ὑποστρωννύμενα. λευκαίνει τε καὶ τὰς μελαίνας οὐλὰς ἑψηθεῖσα ἐν οἴνῳ καὶ καταπλασθεῖσα. καθαίρει καὶ ὑπώπια. ἰσχιαδικοῖς τε ἐπιτίθεται εἰς μετασύγκρισιν. ἐπικαίουσα τὴν ἐπιφάνειαν. καὶ σκώληκας τοὺς ἐν ὠσὶ κτείνει ὁ χυλὸς ἐνσταζόμενος.

## Περὶ Θύμου. Κεφ. υμθ.

Θύμος. γινώσκεται ὑπὸ πάντων θαμνίσκιον φρυγανῶδες. φυλλαρίοις πολλοῖς καὶ στενοῖς περιειλημμένον, ἔχον ἐπ' ἄκρου κεφάλια ἄνθους πορφυρίζοντα. μάλιστα δὲ φύεται ἐν πετρώδεσι καὶ λεπτογείοις τόποις. Δύναμιν δὲ ἔχει πινόμενον μετὰ ἁλῶν καὶ ὄξους, ἄγειν φλεγματώδη κατὰ κοιλίαν. τὸ δὲ ἀφέψημα αὐτοῦ μετὰ μέλιτος, ὀρθοπνοϊκοῖς καὶ ἀσθματικοῖς βοηθεῖ. ἕλμινθάς τε ἐξάγει καὶ ἔμμηνα. καὶ ἔμβρυα. καὶ δεύτερα. ἔστι δὲ καὶ οὐρητικόν. μιγὲν δὲ μέλιτι καὶ ἐκλειχθὲν, εὐανάπτυστα τὰ ἐκ θώρακος ποιεῖ. διαφορεῖ δὲ οἰδήματα πρόσφατα καταπλασθὲν μετ' ὄξους. αἵματος θρόμβους διαλύει. καὶ θύμους καὶ ἀκροχορδόνας αἴρει καὶ ἰσχιαδικοῖς μετ' οἴνου καὶ ἀλφίτων ἐπιτεθὲν ἁρμόζει. ἀμβλυωποῦντας ἐσθιόμενον σὺν τροφῇ ὠφελεῖ. εὔχρηστον δὲ καὶ πρὸς τὴν ἐν ὑγείᾳ χρῆσιν ἀντὶ ἀρτύματος.

## Περὶ Θύμβρας. Κεφ. υν.

Θύμβρα. καὶ αὐτὴ γνώριμος. γεννωμένη ἐν λεπτογείοις. καὶ τραχέσι τόποις. ὁμοία θύμῳ ἐλάσσων μέντοι καὶ ἁπαλωτέρα φέρουσα στάχυν ἄνθους μεστὸν. ἔγχλωρον δύναται. τὰ δὲ αὐτὰ τῷ θύμῳ ὁμοίως λαμβανομένη. καὶ πρὸς τὴν ἐν ὑγείᾳ χρῆσιν εὐθετεῖ, γίνεται δὲ καὶ σπαρτὴ θύμβρα. κατὰ πάντα τῆς ἀγρίας ἐλάσσων, εὐχρηστοτέρα δὲ πρὸς βρῶσιν διὰ τὸ μὴ ἐπιτετάσθαι τὴν δριμύτητα.

## Περὶ Ἑρπύλλου. Κεφ. υνα.

Ε ἕρπυλλος ὁ μέν τίς ἐστι κηπευτός. σαμψυχίζων τῇ ὀσμῇ. καὶ στεφανωματικός. ὠνόμασται δὲ ἀπὸ τοῦ ἕρπειν, καὶ ὅ,τι ἂν αὐτοῦ μέρος θίγῃ τῆς γῆς ῥιζοβολεῖν. ἔχει δὲ φύλλα καὶ κλωνία ὀριγάνῳ ἐμφερῆ, πλὴν λευκότερα. ἀπὸ δὲ αἱμασιῶν κρεμάμενος, εὐαξέστερος γίνεται. ὁ δέ τίς ἐστιν ἄγριος. ὃς καὶ ζυγὶς καλεῖται. οὐχ ἕρπων. ἀλλ' ὀρθὸς κλωνία ἀνιεὶς λεπτὰ φρυγανώδη. φύλλων περίπλεα ὁμοίων πηγάνῳ. ὑπόστενα δέ ἐστι καὶ ἐπιμηκέστερα. καὶ σκληρότερα. ἄνθη γευομένῳ δριμέα. ὀσμὴ ἡδεῖα. ῥίζα ἄχρηστος. φύεται ἐν πέτραις. ἐνεργέστερος καὶ θερμαντικώτερος τοῦ κηπευτοῦ ὑπάρχων. καὶ πρὸς τὴν ἰατρικὴν χρῆσιν ἐπιτηδειότερος. ἔμμηνα γὰρ ἄγει καὶ οὖρα κινεῖ πινόμενος. ὠφελεῖ στρόφους. ῥήγματα. σπάσματα. ἥπατος φλεγμονάς. καὶ πρὸς ἑρπετὰ πινόμενός τε καὶ καταπλασσόμενος. κεφαλῆς τε ὀδύνην παραμυθεῖται ἑψηθεὶς ῥοδίνου μιγέντος αὐτῷ, σὺν ὄξει καὶ καταβρεχεὶς μάλιστα δὲ ἐπὶ ληθάργου καὶ φρενίτιδος ἁρμόζει. παύει δὲ καὶ ἔμετον αἵματος < δ'. πλῆθος μετ' ὄξους ποθεὶς ὁ χυλὸς αὐτοῦ.

Περὶ σαμψύχου. κεφ. υνβ'.

Σ άμψυχον. κράτιστον τὸ κυζικηνὸν καὶ κύπριον. δεύτερον δὲ τούτου τὸ αἰγύπτιον. καλεῖται δὲ ὑπὸ κυζικηνῶν καὶ τῶν ἐν σικελίᾳ ἀμάρακον. πόα δέ ἐστι πολύκλονος. ἕρπουσα ἐπὶ τῆς γῆς. φύλλα δασέα καὶ περιφερῆ ἔχουσα. ὅμοια τῆς λεπτοφύλλου καλαμίνθης. σφόδρα εὐώδης, καὶ θερμαντική. πλεκομένη καὶ εἰς στεφάνους. Ἁρμόζει δὲ τὸ ἀφέψημα αὐτῆς πινόμενον ἐπὶ ἀρχομένων ὑδρωπικῶν. καὶ δυσουρούντων καὶ στροφουμένων. ξηρὰ δὲ τὰ φύλλα ἐπιπλασθέντα μετὰ μέλιτος, αἴρει ὑπώπια. καὶ ἔμμηνα ἄγει ἐν προσθέτῳ. πρὸς δὲ σκορπίου πληγὴν μετὰ ἁλῶν καὶ ὄξους καταπλάσσεται. πρὸς δὲ στρέμματα μετὰ κηρωτῆς ἀναληφθέντα ἐπιτίθεται. καὶ πρὸς οἰδήματα ὁμοίως ἀναληφθέντα κηρωτῇ. καὶ πρὸς ὀφθαλμῶν φλεγμονὰς καταπλάσσεται μετὰ παιπάλης ἀλφίτου. μίγνυται δὲ καὶ ἀκόποις καὶ μαλάγμασι πρὸς τὸ θερμαίνειν.

Περὶ μελιλώτου. κεφ. υνγ'.

Μελίλωτος κράτιστος ὁ ἀττικὸς καὶ ὁ ἐν κυζίκῳ. καὶ ὁ ἐν καλχηδόνι γεννώμενος. κροκίζων καὶ εὐώδης. φύεται δὲ καὶ ἐν καμπανίᾳ περὶ νῶλαν. μηλίζων. καὶ ἄτονος κατὰ τὴν εὐωδίαν. δύναμιν δὲ ἔχει στυπτικήν. μαλακτικὴν πάσης φλεγμονῆς. μάλιστα δὲ τῆς περὶ ὀφθαλμοὺς καὶ μήτραν καὶ δακτύλιον καὶ διδύμους μετὰ γλυκέος ἑψηθεὶς καὶ καταπλασθείς. ἐνίοτε δὲ καὶ ὠοῦ λεκύθου ὀπτῆς παραμιγείσης, ἢ τηλίνου ἀλεύρου, ἢ λινοσπέρμου, ἢ γύρεως, ἢ κωδιῶν, ἢ σέρεως. θεραπεύει καὶ μελικηρίδας προσφάτους καθ᾽ ἑαυτὸν ἐν ὕδατι. καὶ ἀχῶρας σὺν γῇ χίᾳ καὶ οἴνῳ ἢ κηκίδι καταχριόμενος. ἄλγημά τε στομάχου μετ᾽ οἴνου ἑφθὸς καὶ ὠμὸς σύν τινι τῶν προειρημένων. καὶ ὠταλγίας παύει σὺν γλυκεῖ ὠμὸς χυλισθεὶς καὶ ἐνσταζόμενος. καὶ κεφαλαλγίαν πραΰνει ἐμβρεχόμενος μετ᾽ ὄξους καὶ ῥοδίου.

Περὶ μάρου. κεφ. υνδ΄.

Μάρον. ἢ ὑσόβειον. πόα γνώριμος. φρυγανώδης. ὁμοία τῷ ἄνθει ὀριγάνῳ. τὰ μέντοι φύλλα τούτου λευκότερα πολλῷ καὶ τὸ ἄνθος εὐωδέστερον. ἔχει δὲ δύναμιν ὁμοίαν σισυμβρείῳ. ὑπόστυφον καὶ θερμαῖνον ἠρέμα. ὅθεν νομάς τε ἵστησι καταπλασσόμενον. καὶ εἰς τὰ θερμὰ τῶν συγχρισμάτων μίγνυται. γίνεται δὲ καὶ κατὰ μαγνησίαν καὶ τράλλεις πλεῖστον.

Περὶ ἀκίνου. κεφ. υνε΄.

Ἄκινος. ἢ ἄκονος. πόα ἐστὶ λεπτόκαρφος. στεφανωματική. παραπλησία ὠκίμῳ. δασυτέρα δὲ καὶ εὐώδης. παρ᾽ ἐνίοις δὲ καὶ κηπεύεται. ἵστησι δὲ κοιλίαν καὶ ἔμμηνα πινομένη. φύγεθλά τε καὶ ἐρυσιπέλατα καταπλασσομένη ἰᾶται.

Περὶ βακχάρεως. κεφ. υνϛ΄.

Βάκχαρις βοτάνη ἐστὶ εὐώδης καὶ στεφανωματική. ἧς τὰ φύλλα τραχέα. μέγεθος ἔχοντα μεταξὺ ἴου καὶ φλόμου. καυλὸς δὲ γωνιώδης. πήχεως τὸ ὕψος. ὑπότραχυς ἔχων παραφυάδας. ἄνθη δὲ ἐμπόρφυρα. ὑπόλευκα. εὐώδη. ῥίζαι δὲ ὅμοιαι ταῖς τοῦ μέλανος ἐλλεβόρου. ἐοικυῖαι τῇ ὀσμῇ κιναμώμῳ. φιλεῖ

δὲ τραχεῖα χωρία καὶ ἔνικμα. Ταύτης ἡ ῥίζα ἑψηθεῖσα ἐν ὕδατι, βοηθεῖ σπάσμασι. ῥήγμασι. πτώμασι. δυσπνοίαις. βηχὶ χρονίᾳ. δυσουρίᾳ. ἄγει δὲ καὶ ἔμμηνα. καὶ θηριοδήκτοις χρήσιμος σὺν οἴνῳ διδομένη. προστεθεῖσα δὲ μία τῶν ἁπαλῶν ῥιζῶν, ἕλκει ἔμβρυα. ταῖς τε λεχοῖς εἰς ἐγκάθισμα τὸ ἀφέψημα αὐτῆς ἁρμόζει. καὶ εἰς διαπάσματα χρησιμεύει. ἱκανὴν ἔχουσα τὴν εὐωδίαν. τὰ δὲ φύλλα στυπτικὰ ὄντα καταπλασσόμενα ὠφελεῖ κεφαλαλγίας. ὀφθαλμῶν φλεγμονήν. καὶ αἰγίλωπα ἀρχόμενον. καὶ μαστοὺς ἐκ τόκων φλεγμαίνοντας. καὶ ἐρυσιπέλατα. ἔστι δὲ καὶ ὑπνοποιὸς ἡ ὀσμή.

## Περὶ Πηγάνου. Κεφ. υνζ'.

Πήγανον ὄρειον καὶ ἄγριον, τοῦ ἡμέρου καὶ κηπευτοῦ δριμύτερον, καὶ ἄθετον πρὸς βρῶσιν. τοῦ δὲ κηπευτοῦ ἐδωδιμώτερον τὸ παρὰ ταῖς συκαῖς φυόμενον. Ἀμφότερα δὲ καυστικά. θερμαντικά, ἑλκωτικά, οὐρητικά, ἐμμηνίων ἀγωγά, ἐσθιόμενά τε, καὶ πινόμενα, κοιλίαν ἱστῶσι. καὶ τῶν φθαρτικῶν φαρμάκων ἐστὶν ἀντίδοτος. ὅσον ὀξύβαφον τοῦ σπέρματος ποθέντος ἐν οἴνῳ. καὶ προβρωθέντα δὲ τὰ φύλλα καθ' ἑαυτά, καὶ μετὰ καρύων βασιλικῶν καὶ σύκων ξηρῶν, ἄπρακτα καθίστησι τὰ θανάσιμα. καὶ πρὸς ἑρπετὰ ἁρμόζει ὁμοίως λαμβανόμενα. γονήν τε σβεννύσιν ἐσθιόμενον, καὶ πινόμενον. ἑψηθὲν δὲ σὺν ἀνήθῳ ξηρῷ καὶ ποθέν, στρόφους παύει. ποιεῖ δὲ καὶ πρὸς πλευρῶν πόνον καὶ θώρακος. δύσπνοιαν, βῆχας, περιπνευμονίαν. ἀλγήματα ἰσχίων. ἄρθρων. ῥίγη περιοδικά, πινόμενον ὡς προείρηται. καὶ πρὸς ἐμπνευματώσεις δὲ κώλου καὶ ὑστέρας καὶ ἀπευθυσμένου σὺν ἐλαίῳ ἑψηθὲν καὶ ἐνεθέν. πνίγας τε ὑστερικὰς λεῖον μετὰ μέλιτος κατὰ τοῦ αἰδοίου ἄχρι δακτυλίου ἐπιτεθὲν παραιτεῖται. ἀναζεσθὲν δὲ σὺν ἐλαίῳ καὶ ποθέν, ἕλμινθας ἐκτινάσσει. καταπλάσσεται δὲ καὶ πρὸς ἄρθρων ἀλγήματα σὺν μέλιτι. σὺν δὲ σύκῳ πρὸς ὕδρωπας τοὺς ὑποσαρκίους. καὶ πινόμενον δὲ βοηθεῖ τούτοις. καὶ καθεψηθὲν ἐν οἴνῳ ἄχρις ἡμίσους καὶ περισμηχόμενον. ἔστι δὲ καὶ ὀξυωπὲς ἐσθιόμενον ὠμὸν καὶ ταριχευτόν. καὶ τὰς ἐν ὀφθαλμοῖς περιωδυνίας σὺν ἀλφίτῳ κα-

ταπλασθὲν πραΰνει. σὺν ῥοδίνῳ δὲ καὶ ὄξει κεφαλαλγοῦσι βοηθεῖ. καὶ αἱμοῤῥαγίας τὰς ἐκ τῶν μυκτήρων λεῖον ἐπιτεθὲν ἵστησι. τὰς δὲ τῶν διδύμων φλεγμονὰς σὺν δάφνης φύλλοις καταπλασθὲν ὠφελεῖ. καὶ τὰ ἐξανθήματα σὺν μυρσίνῃ καὶ κηρωτῇ. σὺν οἴνῳ δὲ καὶ πεπέρει καὶ νίτρῳ περισμώμενον, λευκὸν ἀλφὸν ἰᾶται. καὶ καταπλασθὲν δὲ μετὰ τῶν αὐτῶν, θύμους καὶ μυρμηκίας αἴρει. ὠφελεῖ καὶ λειχῆνας σὺν μέλιτι καὶ στυπτηρίᾳ ἐπιτιθέμενον. ὁ δὲ χυλὸς ποιεῖ πρὸς ὠταλγίας ἐν σιδίῳ θερμαινόμενος καὶ ἐγχεόμενος. καὶ ἀμβλυωπίαις βοηθεῖ μετὰ μαράθρου χυλοῦ καὶ μέλιτος ἐγχριόμενος. ἐρυσιπέλατά τε καὶ ἕρπητας καὶ ἀχῶρας σὺν ὄξει καὶ ψιμμυθίῳ καὶ ῥοδίνῳ καταχριόμενος ἰᾶται. τάς τε ἀπὸ σκορόδων καὶ κρομμύων δριμύτητας, παύει ἐπιμασηθέν. τὸ δὲ ὀρεινὸν πολὺ βρωθὲν κτείνει. ὑπὸ δὲ τὴν ἄνθησιν εἰς τὰς ἀλμεύσεις συλλεγόμενον, φοινίσσει. καὶ φυσσᾷ τὸν χρῶτα σὺν κνησμῷ καὶ φλεγμονῇ σφοδρᾷ. δεῖ δὲ προαλειψαμένους τὸ πρόσωπον καὶ τὰς χεῖρας, οὕτω συλλέγειν. φασὶ δὲ τὸν χυλὸν ἐπιῤῥαθέντα ὀρνιθίοις, ἀπερύκειν τοὺς αἰλούρους. τὸ δὲ ἐν μακεδονίᾳ φυόμενον παρὰ τὸν ἁλιάκμον ποταμὸν ἀναιρεῖν φασὶ βρωθέν. ὀρεινὸς δὲ ὁ τόπος ὑπάρχει καὶ ἐχιδνῶν πλήρης. τὸ δὲ σπέρμα αὐτοῦ πινόμενον, πρὸς τὰ ἐντὸς ποιεῖ. καὶ ἀντιδότοις μίγνυται χρησίμως. καὶ φρίξας δὲ τὸ σπέρμα αὐτοῦ, δὸς πίνειν ἐπὶ ἡμέρας ζ' τῷ ἐνουροῦντι καὶ παύσεται. ἡ δὲ ῥίζα αὐτοῦ λέγεται μῶλυ ὀρεινόν. τὸ οὖν ἄγριον πήγανον ὁμοιοῖ τῷ ἡμέρῳ. πινόμενον δὲ ὠφελεῖ ἐπιληπτικοῖς καὶ ἰσχιαδικοῖς. κινεῖ δὲ, καὶ καταμήνια. τὰ δὲ ἔμβρυα φθείρει. δριμύτερον δέ ἐστι τοῦ ἡμέρου. καὶ τῇ ἐνεργείᾳ δυνατώτερον. οὐ δεῖ δὲ τὴν ἀγρίαν ἐσθίειν. διότι ἐπὶ βλαβής ἐστι.

## Περὶ πηγάνου ἀγρίου. ΚΕΦ. ΥΝΗ.

Καλοῦσι δέ τινες πήγανον ἄγριον, καὶ τὸ ἐν τῇ καππαδοκίᾳ. καὶ τὸ ἐν τῇ κατὰ τὴν ἀσίαν γαλατίᾳ λεγόμενον μῶλυ. ἔστι δὲ θάμνος ἀπὸ μιᾶς ῥίζης πλείονας ῥάβδους ἀναφέρον. ἔχον φύλλα μακρότερα πολλῷ τοῦ ἄλλου πηγάνου καὶ

τρυφερώτερα. βαρύοσμα. ἄνθος λευκόν. ἐπ᾽ ἄκρου τὰ κεφάλια ὀλίγῳ μείζονα τοῦ ἡμέρου πηγάνου. ἐκ τριῶν μάλιστα μερῶν συγκείμενα. ἐν οἷς σπέρμα τρίγωνον. ὑπόκιῤῥον. πικρὸν μάλιστα πρὸς τὴν γεῦσιν, οὗ καὶ ἡ χρῆσις. φθινοπώρου δ᾽ ἐκπεπαίνεται τὸ σπέρμα. ἁρμόζον πρὸς ἀμβλυωπίας, μετὰ μέλιτος λειαινόμενον καὶ οἴνου καὶ χολῆς ἀλεκτορείδων. κρόκου τε καὶ μαράθρου χυλοῦ. καλοῦσι δέ τινες αὐτὸ ἅρμαλα. σύροι βησασά. καππαδόκαι δὲ μῶλυ ἐπεὶ κατά ποσὸν σώζει τὴν πρὸς τὸ μῶλυ ἐμφέρειαν. τῇ ῥίζῃ μέλαν καὶ τῷ ἄνθει λευκὸν ὑπάρχον. φύεται δὲ ἐν γεωλόφοις καὶ εὐγείοις χωρίοις.

## Περὶ Μώλεως. Κεφ. υνθ΄.

Μῶλυ τὰ μὲν φύλλα ἔχει ἀγρώστει ὅμοια. πλατύτερα δὲ ἐπὶ γῆν ὄντα. ἄνθη λευκοΐοις ὅμοια. γαλακτόχροα. ἥσσονα δὲ πρὸς τὰ τοῦ ἴου. καυλὸν δὲ λευκόν. πήχεων τεσσάρων. ἐπ᾽ ἄκρου δὲ ἔπεστιν ὡς σκοροδοειδές. ἡ ῥίζα δὲ μικρὰ βολβοειδής. αὕτη σφόδρα ἀγαθὴ πρὸς ὑστέρας ἀνασομώσεις. τετριμμένη μετὰ ἰρίνου μύρου καὶ προστιθεμένη ἐν πεσσῷ.

## Περὶ Πάνακος Κεφ. υξ΄.

Πάνακες ἡράκλειον. ἐξ οὗ ὁ ὀποπάναξ συλλέγεται. πλεῖστος γεννᾶται ἐν βοιωτίᾳ καὶ ἐν ψωφίδι τῆς ἀρκαδίας. ὥστε καὶ ἐπιτηδείως κηπεύεσθαι διὰ τὴν ἐκ τοῦ ὀποῦ πρόσοδον. φύλλα δὲ ἔχει τραχέα. χαμαιπετῆ. χλωρὰ σφόδρα πρὸς τὰ τῆς συκῆς. ἐν τῷ περιφερεῖ ἐσχισμένα πενταμερῶς. καυλὸν δὲ ὥσπερ νάρθηκος ὑψηλότατον. ἔχοντα χνοῦν λευκὸν καὶ φύλλα περὶ αὐτὸν μικρότερα. σκιάδιον δὲ ἐπ᾽ ἄκρου ὡς ἀνήθου μακρὸν. ἄνθος δὲ μήλινον. σπέρμα εὐῶδες καὶ πυρωτικόν. ῥίζας πλείονας ἐκ μιᾶς ἀρχῆς. λευκάς. βαρυόσμους. παχεῖαν ἐχούσας τὸν φλοιόν. ὑπόπικρον τῇ γεύσει. φύεται δὲ ἐν κυρήνῃ τῆς λιβύης καὶ ἐν μακεδονίᾳ. Ὀπίζεται δὲ ἡ ῥίζα, ἐπιτεμνομένη ἀρτιβλάστων ὄντων τῶν καυλῶν. ἀνίησι δὲ λευκὸν ὀπόν. ὃς ξηρανθεὶς κατὰ τὴν ἐπιφάνειαν κροκίζει. δέχονται δὲ τὸ ῥέον εἰς φύλλα προϋποτιθέντες εἰς κεκοιλωμένον ἔδαφος. ἀναιροῦνται δὲ ξηρανθέντα. οἱ

πίζουσι δὲ καὶ τὸν καυλὸν ἐπιτέμνοντες εἰς τὸν πυραμηδόν. ὁμοίως δεχόμενοι τὸ ἀπορρέον. εἰσὶ δὲ τῶν ῥιζῶν βέλτιστοι αἱ πεταναὶ, καὶ λευκαὶ, καὶ ξηραὶ, ἄβρωτοί τε καὶ πυρώδεις ἐν τῇ γεύσει, καὶ ἀρωματίζουσαι. καρπὸς δὲ εὔθετος ὁ ἐκ μέσου, τοῦ νάρθηκος. ὁ γὰρ ἐκ τῶν παραφυάδων ἐστὶν ἀτροφώτερος. τοῦ δὲ ὀποῦ διαφέρει ὁ πικρότατος τῇ γεύσει. ἔνδοθεν μὲν λευκὸς καὶ ὑπόκιρρος. ὁ ἔξωθεν δὲ κροκίζων. λεῖος. λιπαρός. εὔθρυπτος, εὔθετος, ταχέως δὲ διϊέμενος, βαρύοσμος. ὁ δὲ μέλας φαῦλος καὶ μαλακός. δολοῦται γὰρ ἀμμωνιακῷ, ἢ κηρῷ. δοκιμάζεται δὲ ὕδατι διατριβόμενος τοῖς δακτύλοις. ὁ γὰρ ἄδολος ἀνίεται καὶ γαλακτοῦται.

Δύναμις δὲ αὐτοῦ ἐστὶ θερμαντική. μαλακτική. λεπτυντική. ὅθεν ἁρμόζει πρὸς περιοδικοὺς καὶ ῥίγη. σπάσματα. ῥήγματα, πλευρᾶς ἀλγήματα, βῆχας, στρόφους, στραγγουρίας. ψώρας τὰς ἐν κύστει σὺν μελικράτῳ, ἢ οἴνῳ ποτιζόμενος. ἔμμηνά τε ἄγει. καὶ ἔμβρυα φθείρει. καὶ ἐμπνευματώσεις τὰς ἐν ὑστέρᾳ. καὶ σκληρίας διαφορεῖ σὺν μέλιτι ἀνεθείς. ἔστι δὲ καὶ σύγχρισμα ἰσχιάδος. μίγνυται δὲ καὶ ἀκόποις καὶ κεφαλικαῖς δυνάμεσι. περιρρήττει δὲ καὶ ἄνθρακας. ἁρμόζει καὶ ποδαγρικοῖς μετὰ σταφίδος ἡμέρου καταπλασσόμενος. παραιτεῖται δὲ καὶ τὰ τῶν ὀδόντων ἀλγήματα, ἐντιθέμενος τοῖς βρώμασιν. ὀφθαλμῶν τε ἐστὶν ὀξυδερκὲς εὔχρηστον. μιγεὶς δὲ πίσσῃ ἔμπλαστρος ἐστὶ πρὸς τοὺς λυσσοδήκτους ἀρίστη. καὶ ἡ ῥίζα δὲ ξυσθεῖσα καὶ προστεθεῖσα μήτρᾳ, ἄγει ἔμβρυα. πρός τε ἕλκη ποιεῖ παλαιά. καὶ τὰ ἐψιλωμένα τῶν ὀστέων σαρκοῖ. λεία καταπλασσομένη καὶ σὺν μέλιτι ἐγχριομένη. ὁ δὲ καρπὸς αὐτοῦ σὺν ἀψινθίῳ ληφθεὶς ἄγει ἔμμηνα σὺν ἀριστολοχίᾳ δὲ πρὸς τὰ ἰοβόλα ἁρμόζει. καὶ πρὸς τὰς ὑστερικὰς πνίγας. σὺν οἴνῳ ποτιζόμενος.

## Περὶ πάνακος ἀσκληπιοῦ. κεφ. υξα'.

π ἀνακες ἀσκληπιοῦ. ἀνίησιν ἀπὸ γῆς καυλὸν λεπτόν. πηχυαῖον, γόνασι διειλημμένον. περὶ ὃν τὰ φύλλα ὅμοια μαράθρῳ. μείζονα δὲ, καὶ δασύτερα, εὐώδη. καὶ ἐπ' ἄκρου σκιάδιον. ἐφ' οὗ τὰ ἄνθη χρυσοειδῆ, δριμέα, εὐώδη. ῥίζα δὲ μικρά.

Δύναμιν δὲ ἔχει εὔθετον τὸ ἄνθος καὶ ὁ καρπὸς πρὸς ἕλκη καὶ φύματα καὶ φαγέδαιναν. λεῖος σὺν μέλιτι ἐπιτιθέμενος. καὶ πρὸς ἑρπετὰ πινόμενος σὺν οἴνῳ. καὶ συναλειφόμενος σὺν ἐλαίῳ. καλοῦσι δέ τινες πάνακες καὶ τὴν ἀγρίαν ὀρίγανον. οἱ δὲ, κονίλην περὶ ἧς εἴρηται ἐν τοῖς περὶ ὀριγάνου.

Περὶ πάνακος χειρωνίου. κεφ. υξβ.

Πάνακες χειρώνιον. φύεται μάλιστα ἐν τῷ πηλείῳ ὄρει. φύλλα δὲ ἔχει ἀμαράκῳ ἐμφερῆ. ἄνθη χρυσοειδῆ. ῥίζαν λεπτήν, καὶ οὐ βαθεῖαν, γευομένῳ δὲ δριμεῖαν. Δύναμιν δὲ ἔχει ἡ ῥίζα πρὸς ἑρπετὰ πινομένη. καὶ ἡ κόμη δὲ ἐπιπλαττομένη πρὸς τὰ αὐτὰ ποιεῖ.

Περὶ λιγυστικοῦ. κεφ. υξγ.

Λιγυστικόν. φύεται μὲν πλεῖστον ἐν λιγυείᾳ. ὅθεν καὶ τὴν προσωνυμίαν ἔσχηκεν ἐν τῷ καλουμένῳ ἀπενίνῳ ὄρος δέ ἐστιν ὁμοροῦν ταῖς ἄλπεσι. πάνακες δὲ αὐτὸ καλοῦσιν οἱ ἐπιχώριοι οὐκ ἀλόγως. ἐπεὶ ἡ ῥίζα καὶ ὁ καυλὸς ἔοικε τῇ τοῦ ἡρακλεωτικοῦ πάνακος. καὶ ἡ δύναμις ὁμοία καθέστηκε. φύεται δὲ ἐν τοῖς ὑψηλοτάτοις καὶ τραχυτέροις καὶ συσκίοις ὄρεσι. μάλιστα δὲ παρὰ τοῖς διώρυξι. καυλίον δὲ φέρει λεπτόν. ὅμοιον ἀνήθῳ. γεγονατωμένον. περὶ ὃ φύλλα ἐοικότα τοῖς τοῦ μελιτώτου. ξυφερώτερα δὲ καὶ εὐώδη. ἰσχνότερα δὲ τὰ πρὸς ἄκρῳ τῷ καυλῷ. καὶ μᾶλλον ἐπεσχισμένα. ἐπ᾽ ἄκρου δὲ σκιάδιον. ἐφ᾽ οὗ καὶ τὸ σπέρμα. μέλαν ναστὸν, ὑπόμηκες πρὸς τὸ τοῦ μαράθρου. γευσαμένῳ δὲ δριμὺ καὶ ἀρωματίζον. ῥίζα λευκή. ὁμοία τῇ τοῦ ἡρακλεωτικοῦ πάνακος εὐώδης.

Δύναμις δὲ τοῦ σπέρματος καὶ τῆς ῥίζης θερμαντική, πεπτική, ἁρμόζουσα πρὸς τὰ ἐντὸς ἀλγήματα καὶ πέψεις καὶ οἰδήματα, καὶ ἐμπνευματώσεις καὶ μάλιστα τὰς περὶ στόμαχον. καὶ πρὸς θηρίων πληγάς. ἄγει δὲ καὶ οὖρα, καὶ ἔμμηνα πινομένη. καὶ ἡ ῥίζα δὲ προστιθεμένη τὸ αὐτὸ ποιεῖ. μίγνυται δὲ ἡ ῥίζα καὶ τὸ σπέρμα χρησίμως καὶ τοῖς ὀξυπόροις καὶ ταῖς πεπτικαῖς δυνάμεσιν. ἱκανῶς δὲ εὔστομόν ἐστιν. ὅθεν καὶ ἀντὶ πεπέρεως αὐτῷ χρῶνται οἱ ἐπιχώριοι. μίσγοντες

τοῖς προσοψήμασι. δολοῦται δὲ σπέρματί τινι παρομοίῳ ὁ διακρινεῖς τῇ γεύσει. πικρὸν γάρ ἐστιν. ἔνιοι δὲ καὶ σπέρμα μαράθρου ἢ σεσέλεως συμμίσγοντες, δολοῦσιν αὐτό.

Περὶ σταφυλίνου. Κεφ. υξδʹ.

Σταφυλῖνος ἄγριος. φύλλα ἔχει ὅμοια γιγγιδίῳ. πλατύτερα δὲ καὶ ὑπόπικρα. καυλὸν δὲ ὄρθιον, τραχὺν, σκιάδιον ἔχοντα ἀνήθῳ παραπλήσιον. ἐφ' οὗ ἄνθη λευκά. ἐν μέσῳ δὲ πορφυροειδές τι μικρόν. καὶ οἱονεὶ κροκίζον. ῥίζα δὲ δακτύλου τὸ πάχος, σπιθαμιαία, εὐώδης, ἐδωδίμη, ἑφθή. Τούτου ὁ καρπὸς ποθεὶς ἢ προστεθεὶς, ἔμμηνα κινεῖ ἁρμόζει καὶ δυσουροῦσι καὶ ὑδρωπικοῖς, καὶ πλευριτικοῖς ἐν πόμασι. καὶ πρὸς θηρίων δὲ δήγματα καὶ πληγάς. τοὺς δὲ προλαβόντας φασὶ μὴ ἀδικεῖσθαι ὑπὸ θηρίων. συνεργεῖ δὲ καὶ συλλήψει. ἡ δὲ ῥίζα καὶ αὐτὴ οὐρητικὴ οὖσα συνουσίαν τε παρορμᾷ καὶ ἔμβρυα ἐκβάλλει προστιθεμένη. τὰ δὲ φύλλα λεῖα μετὰ μέλιτος ἐπιτιθέμενα, τὰ φαγεδαινικὰ ἕλκη ἀνακαθαίρει. Ὁ δὲ κηπευτὸς σταφυλῖνος ἐδωδιμώτερος ὢν ἁρμόζει πρὸς τὰ αὐτὰ ἐνδεέστερον ἐνεργῶν.

Περὶ σεσέλεως μασσαλεωτικοῦ. Κεφ. υξεʹ.

Σέσελι τὸ μασσαλεωτικόν. φύλλα ἔχει ἐοικότα μαράθρῳ. παχύτερα δὲ καὶ τὸν καυλὸν εὐτρεφέστερον ἔχει. ἔχει δὲ σκιάδιον ἀνήθῳ ὅμοιον. ἐφ' οὗ ὁ καρπὸς ἐπιμήκεις γεγωνιωμένος, δριμὺς βιβρωσκόμενος ταχέως. ῥίζα μακρὰ εὐώδης. Δύναμιν δὲ ἔχει ὁ καρπὸς καὶ ἡ ῥίζα θερμαντικήν. πινόμενα δὲ στραγγουρίαν ἰᾶται, καὶ ὀρθόπνοιαν. ὠφελεῖ δὲ καὶ ὑστερικὰς πνίγας καὶ ἐπιληπτικούς. ἔμμηνά τε ἄγει καὶ ἔμβρυα. καὶ πρὸς τὰ ἐντὸς πάντα ποιεῖ. καὶ βῆχας ἰᾶται παλαιάς. πινόμενός τε μετὰ οἴνου ὁ καρπὸς, πεπτικός ἐστι, καὶ στρόφων λυτικός. ἠπιάλοις τε χρήσιμος καὶ πρὸς τοὺς ἐν ὁδοῖς κρυμοὺς σὺν πεπέρει καὶ οἴνῳ πίνεται. δίδοται δὲ καὶ αἰξὶ καὶ τοῖς λυποῖς κτήνεσι πρὸς εὐτοκίαν ποτόν.

Περὶ σεσέλεως αἰθιοπικοῦ. Κεφ. υξϛ.

Τὸ δὲ αἰθιοπικὸν λεγόμενον σέσελι, φύλλα μὲν ἔχει ὅμοια κισσῷ. ἐλάσσονα δὲ καὶ ἐπιμήκη πρὸς τὰ τοῦ περικλυμένου. θάμνος δὲ μέλας ἐστί. κλήματα ὡς διπήχη ἔχων. ἐφ' οὗ κλάδοι διασπιθαμιαῖοι. κεφάλια δὲ ὡς ἀνήθου. σπέρμα δὲ μέλαν πυκνὸν ὡς πυρός. δριμύτερον δὲ, καὶ εὐωδέστερον τοῦ μασσαλεωτικοῦ. ἡδὺ ἰσχυρῶς.

Περὶ σεσέλεως πελοποννησιακοῦ. Κεφ. υξζ.

Τὸ δὲ ἐν πελοποννήσῳ γεννώμενον, φύλλα ἔχει κωνείῳ παραπλήσια. πλατύτερα δὲ καὶ παχύτερα. καυλὸν μείζονα τοῦ μασσαλεωτικοῦ. ναρθηκοειδῆ. ἐπ' ἄκρῳ δὲ τούτου σκιάδιον πλατύ. ἐν δὲ τούτῳ καρπὸς πλατύτερος καὶ εὐώδης καὶ σαρκωδέστερος. δύναμιν δὲ τὴν αὐτὴν ἔχει. φύεται ἐν τόποις τραχέσι καὶ ἐφύγροις καὶ γεωλόφοις. φύεται δὲ καὶ ἐν ἴδῃ.

Περὶ τορδύλου. Κεφ. υξη.

Τορδύλιον. ἔνιοι δὲ σέσελι κρητικὸν καλοῦσι. φύεται ἐν τῷ κατὰ τὴν κιλικίαν ἀμανῷ. ἔστι δὲ βοτάνιον φρυγανῶδες. ἔχον σπερμάτιον περιφερὲς, διπλοῦν, ὅμοιον ἀσπιδίῳ καὶ ὑπόδριμυ, καὶ ἀρωματίζον. πινόμενον πρὸς δυσουρίαν. καὶ ἐμμηνίων ἀγωγήν. ὁ δὲ χυλὸς τοῦ καυλοῦ καὶ τοῦ σπέρματος ἔτι χλωροῦ ὄντος, ὅσον τριώβολον ποθεὶς σὺν γλυκεῖ ἐν ἡμέραις δέκα, νεφριτικοὺς ὑγιάζει. ἡ δὲ ῥίζα πρακτική. ἀνάγουσα καὶ τὰ ἐκ θώρακος ἐκλειχομένη μετὰ μέλιτος.

Περὶ σίσωνος. Κεφ. υξθ.

Σίσων σπερμάτιόν ἐστιν ἐν συρίᾳ γεννώμενον, παρεοικὸς σελίνῳ, ἐπίμηκες, μέλαν, πυρωτικόν. πινόμενον πρὸς σπλῆνα καὶ δυσουρίαν, καὶ ἐμμηνίων ἐποχήν. χρῶνται δὲ αὐτῷ οἱ ἐπιχώριοι ἀρτύματι μετὰ κολοκύνθης ἑφθῆς σὺν ὄξει λαμβάνοντες. ἔχει δὲ ὡς κοκκία πολλὰ ἐπ' ἄκρων.

Περὶ ἀνίσου. Κεφ. υο.

Ἄνισον. σπερμάτιόν ἐστιν ἐν συρίᾳ γεννώμενον. ἐοικὸς σελίνῳ. περίμηκες. μέγα. πυρωτικόν. πινόμενον δὲ πρὸς σπλῆνα. καὶ

συνουσίαν ἢ ἐμμηνίων ἐποχήν. χρῶνται δὲ αὐτῷ οἱ ἐπιχώριοι ἀρτύματι μετὰ κολοκύνθης ἑφθῆς σὺν ὄξει λαμβάνοντες. ἔστι δὴ τὸ ἄνισον, τὴν μὲν καθόλου δύναμιν ἔχει θερμαντικήν. ξηραντικήν, εὔπνουν, ἀνώδυνον. διαφορητικήν. οὐρητικήν. διαχυτικήν, ὑδρωπικοῖς ἄδιψον πινόμενον. ἁρμόζει δὲ πρός τε τὰ ἰοβόλα τῶν ζώων καὶ πρὸς ἐμπνευματώσεις. κοιλίαν τε ἵστησι. καὶ λευκὸν ῥοῦν. καὶ γάλα κατασπᾷ. καὶ συνουσίας παρορμᾷ. ὑποθυμιώμενον δὲ ταῖς ῥισὶ κεφαλαλγίαν παύει. καὶ τὰς ῥήξεις δὲ τῶν ὤτων, λεῖον σὺν ῥοδίνῳ ἐνσταζόμενον ἰᾶται. ἔστι δὲ αὐτοῦ κρεῖσσον τὸ νέον καὶ ἁδρόν. καὶ μὴ πιτυρῶδες. εὔτονον τῇ ὀσμῇ. πρωτεύει δὲ τὸ κρητικόν. ἔπειτα δὲ καὶ τὸ αἰγύπτιον.

### Περὶ Καρόυ. Κεφ. υοα´.

Κ αρός. σπερμάτιόν ἐστι γνώριμον. οὐρητικόν. θερμαντικόν. εὐστόμαχον. εὔστομον. πεπτικόν. μιγνύμενον ἐν ταῖς ἀντιδότοις καὶ ὀξυπόροις χρησίμως. ἀναλογοῦν ἀνίσῳ. ἡ δὲ ῥίζα ἑφθὴ ἐδώδιμος ὥσπερ σταφυλῖνος.

### Περὶ Ἀνήθου. Κεφ. υοβ´.

Ἀ νήθου ξηροῦ τῆς κόμης καὶ τοῦ καρποῦ τὸ ἀφέψημα πινόμενον, γάλα κατασπᾷ. στρόφους τε καὶ ἐμπνευματώσεις παύει. κοιλίαν τε καὶ τοὺς ἐπιπολαίως ἐμέτους ἵστησι. οὖρά τε κινεῖ. λυγμοὺς παρηγορεῖ. ἀμβλυώσει τε τὰς ὄψεις. καὶ γονὴν σβεννύσι συνεχῶς πινόμενον. χρήσιμον δὲ τὸ ἀφέψημα αὐτοῦ καὶ γυναιξὶν ὑστερικαῖς εἰς ἐγκάθισμα. τὸ δὲ σπέρμα καυθὲν καὶ καταπλασθὲν, κονδυλώματα αἴρει.

### Περὶ Κυμίνου ἡμέρου. Κεφ. υογ´.

Κ ύμινον τὸ ἥμερον εὔστομον. καὶ τούτου μᾶλλον τὸ αἰθιοπικόν. ὅπερ ἱπποκράτης βασιλικὸν ἐκάλεσε. δεύτερον τὸ αἰγύπτιον. εἶτα τὸ λοιπόν. φύεται ἐν γαλατίᾳ καὶ ἐν ἀσίᾳ καὶ κιλικίᾳ καὶ ταραντίᾳ. καὶ ἐν ἄλλοις πλείοσι τόποις. Ἔστι δὲ θερμαντικόν. στυπτικόν. ξηραντικόν. ἁρμόζον πρὸς στρόφους, καὶ ἐμπνευματώσεις. ἐγκλυζόμενον ἑφθὸν σὺν ἐλαίῳ καὶ κατα

καταπλασσόμενον σὺν ὠμῇ λύσει. δίδοται δὲ καὶ ὀρθοπνοϊκοῖς σὺν ὀξυκράτῳ. θηριοδήκτοις δὲ σὺν οἴνῳ. διδύμων τε φλεγμοναῖς ἀρήγει σὺν σταφίδι καὶ αἰρίνῳ ἀλεύρῳ, ἢ κηρωτῇ ἐπιτεθέν. ἐπέχει δὲ καὶ ῥοῦν γυναικεῖον. καὶ τὰς ἐκ μυκτήρων αἱμοῤῥαγίας. σὺν ὄξει λεῖον προσενεχθέν. τρέπει δὲ καὶ χρῶτα ἐπὶ τὸ ὠχρότερον πινόμενόν τε καὶ συγχριόμενον.

## Περὶ κυμίνου ἀγρίου. Κεφ. υοδ΄.

Κύμινον ἄγριον. φύεται μὲν πλεῖστον καὶ ἐν περγέστερον ἐν Λυκίᾳ καὶ Ἀσίᾳ τῆς Γαλατίας. καὶ ἐν Καρχηδόνι τῆς Ἱσπανίας. ἔστι δὲ θαμνίον ἔχον καυλὸν σπιθαμιαῖον. λεπτόν. ἐφ' οὗ φυλλάρια δ΄. ἢ ε΄. λεπτά. οἱονεὶ πεπρισμένα. τὴν κατάχισιν ὡς γιγγίδιον. κεφάλια δὲ ἔχει ἐπ' ἄκρου ε΄ ἢ ς΄ στρογγύλα. μαλακά. ἐν οἷς ὁ καρπὸς ἀχυρώδης. γευομένῳ δὲ δριμύτερος τοῦ ἡμέρου. φύεται δὲ ἐν γεωλόφοις. πίνεται δὲ τὸ σπέρμα πρὸς στρόφους καὶ ἐμπνευματώσεις σὺν ὕδατι. σὺν ὄξει δὲ λυγμοὺς παύει. πρὸς δὲ τὰ ἰοβόλα καὶ πλάδον στομάχου σὺν οἴνῳ. αἴρει δὲ καὶ ὑπώπια μασσηθὲν καὶ καταπλασθὲν σὺν μέλιτι καὶ σταφίδι. φλεγμονάς τε διδύμων ἰᾶται μετὰ τῶν αὐτῶν καταπλασσόμενον. Ἔστι καὶ ἕτερον γένος ἀγρίου κυμίνου ἐμφερὲς τῷ ἡμέρῳ. ἐξ ἑκάστου δ' ἄνθους ἀφίησι κεράτια μετέωρα. ἐν οἷς ἐστὶ σπέρμα ὅμοιον μελανθίῳ. τοῦτο πινόμενον, πρὸς ἑρπετοδήκτους ἄριστον ἀλέξημα. βοηθεῖ καὶ στραγγουριῶσι καὶ λιθιῶσι καὶ αἵματος θρόμβους οὐροῦσιν. ἐπιπινέτωσαν δὲ σελίνου σπέρμα ἀποζεσθέντος.

## Περὶ Ἄμμιος. Κεφ. υοε΄.

Ἄμμι. ἔνιοι δὲ ἑτέρας φύσεως τὸ αἰθιοπικὸν κύμινον ἔφασαν εἶναι. καὶ ἑτέρας τὸ ἄμμι. γνώριμον δὲ τὸ σπερμάτιον. μικρότερον πολλῷ τοῦ κυμίνου. καὶ ὀριγανίζον τῇ γεύσει. ἐκλέγου δὲ τὸ καθαρὸν καὶ μὴ πιτυρῶδες. Δύναμιν δὲ ἔχει καὶ αὐτὸ θερμαντικὴν πυρωτικὴν καὶ ξηραντικήν. ποιοῦν πρὸς στρόφους. δυσουρίας, καὶ θηριοδήκτους πινόμενον σὺν οἴνῳ. ἄγει δὲ καὶ ἔμμηνα. μίγνυται καὶ τοῖς διὰ κανθαρίδος ἐκδορίοις πρὸς τὸ ἀντιπάσχειν ταῖς ἐπιγινομέναις

δυσουρίαις. καὶ ὑπώπια καταπλασθὲν σὺν μέλιτι αἴρει. τρέπει δὲ καὶ χρόαν πινόμενον καὶ συγχριόμενον ὠχρὸν εἰς χλωρότερον. καὶ μετὰ σταφίδος ἢ ῥητίνης ὑποθυμιώμενον, ὑστέραν ἀποκαθαίρει.

### Περὶ Κορίου. Κεφ. υοϛʹ.

Κόριον ἢ κορίαννον. γνώριμον. δύναμιν ἔχει ψυκτικήν. ὅθεν καταπλασσόμενον μετὰ ἄρτων ἢ ἀλφίτων, ἐρυσιπέλατα καὶ ἕρπητας ἰᾶται. σὺν μέλιτι δὲ καὶ σταφίδι ἐπινυκτίδας. καὶ διδύμων φλεγμονὰς καὶ ἄνθρακας θεραπεύει. μετὰ ἐρεγμοῦ δὲ χοιράδας καὶ φύματα διαλύει. τὸ δὲ σπέρμα ὀλίγον μὲν ποθὲν μετὰ γλυκέος ἕλμινθας ἐκβάλλει. καὶ σπέρματός ἐστι γεννητικόν. πλεῖον δὲ ληφθὲν κινεῖ τὴν διάνοιαν ἐπικινδύνως. ὅθεν δεῖ φυλάττεσθαι τὴν πλείονα καὶ συνεχῆ χρῆσιν αὐτοῦ. ὁ δὲ χυλὸς σὺν ψιμμιθίῳ ἢ λιθαργύρῳ καὶ ὄξει καὶ ῥοδίνῳ καταχριόμενος, ὠφελεῖ τὰς κατὰ τὴν ἐπιφάνειαν φλεγμονὰς τὰς πυρώδεις.

### Περὶ Ἱερακίου τοῦ μεγάλου. Κεφ. υοζʹ. *

Ἱεράκιον τὸ μέγα. καυλὸν ἀνίησι τραχύν. ὑπέρυθρον. ἀκανθώδη. ὑπόκενον. φύλλα ἔχει ἐκ διαστημάτων ἐπεσχισμένα ἀραιῶς. σόγχῳ ἐμφερῆ τὴν περιφέρειαν. ἄνθη μήλινα ἐν κεφαλίοις ὑπομήκεσι. δύναμιν ἔχει ψυκτικήν. μετρίως ὑποστύφουσαν. ὅθεν στομάχῳ καυσουμένῳ καὶ φλεγμοναῖς καταπλασσόμενον ἁρμόζει. ὁ δὲ χυλὸς καταῤῥοφούμενος, δηγμὸν πραΰνει. ἡ δὲ πόα σὺν τῇ ῥίζῃ καταπλασθεῖσα, σκορπιοπλήκτοις ἀρήγει.

### Περὶ Ἱερακίου τοῦ μικροῦ. Κεφ. υοηʹ. *

Ἱεράκιον τὸ μικρόν. φύλλα ἔχει καὶ αὐτὸ ἐκ διαστημάτων ἐπεσχισμένα τὴν περιφέρειαν. καυλία δὲ ἀνίησι ξυφρὰ καὶ χλωρά. ἐν οἷς ἄνθη μήλινα. κύκλον περιγράφοντα. δύναμιν δὲ ἔχει καὶ αὐτὸ τὴν αὐτὴν τῷ προειρημένῳ.

### Περὶ Σελίνου. Κεφ. υοθʹ.

Σέλινον κηπαῖον. ἁρμόζει ἡ πόα πρὸς ἃ καὶ τὸ κόριον. καὶ πρὸς ὀφθαλμῶν φλεγμονὰς μετὰ ἄρτου, ἢ παιπάλης ἀλφί-

του καταπλασσόμενον. καὶ καῦσον στομάχου παρηγορεῖ. μαστούς τε χονδριῶντας ἀνίησι. κινεῖ τε οὖρα ἑφθόν τε καὶ ὠμὸν ἐσθιόμενον. καὶ τὸ ἀφέψημα αὐτοῦ τε καὶ τῶν ῥιζῶν πινόμενον, ἀντιπάσχει θανασίμοις φαρμάκοις. ἐμέτους κενοῦν. κοιλίαν τε ἐπέχει. τὸ δὲ σπέρμα ἐστὶν οὐρητικώτερον. βοηθοῦν καὶ θηριοδήκτοις. καὶ τοῖς λιθάργυρον πεπωκόσι. πνευμάτων τε ἐστὶ διαλυτικόν μίγνυται δὲ καὶ ἀνωδύνοις καὶ θηριακαῖς καὶ βηχικαῖς χρησίμως.

### Περὶ ἐλαιοσελίνου. κεφ. υπ΄.

ε λεοσέλινον. γεννώμενον ἐν τοῖς ἐφύδροις τόποις, μεῖζον τοῦ ἡμέρου σελίνου. ποιεῖ δὲ ὅσα καὶ τὸ κηπευτόν.

### Περὶ ὀρεοσελίνου. κεφ. υπα΄.

ὀ ρεοσέλινον. καυλός ἐστι σπιθαμιαῖος εἷς ἐκ ῥίζης λεπτῆς. περὶ δὲ αὐτὸν κλωνάρια καὶ κεφάλια μηκωνίῳ παρεμφερῆ. λεπτότερα μέντοι ἱκανῶς. ἐφ᾽ ὧν ὁ καρπὸς ἐπιμήκης. δριμύς. λεπτὸς εὐώδης. ἐοικὼς κυμίνῳ. φύεται δὲ ἐν τόποις πετρώδεσι καὶ ὀρεινοῖς. Δύναμιν δὲ ἔχει ὁ καρπὸς καὶ ἡ ῥίζα οὐρητικήν. ποθέντες ἐν οἴνῳ. ἄγει δὲ καὶ ἔμμηνα. μίγνυται δὲ καὶ ἀντιδότοις καὶ ταῖς διουρητικαῖς καὶ θερμαντικαῖς δυνάμεσιν. οὐ δεῖ δὲ πλανᾶσθαι νομίζοντας τὸ ὀρεοσέλινον εἶναι τὸ ἐν πέτραις φυόμενον. ἄλλο γάρ ἐστι τὸ πετροσέλινον.

### Περὶ πετροσελίνου. κεφ. υπβ΄.

Σ έλινον τὸ καὶ πετροσέλινον. τοῦτο φύεται ἐν μακεδονίᾳ. ἐν ἀποκρήμνοις τόποις. σπέρμα ἔχον ἐοικὸς ἄμμι. εὐωδέστερον δὲ καὶ δριμὺ καὶ ἀρωματίζον. οὐρητικόν. ἐμμηνίων ἀγωγόν. ἁρμόζει δὲ καὶ πρὸς στομάχου καὶ κώλου ἐμπνευματώσεις καὶ στρόφους. πρός τε πλευρᾶς πόνους καὶ νεφρῶν καὶ κύστεως ἐν ποτῷ λαμβανόμενον. μίγνυται δὲ καὶ ταῖς οὐρητικαῖς ἀντιδότοις.

### Περὶ ἱπποσελίνου. κεφ. υπγ΄.

Ι πποσέλινον. οἱ μὲν, γρίηλον. οἱ δὲ, ἀγριοσέλινον. οἱ δὲ, σμύρνιον καλοῦσι. ἕτερον τοῦ κυρίως λεγομένου σμυρνίου ὑπάρχον-

τος ὡς αὐτίκα ἱστορήσομεν. ἔστι δὲ μεῖζον καὶ λευκότερον τοῦ κηπευτοῦ σελίνου. καυλὸς κοῖλος. ὑψηλός. τρυφερός. οἱονεὶ γραμμὰς ἔχων. φύλλα πλατύτερα. ὑποφοινισσόμενα. ἐν οἷς ἐστιν ὡς λιβανωτίδος κόμη μεστὴ ἄνθους. κατὰ κορύμβους πρὶν ἐξανθῆσαι συνεστῶσα. σπέρμα δὲ μέλαν. ἐπίμηκες. ναστόν. δριμύ. ἀρωματίζον. ῥίζα εὐώδης. λευκή. εὔστομος. οὐ παχεῖα. φύεται ἐν συσκίοις. καὶ παρ᾽ ἕλεσι. λαχανεύεται δὲ ὥσπερ τὸ σέλινον. καὶ ἡ ῥίζα δὲ ἑφθὴ καὶ ὠμὴ ἐσθίεται. τά τε φύλλα καὶ οἱ καυλοὶ ἐσθίονται ἑφθά. καθ᾽ ἑαυτά τε καὶ μετὰ ἰχθύων σκευάζεται. καὶ ὠμὰ δὲ ταριχεύεται εἰς ἁλμαίας. Δύναμιν δὲ ἔχει ὁ καρπὸς πινόμενος ἐν οἰνομέλιτι, ἐμμήνων ἀγωγόν. θερμαίνει τε τοὺς ῥιγοῦντας πινόμενος καὶ συγχριόμενος. στραγγουρίαις τε βοηθεῖ. καὶ ἡ ῥίζα δὲ τὰ αὐτὰ ποιεῖ.

Περὶ Σμυρνίου. Κεφ. υπδ΄.

Σμύρνιον ὅπερ ἐν κιλικίᾳ πετροσέλινον καλοῦσι γεννώμενον πλεῖστον ἐν τῷ λεγομένῳ ἀμανῷ ὄρει. καυλὸν μὲν ἔχει ὅμοιον σελίνῳ. παραφυάδας ἔχοντα πολλάς. φύλλα δὲ πλατύτερα πρὸς τὴν γῆν. καὶ ὑποκεκλᾶται. ὑπολίπαρα. ἐρωμαλέα καὶ εὐώδη σὺν δριμύτητι. φαρμακώδη τε καὶ ὑπομηλίζοντα τῇ χρόᾳ. σκιάδιον δὲ ἐπὶ τῷ καυλῷ ἀνηθοειδές. σπέρμα στρογγύλον, ὅμοιον τῷ τῆς κράμβης. μέλαν. δριμὺ γευομένῳ ὡς σμύρνη, ἐν αὐθ᾽ ἑνὸς ποιοῦν. ἡ δὲ ῥίζα δριμεῖα. εὐώδης. ἁπαλή. πολύχυλος. δάκνουσα τὴν φάρυγγα. φλοιὸν ἔχουσα, ἔξωθεν μὲν μέλανα. ἔνδοθεν δὲ χλωρὸν ἢ ὑπόλευκον. φύεται δὲ ἐν πετρώδεσι τόποις καὶ γεωλόφοις. καὶ ἀνίκμοις καὶ γωνίαις χερσευούσαις. Δύναμιν δὲ ἔχει ἡ ῥίζα καὶ ἡ πόα καὶ ὁ καρπὸς θερμαντικήν. λαχανεύεται δὲ καὶ εἰς τὰς ἁλμαίας τὰ φύλλα. κοιλίαν τε ἵστησιν. ἡ δὲ ῥίζα πινομένη ἑρπετοδήκτοις ἁρμόζει. πραΰνει δὲ καὶ βῆχας καὶ ὀρθοπνοίας. καὶ δυσουρίας ἰᾶται. καταπλασσομένη δὲ τὰ πρόσφατα οἰδήματα, καὶ φλεγμονὰς καὶ σκληρίας διαφορεῖ. τραύματά τε ἄχρις ἐπουλώσεως ἄγει. ζεσθεῖσα δὲ καὶ προστεθεῖσα ἐξαμβλώσκει. καὶ τὸ σπέρμα δὲ αὐτοῦ, πρὸς νεφροὺς καὶ σπλῆνα καὶ κύστιν ἁρμόζει. ἄγει δὲ καὶ

ἔμμηνα καὶ λοῦτρα. πρός τε ἰσχιάδας μετ' οἴνου πινόμενον ἁρμόζει. καὶ στομάχου ἐμπνευματώσεις πραΰνει. ἔστι δὲ καὶ ὑδροποιόν. ἐρευκτικόν. ἰδίως πινόμενον πρὸς ὑδρωπας καὶ περιόδους.

Περὶ ἐλαφοβόσκου. κεφ. υπε.

Ἐλαφόβοσκον. καυλὸς ἐστι λιβανωτίδι ἢ μαράθρῳ ἐμφερὴς γεγωνιωμένος. φύλλα διδάκτυλα τὸ πλάτος. ἱκανῶς ἐπιμήκη ὡς τερεβίνθου. περικεκλασμένα. τραχέα πως. ἔχει δὲ παραφυάδας ἱκανὰς ὁ καυλός. σκιάδια ἐχούσας ὅμοια ἀνήθῳ. ἄνθη ὑπομήλινα. καὶ τὸ σπέρμα ἀνήθῳ ἐμφερές. ῥίζα ὡς τετραδάκτυλος τὸ μῆκος. πάχος δακτύλου. λευκή. γλυκεῖα. ἐδώδιμος. καὶ ὁ καυλὸς δὲ λαχανεύεται ἄρτι φυὴς ὤν. ταύτην φασὶ τὴν πόαν τὰς ἐλάφους νεμηθείσας, ἀντέχειν τοῖς τῶν ἑρπετῶν δήγμασι ὅθεν καὶ τὸ σπέρμα δίδοται τοῖς ἑρπετοδήκτοις σὺν οἴνῳ.

Περὶ μαράθρου. κεφ. υπϛ.

Μάραθρον. αὕτη ἐσθιομένη ἡ πόα, δύναται γάλα κατασπᾶν καὶ τὸ σπέρμα δὲ πινόμενον ἢ συνεψόμενον πτισάνῃ. τὸ δὲ ἀφέψημα τῆς κόμης ἀποτεθὲν, νεφριτικοῖς τοῖς περὶ κύστιν χρήσιμον. διουρητικὸν ὑπάρχον. ἁρμόζει δὲ ἑρπετοδήκτοις σὺν οἴνῳ πινόμενον. καὶ καταμήνια ἄγει. ἐν πυρετοῖς τε ναυτίαν καὶ καῦσον στομάχου παραιτεῖται μετὰ ψυχροῦ ὕδατος πινόμενον. αἱ δὲ ῥίζαι λεῖαι σὺν μέλιτι καταπλασθεῖσαι, κυνόδηκτα θεραπεύουσιν. ὁ δὲ χυλὸς ἐκθλιβέντων τῶν καυλῶν καὶ τῶν φύλλων ἐν ἡλίῳ ξηρανθεὶς, εἰς τὰ ὀφθαλμικὰ ὅσα πρὸς ὀξυδορκίαν σκευάζεται χρησίμως. χυλίζεται δὲ καὶ τὸ σπέρμα πρὸς τὰ αὐτὰ χλωρόν. ἔτι σὺν τοῖς φύλλοις καὶ τοῖς ἀκρέμοσι. καὶ ἡ ῥίζα κατὰ τὴν πρώτην ἐκβλάστησιν. Ἐν δὲ τῇ πρὸς ἑσπέραν ἰβηρίᾳ, καὶ ὀπὸν ἀνίησιν ὅμοιον κόμμει. ἀποθεριζόντων ἐν τῇ ἀνθήσει μέσον τὸν καυλὸν τῶν ἐπιχωρίων. καὶ πυρὶ παρατιθέντων. ἵνα ὑπὸ τῆς θερμασίας οἱονεὶ ἀφιδρῶσαν ἐκβάλῃ τὸ κόμμι. ἔστι δὲ ἐνεργέστερον τοῦ χυλοῦ πρὸς τὰ ὀφθαλμικὰ ἔτι.

Περὶ ἱππομαράθρου. Κεφ. υπζʹ.

Ἱππομάραθρον· μάραθρόν ἐστιν ἄγριον μέγα. φέρει δὲ σπέρμα κάγχρυι ὅμοιον. ῥίζα δὲ ὕπεστιν εὐώδης. ἥτις πινομένη στραγγουρίας ἰᾶται. ἔμμηνά τε ἄγει προστιθεμένη. τὸ δὲ σπέρμα καὶ ἡ ῥίζα κοιλίαν ἵστησι πινόμενα θηριοδήκτοις τε βοηθεῖ, καὶ λίθους θρύπτει καὶ ἴκτερον ἀποκαθαίρει. τῶν δὲ φύλλων τὸ ἀφέψημα πινόμενον γάλα ἄγει. καὶ τὰς ἐκ τοκετῶν γυναῖκας ἀποκαθαίρει. καλεῖται καὶ ἕτερον ἱππομάραθρον. φύλλα ἔχον στενὰ μικρὰ προμήκη. καρπὸν δὲ στρογγύλον ὡς πρὸς τὸν τοῦ κορίου. δριμύν. εὐώδη. θερμαντικόν. ἀναλογεῖ δὲ αὐτοῦ ἡ δύναμις τῷ προειρημένῳ ἀσθενέστερον ἐνεργοῦσα.

Περὶ δαύκου. Κεφ. υπηʹ.

Δαῦκος· οἱ δὲ, δίρκαιον καλοῦσιν. ὁ μέν τις ἐστὶ κρητικός. μαράθρῳ ἔχον τὰ φύλλα ὅμοια. μικρότερα δὲ καὶ λεπτότερα. καυλὸν σπιθαμιαῖον. σκιάδιον ὅμοιον κοριάννῳ. ἄνθη λευκά. ἐν δὲ τούτοις ὁ καρπὸς δριμύς. λευκός. δασύς. ἐν τῷ διαμασᾶσθαι εὐώδης. ῥίζα δακτύλου τὸ πάχος. τὸ δὲ μῆκος σπιθαμῆς. γεννᾶται δὲ ἐν πετρώδεσι τόποις καὶ εὐηλίοις. ὁ δέ τις αὐτῶν ἐστὶ σελίνῳ ἀγρίῳ παραπλήσιος ἀρωματώδης δριμὺς καὶ εὐώδης γευομένῳ καὶ πυρώδης. διαφέρει δὲ ὁ κρητικός.

Τὸ δὲ τρίτον εἶδος κορίῳ τὰ φύλλα ἔοικε. καὶ τὰ ἄνθη λευκά. κεφαλὴν δὲ ἔχει καὶ καρπὸν ὅμοια ἀνήθῳ. ἐφ' ἧς σκιάδιον ἐμφερὲς σταφυλίνῳ. σπέρματος ἐπιμήκους πλήρες ὡς κυμίνου δριμέως. Τὸ δὲ σπέρμα πάντων δύναμιν ἔχει θερμαντικὴν πινόμενον ἐμμήνων ἐμβρύων καὶ οὔρων ἀγωγόν. καὶ στρόφων ἀπαλλακτικόν. βηχῶν χρονίων πραϋντικόν. ἀρήγει δὲ καὶ φαλαγγιοδήκτοις ποθὲν σὺν οἴνῳ. διαφορεῖ δὲ καὶ οἰδήματα καταπλασθέν. ἡ δὲ χρῆσις τῶν μὲν ἄλλων τοῦ σπέρματος μόνον. τοῦ δὲ κρητικοῦ καὶ τῆς ῥίζης. ἥτις μάλιστα πρὸς τὰ θηρία πίνεται μετ' οἴνου.

Περὶ δελφινίου. Κεφ. υπθʹ.*

Δελφίνιον· κλῶνας ἀνίησι διασπιθάμους ἢ καὶ μείζονας ἀπὸ μιᾶς ῥίζης. περὶ οὓς φυλλάρια ἐπεσχισμένα λεπτὰ ἐπιμήκη. δελ

φινοειδῆ. ὅθεν καὶ ὀνόμασται. ἄνθος δὲ ὅμοιον λευκοίῳ. ἐμπόρφυρον. σπέρμα ἐν λοβοῖς κέγχρῳ ἐμφερές. ὁ βοηθεῖ ποθὲν σὺν οἴνῳ σκορπιοπλήκτοις, ὡς οὐδὲν ἕτερον. φασὶ δὲ καὶ τοὺς σκορπίους παρατεθείσης τῆς πόας παραλύεσθαι, ἀπράκτους τε καὶ ναρκώδεις γίνεσθαι. ὑφαιρουμένης δὲ εἰς τὸ αὐτὸ καθεστάναι. φύεται δὲ ἐν τραχέσι καὶ εὐηλίοις τόποις.

Περὶ δελφινίου ἑτέρου. ΚΕΦ. υϛ΄. *

Δελφίνιον ἕτερον. οἱ δὲ, ὑάκινθον. ῥωμαῖοι βουκίνους. καὶ αὐτὸ ἐμφερὲς τῷ πρὸ αὐτοῦ. τοῖς δὲ φύλλοις καὶ τοῖς κλωνίοις ἰσχνότερον πολλῷ. δύναμιν ἔχειν καὶ αὐτὸ τὴν αὐτὴν τῷ προειρημένῳ. οὐχ οὕτω δὲ ἐνεργές.

Περὶ πυρέθρου. ΚΕΦ. υϛα΄.

Πύρεθρον. ἡ πόα ἐστὶ καυλὸν ἀνιεῖσα καὶ φύλλα ὥσπερ δαῦκος ἄγριος καὶ μάραθρον. σκιάδιον δὲ ὡς ἀνήθου τροχοειδές. ῥίζα δακτύλου μεγάλου τὸ πάχος μακρά. γευσαμένῳ πυρωτικωτάτη. φλέγματος ἐστὶν ἐπισπαστική. διὸ καὶ ταῖς ὀδονταλγίαις βοηθεῖ μετ' ὄξους ἑψηθεῖσα καὶ διακλυζομένη. ἄγει δὲ καὶ φλέγμα διαμασηθεῖσα. συγχριομένη δὲ μετ' ἐλαίου, ἱδρῶτας κινεῖ ποιοῦσα πρὸς τὰ χρόνια ῥίγη. καὶ πρὸς ἐψυγμένα δὲ ἢ παρειμένα μέρη τοῦ σώματος, ἄκρως ἁρμόζει.

Περὶ λιβανωτίδος. ΚΕΦ. υϛβ΄

Λιβανωτὶς διττή. ἡ μέν τις κάρπιμος. ὑπ' ἐνίων δὲ ζέα. ἣ καὶ καψάνεμα καλουμένη, ἧς ὁ καρπὸς κάγχρυς καλεῖται. φύλλα δὲ ἔχει μαράθρῳ ὅμοια. παχύτερα δὲ καὶ πλατύτερα τροχοειδῶς. ἐπὶ τῆς γῆς ἐρρωμένα. εὐώδη καυλὸν δὲ ὅσον πήχεως καὶ μείζονα. μασχάλας ἔχοντα πολλάς. καὶ ἐπ' ἄκρου σκιάδιον ἐφ' οὗ καρπὸς πολὺς λευκὸς ἐοικὼς σφονδύλῳ περιφερής. γωνίας ἔχων. δριμύς. ῥητινίζων, ἐν δὲ τῷ διαμασᾶσθαι ἐπικαίων τὴν γεῦσιν. ῥίζα δὲ λευκὴ εὐμεγέθης, ὄζουσα λιβάνου. Ἡ δὲ ἑτέρα κατὰ πάντα ἐοικυῖα τῇ πρὸ αὐτῆς σπέρμα φέρει πλατύ. μέλαν. ὡς σφονδύλιον. εὐῶδες. οὐ πυρωτικόν. ῥίζαν ἐκ μὲν τῶν ἐκτὸς, μέ-

λαιναν. θλασθεῖσαν δὲ λευκήν. Ἡ δὲ λεγομένη ἄκαρπος κατὰ πάντα ὁμοία οὖσα ταῖς προειρημέναις, οὔτε καυλὸν ἀνίησιν οὔτε ἄνθος οὔτε σπέρμα. φύεται δὲ ἐν πετρώδεσι καὶ τραχέσι τόποις, πασῶν δὲ κοινῶς ἡ πόα καταπλασθεῖσα λεία αἱμοῤῥοΐδας στέλλει. φλεγμονάς τε τὰς κατὰ δακτύλιον πραΰνει. καὶ κονδυλώματα καὶ χοιράδας. καὶ τὰ δυσεπούλωτα τῶν ἀποστημάτων συμπέττει. αἱ δὲ ῥίζαι ξηραὶ σὺν μέλιτι ἕλκη ἀνακαθαίρουσι. καὶ στρόφους ἰῶνται. καὶ θηριοδήκτοις ἁρμόζουσι σὺν οἴνῳ πινόμεναι. ἔμμηνά τε ἄγουσι καὶ οὖρα. διαφοροῦσι δὲ καὶ οἰδήματα παλαιὰ καταπλασσόμεναι. ὁ δὲ χυλὸς τῆς ῥίζης καὶ τῆς πόας ὀξυδερκής. μιγνύμενος μέλιτι καὶ ἐγχριόμενος. ὁ δὲ καρπὸς πινόμενος, τὰ αὐτὰ ποιεῖ. βοηθεῖ καὶ ἐπιληψίαις καὶ ταῖς ἐν θώρακι παλαιαῖς διαθέσεσιν. ἰκτερικοῖς τε μετὰ πεπέρεως καὶ οἴνου διδόμενος. ἔστι δὲ καὶ ἱδρωτικὸς σὺν ἐλαίῳ ἀλειφόμενος. ἁρμόζει καὶ ῥήγμασι, καὶ σπάσμασι. ποδάγραις τε καταπλασσόμενος λεῖος σὺν αἰρίνῳ ἀλεύρῳ καὶ ὄξει. ἀλφούς τε σμήχει. μιγνύμενος ὄξει δριμυτάτῳ. τῷ σπέρματι δὲ εἰς τὰ ἀποστήματα χρῆσθαι δεῖ τῆς μὴ τὸ κάγχρυ φερούσης λιβανωτίδος. δριμὺ γὰρ ἐκεῖνο καὶ τραχωτικὸν τῆς ἀρτηρίας.

Θεόφραστος δὲ ἱστορεῖ μετὰ τῆς ὀρείκης λιβανωτίδα θριδακι ἀγρίᾳ τῇ πικρᾷ ὅμοια φύλλα ἔχουσαν φύεσθαι. ῥίζαν δὲ βραχεῖαν. καθαίρειν δὲ ἄνω καὶ κάτω ταύτην ποθεῖσαν. λευκότερα μέντοι καὶ δασύτερα τὰ φύλλα τῶν τῆς θρίδακος.

## Περὶ κάγχρυος. Κεφ. υϛγ'.

Τὸ μέντοι κάγχρυ δύναμιν ἔχει θερμαντικὴν ἀναξηραντικὴν σφόδρα. ὅθεν ἁρμόζει σμήγμασι μιγνύμενον πρὸς ῥευματιζομένους ὀφθαλμούς. ἐπὶ τῆς κεφαλῆς ἐμπλασσόμενον. καὶ ἀποσμώμενον μετὰ ἡμέρας τρεῖς.

## Περὶ λιβανωτίδος. Κεφ. υϛδ'.

Λιβανωτὶς ἣν ῥωμαῖοι καλοῦσιν ῥοσμαρίνουν. καὶ οἱ στεφανοπλόκοι χρῶνται. ῥάβδοι εἰσὶ λεπταί. περὶ ἃς τὰ φύλλα λεπτά. πυκνά. ἐπιμήκη καὶ ἰσχνά. ἔνδοθεν λευκά. ἐκ δὲ τῶν

ἐκτὸς, χλωρὰ βαρύοσμα. Δύναμιν δὲ ἔχει θερμαντικήν. ἰκτέρου ἰατικήν. ἐάν τις αὐτὴν ἑψήσας ἐν ὕδατι δῷ πρὸ τῶν γυμνασίων ποιεῖν. εἶτα γυμνάζον λούῃ καὶ οἴνῳ ποτίζῃ. μίγνυται δὲ καὶ ἀκόποις καὶ τῷ λευκίνῳ χρίσματι.

Περὶ σφονδυλίου. Κεφ. υϛέ.

Σφονδύλιον. φύλλα μὲν ἔχει κατὰ ποσὸν ἐοικότα πλατάνῳ πρὸς τὰ τοῦ πάνακος. καυλοὺς δὲ πηχυαίους ἢ καὶ μείζονας. ἐοικότας μαράθρῳ. σπέρμα δὲ ἐπ᾽ ἄκρῳ ὅμοιον σεσέλει. διπλοῦν. πλατύτερον δὲ καὶ λευκότερον καὶ ἀχυρωδέστερον. βαρύοσμον. ἄνθη λευκά. ῥίζαν λευκήν. ῥαφανίῳ ἐμφερῆ. φύεται δὲ ἐν ἑλώδεσι καὶ ἐνύδροις χωρίοις. ὁ δὲ καρπὸς αὐτοῦ ποθεὶς, ἐκκρίνει κατὰ κοιλίαν φλεγματῶδες. ἰᾶται δὲ πινομένη ἡπατικούς. ἰκτερικούς. ὀρθοπνοϊκούς. ἐπιληπτικούς. καὶ ὑστερικὴν πνῖγα. ὑποθυμιώμενος δὲ ἀνακαλεῖται τοὺς καταφερομένους. σὺν ἐλαίῳ δὲ ἐμβρεχομένης τῆς κεφαλῆς, ἁρμόζει φρενιτικοῖς. ληθαργικοῖς. κεφαλαλγοῦσι. ἐπέχει δὲ καὶ ἕρπητας σὺν πηγάνῳ καταπλασθείς. ἡ δὲ ῥίζα δίδοται ἰκτεριῶσι καὶ ἡπατικοῖς. περιξυσθεῖσα δὲ καὶ ἐντεθεῖσα περιτήκει τύλους τοὺς ἐν σύριγξι. τοῦ δὲ ἄνθους χλωροῦ ὁ χυλὸς πρὸς ἡλκωμένα ὦτα καὶ πυοῤῥοοῦντα ἁρμόζει. ἀποτίθεται δὲ ἡλιαζόμενος ὡς τὰ λοιπὰ χυλίσματα.

Περὶ νάρθηκος. Κεφ. υϛζ.

Νάρθηξ. τούτου χλωροῦ ὄντος ἡ ἐντεριώνη πινομένη αἱμοπτοϊκοὺς καὶ κοιλιακοὺς ὠφελεῖ. καὶ ἐχιοδήκτοις δίδοται σὺν οἴνῳ. καὶ τὰς ἐκ ῥινῶν αἱμοῤῥαγίας ἐπέχει ἐντεθεῖσα. τὸ δὲ σπέρμα στροφουμένους πινόμενον ὠφελεῖ. καὶ ἱδρῶτας κινεῖ χριόμενον μετ᾽ ἐλαίου. οἱ δὲ καυλοὶ βρωθέντες κεφαλαλγεῖς εἰσί. ταριχεύονται δὲ καὶ εἰς τὰς ἁλμεύσεις. ὁ γοῦν νάρθηξ καυλὸν ἀναφέρει τρίπηχυν πολλάκις. φύλλα δὲ ἔχει μαράθρῳ ἐμφερῆ. παχύτερα δὲ πολὺ καὶ μείζονα. ἐξ οὗ καὶ τὸ σαγάπηνον γίνεται. κολαπτομένου πρὸς τῇ ῥίζῃ.

Περὶ πανακελαίου. Κεφ. υϛή.

Γ εὐκέδανος καυλὸν ἀνίησι λεπτόν. ἰσχνόν. μαράθρῳ ὅμοιον. κόμην δὲ ἔχει περὶ τὴν ῥίζαν ἱκανὴν καὶ πυκνήν. ἄνθος μήλινον. ῥίζαν μέλαιναν. βαρύοσμον. ἁδράν. μεστὴν ὀποῦ. φύεται ἐν ὄρεσι συσκίοις. ὀπίζεται δὲ τῆς ῥίζης ἁπαλῆς ἀρτιτεμνομένης μαχαίρᾳ. καὶ τὸ ἀπορρέον εὐθὺς ἐν σκιᾷ τίθεται. ὑπὸ γὰρ τοῦ ἡλίου ἀνίεται. ἐν δὲ τῷ συλλέγεσθαι κεφαλαλγίαν ποιεῖ καὶ σκοτώματα. ἐὰν μή τις προδιαχρίσῃ αὐτοῦ τὰς ῥῖνας ῥοδίνῳ καὶ τὴν κεφαλὴν προκαταβρέξῃ. ἄχρηστος δὲ γίνεται ὀπισθεῖσα ἡ ῥίζα. ὀπίζονται δὲ καὶ οἱ καυλοὶ καὶ χυλίζονται. καὶ ἡ ῥίζα ὡς μανδραγόρας. ἧττον δὲ ἐνεργεῖ χυλοῦ ὁ ὀπὸς καὶ τάχιον ἐκπνεῖ. ἐνίοτε δὲ εὑρίσκεται προσπεπηγὸς δάκρυον. ὅμοιον λιβανωτῷ τοῖς καυλοῖς καὶ ταῖς ῥίζαις προσαπεπλασμένος. Τοῦ δὲ ὀποῦ διαφέρει ὁ ἐν Σαρδονίᾳ καὶ Σαμοθράκῃ γινόμενος. βαρύοσμος. ἔγκιρρος. θερμαίνων τὴν γεῦσιν. ἁρμόζει δὲ σὺν ὄξει καὶ ῥοδίνῳ καταχριόμενος, ληθαργικοῖς, φρενιτικοῖς. σκοτωματικοῖς. ἐπιληπτικοῖς. κεφαλαλγοῦσι χρονίως. παραλυτικοῖς. ἰσχιαδικοῖς. σπωμένοις. καὶ καθόλου τοῖς περὶ νεῦρα πάθεσι συγχριόμενος μετ' ἐλαίου καὶ ὄξους. ἔστι δὲ καὶ ὀσφραντικὸς πνιγὸς ὑστερικῆς. καὶ τῶν καταφερομένων ἀνακλητικός. διώκει δὲ θηρία θυμιώμενος. ἁρμόζει δὲ καὶ πρὸς ὠταλγίαν ἐνσταζόμενος σὺν ῥοδίνῳ καὶ πρὸς ὀδονταλγίαν ἐντιθέμενος βρώμασι. ποιεῖ δὲ καὶ πρὸς βῆχας μετ' ὠοῦ λαμβανόμενος. δυσπνοίαις τε καὶ στρόφοις καὶ πνευματικαῖς διαθέσεσιν ἁρμόζει. κοιλίαν τε ἠπίως μαλάσσει. καὶ σπλῆνα τήκει. καὶ δυστοκίαις ἐξόχως ἀρήγει. πρός τε πόνους καὶ διατάσεις κύστεως καὶ νεφρῶν πινόμενος ποιεῖ. ἀναστομοῖ δὲ καὶ ὑστέραν. χρησίμη δὲ καὶ ἡ ῥίζα πρὸς τὰ αὐτὰ ἔλαττον ἐνεργοῦσα. πίνεται δὲ αὐτῆς τὸ ἀφέψημα. καθαίρει δὲ λεία ξηρὰ τὰ ῥυπαρὰ ἕλκη. καὶ λεπίδας ἀπὸ ὀστέων ἀφίστησι. καὶ ἐπουλοῖ τὰ παλαιά. μίγνυται δὲ καὶ κηρωταῖς καὶ μαλάγμασι θερμαντικαῖς. ἐκλέγου δὲ τὴν πρόσφατον. ἄβρωτον. στερεάν. πλήρη ὀσμῆς. λύεται δὲ ὁ ὀπὸς εἰς τὰ ποτήματα ἀμυγδάλοις πικροῖς ἢ πηγάνῳ ἢ ἄρτῳ θερμῷ ἢ ἀνήθῳ.

## Περὶ Μελανθίου. Κεφ. υϛθ'.

Μελάνθιον· θαμνίσκος ἐστὶ λεπτόκαρφος διαπίθαμος ἢ καὶ μείζων φύλλα ἔχων μικρὰ ὥσπερ ἠριγέροντος. λεπτότερα δὲ πολλῷ. καὶ κεφάλιον ἐπ᾽ ἄκρου ἔχων. μικρόν. ὡς μήκωνος. ἐπιμήκες. ἔχον κατὰ τὰ ἐντὸς διαφράγματα. ἐν οἷς καὶ τὸ σπέρμα μέλαν. δριμύ. εὐῶδες. καταπλασσόμενον εἰς ἄρτους. ἁρμόζει δὲ καὶ κεφαλαλγοῦσι καταπλασσόμενον τῷ μετώπῳ, καὶ τοῖς ἀρχομένοις ὑποχεῖσθαι ἐγχεόμενον εἰς τὰς ῥῖνας μετὰ ἰρίνου λεῖον. αἴρει δὲ καὶ φακόν. καὶ λέπρας καὶ οἰδήματα παλαιὰ καὶ σκληρίας σὺν ὄξει καταπλασθέν. καὶ ἥλους περιχαραχθέντας ἐκτινάσσει. σὺν οἴνῳ παλαιῷ ἐπιτεθέν. ὠφελεῖ δὲ καὶ ὀδονταλγίαν μετὰ ὄξους καὶ δαδίου ἑψηθὲν καὶ διακλυζόμενον ἐκτινάσσει δὲ καὶ ἕλμινς στρογγύλας καταπλασσομένου τοῦ ὀμφαλοῦ μεθ᾽ ὕδατος. λειανθὲν δὲ καὶ ἐν ἀποδέσμῳ δεθὲν καὶ ὀσφραινόμενον, τοὺς καταῤῥιζομένους ὠφελεῖ. πινόμενον δὲ πλείους ἡμέρας, ἔμμηνα καὶ οὖρα καὶ γάλα ἄγει παύει. καὶ δύσπνοιαν μετὰ οἴνου ποθέν. βοηθεῖ δὲ καὶ φαλαγγιοδήκτοις ὅσον < ά. μεθ᾽ ὕδατος ποθὲν διώκει δὲ καὶ ἑρπετὰ θυμιώμενον. φασὶ δὲ καὶ ἀναιρεῖν αὐτὸ πλεῖον ποθέν.

Περὶ σιλφίου. κεφ. φ΄.

Σίλφιον. γεννᾶται ἐν τοῖς κατὰ συρίαν, καὶ ἀρμενίαν καὶ μηδίαν τόποις καὶ λιβύην. οὗ ὁ καυλὸς μάσπετον καλεῖται. ἐμφερὴς νάρθηκι. φύλλα δὲ ἔχει σελίνῳ ὅμοια σπέρμα πλατύ. ῥίζα δὲ θερμαντική. δύσπεπτος. κύστεως κακωτική. ἰᾶται δὲ χοιράδας καὶ φύματα ἀναληφθεῖσα. κηρωτῇ. ἢ καὶ ὑπώπια σὺν ἐλαίῳ καταπλασθεῖσα σὺν ἰρίνῃ δὲ κηρωτῇ ἢ κυπρίνῃ ἰσχιαδικοῖς ἁρμόζει. τὰς περὶ δακτύλιόν τε ἐξοχὰς, αἴρει σιδίῳ σὺν ὄξει ἑψηθεῖσα καὶ καταπλασθεῖσα. θανασίμων τέ ἐστιν ἀντιφάρμακον πινομένη εὔστομός τε ἐστὶ μιγνυμένη καὶ εἰς βάμματα καὶ ἅλας συλλέγεται δὲ ὁ ὀπὸς ἐγχαρασσομένων τῆς ῥίζης καὶ τοῦ καυλοῦ. διαφέρει δὲ αὐτοῦ ὁ ὑπέρυθρος καὶ διαυγής. σμυρνίζων καὶ ἐν τῇ ὀσμῇ εὔτονος μὴ πρασίζων. μὴ δὲ ἀπηνὴς πρὸς τὴν γεῦσιν τῇ γεύσει. εὐχερῶς τε διειμένος εἰς τὸ λευκὸν χρῶμα. ὁ μέντοι κυρηναϊκὸς κἂν ἐπ᾽ ὀλίγον τις αὐτοῦ γεύσηται, ἱκμάδα κινεῖ καθ᾽ ὅλον τὸ σῶμα. τῇ τε ὀσμῇ προσηνέστατος. ὥστε

γευσαμένῳ τὸ στόμα, μὴ δὲ πνεῖν εἰ μὴ ἐπ' ὀλίγον. ὁ δὲ μηδικὸς καὶ συριακὸς τῇ δυνάμει εἰσὶν ἀσθενέστεροι, καὶ βρομωδεστέραν ἔχουσι τὴν ὀσμήν. δολοῦται δὲ πᾶς ὀπὸς πρὸ τοῦ ξηρανθῆναι. σαγαπηνοῦ μιγνυμένου. ἢ ἀλεύρου βρεγμίνου ὅπερ διακρινεῖς τῇ γεύσει καὶ τῇ ὀσμῇ καὶ τῇ ὄψει καὶ τῇ διέσει. ἔνιοι δὲ τὸν μὲν καυλὸν σίλφιον ἐκάλεσαν. τὴν δὲ ῥίζαν μαγύδαριν. τὰ δὲ φύλλα μάσπετα. πρακτικώτατος δέ ἐστιν ὁ ὀπός. εἶτα τὰ φύλλα. εἶτα ὁ καυλός. ἔστι δὲ φυσώδης. καὶ δριμύς. ἀλωπεκίας θεραπεύων, σὺν οἴνῳ καὶ πεπέρει, καὶ ὄξει καταχριόμενος. ὀξυδερκίας τε ποιητικός. καὶ ἀρχομένης ὑποχύσεως διασκεδαστικὸς σὺν μέλιτι ἐγχριόμενος. πρὸς ὀδονταλγίας τε ἐντίθεται εἰς τὰ βρώματα. καὶ περιτίθεται σὺν λιβανωτῷ ἐγχρισθεὶς εἰς ὀθόνην. καὶ διακλύζεται σὺν ὑσσώπῳ, καὶ σύκοις ἀφεψημένοις σὺν ὀξυκράτῳ. καὶ ἐπὶ λυσσοδήκτων δὲ ὠφελεῖ ἐπιτιθέμενος τοῖς τραύμασι. καὶ ἐπὶ τῶν ἰοβόλων ζώων πάντων καὶ τῶν φαρμακωδῶν τοξευμάτων, ἐγχριόμενος καὶ πινόμενος. ἐπὶ δὲ σκορπιοπλήκτων ἐλαίῳ διεθεὶς περιαλείφεται. καὶ ἐπὶ γαγγραινουμένων προκαταχαραχθέντων ἐνίεται. πρός τε ἄνθρακας μετὰ πηγάνου καὶ νίτρου καὶ μέλιτος. ἢ καθ' ἑαυτὸν, ἥλους τε καὶ τύλους αἴρει περιχαραχθέντας. προμαλαχθεὶς κηρωτῇ. ἢ σύκων ξηρῶν τῷ ἐντός. θεραπεύει καὶ λειχῆνας προσφάτους σὺν ὄξει. σαρκώματα δὲ καὶ πολύποδας μετὰ χαλκάνθης ἢ ἰοῦ. διαχριόμενος ἐπὶ ἡμέρας τινὰς, ἐπισπᾶται τὰς ἐξοχὰς σὺν σαρκολαβίδι. ἀρήγει δὲ καὶ βρόγχων χρονίαις τραχύτησι. φωνήν τε αἰφνιδίως ἀποσωθεῖσαν ὕδατι διεθεὶς καὶ ἐπιρροφηθεὶς, αὐτίκα ἀποκαθαίρει. κονίδας τε στέλλει σὺν μέλιτι διαχεόμενος. συναγχικοῖς τε ἀναγαργάρισμα μετὰ μελικράτου ὠφέλιμον. εὐχρουστέρους ποιεῖ λαμβανόμενος ἐν διαίτῃ. βηχί τε ἁρμόζει ἐν ὠῷ ῥοφητῷ διδόμενος. πλευριτικοῖς τε ἐν ῥοφήμασιν. ἰκτερικοῖς τε καὶ ὑδρωπικοῖς ὠφελίμως δίδοται μετὰ σύκων ξηρῶν. λύει καὶ ῥίγη σὺν πεπέρει καὶ λιβάνῳ ποθεὶς καὶ οἴνῳ. τετανικοῖς τε καὶ ὀπισθοτονικοῖς ὀβολοῦ ὁλκὴν περιπλάσας, δίδου καταπίνειν. βδέλλας δὲ τὰς προσισχο-

μένας τῇ κατὰ πόσιν, ἀναγαργαριζόμενος μετ' ὄξους ἀποβάλλει. καὶ τοῖς γάλα τεθρομβωμένων ἔνδον ποιοῦσι καὶ ἐπιληπτικοῖς μετ' ὀξυμέλιτος ληφθεὶς βοηθεῖ. ποθεὶς δὲ σὺν πεπέρει καὶ σμύρνῃ καταμήνια ἄγει κοιλιακούς τε ἐν ῥαγὶ λαμβανόμενος σταφυλῆς ὠφελεῖ. μετὰ δὲ κονίας ποθεὶς, ὠφελεῖ τὰ αἰφνίδια σπάσματα. ῥήγματα. διαλύεται δὲ εἰς τὰ πότιματα ἀμυγδάλοις πικροῖς. ἢ πηγάνῳ ἢ ἄρτῳ θερμῷ. ὁ δὲ ὀπὸς τῶν φύλλων τὰ αὐτὰ μὲν ποιεῖ. παραπολὺ δὲ ἔλασσον ἐσθίεται δὲ μετ' ὀξυμέλιτος ἁρμόζων πρὸς ἀρτηρίαν. μάλιστα δὲ ἀποκοπεῖσιν ἤχοις χρῶνται δὲ αὐτῷ καὶ μετὰ θειδάκων ἐσθίοντες ἀντὶ εὐζώμου. λέγεται δὲ καὶ ἑτέρα μαγύδαρις γεννωμένη ἐν λιβύῃ. ῥίζα παρομοία σιλφίῳ ἧττον δὲ παχεῖα. δριμεῖα καὶ χαύνη καὶ ὀπὸν μὴ ἔχουσα. ποιεῖ δὲ τὰ αὐτὰ τῷ σιλφίῳ.

Περὶ σαγαπηνοῦ. κεφ. φα'.

Σαγάπηνον. ὀπός ἐστι πόας ναρθηκοειδοῦς γεννωμένης ἐν μηδείᾳ. διαφέρει δὲ αὐτοῦ τὸ διαυγές. ἔξωθεν μὲν κιῤῥόν. ἐκ δὲ τῶν ἔνδον λευκόν. ὄζον μεταξὺ ὀποῦ σιλφίου καὶ χαλβάνης δριμὺ ἐν τῇ γεύσει. ποιεῖ δὲ πρὸς θώρακος καὶ πλευρᾶς πόνον. ῥήγματα. σπάσματα. βῆχας χρονίους. πάχη τὰ ἐν πνεύμονι ἀνακαθαίρει δίδοται δὲ καὶ ἐπιληπτικοῖς. ὀπισθοτονικοῖς. σπληνικοῖς. παραλυτικοῖς. κατεψυγμένοις. περιοδικοῖς πυρετοῖς ἐν ποτήμασι. καὶ ἐν συγχρίσμασι δὲ ὠφελίμως προσάγεται. ἄγει καὶ ἔμμηνα καὶ ἔμβρυα φθείρει πινόμενον μεθ' ὑδρομέλιτος ἀρήγει καὶ θηριοδήκτοις μετ' οἴνου λαμβανόμενον. διεγείρει καὶ ὑστερικὰς πνιγομένας μετ' ὄξους ὀσφραινόμενον. οὐλάς τε ἀποσμήχει τὰς ἐν ὀφθαλμῷ καὶ ἀμβλυωπίας καὶ τὰ ἐπισκοτοῦντα ταῖς κόραις καὶ ὑποχύματα. διαλύεται δὲ ὥσπερ ὀπός. πηγάνῳ καὶ ὕδατι καὶ πικροῖς ἀμυγδάλοις ἢ μέλιτι ἢ ἄρτῳ θερμῷ.

Περὶ εὐφορβίου. κεφ. φβ'.

Εὐφόρβιον. δένδρον ἐστὶ ναρθηκοειδὲς λιβυκόν. γεννώμενον ἐν τῷ κατὰ μαυρουσίαν τμώλῳ. ὀποῦ μεστὸν δριμυτάτου. ὃν δεδοικότες οἱ τῇδε ἄνθρωποι συλλέγουσι διὰ τὸ ἐπιτετα-

μένον τῆς πυρώσεως. κοιλίας γοῦν προβατίας πεπλυμέ-
νας περιδήσαντες τὸ δένδρον, μακρόθεν ἀκοντίοις διαιροῦ-
σιν αὐτοῦ τὸν καυλόν. εὐθέως δὲ ὡς ἔκ τινος ἀγγείου πολὺς
ἀποχεῖται ὀπὸς εἰς τὰς κοιλίας καὶ ἀπορραίνεται δὲ καὶ εἰς
τὴν γῆν ἐξακοντιζόμενος. ἔστι δὲ δύο γένη τοῦ ὀποῦ. τὸ μὲν,
διαυγὲς ὡς σαρκοκόλλα, κατὰ μέγεθος ὀρόβου. τὸ δέ τι ἐν
ταῖς κοιλίαις ὑελῶδες καὶ συνεστώς. δολοῦται δὲ καὶ τῇ
σαρκοκόλλῃ καὶ κόλλῃ μιγνυμέναις. ἐκλέγου δὲ τὴν διαυ-
γῆ καὶ δριμεῖαν. δυσδοκίμαστος δέ ἐστιν ὁ τῇ γεύσει λαμβανό-
μενος. διὰ τὸ ἅπαξ δηχθείσης τῆς γλώττης ἐπιμένειν τὴν πύ-
ρωσιν ἐφ' ἱκανὸν χρόνον, ὥς τε πᾶν τὸ προσαγόμενον εὐφόρ-
βιον δοκεῖν εἶναι. ἡ μέν τοι εὕρεσις αὐτοῦ κατὰ Ἰόβαν τὸν
βασιλέα τῆς Λιβύης ἐπεγνώσθη. Δύναμιν δὲ ἔχει ὁ ὀ-
πὸς, διαφορητικὴν ὑποχυμάτων ἐγχριόμενος. πυροῖ μέν
τοι δι' ὅλης τῆς ἡμέρας ποθείς. ὅθεν μέλιτι μίγνυται. καὶ
κολλυρίοις κατὰ ἀναλογίαν τῆς δριμύτητος. ἁρμόζει καὶ ἰ-
σχίων ἀλγήμασι. μιγεὶς ἀρωματικῷ ποτήματι καὶ πινόμε-
νος, ἀφίστησι δὲ καὶ λεπίδας αὐθημερόν. δεῖ μέν τοι χρωμέ-
νους ἀσφαλίζεσθαι τὴν περικειμένην τοῖς ὀστοῖς σάρκα. μο-
τοῖς ἢ κηρωταῖς. ἱστοροῦσι δέ τινες μηδὲν παρακολουθεῖν
δυσχερὲς τοῖς ἑρπετοδήκτοις, ἐάν τις ἐκκόψας ἄχρις ὀστέου
τὸ δέρμα τῆς κεφαλῆς, ἐγχέῃ τὸν ὀπὸν λεῖον καὶ ῥάψῃ τὸ τραῦ-
μα.

Περὶ Χαλβάνης. ΚΕΦ. ΦΓ'.

Χαλβάνη. ὀπός ἐστι νάρθηκος ἐν Συρίᾳ γεννωμένου. ἣν ἔνιοι
μετώπιον καλοῦσιν. ἔστι δὲ αὐτῆς ἀρίστη λιβανοειδής. χον-
δρώδης. καθαρά. λιπαρά. ἄξυλος ἔχουσα δέ τι τοῦ σπέρμα-
τος καὶ τοῦ νάρθηκος μιγνυμένου. ὀσμὴ βαρεῖα. οὔτ' ἄγαν
ὑγρὰ, οὔτε πάλιν κατάξηρος. δολοῦσι δὲ αὐτὴν μιγνύντες
ῥητίνην. καὶ ἐρεγμὸν καὶ ἀμμωνιακόν. Δύναμιν δ' ἔχει θερμαν-
τικὴν. πυρωτικὴν. ἐπισπαστικήν. διαφορητικήν. προστιθεμέ-
νη δὲ καὶ ὑποθυμιωμένη, ἔμμηνα καὶ ἔμβρυα ἄγει. φα-
κούς τε αἴρει μετ' ὄξους καὶ νίτρου ἐπιπλασθεῖσα. καταπί-
νεται δὲ πρὸς παλαιὰν βῆχα. δύσπνοιαν. ἄσθματα. ῥήγ-
ματα. σπάσματα. ἀντιπάσχει δὲ καὶ τοξικῷ σὺν ὄξει καὶ

σμύρνῃ

σμύρνη ποθεῖσα. ἐκβάλλει καὶ τεθνηκότα ἔμβρυα ὁμοίως λη
φθεῖσα. ἐπιτίθεται δὲ καὶ πρὸς ὀδύνην πλευρᾶς. καὶ πρὸς
δοθιῆνας. ἐπιληπτικούς τε καὶ ὑστερικὰς πνίγας καὶ σκο
τωματικοὺς ὀσφραινομένη διεγείρει. θηρία τε θυμιωμένη
διώκει. τούς τε συγχριομένους ἀδήκτους τηρεῖ ζώων. σφον/
δύλῳ δὲ καὶ ἐλαίῳ περιτεθεῖσα, ἑρπετὰ κτείνει. ὀδόν-
τας τε πόνον περιπλασθεῖσα ἢ ἀντεντεθεῖσα εἰς τὸ βρῶμα,
παύει. δοκεῖ δὲ καὶ δυσουροῦσι ποιεῖν. λύεται δὲ καὶ εἰς μὲν
τὰ ποτήματα, πικροῖς ἀμυγδάλοις καὶ ὕδατι ἢ πηγάνῳ ἢ
μελικράτῳ ἢ ἄρτῳ θερμῷ. ἄλλως δὲ μηκωνείῳ ἢ χαλκῷ κε
καυμένῳ. ἢ χολῇ ὑγρᾷ. καθαίρειν δὲ αὐτὴν βουλόμενος, καθ
θεὶς εἰς ζεστὸν ὕδωρ τακείσης γὰρ αὐτῆς, ἐπιπλεύσει τὸ ῥυ
παρόν. ὅπερ χωρίσεις οὕτως. εἰς ὀθόνιον καθαρὸν ἀραιὸν
ἐνδήσας ἀποκρέμασον εἰς χαλκῆν πυξίδα ἢ ὀστράκινον ἀγ/
γεῖον. ὡς μὴ ἅπτεσθαι τοῦ πυθμένος τοῦ ἀγγείου τὸν ἔνδεσμον.
καὶ πωμάσας, εἰς ἀναβραστὸν ὕδωρ καθὲς. οὕτω γὰρ τὸ μὲν
νόσιμον ἀποκατατακήσεται ὡς διηθμοῦ. τὸ δὲ ξυλῶδες ἐν
τῷ ὀθονίῳ μένει.

Περὶ Ἀμμωνιακοῦ. Κεφ. φλ΄.

Ἀμμωνιακόν. καὶ τοῦτο ὀπός ἐστι νάρθηκος, γινομένου ἐν τῇ
κατὰ κυρήνην λιβύῃ. καλεῖται δὲ αὐτοῦ ὅλος ὁ θάμνος σὺν
τῇ ῥίζῃ, ἀγασυλλίς. ἐγκριτέον δὲ αὐτοῦ τὸ εὔχρουν καὶ ἄξυ
λον καὶ ἄλιθες. λιβανωτίζον τοῖς χόνδροις. καθαρὸν καὶ πυ
κνόν. μηδεμίαν ἔχον ῥυπαρίαν. καστορίζον τῇ ὀσμῇ. πικρὸν δὲ
τῇ γεύσει. καλεῖται δὲ τὸ τοιοῦτον, θραῦσμα. τὸ δὲ γεῶδες καὶ
λιθῶδες, φύραμα. γίνεται δὲ ἐν λιβύῃ κατὰ ἄμμωνα. χυ
λὸς ὢν δένδρου ναρθηκώδους. Δύναμιν δὲ ἔχει μαλα/
κτικήν. ἐπισπαστικήν. θερμαντικήν. διαφορητικὴν σκληρω
μάτων τε καὶ φυμάτων. κοιλίαν τε ὑπάγει ποθέν. καὶ ἔμ-
βρυα κατασπᾷ. σπλῆνα τήκει μετ' ὄξους < α΄ ποθέν. καὶ
ἄρθρων καὶ ἰσχίων ἀλγήματα παραιτεῖται. βοηθεῖ δὲ καὶ
ἀσθματικοῖς. ὀρθοπνοϊκοῖς. ἐπιληπτικοῖς. καὶ τοῖς ὑγρασίαν
ἐν θώρακι ἔχουσιν. ἐκλειχόμενον μετὰ μέλιτος. ἢ πτισάνης
ῥοφούμενον χυλῷ. ἄγει δὲ καὶ οὖρα αἱματώδη. σμήχει δὲ καὶ

τὰ ἐν ὀφθαλμοῖς λευκώματα. καὶ τραχύτητας βλεφάρων τήκει. λειωθὲν δὲ σὺν ὄξει καὶ ἐπιτεθὲν, παύει τὰς περὶ σπλῆνα καὶ ἧπαρ σκληρείας. λύει καὶ τοὺς περὶ τὰ ἄρθρα πόρους μετὰ μέλιτος καταπλασσόμενον. ἢ καὶ πίσση μιγέν. ποιεῖ καὶ πρὸς κόπους καὶ ἰσχιάδας συγχριόμενον. μιγὲν ὄξει καὶ νίτρῳ καὶ κυπρίνῳ ἐλαίῳ ἀντὶ ἀκόπου.

### Περὶ σαρκοκόλλας. Κεφ. φε'.

Ἡ δὲ σαρκοκόλλα, ἔστι δάκρυον δένδρου γεννώμενον ἐν περσίδι. ἐοικὸς λιβανωτῷ λεπτῷ. ὑπόκιρρον. ἔμπικρον τῇ γεύσει. Δύναμιν δὲ ἔχει κολλητικὴν τραυμάτων καὶ ἐφεκτικὴν τῶν ἐν ὀφθαλμοῖς ῥευμάτων. μίγνυται δὲ καὶ ἐμπλάστροις. δολοῦται δὲ κόμμεως αὐτῇ μιγνυμένου.

### Περὶ γλαυκίου. Κεφ. φϛ'.

Γλαύκιον. χυλός ἐστι βοτάνης κατὰ ἱεράπολιν τῆς συρίας γεννωμένης. ἔοικε δὲ αὐτῆς τὰ φύλλα τῆς κερατίτιδος μήκωνος. λιπαρώτερα δὲ καὶ χαμαίζηλα. καὶ βαρύοσμα καὶ πικρότερα ἐν τῇ γεύσει. χυλὸν δὲ ἔχει πολλῷ κροκίζοντα. ταύτης τὰ φύλλα βάλλοντες οἱ ἐπιχώριοι εἰς χύτραν, θερμαίνουσιν ἐν κλιβάνοις ἡμιψυγέσιν ἄχρι μαρασμοῦ. εἶτα ἐκκόψαντες ἐκθλίβουσι τὸν χυλόν. ἔστι δὲ ἡ χρῆσις αὐτοῦ πρὸς τὰ ὀφθαλμικὰ, ἐν ἀρχῇ ψυκτικοῦ ὄντος.

### Περὶ κόλλης. Κεφ. φζ'.

Κόλλα ἣν ἔνιοι ξυλοκόλλαν καλοῦσιν ἢ ταυροκόλλαν, καλλίστη ἐστὶν ἡ ῥοδιακή. ἐκ τῶν βοείων βυρσῶν σκευαζομένη. ἔστι δὲ λευκὴ καὶ διαυγὴς ἡ τοιαύτη. ἡ δὲ μέλαινα ἥττων. Δύναμιν δὲ ἔχει λυθεῖσα ὄξει, λειχῆνας καὶ λέπρας τὰς ἐπιπολαίους ἀφιστάνειν. πυρίκαυτά τε οὐκ ἐᾷ φλυκταινοῦσθαι μεθ' ὕδατος θερμοῦ ἐνεθεῖσα καὶ καταχριομένη. ἔστι δὲ καὶ τραυματικὴ. διεθεῖσα μέλιτι καὶ ὄξει.

### Περὶ ἰχθυοκόλλης. Κεφ. φη'.

Ἡ δὲ ἰχθυόκολλα λεγομένη, κοιλία ἐστὶν ἰχθύος κητώδου. διαφέ-

ρει δὲ ἡ ἐν πόντῳ γεννωμένη οὖσα λευκή. ὑπόπαχυς. τὸ ψωρώδης. τάχιστα τηκομένη. ὠφελεῖ δὲ εἰς τὰς κεφαλικὰς ἐμπλάστρους καὶ λεπρικὰς δυνάμεις. καὶ εἰς τετάνωθρα τῶν προσώπων.

Περὶ Ἰξοῦ. Κεφ. φθ΄.

Ἰξὸς καλός ἐστιν ὁ νέος καὶ πρασίζων τῷ χρώματι κατὰ τὰ ἐντός. ἐκτὸς δὲ ὑπόξανθος. μηδὲν ἔχων τραχὺ ἢ πιτυρῶδες. γίνεται δὲ ἔκ τινος καρποῦ πολυφόρου γεννωμένου ἐν δρυῒ τῇ ἐχούσῃ τὰ φύλλα ὅμοια πύξῳ. κόπτεται δὲ ὁ καρπός. εἶτα πλύνεται. εἶτα ἐν ὕδατι ἕψεται. ἔνιοι δὲ μασσώμενοι αὐτὸν ἐργάζονται. γίνεται δὲ καὶ ἐκ μηλέας καὶ ἀπίου καὶ ἐξ ἄλλων δένδρων. εὑρίσκεται δὲ καὶ πρὸς ῥίζαις θάμνων τινῶν. Δύναται δὲ διαφορεῖν. μαλάσσειν. ἐπισπᾶσθαι. συμπέττειν φύματα. παρωτίδας. καὶ τὰς ἄλλας ἀποστάσεις. μιγεὶς ῥητίνῃ καὶ κηρῷ ἴσῳ. ἐπινυκτίδας τε ἐν σπληνίῳ ἰᾶται. σὺν λιβανωτῷ δὲ ἕλκη παλαιὰ καὶ κακοήθεις ἀποστάσεις μαλάσσει. καὶ σπλῆνας τήκει σὺν ἀσβέστῳ ἢ γαγάτῃ λίθῳ ἢ ἀσίῳ ἑψηθεὶς καὶ ἐπιτεθείς. ἕλκει δὲ καὶ ὄνυχας σὺν ἀρσενικῷ ἢ σανδαράχῃ ἐπιπλασθείς. μιγεὶς δὲ ἀσβέστῳ καὶ τρυγὶ, ἐπιτείνει τὴν δύναμιν αὐτοῦ.

Περὶ Ἀπαρίνης. Κεφ. φι΄.

Ἀπαρίνη. οἱ δὲ, ἀμπελόκαρπον. οἱ δὲ, ὀμφαλόκαρπον. οἱ δὲ, φιλάνθρωπον καλοῦσιν. οἱ δὲ, ἰξόν. κλῶνας ἔχει πολλοί. μικροί. τετράγωνοι. τραχεῖς. φύλλα δὲ ἐκ διαστήματος κυκλοτερῶς περικείμενα ὡς περὶ τὰ τοῦ ἐρυθροδανοῦ. ἄνθη λευκά. σπέρμα σκληρόν. λευκόν. στρογγύλον. ὑπόκοιλον ἐκ μέσου ὡς ὀμφαλός. προσέρχεται δὲ καὶ ἱματίοις ἡ πόα. χρῶνται δὲ αὐτῇ καὶ οἱ ποιμένες ἀντὶ ἠθμοῦ ἐπὶ τοῦ γάλακτος, πρὸς ἔκληψιν τῶν ἐν αὐτῷ τριχῶν. Ταύτης τὸ σπέρμα καὶ οἱ καυλοὶ καὶ τὰ φύλλα χυλισθέντα, φαλαγγιοδήκτοις καὶ ἐχιοδήκτοις βοηθεῖ πινόμενον μετὰ οἴνου. καὶ ὠταλγίας ἰᾶται ὁ χυλὸς ἐγχυματιζόμενος. ἡ δὲ πόα ἀναληφθεῖσα ὀξυγγίῳ λείῳ, διαφορεῖ χοιράδας.

Περὶ Ἀλύσσου. Κεφ. φια΄.

Ἄλυσσον. φρυγάνιόν ἐστιν ὑπότραχυ, φύλλα ἔχον στρογγύλα. παρ' οἷς ὁ καρπὸς ὡς ἀσπιδίσκια διάδιπλα. ἐν οἷς τὸ σπέρμα ὑπόπλατυ. φύεται ἐν ὀρεινοῖς καὶ τραχέσι τόποις. ταύτης τὸ ἀφέψημα ποθὲν, λυγμοὺς τοὺς δίχα πυρετοῦ λύει. καὶ κρατηθὲν δὲ ἢ ὀσφρανθὲν, τὸ αὐτὸ δρᾷ. σὺν μέλιτι δὲ λεῖον. φακοὺς καὶ ἔφηλιν ἀποκαθαίρει. δοκεῖ δὲ καὶ λύσσαν κυνὸς ἰᾶσθαι. συγκοπὲν ἐδέσματι καὶ δοθέν. καὶ κρεμάμενον δὲ ἐν οἰκίᾳ, ὑγιεινὸν λέγεται εἶναι καὶ ἀνθρώποις καὶ ζώοις ἀβάσκαντον. περιαφθὲν δὲ φοινικῷ ῥάκει, θρεμμάτων νόσους ἀπελαύνει.

Περὶ Ἀσκληπιάδος. Κεφ. φιβ'.

Ἀσκληπιάς. κλωνία ἀνίησι μακρά. ἐφ' ὧν φύλλα μακρὰ κισσῷ ὅμοια. ῥίζας πολλὰς καὶ λεπτὰς εὐώδεις. ἄνθος βαρύοσμον. σπέρμα δὲ ὡς πελεκίνου. φύεται ἐν ὄρεσι. βοηθοῦσι δὲ αἱ ῥίζαι ἐν οἴνῳ πινόμεναι, στροφουμένοις καὶ θηριοδήκτοις. καὶ τὰ φύλλα καταπλαττόμενα, ἁρμόζει πρὸς τὰς ἐν μαστοῖς καὶ μήτρας κακοηθείας.

Περὶ Ἀτρακτυλίδος. Κεφ. φιγ'.

Ἀτρακτυλίς. ἄκανθά ἐστιν ἐοικυῖα κνίκῳ, μακρότερα δὲ πολλῷ φύλλα ἔχουσα ἐπ' ἄκρου τῶν ῥαβδίων. τὸ δὲ πλεῖον γυμνὸν τραχύ. ᾧ καὶ αἱ γυναῖκες χρῶνται ἀντὶ ἀτράκτου. ἔχει δὲ καὶ κεφάλια ἐπ' ἄκρου ἀκανθώδη. ἄνθος ὠχρόν. ῥίζα δὲ λεπτὴ ἄχρηστος. ταύτης τὰ φύλλα καὶ ἡ κόμη καὶ ὁ καρπὸς λεῖα ποθέντα σὺν πεπέρει καὶ οἴνῳ, σκορπιοπλήκτους ὠφελεῖ. ἔνιοι δ' ἱστοροῦσι τοὺς πληγέντας, ἄχρι περ ἂν κρατῶσι τὴν πόαν ἀνωδύνους εἶναι. ἀποθεμένους δὲ ἀλγεῖν.

Περὶ Πολυκνήμου. Κεφ. φιδ'.

Πολύκνημον. θάμνος ἐστὶ φρυγανώδης. ἔχων φύλλα ὀριγάνῳ ἐμφερῆ. τὸν δὲ καυλὸν πολυγόνατον ὥσπερ γλήχωνος. οὐκ ἔχει μέντοι τὸ σκιάδιον. μικρὰ δ' ἐπ' ἄκρῳ κορύμβια μετ' εὐωδίας τινὸς δριμείας. ποιεῖ δὲ καταπλασσόμενον χλωρὸν ἢ ξηρὸν μεθ' ὕδατος, πρὸς τραύματα κολλῶσα. δεῖ δὲ πεμπταῖον λύειν. πίνεται καὶ πρὸς στραγγουρίαν καὶ ῥήγματα

σὺν οἴνῳ. ἐδίδαξεν ἡ πεῖρα, ὡς ἀποτειτουμένων τῶν κλω-
ναρίων αὐτοῦ οἴνῳ λευκῷ, τοὺς ἐχομένους τοῖς λεγομένοις,
βιασμοῖς μέγα βοήθημα.

Περὶ κλινοποδίου. Κεφ. φιε.

Κ λινοπόδιον. θαμνίον ἐστὶ καὶ τοῦτο φρυγανῶδες διπίθαμον.
φυόμενον ἐν πέτραις. ἔχον φύλλα ἑρπύλλῳ παραπλήσια. καὶ
τὰ ἄνθη ὅμοια ὡς κλίνης ποσίν. ἐκ διαστήματος ἐμφερῆ πρα-
σίῳ. Γίνεται δὲ ἡ πόα καὶ τὸ ἀφέψημα αὐτῆς, πρὸς θηρίων
δήγματα καὶ σπάσματα, καὶ ῥήγματα καὶ στραγγουρίαν.
ἄγει καὶ ἔμμηνα. καὶ ἔμβρυα καὶ ἀκροχορδόνας ἀποβάλ-
λει ἐφ᾽ ἱκανὰς ἡμέρας πινόμενον. κοιλίαν τε ἵστησιν ἐπὶ φί-
τον ἑψόμενον καὶ πινόμενον. ἀπυρέτοις ἐν οἴνῳ, πυρέττουσι δὲ
δι᾽ ὕδατος.

Περὶ λεοντοπετάλου. Κεφ. φις.

Λ εοντοπέταλον. καυλὸν ἀνίησι σπιθαμιαῖον ἢ καὶ μείζονα. ἔ-
χοντα μασχάλας πλείστας. ἐφ᾽ ὧν ἄκρων λοβοὶ ὅμοιοι ἐρε-
βίνθοις. ἐν δὲ τούτοις δύο ἢ τρία σπερμάτια. ἄνθη φοινικᾶ.
ἐοικότα ἀνεμώνῃ. φύλλα δὲ ὅμοια κράμβῃ. ἐντετμημένα ὡς
τὰ τῆς μήκωνος. ῥίζα μέλαινα ὡς γογγύλη. ἐξοχὰς ἔ-
χουσα καθάπερ κονδύλους τινάς. φύεται δ᾽ ἐν ἀρούραις
καὶ ἐν τῷ σίτῳ. ταύτης ἡ ῥίζα σὺν οἴνῳ πινομένη, βοηθεῖ ἑρ-
πετοδήκτοις. ταχέως ἀπόνους ποιοῦσα. μίσγεται δὲ καὶ εἰς
τοὺς ἰσχιαδικοὺς κλυσμούς.

Περὶ τευκρίου. Κεφ. φιζ.

Τ εύκριον. οἱ δὲ καὶ τοῦτο χαμαίδρυν καλοῦσιν. πόα ῥαβδοει-
δὴς ἐοικυῖα χαμαίδρυϊ. λεπτόφυλλος. ἔχουσα ἐρεβίνθῳ πέ-
ταλον ὅμοιον. φύεται δὲ πλεῖστον ἐν κιλικίᾳ τῇ κατὰ γεν-
τιάδα καὶ κηπίδα καλουμένῃ. Δύναμιν δὲ ἔχει χλωρὰ μετ᾽
ὀξυκράτου ποθεῖσα ἢ ξηρὰ ἀποζεσθεῖσα καὶ πινομένη, σπλῆ-
να τήκειν ἰσχυρῶς. καταπλάσσεται δὲ μετὰ σύκων καὶ ὄξους
ἐπὶ σπληνικῶν. ἐπὶ θηριοδήκτων δὲ μετ᾽ ὄξους μόνου χω-
ρὶς σύκων.

Περὶ χαμαίδρυος. Κεφ. φιη.

Χ αμαίδρυος. οἱ δὲ χαμαίδρωψ. ἢ λίνοδρυς. διὰ δὲ τὸ σώζειν
τινὰ ἐμφέρειαν τῷ τευκρίῳ, καὶ ταύτην τινὲς τεύκριον ἐκά-

λεσαν. φύεται ἐν τραχέσι καὶ πετρώδεσι τόποις. ἔστι δὲ θαμνίσκος σπιθαμιαῖος. φύλλα ἔχων μικρὰ τῷ σχήματι καὶ τῇ σχίσει δρυῒ ὅμοια. πικρά. ἄνθος ὑπόπορφυρον μικρόν. συλλέγειν δὲ αὐτὴν δεῖ ἐγκύμονα τοῦ καρποῦ. Δύναμιν δὲ ἔχει χλωρὰ ἀφεψηθεῖσα σὺν ὕδατι καὶ ποτιζομένη, βοηθεῖν σπάσμασι. βηχί. σπλῆνι ἐσκιρρωμένῳ. δυσουροῦσιν. ὑδρωπικοῖς ἐν ἀρχαῖς. ἄγει καὶ ἔμμηνα καὶ ἔμβρυα. σπλῆνα τήκει σὺν ὄξει ποθεῖσα. πρὸς δὲ τὰ θηρία σὺν οἴνῳ πινομένη. καὶ καταπλασσομένη ποιεῖ. λεία δὲ δύναται καὶ εἰς καταπότια ἀναπλάσσεσθαι πρὸς τὰ εἰρημένα. καὶ ἀνακαθαίρειν ἕλκη παλαιὰ σὺν μέλιτι. αἴρει δὲ ἀχλῦς τὰς ἐν ὀφθαλμοῖς σὺν ἐλαίῳ λεία ἐγχριομένη καὶ ἀλειφομένη. ἔστι δὲ θερμαντική.

Περὶ λευκάδος. ΚΕΦ. ΦΙΘ΄.

Λευκὰς ὀρεινή. πλατυφυλλοτέρα τῆς ἡμέρου ἐστί. δριμύτερόν τε καὶ πικρότερον ἔχουσα τὸν καρπὸν καὶ ἀστομώτερον. δραστικωτέρα μέντοι τυγχάνει τῆς ἡμέρου. ἐπιπλασσόμεναι δὲ ἀμφότεραι καὶ πινόμεναι, ἁρμόζουσι μετ' οἴνου ἐπὶ τῶν ἰοβόλων, καὶ μάλιστα τῶν θαλασσίων.

Περὶ λυχνίδος στεφανωματικῆς. ΚΕΦ. ΦΚ΄.

Λυχνὶς στεφανωματική. ἄνθος ἐστὶν ὅμοιον λευκοΐῳ ἐμπόρφυρον δὲ πλεκόμενον εἰς τὰ στεφάνια. εἰς τὸ σπέρμα βοηθεῖ σὺν οἴνῳ ποθὲν σκορπιοπλήκτοις.

Περὶ λυχνίδος ἀγρίας. ΚΕΦ. ΦΚΑ΄.

Λυχνὶς ἀγρία ὁμοία τῇ ἡμέρῳ κατὰ πάντα. τὸ δὲ σπέρμα αὐτῆς, < β΄. πλῆθος ποθὲν ἄγει κατὰ κοιλίαν χολώδη. καὶ σκορπιοπλήκτοις ἁρμόζει. φασὶ δὲ καὶ τοὺς σκορπίους ναρκώδεις καὶ ἀπράκτους γίνεσθαι παρατεθείσης αὐτοῖς τῆς πόας.

Περὶ κρίνου. ΚΕΦ. ΦΚΒ΄.

Κρίνον βασιλικόν. τούτου τὸ ἄνθος στεφανωματικόν ἐστι. καλούμενον ὑπ' ἐνίων λείριον ἀφ' οὗ καὶ τὸ χρίσμα κατασκευάζεται ὅ τινες λείρινον. οἱ δὲ σούσινον καλοῦσι μαλακτικὸν ὂν τῶν νεύρων,

καὶ ἰδίως τῶν περὶ μήτραν σκληριῶν. τῆς δὲ πόας τὰ φύλλα κατα-
πλασσόμενα, ἑρπετοδήκτοις βοηθεῖ, ποιεῖ δὲ καὶ πρὸς τὰ καύ-
ματα ζεσθέντα. ταριχευθέντα δὲ ἐν ὄξει τραυματικὰ γίνεται.
ὁ δὲ χυλὸς αὐτῶν μιγεὶς ὄξει ἢ μέλιτι, ἑψηθείς τε ἐν χαλκώμα-
τι ὑγρῶν γίνεται φάρμακον πρὸς τὰ παλαιὰ ἕλκη, καὶ
πρόσφατα τραύματα. ἡ δὲ ῥίζα ὀπτὴ λεία σὺν ῥοδίνῳ, πυρί-
καυτα ἰᾶται. καὶ ὑστέραν μαλάσσει καὶ ἔμμηνα ἄγει καὶ ἕλ-
κη ἐπουλοῖ. σὺν μέλιτι δὲ λεανθεῖσα, νεύρων διακοπὰς καὶ
στρέμματα ἰᾶται. ἀλφούς τε ἀποκαθαίρει καὶ λέπρας,
καὶ πίτυρα. καὶ ἀχῶρα σμήχει, τά τε πρόσωπα καθαίρει
καὶ ἀρρυτίδωτα ποιεῖ. σὺν ὄξει δὲ λεία ἢ σὺν ὑοσκυάμου φύλ-
λοις, καὶ ἀλεύρῳ πυρίνῳ, ὀρχέων φλεγμονὰς παραιρεῖται. τὸ
δὲ σπέρμα ἑρπετῶν δήγμασιν ἀντιφάρμακον ποθέν. ἐρυσι-
πελάτων δὲ κατάπλασμα σὺν οἴνῳ λεανθέντα. ὅ, τε σπέρ-
μα καὶ τὰ φύλλα. Φασὶ δὲ τινὲς καὶ πορφυρᾶ ἄνθη κεί-
νου γίνεσθαι. ἐναργέστατα δὲ γεννᾶται ἐν τῇ συρίᾳ καὶ πι-
σιδίᾳ, τῆς παμφυλίας πρὸς τὴν τοῦ χρίσματος κατασκευήν.

## Περὶ βαλλωτῆς. Κεφ. φκγ΄.

Βαλλωτή. ἣν μέγα πράσιον καλοῦσιν καυλοὺς ἀνίησι τετραγώνους μέ-
λανας. ὑποδασεῖς. ἐκ μιᾶς ῥίζης πλείονας. φύλλα δὲ πρα-
σίῳ ὅμοια μείζονα δὲ καὶ στρογγυλότερα καὶ δασέα ἐκ διαστη-
μάτων τοῦ καυλοῦ παραπλήσια μελισσοφύλλου. δυσώδη.
ὅθεν καὶ τινὲς μελισσόφυλλον ἐκάλεσαν. καὶ τὰ ἄνθη δὲ ἅμα
περίκειται λευκοῖς τοῖς καυλοῖς. τροχοειδῶς. ταύτης τὰ φύλ-
λα καταπλασσόμενα μετὰ ἁλῶν, ποιεῖ πρὸς τὰ κυνόδηκτα.
μαρανθέντα δὲ ἐν θερμοσποδιᾷ, κονδυλώματα στέλλει. ῥυ-
παρά τε ἕλκη σὺν μέλιτι ἀποκαθαίρει.

## Περὶ μελισσοφύλλου. Κεφ. φκδ΄.

Μελισσόφυλλον. ἔνιοι μελίτταιναν καλοῦσι. διὰ τὸ ἥδεσθαι
τῇ πόᾳ τὰς μελίττας. ἔοικε δὲ αὐτῆς τὰ φύλλα καὶ τὰ
καυλία, τῇ προειρημένῃ βαλλωτῇ. μείζονα δὲ ταῦτα καὶ λε-
πτότερα. οὐχ οὕτω δασέα. ὄζοντα δὲ κιτρομήλη. Ἁρμό-
ζει δὲ τὰ φύλλα ποτιζόμενα σὺν οἴνῳ, καὶ καταπλασσόμε-

να πρὸς σκορπιοπλήκτους. καὶ φαλαγγιοδήκτους. καὶ κυ-
νοδήκτους. καὶ τὸ ἀφέψημα δὲ αὐτῶν καταντλούμενον
πρὸς τὰ αὐτὰ ποιεῖ. εἴς τε ἐγκαθίσματα, πρὸς ἐμμηνίων,
ἀγωγὴν εὐθετεῖ. ὀδονταλγίαις τε διάκλυσμα. ἔγκλυσμά τε
δυσεντερικοῖς. βοηθεῖ καὶ τοῖς ὑπὸ μυκήτων πνιγομένοις
σὺν νίτρῳ τὰ φύλλα πινόμενα. καὶ στροφουμένοις. καὶ ἐκλεί-
χον ὀρθοπνοϊκοῖς. καταπλασσόμενα δὲ σὺν ἁλσὶ, διαφορεῖ
χοιράδας. καὶ ἕλκη ἀνακαθαίρει. τά τε ἐπὶ τῶν ἀρθριτι-
κῶν ἀλγήματα παραιτεῖται καταπλασθέντα.

Περὶ Πρασίου. Κεφ. φκέ.

Π ράσιον. θάμνος ἐστὶν ἀπὸ μιᾶς ῥίζης πολύκλαδος. ὑπόδασυς.
λευκός. τετραγώνος τοῖς ῥάβδοις. φύλλον δὲ τῷ μεγάλῳ δα-
κτύλῳ ἴσον. ὑποστρόγγυλον. δασύ. ἐρυσὸν. πικρὸν τῇ
γεύσει. ἐκ διαστημάτων δὲ ἐπὶ τῶν καυλῶν τὸ σπέρμα. καὶ
ἄνθη οἱονεὶ σπόνδυλοι τραχέα, φύεται περὶ τὰ οἰκόπεδα,
καὶ ἐρείπια. Τούτου τὰ φύλλα ξηρὰ σὺν τῷ σπέρματι ἑ-
ψόμενα σὺν ὕδατι ἢ χυλιζόμενα χλωρὰ, δίδοται μετὰ μέλι-
τος, φθισικοῖς ἀσθματικοῖς, βήσσουσιν. ἀνάγει καὶ πάχος ἐκ
θώρακος ἴρεως ξηρᾶς μιγείσης. δίδοται καὶ ταῖς μὴ κα-
θαιρομέναις γυναιξὶ πρὸς ἀναγωγὴν ἐμμηνίων καὶ δευτέ-
ρων. καὶ δυστοκούσαις. καὶ θηριοδήκτοις. καὶ τοῖς θανάσιμον
πεπωκόσι. κύστει μέντοι καὶ νεφροῖς ἄθετοι. τὰ δὲ φύλλα κα-
ταπλασσόμενα σὺν μέλιτι, ῥυπαρὰ ἕλκη ἀνακαθαίρει. πτε-
ρύγιά τε καὶ νομὰς ἀφίστησι. καὶ ὀδύνας πλευρῶν παραι-
τεῖται. καὶ τὸ ἐξ αὐτοῦ δὲ σκευαζόμενον χύλισμα ἐκ θλιβομένων
τῶν φύλλων. καὶ συστρεφόμενον ἐν ἡλίῳ πρὸς τὰ αὐτὰ ποιεῖ.
ἔστι δὲ καὶ ὀξυδερκὲς σὺν οἴνῳ καὶ μέλιτι ἐγχριόμενον. ἀποκα-
θαίρει δὲ καὶ ἴκτερον διὰ τῶν ῥινῶν. ὠταλγίαις τε ἁρμό-
ζει ἐγχυματιζόμενον καθ᾽ ἑαυτὸ καὶ μετὰ ῥοδίνου.

Περὶ Στάχυος. Κεφ. φκϛ.

Σ τάχυς. θάμνος ἐμφερὴς πρασίῳ. ὑπομηκέστερος δὲ καὶ πλεῖ-
στα φύλλα ἀραιὰ ἔχων ὑποδάσεα. σκληρά. εὐώδη. λευκά.
ῥαβδία δὲ πλείονα ἀπὸ τῆς αὐτῆς ῥίζης. λευκότερα τῶν τοῦ

πρασίου. φύεται ἐν ὀρεινοῖς καὶ τραχέσι χωρίοις. Δύναμιν δὲ ἔχει θερμαντικὴν, δριμεῖαν. ὅθεν τὸ ἀπόζεμα τῶν φύλλων ἔμμηνα καὶ δεύτερα ἄγει πινόμενον.

Περὶ φυλλίτιδος. Κεφ. φκζ΄.

Φυλλίτις. φύλλα ἀνίησιν ὅμοια λαπάθῳ. ἐπιμηκέστερα δὲ καὶ εὐθαλέστερα ϛ΄. ἢ ζ΄. ὀρθὰ λεῖα ἐκ τῶν ἔμπροσθεν. ἐκ τῶν ὄπισθεν δὲ καθάπερ σκώληκας ἔχοντα. ἀπηρτημένους. λεπτούς. φύεται ἐν παλισκίοις καὶ παραδείσοις. γευσαμένῳ στρυφνή. οὔτε δὲ καυλὸν οὔτε καρπὸν οὔτε ἄνθος φέρει. Ταύτης τὰ φύλλα μετ᾽ οἴνου πινόμενα, πρὸς ἑρπετοδήκτους ποιεῖ. ἔτι τετραπόδων τε διὰ στόματος ἐγχυματισθεῖσα βοηθεῖ. πίνεται καὶ πρὸς δυσεντερίαν καὶ διάῤῥοιαν.

Περὶ φαλαγγίου. Κεφ. φκη΄.

Φαλάγγιον. οἱ δὲ φαλαγγίτιον. οἱ δὲ καὶ ταύτην λευκάκανθαν καλοῦσι. κλῶνές εἰσι δύο ἢ τρεῖς ἢ πλείονες, διεστῶτες ἀπ᾽ ἀλλήλων. ἄνθη λευκά. παραπλήσια κρίνῳ. ἐντομὰς πολλὰς ἔχοντα. σπέρμα δὲ παχὺ μέλαν, ὥσπερ φακοῦ ἥμισυ. ἰσχνότερον μέντοι πολλῷ. ῥίζιον μικρόν. λεπτόν. χλωρὸν ἅμα τῷ ἑλκυσθῆναι ἐκ τῆς γῆς. ὕστερον δὲ συνέλκεται. φύεται δὲ ἐν γεωλόφοις. Ταύτης τὰ φύλλα καὶ τὸ σπέρμα καὶ τὸ ἄνθος πινόμενον μετ᾽ οἴνου, σκορπιοπλήκτοις βοηθεῖ. καὶ φαλαγγιοδήκτοις. λύει δὲ καὶ στρόφους.

Περὶ τριφύλλου. Κεφ. φκθ΄.

Τρίφυλλον οἱ δὲ ὀξύφυλλον. οἱ δὲ μινυανθές. οἱ δὲ ἀσφάλτιον. οἱ δὲ κνίκιον καλοῦσι. θάμνος ἐστὶ πήχεως μείζων. ῥάβδους ἔχων λεπτὰς μελαίνας. σχινώδεις. παραφυάδας ἐχούσας. ἐφ᾽ ὧν φύλλα ὅμοια λοτῷ τῷ δένδρῳ, τρία καθ᾽ ἑκάστην βλάστησιν. ὀσμὴ δὲ αὐτῶν ἄρτι μὲν φυομένων πηγάνου. αὐξηθέντων δὲ ἀσφάλτου. ἄνθος δὲ ἀνίησι πορφυροῦν. σπέρμα δὲ ὑπόπλατυ καὶ ὑπόδασυ. ἐκ τοῦ ἑτέρου πέρατος ὥσπερ κεραίαν ἔχων. ῥίζα δὲ λεπτή. μακρά. ἰσχυρά. Βοηθεῖ δὲ τὸ σπέρμα καὶ τὰ φύλλα πινόμενα ἐν ὕδατι πλευριτικοῖς.

δυσουροῦσιν. ἐπιληπτικοῖς. ἀρχομένοις ὑδρωπιᾶν. ὑστερικαῖς. ἄγει δὲ καὶ καταμήνια. δεῖ δὲ διδόναι τοῦ μὲν σπέρματος ∠ γ'. τῶν δὲ φύλλων ∠ δ'. ἀρήγει δὲ καὶ θηριοδήκτοις τὰ φύλλα λεῖα σὺν ὀξυμέλιτι πινόμενα. ἱστοροῦσι δὲ ἔνιοι ὅτι τὸ ἀφέψημα ὅλον τοῦ θάμνου καὶ τῆς ῥίζης καὶ τῶν φύλλων καταντλούμενον ἐπὶ τῶν ἑρπετοδήκτων παραιτεῖται τοὺς πόνους. ὡς δ' ἂν θεραπευθῇ τις ὕδατι, ἂν ἕτερος ἕλκος ἔχων καταντληθῇ, τὰ αὐτὰ πάσχει τοῖς δηχθεῖσι. ποτίζουσι δέ τινες ἐπὶ μὲν τριταίου τρία φύλλα ἢ τρία σπέρματα σὺν οἴνῳ. ἐπὶ δὲ τεταρταίου δ'. ὡς λύοντα τὰς περιόδους. μίγνυται δὲ αὐτῆς ἡ ῥίζα καὶ ἀντιδότοις.

### Περὶ πολίου ὀρεινοῦ. ΚΕΦ. ΦΛ'.

Πόλιον τὸ μὲν, ἔστιν ὀρεινόν. ὃ καὶ τεύθριον καλεῖται. οὗ καὶ ἡ χρῆσις. θαμνίον δὲ ἐστὶ λεπτόν. λευκόν. σπιθαμιαῖον. καρποῦ πλῆρες, ἔχον κεφάλιον ἐπ' ἄκρου κορυμβοειδὲς μικρὸν ὡς πολιαὶ τρίχα. βαρύοσμον μετὰ ποσῆς εὐωδίας. τὸ δὲ ἕτερον θαμνωδέστερον. οὐχ οὕτως εὔτονον τῇ ὀσμῇ. καὶ ἀσθενέστερον κατὰ τὴν δύναμιν. δύναται δὲ αὐτῶν τὸ ἀπόζεμα πινόμενον, θηριοδήκτοις ἀρήγειν ὑδρωπικοῖς. ἰκτεριώδεσι. σπληνικοῖς δὲ σὺν ὄξει. ἔστι δὲ καὶ κεφαλαλγὲς καὶ κακοστόμαχον. ἄγει δὲ καὶ κοιλίαν καὶ ἔμμηνα. ὑποστρωννύμενον δὲ καὶ θυμιώμενον, θηρία διώκει. καταπλασσόμενον δὲ τραύματα κολλᾷ.

### Περὶ σκορδίου. ΚΕΦ. ΦΛΑ'.

Σκόρδιον. φύεται ἐν ὀρεινοῖς τόποις καὶ ἑλώδεσι. φύλλα ἔχον ἐοικότα χαμαίδρυϊ. μείζονα δὲ καὶ οὐχ οὕτως ἐντετμημένα τὴν περιφέρειαν. ποσῶς δὲ τῇ ὀσμῇ σκορδίζοντα. στυπτικὰ δὲ καὶ ὑπόπικρα κατὰ τὴν γεῦσιν. καυλία δὲ τετράγωνα. ἀφ' ὧν ἄνθος ὑπέρυθρον. δύναμιν δὲ ἔχει ἡ πόα θερμαντικήν. διουρητικήν. ποτιζομένη χλωρὰ λεία. καὶ ξηρὰ ἀφεψομένη σὺν οἴνῳ πρὸς ἑρπετῶν δήγματα καὶ θανάσιμα. πρός τε δηγμὸν στομάχου καὶ δυσεντερίαν. καὶ δυσουρίαν. ∠ β'. σὺν ὑδρομέλιτι. καθαίρει καὶ πάχος πυῶδες ἐκ θώρακος. ποιεῖ καὶ πρὸς παλαιὰν βῆχα καὶ ῥήγματα, καὶ σπάσματα σὺν

καρδαμώμῳ καὶ μέλιτι καὶ ῥητίνῃ μιγεῖσα ξηρὰ ἐν ἐκλεικτῷ. καὶ ὑποχόνδριον χρονίως φλεγμαῖνον, ἀναληφθεῖσα κηρωτῇ παρηγορεῖ. ποιεῖ δὲ καὶ πρὸς ποδάγραν μετ' ὄξους δριμέος περιχριομένη. ἢ μεθ' ὕδατος καταπλασσομένη. προστεθεῖσα δὲ ἔμμηνα κινεῖ. καὶ θαύματα πολλά. ἕλκη παλαιὰ ἀνακαθαίρει. καὶ ἀπουλοῖ σὺν μέλιτι. ξηρὰ δὲ ὑπερσαρκώματα στέλλει. γίνεται δὲ καὶ τὸ ἐξ αὐτῆς χύλισμα πρὸς τὰ εἰρημένα πάθη. ἐναργέστατον δ' ἐστὶ τὸ ποντικὸν καὶ τὸ κρητικόν.

Περὶ βηχίου. Κεφ. ρλβʹ.

Βήχιον. φύλλα ἔχει ὅμοια κισσῷ. μείζονα δὲ ϛʹ ἢ ζʹ. ἀπὸ τῆς ῥίζης. ἐκ μὲν τῶν πρὸς τὰ ἄνω χλωρά. ἐκ δὲ τῶν πρὸς τὰ κάτω λευκά. γωνίας πλείους ἔχοντα. καυλὸν σπιθαμιαῖον. ἄνθος ὠχρὸν κατὰ τὸ ἔαρ. ὀξέως δὲ ἀποβάλλει τό, τε ἄνθος καὶ τὸν καυλόν. ὅθεν τινὲς ὑπέλαβον ἄκαυλον καὶ ἀνανθῆ ὑπάρχειν τὴν πόαν. ῥίζα λεπτή. ἄχρηστος. φύεται περὶ λιβάδας καὶ ἐνύδρους τόπους. Ταύτης τὰ φύλλα λεῖα σὺν μέλιτι καταπλασσόμενα, ἐρυσιπέλατα καὶ πᾶσαν φλεγμονὴν ἰᾶται. ὑποθυμιώμενα δὲ ξηρὰ εἰς ἀποκαπνισμόν, τοὺς ὑπὸ ξηρᾶς βηχὸς καὶ ὀρθοπνοίας ὀχλουμένους θεραπεύει. ὅταν χανόντες, τὸν καπνὸν τῷ στόματι δέξωνται. καὶ καταπίωσι. ῥήσσει δὲ καὶ τὰ ἐν θώρακι ἀποστήματα. τὸ δ' αὐτὸ ποιεῖ καὶ ἡ ῥίζα ὑποθυμιωμένη. ἔμβρυόν, τε τεθνηκὸς ἐκβάλλει ἐν ὑδρομέλιτι ἑφθὴ πινομένη.

Περὶ Ἀρτεμισίας πολυκλώνου. Κεφ. ρλγʹ.

Ἀρτεμισία φύεται ἐν παραθαλασσίοις τόποις ὡς τὸ πολύ. πόα θαμνοειδὴς παρόμοιος ἀψινθίῳ. μείζω δὲ καὶ λιπαρωτέρα τὰ φύλλα ἔχουσα καὶ ἡ μέν τις ἐστιν αὐτῆς εὐερνὴς πλατύτερα ἔχουσα τὰ φύλλα καὶ τὰς ῥάβδους. ἡ δέ, λεπτοτέρα. ἄνθη μικρὰ λεπτὰ λευκά. βαρύοσμος. θέρους δὲ ἀνθεῖ.

Ἔνιοι δὲ τὸ ἐν μεσογείοις λεπτόκαρφον βοτάνιον ἁπλοῦν τῷ καυλῷ, σφόδρα μικρόν, ἄνθους περίπλεων, κιῤῥοειδὲς τῇ χροιᾷ, λεπτόν, ὃ καλοῦσιν ἀρτεμισίαν μονόκλωνον. ἐστὶ δὲ εὐωδεστέρα τῆς πρὸ αὐτῆς. Ἀμφότεραι δὲ θερμαίνου-

σι καὶ λεπτύνουσιν. ἀποζεννύμεναι δὲ ἁρμόζουσιν εἰς γυναικεῖα ἐγκαθίσματα. πρὸς ἀπαγωγὴν ἐμμηνίων καὶ δευτέρων καὶ ἐμβρύων. μύσιν τε καὶ φλεγμονὴν τῆς ὑστέρας καὶ θρύπτειν λίθων. καὶ ἐποχὴν οὔρων. ἡ δὲ πόα κατὰ τοῦ ἤτρου καταπλασθεῖσα πολλὴ, ἔμμηνα κινεῖ. ὁ δὲ ἐξ αὐτῆς χυλὸς λεανθεὶς σμύρνῃ καὶ προστεθεὶς, ἄγει ἀπὸ μήτρας ὅσα καὶ τὸ ἐγκάθισμα. καὶ ποτίζεται δὲ ἡ κόμη πρὸς ἀπαγωγὴν τῶν αὐτῶν, πλῆθος < γ΄.

Περὶ Ἀρτεμισίας λεπτοφύλλου. Κεφ. φλδ΄. *

Ἀρτεμισία λεπτόφυλλος. ἥτις γεννᾶται περὶ ὀχετοὺς καὶ φραγμοὺς καὶ εἰς χώρας σπορίμους. τὸ ἄνθος οὖν αὐτῆς καὶ τὰ φύλλα τριβόμενα, ὀσμὴν ἀποδίδωσι σαμψύχου. εἰ οὖν τις πονεῖ τὸν στόμαχον, καὶ κόψει τὴν βοτάνην ταύτην μετὰ ἀμυγδαλίνου ἐλαίου καλῶς, καὶ ποιήσει ὡς μάλαγμα καὶ θήσει ἐπὶ τὸν στόμαχον, θεραπευθήσεται. εἰ δὲ καὶ τὰ νεῦρά τις πονεῖ, τὸν χυλὸν ταύτης μετὰ ῥοδίνου ἐλαίου μίξας χρίῃ, θεραπευθήσεται.

Περὶ Ἀμβροσίας. Κεφ. φλε΄.

Ἀμβροσία. οἱ δὲ βότρυς. οἱ δὲ βότρυς ἀρτεμισία. θαμνίσκος ἐστὶ τρισπίθαμος τὸ ὕψος. πολύκλαδος. φύλλα ἔχων περὶ τὴν ἐκβολὴν τοῦ καυλοῦ μικρὰ ὡς πηγάνου. τὰ δὲ καυλία περίπλεα σπερματίων. ἐοικότων βοτρυδίοις μηδέποτε ἀνθοῦσι. τῇ ὀσμῇ οἰνώδης ἡ λεία. ἡ δὲ ῥίζα λεπτή. δισπίθαμος. καταπλέκεται δὲ ἐν καππαδοκίᾳ τοῖς στεφάνοις. Δύναμιν δὲ ἔχει σταλτικὴν τῶν ἐπιφερομένων καὶ ἀποκρουστικήν. καταπλασσομένη στύφουσαν.

Περὶ βότρυος. Κεφ. φλς΄.

Βότρυς. πόα ἐστὶν ὅλη. μηλίνη. θαμνοειδής. διακεχυμένη. πολλὰς ἔχουσα μασχάλας. τὸ δὲ σπέρμα ὅλοις τοῖς κλωνίοις περιπέφυκε. φύλλα κιχωρίῳ ἐμφερῆ. καὶ τὸ σύμπαν εὐῶδες ἱκανῶς. διὸ καὶ ἱματίοις συντίθεται. φύεται δὲ μάλιστα περὶ χαράδρας καὶ χειμάῤῥους. Δύναμιν δὲ ἔχει σὺν οἴνῳ πινομένη ὀρθοπνοίας παρηγορεῖν. καὶ ταύτην ἀμβροσίαν καππαδόκαι καλοῦσι. τινὲς δὲ ἀρτεμισίαν.

### Περὶ γερανίου. κεφ. φλζ΄.

Γεράνιον. τὸ μὲν φύλλον ἔχει ὅμοιον ἀνεμώνῃ. ἐσχισμένον. μα-
κρότερον. ῥίζαν δὲ ὑποστρόγγυλον. γλυκεῖαν. ἐσθιομένην. ἥ-
τις ποθεῖσα ἐν οἴνῳ ἄχρι < πλῆθος, ὑστέρας ἐμπνευματώ-
σεις λύει. καλεῖται ὑπ' ἐνίων καὶ ἕτερον γεράνιον, ἔχον καυ-
λία λεπτὰ χνοώδη. διπίθαμα, φύλλα μαλάχῃ ἐμφερῆ. καὶ
ἐπ' ἄκρων τῶν μασχαλῶν ὑπεροχάς τινας ἀνανενευκυίας ὡς γε-
ράνων κεφαλὰς σὺν τοῖς ῥάμφεσιν. ἢ κυνῶν ὀδόντας. χρῆ-
σις δὲ αὐτοῦ ἐν ἰατρικῇ οὐδεμία.

### Περὶ γναφαλίου. κεφ. φλη΄.

Γναφάλιον. τούτου τοῖς φύλλοις τινὲς ἀντὶ γναφάλου χρῶν-
ται λευκοῖς οὖσι καὶ μαλακοῖς. ποιεῖ δὲ σὺν οἴνῳ αὐστηρῷ πο-
τιζόμενα τὰ φύλλα πρὸς δυσεντερίαν.

### Περὶ τύφης. κεφ. φλθ΄.

Τύφη. φύλλον ἀνίησι κυπέρῳ ὅμοιον. καυλὸν, λεῖον. ὁμαλόν.
ἐπ' ἄκρῳ περικείμενον ἄνθος πυκνὸν καὶ ἐκ πατούμενον. ὃ
καλοῦσιν ἔνιοι ἀνθήλην. ταύτης τὸ ἄνθος ἀναληφθὲν στέα-
τι παλαιῷ ὑείῳ πεπλυμένῳ, κατακαύματα θεραπεύει. φύε-
ται δὲ ἐν ἕλεσι καὶ ὑδροστασίμοις τόποις.

### Περὶ κιρκαίας. κεφ. φμ΄.

Κιρκαία. οἱ δὲ διρκαίαν καλοῦσι. τὰ μὲν φύλλα ἔχει στρύχνῳ
ὅμοια κηπαίῳ. παραφυάδας δὲ πολλάς. ἄνθη μέλανα μι-
κρά. πολλά. καρπὸν δὲ κεγχροειδῆ ἔν τισιν οἱονεὶ κερατίοις.
ῥίζας σπιθαμιαίας γ΄ ἢ δ΄. λευκάς. εὐώδεις. θερμαντικάς.
μάλιστα δὲ ἔν τισι πετρώδεσι φύεται τόποις καὶ εὐπνόοις εὐη-
λίοις. ταύτης ἡ ῥίζα ὅσον μνᾶς δ΄. θλασθεῖσα καὶ βραχεῖσα
ἡμέραν καὶ νύκτα ἐν οἴνου γλυκέως κοτύλαις ς΄. καὶ ποθεῖ-
σα ἡμέρας γ΄, ὑστέραν ἀποκαθαίρει. ὁ δὲ καρπὸς γάλα κα-
τασπᾷ ἐν ῥοφήμασι λαμβανόμενος.

### Περὶ οἰνάνθης. κεφ. φμα΄.

Οἰνάνθη. τὰ μὲν φύλλα ἔχει ὡς περ σταφυλῖνος. ἄνθη δὲ λευ-

κή. καὶ καυλὸν παχύν. σπιθαμιαῖον. καρπὸν δὲ ὥσπερ ἀζαφάξιος. ῥίζαν μεγάλην κεφαλὰς ἔχουσαν πλείονας. στρογγύλας. φύεται ἐν πέτραις. ταύτης ὁ καρπὸς καὶ ὁ καυλὸς καὶ τὰ φύλλα, ποτίζεται πρὸς δευτέρων ἐκβολὴν σὺν οἰνομέλιτι. ἡ δὲ ῥίζα σὺν οἴνῳ πρὸς στραγγουρίας ἁρμόζει.

## Περὶ κονύζης. Κεφ. φμβ΄.

Κόνυζα. ἡ μέν τις μικρὰ καλεῖται. εὐωδεστέρα οὖσα. ἡ δὲ μείζων. ὑπερέχουσα τῷ θάμνῳ καὶ τοῖς φύλλοις, πλατυτέρα καὶ βαρύοσμος. ἀμφότεραι δὲ προσεοίκασι τοῖς φύλλοις ἐλαίᾳ. ἔστι δὲ δασέα ταῦτα καὶ λιπαρά. ὕψος δὲ τοῦ καυλοῦ ἡ μὲν μείζων, δύο πηχέων ἔχει ἡ δὲ ἐλάττων ποδός. ἄνθος ψαφαρόν. μήλινον. ὑπόπικρον. ἐκπαππούμενον. ῥίζαι δὲ ἄχρηστοι. Δύναται δὲ ὁ θάμνος ὑποστρωννύμενος σὺν τοῖς φύλλοις καὶ θυμιώμενος, θηρία διώκειν. καὶ κώνωπας ἀπελαύνειν. κτείνει δὲ καὶ ψύλλας. καταπλάσσεται δὲ τὰ φύλλα ὠφελίμως ἐπὶ ἑρπετοδήκτων καὶ φυμάτων. καὶ τραυμάτων. καὶ πίνεται σὺν οἴνῳ τὸ ἄνθος καὶ τὰ φύλλα πρὸς καταμηνίων ἀγωγὴν καὶ ἐμβρύων ἐκβολήν. καὶ στραγγουρίαν. καὶ στρόφους καὶ ἴκτερον. μετ᾽ ὄξους δὲ ἐπιληπτικοὺς πινόμενα ὠφελεῖ. καὶ τὸ ἀφέψημα δὲ αὐτῶν ἐν καθίσματι, τὰ ἐν μήτρᾳ θεραπεύει. ὁ δὲ χυλὸς προστεθεὶς ἐκτρωσμοὺς ποιεῖ. ποιεῖ δὲ καὶ πρὸς ῥίγη συγχριομένη ἡ πόα μετ᾽ ἐλαίου. ἡ δὲ λεπτὴ καὶ κεφαλαλγίας καταπλασσομένη ἰᾶται. Γίνεται καὶ τρίτον εἶδος κονύζης. ἔστι δὲ καυλῷ παχυτέρα καὶ μαλακωτέρα. τοῖς δὲ φύλλοις μείζων τῆς λεπτῆς. ἐλάσσων δὲ τῆς μείζονος. οὐ λιπαρά. βαρυοσμοτέρα δὲ πολλῷ καὶ ἀηδεστέρα καὶ ἀπρακτοτέρα. φύεται δὲ ἐν ἐφύδροις.

## Περὶ ἡμεροκαλλίδος. Κεφ. φμγ΄.

Ἡμεροκαλλίς. φύλλα ἔχει καὶ καυλὸν ὅμοια κρίνῳ. χλωρὰ δὲ ὥσπερ πράσα. ἄνθη δὲ ἐν αὐτῷ καθ᾽ ἑκάστην ἀποφυσὶν γ΄. ἢ δ΄. τὴν σχίσιν τῷ κρίνῳ ἐοικότα ὅταν ἄρξηται χαίνειν. τὴν δὲ χρόαν ἰσχυρῶς ὠχρά. ῥίζαν ὁμοίαν βολβῷ εὐμεγέθει. ἥτις λεία ποθεῖσα καὶ σὺν μέλιτι ἐν ἐρίῳ προστεθεῖσα πυοὺς ὕδωρ

ὑδατώδης καὶ αἱματώδης. τὰ δὲ φύλλα λεῖα καταπλασσόμενα φλεγμονὰς μαστῶν τὰς ἐκ τοκετῶν καὶ ὀφθαλμῶν πραΰνει. καὶ καταπλάσσεται δὲ ἡ ῥίζα καὶ τὰ φύλλα ὠφελίμως ἐπὶ τῶν πυρικαύτων.

Περὶ λευκοΐου. Κεφ. φμδ΄.

Λευκόϊον. γνώριμόν ἐστιν. ἔστι δὲ αὐτῆς διαφορὰ ἐν τῷ ἄνθει. ἢ γὰρ λευκόν ἐστιν ἢ μήλινον ἢ κυανοῦν ἢ πορφυροῦν εὑρίσκεται.

Ἔστι δὲ αὐτῶν εὔχρηστον πρὸς τὴν ἰατρικὴν χρῆσιν τὸ μήλινον. οὗ τὰ ἄνθη ξηρὰ ἀφεψηθέντα εἰς ἐγκαθίσματα ποιεῖ πρὸς τὰς περὶ ὑστέραν φλεγμονὰς καὶ ἀγωγὰς ἐμμηνίων. ἀναληφθέντα δὲ κηρωτῇ ῥαγάδας τὰς ἐν δακτύλῳ θεραπεύει. σὺν δὲ μέλιτι ἄφθας. ὁ δὲ καρπὸς αὐτοῦ σὺν οἴνῳ ποθεὶς δραχμῶν δυοῖν πλῆθος, ἢ προστεθεὶς σὺν μέλιτι, ἔμμηνα καὶ δεύτερα καὶ ἔμβρυα ἄγει. οἱ δὲ ῥίζαι καταπλασθεῖσαι σὺν ὄξει, στέλλουσι σπλῆνα. καὶ ποδαγρικοὺς ὠφελοῦσι.

Περὶ κραταιογόνου. Κεφ. φμε΄.

Κραταιόγονον. οἱ δὲ κραταιόνον. φύλλα ἔχει ὅμοια τοῖς τοῦ μελαμπύρου. πλείους δὲ ἀπὸ μιᾶς ῥίζης φύονται βλαστοὶ γονατώδεις. καρπὸν δὲ ὅμοιον κέγχρῳ. φύεται ἐν συσκίοις καὶ φρυγανώδεσιν ὡς ἐπὶ τὸ πολὺ τόποις. ἰσχυρῶς δὲ δριμύ. ἱστορεῖται δὲ ὑπό τινων ἡ πόσις τοῦ καρποῦ γυναῖκα ἀρρενοτόκον ποιεῖν. ἐάν τις μετὰ τὴν κάθαρσιν τῶν καταμηνίων πρὸ τοῦ πλησιάσαι πίνῃ νῆστις τρεῖς τῆς ἡμέρας, ὁλκὴν τριωβόλου μετὰ ὕδατος κυάθων β΄. ἐπὶ ἡμέρας μ΄. ὡσαύτως δὲ καὶ ὁ ἀνὴρ πινέτω τὰς ἴσας ἡμέρας καὶ πλησιαζέτω.

Περὶ φύλλου. Κεφ. φμϛ΄.

Φύλλον. οἱ δὲ ἐλαιόφυλλον. οἱ δὲ βρυονίαν καλοῦσι. φύεται ἐν πέτραις. τὸ μὲν θηλυγόνον λεγόμενον, ὡς περεὶ βρύον. ἔχον χλωρότερον ἐλαίας τὸ φύλλον. καυλὸν, λεπτόν. βραχύν. ῥίζαν, λεπτήν, ἄνθος λευκόν. καρπὸν, μείζονα ὥσπερ μήκωνος. τὸ δὲ ἀρρενογόνον, τὰ μὲν ἄλλα ὅμοιον τῷ προειρημένῳ. καρπῷ δὲ διαφέρει. ἔχει γὰρ ὅμοιον ἄνθει ἐξηνθηκυίας ἐλαίας βοτρυώδη. λέγεται δὲ τὸ ἀρρενογόνον ποθὲν, ἀρρενοτοκεῖν,

τὸ δὲ θηλυγόνον θηλυτοκεῖν. ἱστορεῖ περὶ τούτων Κρατεύας. ἐμοὶ δὲ δοκεῖ τὰ τοιαῦτα μέχρι τῆς περὶ αὐτῶν ἱστορίας προάγειν.

Περὶ ὄρχεως. Κεφ. φμζʹ.

Ὄρχις. οἱ δὲ κυνὸς ὄρχιν καλοῦσι. φύλλα ἔχει κατὰ γῆς ἐστρωμένα περὶ τὸν καυλὸν καὶ τὸν πυθμένα. ἐλαίᾳ μαλακῇ ὅμοια. στενώτερα δὲ καὶ λεῖα μακρότερα. καυλὸν σπιθαμῆς τὸ μῆκος. ἐφ' οὗ ἄνθη πορφυροειδῆ. ῥίζαν βολβοειδῆ. ὑπομήκη. διπλῆν στενὴν ὡς ἐλαίας, τὴν μὲν ἄνω, τὴν δὲ κατωτέρω. καὶ τὴν μὲν, πλήρη. τὴν δὲ μαλακὴν καὶ ῥυσσήν. ἐσθίεται δὲ ἡ ῥίζα ὡς βολβὸς ἑψηθεῖσα. καὶ περὶ ταύτης δὲ ἱστορεῖται, τὴν μὲν μείζονα ῥίζαν ὑπὸ ἀνδρῶν ἐσθιομένην, ἀρρενογόνον εἶναι. τὴν δὲ ἐλάττονα ὑπὸ γυναικῶν, θηλυγόνον. προσιστορεῖται δὲ ὅτι καὶ τὰς ἐν Θετταλίᾳ γυναῖκας, τὸν μὲν ἁπαλὸν μετὰ αἰγείου γάλακτος ποτίζειν. ὡς παρεισᾶν τὰ ἀφροδίσια. τὸν δὲ ξηρὸν πρὸς ἐπίσχωσιν καὶ ἔκλυσιν τῶν ἀφροδισίων. ἀναλύεσθαί τε τὸν ἕτερον ὑπὸ τοῦ ἑτέρου πινόμενον. φύεται δὲ ἐν λιθώδεσι καὶ ἀμμώδεσι τόποις.

Περὶ ὄρχεως ἑτέρου. Κεφ. φμηʹ.

Ὄρχις ἕτερος. ὃν σεραπιάδα ἕτεροι καλοῦσιν. ὡς καὶ ἀνδρέας διὰ τὸ πολύχρηστον τῆς ῥίζης. φύλλα ἔχει ἐοικότα πρασίῳ ἐπιμήκη. πλατύτερα δὲ καὶ λιπαρά. ἐπικαμπῆ ἐν ταῖς μασχάλαις. καυλία σπιθαμιαῖα. ἄνθη δὲ ὑπόπορφυρα. ῥίζα δὲ ὕπεστιν ὀρχιδίοις ὁμοία. Ἥτις δύναμιν ἔχει καταπλαττομένη, οἰδημάτων σκεδαστικήν. καὶ ἑλκῶν ἀνακαθαρτικήν. καὶ ἕρπητος ἐφεκτικήν. ἀνασκευάζει δὲ καὶ σύριγγας. καὶ τὰ φλεγμαίνοντα παρηγορεῖ καταπλασσομένη. ξηρὰ δὲ νομὰς ἵστησι. καὶ τὰ ἐν σηπεδόνι καὶ στόματι κακοήθη ἰᾶται. ἵστησι δὲ καὶ κοιλίαν σὺν οἴνῳ ποθεῖσα. ἱστορεῖται δὲ καὶ περὶ ταύτης, ὅσα, καὶ περὶ τοῦ κυνὸς ὄρχεως.

Περὶ Σατυρείου. Κεφ. φμθʹ.

Σατύρειον. οἱ δὲ τρίφυλλον καλοῦσιν. ἐπειδὴ ὡς ἐπὶ τὴν γῆν φύλλα τρία φέρει κεκλασμένα. λαπάθῳ ἢ κρίνῳ ὅμοια ἐ-

λάττονα

λάττονα μέντοι καὶ ἐνερευθῆ. καυλὸν δὲ ψιλόν. μακρόν. ὡς
πήχεως. ἄνθος κρινοειδές. λευκόν. ῥίζαν βολβοειδῆ ὅσον
μῆλον. πυῤῥάν. τὰ δὲ ἐντὸς λευκὴν ὥσπερ ὠόν. γευομένῳ
γλυκεῖαν καὶ εὔστομον. ταύτην δεῖ πίνειν ἐν οἴνῳ μέλανι αὐ
στηρῷ πρὸς ὀπισθότονον. φασὶ γὰρ αὐτὴν καὶ ὁρμὴν κινεῖν
τὴν ἐπὶ συνουσίᾳ.

### Περὶ σατυρίου ἐρυθρονίου. Κεφ. φν.

Σατύριον τὸ ἐρυθρόνιον. οἱ δὲ σατύριον ἐρυθραϊκόν. ἔχει σπέρμα
λινοσπέρμῳ ἐμφερές. μεῖζον δὲ καὶ ῥωμαλέον. καὶ στίλβον,
καὶ λεῖον ὅπερ ἱστορεῖται καὶ αὐτὸ συνουσίας ἐγείρειν ὥσ
περ καὶ ὁ σκίγγος. ἔστι δὲ τῆς ῥίζης αὐτοῦ, ὁ μὲν φλοιὸς ὑπο
χνος καὶ πυῤῥός. τὸ δὲ ἔνδοθεν λευκόν. γευομένῳ εὔστομον.
καὶ γλυκύ. φύεται ἐν εὐηλίοις καὶ ὀρεινοῖς τόποις. ἱστορεῖ-
ται δὲ ὅτι καὶ εἰς τὴν χεῖρα ληφθεῖσα ἡ ῥίζα ἐρεθίζει πρὸς
ἀφροδίσια. σὺν οἴνῳ δὲ ποθεῖσα μᾶλλον.

### Περὶ ὁρμίνου ἡμέρου. Κεφ. φνα.

Ὅρμινον ἥμερον. πόα ἐστὶν ἐμφερὴς πρασίῳ τοῖς φύλλοις. καυ
λὸς δὲ τετράγωνος ἡμιπηχυαῖος. περὶ ὃν ἐξοχαὶ ὅμοιαι λο
βοῖς ὡς ἐπὶ τὴν ῥίζαν νενευκυῖαι. ἐν αἷς σπέρμα διάφορον.
ἐπὶ μὲν τοῦ ἀγρίου στρογγύλον εὑρίσκεται φαιόν ἐπὶ δὲ
τοῦ ἑτέρου ἐπίμηκες καὶ μέλαν, οὗ περ καὶ ἡ χρῆσις. δοκεῖ
δὲ καὶ τοῦτο σὺν οἴνῳ πινόμενον, συνουσίαν παρορμᾶν. ἀπο-
καθαίρει δὲ σὺν μέλιτι ἄργεμα. λευκώματα. καταπλασθὲν
δὲ μεθ᾽ ὕδατος καὶ οἰδήματα διαφορεῖ. καὶ σκόλοπας ἐπι-
σπᾶται. καὶ ἡ πόα δὲ καταπλασθεῖσα, τὰ αὐτὰ ποιεῖ. τὸ
δὲ ἄγριον ἰσχυρότερον ἔχει τὴν δύναμιν. ὅθεν μίγνυται καὶ
συγχρίσμασι. μάλιστα δὲ τῷ γλευκίνῳ.

### Περὶ ἡδυσάρου. Κεφ. φνβ.

Ἡδύσαρον τὸ ὑπὸ τῶν μυρεψῶν καλούμενον πελεκῖνος. θά-
μνος ἐστὶ φυλλάρια ἔχων ἐρεβίνθῳ ὅμοια. λοβοὺς δὲ κερα-
τίοις ἐοικότας. ἐν οἷς τὸ σπέρμα πυῤῥόν. ὅμοιον πελέκει ἀμφι
στόμῳ. ὅθεν καὶ ὀνόμασται. πικρὸν γευσαμένῳ. εὐστόμαχον πο-

θέν. μίγνυται δὲ καὶ ἀντιδότοις. σὺν μέλιτι δὲ προστεθὲν πρὸ τῆς μίξεως, ἀτόκιον εἶναι δοκεῖ. φύεται δὲ ἐν κριθαῖς καὶ πυροῖς.

Περὶ ὀνόσματος. κεφ. φνγ΄.

Ὄνοσμα. οἱ δὲ ὀσμάδιον. οἱ δὲ φλονῖτιν. οἱ δὲ ὄνονιν καλοῦσι. τὰ μὲν φύλλα ἔχει ὅμοια τοῖς τῆς ἀγχούσης. προμήκη. μαλακά. ὡς τετραδάκτυλα τὸ μῆκος. τὸ δὲ πλάτος δακτύλου. ἐπὶ γῆς κατεστρωμένα. ἐμφερέστατα τοῖς τῆς ἀγχούσης. ἔστι δὲ ἄκαυλος. ἄκαρπος. ἀνανθής. ῥιζίον δὲ ὕπεστιν ὑπόμηκες. ἀσθενές. λεπτόν. ἐνερευθὲς ἡ συχνή. φύεται δὲ ἐν τραχέσι τόποις. Τούτου τὰ φύλλα ἐν οἴνῳ ποθέντα, ἔμβρυα ἄγει. φασὶ δὲ ὅτι καὶ ἔγκυος ὑπερβῇ τὴν πόαν ἐκτιτρώσκει.

Περὶ νυμφαίας. κεφ. φνδ΄.

Νυμφαία. φύεται ἐν ἕλεσι καὶ ὕδασι στασίμοις. φύλλα δὲ ἔχει ὅμοια κιβωρείῳ σμικρότερα ἢ καὶ ἐπιμηκέστερα. πισῶς ὑπερέχοντα τοῦ ὕδατος. τὰ δὲ καὶ ἐν αὐτῷ τῷ ὕδατι πλείονα ἐκ τῆς αὐτῆς ῥίζης. ἄνθος δὲ λευκόν. ὅμοιον κρίνῳ. ἔχον κροκῶδες τὸ μέσον. ὅταν δὲ ἀπανθήσῃ, στρογγύλον. μήλῳ παραπλήσιον τῇ περιφερείᾳ γίνεται, ἢ μήκωνος κεφαλῇ. μέλαν. ἐν ᾧ ὁ καρπὸς μέλας. πλατύς. πυκνός. γευομένῳ γλίσχρος. ὁ δὲ καυλὸς λεῖος. οὐ παχύς. μέλας. ὅμοιος τῷ τοῦ κιβωρείου. ῥίζα μέλαινα τραχεῖα. ῥοπαλοειδής. ἥτις τέμνεται φθινοπώρῳ. Ξηρὰ οὖν σὺν οἴνῳ ποθεῖσα, κοιλιακοὺς ὠφελεῖ. δυσεντερικούς. καὶ σπλῆνα τήκει. καταπλάσσεται δὲ πρὸς στομάχου καὶ κύστεως ἀλγήματα ἡ ῥίζα καὶ ἀλφοὺς σμήχει σὺν ὕδατι. ἀλωπεκίας τε σὺν πίσσῃ ἐπιτεθεῖσα ἰᾶται. πίνεται δὲ ἡ ῥίζα καὶ πρὸς ὀνειρωγμούς. παραιτεῖται γὰρ τούτους. ἀτονίαν τε ἐργάζεται αἰδοίου πρὸς ὀλίγας ἡμέρας. ἐάν τις ἐνδελεχῶς πίνοι. τὸ αὐτὸ δὲ ποιεῖ καὶ τὸ σπέρμα ποθέν. δοκεῖ δὲ ὀνομάσθαι νυμφαία, διὰ τὸ ἔνυδρον φιλεῖν τόπον. εὑρίσκεται δὲ πολλὴ ἐν ἤλιδι ἐπὶ τοῦ ἀνήγρου ποταμοῦ. καὶ τῆς βοιωτίας ἐν ἁλιάρτῳ.

Περὶ νυμφαίας ἄλλης. κεφ. φνε΄.

Γίνεται καὶ ἄλλη νυμφαία ἧς τὸ ἄνθος βλέφαρα λέγεται φύλλα ἔχουσα ὅμοια τῇ προειρημένῃ. ῥίζαν μέν τοι λευκὴν καὶ τραχεῖαν ἔχει. ἄνθος μήλινον. στίλβον. ὅμοιον ῥόδῳ. ποιεῖ δὲ ἡ ῥίζα καὶ τὸ σπέρμα πρὸς ῥοῦν γυναικεῖον ἐν οἴνῳ μέλανι πινόμενον. φύεται τοῖς περὶ θαλασσίαν τόποις κατὰ τὸν πηνειὸν ποταμόν.

Περὶ Ἀνδροσάκους. Κεφ. φνϛʹ.

Ἀνδρόσακες. γίνεται μὲν ἐν συρίᾳ ἐν παραθαλασσίοις τόποις. πόα δέ ἐστι λεπτή. λεπτόκαρφος. πικρά. ἄφυλλος. θυλάκιον ἐπὶ τῆς κεφαλῆς ἔχουσα περιεκτικὸν σπέρματος. Δύναμιν δὲ ἔχει ποθεῖσα σὺν οἴνῳ < βʹ. πλῆθος, οὖρα πολλὰ ἐπὶ ὑδρωπικῶν ἄγειν. καὶ τὸ ἀφέψημα δὲ τῆς πόας καὶ ὁ καρπὸς πινόμενος, τὸ αὐτὸ ποιεῖ. καταπλάσσεται δὲ καὶ ἐπὶ ποδαλγικῶν ὠφελίμως.

Περὶ Ἀσπληνίου. Κεφ. φνζʹ.

Ἄσπληνον. οἱ δὲ σκολοπένδριον, οἱ δὲ, σπλήνιον. οἱ δὲ ἡμιόνιον. οἱ δὲ πτέρυξ. φύλλα ἔχει σκολοπένδρα τῷ θηρίῳ ὅμοια. πλείονα ἀπὸ μιᾶς ῥίζης περιεχόμενα. φύεται ἐν τοίχοις καὶ πέτραις ταῖς ἀπὸ κοχλάκων παλισκίοις. ἄκαυλα. ἀνανθῆ. ἄκαρπα. ἐντετμημένα ὡς τὰ τοῦ πολυποδίου. κάτωθεν ὑπόξανθα. καὶ δασέα. ἄνωθεν δὲ χλωρά. Δύναμιν δὲ ἔχει τὰ φύλλα ἀποζεσθέντα σὺν ὄξει καὶ πινόμενα ἐπὶ ἡμέρας μ. σπλῆνα τήκειν. δεῖ δὲ καταπλάσσειν καὶ τὸν σπλῆνα τοῖς φύλλοις λείοις σὺν οἴνῳ. βοηθεῖ καὶ στραγγουρίᾳ καὶ λυγμῷ. καὶ ἰκτέρῳ. καὶ λίθους τοὺς ἐν κύστει θρύπτει. δοκεῖ δὲ ἀτόκιος εἶναι καθ᾽ ἑαυτήν. καὶ μετὰ ἡμιόνου σπληνὸς περιαπτομένη. ἀσελίνου δὲ νυκτός φασι δεῖν αὐτὴν ὀρύσσειν εἰς ἀτόκιον.

Περὶ Ἡμιονίτιδος Κεφ. φνηʹ.

Ἡμιονῖτις. οἱ δὲ σπλήνιον. φύλλον ἀνίησιν ὅμοιον δρακοντείῳ. μηνοειδές. ῥίζαι δὲ ὕπεισι πολλαί. λεπταί. οὔτε δὲ καυλὸν, οὔτε καρπὸν, οὔτε ἄνθος φέρει. φύεται ἐν πετρώδεσι τόποις γευσαμένῳ δὲ ἡ πόα στυπτική. ἥτις σὺν ὄξει ποθεῖσα, τήκει σπλῆνα.

Περὶ Ἀνθυλλίδος. Κεφ. φνθʹ.

Ἀθυλλίς. ἡ μὲν γὰρ φακῷ παραπλήσια φύλλα ἔχει καὶ κλω-
νία. σπιθαμῆς ὕψος. ὀρθὰ δὲ καὶ τὰ φύλλα μαλακά. ῥίζα δὲ
λεπτή. μικρά. φύεται ἐν ὑφαλμύροις τόποις καὶ εὐηλίοις.
γινομένῳ ὕφαλμος. Ἡ δ᾽ ἑτέρα χαμαιπίτυϊ τὰ φύλ-
λα καὶ τὰ κλωνία ἔοικε. δασυτέρα μέντοι καὶ βραχυτέ-
ρα. καὶ τραχυτέρα. τὸ δ᾽ ἄνθος πορφυροῦν βαρύοσμον ἰ-
σχυρῶς. ῥίζα ὥσπερ κιχωρείου. Δύναται ὁ ἰσχυρῶς δυσου-
ροῦσι καὶ νεφριτικοῖς πινομένη βοηθεῖν. πλῆθος < δ᾽. ἐκ
μαλάσσουσι δὲ φλέγματα ἐν ὑστέρᾳ λεῖαι. σὺν ῥοδίνῳ καὶ
γάλακτι προστιθέμεναι. ἰῶνται δὲ καὶ τραύματα. ἡ δὲ τῇ
χαμαιπίτυι ὁμοία μετὰ τῶν ἄλλων καὶ ἐπιληπτικοὺς ἰᾶται
σὺν ὀξυμέλιτι πινομένη.

Περὶ ἀνθέμιδος. κεφ. φξ΄.

Ἀνθεμίς. οἱ δὲ λευκάνθεμον. οἱ δὲ ἠράνθεμον. διὰ τὸ ἀνθεῖν
ἐπὶ ἔαρος. οἱ δὲ χαμαίμηλον. διὰ τὴν πρὸς τὰ μῆλα ὁμοιό-
τητα τῆς ὀσμῆς. οἱ δὲ μελάνθεμον. οἱ δὲ χρυσοκόμην. οἱ δὲ καλ-
λίαν καλοῦσι. ταύτης εἴδη τρία ἄνθεσι μόνον διαφέροντα.
κλῶνες σπιθαμιαῖοι θαμνοειδεῖς. μασχάλας ἔχοντες πολλάς.
κλωνάρια μικρὰ λεπτὰ πολλά. κεφάλια περιφερῆ. ἔνδο-
θεν μὲν χρυσίζοντα ἄνθη. ἔξωθεν δὲ περίκειται κυκλοτε-
ρῶς λευκά, ἢ μήλινα ἢ πορφυρᾶ. κατὰ μέγεθος πηγάνου
φύλλων. φύεται ἐν τόποις τραχέσι καὶ παρὰ τὰς ὁδούς.
συλλέγεται δὲ ἔαρος. Δύναμιν δὲ ἔχουσιν αἱ ῥίζαι καὶ
τὰ ἄνθη καὶ ἡ βοτάνη θερμαντικήν. λεπτυντικήν. πινό-
μεναι δὲ καὶ ἐγκαθιζόμεναι, καταμήνια ἄγουσι καὶ ἔμβρυα.
καὶ λίθους. καὶ οὖρα. ποτίζεται δὲ καὶ πρὸς ἐμπνευματώ-
σεις καὶ εἰλεούς. καὶ ἴκτερον δὲ ἀποκαθαίρουσι καὶ ἡπα-
τικοὺς ἰῶνται. καὶ τὸ ἀφέψημα δὲ αὐτῶν εἰς πυρίας λαμ-
βάνεται ταῖς πρὸς κύστιν. πρακτικώτερον δὲ τοῖς λιθιῶσι τὸ
πορφυρανθὲς ὅ περ τοῖς ὅλοις ἐστὶ μεῖζον ἰδίως ἠράνθεμον κα-
λούμενον. τὸ δὲ λευκάνθεμον καλούμενον οὐρητικώτερον καὶ τὸ χρυ-
σάνθεμον. θεραπεύουσι δὲ καὶ αἰγίλωπα καταπλασσόμεναι. δια-
μασσώμεναι δὲ καὶ ἄφθας ἰῶνται. χρῶνται δέ τινες καὶ συγκλύ-
σματι μετ᾽ ἐλαίου. λειοτριβοῦντες αὐτὰ πρὸς ἀνασκευὴν
τῶν περιοδικῶν πυρετῶν. ἀποτίθεσθαι δὲ δεῖ τὰ φύλλα καὶ

τὰ ἄνθη ἕκαστον αὐτῶν κόπτοντας ἰδίᾳ καὶ ἀναλαμβάνον-
τας τροχίσκους. τὴν δὲ ῥίζαν ξηραίνοντας. χρείας δὲ ἐπιγενο-
μένης, διδόναι ὁ τὲ μὲν τῆς βοτάνης μέρη β΄. ὁ τὲ δὲ τοῦ ἄν-
θους ἢ τῆς ῥίζης μέρος ἕν. ὁ τὲ δὲ τοὐναντίον. τοῦ ἄνθους μὲν
β΄. τῆς δὲ βοτάνης ἕν. ἐναλλὰξ διπλασιάζοντας παρ' ἡμέ-
ραν. πίνειν δὲ δεῖ ἐν οἰνομέλιτι κεκραμένῳ.

### περὶ παρθενίου. κεφ. φξα΄.

Π αρθένιον. οἱ δὲ ἀμάρακον. οἱ δὲ λευκάνθεμον φύλλα ἔχει ὅμοια κο-
ρίῳ λεπτά. ἄνθη λευκὰ κύκλῳ. τὸ δὲ μέσον μήλινον. ὀσμῇ ὑπό-
βρωμον. τῇ δὲ γεύσει πικρίζον. δύναται δὲ ξηρὰ σὺν ὀξυμέλιτι
ἢ σὺν ἁλσὶ ποθεῖσα ὡς τὸ ἐπίθυμον, φλέγμα, καὶ χολὴν ἄ-
γειν κάτω. καὶ τοὺς ἀσθματικοὺς ὠφελεῖν καὶ μελαγχολι-
κούς. ἡ πόα δὲ χωρὶς τοῦ ἄνθους, ὠφελίμως ἐστὶ λιθιών-
των καὶ ἀσθματικῶν ποτίζεται. τὸ δὲ ἀφέψημα αὐτῆς ἐγκά-
θισμα ὑστέρας ἐσκληρυμμένης καὶ φλεγμαινούσης ἐστί. κα-
ταπλάττεται δὲ καὶ πρὸς ἐρυσιπέλατα καὶ φλεγμονὰς
σὺν τοῖς ἄνθεσιν.

### περὶ βουφθάλμου. κεφ. φξβ΄.

Β ούφθαλμον. οἱ δὲ κάχλαν. καλοῦσι καυλὸν ἀνίησι τρυφερὸν φύλ-
λα δὲ μαραθροειδῆ. ἄνθη μήλινα. μείζονα τοῦ ἀνθέμιδος. ὀφθαλ-
μοειδῆ. ὅθεν καὶ ὀνόμασται. φύεται δὲ ἐν πεδίοις. καὶ περὶ τὰς
πόλεις. Ταύτης τὰ ἄνθη λεῖα σὺν κηρωτῇ, οἰδήματα καὶ
σκληρίας διαφορεῖ. φασὶ δὲ ὅτι ἐν τῷ βαλανείῳ μετὰ τὸ ἐ-
ξελθεῖν πινόμενον, εὔχροιαν ποιεῖ πρὸς χρόνον τινὰ τοῖς ἰκ-
τερικοῖς.

### περὶ παιονίας. κεφ. φξγ΄.

Γ λυκυσίδην οἱ δὲ πεντόβορον οἱ δὲ ἰδαίους δακτύλους τὴν ῥίζαν δὲ
παιονίαν καλοῦσι. καυλὸς ὡς σπιθαμιαῖος. φύεται παραφυά-
δας ἔχων πολλάς. φύλλα δὲ ἡ μὲν ἄρρην βασιλικῇ καρύᾳ ὅμοια.
ἡ δὲ θήλεια ἀπέσχισται τὰ φύλλα ὥσπερ σμύρνιον. λοβοὺς δέ τι-
νας ἀνίησιν ἐπ' ἄκρου τοῦ καυλοῦ ἀμυγδάλοις ὁμοίους. ὧν
ἀνεῳχθέντων εὑρίσκονται ἐρυθροὶ κόκκοι πολλοὶ μικροί.
ἐμφερεῖς τοῖς τῆς ῥοιᾶς. ἐν μέσῳ δὲ μέλανες. ἐμπόρφυροι ε΄
ἢ ς΄. ῥίζα δὲ τῆς μὲν ἄρρενος, περὶ δακτύλου πάχος μῆκος δὲ σπι-

θαμνῆς· γινομένῳ στύφοντα. λευκή. ἔστι δὲ τῆς θηλείας παραφυάδας ὥσπερ βαλαίους ἔχουσα ζ'. ἢ η' ὥσπερ ἀσφόδελος. Δίδοται δὲ γυναιξὶν ἡ ῥίζα ταῖς ἐκ τόκου μὴ καθαιρομέναις. κινεῖ δὲ καὶ τὰ καταμήνια ἀμυγδάλου μέγεθος πινομένη. τοῖς τε κατὰ γαστέρα ὀδύναις βοηθεῖ ποθεῖσα ἐν οἴνῳ. ὠφελεῖ δὲ καὶ ἰκτερικούς. καὶ νεφριτικούς. καὶ κύστιν ἀλγοῦντας. ἑψηθεῖσα ἐν οἴνῳ καὶ πινομένη κοιλίαν ἵστησι. τοῦ δὲ καρποῦ ι' ἢ ιβ'. κόκκοι πυρροὶ ποθέντες ἐν οἴνῳ μέλανι αὐστηρῷ, ῥοῦν ἐρυθρὸν ἱστῶσι. στομαχικοῖς τε δακνομένοις ἐσθιόμενοι βοηθοῦσι. καὶ ἀπὸ τῶν παιδίων πινόμενοι, καὶ ἐσθιόμενοι ἀρχὰς λιθιάσεως παραιτοῦνται. οἱ δὲ μέλανες καὶ πρὸς τοὺς ἀπὸ ἐφιαλτῶν πνιγμοὺς καὶ πρὸς τὰς ὑστερικὰς πνίγας καὶ ὀδύνας μήτρας ἐν μελικράτῳ ἢ οἴνῳ, ὅσον ιε'. κόκκοι πινόμενοι, ποιοῦσι.

## Περὶ λιθοσπέρμου. Κεφ. φξδ'.

Λιθόσπερμον. οἱ δὲ αἰγώνυχον. οἱ δὲ ὀξώνυχον ἡ δὲ ἡράκλειαν, διὰ τὴν περὶ τὸ σπέρμα ἰσχύν. ὅθεν καὶ λιθόσπερμον ὠνόμασται. φύλλα ἔχει ὅμοια ἐλαίας μακρότερα δὲ καὶ πλατύτερα, καὶ μαλακώτερα, καὶ τὰ περὶ τὸν πυθμένα ἐπὶ γῆς κείμενα. κλωνία δὲ ὀρθά. λεπτά. πάχος ὀξυσχίνου. στερεά. ξυλώδη. ἔστι δὲ τῶν ἄκρων αὐτῶν δίχολος ἔκφυσις. καυλοειδής. ἔχουσα φύλλα μακρὰ παρ' οἷς σπέρμα λιθῶδες, στρογγύλον. μικρόν. ὀρόβῳ ἴσον. φύεται ἐν τραχέσι τόποις καὶ ὑψηλοῖς. Δύναμιν δὲ ἔχει τὸ σπέρμα μετ' οἴνου λευκοῦ πινόμενον, λίθους θρύπτειν καὶ οὖρα ἄγειν.

## Περὶ φαλαρίδος. Κεφ. φξε'.

Φάλαρις. καυλία ἀνίησιν ἐκ ῥιζῶν λεπτῶν καὶ ἀχρήστων πολλά. διπάλαιστα γονατώδη καλαμοειδῆ. ἐοικότα τοῖς τῆς ζέας. σπέρμα δὲ ἔπεστι μέγεθος κέγχρου λευκόν ὑπομῆκες. Δύναμιν δὲ ἔχει κοπτομένη ἡ πόα καὶ χυλιζομένη δι' ὕδατος ἢ οἴνου, πρὸς τὰ τῆς κύστεως ἀλγήματα ποιεῖν πινομένη. καὶ τοῦ σπέρματος δὲ μετὰ κοχλιαρίου ὕδατος πλῆθος πινομένου πρὸς τὰ αὐτὰ ποιεῖ.

## Περὶ ἐρυθροδάνου. Κεφ. φξς´.

Ἐρυθρόδανον. ἢ ἐρευθόδανον ἔνιοι δὲ τεύθριον καλοῦσι. ῥίζα δὲ ἐστὶν ἐρυθρὰ βαφική. ἡ μέν τις ἀγρία. ἡ δὲ σπαρτή. ὡς ἐν Θαβαίνῃ τῆς Γαλιλαίας. καὶ Ῥαβαίνῃ τῆς Ἰταλίας. καὶ ἐν Καρίᾳ μεταξὺ τῶν ἐλαιῶν σπειρόμενον ὥσπερ ἐν ταῖς ἀρούραις. ὠφελίμως σπείρεται. διὰ τὸ γίνεσθαι ἐκ τούτου πλείστην πρόσοδον. εἰσὶ δὲ αὐτοῦ οἱ καυλοὶ τετράγωνοι. μακροί. τραχεῖς. ὅμοιοι τοῖς τῆς ἀπαρίνης. κατὰ πάντα δὲ μείζονες καὶ ῥωμαλεώτεροι. ἔχοντες ἐκ διαστημάτων τὰ φύλλα καθ᾽ ἕκαστον γόνυ, ὥσπερ ἀστέρας εἰς κύκλον περικείμενα. καρπὸν στρογγύλον. τὰ πρῶτα χλωρόν. εἶτα πεπαινόμενον μέλανα. ῥίζα λεπτή. μακρά. ἐρυθρά. διουρητική. ὅθεν ἰκτερικοῖς μετὰ μελικράτου πινομένη βοηθεῖ. ἰσχιαδικοῖς τε καὶ παραλελυμένοις. ἄγει δὲ οὖρα πολλὰ καὶ παχέα. ἔσθ᾽ ὅτε δὲ καὶ αἷμα λούεσθαι μέντοι δεῖ καθ᾽ ἡμέραν τοὺς πίνοντας. θηριοδήκτοις τε βοηθεῖ ὁ καυλὸς μετὰ τῶν φύλλων ποθείς. ὁ δὲ καρπὸς μετ᾽ ὀξυμέλιτος πινόμενος. σπλῆνα τήκει. προστεθεῖσα δὲ ἡ ῥίζα, ἔμβρυα καὶ ἔμμηνα ἄγει καὶ δεύτερα. θεραπεύει δὲ καὶ ἀλφοὺς λευκοὺς μετ᾽ ὄξους καταπλασσομένη.

## Περὶ λογχίτιδος. Κεφ. φξζ´.

Λογχῖτις φύλλα ἔχει πράσῳ κάρτα ὅμοια. πλατύτερα δὲ καὶ ὑπέρυθρα πλεῖστα. πρὸς τὴν ῥίζαν περικλώμενα ὡς ἐπὶ τὴν γῆν. ἔχει δὲ καὶ περὶ τὸν καυλὸν ὀλίγα. ἐφ᾽ οὗ ἄνθη ὅμοια πιλίσκοις. τῷ τύπῳ δὲ κωμικοῖς προσωπείοις κεχηνόσι. μέλανα μέν. λευκὸν δέ τι ἐπ᾽ αὐτῶν ἐξέχει ἀπὸ τοῦ χάσματος πρὸς τὸ κάτω χεῖλος. ὥσπερ γλωσσάριον. τὸ σπέρμα δὲ ὅμοιον λόγχῃ. τρίγωνον ἐν περικαρπίοις. ὅθεν καὶ τῆς προσωνυμίας ἠξιώθη. ῥίζα δὲ ὁμοία δαύκῳ. φύεται ἐν τραχέσι καὶ ἀνίκμοις τόποις. ταύτης ἡ ῥίζα διουρητικὴ πινομένη σὺν οἴνῳ.

## Περὶ ἑτέρας λογχίτιδος. Κεφ. φξη´.

Λογχῖτις ἑτέρα. ἡ δὲ λογχῖτιν τραχεῖαν. φύλλα ἀνίησιν ὅμοια σκολοπενδρίῳ. τραχύτερα δὲ καὶ μείζονα. καὶ μᾶλλον ἐσχισμένα. δύναμιν δὲ ἔχει τραυματικήν. ἀφλέγμαντον τήκει δὲ

καὶ πλείω μετ᾽ ὄξους πινομένη.

### Περὶ ἀλθαίας. κεφ. φξθ΄.

Ἀλθαία. ἔνιοι δὲ ἰβίσκον καλοῦσι. μαλάχης ἐστὶν ἀγρίας εἶδος. φύλλα περιφερῆ ὡς τὸ κυκλάμινος. ἔγχνοα. ἔχει δὲ ἄνθος ῥοδοειδές. καυλὸν διπήχυν. ῥίζαν δὲ γλίσχρον. λευκὴν ἔνδοθεν. ὠνόμασται δὲ ἀλθαία διὰ τὸ πολυαλθὲς καὶ πολύχρηστον αὐτῆς. ἑψηθεῖσα γὰρ ἐν μελικράτῳ ἢ οἴνῳ καὶ καθ᾽ ἑαυτὴν ποθεῖσα ποιεῖ πρὸς τραύματα. παρωτίδας. χοιράδας. ἀποστήματα. μαστοὺς φλεγμαίνοντας. δακτυλίων θλάσματα. ἐμφυσήματα. συντάσεις νεύρων. διαφορεῖ γὰρ καὶ ἐκπέσσει. ἢ ῥήγνυσι καὶ ἐπουλεῖ. συμμαλαχθεῖσα δὲ ἑφθὴ ὡς εἴρηται στέατι ὑείῳ ἢ χηνείῳ ἢ τερεβινθίνῃ, πρὸς ὑστέρας φλεγμονὰς καὶ μύσεις ἐν προσθέματι ποιεῖ. καὶ τὸ ἀφέψημα δ᾽ αὐτῆς τὸ αὐτὸ ποιεῖ. ἄγον καὶ τὰ καλούμενα λόχια. τὸ δὲ τῆς ῥίζης ἀφέψημα σὺν οἴνῳ πινόμενον, ὠφελεῖ δυσουροῦντας. λιθιώντων ὠμότητας. δυσεντερικούς. ἰσχιαδικούς. τρομώδεις. ῥηγματίας. καὶ πόνους ὀδόντων πραΰνει σὺν ὄξει ἀφεψηθεῖσα καὶ διακλυζομένη. ὁ δὲ καρπὸς χλωρός τε καὶ ξηρὸς λεῖος καταχρισθεὶς σὺν ὄξει ἐν ἡλίῳ, σμηκτικός ἐστιν ἀλφῶν. μετ᾽ ὀξελαίου δὲ συγχριόμενος. προφυλακτικός ἐστιν ἰοβόλων. ποιεῖ δὲ καὶ πρὸς δυσεντερίας καὶ αἵματος ἀναγωγὴν καὶ διάρροιαν. τὸ δὲ ἀφέψημα τοῦ σπέρματος πινόμενον, καὶ πρὸς μελισσῶν καὶ τῶν λεπτῶν θηρίων πληγὰς πάντων, ἐν ὀξυκράτῳ ἢ οἴνῳ ποθέν. καὶ τὰ φύλλα δὲ μετ᾽ ὀλίγου ἐλαίου καταπλάσσεται ἐπὶ τῶν δηγμάτων καὶ ἐπὶ τῶν πυρικαύτων. πήγνυσι δὲ ἡ ῥίζα καὶ ὕδωρ μιγεῖσα λεία καὶ συνεξαιθριασθεῖσα.

### Περὶ ἀλκέας. κεφ. φο΄.

Ἀλκέα. καὶ αὕτη εἶδός ἐστιν ἀγρίας μαλάχης. ἔχουσα φύλλα ἐσχισμένα πρὸς τὰ τῆς ἱερᾶς βοτάνης. καυλοὺς γ΄. ἢ δ΄. φλοιὸν ἔχοντας καννάβει παραπλήσιον. ἄνθος μικρὸν ἐμφερὲς ῥόδῳ. ῥίζας λευκάς. πλατείας ε΄. ἢ ς΄. ὅσον πήχεως. αἵτινες οἴνῳ ἢ ὕδατι πινόμεναι, δυσεντερίαν καὶ ῥήγματα ἰῶνται.

### Περὶ Καννάβεως ἡμέρου. Κεφ. φοα´.

Κάνναβις φυτόν ἐστιν εὔχρηστον ἐν τῷ βίῳ πρὸς τὰς τῶν εὐτονωτάτων σχοινίων πλοκάς. φύλλα φέρει παραπλήσια τῇ μελίᾳ. δυσώδη. καυλοὺς μακρούς. κενούς. καρπὸν στρογγύλον. ὃς ἐσθιόμενος πλείων, σβέννυσι τὴν γονήν. χλωρὸς δὲ χυλισθεὶς, ἁρμόζει πρὸς τὰς τῶν ὤτων ἀλγηδόνας ἐνσταζόμενος.

### Περὶ Καννάβεως ἀγρίας. Κεφ. φοβ´.

Κάνναβις ἀγρία ῥαβδία φέρει ὅμοια τοῖς τῆς ἀλθαίας. μελάντερα δὲ καὶ τραχύτερα. καὶ μικρότερα. τὸ ὕψος πήχεως. τὰ δὲ φύλλα ὅμοια τῇ ἡμέρῳ. τραχύτερα δὲ καὶ μελάντερα. ἄνθη ὑπέρυθρα. λυχνίδι ἐμφερῆ. σπέρμα δὲ καὶ ῥίζαν ὅμοια τῇ ἀλθαίᾳ. Δύναμιν δὲ ἔχει ἡ ῥίζα ἑφθὴ καταπλασθεῖσα, φλεγμονὰς παρηγορεῖν. καὶ οἰδήματα διαφορεῖν. καὶ πώρους διαχεῖν. καὶ ὁ ἀπὸ ταύτης δὲ φλοιὸς, εὔθετος εἰς πλοκὴν σχοινίων.

### Περὶ Ἀναγύρεως. Κεφ. φογ´.

Ἀνάγυριν. οἱ δὲ ἀνάγυρον. οἱ δὲ ἄκοπον καλοῦσι. θάμνος ἐστὶ φύλλοις καὶ ταῖς ῥάβδοις προσεμφερὴς ἄγνῳ δενδρώδης. βαρύοσμος ἰσχυρῶς. ἄνθος κράμβῃ ἐοικός. καρπὸς ἐν κερατίοις μακροῖς. τὸ σχῆμα νεφρῶν. ποικίλος στερεός. σκληρύνεται δὲ περὶ τὸν τῆς σταφυλῆς περκασμόν. Ταύτης τὰ φύλλα ἁπαλὰ λεῖα καταπλασσόμενα, οἰδήματα στέλλει. ποτίζεται δὲ < πλῆθος ἐν γλυκεῖ πρὸς ἆσθμα καὶ ἐκβολὴν χορίου, καὶ ἐμμηνίων καὶ ἐμβρύου. πρὸς δὲ κεφαλαλγίαν σὺν οἴνῳ. ἔστι δὲ περίαπτον δυστοκούσαις. δεῖ μέντοι μετὰ τὸ ἀποτεκεῖν εὐθέως ἀφελόντα ῥίπτειν τὸ περίαμμα. ὁ δὲ τῆς ῥίζης χυλὸς διαφορεῖ καὶ ἐκπέσσει. ὁ δὲ καρπὸς ἐσθιόμενος, ἐμμέτον συντόνως κινεῖ.

### Περὶ Κηπαίας. Κεφ. φοδ´.

Κηπαία ἐμφερής ἐστιν ἀνδράχνῃ. μελάντερα δὲ ἔχει τὰ φύλλα. ῥίζαν λεπτήν. βοηθεῖ δὲ τὰ φύλλα πινόμενα σὺν οἴνῳ, στραγγουριῶσι καὶ ψωριῶσι τὴν κύστιν. μάλιστα δὲ ποιεῖ μετὰ ἑψήματος ῥιζῶν ἀσπαράγου τοῦ μυακάνθου καλουμένου πινομένη.

## Περὶ ἀλίσματος. Κεφ. φοε.

Ἄλισμα· οἱ δὲ ἀλκέαν· οἱ δὲ δαμασώνιον· οἱ δὲ ἄκυρον· οἱ δὲ λύρον καλοῦσι. φύλλα μὲν ἔχει ἀρνογλώσσῳ ὅμοια· στενότερα δὲ καὶ ἐπὶ γῆν κλώμενα. καυλὸς δὲ λεπτός· ἁπλοῦς ὑπὲρ πῆχυν ἔχων κεφάλια θυρσοειδῆ. ἄνθη λεπτά· λευκά· ὑπόχλωρα. ῥίζαι ὡς μέλανος ἐλλεβόρου λεπταί· εὐώδεις· δριμεῖαι· ὑπολίπαροι. ὑδρηλὰ δὲ φιλεῖ χωρία. Ἁρμόζει ἡ ῥίζα πινομένη σὺν οἴνῳ, ὅσον < α ἢ β τοῖς λαγωὸν βεβρωκόσι, θαλάσσιον. καὶ τοῖς ὑπὸ φρύνου δηχθεῖσι. καὶ τοῖς ὄπιον πεπωκόσι. καὶ στρόφους καὶ δυσεντερίαν καθ᾽ αὑτήν. καὶ σὺν ἴσῳ δαύκῳ πινομένη, ἁρμόζει καὶ σπάσμασι καὶ πρὸς τὰ ὑστερικὰ πάθη. ἡ δὲ πόα ἵστησι κοιλίαν. καὶ ἔμμηνα ἄγει. καὶ οἰδήματα καταπλασθεῖσα πραΰνει.

## Περὶ ὀνοβρυχίδος. Κεφ. φοϛ.

Ὀνοβρυχὶς φύλλα ἔχει ὅμοια φακῷ· μικρά· μακρότερα. καυλὸν σπιθαμιαῖον. ἄνθος φοινικοῦν· μικρὰν ῥίζαν. φύεται ἐν καθύγροις καὶ ἀργοῖς τόποις. Δύναμιν δὲ ἔχει ἡ πόα ἐπιπλασθεῖσα λεία διαχεῖν φύματα. μετ᾽ οἴνου δὲ πινομένη στραγγουρίαν θεραπεύει. σὺν ἐλαίῳ δὲ ἀλειφομένη ἱδρῶτας κινεῖ.

## Περὶ ὑπερικοῦ. Κεφ. φοζ.

Ὑπερικόν· οἱ δὲ ἀνδρόσαιμον· οἱ δὲ κόριον· οἱ δὲ χαμαιπίτυν, διὰ τὸ τὴν περὶ τὸ σπέρμα ὀσμὴν ἐοικέναι πιτυΐνῃ ῥητίνῃ. φύλλα ἔχει πηγάνῳ ὅμοια. θάμνος φρυγανοειδής· σπιθαμιαῖος ὑπέρυθρος. ἄνθος ἔχον μήλινον. ὃ διατριβὲν ἐν τοῖς δακτύλοις αἱματώδη τὸν χυλὸν ἐκκρίνει ὅθεν καὶ ἀνδρόσαιμον ἐκλήθη. κλωνάρια ὑπόδασέα. προμήκη ἐν τῷ περιφερεῖ· μέγεθος κριθῆς, ἐν ᾧ σπέρμα μέλαν ῥητίνης ὄζον. φύεται δὲ ἐν ἐργασίμοις καὶ τραχέσι τόποις. Δύναμιν δὲ ἔχει διουρητικήν. καὶ ἐμμήνων ἀγωγὸν προστιθέμενον. τεταρταίους τε καὶ τριταίους ἀπαλλάσσει μετ᾽ οἴνου πινόμενον. θεραπεύει δὲ ἰσχιάδας ἐπὶ ἡμέρας μ΄ τὸ σπέρμα πινόμενον. καὶ τὰ φύλλα σὺν τῷ σπέρματι καταπλαττόμενα κατακαύματα ἰᾶται.

### Περὶ Ἀσκύρου. Κεφ. φοη′.

Ἄσκυρον· οἱ δὲ, ἀσκυροειδές· οἱ δὲ ἀνδρόσαιμον· καὶ τοῦτο εἶδός ἐστιν ὑπερικοῦ· μεγέθει διαφέρον· κλωσὶ μεῖζον· φρυγανωδέστερον δὲ καὶ πεφοινιγμένον ἄνθη δὲ μήλινα φέρει. καρπὸν δὲ ὅμοιον ὑπερικῷ· ὄζοντα ῥητίνης· καὶ ἐν τῷ παρατριβῆναι οἱονεὶ αἱμάσσοντα τοὺς δακτύλους τὸ σπέρμα· ὡς διὰ τοῦτο ἀνδρόσαιμον καλεῖσθαι. Ποιεῖ καὶ ὁ τούτου καρπὸς πρὸς ἰσχιάδας πινόμενος μεθ' ὑδρομέλιτος κοτυλῶν β′. ἄγει γὰρ χολώδη κόπρια πολλά· συνεχῶς δὲ διδόναι χρὴ ἄχρις ἂν ὑγιασθῶσι. ποιεῖ καὶ πρὸς πυρίκαυτα ἐπιπλασθείς.

### Περὶ Ἀνδροσαίμου. Κεφ. φοθ′.

Ἀνδρόσαιμον· οἱ δὲ διονυσιάδα· οἱ δὲ καὶ τοῦτο ἄσκυρον καλοῦσι. διαφέρει δὲ τοῦ ὑπερικοῦ καὶ τοῦ ἀσκύρου θάμνος ὢν λεπτόκαρφος· φρυγανώδης· πεφοινιγμένος τὰ ῥαβδία· φύλλα τριπλασίονα ἢ τετραπλασίονα τοῦ πηγάνου· ἃ τριφθέντα οἰνώδη χυλὸν ἀφίησι. μασχάλας δ' ἔχει πλείους ἐπ' ἄκρῳ τεταρσωμένας· περὶ ἃς ἀνθήλια μικρὰ μήλινα. καρπὸς ἐν κάλυκι· ὅμοιος τῷ τῆς μελαίνης μήκωνος· οἱονεὶ κατάγραφος. ἀνατριφθεῖσα δὲ ἡ κόμη, ῥητινώδη ὀσμὴν ἀποδίδωσι.

Καὶ τούτου ὁ καρπὸς λεῖος δυοῖν < ὁλκῆ ποθεὶς, ἄγει χολώδη κόπρια. θεραπεύει δὲ μάλιστα ἰσχιάδας. δεῖ δὲ μετὰ τὴν κάθαρσιν ὕδατος ἐπιρροφεῖν. καὶ πυρίκαυτα δὲ ἡ πόα καταπλασθεῖσα ἰᾶται. καὶ αἷμα ἐπέχει.

### Περὶ Κόρεως. Κεφ. φπ′.

Κόρις· οἱ δὲ καὶ τοῦτο ὑπερικὸν καλοῦσι. φύλλον ἔχει παραπλήσιον τῷ τῆς ἐρείκης μικρότερον δὲ καὶ λιπαρώτερον καὶ ἐρυθρόν. θάμνος δ' ἐστὶ σπιθαμιαῖος· εὔοσμος· δριμὺς καὶ εὐώδης. Τούτου ὁ καρπὸς πινόμενος, οὖρα καὶ καταμήνια ἄγει. βοηθεῖ καὶ φαλαγγιοδήκτοις· ἰσχιαδικοῖς τε καὶ ὀπισθοτονικοῖς σὺν οἴνῳ πινόμενος. πρὸς δὲ ῥίγη σὺν πεπέρει. ἐπὶ δὲ ὀπισθοτονικῶν καὶ σύγχρισμά ἐστι σὺν ἐλαίῳ ἁρμόδιον.

### Περὶ Χαμαιπίτυος. Κεφ. φπα′.

Χαμαιπίτυς ἣν ἔνιοι πόντῳ ὁλόκυρον καλοῦσιν ἀθήνησιν ἰωνίαν. ἐν δὲ εὐβοίᾳ σιδηρῖτιν. πόα ἐστὶν ἕρπουσα ἐπὶ γῆς ὑπόκυρτος. φύλλα δὲ ἔχει ὅμοια ἀειζώῳ μικρῷ. λεπτότερα δὲ πολλῷ καὶ λιπαρώτερα καὶ δασέα. πυκνὰ περὶ τοὺς κλάδους. ὀσμὴν ἔχοντα πίτυος. ἄνθη λεπτὰ μήλινα ἢ λευκά. ῥίζαν δὲ ὡς κιχωρείου. Ταύτης τὰ φύλλα πινόμενα μετὰ οἴνου ἐπὶ ἡμέρας ζ΄. ἴκτερον θεραπεύει. ἐπὶ δὲ μ΄. ἰσχιάδα θεραπεύει μεθ᾽ ὑδρομέλιτος πινόμενα. δίδοται καὶ ἡπατικοῖς καὶ δυσουροῦσι καὶ νεφριτικοῖς ἰδίως. ἁρμόζονται καὶ στροφουμένοις. χρῶνται δ᾽ αὐτῇ καὶ ἐν ἡρακλείᾳ τῇ ποντικῇ. ὡς ἀντιδότῳ πρὸς ἀκόνιτον. ποτίζοντες τὸ ἀφέψημα. καταπλάσσεται δὲ πρὸς τὰ προειρημένα μετὰ ἀλφίτων δευμένων τῷ ἀφεψήματι τῆς πόας. λεανθεῖσα δὲ σὺν σύκοις καὶ ἀντὶ καταποτίου διδομένη, μαλάσσει κοιλίαν. μετὰ μέλιτος δὲ καὶ λεπίδος καὶ ῥητίνης ἀναληφθεῖσα καθαίρει. ἄγει δὲ καὶ τὰ ἀπὸ ὑστέρας προστεθεῖσα σὺν μέλιτι. διαφορεῖ δὲ καὶ σκληρίας μαστῶν. καὶ τραύματα κολλᾷ. καὶ ἕρπητας ἐπέχει μετὰ μέλιτος καταπλασσομένη.

### Περὶ ἑτέρας χαμαιπίτυος Κεφ. φπβ΄.

Ἔστι καὶ ἑτέρα χαμαιπίτυς. κλάδους ἔχουσα πηχυαίους. ἀγκυροειδεῖς. λεπτοκάρφους. κόμην δὲ ἐοικυῖαν τῇ πρὸ αὐτῆς. καὶ ἄνθος λευκόν. σπέρμα δὲ μέλαν. ὄζει δὲ καὶ αὐτὴ πίτυος. Καὶ τρίτη τίς ἐστιν ἄρρην καλουμένη. ἔστι δὲ βοτάνιον λεῖον. ἔχον φυλλάρια λεπτά. λευκά. δασέα. καυλὸν δὲ τραχύν. λευκόν. ἀνθύλλια μήλινα. σπερμάτιον δὲ παρὰ τὰς μασχάλας. ὄζει δὲ καὶ τοῦτο πίτυος. δύναμιν δὲ ἔχουσι καὶ αὐτὰ ὁμοίαν τῇ προειρημένῃ. οὐ μὴν οὕτω πρακτικήν.

Τέλος τοῦ τρίτου.

# ΠΕΔΑΚΙΟΥ ΔΙΟΣΚΟΡΙΔΟΥ ἈΝΑΖΑΡΒΕΩΣ ΠΕΡῚ ὝΛΗΣ ἸΑΤΡΙΚΗ͂Σ ΒΙΒΛΙΟΝ ΤΕΤΑΡΤΟΝ.

Ἐν τοῖς πρὸ τούτου τρισὶ βιβλίοις φίλτατε Ἄρειε, παραδόντες περὶ ἀρωμάτων καὶ ἐλαίων καὶ μύρων καὶ δένδρων καὶ ζώων καὶ σιτηρῶν καὶ λαχάνων καὶ ῥιζῶν καὶ χυλισμάτων καὶ βοτανῶν καὶ σπερμάτων, ἐν τούτῳ τετάρτῳ ὄντι περὶ τῶν λειπομένων βοτανῶν καὶ ῥιζῶν διαλεξόμεθα.

Περὶ κέστρου. κεφ. φπγ'.

Κέστρον. τὸ καλούμενον ψυχότροφον. ἐπειδὴ ἐν τοῖς ψυχροτάτοις εὑρίσκεται τόποις ὃ ῥωμαῖοι βετονίκην καλοῦσιν. ἢ ῥοσμαρίνουμ, πόα ἐστὶ καυλὸν ἔχουσα λεπτὸν πήχεως τὸ ὕψος. ἢ καὶ μείζονα, τετράγωνον. φύλλα μακρά. μαλακά. ὅμοια δρυΐ. τὴν περιφέρειαν ἐσχισμένα. εὐώδη. μείζονα δὲ τὰ πρὸς τὴν ῥίζαν. ἐπ' ἄκρῳ δὲ τῶν καυλῶν ἔνεστι τὸ σπέρμα ἐσταχυωμένον ὥσπερ θύμβρας. ταύτης τὰ φύλλα δεῖ συλλέγοντας ξηραίνειν. ὧν ἐστὶ καὶ ἡ πλείων χρῆσις. ῥίζαι δὲ ὕπεισι λεπταὶ ὡς ἐλλεβόρου. αἵτινες φλεγματώδη προσκαλοῦσιν ἔμετον. μεθ' ὑδρομέλιτος πινόμεναι. τῶν δὲ φύλλων διδόναι πρὸς τὰ σπάσματα ῥήγματα. καὶ πρὸς τὰς ἐν ὑστέρᾳ διαθέσεις. καὶ πνίγας ὑστερικὰς < α. ὁλκὴ μεθ' ὑδρομέλιτος πινόμεναι. θηριοδήκτοις δὲ ὁλκαὶ γ'. μετ' οἴνου κοτυλῶν β'. καταπλασσομένη δὲ ἡ πόα, ὠφελεῖ τοὺς θηριοδήκτους. καὶ πρὸς τὰ θανάσιμα ὁλκὴ μετ' οἴνου ποθεῖσα ἁρμόζει. ἐὰν δέ τις προπίῃ, οὐδὲν βλαβήσεται λαβὼν φάρμακον θανάσιμον. ἔστι δὲ οὐρητική. κοιλίας τε ὑποβιβαστική. θεραπεύει δὲ καὶ ἐπιλήπτους. καὶ μαινομένους μεθ' ὕδατος πινομένη. καὶ ἡπατικούς. σπληνιτικοὺς δὲ μετ' ὀξυμέλιτος ὁλκὴ < α. ἐπιποθεῖσα. ποιεῖ δὲ καὶ πέψιν ἐάν τις μετὰ τὸ δεῖπνον αὐτὴν κυάμου μέγεθος καταπίῃ μετὰ μέλιτος ἑφθοῦ ὁμοίως καὶ ὀξυρεγμιῶσι δίδοται. στομαχικοῖς δὲ διαμασᾶσθαι καὶ καταπίνειν τὸν χυλόν. εἶτ' ἐπιρροφᾶν οἶνον κεκραμένον. δίδοται

δὲ καὶ αἱμοπτοϊκοῖς ὁλκὴ τριωβόλου μετὰ κράματος κυά
θου ἑνὸς γαλακτώδους. ἰσχιαδικοῖς τε μεθ' ὕδατος καὶ νεφρι
τικοῖς καὶ κύστιν ἀλγοῦσιν. ὑδρωπικοῖς δὲ < β΄. μεθ' ὑδρο
μέλιτος πυρέσσουσιν, ἀπυρέτοις δὲ σὺν οἰνομέλιτι ἰκτεριῶν
τάς τε καθίστησι. καὶ καταμήνια ἄγει ὁλκὴ ἅμα μετ' οἴνου πινο
μένη. κοιλίαν δὲ < δ΄. ποθεῖσαι καθαίρουσι μεθ' ὑδρομέ
λιτος κυάθων δέκα. ποιεῖ καὶ πρὸς φθισικούς. ἐμπυϊκοὺς
μετὰ μέλιτος. ἀποτίθεσθαι δὲ δεῖ τὰ φύλλα ξηρὰ λεῖα ἐν
κεραμέῳ ἀγγείῳ

Περὶ βρεττανικῆς. Κεφ. φπδ΄.

Β ρεττανικὴ ἢ βεττονική. πόα ἐστὶν ἔχουσα φύλλα ἐμφερῆ λαπά
θῳ ἀγρίῳ. μελάντερα δὲ καὶ δασύτερα. στύφοντα ἐν τῇ
γεύσει. καυλὸν δὲ ἀνίησιν οὐ μέγαν. ῥίζαν λεπτὴν καὶ βρα
χεῖαν. χυλίζεται δὲ αὐτῆς τὰ φύλα. καὶ ἐν ἡλίῳ ἢ πυρὶ
συστρέφεται. Δύναμιν δὲ ἔχει στυπτικήν. ἰδίως ἁρμό
ζουσαν πρὸς τὰς ἐν στόματι καὶ παρισθμίοις νομὰς ποιεῖ.
δὲ καὶ πρὸς τὰ λοιπὰ ὅσα στύψεως χρῄζει.

Περὶ λυσιμαχίου. Κεφ. φπε΄.

Λ υσιμάχιον. οἱ δὲ λύφον καλοῦσι. καυλοὺς ἀνίησι πηχυαίους
ἢ καὶ μείζονας. λεπτούς. θαμνώδεις. ὧν παρὰ τὰ γόνατα,
φύλλων λεπτῶν ἐκφύσεις παραπλησίων τοῖς τῆς ἰτέας.
στυφόντων ἐν τῇ γεύσει. ἄνθος πυρρὸν ἢ χρυσοειδές. φύεται
ἐν ἑλώδεσι τόποις. καὶ παρὰ τὰ ὕδατα. Ἁρμόζει δὲ ὁ χυ
λὸς τῶν φύλλων στυπτικὸς ὤν, πρὸς αἵματος ἀναγωγὰς καὶ
δυσεντερίας πόμα καὶ ἔγκλυσμα. ῥοῦν τε γυναικεῖον ἵστη
σιν ἐν προσθέτῳ καὶ πρὸς τὰς ἐκ μυκτήρων αἱμορραγίας
ἐμφρασσομένη ἡ πόα ἁρμόζει. ἔστι δὲ καὶ τραυματικὴ καὶ ἴσχαι
μος. θυμιαθεῖσα δὲ δριμύτατον ἔχει τὸν καπνόν. ὥς τε καὶ
ἑρπετὰ διώκειν καὶ μυίας ἀποκτείνειν.

Περὶ πολυγόνου ἄρρενος. Κεφ. φπς΄.

Π ολύγονον ἄρρεν πόα ἐστὶ κλῶνας ἔχουσα λεπτοὺς τρυφεροὺς
πολλοὺς γόνασι περιειλημμένους. ἕρποντας ἐπὶ τῆς γῆς ὥς
περ ἄγρωστις. φύλλα δὲ πηγάνου ὅμοια. ἐπιμηκέστερα. ἔχει δὲ

καρπὸν παρ' ἕκαστον φύλλον· ὅθεν καὶ ἄῤῥεν καλεῖται. ἄνθος δὲ λευκὸν ἢ φοινικοῦν. Δύναμιν δὲ ἔχει στυπτικὴν ψυκτικὴν ὁ χυλὸς πινόμενος. ἁρμόζει δὲ αἱμοπτοϊκοῖς καὶ τοῖς κατὰ κοιλίαν ῥεύμασι. χολερικοῖς τε καὶ στραγγουροῦσιν. ἄγει γὰρ οὖρα ἐναργῶς. βοηθεῖ καὶ θηριοδήκτοις μετ' οἴνου πινόμενος. καὶ πρὸς περιόδους πρὸ μιᾶς ὥρας τῆς ἐπισημασίας λαμβανόμενος. ἵστησι δὲ καὶ ῥοῦν γυναικεῖον προστεθεὶς καὶ πρὸς ὠταλγίας καὶ πυοῤῥοίας ἐνσταζόμενος ἁρμόζει. συνεψηθεὶς δὲ οἴνῳ καὶ μέλι προσλαβὼν, ἄκρως ποιεῖ πρὸς τὰ ἐν αἰδοίοις ἕλκη. καταπλάσσεται δὲ τὰ φύλλα πρὸς στομάχου ἔγκαυσιν, καὶ αἵματος ἀναγωγὴν καὶ ἕρπητας. ἐρυσιπέλατά τε καὶ φλεγμονὰς, καὶ οἰδήματα καὶ τραύματα πρόσφατα.

Περὶ πολυγόνου θήλεος. Κεφ. φπζ΄.

Π ολύγονον θῆλυ. θαμνίον ἐστὶ μονόκλωνον. τρυφερόν. καλαμώδες. γόνατα συνεχῆ ἔχον ἐγκείμενα ἀλλήλοις ὥσπερ σάλπιγγος. καὶ περὶ τοῖς γόνασιν ἐν κύκλῳ ἐξοχὰς πίτυος. φυλλαρίοις ἐοικυίας. ῥίζα ἀχρεία. φύεται παρὰ τοῖς ὑδατώδεσι. Δύναμιν δὲ ἔχει στυπτικὴν ψυκτικήν. ποιοῦσαν τὰ αὐτὰ τῷ πρὸ αὐτοῦ ὅτι μὴ ἀσθενέστερον.

Περὶ πολυγονάτου. Κεφ. φπη΄.

Π ολυγόνατον. φύεται ἐν ὄρεσι. θάμνος μείζων πήχεως. φύλλα ἔχων ὅμοια δάφνῃ. πλατύτερα δὲ καὶ λειότερα. γευσαμένῳ ὅμοιόν τι μηλοκυδωνίῳ ἢ ῥοιᾷ. μετὰ στύψεως καὶ προσβάλλει. καθ' ἑκάστην δὲ ἔκφυσιν τῶν φύλλων ἄνθη λευκά. τῷ πλήθει ὑπερέχοντα τῶν φύλλων τοῦ ἀριθμοῦ ἀπὸ τῆς ῥίζης γινομένου. ῥίζαν δὲ λευκήν. μαλακήν. μακράν. πολυγόνατον. δασεῖαν. βαρύοσμον. πάχος ἔχουσαν δακτύλου. ποιοῦσαν πρὸς τραύματα καταπλασσομένην. αἴρει δὲ καὶ σπίλους τοὺς ἐν προσώπῳ.

Περὶ κληματίδος. Κεφ φπθ΄.

Κ ληματὶς. οἱ δὲ δαφνοειδὲς. οἱ δὲ σμυρνοειδές. οἱ δὲ πολυγονοειδὲς καλοῦσι. φύεται ἐπὶ γῆς ἐν εὐγείοις. κλήματα δὲ ἔχει

μικρὰ ὅσον σχίνου τὸ πάχος. πέταλον δὲ μικρόν. δάφνῃ ἐμφερές. τῷ τε σχήματι καὶ τῇ χροιᾷ. μικρότερον δὲ πολλῷ.

Ταύτης τὰ φύλλα καὶ οἱ καυλοὶ σὺν οἴνῳ πινόμενα, διαῤῥοίας καὶ δυσεντερίας παύει μετὰ γάλακτος δὲ καὶ ῥοδίνου ἢ κυπρίνου ἐν πεσσῷ προστιθέμενα, ὑστέρας πόνους θεραπεύει. παύει δὲ καὶ ὀδόντων πόνους διαμασσωμένη. βοηθεῖ καὶ θηριοδήκτοις ἐπιτιθεμένη. ἱστορεῖται δὲ καὶ ἀσπιδοδήκτοις μετ' ὄξους πινομένη βοηθεῖν φύεται δὲ ἐν χέρσοις.

## Περὶ πολεμωνίου. Κεφ. φϛ΄.

Πολεμώνιον οἱ δὲ φιλεταίριον. καππάδοκες μὲν χειμοδύναμιν καλοῦσι. κλωνία ἔχει λεπτὰ τεταρσωμένα. φύλλα δὲ ὀλίγῳ μείζονα πηγάνου. ἐπιμηκέστερα δὲ πρὸς τὰ τοῦ πολυγόνου ἢ τῆς καλαμίνθης. ἐπ' ἄκρου δὲ αὐτῶν ὥσπερ κόρυμβοι ἐν οἷς σπέρμα μέλαν. ῥίζα πηχυαία ὑπόλευκος. ἐμφερὴς στρουθίῳ. φύεται ἐν ὀρεινοῖς καὶ τραχέσι τόποις. Ταύτης ἡ ῥίζα πίνεται ἐν οἴνῳ πρὸς θηρία καὶ δυσεντερίαν δυσουρίαν τε καὶ ἰσχιάδα μεθ' ὕδατος σπληνικοὺς δὲ μετ' ὄξους ὅσον < α΄. ὁλκήν. καὶ περιάπτεται ἡ τούτου ῥίζα πρὸς σκορπίου πληγήν. φασὶ δὲ μὴ τύπτεσθαι τοὺς ἔχοντας αὐτὴν ἢ κἂν πληγῶσι μηδὲν πάσχειν. παύει δὲ καὶ ὀδονταλγίας διαμασσωμένη.

## Περὶ συμφύτου πετραίου. Κεφ. φϛα΄.

Σύμφυτον πετραῖον. φύεται ἐν πέτραις. κλωνία δὲ ἔχει ὅμοια ὀριγάνῳ, λεπτά. φύλλα κεφάλια δὲ ὡς θύμου. τὸ δ' ὅλον ἐστὶ ξυλῶδες καὶ εὐῶδες. γλυκύ τε πρὸς τὴν γεῦσιν καὶ πτυέλου προκλητικόν. ῥίζαν δὲ ἔχει μακράν. ὑπόπορφυρον. ὅσον δακτύλου πάχος. Τοῦτο ἑψηθὲν σὺν μελικράτῳ καὶ ποθὲν ἀνακαθαίρει τὰ ἐκ πνεύμονος. καὶ τοῖς αἷμα ἀνάγουσι. καὶ νεφριτικοῖς σὺν ὕδατι δίδοται. σὺν οἴνῳ δὲ ἑψηθὲν πίνεται πρὸς δυσεντερίαν. καὶ ῥοῦν γυναικεῖον ἐρυθρόν. σὺν ὀξυμέλιτι δὲ πρὸς σπάσματα καὶ ῥήγματα. καὶ ἄδιψον δὲ ἐστὶ διαμασσώμενον. ἁρμόζει καὶ ταῖς βρόγχου τραχύτησι. κολλᾷ καὶ νεότρωτα καὶ ἐντεροκήλας. ἐγκρατεῖ καταπλασσόμενον. καὶ τὰ κρέα δὲ συμπέττει ἑψόμενα σὺν αὐτοῖς.

Περὶ

### Περὶ Συμφύτου ἄλλου. Κεφ. φϛβ΄.

Σύμφυτον ἄλλο. οἱ δὲ, πηκτόν. καυλὸν ἀνίησι διπηχυαῖον ἢ καὶ μείζονα. κοῦφον. παχύν. γωνιοειδῆ κενὸν ὡς περὶ σόγχου. περὶ ὃν οὐκ ἐκ μεγάλων διαστημάτων. φύλλα δασέα. στενά. παραμήκη πρὸς τὰ τῆς βουγλώσσου. ἐξοχὰς δὲ ἔχει ὁ καυλὸς παρὰ τὰς γωνίας τινὰς τεταμένας. φύλλον λεπτὸν προσύπτων. ἀφ' ἑκάστης μασχάλης. τὰ ἄνθη ἔπεστι μήλινα καὶ καρπὸς περὶ τὸν καυλὸν ὡς φλόμου. ὅλος δὲ ὁ καυλὸς καὶ τὰ φύλλα ἔχει χνοῦν ὑπότραχυν. κατὰ τὴν προσαφὴν κνησμὸν ἐμποιοῦντα. ῥίζαι δ' ὕπεισιν τὴν μὲν ἐπιφάνειαν μέλαιναι. ἔνδοθεν δὲ λευκαὶ καὶ γλίσχραι. ὧν καὶ ἡ χρῆσις. Ποιοῦσι δὲ λεῖαι πινόμεναι αἱμοπτοϊκοῖς καὶ ῥηγματίαις καὶ τὰ νεότρωτα κολλῶσι καταπλασσόμεναι. καὶ τὰ κρέα δὲ συνεψόμεναι συνάγουσι. καταπλάττονται δὲ πρὸς φλεγμονὰς μάλιστα τὰς ἐν δακτυλίῳ ὠφελίμως μετὰ φύλλων ἠριγέροντος.

### Περὶ Ὀλεσίου. Κεφ. φϛγ΄.

Ὀλέσιον. πόα ἐστὶ μικρὰ ὑπὲρ γῆς ὡς τριῶν δακτύλων ἢ τεσσάρων. φύλλα δὲ ἔχει καὶ κλήματα κορωνόποδι παραπλήσια. ἢ ἀγρώστει. στυπτικά. ῥίζαν δὲ σφόδρα λεπτὴν ὡς τρίχα. λευκὴν τῷ εἴδει μῆκος δακτύλων τεσσάρων. φύεται ἐν γεωλόφοις. Δύναται δὲ καὶ αὐτὴ κρέα συνάγειν συνεψομένη, καὶ πρὸς ῥήγματα σὺν οἴνῳ ποτίζεται.

### Περὶ Στοιβῆς. Κεφ. φϛδ΄.

Στοιβή. ἧς ὁ καρπὸς καὶ τὰ φύλλα στύφει. ὅθεν καὶ δυσεντεριῶσι τὸ ἀφέψημα αὐτῶν ἐνίεται. ἐγκλύζεται δὲ καὶ εἰς ὦτα πυορροοῦντα. καταπλασθέντα δὲ τὰ φύλλα ὠφελεῖ σύγχυσιν ὀφθαλμῶν τὴν ἐκ πληγῆς καὶ αἱμορραγίαν ἴσχει.

### Περὶ Κλυμένου. Κεφ. φϛε΄.

Κλύμενον. καυλὸν ἀνίησι τετράγωνον. ὅμοιον τῷ τοῦ κυάμου. φύλλα δὲ πρὸς τὰ τοῦ ἀρνογλώσσου. θυλάκια δὲ ἔχει ἐπὶ τοῦ καυλοῦ εἰς ἄλληλα νεύοντα. ἐοικότα ἴειδι καὶ πολύποδος πλεκτάναις. ἄριστον δὲ τὸ ὀρεινόν. Χυλίζεται δὲ ὁ/

λον σὺν τῇ ῥίζῃ. ποιεῖ δὲ ὁ χυλὸς πρὸς αἵματος ἀναγωγὰς πινόμενος. καὶ κοιλιακούς. καὶ ῥοῦν ἐρυθρὸν στύφων καὶ ψύχων. ἐπέχει γὰρ καὶ τὰς ἐκ μυκτήρων αἱμορραγίας. τὰ δὲ φύλλα λεῖα ἢ τὰ θυλάκια τοῖς νεοτρώτοις ἐπιτιθέμενα, μέχρι τῆς ἐπουλώσεως ἀνεργεῖ.

Περὶ Περικλυμένου. Κεφ. φϛϛ'.

Περικλύμενον. θαμνίσκος ἐστὶν ἁπλοῦς. ἔχων ἐκ διαστημάτων φυλλάρια περιειληφότα αὐτόν. ὑπόλευκα. κισσοειδῆ. καὶ παρὰ τὰ φύλλα ἐκ βλαστήσεις. ἐφ᾽ ὧν ὁ καρπὸς κισσῷ παραπλήσιος. ἄνθος λευκόν. κυάμῳ ἐμφερές. ἐπιστρογγύλον. οἱονεὶ ἐπικείμενον τῷ φύλλῳ. καρπὸν σκληρὸν καὶ δυσαπόσπαστον. ῥίζαν παχεῖαν περιφερῆ. φύεται ἐν ἀρούραις καὶ φραγμοῖς. περιελίττεται δὲ τοῖς πλησιάζουσι θάμνοις. Τούτου ὁ καρπὸς πέπειρος συλλεγεὶς καὶ ξηρανθεὶς ἐν σκιᾷ, πίνεται μετ᾽ οἴνου < α. ὅλην ἐπὶ ἡμέρας μ. καὶ σπλῆνα τήκει. καὶ κόπον λύει. καὶ ὀρθόπνοιαν ὠφελεῖ καὶ λυγμόν. οὖρα ἄγει ἀπὸ τῆς ἕκτης ἡμέρας αἱματώδη. ἔστι δὲ καὶ ὠκυτόκιον. τὴν αὐτὴν δὲ καὶ τὰ φύλλα δύναμιν ἔχει ἐπὶ ἡμέρας λζ'. ποθέντα. καὶ ἀγόνους ἱστορεῖται ποιεῖν. ἀλειφόμενα δὲ μετ᾽ ἐλαίου ἐπὶ τῶν περιοδικῶν, τὰ φρικία παραιτεῖται.

Περὶ Τριβόλου. Κεφ. φϛζ'.

Τρίβολος. ὁ μὲν χερσαῖος ἀνδράχνῃ τὰ φύλλα ἔοικε. λεπτότερα δέ. καὶ τὰ κλήματα κατὰ γῆς ἐστρωμένα. καὶ πρὸς αὐτοῖς ἄκανθαι στρυφναί. σκληραί. φύεται δὲ παρὰ ποταμοῖς καὶ οἰκοπέδοις. Ἔστι δέ τις καὶ ἔνυδρος παρὰ ποταμοῖς φυόμενος. ὑπερέχων τὴν κόμην. τὴν δὲ ἄκανθαν κρύπτων. φύλλα πλατέα. μόσχον ἔχοντα μακρόν. καυλὸς δὲ ἐξ ἄκρου παχύς. μᾶλλον τοῦ ἐν βάθει. πρόσεστι δὲ καὶ τριχώδη τινὰ ἀποπεφυκότα σταχυοειδῆ. καρπὸς σκληρὸς ὡς καὶ ὁ θατέρου. Ἀμφότεροι δὲ στύφουσι. ψυκτικοί. εἰσί τε πάσης φλεγμονῆς καταπλάσματα. σὺν μέλιτι δὲ ἄφθας καὶ παρίσθμια. καὶ τὰς ἐν στόματι σηπεδόνας καὶ οὖλα θεραπεύουσι. χυλίζονται δὲ καὶ εἰς τὰ ὀφθαλμικά. ὁ δὲ καρπὸς αὐτῶν, χλωρὸς λιθιῶντας πινόμενος ὠφελεῖ. τοῦ δὲ χερ-

σαίου ὅσον < α΄. πινομένη καὶ καταπλασσομένη, τοὺς ἐχιοδήκτους ἀρήγει θίσησιν. ἁρμόζει καὶ θανασίμοις μετ' οἴνου πινόμενος. κτείνει δὲ καὶ ψύλλας τὸ ἀπόζεμα αὐτοῦ ῥανθέν. οἱ δὲ περὶ τὸν Στρυμόνα ποταμὸν Θρᾷκες, τὴν μὲν πόαν χλωρὰν ἱπποτροφοῦσι. τὸν δὲ καρπὸν γλυκὺν ὄντα καὶ τρόφιμον, σιτοποιοῦνται. χρώμενοι αὐτῷ ἀντὶ ἄρτου.

Περὶ λειμωνίου. ΚΕΦ. φϛή.

Λειμώνιον. οἱ δέ, νευροειδές. τὰ μὲν φύλλα ἔχει ὅμοια τεύτλῳ. λεπτότερα δὲ καὶ μακρότερα. δέκα ἢ πλείω. καυλὸν, λεπτόν. ὄρθιον. ἴσον ὥσπερ κείνου. γέμοντα καρποῦ ἐρυθροῦ στύφοντος τὴν γεῦσιν. Δύναται δὲ ὁ καρπὸς λεῖος σὺν οἴνῳ ποθείς, ὀξυβάφου πλῆθος δυσεντερικοὺς καὶ κοιλιακοὺς ὠφελεῖν. ῥοῦν τε γυναικεῖον ἐρυθρὸν ἐφιστάνειν. φύεται δὲ ἐν λειμῶσι καὶ ἑλώδεσι τόποις.

Περὶ λαγώποδος. ΚΕΦ. φϛθ.

Λαγώπους. δύναμιν ἔχει σταλτικὴν κοιλίας πινόμενον μετ' οἴνου. ἐπὶ δὲ τῶν πυρεσσόντων μεθ' ὕδατος. περιάπτεται δὲ καὶ πρὸς φλεγμονὴν βουβώνων. φύεται δὲ ἐν πρασιαῖς.

Περὶ Μηδίου. ΚΕΦ. χ΄.

Μήδιον. φύεται ἐν παλισκίοις τόποις καὶ πετρώδεσιν. ἔχει φύλλα ὅμοια ἴριδι. καυλὸς τρίπηχυς. ἄνθη πορφυροειδῆ μεγάλα καὶ περιφερῆ. καρπὸς μικρός. ἐοικὼς κνίκῳ. ῥίζα σπιθαμιαία. βακτηρίας ἔχουσα πάχος. στρυφνὴ γευομένῳ. Ἥτις ξηρὰ λεία ἐκλειχομένη σὺν μέλιτι ἐφεξῆς ἐφ' ἱκανὰς ἡμέρας, ῥοῦν τὸν ἐρυθρὸν ἵστησι. τὸ δὲ σπέρμα σὺν οἴνῳ ποθέν, ἄγει ἔμμηνα.

Περὶ Ἐπιμηδίου. ΚΕΦ. χα΄.

Ἐπιμήδιον. καυλός ἐστιν οὐ μέγας. κισσῷ παραπλήσια φύλλα ἔχων, ὅσον ι΄ ἢ ιβ΄. οὔτε δὲ καρπὸν οὔτε ἄνθη φέρει. ῥίζαι δὲ λεπταί. μέλαιναι. βαρύοσμοι. γευομένῳ μωραί. φύεται ἐν τόποις ὑδρηλοῖς. Ταύτης τὰ φύλλα λεῖα μετ' ἐλαίου, κατάπλασμα μαστῶν εἰς τὸ μὴ αὔξεσθαι. ἄγονός τε ἡ ῥίζα καὶ τὰ φύλλα λεῖα ποθέντα ἐν οἴνῳ μετὰ τὴν κάθαρσιν < ε΄ πλῆ-

θος ἐστὶ ἡμέρας ε΄ ἀσυλλήπτους τηρεῖ.

### Περὶ Ξιφίου. Κεφ. χβ΄.

Ξιφίον. οἱ δὲ, φάσγανον. οἱ δὲ, μαχαιρώνιον καλοῦσι. διὰ τὸ τῶν φύλλου σχῆμα. ἔοικε γὰρ ἴρεϊ. ἔλαττον μέντοι καὶ στενώτερον. καὶ ἄποξυ ὡς μαχαίριον. ἰνῶδες. καυλὸν δὲ ἀνίησι πηχυαῖον ἐφ' οὗ ἄνθη πορφυρᾶ στιχηδὸν ἀπ' ἀλλήλων διεστῶτα. καρπὸν δὲ στρογγύλον. ῥίζας β΄. τὴν μὲν μίαν ἐπὶ τῆς ἑτέρας καθημένην. ὥσπερ βολβία μικρά. τούτων ἡ μὲν κάτω, ἰσχνή ἐστιν. ἡ δὲ ἄνωθεν, ἁδροτέρα. φύεται δὲ μάλιστα ἐν ἀρούραις.

Δύναται δὲ ἡ ἄνωθεν ῥίζα καταπλασσομένη μετ' οἴνου καὶ λιβανωτοῦ, ἀκίδας καὶ σκόλοπας ἐπισπᾶσθαι. σὺν ἀλεύρῳ δὲ αἰρίνῳ καὶ ὑδρομέλιτι διαφθείρει φύγεθλα. ὅθεν ταῖς τοιαύταις ἐμπλάστροις μίγνυται. ἄγει δὲ καὶ καταμήνια προστεθεῖσα. φασὶ δὲ καὶ ἀφροδίσια παρορμᾶν τὴν ἀνωτέρω ῥίζαν σὺν οἴνῳ ποθεῖσαν. τὴν κατωτέρω δὲ ἀτόνους ποιεῖν. ἐντεροκηλικοῖς τε παιδίοις ὠφελίμως δίδοσθαι τὴν ἐπάνω ῥίζαν ἐν ποτῷ σὺν ὕδατι.

### Περὶ Σπαργανίου. Κεφ. χγ΄.

Σπαργάνιον. φύλλα ἔχει ἐοικότα ξιφιδίῳ. στενώτερα δὲ καὶ ἐπικλινέστερα. ἐπ' ἄκρου δὲ τοῦ καυλοῦ ὡσεὶ σφαιρία ἐν οἷς ὁ καρπός. δίδοται ἡ ῥίζα καὶ ὁ καρπὸς σὺν οἴνῳ θηριοδήκτοις.

### Περὶ Ξυρίδος. Κεφ. χδ΄.

Ξυρίς. τὰ μὲν φύλλα ἔχει ἴρεϊ ὅμοια πλατύτερα δὲ καὶ ὀξὺ ἀκρου ὀξέα. καυλὸν δὲ ἐκ μέσου τῶν φύλλων πηχυαῖον. ἱκανῶς παχύν. ἐφ' οὗ λοβοὶ τρίγωνοι. καὶ ἐπ' αὐτῶν ἄνθος πορφυροῦν. τὸ δὲ ἐν μέσῳ φοινικοῦν. καρπὸς δὲ ἐν θυλακίοις κυάμοις ὅμοιος. στρογγύλος. ἐρυθρός. δριμύς. ῥίζα δὲ πολυγόνατος. μακρά. πυῤῥά. ποιοῦσα πρὸς τὰ ἐν κεφαλῇ τραύματα καὶ κατάγματα. ἀνάγει δὲ σκόλοπας. καὶ πᾶν βέλος ἐπισπᾶται μετὰ ἀπονίας μιγέντος αὐτῇ χαλκοῦ ἄνθους μέρος τρίτον. καὶ κενταυρείου ῥίζης μέρος ε΄ καὶ μέλιτος. θεραπεύει δὲ καὶ οἰδήματα καὶ φλεγμονὰς καταπλασσομένη μετ' ὄξους. πίνεται δὲ καὶ πρὸς σπάσματα. ῥήγματα. ἰσχιάδας

τε καὶ στραγγουρίας. καὶ διαῤῥοίας ἡ ῥίζα μετὰ γλυκέος τεθλασμένη. ὁ δὲ καρπὸς οὐρητικώτατος ὅσον τετρώβολον ποθεὶς ἐν οἴνῳ. τήκει δὲ καὶ σπλῆνα σὺν ὄξει ποθείς.

Περὶ ἀγχούσης. Κεφ. χε.

Ἄγχουσα. ἣν ἔνιοι κάλυκα. οἱ δὲ, ὀνόκλειαν καλοῦσι. τὰ μὲν φύλλα ἔχει θρίδακι τῇ ὀξυφύλλῳ παραπλήσια. δασέα. τραχέα. μέλανα. πολλά. πανταχόθεν τῆς ῥίζης προσπεπλασμένα τῇ γῇ. ἀκανθώδη. ἡ δὲ ῥίζα δακτύλου τὸ πάχος, τὴν χρόαν ὕφαιμος. ἐν τῷ θέρει γινομένη καὶ βάπτουσα τὰς χεῖρας. φύεται ἐν εὐγείοις τόποις. Ἔστι δὲ ἡ ῥίζα στυπτική. ποιεῖ δὲ πρὸς κατακαύματα καὶ παλαιὰ ἕλκη, ἑναφεψομένη κηρῷ καὶ ἐλαίῳ. ἐρυσιπέλατα δὲ σὺν ἀλφίτῳ καταπλασθεῖσα θεραπεύει. καὶ ἀλφοὺς καὶ λέπρας σὺν ὄξει καταπλασσομένη. προστιθεμένη δὲ καὶ ἔμβρυα κατασπᾷ. τὸ δὲ ἀφέψημα αὐτῆς δίδοται καὶ ἰκτερικοῖς. νεφριτικοῖς. σπληνικοῖς. πυρέσσουσι, μετὰ μελικράτου. τὰ δὲ φύλλα κοιλίαν ἱστῆσι μετ᾽ οἴνου πινόμενα. χρῶνται δὲ καὶ οἱ μυρεψοὶ τῇ ῥίζῃ πρὸς τὰς στύψεις τῶν μύρων.

Περὶ ἀγχούσης ἑτέρας. Κεφ. χϛ.

Ἄγχουσα ἑτέρα. ἣν ἔνιοι ἀλκιβιάδιον καλοῦσιν. ἢ ὀνοχειλὲς ἐκάλεσαν. αὕτη διαφέρει τῆς πρώτης, τῷ μικρότερα ἔχειν τὰ φύλλα. τραχέα δὲ ὁμοίως. καὶ τὰ κλωνία λεπτὰ ἐφ᾽ ὧν ἄνθος πορφυροειδὲς ὑποφοινικίζον. ῥίζας δὲ ἐρυθρὰς εὐμήκεις. περὶ τὸν πυραμητὸν ἐχούσας τὸ αἱματῶδες. φύεται δὲ ἐν ἀμμώδεσι τόποις. Δύναμις δὲ αὐτῆς καὶ τῶν φύλλων θηριοδήκτοις βοηθεῖν. μάλιστα δὲ ἐχιοδήκτοις. ἐσθιόμενα καὶ πινόμενα καὶ περιαπτόμενα. κἂν μασησάμενός τις εἰς τὸ στόμα τοῦ θηρίου ἀποπτύσῃ, ἀποκτενεῖ αὐτό.

Περὶ ἑτέρας ἀγχούσης. Κεφ. χζ.

Ἔστι δὲ καὶ ἄλλη ἐμφερὴς ταύτῃ. ἐλάττω δὲ καρπὸν ἔχουσα φοινικοῦν. ὃν ἐάν τις μασησάμενος ἀποπτύσῃ εἰς τὸ στόμα τοῦ ἑρπετοῦ, ἀποκτενεῖ. ἡ δὲ ῥίζα μετὰ ὑσσώπου καὶ καρδάμου ποθεῖσα, ὀξυβάφου πλῆθος, πλατεῖαν ἕλμινθα ἐκτινάσσει.

Περὶ λυκόψεως. ΚΕΦ. κη'.

Λύκοψις. οἱ δὲ, καὶ ταύτην ἄγχουσαν ἐκάλεσαν. τὰ μὲν φύλλα ἔχει ὅμοια θριδακίνῃ. μακρότερα δὲ καὶ παχύτερα καὶ τραχέα καὶ πλατύτερα. πεπτωκότα περὶ τὴν τῆς ῥίζης κεφαλήν. καυλὸν ἀνίησι μακρόν. ὀρθόν. τραχύν. παραφυάδας ἔχοντα πολλάς. πηχυαίας τραχείας. καὶ ἐπ' αὐταῖς ἄνθη μικρά. πορφυρίζοντα. ῥίζα δὲ ἐρυθρά. στυπτική. φύεται ἐν πεδίοις. καταπλασσομένη δὲ μετ' ἐλαίου ἡ ῥίζα, τραύματα ἰᾶται. μετὰ ἀλφίτου δὲ ἐρυσιπέλατα. λεία δὲ συναλειφομένη μετ' ἐλαίου ἱδρῶτας κινεῖ.

Περὶ ἔχιου. ΚΕΦ. κθ'.

Ἔχιον. οἱ δὲ, ἀρίσαν. οἱ δὲ, ἀλκιβιάδιον. τὰ μὲν φύλλα ἔχει προμήκη. τραχέα ὑπόλεπτα πρὸς τὰ τῆς ἀγχούσης. ἧττονα δὲ καὶ λιπαρά. ἀκάνθια λεπτὰ ἐπικείμενα καὶ ἃ καὶ δασύνει τὰ φύλλα καυλία λεπτὰ πολλά. ἑκατέρωθεν δὲ φυλλάρια λεπτὰ ταρσούμενα μέλανα. ἐλάττονα δὲ πρὸς λόγον τῶν ἐπ' ἄκρου τοῦ καυλοῦ. τὰ δὲ ἄνθη παρὰ τὰ φύλλα πορφυροειδῆ. ἐν οἷς ἐστι καὶ ὁ καρπὸς κεφαλῇ ἔχιος ὅμοιος. ῥίζα δὲ λεπτοτέρα δακτύλου. ὑπομέλαινα. ἥτις οὐ μόνον τοῖς δηχθεῖσιν ὑπὸ ἑρπετῶν βοηθεῖ ποθεῖσα μετ' οἴνου, ἀλλὰ καὶ τοὺς προπιόντας ἀδήκτους ποιεῖ. ὁμοίως δὲ καὶ τὰ φύλλα καὶ ὁ καρπός. παύει δὲ καὶ ὀσφύος ἄλγημα. καὶ γάλα κατασπᾷ μετ' οἴνου ἢ ῥοφήματος ληφθεῖσα.

Περὶ ὠκιμοειδοῦς. ΚΕΦ. λ'.

Ὠκιμοειδές. οἱ δὲ φιλεταίριον φύλλα μὲν ἔχει ὠκίμῳ ὅμοια. κλῶνας δὲ σπιθαμιαίους. δασεῖς. λοβοὺς δὲ παραπλησίους ὑοσκυάμῳ. πλήρεις σπέρματος μέλανος. ἐοικότας μελανθίῳ. δύναμιν δὲ ἔχει τὸ σπέρμα πινόμενον ἐν οἴνῳ, ἐχιοδήκτοις καὶ τὰ ἄλλα τῶν ἑρπετῶν δήγματα θεραπεύειν. δίδοται δὲ καὶ ἰσχιαδικοῖς μετὰ σμύρνης καὶ πεπέρεος. ῥίζα δ' ὕπεστι λεπτὴ καὶ ἄχρηστος.

Περὶ ἐρίνου. ΚΕΦ. λα'.

Ἔρινος. φύεται παρὰ ποταμοῖς καὶ κρήναις. φύλλα ἔχει ὠκίμοις ὅμοια. μικρότερα δὲ καὶ ἐπεσχισμένα ἐκ τῶν ἄνωθεν μερῶν. κλωνία δὲ ε' ἢ ς'. σπιθαμιαῖα. ἄνθη λευκά. καρπὸν

δὲ μέλανα μικρὸν στυφνόν. ὅπου δὲ μεσός ἐστιν ὁ καυλὸς καὶ τὰ πέταλα. Τούτων ὁ καρπὸς < β. πλῆθος μιγεὶς πρὸς μέλιτος τέσσαρας ῥεύματα ὀφθαλμῶν ἐγχριόμενος ἵστησιν. ὁ δὲ χυλὸς ὤτων πόνον παύει μετὰ θείου ἀπύρου καὶ νίτρου ἐνσταζόμενος.

Περὶ ἀγρώστεως. Κεφ. χιβ'.

Ἄγρωστις κλημάτια γονατώδη ἕρποντα ἐπὶ τῆς γῆς, καὶ ἀπὸ τῶν κλάδων προϊέμενα ῥίζας γλυκείας γονατώδεις. φύλλα ὀξέα σκληρὰ πλατέα. ὡς καλάμου μικροῦ. τρέφοντα βόας καὶ κτήνη. Ταύτης ἡ ῥίζα καταπλαττομένη λεία, τραύματα κολλᾶ. τὸ δὲ ἀφέψημα αὐτῆς πινόμενον, πρὸς στρόφους ποιεῖ καὶ δυσουρίαν. καὶ τὰ περὶ τὴν κύστιν περιττώματα λιθώδη θρύπτει.

Περὶ καλαμαγρώστεως. Κεφ. χιγ'.

Καλαμάγρωστις. μείζων ἐστὶ κατὰ πάντα τῆς ἀγρώστεως. ἔστι δὲ κτηνῶν ἀναιρετικὴ βρωθεῖσα. καὶ μάλιστα ἡ ἐν βαβυλῶνι παρὰ ταῖς ὁδοῖς φυομένη.

Περὶ τῆς ἐν παρνασῷ ἀγρώστεως Κεφ. χιδ'.

Ἡ δὲ ἐν τῷ παρνασῷ γινομένη ἄγρωστις, πολυκλαδωτέρα ἐστί. φύλλα δὲ κισσῷ ὅμοια φέρει. ἄνθος λευκὸν, καὶ εὐῶδες, καρπὸν, μικρόν. οὐκ ἄχρηστον. ῥίζας ε' ἢ ς'. δακτύλου, πάχος. λευκάς. μαλακάς. γλυκείας ἰσχυράς. ὧν ὁ χυλὸς ἑψηθεὶς σὺν οἴνῳ καὶ μέλιτι συμμέτρῳ καὶ σμύρνης ἡμίσει μέρει, πεπέρεώς τε καὶ λιβανωτοῦ τῷ τρίτῳ, φαρμακόν ἐστιν ἄριστον πρὸς ὀφθαλμούς. ἀποτίθεται δὲ ἐν χαλκῇ πυξίδι. τὸ δὲ ἀφέψημα τῶν ῥιζῶν, ποιεῖ πρὸς ἃ καὶ αὐτή. τὸ δὲ σπέρμα ταύτης ἰσχυρῶς διουρητικὸν, καὶ ἐμέτων καὶ κοιλίας ῥεούσης σταλτικόν. Ἡ δὲ ἐν κιλικίᾳ γινομένη, ἣν οἱ ἐπιχώριοι κίνναν καλοῦσιν, ὑγρὰ βρωθεῖσα πολλάκις, πιμπρῆσι τοὺς βόας.

Περὶ σιδηρίτιδος. Κεφ. χιε'.

Σιδηρῖτις. οἱ δὲ ἡράκλειαν. πόα ἐστὶ φύλλα ἔχουσα ὅμοια πρασίῳ. ἐπιμηκέστερα δὲ πρὸς τὰ τοῦ ἐλελισφάκου ἢ δρυὸς μικρότερα μέντοι καὶ τραχέα. καυλοὺς δὲ ἀνίησι τετραγώνους.

σπιθαμιαίους ἢ καὶ μείζονας. οὐκ ἀειδεῖς ἐν τῇ γεύσει. καὶ πόσως ἐπιστύφοντας. ἐν οἷς ἐκ διαστημάτων σπόνδυλοι περιφερεῖς ὥσπερ πρασίου. καὶ ἐν αὐτοῖς σπέρμα μέλαν φύεται δὲ ἐν ἐπιπέδοις χωρίοις. Δύναμιν δὲ ἔχει τὰ φύλλα καταπλασσόμενα, τραυματικὴν κολλητικὴν καὶ ἀφλέγμαντον.

Περὶ ἑτέρας σιδηρίτιδος. Κεφ. χιϛʹ.

Ἄλλη σιδηρῖτις, κλῶνας ἔχει διπήχεις. λεπτούς. φύλλα δὲ ὡσεὶ μόσχων μακρῶν, ὅμοια τοῖς τῆς πτερίδος. ἀκροσχιδῆ πολλὰ ἑκατέρωθεν. ἐκ δὲ τῶν ἀνωτέρω μασχαλῶν, ἀποφύσεις μακράς. λεπτάς. ἐπ' ἄκρου σφαιροειδεῖς. κεφαλὴν ἐχούσας τραχεῖαν. ἐν οἷς σπέρμα ὅμοιον σεύτλῳ. στρογγυλώτερον δὲ καὶ σκληρότερον. δύναμις δὲ καὶ ταύτης ἐστὶ καὶ τῶν φύλλων τραυματική.

Περὶ ἑτέρας σιδηρίτιδος. Κεφ. χιζʹ.

Ἔτι καὶ ἑτέρα εἶναι λέγεται σιδηρῖτις. ἣν καὶ αὐτὴν κρατεύας ἡράκλειαν καλεῖ. φυομένην ἐν τοίχοις καὶ ἀμπελῶσιν. ἔχουσα φύλλα πολλὰ ἀπὸ μιᾶς ῥίζης ὅμοια κοριάννῳ περὶ καυλίοις σπιθαμιαίοις. λείοις. τρυφεροῖς. ὑπολεύκοις. ἐνερευθέσιν. ἄνθη δὲ φοινικᾶ. μικρά. γευομένῳ πικρά. γλίσχρα. καὶ ταύτης ἡ δύναμις ἐπιτιθεμένης, κολλητικὴ ἐναίμων καὶ νεοτρώτων.

Περὶ Ἀχιλλείου. Κεφ. χιηʹ.

Ἀχίλλειος. καλοῦσι τινὲς καὶ τὴν ἀχίλλειον σιδηρῖτιν. φέρει δὲ ῥαβδία σπιθαμιαῖα ἢ καὶ μείζω. ἀτρακτοειδῆ. καὶ περὶ αὐτὰ φυλλάρια λεπτά. ἐκ πλαγίων ἐντομὰς ἔχοντα πυκνάς. προσεμφερῆ κορίῳ. ὑπόπυρα. γλίσχρα. πολύοσμα. οὐκ ἀηδῆ. φαρμακώδη δὲ τὴν ὀσμήν. σκιάδιον ἐπ' ἄκρου περιφερές. ἄνθη λευκὰ καὶ χρυσίζοντα. φύεται ἐν εὐγείοις τόποις. Καὶ τούτου ἡ κόμη λεία, ἐναίμων ἐστὶ κολλητική. καὶ ἀφλεγμάντος. αἱμοῤῥαγίας τε ἐφεκτική. καὶ τῆς ἐκ μήτρας ἐν προσθέτῳ. καὶ τὸ ἀφέψημα δὲ αὐτῆς ἐστὶν ἐγκάθισμα ῥοικαῖς. πίνεται δὲ καὶ πρὸς δυσεντερίαν.

Περὶ Βάτου. Κεφ. χιθʹ.

Βάτος. ἣν γινώσκομεν στύφει καὶ ξηραίνει. τρίχας βάπτει. τὸ

δὲ ἀφέψημα τῶν ἀκρεμόνων αὐτῆς, κοιλίαν ἵστησι πινόμενον. καὶ ῥοῦν ἐπέχει γυναικεῖον καὶ πρηστῆρος δήγματι εὐθετεῖ. κρατύνει δὲ καὶ οὖλα καὶ ἄφθας ὑγιάζει διαμασώμενα τὰ φύλλα. καὶ ἕρπητας ἐπέχει. καὶ ἀχῶρας τοὺς ἐν κεφαλῇ θεραπεύει. καὶ ὀφθαλμῶν προπτώσεις. καὶ κονδυλώματα. καὶ αἱμορροΐδας καταπλασσόμενα τὰ φύλλα. καὶ ἐπὶ στομάχων δὲ καὶ καρδιακῶν λεῖα ἐπιτιθέμενα ἁρμόζει. ὁ δὲ χυλὸς αὐτῆς ἐκθλιβέντων τῶν καυλῶν καὶ τῶν φύλλων, συστραφεὶς ἐν ἡλίῳ, βέλτιον ποιεῖ εἰς πάντα τὰ εἰρημένα. τοῦ δὲ καρποῦ αὐτοῦ ὁ χυλὸς πεπείρου ὄντος τελείως εἰς τὰ στοματικὰ ἁρμόζει. ἵστησι δὲ καὶ κοιλίαν ἐσθιόμενος ὁ μέσος πέπειρος. καὶ τὸ ἄνθος δὲ αὐτῆς ποθὲν σὺν οἴνῳ, κοιλίαν ἵστησι.

## Περὶ ἰδαίας βάτου. Κεφ. χκ.

Βάτος ἰδαία ἐκλήθη μὲν διὰ τὸ πολλὴν ἐν τῇ Ἴδῃ γίνεσθαι. ἔστι δὲ ἁπαλωτέρα πολλῷ τῆς πρὸ αὐτῆς. ἀκάνθας μικρὰς ἔχουσα. δύναται δὲ τὰ αὐτὰ τῇ πρὸ αὐτῆς. ἐκ περισσοῦ δὲ τὸ αὐτῆς ἄνθος σὺν μέλιτι λεανθέν, ὀφθαλμικαῖς φλεγμοναῖς περιχριόμενον βοηθεῖ. καὶ ἐρυσιπέλατα σβέννυσι. στομαχικοῖς τε μεθ' ὕδατος ἐν ποτῷ δίδοται.

## Περὶ ἐλξίνης. Κεφ. χκα.

Ἐλξίνη ἔχει φύλλα ὅμοια κισσῷ. ἐλάττονα δὲ καὶ κλωνία μικρά. περιπλεκόμενα ὅπου ἂν τύχοι. φύεται δὲ ἐν φραγμοῖς καὶ ἀμπελῶσι καὶ σίτῳ. Δύναμιν δὲ ἔχει τῶν φύλλων ὁ χυλὸς πινόμενος λυτικὴν κοιλίας.

## Περὶ ἐλατίνης. Κεφ. χκβ.

Ἐλατίνη τὰ μὲν φύλλα ἔχει ὅμοια τῇ ἐλξίνῃ. μικρότερα δὲ καὶ στρογγυλώτερα. δασέα. κλῶνας, λεπτούς. σπιθαμιαίους ε' ἢ ς' ἀπὸ τῆς ῥίζης. φύλλων πλήρης στρυφνῶν ἐν τῇ γεύσει. φύεται ἐν σίτοις καὶ τόποις ἐργασίμοις. Δύναμιν δὲ ἔχει τὰ φύλλα καταπλαττόμενα σὺν ἀλφίτοις, φλεγμαίνοντας καὶ ῥευματιζομένους ὠφελεῖν ὀφθαλμούς. ἑψηθεῖσα δὲ καὶ ῥοφουμένη δυσεντερίαν ἵστησιν.

### Περὶ Εὐπατωρίου. Κεφ. χηγ´.

Ε ὑπατώριον· πόα ἐστὶ φρυγανώδης, ῥάβδον ἀναφέρουσα μίαν, λεπτήν, ξυλώδη, ὀρθήν, μέλαιναν, ἐνδασεῖαν, πηχυαίαν ἢ καὶ μείζονα· φύλλα δὲ ἐκ διαστημάτων ἐσχισμένα μάλιστά που εἰς πέντε μοίρας ἢ καὶ πλείους, τοῖς τῆς πενταφύλλου ἢ καννάβεως μᾶλλον ἐοικότα· καὶ αὐτὰ δὲ ὑπομέλανα, πριονοειδῶς ἐξ ἄκρων ἐντετμημένα· σπέρμα δὲ περιπέφυκεν ἀπὸ μέσου τοῦ καυλοῦ, ὑπόδασυ, κάτω νευκός, ὡς καὶ τοῖς ἱματίοις ἐνίσχεσθαι ξηρανθέν. Ταύτης τὰ φύλλα μετὰ στέατος χοιρείου παλαιοῦ λεῖα ἐπιτεθέντα, τὰ δυσεπούλωτα τῶν ἑλκῶν ἰᾶται· τὸ δὲ σπέρμα καὶ ἡ πόα μετ' οἴνου πινόμενα, δυσεντερικοὺς καὶ ἑρπετοδήκτους ὠφελεῖ. ἔνιοι ταύτην ἀρτεμισίαν ἐκάλεσαν πλανηθέντας· ἑτέρα γάρ ἐστιν ὡς ὑπεδείξαμεν.

### Περὶ Πενταφύλλου. Κεφ. χηδ´.

Π εντάφυλλον καλοῦσι· κλῶνας φέρει καρφοειδεῖς, λεπτούς, σπιθαμιαίους, ἐφ' ὧν ὁ καρπός· φύλλα δὲ ἔχει ἐοικότα ἡδυόσμῳ, πέντε καθ' ἕκαστον μόσχον, σπανίως δέ που πλείονα, κύκλωθεν ἐσχισμένα πριονοειδῶς· ἄνθος δὲ ὠχρόλευκον, χρυσοειδές. φύεται δὲ ἐν ἐφύδροις τόποις καὶ παρ' ὀχετοῖς. ῥίζαν δὲ ἔχει ὑπέρυθρον, ἐπιμήκη, παχυτέραν ἐλλεβόρου μέλανος. ἔστι δὲ πολύχρηστος. Δύναται δὲ τὸ τῆς ῥίζης ἀφέψημα ἄχρι τρίτου καταβιβασθὲν ἐν τῇ ἑψήσει, ὀδονταλγίας παύειν διακρατούμενον ἐν τῷ στόματι· καὶ σηπεδόνας τὰς ἐν τῷ στόματι διακλυζόμενον ἵστησι· καὶ τραχύτητας ἀρτηρίας ἀναγαργαριζόμενον παραιτεῖται· κοιλίᾳ τε ῥεούσῃ καὶ δυσεντερίᾳ βοηθεῖ· ἀρθρητικοῖς τε καὶ ἰσχιαδικοῖς πινόμενον. ἑφθὴ δὲ ἐν ὄξει λεία καταπλασσομένη, ἕρπητας ἐπέχει· διαφορεῖ χοιράδας, σκληρίας, οἰδήματα, ἀνευρίσματα, ἀποστήματα, ἐρυσιπέλατα· πτερύγια τὰ ἐν δακτύλῳ, καὶ κονδυλώματα καὶ ψώρας ἰᾶται. ὁ δὲ χυλὸς τῆς ῥίζης ἁπαλῆς, ποιεῖ πρὸς τὰ ἐν ἥπατι καὶ πνεύμονι πάθη καὶ τὰ θανάσιμα. τὰ δὲ φύλλα πίνεται καὶ μεθ' ὑδρομέλιτος ἢ οἴνου κεκραμένου καὶ πεπέρεως ὀλίγου πρὸς περιοδους. ἐπὶ μέν τοι τεταρταίου, καὶ τεσσάρων κλωναρίων φύλλα.

ἤδη δὲ τεταρταίου τριῶν. ἤδη δὲ ἀφημερινοῦ ἑνός. ἀρήγει δὲ καὶ ἐπιληψίαις πινόμενα ἐφ' ἡμέρας λ'. ὑγιάζει δὲ καὶ ἴκτερον ταχέως ὁ χυλὸς τῶν φύλλων ποθεὶς ἐπί τινας ἡμέρας τριῶν κυάθων πλῆθος. φύματά τε καὶ σύριγγας μεθ' ἁλῶν καὶ μέλιτος καταπλαττόμενα ἰᾶται. βοηθεῖ δὲ καὶ ἐντεροκηλικοῖς. καὶ αἱμορραγίας ἵστησι πινόμενον καὶ καταπλασσόμενον. τέμνεται δὲ καὶ πρὸς καθαρμοὺς καὶ αἱμορραγίας καὶ ἁγνείας.

Περὶ φοίνικος. Κεφ. χκέ.

Φοίνιξ. οἱ δὲ, ῥοῦν. οἱ δὲ ἀγχίνωπα. τὰ μὲν φύλλα ἔχει ὅμοια κριθῇ. βραχύτερα δὲ καὶ στενώτερα. στάχυν δὲ ἐμφερῆ τῇ αἴρᾳ. κλῶνας δὲ ἑξαδακτύλους κύκλῳ τῆς ῥίζης. καὶ στάχυς ζ' ἢ η'. φύεται δὲ ἐν ἀρούραις. καὶ ἤδη τῶν στεγῶν τῶν νεοκαταχρίστων. Δύναμιν δὲ ἔχει πινόμενον ἐν οἴνῳ αὐστηρῷ, διαῤῥοίας καὶ αἱμορραγίαν τὴν ἐκ μήτρας καὶ οὔρων πλείονα φορὰν ἱστᾶν. ἱστοροῦσι δέ τινες καὶ ἴσχαιμον αὐτὴν εἶναι ἐνδεσμουμένην φοινικῷ ἐρίῳ καὶ περιαπτομένην.

Περὶ ἰδαίας ῥίζης. Κεφ. χκς.

Ἰδαία ῥίζα. ὀξυμυρσίνῃ τὰ φύλλα ἔοικε. παρ' αὐτὰ δὲ ὡς ἕλικες μικραὶ πεφύκασιν. ἐξ ὧν καὶ τὸ ἄνθος. ταύτης ἡ ῥίζα στυπτικὴ σφόδρα, ἁρμόζουσα ἐφ' ὧν στύψεως ἐστὶ χρεία. πίνεται δὲ καὶ πρὸς κοιλίας ῥεύματα καὶ ῥοῦν γυναικεῖον. αἱμορραγίαν τε πᾶσαν ἵστησι.

Περὶ ῥοδίας ῥίζης. Κεφ. χκζ'.

Ῥοδία ῥίζα. γεννᾶται ἐν μακεδονίᾳ. ἐοικυῖα κόστῳ. κουφοτέρα δὲ καὶ ἀνώμαλος. ῥόδων ἐν τῇ διατρίψει ἀποφορὰν ποιοῦσα ὁμοίαν. χρησιμεύει δὲ ἤδη τῶν κεφαλαλγούντων σὺν ῥοδίνῳ ὀλίγῳ λεπτῇ ἐπιτιθεμένη καὶ ἐμβρεχομένη μετώπῳ καὶ κροτάφοις.

Περὶ ἱππουρίδος. Κεφ. χκθ'.

Ἵππουρις. φύεται ἐν τόποις ἐφύδροις καὶ τάφροις. καυλία κενά. ὑπέρυθρα. ὑπότραχεα. στερεά. γόνασι διειλημμένα. ἐμπεφυκόσιν εἰς ἄλληλα. περὶ δὲ αὐτὰ σχοινώδη φύλλα πυκνά.

λεπτά. αὔξεται δὲ εἰς ὕψος ἀναβαίνουσα ἐπὶ τὰ παρακείμενα στελέχη καὶ κατακρημνᾶται περικεχυμένη κόμαις πολλαῖς μελαίναις καθάπερ ἵππου οὐρά. ῥίζα ξυλώδης. σκληρά. Στυπτικὴ δὲ ἡ πόα. ὅθεν ὁ χυλὸς αὐτῆς αἱμοῤῥαγίας ἵστησι τὰς ἐκ μυκτήρων. καὶ δυσεντερίας ὠφελεῖ πινόμενος μετ' οἴνου. κινεῖ δὲ οὖρα. τὰ δὲ φύλλα ἔναιμα τραύματα κολλᾷ λεῖα ἐπιπασσόμενα. ἡ δὲ ῥίζα καὶ ἡ πόα βήσσουσί τε καὶ ὀρθοπνοϊκοῖς καὶ ῥηγματίαις ἀρήγει. ἱστορεῖται δὲ καὶ ἐντέρου διαιρέσεις. καὶ κύστεως διακοπήν. καὶ ἐντεροκήλην συνάγειν τὰ φύλλα πινόμενα ἐν ὕδατι.

Περὶ ἑτέρας ἱππουρίδος. Κεφ. χκθ΄.

Ἵππουρις ἑτέρα. κόμας ἐκ διαστημάτων ἔχουσα βραχυτέρας καὶ λευκοτέρας καὶ μαλακωτέρας. ἥτις καὶ αὐτὴ λεανθεῖσα σὺν ὄξει τραύματα ἰᾶται τὴν αὐτὴν ἔχουσα δύναμιν.

Περὶ κόκκου βαφικῆς. Κεφ. χλ΄.

Κόκκος βαφική. θάμνος ἐστὶ μικρὸς φρυγανώδης ᾧ πρόσκεινται οἱ κόκκοι ὡς φακοί. οἵτινες ἐκλεγόμενοι συντίθενται. ἀρίστη δέ ἐστιν ἡ γαλατικὴ καὶ ἡ ἀρμενιακή. ἔπειτα ἡ ἐν ἀσίᾳ καὶ ἡ κιλίκιος. ἐσχάτη δὲ πασῶν ἡ ἐν ἱσπανίᾳ. Δύναμιν δὲ ἔχει στυπτικήν. ἁρμόζουσαν τραύμασι καὶ νεύρων τρώσεσι. λεία μετὰ ὄξους καταπλασσομένη. γίνεται δὲ ἡ ἐν κιλικίᾳ ἐν τοῖς δρυσὶν ὁμοίως κοχλίᾳ μικρῷ. ἣν αἱ τῇδε γυναῖκες τῷ στόματι ἀναλέγουσαι κόκκον καλοῦσιν.

Περὶ τραγίου. Κεφ. χλα΄.

Τράγιον. φύεται μὲν ἐν κρήτῃ μόνῃ. ἔχει δὲ τὰ φύλλα σχίνῳ ὅμοια. καὶ τὰς ῥάβδους καὶ τὸν καρπόν. μικρότερα δὲ πάντα. φέρει δὲ ὀπὸν κόμμει παραπλήσιον. Ταύτης τὰ φύλλα καὶ ὁ καρπὸς καὶ τὸ δάκρυον καταπλασσόμενα σὺν οἴνῳ, ἐπισπᾶται σκόλοπας καὶ πάντα τὰ ἐμπηγνύμενα. πινόμενα δὲ στραγγουρίαν ἰᾶται. καὶ λίθους τοὺς ἐν κύστει θρύπτει. καὶ καταμήνια ἄγει. λαμβάνεται δὲ ὁλκὴν < α΄. φασὶ δὲ καὶ τὰς ἀγρίας αἶγας τοξευθείσας καὶ νεμηθείσας τὴν

πόαν, ἐκβάλλειν τὰς ἀκίδας.

Περὶ ἄλλου τραγίου. Κεφ. ρλβ΄.

Τράγιον ἄλλο. τὰ μὲν φύλλα ἔχει ὅμοια σκολοπενδρίῳ, ῥίζαν δὲ λεπτὴν. λευκήν. παραπλησίαν ῥαφανίῳ ἀγρίᾳ. ἥ τις βοηθεῖ δυσεντερικοῖς ὠμή τε καὶ ἑφθὴ ἐσθιομένη. προβάλλει δὲ κατὰ τὸ φθινόπωρον τὰ φύλλα τράγου ὀσμήν. ὅθεν καὶ ὠνόμασται τράγιον.

Περὶ τράγου. Κεφ. ρλγ΄.

Τράγος. οἱ δὲ, σκορπίον. οἱ δὲ, τράγανος. φύεται παρὰ θαλάττῃ μάλιστα. θαμνίσκος ἐπὶ γῆς. ἐπιμήκης. οὐ μέγας. ὅσον σπιθαμῆς ἢ μείζων. φύλλα δὲ οὐκ ἔχει. ἐπὶ δὲ τῶν κλάδων πρόσκεινται οἱονεὶ ῥᾶγες μικραί. πυῤῥαί. κατὰ μέγεθος πυροῦ. ὀξεῖαι ἐπ' ἄκρου. πολλαί. λίαν γευσαμένῳ στυπτικαί. τούτου ὁ καρπὸς ὡς ῥᾶγες δέκα σὺν οἴνῳ ποθεῖσαι, κοιλιακοὺς καὶ ῥοϊκὰς γυναῖκας ὠφελοῦσιν. ἔνιοι δὲ καὶ κόπτοντες αὐτὸν, ἀναπλάττουσι τροχίσκους εἰς ἀπόθεσιν καὶ οὕτω χρῶνται.

Περὶ σχίνου. Κεφ. ρλδ΄

Σχινοσλεία. τὸ μέντοι αὐτοῦ καλεῖται σχῖνος λεία. τὸ δὲ, ὀξύσχινος ἀπόξυς ἐπ' ἄκρου. διττὸν δὲ καὶ ταύτης εἶδος. ἡ μὲν γὰρ ἄκαρπος. οἱ δὲ, καρπὸν μέλανα ἔχει περιφερῆ. παχύτεροι δὲ ταύτης οἱ κάλαμοι, καὶ σαρκωδέστεροι. ἔστι δὲ καὶ τρίτη πολλῷ σαρκωδεστέρα καὶ τραχυτέρα τοῖν δυοῖν, ὁλόσχινος λεγομένη. ἔχει δὲ καὶ αὐτὴ καρπὸν ἐπ' ἄκρου ὅμοιον τῷ πρὸ αὐτῆς. ἀμφοτέρων δὲ ὁ καρπὸς φρυγεὶς καὶ πινόμενος μετὰ κράματος, κοιλίαν καὶ ῥοῦν ἐρυθρὸν ἵστησι. καὶ οὖρα κινεῖ. ἔστι δὲ καὶ κεφαλαλγής. τὰ δὲ πρὸς τὴν ῥίζαν ἁπαλὰ φύλλα καταπλαττόμενα, φαλαγγιοδήκτοις ἁρμόζει. ἡ δὲ αἰθιοπικὴ σχῖνος, ὑπνωτικὸν ἔχει τὸν καρπόν. φυλάττεσθαι δὲ δεῖ αὐτοῦ ἐν ταῖς πόσεσι τὸ πλῆθος. καροῖ γὰρ λίαν.

Περὶ λειχῆνος. Κεφ. ρλε΄.

Λειχὴν ὁ ἐπὶ τῶν πετρῶν. οἱ δὲ, βρύον καλοῦσι. βρύον δέ ἐστι προσεχόμενον ταῖς ἐνδρόσοις πέτραις. τοῦτο καταπλασθὲν αἱμοῤῥαγίας ἵστησι, καὶ φλεγμονὰς παραιτεῖται. καὶ λει

χῆνας θεραπεύει. ὠφελεῖ δὲ καὶ ἰκτερικοὺς μετὰ μέλιτος διαχριόμενον. στόματος δὲ καὶ τῆς γλώττης ῥευματισμοὺς παραιτεῖται.

Περὶ παρωνυχίας. Κεφ. ρλς'.

Παρωνυχία φύεται ἐν πέτραις θαμνίσκιον ὅμοιον πεπλῷ. τῷ δὲ μήκει ἔλαττον. τοῖς δὲ φύλλοις μεῖζον. ὅπερ καταπλασθὲν λεῖον ὅλον παρωνυχίας καὶ κηρία θεραπεύει.

Περὶ χρυσοκόμης. Κεφ. ρλζ'.

Χρυσοκόμη ῥαβδίον ἐστὶ σπιθαμιαῖον. ἔχον κόμην κορυμβοειδῆ. ὁμοίαν ὑσσώπῳ. ῥίζαν δασεῖαν. λεπτὴν, ὡς ἐλλεβόρου μέλανος. γευσαμένῳ οὐκ ἀηδῆ. κυπέρῳ ἴσην οὖσαν. ἐν τῷ γλυκεῖ ὑπαύστηρον. φύεται ἐν παλισκίοις καὶ πετρώδεσι. Δύναμιν δὲ ἔχει θερμαντικὴν καὶ στυπτικὴν ἡ ῥίζα, ἡπατικοῖς καὶ περιπνευμονικοῖς ἁρμόζουσα. λαμβάνεται δὲ καὶ σὺν ὑδρομέλιτι ἑφθὴ πρὸς κάθαρσιν ὑστέρας.

Περὶ χρυσογόνου. Κεφ. ρλη'.

Χρυσόγονον. φύλλα ἔχει ὅμοια δρυΐ. ὁ δὲ θάμνος ἐστὶ πυκνός. ἄνθος δὲ παραπλήσιον τῷ στεφανωματικῷ φλόμῳ. ῥίζαν ὁμοίαν γογγύλῃ. ἔνδοθεν ἰσχυρῶς ἐρυθράν. ἔξωθεν δὲ μέλαιναν. ἥτις βοηθεῖ σὺν ὄξει λεανθεῖσα καὶ ἐπιτεθεῖσα μυγαλῆς δήγμασιν.

Περὶ ἑλιχρύσου Κεφ. ρλθ'.

Ἑλίχρυσον. οἱ δὲ χρυσάνθεμον. οἱ δὲ, καὶ τοῦτο ἀμάραντον καλοῦσιν. ᾧ καὶ τὰ εἴδωλα στεφανοῦσι. ῥαβδίον λευκὸν χλωρόν. ὀρθόν. στερεόν. φύλλα στενά. ἐκ διαστημάτων ἔχον πρὸς τὰ τοῦ ἀβροτόνου. κόμην, κυκλοτερῆ. χρυσοφανῆ. σκιάδιον περιφερὲς ὥσπερ κορύμβους ξηρούς. ῥίζαν, λεπτήν. φύεται δὲ ἐν τραχέσι καὶ χαραδρώδεσι τόποις. Βοηθεῖ δὲ ἡ κόμη σὺν οἴνῳ ποθεῖσα, δυσουρίαις καὶ ἑρπετῶν δήγμασι, καὶ ἰσχιάσι καὶ ῥήγμασι. καὶ ἔμμηνα ἄγει. καὶ θρόμβους αἵματος τοὺς ἐν κύστει ἢ κοιλίᾳ τήκει σὺν οἰνομέλιτι πινομένη. ἴσχει δὲ καὶ καταῤῥοῦν ὅσον τριώβολον νήστει δοθεῖσα ἐν κράματι οἴνου λευκοῦ. συντίθεται δὲ καὶ μετὰ ἱματίων ἀ-

βρωτὰ τηροῦσα αὐτά.

### Περὶ χρυσανθέμου. κεφ. χμ'.

Χρυσάνθεμον ἢ χαλκάς. ζυφεράτις πόα. θαμνοειδὴς δέ. λεί-
ους ἀναφέρουσα καυλοὺς καὶ φύλλα πολυσχιδῆ. ἄνθη μή-
λινα. ἰσχυρῶς στίλβοντα. καὶ ὀφθαλμὸν κυκλοτερῆ. διὸ καὶ
οὕτως ὠνόμασται. φύεται περὶ τὰς πόλεις. οἱ καυλοὶ δ' αὐ-
τοῦ λαχανεύονται. Τὰ δ' ἄνθη λεῖα μετὰ κηρωτῆς, στεατώ-
ματα λέγεται διαφορεῖν. ἰκτερικοὺς δὲ προσκαίρως εὐχροεῖν
ποιεῖ ποθεῖσα μετὰ τὴν ἐν τοῖς λουτροῖς ἀπὸ τῆς μακρᾶς δια-
τριβῆς ἔξοδον.

### Περὶ Ἀγηράτου. κεφ. χμα'.

Ἀγήρατον. θάμνος ἐστὶ φρυγανώδης. σπιθαμώδης. ταπεινός.
ἁπλοῦς. ἐμφερὴς μάλιστα ὀριγάνῳ. σκιάδιον ἔχων. ἐφ' οὗ
ἄνθος πομφυλυγῶδες. χρυσοειδὲς ἔλαττον ἑλιχρύσου. ὠνό-
μασται δὲ ἀγήρατον, διὰ τὸ ἐπὶ πολὺ τὸ ἄνθος ὁμοιοειδὲς φυ-
λάττεσθαι. Δύναμιν δὲ ἔχει τὸ ἀφέψημα αὐτοῦ πυρωτικήν.
καὶ αὐτὴ ἡ πόα ὑποθυμιωμένη οὖρα ἄγειν. καὶ τὰ περὶ ὑστέραν μαλάτ-
τειν.

### Περὶ περιστερεῶνος κεφ. χμβ'.

Περιστερεών. φύεται ἐν ἐνύδροις τόποις. δοκεῖ δὲ ὠνομάσθαι ἐκ
τοῦ τὰς περιστερὰς ἡδέως διατρίβειν ἐν αὐτῇ. πόα δ' ἐστὶ σπι-
θαμὴν ἔχουσα τὸ ὕψος. ἢ καὶ μεῖζον. πέταλα. ἐντετμημένα.
ὑπόλευκα. ἐκπεφυκότα ἐκ τοῦ καυλοῦ. μονόκλωνος ὡς
τὸ πολὺ καὶ μονόρριζος εὑρίσκεται. Δοκεῖ δὲ τὰ φύλλα
σὺν ῥοδίνῳ ἢ στέατι χοιρείῳ νεαρῷ προστιθέμενα, ἀνωδυνίαν
ὑστέρας ποιεῖν. στέλλει δὲ καὶ ἐρυσιπέλατα σὺν ὄξει κατα-
πλασθεῖσα. καὶ σηπεδόνας ἐπέχει. καὶ τραύματα κολλᾷ,
καὶ ἀπουλοῖ τὰ παλαιὰ σὺν μέλιτι.

### Περὶ ἱερᾶς βοτάνης. κεφ. χμγ'.

Ἱερὰ βοτάνη οἱ δὲ περιστερεῶνα ἐκάλεσαν ῥάβδους ἀνίησι πη-
χυαίους ἢ καὶ μείζονας γωνιοειδεῖς. περὶ ἃς τὰ φύλλα ἐκ δια-
στημάτων ἐοικότα δρυΐ. πολὺ στενώτερα καὶ ἥττονα. ἐντετμη-
μένα δέ. τὰ κύκλῳ ὑπόγλαυκα. ῥίζαν δὲ ὑπομήκη. λεπτήν.
ἄνθη πορφυρᾶ. λεπτά. Ταύτης τὰ φύλλα καὶ ἡ ῥίζα πο-

τριζόμενα μετ᾽ οἴνου καὶ καταπλασσόμενα, ποιεῖ πρὸς ἑρπετά. πρὸς δὲ ἴκτερον τὰ φύλλα ὅσον < ὁλκὴν μετὰ λιβανωτοῦ τριωβόλου, σὺν οἴνου παλαιοῦ κοτύλῃ μιᾷ νήστει ἐφ᾽ ἡμέρας μ΄. πινόμενα. οἰδήματά τε χρόνια καὶ φλεγμονὰς καταπλασθέντα πραΰνει. καὶ ῥυπαρὰ ἕλκη καθαίρει. ἑψηθεῖσα δὲ ὅλη σὺν οἴνῳ, ἐσχάρας τὰς ἐν παρισθμίοις περιττὰ καὶ νομὰς τὰς ἐν στόματι ἀναγαργαριζομένη ἐφίστησι. ῥαινόμενόν τε ἐν συμποσίοις τὸ ἀπόβρεγμα, εὐδιαγωγοτέρους ἱστορεῖται ποιεῖν. δίδοται δὲ τριταΐζουσι ποιεῖν τὸ τρίτον γόνυ ἀπὸ τῆς γῆς σὺν τοῖς περικειμένοις φύλλοις. τεταρταΐζουσι δὲ τὸ τέταρτον. καλοῦσι δὲ αὐτοὶ ἱερὰν βοτάνην διὰ τὸ εὔχρηστον ἐν τοῖς καθαρμοῖς εἶναι εἰς περιάμματα.

## Περὶ Ἀστραγάλου. Κεφ. χμδ΄.

Ἀστράγαλος θαμνίσκος ἐστὶ μικρὸς ἐπὶ γῆς. φύλλοις καὶ κλωνίοις ὅμοιος ἐρεβίνθῳ. ἄνθη πορφυρᾶ. μικρά. ῥίζα δὲ ὑποστρογγύλη ὥσπερ ῥάφανος εὐμεγέθης. παραφυάδας ἔχουσα στερεὰς μελαίνας. σκληροτέρας ὡς κέρατα αὐτῇ περιπλεγμένας ἀλλήλαις. γευσαμένῳ στυπτικάς. φύεται δὲ ἐν εὐανέμοις καὶ συσκίοις καὶ χιονιζομένοις τόποις. πολλὴ δὲ ἐν Μεμφίδι τῆς Ἀρκαδίας. ἵστησι δὲ κοιλίαν ῥευματιζομένην ἐν οἴνῳ ποθεῖσα ἡ ῥίζα, κινεῖ τε καὶ οὖρα ποιεῖ καὶ πρὸς παλαιὰ ἕλκη ξηρὰ ἐπιπασσομένη. καὶ αἷμα ἴσχει. κόπτεται δὲ δυσχερῶς διὰ τὸ στερεὸν αὐτῆς.

## Περὶ Ὑακίνθου. Κεφ. χμε΄.

Ὑάκινθος. φύλλα ἔχει ὅμοια βολβῷ. καυλὸν σπιθαμιαῖον. λεῖον. λεπτότερον τοῦ μικροῦ δακτύλου. χλωρόν. κόμην ἐπικείμενον κυρτὴν ἄνθους πλήρη πορφυροειδοῦς. ῥίζαν καὶ αὐτὴν ἐμφερῆ βολβῷ. ἥτις σὺν οἴνῳ καταπλασθεῖσα λευκῷ ἐπὶ παίδων, ἀνήβους τηρεῖν πεπίστευται. ἵστησι δὲ, καὶ κοιλίαν. καὶ οὖρα ἄγει ποθεῖσα. καὶ φαλαγγιοδήκτους ὠφελεῖ. ὁ καρπὸς δὲ στυπτικώτερος ὤν, καὶ αὐτὸς θηριακοῖς ἁρμόζει. ἴκτερόν τε ἀποκαθαίρει σὺν οἴνῳ πινόμενος.

## Περὶ Μήκωνος ῥοιάς. Κεφ. χμϛ΄.

Μήκων

Μήκων ῥοιάς. ὠνόμασται δὲ διὰ τὸ ταχέως τὸ ἄνθος ἀποβάλλειν. φύεται ἐν ἀρούραις. ἔαρος. ὅτε καὶ συλλέγεται. ἔοικε δὲ τὰ φύλλα ὀριγάνῳ. ἢ εὐζώμῳ ἢ χιχωρείῳ ἢ θύμῳ ἐσχισμένα. μακρότερα δὲ καὶ τραχέα. καυλὸν δὲ σχοινώδη. ὄρθιον τραχὺν ὡς πήχεως. ἄνθος φοινικοῦν ἐνίοτε δὲ καὶ λευκὸν ὅμοιον τῷ τῆς ἀγρίας ἀνεμώνης. κεφαλὴ δὲ προμήκης. ἥττων μέντοι ἢ τῆς ἀνεμώνης. καρπὸς πυῤῥός. ῥίζα ἐπιμήκης. ὑπόλευκος. δακτύλου ἔχουσα μικροῦ πάχος. πικρά.

Ταύτης τὰ κεφάλια πέντε ἢ ϛ΄. μετ' οἴνου κυάθων τριῶν ἑψήσας ὡς εἰς β΄. ἀναγαγεῖν πότιζε οὓς ἂν βούλει ὑπνῶσαι. τοῦ δὲ σπέρματος ποθὲν ὅσον ὀξύβαφον σὺν μελικράτῳ, κοιλίαν ἠπίως μαλάσσει. μίγνυται δὲ καὶ μελιτώμασι καὶ ἰτρίοις πρὸς τὸ αὐτό. τὰ δὲ φύλλα σὺν ταῖς κωδίαις καταπλασθέντα φλεγμονὰς ἰᾶται. καὶ τὸ ἄντλημα δὲ αὐτῶν ἀντληθὲν, ὑπνοποιόν ἐστι.

Περὶ μήκωνος ἡμέρου. Κεφ. χμζ΄.

Μήκων ἥμερος. κηπευτή. ἧς τὸ σπέρμα ἀρτοποιεῖται εἰς τὴν ἐν ὑγείᾳ χρῆσιν. καὶ σὺν μέλιτι δὲ ἀντὶ σησαμῆς αὐτῇ χρῶνται. καλεῖται δὲ θυλακῖτις ἐπιμήκης ἔχουσα τὸ κεφάλιον. καὶ τὸ σπέρμα λευκόν. Ἡ δέ τις ἀγρία ἐγκαθιμένην ἔχουσα τὴν κωδίαν. μέλαν σπέρμα. ὃ καὶ πιθῖτις ὀνομάζεται. ὑπ' ἐνίων δὲ ῥοιὰς καὶ αὐτή. διὰ τὸ ῥεῖν ἐξ αὐτῆς τὸν ὀπόν. Τρίτη δὲ ἀγριωτέρα καὶ φαρμακωδεστέρα καὶ μακροτέρα τούτων. ἔχουσα τὴν κωδίαν ἐπιμήκη. Κοινὴ δὲ αὐτῶν δύναμις ψυκτική. ὅθεν τὰ φύλλα καὶ αἱ κωδίαι καθεψηθεῖσαι ἐν ὕδατι καὶ προσαντλούμεναι, ὑπνοποιοῦσι. πίνεται δὲ πρὸς ἀγρυπνίαν τὸ ἀφέψημα. καὶ εἰς τὰ καταπλάσματα δὲ λεῖαι αἱ κωδίαι μετὰ ἀλφίτων μιγνύμεναι, πρὸς φλεγμονὰς καὶ ἐρυσιπέλατα ἁρμόζουσι. δεῖ δὲ κόπτοντας αὐτὰς χλωρὰς ἀναπλάττειν εἰς τροχίσκους. καὶ ξηραίνοντας ἀποτίθεσθαι. καὶ οὕτω χρῆσθαι. καθ' ἑαυτὰς δὲ ἑψηθεῖσαι αἱ κωδίαι ἐν ὕδατι μέχρις ἡμίσεως· εἶτα σὺν μέλιτι πάλιν ἑψηθεῖσαι, ἄχρις ἂν συστραφῇ τὸ ὑγρὸν, ποιοῦσι φάρμακον ἐκλεικτόν. ἀνώδυνον πρὸς βῆχας καὶ ῥευματι-

σμοὺς ἀρτηρίας καὶ κοιλιακὰς διαθέσεις. ἐνεργέστερον δὲ γίνεται μιγέντων αὐτῷ ἀπὸ κυαθίσκου χυλοῦ καὶ ἀκακίας. τὸ δὲ σπέρμα τῆς μελαίνης μήκωνος λεῖον σὺν οἴνῳ ποτίζεται πρὸς ῥεῦμα κοιλίας καὶ γυναικεῖον ῥοῦν. καταπλάσσεται δὲ ἐπὶ τῶν ἀγρυπνούντων μεθ' ὕδατος. κατὰ τοῦ μετώπου καὶ τῶν κροτάφων. ὁ δὲ ὀπὸς καὶ αὐτὸς ψύχων ἐπιπλέον καὶ παχύνων καὶ ξηραίνων. ληφθεὶς βραχὺς ὅσον ὄροβος, ἀνώδυνός ἐστι καὶ ὑπνοποιὸς καὶ πεπτικός. βοηθῶν βηξὶ καὶ κοιλιακαῖς διαθέσεσι. πλείων δὲ ποθεὶς βλάπτει. ποιῶν ληθαργικοὺς καὶ ἀναιρεῖ. ποιεῖ δὲ καὶ κεφαλαλγοῦσι σὺν ῥοδίνῳ ἐμβρεχόμενος. ὠταλγοῦσι δὲ σὺν ἀμυγδαλίνῳ καὶ κρόκῳ καὶ σμύρνῃ ἐγχεόμενος. ἐπὶ δὲ φλεγμοναῖς ὀφθαλμοῦ σὺν λεκύθῳ ὀπτῇ καὶ κρόκῳ. καὶ πρὸς ἐρυσιπέλατα δὲ καὶ τραύματα σὺν ὄξει. πρὸς δὲ ποδάγρας σὺν γάλακτι γυναικείῳ καὶ κρόκῳ. προστεθεὶς δὲ δακτύλῳ ἀντὶ βαλάνου ὕπνον ποιεῖ. κράτιστος δέ ἐστιν ὀπὸς ὁ πυκνὸς καὶ βαρύς. ἐν δὲ τῇ ὀσμῇ καρωτικός. πικρὸς ἐν τῇ γεύσει. εὐχερῶς διειμένος ὕδατι. λεῖος. λευκὸς οὐ τραχύς. οὔτε θρυμβοειδής. οὔτε συστρεφόμενος ἐν τῷ διηθεῖσθαι ὡς κηρός. ἔν τε τῷ ἡλίῳ τεθεὶς, διαχεόμενος καὶ πρὸς λύχνον ἐξαπτόμενος οὐ ζοφώδει φλογί. φυλάσσων τε μετὰ τὸ σβεσθῆναι τὴν ἐν τῇ ὀσμῇ δύναμιν. δολοῦσι δὲ αὐτὸν γλαυκίῳ μιγνύντες ἢ κόμμι. ἢ χυλὸν ἀγρίας θριδακος. ἔστι δὲ ὁ μὲν ἐκ τοῦ γλαυκίου κροκίζων ἐν τῇ ἀνέσει. ὁ δὲ ἐκ τῆς θριδακος ἐξίτηλος τὴν ὀσμὴν καὶ τραχύτερος. ὁ δὲ ἐκ τοῦ κόμμεως ἄτονος καὶ διαυγής. ἔνιοι δὲ εἰς τοσοῦτον ἀνίας παραγίνονται, ὡς καὶ στέαρ παραμιγνύναι αὐτῷ. φώγνυται δὲ εἰς τὰ ὀφθαλμικὰ ἐπὶ ὀστράκου καινοῦ ἕως ἂν μαλακώτερος καὶ πυρρότερος φανῇ. Ἐρασίστρατος μέν τοι Διαγόρας φησὶν ἀποδοκιμάζειν αὐτοῦ τὴν χρῆσιν ἐπὶ τῶν ὠταλγικῶν καὶ ὀφθαλμιώντων. διὰ τὸ ἀμβλυωπὲς εἶναι καὶ καρωτικόν. Ἀνδρέας δέ φησιν, ὅτι εἰ μὴ ἐδολοῦτο, ἐτυφλοῦντο ἂν οἱ ἐγχριόμενοι ὑπ' αὐτοῦ. Μνησίδημος δέ φησι μόνην αὐτοῦ χρῆσιν εἶναι τὴν κατ' ὄσφρησιν εἰς ὕπνον ἁρμόζουσαν. ἄλλως δὲ ἐπιβλαβῆ τυγχάνειν. ἅπερ ἐστὶ ψευδῆ ἀπὸ τῆς πείρας ἐλεγχόμενα. διὰ τὸ ἐπιμαρτυρεῖν

σθαι τοῖς ἔργοις τὴν ἐνέργειαν τοῦ φαρμάκου. οὐκ ἄτοπον δὲ ὑπογράψαι καὶ τὸν τρόπον ᾧ συλλέγουσι τὸν ὀπόν. ἔνιοι μὲν οὖν τὰς κωδίας μετὰ τῶν φύλλων κόπτοντες ἐκτρίβουσι διὰ πιεστῆρος. καὶ τρίβοντες ἐν θυίᾳ, ἀναπλάττουσι τροχίσκους. καλεῖται δὲ τὸ τοιοῦτον μηκώνειον ἀσθενέστερον τοῦ ὀποῦ. ὀπίζοντας δὲ δεῖ μετὰ τὸ τὰς δρόσους ἀνικμασθῆναι, περιγράφειν μαχαιρίῳ τὸν ἀστερίσκον. ὡς μὴ εἰς τὰ ἐντὸς διαζῆσαι. ἢ ἐκ πλαγίων δὲ τῆς κωδίας ἐπ' εὐθείας ἐκτέμνειν ἐξ ἐπιπολῆς. καὶ ἀποψᾶν τὸ δάκρυον ἐπερχόμενον δακτύλῳ εἰς μύακα. καὶ πάλιν ἐπιπορεύεσθαι μετ' οὐ πολύ. εὑρίσκεται γὰρ ἐπισυνεστώς. καὶ τῇ ἐπιούσῃ δὲ οὕτως εὑρίσκεται. δεῖ δὲ ἐν θυίᾳ τρίβειν καὶ ἀποψύχεσθαι ἀναπλάσσοντας. ἐν μέντοι τῷ τέμνειν ὀπίσω ἀναχωρεῖν δεῖ. πρὸς τὸ μὴ ἀποψᾶσθαι τῶν ἱματίων τὸν ὀπόν.

## Περὶ μήκωνος κερατίτιδος. Κεφ. ξη'.

Μήκων κερατῖτις. οἱ δὲ, παράλιον. οἱ δὲ, ἀγρίαν μήκωνα. οἱ δὲ, θαλάσσιον. φύλλα ἔχει λευκά. δασέα. ὅμοια φλόμῳ. πεπρισμένα τὴν περιφέρειαν. ὡς περ τὰ τῆς ἀγρίας μήκωνος. καὶ τὸν καυλὸν ὅμοιον. ἄνθος ὠχρόν. καρπὸν δὲ μικρόν. καμπύλον ὡς περ κέρας. ὅμοιον τῷ τῆς τήλιδος. ὅθεν καὶ ἐπωνόμασται. σπέρμα δὲ μικρόν. μέλαν ὅμοιον τῷ τῆς μήκωνος. ῥίζαν ἐξ ἐπιπολῆς φυομένην. μέλαιναν. παχεῖαν. φύεται ἐν παραθαλασσίοις τόποις καὶ τραχέσι. Δύναμιν δὲ ἔχει ἡ μὲν ῥίζα ἑψηθεῖσα ἄχρις ἡμίσους ἐν ὕδατι καὶ ποθεῖσα, ἰσχιάδας καὶ ἡπατικὰς διαθέσεις θεραπεύειν. καὶ τοὺς παχέα ἢ ἀραχνώδη οὐροῦντας ὠφελεῖν. τὸ δὲ σπέρμα πλῆθος ὀξυβάφου ποθὲν σὺν μελικράτῳ, κοιλίαν ἐπιεικῶς καθαίρει. τὰ δὲ φύλλα καὶ τὰ ἄνθη ἐσχάρας περιρρήττει καταπλασθέντα σὺν ἐλαίῳ. ἐγχρισθέντα δὲ τὰ ὠθὶ κτηνῶν ἄργεμα καὶ νεφέλια ἀποκαθαίρει. ἔνιοι δὲ ἐπλανήθησαν νομίσαντες ἐκ ταύτης τὸ γλαύκιον γίνεσθαι διὰ τὴν τῶν φύλλων ἐμφέρειαν.

## Περὶ μήκωνος ἀφρώδους. Κεφ. ξθ'.

Μήκων ἀφρώδης. ὑπὸ δέ τινων ἡράκλεια κληθεῖσα, καυλὸν

ἔχει σπιθαμιαῖον. καὶ τὰ φύλλα σφόδρα μικρά. στρουθίῳ ἐοικότα. καὶ καρπὸν παρ' αὐτοῖς λευκόν. καὶ τὸ ὅλον δὲ βοτάνιον λευκόν ἐστι καὶ ἀφρῶδες. ῥίζαν δὲ λεπτὴν ἐπὶ πλέον.

Ταύτης ὁ καρπὸς συλλέγεται ὅταν τελείως ἁδρυνθῇ θέρους. καὶ ξηρανθεὶς ἀποτίθεται. καθαίρει δὲ δι' ἐμέτων ὀξυβάφου πλῆθος σὺν μελικράτῳ λαμβανόμενος. ἰδίως δὲ ἡ τοιαύτη κάθαρσις ἐπιληπτικοῖς ἁρμόζει.

## Περὶ ὑπηκόου. Κεφ. χν'.

Ὑπήκοον. οἱ δὲ, ὑπόφεων καλοῦσι. φύεται δὲ ἐν τῷ σίτῳ καὶ ταῖς ἀρούραις. φύλλον δὲ ἔχει πηγάνῳ ὅμοιον. κλῶνας μικρούς. Δύναμιν δὲ ἔχει ἀναλογοῦσαν τῷ τοῦ μήκωνος ὀπῷ.

## Περὶ ὑοσκυάμου. Κεφ. χνα'.

Ὑοσκύαμος. θάμνος ἐστὶ καυλοὺς ἀνιεὶς παχεῖς. φύλλα πλατέα ἐπιμήκη. ἐσχισμένα. μέλανα. δασέα. παρὰ δὲ τὸν καυλὸν ἐφεξῆς πεφύκασιν ἄνθη ὡς ἐπὶ ῥοιᾶς κύτινοι. πεφραγμένοι ἀσπιδίσκοις. σπέρματος μεστοὶ ὡς ἐπὶ μήκωνος. ἔστι δὲ αὐτοῦ διαφορὰ τρισσή. ὁ μὲν γὰρ ἄνθη ὑποπόρφυρα φέρει. φύλλα σμίλακι ὅμοια. σπέρμα μέλαν. καὶ τοὺς κυτίνους σκληροὺς καὶ ἀκανθώδεις. ὁ δέ τις ἄνθη μηλοειδῆ. φύλλα καὶ λοβοὺς ἁπαλωτέρα. σπέρμα ὑπόξανθον ὡς ἐπὶ ἐρύσιμον. ἀμφότεροι δὲ οὗτοι μανιώδεις ὑπάρχουσι καὶ καρωτικοί. δύσχρηστοι. Εὔχρηστος δὲ εἰς θεραπείαν ὁ πιότατος ὢν ὁ τρίτος. λιπαρὸς καὶ ἁπαλὸς καὶ χνοώδης. ἄνθη λευκὰ ἔχων. καὶ τὸ σπέρμα λευκόν. φύεται παρὰ θαλάττῃ καὶ ἐρειπίοις. εἰ δὲ μὴ παρείη οὗτος, χρῆσθαι δεῖ τῷ ξανθῷ. τὸν δὲ μέλανα ἀποδοκιμάζειν ὡς χείριστον. Χυλίζεται δὲ ὁ καρπὸς ἁπαλὸς καὶ τὰ φύλλα καὶ οἱ καυλοὶ κοπτόμενοι καὶ ἐκθλιβόμενοι ἐν ἡλίῳ. ξηραινομένου τοῦ ὑγροῦ. χρῆσις δὲ αὐτοῦ πρὸς ἐνιαυτὸν διὰ τὸ εὔσηπτον. χυλίζεται δὲ καὶ τὸ σπέρμα αὐτοῦ κατ' ἰδίαν κοπτόμενον ξηρὸν, ὑφ' ὕδατος θερμοῦ παραχεομένου καὶ ἐκθλιβομένου. ἔστι δὲ βέλτιον τοῦ ὀποῦ τὸ χύλισμα. καὶ ἀνωδυνώτερον. ἡ δὲ χλωρὰ κοπεῖσα καὶ μιγεῖσα σιτανίῳ ἀλεύρῳ, ἀναπλάσσεται εἰς ἀρτίσκους καὶ ἀποτίθε-

ται. ἁρμόζει δὲ τὸ πρῶτον χύλισμα καὶ τὸ ἀπὸ ξηροῦ τοῦ σπέρματος εἰς κολλύρια ἀνώδυνα. καὶ πρὸς ῥεῦμα δριμὺ καὶ θερμόν. ὠταλγίαν τε καὶ τὰ περὶ ὑστέραν. σὺν ἀλεύροις δὲ ἢ ἀλφίτοις, πρός τε ὀφθαλμῶν φλεγμονὰς καὶ ποδῶν καὶ τὰς ἄλλας. τὸ δὲ σπέρμα τὰ αὐτὰ παρέχει. ποιοῦν καὶ πρὸς βῆχας καὶ καταῤῥοῦν καὶ ῥεῦμα ὀφθαλμῶν καὶ περιωδυνίας. πρός τε ῥοῦν γυναικεῖον καὶ τὰς ἄλλας αἱμοῤῥαγίας. ὅσον ὀβολὸς σὺν μήκωνος σπέρματι καὶ μελικράτῳ ποθέν. ἁρμόζει καὶ πρὸς ποδάγρας. ὄρχεις πεφυσωμένους. μαστοὺς ἐν τοκετῷ ἐπαιρομένους. λεῖον μετ᾿ οἴνου καταπλασσόμενον. καὶ εἰς τὰ ἄλλα ἀνώδυνα καταπλάσματα μίγνυται. ὠφελίμως. καὶ τὰ ἀναπεπλασμένα φύλλα, εἰς πάντα τὰ ἀνώδυνα εὔχρηστα μιγνύμενα ἀλφίτοις. καὶ καθ᾿ ἑαυτὰ καταπλασσόμενα. τὰ δὲ πρόσφατα φύλλα καταπλασθέντα, ἀνωδυνώτατα πρὸς πάντα πόνον. τρία δὲ ἢ τέτταρα ποθέντα σὺν οἴνῳ, ἠπιάλους πυρετοὺς θεραπεύει. ἑψηθέντα δὲ ὡς λάχανα καὶ βρωθέντα φυβλίου πλῆθος, μετρίαν παρακοπὴν ἐργάζεται. φασὶ δὲ ὅτι ἐάν τις ἕλκος ἔχοντα ἐν κώλῳ ἐγκλύσῃ, τὸ αὐτὸ ἀπεργάζεται. ἡ δὲ ῥίζα μετ᾿ ὄξους ἑψηθεῖσα, ὀδονταλγίας ἐστὶ διάκλυσμα.

## Περὶ ψυλλίου. κεφ. χνβ´.

ψ ύλλιον. φύλλον ἔχει κορωνόποδι ὅμοιον. δασύ. κλῶνας δὲ σπιθαμιαίους καὶ τὸ ὅλον βοτάνιον χορτῶδες. ἄρχεται δ᾿ αὐτοῦ ἡ κόμη ἀπὸ μέσου τοῦ καυλοῦ. κεφάλια δὲ δύο ἢ τρία ἐπ᾿ ἄκρου συνεσταλμένα. ἐν οἷς σπέρμα ψύλλοις ὅμοιον. μέλαν σκληρόν. φύεται ἐν ἀρούραις καὶ χέρσοις. Δύναμιν δὲ ἔχει ψυκτικήν. ὠφελεῖ δὲ καταπλαττόμενον. ἀρθρίτιδας. παρωτίδας. φύματα. οἰδήματα. στρέμματα. κεφαλαλγίαν. μετὰ ῥοδίνου ἢ ὄξους ἢ ὕδατος. ἐντεροκήλας τε τὰς ἐπὶ παίδων καὶ ἐξομφάλους ὑγιάζει καταπλασσόμενον σὺν ὄξει. δεῖ δὲ ὀξυβάφου πλῆθος λειαίνοντας βρέχειν ἐν δυσὶν ὕδατος δακτύλοις. καὶ ὅταν παγῇ τὸ ὕδωρ ἐπιπλάττειν. ψύχει γὰρ ἱκανῶς * καὶ εἰς ὕδωρ δὲ ξέον ἐπιτιθεμένη καταστέλλει τὴν θέρμην. ποιεῖ δὲ καὶ πρὸς ἐρυσιπέλατα. φασὶ

δὲ ὅτι κομισθεῖσα ἐν οἴκῳ χλωρὰ, οὐκ ἐᾷ ψύλλας γίνεσθαι. κοπεῖσα δὲ μετὰ στέατος, τὰ ῥυπαρὰ καὶ κακοήθη τῶν ἑλκῶν ἀνακαθαίρει. ὁ δὲ χυλὸς μετὰ μέλιτος πρὸς ὦτα ῥευματιζόμενα ποιεῖ καὶ σκώληκας ἔχοντα.

Περὶ στρύχνου. κεφ. ογʹ.

Στρύχνος κηπαῖος. ἐδώδιμος ἐστὶ θαμνίσκος. οὐ μέγας. μασχάλας ἔχων πολλάς. φύλλα μέλανα, ὠκίμου μείζονα καὶ πλατύτερα. καρπὸν περιφερῆ. χλωρόν. μέλανα δὲ ἢ κιῤῥὸς γίνεται μετὰ τὸ πεπανθῆναι. ἀβλαβὴς ἐστὶν ἡ βοτάνη πρὸς γεῦσιν. Δύναμιν δὲ ἔχει ψυκτικήν. ὅθεν τὰ φύλλα καταπλασσόμενα, ἁρμόζει πρὸς ἐρυσιπέλατα καὶ ἕρπητας μετὰ παιπάλης ἀλφίτου. καθ' ἑαυτὰ δὲ ἐπιτιθέμενα λεῖα, αἰγίλωπα θεραπεύει καὶ κεφαλαλγίαν. καὶ στομάχῳ καυσουμένῳ βοηθεῖ. παρωτίδας δὲ διαφορεῖ σὺν ἁλσὶ λεῖα καταπλασσόμενα. καὶ ὁ χυλὸς δὲ αὐτοῦ ποιεῖ πρὸς ἐρυσιπέλατα καὶ ἕρπητας. σὺν ψιμμιθίῳ καὶ ῥοδίνῳ καὶ λιθαργύρῳ. πρὸς αἰγίλωπα δὲ σὺν ἄρτῳ. ἁρμόζει καὶ σειριῶσι παιδίοις σὺν ῥοδίνῳ ἐμβρεχόμενος. μίγνυται δὲ καὶ κολλυρίοις ἀντὶ ὕδατος ἢ ᾠοῦ τοῖς πρὸς ῥεύματα δριμέα εἰς τὰς ἐγχρίσεις. ὠφελεῖ καὶ ὠταλγίαν ἐνσταγείς. ἴσχει δὲ καὶ ῥοῦν γυναικεῖον ἐν ἐρίῳ προστεθείς. ὁ δὲ χυλὸς ἀναγκαῖος ἐστὶ πρὸς αἰγίλωπας. συμμαλασσόμενος ἀφόδῳ πυρᾶ ὀρνίθων κατοικιδίων καὶ ῥάκει ἐπιτιθέμενος.

Περὶ στρύχνου ἁλικακάβου. κεφ. οδʹ.

Ἔστι καὶ ἕτερον στρύχνον. ὃ ἰδίως ἁλικάκαβον καλοῦσιν. οἱ δὲ φυσαλίδα φύλλοις ὅμοιον τῷ προειρημένῳ. πλατυτέροις μέντοι. οἱ καυλοὶ δὲ αὐτοῦ μετὰ τὸ αὐξηθῆναι χαμαικλινεῖς γίνονται. καρπὸν δὲ ἔχει ἐν θυλακίοις περιφερέσιν ὅμοιον φύσαις. πυῤῥόν. περιφερῆ. λεῖον. ὡς ῥᾶγα σταφυλῆς. ᾧ καὶ οἱ στεφανοπλόκοι χρῶνται καταπλέκοντες τοὺς στεφάνους. Δύναμιν δὲ ἔχει καὶ χρῆσιν τὴν αὐτὴν τῷ κηπαίῳ στρύχνῳ. χωρὶς τοῦ βιβρώσκεσθαι. δύναται δὲ ὁ καρπὸς αὐτοῦ πινόμενος, ἴκτερον ἀποκαθαίρειν οὐρητικὸς ὤν. χυ-

λίζεται δὲ ἀμφοτέρων ἡ πόα. καὶ ξηραίνεται ἐν σκιᾷ πρὸς ἀπόθεσιν. ποιεῖ δὲ πρὸς τὰ αὐτά.

## Περὶ στρύχνου ὑπνωτικοῦ. Κεφ. χιε΄.

Στρύχνον ὑπνωτικόν. οἱ δὲ, ἁλικάκαβον θάμνος ἐστὶ κλάδους ἔχων πολλούς. πυκνούς τε δυσθραύστους φύλλων πλήρεις λιπαρῶν. ἐμφερῶν μηλοκυδωνίῳ. ἄνθος ἐρυθρόν. εὐμέγεθες. καρπὸν ἐν λοβοῖς κροκίζοντα. ῥίζαν φλοιὸν ἔχουσαν ὑπέρυθρον. εὐμεγέθη. φύεται ἐν πετρώδεσι τόποις οὐ πόρρω θαλάσσης. Ταύτης ὁ φλοιὸς τῆς ῥίζης ἐν οἴνῳ ποθείς. < ὁλκὴ ὑπνωτικὴν ἔχει δύναμιν τοῦ ὀποῦ τῆς μήκωνος ἐπιεικεστέραν. ὁ δὲ καρπὸς οὐρητικός ἐστιν ἄγαν. δίδονται δὲ ὑδρωπικοῖς κόρυμβοι ὡς ιβ΄. πλείονες δὲ ποθέντες ἔκστασιν ἐργάζονται. βοηθοῦνται δὲ μελικράτῳ πολλῷ πινομένῳ. μίγνυται καὶ ἀνωδύνοις ὁ χυλὸς αὐτῆς καὶ τροχίσκοις. ἐν ἀφεψηθεὶς δὲ οἴνῳ καὶ διακρατούμενος ὀδονταλγίαις ἀρήγει. ὁ δὲ χυλὸς τῆς ῥίζης ἀμβλυωπίας μετὰ μέλιτος ἐγχριθεὶς παραιτεῖται.

## Περὶ στρύχνου μανικοῦ. Κεφ χιϛ΄.

Στρύχνον μανικόν. ὃ ἔνιοι πέρσιον. οἱ δὲ, θρύον ἐκάλεσαν. τούτου τὸ μὲν φύλλον παραπλήσιον ἐστὶν εὐζώμῳ. μεῖζον δὲ πρὸς τὰ τῆς ἀκάνθης. ἥ τις καὶ παίδερως καλεῖται. καυλοὺς δὲ ἀνίησιν ἀπὸ τῆς ῥίζης ὑπερφυεῖς δέκα ἢ ιβ΄ ὀργυιὰς ἔχοντας ὕψος. τὴν κεφαλὴν ἐπικειμένην ὥσπερ ἐλαίαν. δασυτέραν δὲ ὡς πλατάνου σφαῖραν. μείζονα δὲ καὶ πλατυτέραν. ἄνθος μέλαν. μετὰ δὲ τοῦτο καρπὸν ἴσχει βοτρυοειδῆ. στρογγύλον. μέλανα. ῥαγάδας ι΄ ἢ ιβ΄. ὁμοίας κισσοῦ κορύμβοις. μαλακὰς ὥσπερ σταφυλή. ῥίζα δὲ ὕπεστι λευκή. παχεῖα. κοίλη ὡς πήχεως. φύεται ἐν ὀρεινοῖς χωρίοις καὶ προσηνέμοις καὶ πλατανώδεσι. Δύναμιν δὲ ἔχει ἡ ῥίζα πινομένη μετ' οἴνου < α΄ πλῆθος, φαντασίας ἀποτελεῖν οὐκ ἀηδεῖς. δύο δὲ < ποθεῖσαι, ἐξιστάνουσιν ἄχρι τριῶν ἡμερῶν. δ΄. δὲ ποθεῖσαι, καὶ ἀναιροῦσιν, ἀντιφάρμακον δὲ ἐστὶν αὐτοῦ μελίκρατον. πολὺ πινόμενον καὶ ἐξεμούμενον.

## Περὶ Δορυκνίου. ΚΕΦ. χνζ.

Δορύκνιον. Κρατεύας ἁλικάκαβον ἢ καλέαν καλεῖ. θάμνος ὅμοιος ἐλαίᾳ ἀρτιφυεῖ. κλῶνας ἔχων ἐλάσσονας πήχεως. φύεται ἐν πέτραις. οὐ πόρρω θαλάσσης. φύλλα δὲ τῷ χρώματι. ἐλαίᾳ παραπλήσια. μικρότερα δὲ καὶ στερρότερα. καὶ τραχέα ἰσχυρῶς. ἄνθος λευκόν. ἐπ' ἄκρου ἔχει πυκνὰ θαλάκια ὥσπερ ἐρεβίνθου. ἐν οἷς σπερμάτια στρογγύλα ε' ἢ ς'. ὅσον ὄροβοι μικροὶ λεῖα ἰσχυρὰ καὶ ποικίλα. ῥίζαν πάχος δακτύλου. μῆκος δὲ πήχεως. δοκεῖ δὲ καὶ σπέρμα ὑπνωτικὸν εἶναι πλεονασθὲν δὲ ἀναιρεῖν. φασὶ δέ τινες καὶ τὸ σπέρμα αὐτοῦ εἰς τὰ φίλτρα παραλαμβάνεσθαι.

## Περὶ Μανδραγόρου, ΚΕΦ χνη.

Μανδραγόρας. οἱ δὲ ἀντίμηλον. οἱ δὲ διρκαίαν οἱ δέ, κιρκαίαν καλοῦσιν. ἐπειδὴ δοκεῖ ἡ ῥίζα φίλτρων εἶναι ποιητική. ἔστι δὲ αὐτῆς ὁ μέν τις θῆλυς ὁ μέλας θριδακίας καλούμενος. φύλλα ἔχων στενότερα καὶ μικρότερα θρίδακος. βρομώδη καὶ βαρέα κατὰ τὴν ὀσμήν. κεχυμένα δὲ ἐπὶ γῆς καὶ παρ' αὐτὰ μῆλα οὔοις ἐμφερῆ. ὠχρά. εὐώδη ἐν οἷς καὶ καρπὸς ὥσπερ ἀπίου. ῥίζαι εὐμεγέθεις δύο ἢ τρεῖς. ἀντεπιπεπλεγμέναι ἀλλήλαις. μέλαιναι κατὰ τὴν ἐπιφάνειαν. ἔνδοθεν λευκαὶ καὶ παχύφλοιοι. καυλὸν δὲ οὐ φέρει. Τοῦ δὲ ἄρρενος καὶ λευκοῦ ὃν ἔνιοι νώριον ἐκάλεσαν, φύλλα ἐστὶ μεγάλα. λευκά. πλατέα. λεῖα καθάπερ τεύτλου τὰ δὲ μῆλα διπλάσια. κροκίζοντα τῇ χροιᾷ. εὐώδη μετὰ βάρους τινός. ἃ καὶ ἐσθίοντες οἱ ποιμένες ποσῶς ὑποκαροῦνται. ῥίζα δὲ ὁμοία τῇ πρὸ αὐτῆς. μείζων δὲ καὶ λευκοτέρα. ἄκαυλος δὲ καὶ αὐτή. Χυλίζεται δὲ ὁ φλοιὸς τῆς ῥίζης χλωρὸς κοπεὶς καὶ ὑποτεθεὶς πιεστῆρι. δεήσει δὲ λεάναντας μετὰ τὸ συστραφῆναι ἀποτίθεσθαι ἐν ὀστρακίνῳ ἀγγείῳ. χυλίζεται δὲ καὶ τὰ μῆλα ὁμοίως. ἀνειμένον δὲ γίνεται τὸ ἐξ αὐτῶν χύλισμα. καὶ ὁ φλοιὸς δὲ τῆς ῥίζης περιαιρεθεὶς καὶ διαβληθεὶς λίνῳ, κρεμᾶται εἰς ἀπόθεσιν. ἔνιοι δὲ καθέψουσιν οἴνῳ τὰς ῥίζας ἄχρι τρίτου. καὶ διυλίσαντες ἀποτίθενται. χρώμενοι ἐπὶ τῶν ἀγρύπνων καὶ

περιωδυνώντων κυάθῳ ἑνί. καὶ ἐφ' ὧν βούλονται ἀναισθησίαν τεμνομένων ἢ καιομένων ποιῆσαι. ὁ δὲ ὀπὸς ποθεὶς ὀβολῶν δυοῖν πλῆθος ὁλκῆς σὺν μελικράτῳ, ἄγει ἄνω φλέγμα καὶ μέλαιναν χολὴν ὡς ἐλλέβορος. πλείων δὲ ποθεὶς ἐξάγει τοῦ ζῆν. μίγνυται καὶ εἰς τὰς ὀφθαλμικὰς καὶ ἀνωδύνους δυνάμεις. καὶ πεσσοῖς μαλακτικοῖς. καθ' ἑαυτὸν δὲ ὅσον ἡμιώβολον προστεθεὶς, ἔμμηνα καὶ ἔμβρυα ἄγει. δακτυλίῳ τε ἀντὶ βαλάνου ἐπιτεθεὶς ὕπνον ποιεῖ. μαλάσσειν δὲ καὶ ἐλέφαντα λέγεται ἡ ῥίζα συνεψομένη αὐτῷ ἐπὶ ὥρας ϛ΄. καὶ εὔπλαστον αὐτὸν εἰς ὃ ἄν τις βουληθῇ σχῆμα παρασκευάζει. τὰ δὲ φύλλα πρόσφατα ἁρμόζει πρός τε ὀφθαλμῶν φλεγμονάς. καὶ τὰς ἐπὶ τῶν ἑλκῶν μετὰ ἀλφίτου καταπλασσόμενα. διαφορεῖ δὲ καὶ πᾶσαν σκληρίαν καὶ ἀποστήματα. χοιράδας. φύματα παρατριβόμενά τε ἡσυχῇ ἐπὶ ἡμέρας ε΄ ἢ ϛ΄, στίγματα ἄνευ τοῦ ἑλκῶσαι ἀφανίζει. ταριχευθέντα δὲ τὰ φύλλα, ἀποτίθεται πρὸς τὰς αὐτὰς χρείας. ἡ δὲ ῥίζα σὺν ὄξει λεία, ἐρυσιπέλατα ἰᾶται. πρὸς δὲ ἑρπετῶν πληγάς, σὺν μέλιτι ἢ ἐλαίῳ. σὺν ὕδατι δὲ χοιράδας καὶ φύματα διαχεῖ. καὶ ἄρθρων πόνους παύει μετὰ ἀλφίτων. σκευάζεται δὲ καὶ δίχα ἑψήσεως οἶνος ἐκ τοῦ φλοιοῦ τῆς ῥίζης. δεῖ δὲ ἐμβάλλειν μνᾶς γ΄. εἰς μετρητὴν οἴνου γλυκέος. διδόναι τε ἐξ αὐτοῦ κυάθους γ΄ τοῖς μέλλουσι τέμνεσθαι ἢ καίεσθαι ὡς προείρηται. οὐ γὰρ ἀντιλαμβάνονται τοῦ ἀλγήματος διὰ τὸ καταφέρεσθαι. τὰ δὲ μῆλα ὀσφραινόμενα καὶ ἐσθιόμενα καρωτικά. καὶ ὁ ἐξ αὐτῶν χυλός. πλεονασθέντα δὲ καὶ ἀφώνους ποιεῖ. τὸ δὲ σπέρμα τῶν μήλων ποθὲν, ὑστέραν καθαίρει. προστεθὲν δὲ μετ' ἀπύρου θείου ῥοῦν ἵστησιν ἐρυθρόν. ὀπίζεται δὲ περιχαρασσομένης τῆς ῥίζης πολυειδῶς. καὶ τοῦ συρρέοντος εἰς τὴν κοιλότητα συλλεγομένου. ἔστι δὲ ἐνεργέστερος τοῦ ὀποῦ ὁ χυλός. οὐκ ἐν παντὶ δὲ τόπῳ φέρουσιν ὀπὸν αἱ ῥίζαι. ὑποδείκνυσι δὲ τὸ τοιοῦτον ἡ πεῖρα.

Ι' ἱστοροῦσι δὲ καὶ ἑτέραν μώριον λεγομένην. φυομένην ἐν παλισκίοις καὶ περὶ τὰ ἄντρα. φύλλα ἔχουσαν ὅμοια τῷ λευκῷ μανδραγόρᾳ. μικρότερα δὲ ὡς σπιθαμιαῖα. λευκά. κύκλῳ περὶ τὴν ῥίζαν οὖσαν ἁπαλὴν καὶ λευκήν. μικρῷ μείζονα

ἀπὸ σπιθαμῆς πάχος δακτύλου μεγάλου. ταύτην φασὶ πινομένην ὅσον < α. ἢ μετὰ ἀλφίτων ἐσθιομένην ἐν μάζῃ ἢ ὄψῳ, ἀφρμοροῦν. καθεύδει γὰρ ὁ ἄνθρωπος ἐν ᾧ περ ἂν φθάσοι σχήματι. αἰσθανόμενος οὐδενὸς ἤδη ὥρας γ ἢ δ. ἀφ' οὗ περ ἂν προσενέγκηται. χρῶνται δὲ καὶ ταύτῃ οἱ ἰατροὶ ὅταν τέμνειν ἢ καίειν μέλλωσι. φασὶ δὲ καὶ ἀντίδοτον εἶναι τὴν ῥίζαν πινομένην μετὰ στρύχνου τοῦ καλουμένου μανικοῦ.

## Περὶ ἀκονίτου. κεφ. χνθ'.

Ἀκόνιτον. οἱ δὲ, παρδαλιαγχές. οἱ δὲ, κάμμορον. οἱ δὲ, θηλύφονον. οἱ δὲ, μυοκτόνον θηροφόνον. φύλλα ἔχει τρία ἢ τέσσαρα. ὅμοια κυκλαμίνῳ ἢ σικύῳ. μικρότερα δὲ καὶ ὑποτράχεα. καυλὸς δὲ σπιθαμῆς. ῥίζα ὁμοία σκορπίου οὐρᾷ στίλβουσα ἀλαβαστροειδῶς. Τούτου τὴν ῥίζαν φασὶ προσαχθεῖσαν σκορπίῳ, παραλύειν αὐτόν. διεγείρεσθαι δὲ πάλιν ἐλλεβόρου προστεθέντος. μίγνυται δὲ καὶ ὀφθαλμικαῖς ἀνωδύνοις δυνάμεσι. κτείνει δὲ καὶ παρδάλεις καὶ σῦς καὶ λύκους καὶ πᾶν θηρίον κρεαδίοις ἐντιθέμενον καὶ παραβαλλόμενον.

## Περὶ ἑτέρου ἀκονίτου. κεφ. χξ'.

Ἀκόνιτον ἕτερον ὃ ἔνιοι κυνοκτόνον οἱ δὲ λυκοκτόνον καλοῦσι. γεννᾶται μὲν πλεῖστον ἐν ἰταλίᾳ, ἐν τοῖς καλουμένοις ἰουστίνοις ὄρεσι διάφορον τοῦ πρὸ αὐτοῦ. φύλλα δὲ ἔχει ὅμοια τοῖς τοῦ πλατάνου. μᾶλλον δὲ ἐπεσχισμένα καὶ μακρότερα. πολλῷ καὶ μελάντερα. καυλὸν δὲ καθάπερ πτερίδος. μόσχον ψιλόν. ὕψος πήχεως. ἢ καὶ μείζονα. καρπὸν δὲ ἐν λοβοῖς ἐπιμήκεσι ποσῶς. ῥίζας ὥσπερ πλεκτάνας καρίδων μελαίνας. αἷς χρῶνται πρὸς τὰς τῶν λύκων θήρας. ἐντιθέντες κρέασιν ὠμοῖς. βρωθεῖσαι γὰρ ὑπὸ τῶν λύκων, ἀναιροῦσιν αὐτούς.

## Περὶ κωνείου. κεφ. χξα'.

Κώνειον καυλὸν ἀνίησι γονατώδη ὡς μάραθρον. μέγαν. φύλλα δὲ νάρθηκι ἐμφερῆ. στενώτερα δὲ καὶ βαρύοσμα. ἐπ' ἄκρων δὲ ἀποφύσεις καὶ σκιάδια. ἄνθος ὑπόλευκον. σπέρμα ἐμφερὲς ἀνίσῳ. λευκότερον. ῥίζα κοίλη καὶ οὐ βαθεῖα. Ἔστι δὲ καὶ

αὐτὸ τῶν φθαρτικῶν, κατὰ ψύξιν ἀναιροῦν. βοηθεῖται δὲ ἀκράτῳ. χυλίζονται δὲ τὰ ἄκρα πρὸ τοῦ ξηρανθῆναι τὸ σπέρμα ἢ ἡ κόμη. καὶ ἐκθλίβεται κοπτομένη. καὶ συστρέφεται ἐν ἡλίῳ. ἔστι δὲ πολύχρηστον εἰς τὴν ὑγιαστικὴν χρῆσιν ξηρανθέν. μιγνύμενον ἐπιτηδείως τοῖς ἀνωδύνοις κολλυρίοις τὸ χύλισμα. ἕρπητάς τε καὶ ἐρυσιπέλατα καταπλασθὲν σβέννυσιν. ἡ δὲ πόα καὶ ἡ κόμη λεία καταπλαττομένη τῶν διδύμων, ὀνειρώττουσι βοηθεῖ. παρείησι δὲ καὶ αἰδοῖα καταπλασθέντα. καὶ γάλα σβέννυσι. μαστούς τε ἐν παρθενίᾳ κωλύει αὔξεσθαι. καὶ διδύμους ἀτρόφους ποιεῖ ἐπὶ τῶν παιδίων. ἐνεργέστατον δέ ἐστι τὸ κρητικὸν καὶ μεγαρικὸν καὶ τὸ ἀττικόν. καὶ τὸ ἐν τῇ χίῳ καὶ κιλικίᾳ γεννώμενον.

## Περὶ Σμύλακος. ΚΕΦ. χξβʹ.

Σμύλαξ. οἱ δέ, θύμαλον. ῥωμαῖοι δὲ τάξον καλοῦσι. δένδρον ἐστὶ παραπλήσιον ἐλάτῃ τοῖς φύλλοις καὶ μεγέθει. ἐν ἰταλίᾳ καὶ ἐν ναρβωνίᾳ τῇ κατὰ τὴν ἱσπανίαν φυόμενον. τοῦ δὲ ἐν ἰταλίᾳ γεννωμένου τὸν καρπὸν ὀρνίθια ἐσθίοντα, μελαίνεται. οἱ δὲ προσενεγκάμενοι, διαῤῥοίαις περιπίπτουσι. τὸ δὲ ἐν τῇ ναρβωνίᾳ, τοσαύτης δυνάμεως μετέχει, ὡς καὶ ἐκ τῆς σκιᾶς τοὺς ὑποκαθίσαντας ἢ κοιμηθέντας βλάπτεσθαι. πολλάκις δὲ καὶ θνήσκειν. ἱστορεῖται δὲ περὶ αὐτοῦ χάριν τοῦ προφυλάττεσθαι.

## Περὶ ἀποκύνου. ΚΕΦ. χξγʹ.

Ἀπόκυνον. οἱ δέ, κυνάγχον. οἱ δέ, παρδαλιαγχές. οἱ δὲ κυνόμορον. οἱ δὲ κυνοκράμβην καλοῦσι. θάμνος ἐστὶ ῥάβδους ἔχων μακράς. λυγώδεις δυσθραύστους. φύλλα κισσῷ ὅμοια. μαλακώτερα δὲ καὶ ὀξύτερα κατ᾽ ἄκρον. βαρύοσμα. ὑπόγλισχρα. ὀποῦ μεστὰ μηλίνου. καρπὸς δὲ ὡσεὶ λοβὸς κυάμων περὶ δακτύλου τὸ μῆκος. θυλακώδης. ἐφ᾽ ὧν σπερμάτια λεπτά. σκληρά. σμικρά. μέλανα. ταύτης τὰ φύλλα σὺν στέατι ἀρτοποιηθέντα καὶ παραβληθέντα, κτείνει κύνας. λύκους ἀλώπεκας. παρδάλεις. παραχρῆμα δὲ παραλύει αὐτῶν τὰ ἰσχία.

## Περὶ Νηρείου. ΚΕΦ. χξδʹ.

Νήριον· οἱ δὲ, ῥοδοδάφνη· οἱ δὲ, ῥοδόδενδρον. θάμνος γνώριμος· ἀμυγδαλῆς μακρότερα καὶ παχύτερα ἔχων φύλλα. τὸ δὲ ἄνθος ῥοδοειδές. καρπὸν δὲ ἐμφερῆ ἀμυγδάλῳ· ὡς κέρατι ἀνεῳγμένον. πλήρη ἐριώδους φύσεως· ὅμοιον τοῖς ὑακινθίνοις πάπποις. ῥίζα δὲ ἀπόξυς καὶ μακρά. ξυλώδης. γευσαμένῳ ἁλμυρά. φύεται ἐν παραδείσοις καὶ παραθαλασσίοις τόποις καὶ παραποταμίοις. Δύναμιν δὲ ἔχει τὸ ἄνθος καὶ τὰ φύλλα, κυνῶν μὲν καὶ ὄνων καὶ ἡμιόνων καὶ τῶν πλείστων τετραπόδων ζώων φθαρτικήν. ἀνθρώπων δὲ σωστικὴν σὺν οἴνῳ πινόμενα πρὸς δήγματα θηρίων. καὶ μᾶλλον εἰ πηγάνῳ παραμίξαιο. τὰ δὲ ἀσθενέστερα τῶν ζώων ὡς αἶγες καὶ πρόβατα, ἐὰν τὸ ἀπόβρεγμα αὐτῶν πίῃ, ἀποθνήσκει.

## Περὶ μυκήτων. κεφ. χξέ.

Μυκήτων διαφορὰ διττή. ἢ γὰρ βρώσιμοί εἰσιν ἢ φθαρτικοί. παρὰ πολλαῖς δὲ αἰτίαις γίνονται τοιοῦτοι. ἢ γὰρ ἥλοις κατιωμένοις, ἢ ῥάκεσι σεσηπόσιν, ἢ ἑρπετῶν φωλεοῖς παραφύονται. ἢ δένδρεσιν ἰδίως βλαπτικοὺς φέρουσι τοὺς καρπούς. ἔχουσι δὲ καὶ γλοιώδη οἱ τοιοῦτοι ἐπίπαγον. κατατεθέντες δὲ μετὰ τὸ ἀφαιρεθῆναι, ταχέως διαφθείρονται σηπόμενοι. οἱ δὲ μὴ τοιοῦτοι ζωμοποιοί. ἡδεῖς. πλεονασθέντες μέντοι καὶ οὗτοι βλάπτουσι δυσπεπτούμενοι. πνίγοντες ἢ χολέραν ἐπάγοντες. βοηθοῦνται δὲ πάντες ποτιζόμενοι νίτρῳ ἢ κονίᾳ μετὰ ὀξάλμης. ἢ θύμβρας ἀποζέματι. ἢ ὀριγάνῳ. ἢ ὀρνιθείῳ κόπρῳ μετ᾽ ὄξους πινομένῃ. ἢ μέλιτι ἐκλειχομένῃ πολλῷ. τρόφιμοι δὲ εἰσὶ καὶ δυσδιάλυτοι. ὁλοσχερεῖς δὲ ὡς ἐπὶ τὸ πολὺ σὺν τοῖς περιττώμασιν ἀποδίδονται.

## Περὶ κολχικοῦ. κεφ. χξϛ΄.

Κολχικόν. οἱ δὲ, ἐφήμερον. οἱ δὲ, βολβὸν ἄγριον. λήγοντος τοῦ φθινοπώρου ἀνίησιν ἄνθος ὑπόλευκον. ὅμοιον κρόκου ἄνθει. ὕστερον δὲ τὰ φύλλα φέρει βολβῷ παραπλήσια. λιπαρώτερα. καυλὸν, σπιθαμιαῖον. καρπὸν ἔχοντα πυῤῥόν. ῥίζαν φλοιὸν ἔχουσαν ἔγκιῤῥον ἐν τῷ μέλανι. ἥτις λεπιζομένη λευκὴ καὶ ἁπαλὴ καὶ ὀποῦ μεστὴ εὑρίσκεται καὶ γλυκεῖα. ἔχει

δὲ ὁ βολβὸς διάφυσιν μέσην καθ' ἣν τὸ ἄνθος ἀφίησι. γεννᾶται δὲ πλεῖστον ἐν τῇ μεσσηνίᾳ καὶ κόλχοις. βρωθεῖσα δὲ κτείνει κατὰ τὸν πνιγμὸν ὁμοίως μύκησιν. Ἀνεγράψαμεν δὲ αὐτὴν ἵνα μὴ λάθῃ βρωθεῖσα ἀντὶ βολβοῦ. παραδόξως γάρ ἐστιν ἐπακτικὴ διὰ τὴν ἡδονὴν τοῖς ἀπείροις. βοηθεῖ δὲ τοῖς φαγοῦσιν ὅσα καὶ τοῖς μύκητας φαγοῦσι. καὶ γάλα βόειον πινόμενον. ὥστε ὅταν παρῇ τοῦτο, μηδενὸς ἄλλου δεῖσθαι βοηθήματος.

Περὶ ἐφημέρου. Κεφ. χξζ'.

Ἐφήμερον. οἱ δέ, ἶριν ἀγρίαν. φύλλα καὶ καυλὸν ὅμοια ἔχει κρίνῳ. λεπτότερα δὲ ἄνθη λευκά. πικρά. καρπὸν δὲ μαλακόν. ῥίζα δὲ ὕπεστι δακτύλου πάχος μία. μακρά. στυπτική. εὐώδης. φύεται ἐν δρυμοῖς καὶ παλισκίοις. Τούτου ἡ μὲν ῥίζα ὀδονταλγίας ἐστὶ φάρμακον διακλυζομένη. τὰ δὲ φύλλα ἐν οἴνῳ ἑψηθέντα καὶ καταπλασθέντα οἰδήματα καὶ φύματα διαφορεῖ. μήπω ὑγρὸν ἔχοντα.

Περὶ ἑλξίνης. Κεφ. χξη'.

Ἑλξίνη. οἱ δέ, παρθένιον. οἱ δέ, σιδηρῖτιν. οἱ δέ, ἡράκλειαν. οἱ δέ, ἀσυρίαν. οἱ δέ, ὑγίφνην ἀγρίαν. οἱ δέ, κλιβάδιον. οἱ δέ, πολυώνυμον καλοῦσι. φύεται ἐπὶ θριγκοῖς καὶ τοίχοις. καυλία δέ ἐστι λεπτά. ὑπέρυθρα. φύλλα ὅμοια λινοζώστει. δασέα. περὶ δὲ τοὺς καυλοὺς οἱονεὶ σπερμάτια τραχέα. ἀντιλαμβανόμενα τῶν ἱματίων. Δύναμιν δὲ ἔχει τὰ φύλλα ψυκτικὴν. στυπτικήν. ὅθεν καταπλασσόμενα ἰᾶται ἐρυσιπέλατα. κονδυλώματα. κατακαύματα. φύγεθλα ἀρχόμενα. καὶ πᾶσαν φλεγμονὴν καὶ οἰδήματα. ὁ δὲ χυλὸς αὐτῆς μιγεὶς ψιμμυθίῳ, ἐρυσιπέλατα καὶ ἕρπητας ὠφελεῖ καταχριόμενος. καὶ ποδάγρας σὺν κηρωτῇ κυπρίᾳ ἀναληφθεὶς ἢ τραγείῳ στέατι. ὠφελεῖ καὶ βήττοντας χρονίως ὁ χυλὸς καταρροφούμενος ὅσον κύαθος. καὶ παρισθμίοις φλεγμαίνουσιν, ἀναγάργαρισμα καὶ διάχρισμα ὠφέλιμόν ἐστι. καὶ ὠταλγίαν σὺν ῥοδίνῳ ἐγχεόμενον ὠφελεῖ.

Περὶ ἀλσίνης. Κεφ. χξθ'.

Ἀλσίνη. οἱ δέ, μυὸς ὦτα. ἀπὸ τοῦ ἔχειν φύλλα ὅμοια μυὸς ὠτί-

οις. ἀλσίνη δὲ, διὰ τὸ σκιεροὺς καὶ ἀλσώδεις φιλεῖν τόπους. πάνυ ἐστὶν ὁμοία ἑλξίνῃ. ταπεινοτέρα δὲ καὶ μακροφυλλοτέρα καὶ οὐ δασεῖα. διατριφθεῖσά τε, σικύων ὄζει. Δύναμιν δὲ ἔχει ψυκτικὴν. στυπτικήν. ἁρμόζουσαν πρὸς φλεγμονὰς ὀφθαλμῶν, μετὰ ἀλφίτων καταπλασσομένη καὶ πρὸς ὤτων πόνον ὁ χυλὸς αὐτῆς ἐνσταζόμενος. καὶ καθόλου δύναται τὰ αὐτὰ τῇ ἑλξίνῃ.

Περὶ φακοῦ τοῦ ἐπὶ τῶν τελμάτων. Κεφ. χο´.

Φακὸς ὁ ἐπὶ τῶν τελμάτων. εὑρίσκεται ἐπὶ τῶν στασίμων ὑδάτων. βρύον ὂν ὅμοιον φακῷ. ψύχων τῇ δυνάμει. πάσαις φλεγμοναῖς καὶ ἐρυσιπέλασι καὶ ποδάγραις. ἁρμόζει καταπλασσόμενος. καθ' ἑαυτόν τε καὶ σὺν ἀλφίτῳ. παρακολλᾶ δὲ καὶ ἐντεροκήλας τὰς ἐπὶ παίδων.

Περὶ ἀειζώου τοῦ μεγάλου. Κεφ. χοα´.

Ἀείζωον τὸ μέγα ὠνόμασται διὰ τὸ ἀειθαλὲς τῶν φύλλων. καυλοὺς δ' ἀνίησι πηχυαίους ἢ καὶ μείζονας. πάχους δακτύλου μεγάλου λιπαρούς. εὐθαλεῖς. ἐντομὰς ἔχοντας ὥσπερ τοῦ χαρακίου τιθυμάλλου. φύλλα λιπαρά. μέγεθος δακτύλου μεγάλου. γλωσσοειδῆ κατὰ τὸ ἄκρον. καὶ τὰ μὲν κατωτέρω τῶν φύλλων ὑπτιούμενα. τὰ δὲ κατὰ τὴν κεφαλὴν προσεσταλμένα ἐπ' ἄλληλα. κύκλον ὀφθαλμοειδῆ περιγράφοντα. φύεται δὲ ἐν τόποις ὀρεινοῖς καὶ ὀστρακίνοις. ἔνιοι δὲ φυτεύουσιν αὐτὸ ἐπὶ τῶν οἰκημάτων. Δύναμιν δὲ ἔχει ψυκτικὴν. στύφουσαν. ποιοῦσαν πρὸς ἐρυσιπέλατα. ἕρπητας. νομάς. ὀφθαλμῶν φλεγμονάς. πυρίκαυτα. ποδάγρας. καταπλαττόμενα τὰ φύλλα καθ' ἑαυτὰ καὶ μετὰ ἀλφίτων. ὁ δὲ χυλὸς πρὸς κεφαλαλγίας μετὰ ἀλφίτου καὶ ῥοδίνου ἐμβρέχεται. καὶ φαλαγγιοδήκτοις ἐν ποτῷ δίδοται. καὶ διαρροιζομένοις. καὶ δυσεντερικοῖς. στρογγύλας τε ἕλμινς ἐκτινάσσει σὺν οἴνῳ ποθείς. ἵστησι καὶ ῥοῦν γυναικεῖον ἐν προσθέτῳ. ἐγχρίεται δὲ ὁ χυλὸς καὶ ἐπὶ τῶν ὀφθαλμιώντων ὠφελίμως ἀπὸ αἵματος.

Περὶ ἀειζώου τοῦ μικροῦ. Κεφ. χοβ´.

Ἀείζωον τὸ μικρόν. φύεται ἐν τοίχοις καὶ πέτραις. καὶ θριγκοῖς καὶ τάφροις ὑποσκίοις. καυλία ἀπὸ μιᾶς ῥίζης πολλὰ λεπτά. περίπλεα φυλλαρίων περιφερῶν. λιπαρῶν μικρῶν. ὀξέων ἐπ᾽ ἄκρου. ἀνίησι δὲ καὶ καυλὸν ἐν μέσῳ περὶ σπιθαμὴν τὸ μέγεθος. ἔχοντα σκιάδιον καὶ ἄνθη λεπτὰ καὶ χλωρά. τούτου τὰ φύλλα δύναμιν ἔχει τὴν αὐτὴν τῷ προειρημένῳ.

Περὶ ἀειζώου ἑτέρου. Κεφ. ρογ΄.

Δοκεῖ δὲ εἶναι καὶ τρίτον εἶδος ἀειζώου. ὃ ἔνιοι ἀνδράχνην ἀγρίαν ἢ τηλέφιον ἐκάλεσαν. ῥωμαῖοι δὲ ἰλλέκεβραν. ἔχει δὲ αὕτη παχύτερα τὰ φυλλάρια πρὸς τὰ τῆς ἀνδράχνης καὶ δασέα. φύεται ἐν πέτραις. Δύναμιν δὲ ἔχει θερμαντικήν. δριμεῖαν. ἑλκωτικήν. χοιράδων διαφορητικὴν σὺν ὀξυγγίῳ καταπλασθέν.

Περὶ κοτυληδόνος. Κεφ. ροδ΄.

Κοτυληδών. οἱ δέ, σκυτάλιον. οἱ δέ, κυμβάλιον. φύλλον ἔχει ὥσπερ ὀξύβαφον. περιφερές. λεληθότως κοῖλον. καυλίον δὲ ἐν μέσῳ βραχύ. ἐν ᾧ τὸ σπέρμα. ῥίζαν ὡς ἐλαίαν στρογγύλην. ταύτης καὶ τῶν φύλλων ὁ χυλὸς μετ᾽ οἴνου περιχριόμενος, ἢ ἐγκλυζόμενος. φύμους τοὺς ἐν αἰδοίοις χαλᾷ. φλεγμονάς τε καὶ ἐρυσιπέλατα καὶ χιμέθλας καὶ χοιράδας καταπλαττομένη ὠφελεῖ. καὶ στόμαχον καυσούμενον. ἐσθιόμενα δὲ τὰ φύλλα σὺν τῇ ῥίζῃ λίθους θρύπτει. καὶ οὖρα κινεῖ. καὶ ὑδρωπικοῖς σὺν οἰνομέλιτι δίδοται. χρῶνται δὲ αὐτῇ καὶ εἰς τὰ φίλτρα.

Περὶ ἑτέρας κοτυληδόνος. Κεφ. ροε΄.

Ἔστι δὲ καὶ ἕτερον εἶδος κοτυληδόνος. πλατύτερα ἔχον καὶ λιπαρὰ φύλλα ὡς γλωττάρια. πυκνὰ περὶ τὴν ῥίζαν. οἱονεὶ ὀφθαλμὸν ἐν μέσον περιγράφοντα ὥσπερ τὸ μεῖζον ἀείζωον. τῇ γεύσει στύφοντα. καυλίον λεπτόν. καὶ ἐπ᾽ αὐτῷ ἄνθη καὶ σπέρματα ὅμοια ὑπερικῷ. ῥίζαν δὲ μείζονα. ποιεῖ δὲ πρὸς ἃ καὶ τὸ ἀείζωον.

Περὶ ἀκαλύφης. Κεφ. ροϛ΄.

Ἀκαλύφη. οἱ δέ, κνίδη. δισσὸν εἶδός ἐστιν αὐτῶν. ἡ μὲν, γάρ ἐστιν ἀγριωτέρα. τραχυτέρα καὶ πλατυτέρα καὶ μελαντέρα τοῖς

φύλλοις. καρπὸν δὲ ὅμοιον λινοσπέρμῳ ἔχει πολὺ ἐλάττονα. ἡ δὲ ἑτέρα λεπτόσπερμός τε καὶ οὐχ ὁμοίως τραχεῖα.

Ἀμφοτέρων δὲ τὰ φύλλα καταπλασσόμενα μετὰ ἁλῶν, καυσώδη κτα ἰᾶται καὶ γαγγραινικά. καὶ τὰ κακοήθη καὶ καρκινώδη. καὶ τὰ ῥυπαρὰ τῶν ἑλκῶν καὶ στρέμματα. φύματα. παρωτίδας. φύγεθλα. ἀποστήματα. πολλάκις δὲ μετὰ κηρωτῆς ἐπιτίθενται. ποιεῖ δὲ καὶ πρὸς τὰς ἐκ μυκτήρων αἱμοῤῥαγίας τὰ φύλλα σὺν τῷ χυλῷ λεῖα ἐπιτιθέμενα. κινεῖ δὲ καὶ ἔμμηνα λεῖα μετὰ σμύρνης ἐπιτιθέμενα. καὶ ὑστέρας προπτώσεις ἀποκαθίστησι νεαρὰ τὰ φύλλα προσαπτόμενα. τὸ δὲ σπέρμα εἰς τὴν συνουσίαν παρορμᾷ πινόμενον μετὰ γλυκέος. καὶ ὑστέραν ἀναστομοῖ. σὺν μέλιτι δὲ ἐκλειχόμενον ὀρθοπνοίας ὠφελεῖ καὶ πλευρίτιδας καὶ περιπνευμονίας. ἀνάγει δὲ καὶ τὰ ἐκ θώρακος. μίγνυται δὲ καὶ σηπταῖς. συνεψηθέντα δὲ τὰ φύλλα κοχλιαρίοις τὰς κοιλίας μαλάττει. λύει ἐμπνευματώσεις. οὖρα κινεῖ. σὺν πτισάνῃ δὲ, ἑψηθέντα τὰ ἐκ θώρακος ἀνάγει. τὸ δὲ ἀφέψημα τῶν φύλλων σὺν ὀλίγῃ σμύρνῃ ποθὲν, κινεῖ καταμήνια. ὁ δὲ χυλὸς ἀναγαργαριζόμενος, στέλλει κιονίδα φλεγμαίνουσαν.

## Περὶ γαλιόψεως. Κεφ. χοζʹ.

Γαλίοψις. οἱ δὲ, γαλεόβδολον. ὅλον τὸ θαμνίον σὺν τῷ καυλῷ καὶ τοῖς φύλλοις ἐμφερές ἐστι κνίδῃ. λειότερα δὲ τὰ φύλλα καὶ ἱκανῶς δυσώδη ἐν τῷ διατρίψαι. ἄνθη λεπτὰ πορφυρίζοντα. φύεται ἐν φραγμοῖς καὶ παρὰ τὰς ὁδοὺς καὶ οἰκόπεδα πανταχοῦ. Δύναμιν δὲ ἔχει τὰ φύλλα καὶ ὁ χυλὸς καὶ ὁ καυλὸς καὶ ὁ καρπὸς, διαχυτικὴν σκληρωμάτων καὶ καρκινωμάτων. χοιράδων. παρωτίδων. φυγέθλων. δεῖ δὲ μετ' ὄξους δὶς τῆς ἡμέρας καταπλάσσειν χλιαρὸν ποιοῦντας τὸ κατάπλασμα. καὶ τὸ ἀφέψημα δὲ αὐτῆς καταντλεῖται ὠφελίμως. ποιεῖ καὶ πρὸς νομάς. γαγγραίνας καὶ σηπεδόνας μεθ' ἁλῶν καταπλασσόμενα.

## Περὶ γαλλίου. Κεφ. χοηʹ.

Γάλλιον. οἱ δὲ, γαλλέριον. οἱ δὲ, γαλάτιον. ὠνόμασται δὲ ἀπὸ τοῦ

γάλα

γάλα πηγνύειν ἀντὶ πιτύας αὐτό. τὸ δὲ κλωνίον, καὶ τὸ φύλλον ἔχει ἐμφερέστατον ἀπαρίνῃ. καὶ ὀρθὸν δὲ καὶ ἐπ' ἄκρου ἄνθους μηλίνου. λεπτόν. πυκνόν. πολὺ εὔοσμον. οὗ τὸ ἄνθος πρὸς τὰ πυρίκαυτα καταπλάσσεται. καὶ αἱμορραγίας ἵστησι. μίγνυται δὲ καὶ κηρωτῇ ῥοδίνῃ ἡλιαζόμενον ἄχρις ἂν λευκὸν γένηται. καὶ ἔστι τὸ τοιοῦτον ἄκοπον. ἡ δὲ ῥίζα πρὸς συνουσίαν παρορμᾷ. φύεται δὲ ἐν ἑλώδεσι τόποις.

Περὶ ἠριγέροντος. κεφ. χοθ'.

Ἠριγέρων. καυλίον ἐστὶ πηχυαῖον. ὑπέρυθρον. συνεχῆ ἔχον φυλλάρια. ἀκροσχιδῆ ὥσπερ εὔζωμον. παραπολὺ δὲ ἐλάττονα. ἄνθη μηλίζοντα. ταχέως σχιζόμενα καὶ ἐξανθοῦντα εἰς τοὺς λεγομένους πάππους. ὅθεν καὶ ἠριγέρων ὠνομάσθη. διὰ τὸ ἔαρος τὰ ἄνθη τριχοειδῶς πολιοῦσθαι. ῥίζα ἄχρηστος. φύεται μάλιστα ἐπὶ θριγγοῖς καὶ περὶ τὰς πόλεις.

Δύναμιν δὲ ἔχει ψυκτικὴν τὰ φύλλα σὺν τοῖς ἄνθεσιν. ὅθεν καταπλασσόμενα τὰ φύλλα ἐν ὀλίγῳ οἴνῳ ἢ καὶ καθ' ἑαυτὰ φλεγμονὰς ὄρχεων καὶ δακτυλίου θεραπεύει. σὺν δὲ μάννῃ, τά τε ἄλλα τραύματα καὶ τὰ ἐν νεύροις ἰᾶται. καὶ οἱ πάπποι δέ, καθ' ἑαυτοὺς καταπλασθέντες ἐν ὄξει τὸ αὐτὸ δρῶσι. ποθέντες μέντοι νεαροί, πνιγμὸν ἐπιφέρουσιν. ὅλος δὲ ὁ καυλὸς σὺν ὕδατι ἑψηθεὶς καὶ σὺν γλυκεῖ πινόμενος, στομάχου πόνους τοὺς ἀπὸ χολῆς θεραπεύει.

Περὶ θαλίκτρου. κεφ. χπ'.

Θάλικτρον. φύλλα παραπλήσια κορίῳ ἔχει. λιπαρώτερα δέ, καὶ καυλίον πηγανίου πάχος ἐφ' οὗ τὰ φύλλα. ἅπερ καταπλασθέντα λεῖα, τὰ χρόνια τῶν ἑλκῶν ἐπουλοῖ. φύεται δὲ μάλιστα ἐν πεδίοις.

Περὶ βρύου θαλασσίου. κεφ. χπα'.

Βρύον θαλάσσιον. φύεται ἐπὶ λίθων καὶ ὀστράκων παρὰ θάλασσαν. τριχῶδες ἰσχνόν. ἄκαυλον. ἱκανῶς στυπτικόν. ποιεῖ πρὸς φλεγμονὰς καὶ ποδάγρας. τὰς στύψεως δεομένας.

Περὶ φύκους θαλασσίου. κεφ. χπβ'.

Φύκος θαλάσσιον γίνεται. τὸ μέν τοι αὐτοῦ πλατύ. τὸ δὲ ὑπόμηκες καὶ φοινίσσον. τὸ δὲ, λευκόν. φυόμενον δὲ ἐν κρήτῃ πρὸς τῇ γῇ. εὐανθὲς ἄγαν καὶ ἄσηπτον. ψυκτικὴν δὲ ἔχει πάντα τὴν δύναμιν. ποιοῦσιν ἐν καταπλάσμασι. ποδαγρικαῖς καὶ ταῖς φλεγμοναῖς. δεῖ δὲ αὐτοῖς χρῆσθαι ἐνίκμοις πρὸ τοῦ ξηρανθῆναι. νίκανδρος δέ φησι καὶ θηριακὸν εἶναι τὸ φοινικοῦν. ὅπερ ἔδοξαν ἔνιοι εἶναι ᾧ αἱ γυναῖκες χρῶνται. ὄντος ἐκείνου ῥιζίου. ὁμωνύμως δὲ καλουμένου φύκους.

## Περὶ ποταμογείτονος. κεφ. χπγ΄.

Ποταμογείτων. φύλλον ἐστὶν ὅμοιον σεύτλῳ. δασὺ καὶ ὀλίγον ὑπερκύπτον τοῦ ὕδατος. ψύχει δὲ καὶ στύφει ἁρμόζον κνησμοῖς καὶ νεμομένοις καὶ παλαιοῖς ἕλκεσιν. ὀνόμασται δὲ διὰ τὸ ἐν τέλμασι καὶ ἐνύδροις τόποις φύεσθαι.

## Περὶ στρατιώτου. κεφ. χπδ΄.

Στρατιώτης, ὁ ἐπὶ τῶν ὑδάτων φυόμενος. ὠνόμασται δὲ διὰ τὸ ἐπινήχεσθαι τοῖς ὕδασι καὶ χωρὶς ῥίζης ζῆν. φύλλον δὲ ἔχει ἀειζώου ὅμοιον. μεῖζον μέν τοι. καὶ ψυκτικὴν ἔχων δύναμιν. ἐφιστάνον τὰς ἐκ νεφρῶν αἱμορραγίας πινόμενον. τραύματά τε ἀφλέγμαντα τηρεῖ. καὶ ἐρυσιπέλατα καὶ οἰδήματα σὺν ὄξει καταπλασσόμενον.

## Περὶ χιλιοφύλλου στρατιώτου. κεφ. χπε΄.

Στρατιώτης ὁ χιλιόφυλλος. ἐστὶ θαμνίσκος μικρός. σπιθαμιαῖος καὶ μείζων. ἔχων τὰ φύλλα ὅμοια νεοττοῦ πτερῷ. εἰσὶ δὲ αἱ ἐκφύσεις τῶν φύλλων σφόδρα βραχεῖαι. ἐσχισμέναι. ἔοικε δὲ μάλιστα τὰ φύλλα τῇ βραχύτητι, καὶ τῇ τραχύτητι κυμίνῳ ἀγρίῳ. καὶ ἔτι βραχύτερα. καὶ τὸ σκιάδιον δὲ πυκνότερον τούτου καὶ ἁδρότερον. ἔχει γὰρ ἐπ᾽ ἄκρου καρφία μικρά. ἐφ᾽ ὧν τὰ σκιάδια ἐστὶν ἀνίθου τρόπον. ἄνθη μικρά. λευκά. φύεται ἐν ἀγροῖς ὑποτραχέσι καὶ περὶ τὰς ὁδοὺς μάλιστα. ἔστι δὲ αὕτη ἡ βοτάνη σφόδρα ἀγαθὴ πρὸς αἱμορραγίαν καὶ ἕλκη παλαιά, καὶ πρόσφατα καὶ σύριγγας.

## Περὶ φλόμου. κεφ. χπϛ΄.

Φ λόμος τῆς μὲν ἀνωτάτω διαφορὰν ἔχει διττήν. ἡ μὲν, γάρ
ἐστιν αὐτῆς λευκή. ἡ δὲ, μέλαινα. καὶ τῆς λευκῆς ἡ μὲν, θήλεια. ἡ
δὲ, ἄρρην. τῆς μὲν οὖν θηλείας τὰ φύλλα παραπλήσιά ἐστι κράμ
βῃ. δασύτερα δὲ πολλῷ καὶ πλατύτερα καὶ λευκά. καυλὸς πη
χυαῖος καὶ μείζων. λευκός. ὑπόδασυς. ἄνθη λευκὰ ἢ ὕπωχρα.
σπέρμα μέλαν. ῥίζα δὲ μακρά. στρυφνή. πάχος ἔχουσα δακ
τύλου. φύεται δὲ ἐν πεδίοις. Ἡ δὲ ἄρρην καλουμένη, λευκό
φυλλος. ἀπὸ μήκους δὲ καὶ στενωτέρα τοῖς φύλλοις. καὶ τῷ
καυλῷ δὲ λεπτοτέρα. Ἡ δὲ μέλαινα ὁμοία ταῖς λευκαῖς
κατὰ πάντα. πλατυφυλλοτέρα μέν τοι καὶ μελαντέ
ρα τοῖς φύλλοις ὑπάρχει. Γίνεται καὶ ἡ λεγομένη ἀγρία.
ῥάβδους ὑψηλὰς φέρουσα καὶ ξυλώδεις. φύλλα ἐλελι
σφάκῳ ὅμοια. ἔχει δὲ κλῶνας περὶ τὰς ῥάβδους ὥσπερ
πράσιον.. ἄνθος μήλινον. χρυσοειδές. εἰσὶ δὲ καὶ φλομίδες δι
πλαῖ. δασεῖαι. περιφυεῖς τῇ γῇ. στρογγύλα ἔχουσαι τὰ φύλ
λα. Καὶ τρίτη φλομὶς ἡ καλουμένη λυχνῖτις. ὑπὸ δέ
τινων θρυαλλίς. φύλλα γ΄ ἢ δ΄. ἢ καὶ πλείονα. ἔχουσα πα
χέα. λιπαρά. δασέα. εἰς ἐλλύχνια χρησίμη. τῶν μὲν οὖν πρώ
των δύο, ῥίζα στυπτική. ὅθεν διαρροιζομένοις, ὅσον ἀστράγα
λος σὺν οἴνῳ ὠφελίμως ἐν ποτῷ δίδοται. τὸ δὲ ἀφέψημα
αὐτῆς ῥήγμασι καὶ σπάσμασι καὶ θλάσμασι καὶ βηξὶ πα
λαιαῖς ἀρήγει. ὀδονταλγίας τε πραΰνει διακλυζόμενον.
ἡ δὲ χρυσοειδὴς τὰ ἄνθη, τρίχας βάπτει. καὶ ὅπου ἂν τεθῇ
σίλφας συνάγει. τὰ δὲ φύλλα ἑφθὰ ἐν ὕδατι. πρὸς οἰδή
ματα καὶ ὀφθαλμῶν φλεγμονὰς καταπλάσσεται. καὶ
πρὸς σφακελίζοντα ἕλκη σὺν μέλιτι ἢ οἴνῳ. σὺν ὄξει δὲ
τραύματα θεραπεύει. καὶ σκορπιοπλήκτοις βοηθεῖ. τὰ
δὲ τῆς ἀγρίας φύλλα πυρικαύτοις ἐστὶ καταπλάσματα. τὰ
δὲ τῆς θηλείας φύλλα φασὶ μετὰ σύκων ξηρῶν συντιθέμενα, ἄση
πτα αὐτὰ διαφυλάττειν.

## Περὶ αἰθιοπίδος. κεφ. χπζ΄.

Α ἰθιοπίς. καὶ αὐτὸ παραπλήσια φλόμῳ ἔχει τὰ φύλλα. δα
σέα καὶ λίαν καὶ πυκνά. κύκλῳ περὶ τὸν πυθμένα. τῆς ῥίζης.
καυλὸν τετράγωνον. παχύν. καὶ τραχύν. ἐοικότα μελιταίνῃ
ἢ ἀρκτίῳ. μασχάλας ἀνιέντα. πολλάς. καρπὸν δὲ περὶ μέ

γέθος ὀρόβου σὺν δύο ἐν ἑνὶ ἀγγείῳ. ῥίζας ἀπὸ τοῦ αὐτοῦ πυθμένος πολλάς. μακράς. παχείας. γενομένας κολλώδεις. γίνονται δὲ ξηραινόμεναι μέλαιναι καὶ σκληραί. κόρασιν ἐοικυῖαι. πλείστη δὲ γεννᾶται κατὰ τὴν μεσσηνίαν καὶ τὴν ἴδην. Ταύτης ἡ ῥίζα ἑψομένη καὶ πινομένη. βοηθεῖ ἰσχιάσι. πλευρίτισι. αἵματος πτύσει. καὶ ἀρτηρίας τραχύτητι. λαμβάνεται δὲ μετὰ μέλιτος ἀντὶ ἐκλεικτοῦ.

Περὶ ἀρκτίου. Κεφ. χπη'.

Ἄρκτιον. οἱ δὲ ἀρκτοῦρον. φλόμῳ καὶ αὐτὴ ἔχει ἐοικότα τὰ φύλλα. δασύτερα δὲ καὶ στρογγυλώτερα. ῥίζαν ἁπαλήν. γλυκεῖαν. λευκήν. καυλὸν δὲ μαλακὸν μακρόν. καρπὸν δὲ κυμίνῳ μικρῷ ὅμοιον. Ταύτης ἡ ῥίζα δίδοται καὶ ὁ καρπὸς ἀφεψηθέντα ἐν οἴνῳ, ὀδονταλγίας διακρατούμενα πραΰνειν. καὶ πυρικαύτων καὶ χιμέθλης ἐστὶ καταντλήματα. πίνεται δὲ καὶ πρὸς ἰσχιάδας καὶ δυσουρίαν ἐν οἴνῳ.

Περὶ ἀρκείου. Κεφ. χπθ'.

Ἄρκειον. οἱ δὲ, προσωπίδα. οἱ δὲ, προσώπιον καλοῦσι. φύλλα ἔχει ὅμοια τοῖς τῆς κολοκύνθης. μείζονα μέντοι καὶ σκληρότερα καὶ μελάντερα καὶ δασέα. καὶ ἄκαυλος ἡ πόα. ῥίζα μεγάλη καὶ λευκὴ ἔνδοθεν. ἔξωθεν δὲ μέλαινα. Ἥτις βοηθεῖ ποθεῖσα < ά. πλῆθος μετὰ στροβίλων, αἱμοπτοϊκοῖς. ἐμπυικοῖς. παύει. καὶ τὰ ἐκ τῶν λυγισμῶν περὶ τὰ ἄρθρα ἀλγήματα καταπλασσομένη λεία. καὶ τὰ φύλλα δὲ ὠφελίμως ἐπὶ τῶν παλαιῶν. ἑλκῶν καταπλάττεται.

Περὶ πετασίτου. Κεφ. χϛ'.

Πετασίτης. μόσχος ἐστὶ μείζων πήχεως. δακτύλου μεγάλου πάχος. ἐφ' οὗ φύλλον πετασῶδες μέγα. προσκείμενον ὥσπερ μύκης. ποιοῦν πρὸς τὰ κακοήθη καὶ φαγεδαινικὰ ἕλκη λεῖον καταπλασσόμενον.

Περὶ ἐπιπακτίδος. Κεφ. χϛα'.

Ἐπιπακτίς. οἱ δὲ, ἑλλεβορίνην, θαμνίσκος μικρός. ἐλάχιστα φυλλάρια ἔχων. πρὸς τὰ θανάσιμα δὲ πίνεται καὶ πρὸς

τὰ ἐν ἥπατι πάθη.

Περὶ καπνοῦ. Κεφ. χϛβ΄.

Καπνός. βοτάνιόν ἐστι θαμνοειδές. κορίῳ ἐοικός. ζυφερὸν πάνυ. τὰ δὲ φύλλα λευκότερα καὶ τεφροειδῆ πολλὰ πανταχόθεν. ἄνθος πορφυροῦν. τούτου ὁ χυλὸς δριμύς. ὀξυδερκής. δακρύων ἀπαγωγός. ὅθεν καὶ τοὔνομα εἴληχε. δύναται δὲ καὶ τὰς ἐκ τῶν βλεφάρων διπλᾶς τρίχας σὺν κόμμει καταχρισθεὶς μὴ ἐᾶν φύεσθαι. βρωθεῖσα δὲ ἡ πόα, οὖρα ἄγει χολώδη.

Περὶ λωτοῦ ἡμέρου. Κεφ. χϛγ΄.

Λωτὸς ἥμερος. οἱ δὲ, τρίφυλλον. φύεται ἐν παραδείσοις. ὃς χυλισθεὶς καὶ μιγεὶς μέλιτι, ἄργεμα καὶ νεφέλια καὶ λευκώματα καὶ τὰ ἐπισκοτοῦντα ταῖς κόραις ἀποκαθαίρει.

Περὶ λωτοῦ ἀγρίου. Κεφ. χϛδ΄.

Λωτὸς ἄγριος. οἱ δὲ, λίβυον καλοῦσι. ῥωμαῖοι τριφόλιουμ βίρους. φύεται μὲν, πλεῖστος ἐν λιβύῃ. καυλὸν φέρων δίπηχυν ἢ καὶ μείζονα. μασχάλας ἔχοντα πολλάς. φύλλα ὅμοια λωτῷ τῷ τριφύλλῳ, τῷ ἐν χορτοκηπείοις γινομένῳ. σπέρμα ἐοικὸς τήλιδι. μικρότερον δὲ πολλῷ. φαρμακῶδες ἐν τῇ γεύσει. Δύναμιν δὲ ἔχει θερμαντικήν. ἠπίως στυπτικήν. ἀποκαθαρτικὴν σπίλων τῶν ἐπὶ τοῦ προσώπου καὶ ἐφηλίδων σὺν μέλιτι καταχριόμενος. πινόμενος δὲ καθ' ἑαυτὸν λεῖος ἢ καὶ μετὰ μαλάχης σπέρματος σὺν οἴνῳ ἢ γλυκεῖ, τοῖς περὶ κύστιν ἀλγήμασι βοηθεῖ.

Περὶ κυτίσου. Κεφ. χϛε΄.

Κύτισος. θάμνος ἐστὶ λευκὸς ὅλος ὡς ῥάμνος. κλάδους ἀνιεὶς πηχυαίους καὶ μείζονας. περὶ οὓς τὰ φύλλα. ὅμοια τήλιδι ἢ λωτῷ τριφύλλῳ. μικρότερα δὲ καὶ ῥάχιν ἔχοντα μείζονα. ἔν τε τῷ διατρίβεσθαι τοῖς δακτύλοις ὄζοντα εὐζώμου. ἐν δὲ τῇ γεύσει ὅμοια ἐρεβίνθοις χλωροῖς. Δύναμιν δὲ ἔχει τὰ φύλλα ψυκτικήν. διαφορητικὴν τῶν ἐν ἀρχῇ οἰδημάτων. σὺν ἄρτῳ λεῖα καταπλασθέντα. κινεῖ δὲ καὶ οὖρα τὸ ἀφέψημα αὐτῶν πινόμενον. ἔνιοι δὲ φυτεύουσιν αὐτὸ παρὰ

τοῖς σμηνεῦσιν ὡς ἐπακτικὸν τῶν μελισσῶν.

Περὶ λωτοῦ αἰγυπτίου. κεφ. χξϛʹ.

Λωτὸς ὁ ἐν αἰγύπτῳ γεννώμενος ἐν τῷ ὕδατι τῶν ἐπικλυσθέντων πεδίων καυλός ἐστι τῷ τοῦ κυάμου ἐμφερής. ἔχων ἄνθος μικρόν. λευκόν. ἐοικὸς κειθῆ. ὅ φασι κατὰ τὰς ἀνατολὰς τοῦ ἡλίου ἀναπλοῦσθαι. δυνόντος δὲ μύειν. καὶ ὅλην τὴν κωδίαν κρύπτεσθαι ἐν τῷ ὕδατι. πάλιν τε πρὸς τὴν ἀνατολὴν τοῦ ἡλίου ὑπερκύπτειν. ἔοικε δὲ ἡ κωδία μήκωνι μεγίστῃ. ἐν ᾗ καρπὸς ὡς κέγχρος. ὃν ξηράναντες οἱ ἐν αἰγύπτῳ, βάλλουσιν εἰς ἀρτοποιίαν. ῥίζαν δὲ ἔχει ὁμοίαν μήλῳ κυδωνίῳ. ἥτις καὶ αὐτὴ ἐσθίεται ὠμή τε καὶ ἑφθή. ἀναλογεῖ δὲ ἑψηθεῖσα τῇ ποιότητι λεκύθῳ ᾠοῦ.

Περὶ μυριοφύλλου. κεφ. χξζʹ.

Μυριόφυλλον καυλίσκος ἐστὶ μονοφυής. τρυφερός. μονόρριζος. περὶ ὃν φύλλα πολλὰ λεῖα μαράθρῳ ὅμοια. ὅθεν καὶ ὠνόμασται. ὁ δὲ καυλός ἐστιν ὑπόκιρρος. διαποίκιλλος. ὡς ἐπὶ τηλοῦ διαρρερινισμένος. φύεται ἐν ἑλώδεσι τόποις. συντηρεῖ ἀφλέγμαντα τὰ νεότρωτα τῶν ἑλκῶν σὺν ὄξει χλωρόν τε καὶ ξηρὸν καταπλασσόμενον. ποτίζεται δὲ καὶ πρὸς πτώματα σὺν ὕδατι καὶ ἁλσίν.

Περὶ μυρρίδος. κεφ. χξηʹ.

Μύρρις. οἱ δὲ μύρραν καλοῦσι. τῷ καυλῷ καὶ τοῖς φύλλοις ἔοικε κωνείῳ. ῥίζαν δὲ ἔχει ἐπιμήκη. ἁπαλήν. περιφερῆ, εὐώδη. ἡδεῖαν βρωθῆναι. Ἥτις ποιομένη σὺν οἴνῳ φαλαγγιοδήκτοις βοηθεῖ. καθαίρει δὲ ἔμμηνα καὶ λοχία. καθεψηθεῖσα δ᾽ ἐν ῥοφήμασιν, ὠφελίμως φθισικοῖς δίδοται. ἱστοροῦσι δ᾽ ἔνιοι πινομένης αὐτῆς δὶς ἢ τρὶς τῆς ἡμέρας σὺν οἴνῳ ἐν λοιμικαῖς καταστάσεσι, βοηθεῖν πρὸς τὸ ἀνόσους διαμένειν.

Περὶ μυάγρου. κεφ. χξθʹ.

Μύαγρος. οἱ δὲ μελάμπυρον. πόα φρυγανώδης δίπηχυς. φύλλα ἔχουσα ἐμφερῆ τοῖς τοῦ ἐρυθροδάνου. ὠχρά. σπέρμα τραχήλῳ

ἐοικὸς λιπαρόν. ᾧ χρῶνται, κόπτοντες αὐτὸ πεφωγμένον, καὶ περιπλάττοντες ῥάβδοις. καὶ ἀντὶ λύχνου χρώμενοι. δοκεῖ δὲ τὸ ἐξ αὐτῶν λίπος ὁμαλίζειν καὶ λεαίνειν τὰς τοῦ σώματος τραχύτητας.

Περὶ ὀνάγρας. κεφ. ϟ.

Ὄναγραν· οἱ δὲ ὀνοθήραν· οἱ δὲ, ὄνουριν. θάμνος ἐστὶ δενδροειδής. εὐμεγέθης. φύλλα ἔχων ἀμυγδαλῇ παραπλήσια. γλυκύτερα δὲ καὶ ἐμφερῆ τοῖς ἐκείνου. ἄνθη ῥοδοειδῆ μεγάλα. ῥίζαν δὲ λευκὴν. μακράν. ἥτις ξηρανθεῖσα, οἴνου ὀσμὴν ἀποδίδωσι. φύεται ἐν ὀρεινοῖς τόποις. Δύναμιν δὲ ἔχει τὸ ἀπόβρεγμα τοῖς ῥίζης ὑπὸ τῶν ἀγρίων ζώων πινόμενον, ἡμεροῦν αὐτά. καταπλασθεῖσα δὲ πραΰνει τὰ θηριώδη ἕλκη.

Περὶ κιρσίου. κεφ. ϟα'.

Κιρσίον. καυλός ἐστιν ἁπαλός. ὡς δίπηχυς. τρίγωνος. τὰ κάτωθεν φυλλάρια ῥοδοειδῆ ἔχοντα. τὰς γωνίας ἀκανθώδεις ἐκ διαστημάτων μαλακάς. τὰ δὲ φύλλα βουγλώσσῳ ἐμφερῆ. δασέα μετρίως καὶ μακρότερα. ὑπόλευκα. ἀκανθώδη τοῖς πέρασι. τὸ δὲ ἀνωτάτω τοῦ καυλοῦ περιφερές. δασύ. καὶ ἐπ' αὐτοῦ κεφάλια ἀκροπόρφυρα. ἐκπαππούμενα. ταύτης τὴν ῥίζαν ἀνδρέας ἀναγράφει ὑπὲρ τὸν ἀλγοῦντα τόπον ἀναδούμενον, παύειν κιρσῶν πόνους.

Περὶ ἀστέρος ἀττικοῦ. κεφ. ϟβ'.

Ἀστὴρ ἀττικός. ῥαβδίον ξυλῶδες. ἐπ' ἄκρου ἔχον ἄνθος πορφυροῦν ἢ μήλινον. ὥσπερ ἀνθεμίδος κεφάλιον περισχιδές. ἔχει δὲ φυλλάρια ἀστέρι ὅμοια. τὰ δὲ περὶ τὸν καυλὸν φύλλα ὑπομήκη καὶ δασέα. ὠφελεῖ δὲ στόμαχον ἐκπυρούμενον καταπλασσόμενον. καὶ ὀφθαλμῶν φλεγμονὰς καὶ βουβῶνας. καὶ τὰς προπτώσεις ἕδρας. φασὶ δὲ καὶ τὸ πορφυρίζον τοῦ ἄνθους μεθ' ὕδατος ποθὲν, συναγχικοῖς βοηθεῖν καὶ ἐπιληψίαις παίδων. ἁρμόζει δὲ καταπλασσόμενον ὑγρὸν πρὸς βουβώνων φλεγμονάς. ξηρὸν δὲ ἀναιρεθὲν τῇ ἀριστερᾷ χειρὶ τοῦ ἀλγοῦντος, καὶ περιαφθὲν τῷ βουβῶνι, ἀπαλλάσσει τῆς ὀδύνης.

Περὶ ἰσοπύρου. κεφ. ϟγ'.

Ἰσόπυρον. οἱ δὲ, φασίολον καλοῦσιν. ἀπὸ τοῦ ἐοικέναι φασιόλῳ. ὅτι κατ᾽ ἄκρον τὸ πέταλον ἕλικα φέρει. ἔπεισι δὲ κεφαλαὶ ἐπ᾽ ἄκρου τοῦ καυλοῦ. λεπταί. σπερματίων πλήρεις. παραπλησίων μελανθίῳ τὴν γεῦσιν. τὸ δὲ φύλλον ἀνίσῳ. τούτου τὸ σπέρμα πινόμενον σὺν μελικράτῳ, τοὺς περὶ θώρακα καὶ βῆχας ὠφελεῖ. αἱμοπτοϊκοῖς τε καὶ ἡπατικοῖς ἁρμόζει.

Περὶ ἴου. Κεφ. ρλδʹ.

Ἴον φύλλον ἔχει μικρότερον κισσοῦ καὶ λεπτότερον. μελάντερον δὲ καὶ οὐκ ἀνόμοιον. καυλίον μέσον ἀπὸ τῆς ῥίζης. ἐφ᾽ οὗ ἀνθύλλιον σφόδρα εὐῶδες. πορφυροῦν. φύεται ἐν παλισκίοις καὶ τραχέσι τόποις. Δύναμιν δὲ ἔχει ψυκτικήν. οὗ τὰ φύλλα καταπλασσόμενα καθ᾽ ἑαυτὰ καὶ μετὰ ἀλφίτων, βοηθεῖ στομάχῳ, καυσουμένῳ καὶ ὀφθαλμῶν φλεγμοναῖς. καὶ ταῖς τῆς ἕδρας προπτώσεσι. φασὶ δὲ τὸ πορφυρεῖζον τοῦ ἄνθους μεθ᾽ ὕδατος ποθὲν, συναγχικοῖς βοηθεῖν καὶ ἐπιληψίαις ταῖς τῶν παίδων.

Περὶ κακαλίας. Κεφ. ρλεʹ.

Κακαλία. οἱ δὲ, λεοντικήν. φύλλα φέρει λευκά. εὐμεγέθη. καυλὸς δὲ ἐξ αὐτῶν μέσος ὀρθός. λευκός. ἄνθος ἔχων ἐοικὸς δρυῒ ἢ ἐλαίᾳ. ἐν ὄρεσι δὲ φύεται. Ταύτης ἡ ῥίζα ἐν οἴνῳ βρεχομένη ὡς τραγάκανθα καὶ ἐκλειχομένη ἢ διαμασωμένη καθ᾽ ἑαυτὴν, βῆχας καὶ τραχύτητας καὶ ἀρτηρείας θεραπεύει. οἱ δὲ μετὰ τὴν ἐξάνθησιν ἐπιφυόμενοι κόκκοι λεῖοι, ἀναληφθέντες κηρωτῇ καὶ ἐπιχρισθέντες, τετανὸν καὶ ἀρρυτίδωτον τηροῦσι τὸ πρόσωπον.

Περὶ βουνίου. Κεφ. ρλϛʹ.

Βούνιον καυλὸν ἀνίησι τετράγωνον. εὐμήκη πάχος δακτυλιαῖον φύλλα δὲ ὅμοια σελίνῳ. λεπτότερα δὲ πολλῷ πρὸς τὰ τοῦ κορίου ἄνθος ἀνήθου. σπέρμα εὐῶδες. ὑοσκυάμου μικρότερον. Ἔστι δὲ οὐρητικόν. θερμαντικόν. καὶ δευτέρων ἀγωγόν. σπληνί τε καὶ νεφροῖς καὶ κύστει ἐπιτήδειον. χρῆσις δὲ αὐτοῦ ὑγροῦ τε καὶ ξηροῦ. καὶ χυλισθέντος σὺν ταῖς ῥίζαις καὶ τοῖς καυλοῖς καὶ τοῖς φύλλοις μετὰ μελικράτου.

Περὶ ψευδοβουνίου. Κεφ. ρλζʹ.

Ψευδοβούνιον. θαμνίον ἐστὶ σπιθαμιαῖον ἐν κρήτῃ. ἔχον φύλλα βουνίῳ ὅμοια δριμέα. δύναται δὲ καὶ τὰ ἐξ αὐτοῦ πινόμενα κλωνία ὅσον δ´ σὺν ὕδατι, στρόφους καὶ στραγγουρίας, καὶ πλευρᾶς πόνον θεραπεύειν. διαφορεῖ δὲ καὶ χοιράδας μετὰ ἁλῶν καὶ οἴνου καταπλασσόμενα χλιαρά.

Περὶ χαμαικίσσου. Κεφ. ψη´.

Χαμαίκισσος φύλλα ἔχει ὅμοια κισσοῖς. μακρότερα δὲ καὶ λεπτότερα. πολλὰ κλωνία σπιθαμιαῖα περίπλεα φύλλων ἀπὸ τῆς γῆς ε´ ἢ ϛ´. ἄνθη λευκοΐοις ὅμοια μικρότερα, καὶ πικρὰ πρὸς τὴν γεῦσιν ἰσχυρῶς. ῥίζα λεπτὴ λευκὴ ἄχρηστος. φύεται ἐν ἐργασίμοις χωρίοις. Ἁρμόζει δὲ τὰ φύλλα ἰσχιαδικοῖς, ὅσον τριώβολος ἐν ὕδατι κυάθοις τρισὶ πινόμενα ἐπὶ ἡμέρας μ´. ἢ ν´. καὶ ἴκτερον δὲ ἀποκαθαίρει. ὁμοίως πινόμενα πρὸς ϛ´. ἢ ζ´. ἡμέρας.

Περὶ χαμαιλεύκης Κεφ. ψθ´.

Χαμαιλεύκη. ποιεῖ πρὸς ὀσφύος ἀλγήματα ἐν ὕδατι λεία πινομένη.

Περὶ βουγλώσσου. Κεφ. ψι´.

Βούγλωσσον ἔοικε δὲ φλόμῳ. φύλλον χαμαιπετές. τραχύ τε καὶ μελάντερον. ὅμοιον βοὸς γλώσσῃ. ὅπερ καθιέμενον εἰς τὸν οἶνον εὐφρόσυνον δοκεῖ εἶναι.

Περὶ κυνογλώσσου. Κεφ. ψια´. *

Κυνόγλωσσον. οἱ δὲ, φυτόν. οἱ δὲ, καβαλλάτιον. οἱ δὲ πληνίον. οἱ δὲ, σκόλιμος. ῥωμαῖοι λίγγουα κάνις. οἱ δὲ, λίγγουα καννίνα. φύλλα ἔχει ἀρνογλώσσῳ τῷ πλατυφύλλῳ ἐμφερῆ. στενότερα δὲ καὶ μικρότερα χνοώδη ἄκαυλον. ἐπὶ γῆς ἐστρωμένον. φύεται ἐν ἀμμώδεσι τόποις. Δύναμιν δὲ ἔχει τὰ φύλλα λεῖα σὺν στέατι παλαιῷ ὑείῳ, κυνόδηκτα καὶ ἀλωπεκίας καὶ κατακαύματα ἰᾶσθαι. ἑψηθεῖσα δὲ ἡ πόα καὶ πινομένη σὺν οἴνῳ, κοιλίας ἐστὶ μαλακτική.

Περὶ φυτεύματος. Κεφ. ψιβ´.

Φύτευμα φύλλα ἔχει ὅμοια στρουθίῳ· μικρότερα δέ. καρπὸν πολὺν τετρημένον. ῥίζαν μικρὰν. λεπτὴν. ἐπιπόλαιον. ἣν ἀναγράφουσί τινες εὐθετεῖν πρὸς φίλτρον.

Περὶ λεοντοποδίου. κεφ. ψιγ΄.

Λεοντοπόδιον. διδακτυλιαῖον ἐστὶ βοτάνιον, ἔχον φυλλάρια στενά. ἰσχυρά. ὡς τεσσάρων δακτύλων ἢ καὶ τριῶν τὸ μῆκος. δασέα. εὐωδέστερα τὰ πρὸς τὴν ῥίζαν καὶ ὑπόλευκα. ἐπ᾽ ἄκρων δὲ τῶν καυλῶν κεφάλια ὡς περιτετρημένα ἐν οἷς ἄνθη μέλανα. ὁ καρπὸς αὐτοῦ δυσθεώρητος διὰ τὸν περικεχυμένον αὐτῷ χνοῦν. ῥίζα δ᾽ ὕπεστι μικρά. φασὶ δὲ καὶ ταύτην εὐχρηστεῖν εἰς φίλτρα.

Περὶ ἱππογλώσσου. κεφ. ψιδ΄.

Ἱππόγλωσσον. θαμνίσκος ἐστὶ μυρσίνῃ ἀγρίᾳ καὶ λεπτῇ τὰ φύλλα ὅμοιος. κόμην δὲ ἀκανθώδη ἔχει. καὶ ἐπ᾽ ἄκρου ὡς περιγλωσσίδα παρὰ τοῖς φύλλοις. δοκεῖ δὲ ἡ κόμη περίαμμα εἶναι χρήσιμον κεφαλαλγοῦσι. μίγνυται δὲ καὶ εἰς μαλάγματα.

Περὶ Ἀντιῤῥίνου. κεφ. ψιε΄.

Ἀντίῤῥινον. οἱ δὲ ἀνάῤῥινον. ἔνιοι δὲ καὶ ταύτην λυχνίδα ἀγρίαν ἐκάλεσαν. πόα ἐστὶν ἐμφερὴς ἀναγαλλίδος φύλλοις καὶ καυλῷ. τὰ δὲ ἄνθη πορφυρᾶ. ὅμοια λευκοΐῳ. μικρότερα δέ. διὸ καὶ ἀγρία λυχνὶς ἐκλήθη. καρπὸν δὲ φέρει μόσχου ῥισὶν ὅμοιον. ῥούσιον ἰδεῖν. ἱστορεῖται δὲ τοῦτο ἀντιπαθὲς εἶναι φαρμάκοις περιαπτόμενον. ἐπίχαριν τε ποιεῖν ἀλειφόμενον σὺν ἐλαίῳ κρινίνῳ.

Περὶ καταναγκης. κεφ. ψιϛ΄.

Καταναγκη. ἡ μέν τις αὐτῆς ἔχει φύλλα μακρὰ ὡς κορωνόποδος. ῥίζαν λεπτὴν. σχοινώδη. κεφαλὰς δὲ ὡς ὀρόβου ϛ΄, ἢ ζ΄ ἐν αἷς καρπὸς ὅμοιος ὀρόβῳ. κάμπτεται δὲ ξηραινόμενος ἐπὶ τὴν γῆν. καὶ ἰκτίνου ὄνυξιν ὁμοιοῦται νεκροῦ. Τὸ δὲ ἕτερον μήλου μέγεθος ἔχει μικροῦ. ῥίζαν δὲ μικρὰν ὅσον ἐλαία. σχήματι καὶ χροιᾷ ἐοικότα ἐλαίᾳ. καρπὸν ἐπὶ ῥαβδίοις μικρόν. τετρημένον κατὰ τὰ ἄλλα μέρη ὡς ἐρέβινθον φοινικοῦν ἀμφοτέρας δὲ ἱστοροῦσί τινες εἰς φίλτρα ἁρμόζειν. χρῆσθαι

δὲ λέγουσιν αὐταῖς τὰς Θεσσαλὰς γυναῖκας.

Περὶ τριπολίου. Κεφ. ψιζʹ.

Τριπόλιον· φύεται ἐν παραθαλασσίοις τόποις, οὓς ἐπικλύζει ἡ θάλασσα καὶ ἀποχωρεῖ· οὔτε δὲ ἐν ξηρᾷ οὔτε ἐν θαλάσσῃ. φύλλα δὲ ἔχει ἰσάτῃ παραπλήσια, παχύτερα μέντοι. καυλὸν σπιθαμιαῖον, ἄνωθεν ἐσχισμένον. ταύτης ἱστορεῖται τὸ ἄνθος τρὶς τῆς ἡμέρας μεταβάλλειν τὸ χρῶμα· πρωῒ μὲν λευκόν, κατὰ δὲ τὴν μεσημβρίαν πορφυρίζον, ὀψὲ δὲ φοινικοῦν. ῥίζα λευκή, εὐώδης, θερμαντική γευομένῳ. ἥτις πινομένη ἐν οἴνῳ ∠ βʹ πλῆθος, κατὰ κοιλίας ὕδωρ ἄγει καὶ οὖρα. τέμνεται δὲ καὶ εἰς ἀλεξιφάρμακα.

Περὶ ἀδιάντου. Κεφ. ψιηʹ.

Ἀδίαντον· οἱ δέ, πολύτριχον. φυλλάρια ἔχει κοριάνδρῳ ὅμοια, ἐσχισμένα ἐπ' ἄκρου. τὰ δὲ καυλία ἐφ' ὧν ἐκπέφυκε μέλανα, ἰσχυρῶς λεπτά, σπιθαμιαῖα, στίλβοντα. φύλλα ὅμοια πτέριδι, μικρὰ λίαν. οὔτε δὲ καυλὸν οὔτε ἄνθος οὔτε καρπὸν φέρει. ῥίζα ἄχρηστος. Δύναται δὲ τὸ ἀφέψημα τῆς πόας πινόμενον, βοηθεῖν ἀσθματικοῖς, δυσπνοϊκοῖς, ἰκτερικοῖς, σπληνικοῖς, δυσουροῦσι. θρύπτει δὲ καὶ λίθους, καὶ κοιλίαν ἵστησι, καὶ θηριοδήκτοις βοηθεῖ, καὶ στομάχου ῥεύματι σὺν οἴνῳ πινόμενον. ἄγει δὲ καὶ ἔμμηνα καὶ λόχια. ἵστησι δὲ καὶ αἵματος ἀναγωγήν. καταπλάττεται δὲ καὶ πρὸς θηριόδηκτα ὠμή. καὶ ἀλωπεκίας δασύνει. χοιράδας σκορπίζει. ἀποσμᾷ πίτυρα καὶ ἀχῶρας σὺν κονίᾳ. σὺν λαδάνῳ δὲ καὶ μυρσινίνῳ καὶ σουσίνῳ ἢ καὶ ὑσσώπῳ καὶ οἴνῳ τρίχας ῥευσάσας παρακρατεῖ. καὶ τὸ ἀφέψημα δὲ αὐτοῦ σὺν κονίᾳ καὶ οἴνῳ σμηχόμενον. ποιεῖ καὶ τοὺς ἀλεκτρυόνας καὶ τοὺς ὄρτυγας μαχιμωτέρους μιγνύμενον τῇ τροφῇ. φυτεύεται δὲ ἐπ' ὠφελείᾳ προβάτων ἐν ταῖς μάνδραις. φύεται δὲ ἐν παλισκίοις καὶ ἑλώδεσι τόποις καὶ τοίχοις ἐνίκμοις καὶ περὶ τὰς κρήνας.

Περὶ τριχομανοῦς. Κεφ. ψιθʹ.

Τριχομανές· οἱ δέ, καὶ τοῦτο ἀδίαντον καλοῦσι. φύεται κατὰ

τοὺς αὐτοὺς τόπους. ὅμοιον πτερίδι. μικρὸν λεῖον. στοιχηδὸν δὲ ἑκατέρου μέρους τὰ φύλλα ἔχον λεπτά. φακοειδῆ ἐναντία ἀλλήλοις. ἐπὶ ῥαβδίων λεπτῶν καὶ στιλπνῶν καὶ στρυφνῶν. ὑπομελαίνων. δοκεῖ δὲ τὰ αὐτὰ δύνασθαι τῷ προειρημένῳ.

Περὶ Ξανθίου. Κεφ. ψκ΄.

Ξάνθιον οἱ δὲ φάσγανον. οἱ δὲ ἀντιθέσιον. οἱ δὲ χάσκανον. οἱ δὲ χοιραδόλεθρον. οἱ δὲ, καὶ ταύτην ἀπαρίνην καλοῦσι. φύεται ἐν εὐγείοις τόποις καὶ λίμναις ἀνεξηραμμέναις. καυλὸν ἔχει πηχυαῖον λιπαρόν. γωνοειδῆ. καὶ ἐπ᾽ αὐτοῦ μασχάλας πλείονας. ἀτραφάξει δὲ τὰ φύλλα ἐμφερῆ ἔχει. ἐντομὰς ἔχοντα. καρδάμῳ δὲ τὴν ὀσμὴν παραπλήσια. καρπὸν δὲ στρογγύλον ὡς ἐλαίαν μεγάλην. ἀκανθώδη ὡς πλατάνου σφαίρας. ἀντιλαμβανόμενον τῶν ἱματίων κατὰ τὴν ψαῦσιν. Δύναται δὲ ὁ καρπὸς πρὶν τελείως ξερανθῆναι, συλλεγεὶς καὶ κοπεὶς καὶ ἀποτεθεὶς εἰς κεραμεοῦν ἀγγεῖον, ξανθὰς τρίχας ποιεῖν. ἐάν τις ἐπὶ τῆς χρήσεως λαβὼν τρυβλίου πλῆθος ἐξ αὐτοῦ, διείς τε ὕδατι χλιαρῷ, καὶ προεκνιψώσας τὴν κεφαλὴν καταπλάσῃ. τινὲς δὲ καὶ μετ᾽ οἴνου κόψαντες αὐτὸ, ἀποτίθενται. καταπλάττεται δὲ, καὶ πρὸς οἰδήματα ὁ καρπὸς ἐπιτηδείως.

Περὶ Αἰγίλωπος Κεφ. ψκα΄.

Αἰγίλωψ. βοτάνιον ἐστὶ φύλλα πυρῷ ἔχον ὅμοια. μαλακώτερα δὲ, ἐπ᾽ ἄκρας δὲ τῆς κεφαλῆς, καρποὺς ἔχον β΄. ἢ γ΄. ἐρυθρούς. ἐφ᾽ ὧν ἀθέρες οἱονεὶ τρίχες ἐκπεφύκασι. θεραπεύει δὲ ἡ πόα μετὰ ἀλεύρου καταπλασθεῖσα αἰγιλώπια. καὶ σκληρίας διαφορεῖ. ἀποτίθεται δὲ ὁ χυλὸς πρὸς τὰ αὐτὰ μιγεὶς ἀλεύρῳ καὶ ξηρανθείς.

Περὶ Βρώμου * Κεφ. ψκβ΄.

Βρῶμος ἡ πόα. οἱ δὲ, σιφώνιον. οἱ δὲ, ἀκρόσπελος. ῥωμαῖοι ἀβέναμ. πόα ἐστὶν αἰγίλωπι ἐμφερής. Δύναμιν ἔχουσα ἐπιξηραντικήν. ἀφεψηθεῖσαν ὅλην σὺν ταῖς ῥίζαις μεθ᾽ ὕδατος, ἕως ἀποτριτωθῇ τὸ ἀπόζεμα, διυλίζων αὐτὸ, ἐπίμισγε μέλι τοσοῦτον. καὶ ἕψει μέχρις ἂν σχῇ πάχος ὑγροῦ

μέλιτος. καὶ ποιεῖ ἐπὶ τῶν ὀζαινικῶν, εἰ βρέχων ὀθόνην προστιθῆς τῷ μυκτῆρι. καὶ καθ᾽ ἑαυτὸ μέντοι ποιεῖ οὕτως. ἔνιοι δὲ καὶ ἀλόην λειώσαντες παραμίσγουσι. καὶ οὕτω χρῶνται. ποιεῖ δὲ καὶ μετὰ ῥόδων ξηρῶν ἀφεψηθεὶς σὺν οἴνῳ πρὸς τὰς τοῦ στόματος δυσωδίας.

Περὶ Γλαυκός. Κεφ. ρκγʹ.

Γλαύξ. κυτίσῳ ἢ φακῷ τὰ φύλλα ἔοικεν. ὧν τὰ κάτωθεν λευκότερα. ἄνωθεν δὲ χλωρά. κλωνία δὲ ἀπὸ γῆς ἀνίησι πέντε ἢ ϛʹ. λεπτὰ σπιθαμιαῖα ἀπὸ τῆς ῥίζης. ἄνθη λευκοίας ὅμοια. μικρότερα δὲ πορφυρᾶ. φύεται παρὰ θάλατταν. αὕτη ἑψομένη μετὰ ἀλεύρου κριθίνου καὶ ἁλὸς καὶ ἐλαίου, καὶ ῥοφηθεῖσα, γάλα σβεννύμενον ἀνακαλεῖται.

Περὶ Πολυγάλου. Κεφ. ρκδʹ.

Πολύγαλον. θαμνίον ἐστὶ σπιθαμιαῖον. ἔχον φύλλα φακοειδῆ. γεύσει ὑπόστρυφνον. ποθὲν δὲ καὶ τοῦτο, γάλα δοκεῖ πλεῖον ποιεῖν.

Περὶ Ὀσύριδος. Κεφ. ρκεʹ.

Ὄσυρις φρυγάνιον μέλαν. λεπτόραβδον. δύσθραυστον. καὶ περὶ αὐτὸ φυλλάρια γ. ἔστι δὲ καὶ δʹ. ἢ εʹ. ἢ ϛʹ. αὐτῆς ὥσπερ λίνου μέλανα κατ᾽ ἀρχάς. μεταβαλλόμενα δὲ ὑπέρυθρα γίνονται. ταύτης τὸ ἀφέψημα πινόμενον ἰκτέρῳ βοηθεῖ.

Περὶ Σμίλακος τραχείας. Κεφ. ρκϛʹ.

Σμίλαξ τραχεῖα. τὰ μὲν φύλλα ἔχει περικλυμένῳ ὅμοια. καὶ κλήματα πολλά. λεπτά. ἀκανθώδη ὡς παλίουρος ἢ βάτος. ἑλίσσεταί τε περὶ τὰ δένδρα ὡς ἄνω καὶ κάτω νεμομένη. καρπὸν δὲ φέρει βοτρυώδη πεπανθέντα δ᾽ ἐρυθρόν. ὑποδάκνοντα ἠρέμα ἐν τῇ γεύσει. ῥίζαν σκληράν. παχεῖαν. φύεται ἐν τόποις ἑλώδεσι καὶ τραχέσι. Ταύτης τὰ φύλλα καὶ ὁ καρπὸς θανασίμων ἐστὶν ἀντίδοτος. προπινόμενα καὶ ἐπιπινόμενα. παραδέδοται ὅτι ἐάν τις ἀρτιγενεῖ παιδίῳ τρίψας τι τούτων δῷ ποιεῖν. ὑπ᾽ οὐδενὸς δηλητηρίου φαρμάκου βλαβήσεται. τέμνεται δὲ καὶ εἰς ἀλεξιφάρμακα.

## Περὶ Σμίλακος λείας. Κεφ. ψκζ´.

Σμίλαξ λεία. ὅμοια κισσῷ τὰ φύλλα ἔχει. μαλακώτερα δὲ καὶ λειότερα καὶ λεπτότερα. τὰ δὲ κλήματα ὥσπερ ἡ ἑτέρα αὐτῆς ἀκάνθας οὐκ ἔχοντα. ἑλίσσεται δὲ περὶ τὰ δένδρα ὡς ἡ προτέρα. καρπὸν δὲ ἔχει ὥσπερ θέρμου μέλανα μικρόν. ἀεὶ δὲ ἐπάνω ἔχοντα ἄνθη λευκὰ πολλά. κατὰ πᾶσαν τὴν σμίλακα καὶ περιφερῆ. καὶ σκηναὶ δι' αὐτῆς γίνονται τοῦ θέρους. φυλλοῤῥοεῖ δὲ τῷ φθινοπώρῳ. Τούτου ὁ καρπὸς μετὰ δορυκνίου πινόμενος, τριωβόλου ὁλκὴ ἑκατέρου ἐνύπνια πολλὰ καὶ ταραχώδη ὁρᾶν ἱστορεῖται.

## Περὶ Μυρσίνης ἀγρίας. Κεφ. ψκη´.

Μυρσίνη ἀγρία τὸ μὲν φύλλον μυρσίνῃ ἔχει ὅμοιον. πλατύτερον δέ. λογχοειδές. ὀξὺ ἐπ' ἄκρου. τὸν δὲ καρπὸν στρογγύλον ἐν μέσῳ δὲ τῷ πετάλῳ περιφερῆ. ἐρυθρὸν ἐν τῷ πεπαίνεσθαι. ἔχοντα τὸ ἐντὸς ὀστῶδες. κλωνία λυγοειδῆ πολλὰ ἐκ τῆς ῥίζης αὐτῆς δύσθραυστα. ὅσον πήχεως. φύλλων μεστά. ῥίζαν παραπλησίαν ἀγρώστει. γευομένῳ στρυφνήν. ὑπόπικρον. Δύναμιν δὲ ἔχει τὰ φύλλα καὶ ὁ καρπὸς ἐν οἴνῳ πινόμενα, οὖρα κινεῖν. καταμήνια ἄγειν, καὶ λίθους τοὺς ἐν κύστει θρύπτειν. θεραπεύει δὲ καὶ ἴκτερον καὶ στραγγουρίαν. καὶ κεφαλαλγίαν φύεται ἐν τραχέσι τόποις καὶ κρημνώδεσι. καὶ τὸ ἀφέψημα δὲ τῆς ῥίζης σὺν οἴνῳ ποθὲν, τὰ αὐτὰ ποιεῖ καὶ αὐτὶ ἀσπαράγου δὲ οἱ καυλοὶ νεοθαλεῖς λαχανευόμενοι ἐσθίονται. εἰσὶ δὲ ἔμπικροι καὶ διουρητικοί.

## Περὶ Δάφνης. Κεφ. ψκθ´.

Δάφνη ἀλεξάνδρεια. οἱ δὲ ἰδαία. οἱ δὲ δανάη. οἱ δὲ ὑπόγλωττον. οἱ δὲ ζάλεια. οἱ δὲ στεφανή. φύλλα ὀξυμυρσίνῃ ὅμοια ἔχει μείζονα δὲ καὶ μαλακώτερα. καὶ λευκώτερα. καρπὸν δὲ ἐν μέσοις ἐρυθρὸν ἐρεβίνθου τὸ μέγεθος. κλῶνας ἐπὶ γῆς σπιθαμιαίους ἢ καὶ μείζονας. ῥίζαν παραπλησίαν τῇ ὀξυμυρσίνῃ. μείζονα δὲ καὶ εὐώδη καὶ μαλακωτέραν. φύεται ἐν τόποις ὀρεινοῖς. Δύναμιν δὲ ἔχει ἡ ῥίζα πινομένη < ϛ. πλῆθος μετ' οἴνου γλυκέος, βοηθεῖν ταῖς

δυσοκούσαις καὶ στραγγουριῶσιν. ἄγει δὲ καὶ αἷμα.

### Περὶ Δαφνοειδοῦς. κεφ. ψλ΄.

Δαφνοειδές. οἱ δὲ εὐπέταλον. οἱ δὲ χαμαιδάφνην, οἱ δὲ πέπλιον καλοῦσι. θαμνίσκος ἐστὶ πηχυαῖος. κλάδους πολλοὺς ἔχων ἱμαντώδεις πρὸς τὸ ἄνωθεν ἥμισυ. φυλλοφόρους. φλοιὸς δὲ περὶ τὰς ῥάβδους γλίσχρος ἰσχυρῶς. φύλλα δάφνῃ ἐοικότα. μαλακώτερα δὲ καὶ ἰσχνότερα καὶ ὄη εὔκλαυστα. δάκνοντα καὶ πυροῦντα τὸ στόμα καὶ φάρυγγα. ἄνθη λευκὰ. καρπὸν μέλανα ὅταν πεπανθῇ. ῥίζα ἄχρηστος. φύεται ἐν ὀρεινοῖς τόποις. ἄγει δὲ καὶ τὸ φύλλον αὐτοῦ ξηρὸν ἢ νεαρὸν ποθὲν κατὰ κοιλίαν φλεγματώδη. κινεῖ καὶ ἐμέτους καὶ ἔμμηνα. καὶ διαμασηθὲν ἀποφλεγματίζει. ἔστι δὲ καὶ πταρμικόν. καθαίρει δὲ καὶ ὁ καρπὸς αὐτοῦ ὅσον κόκκοι ιε΄ πινόμενοι.

### Περὶ Χαμαιδάφνης. κεφ. ψλα΄

Χαμαιδάφνη. οἱ δὲ καὶ ταύτην ἀλεξάνδρειαν ἐκάλεσαν. ῥάβδους ἀνίησι πηχυαίους. ὀρθὰς λεπτὰς καὶ λείας. καὶ ταύτης δὲ τὰ φύλλα ὅμοια δάφνῃ. λειότερα δὲ πολλῷ καὶ χλωρότερα. καρπὸν δὲ περιφερῆ. ἐρυθρόν. τοῖς φύλλοις ἐπιπεφυκότα. Ταύτης τὰ φύλλα λεῖα καταπλασθέντα, κεφαλαλγίαις καὶ στομάχου ἐγκαύσεσιν ἀρήγει. ποθέντα δὲ μετ᾽ οἴνου στρόφους παύει. ὁ δὲ χυλὸς σὺν οἴνῳ ποτιζόμενος καταμήνια καὶ οὖρα ἄγει καὶ ἐν πεσσῷ προστεθεὶς τὸ αὐτὸ ποιεῖ.

### Περὶ Ἑλλεβόρου λευκοῦ. κεφ. ψλβ΄.

Ἑλλέβορος λευκός. φύλλα ἔχει ὅμοια τοῖς τοῦ ἀρνογλώσσου. ἢ σεύτλου ἀγρίου, βραχύτερα δὲ καὶ μελάντερα καὶ ἐρυθρὰ τὴν χρόαν. καυλὸν δὲ παλαιστιαῖον. κοῖλον. περιφλοιζόμενον ὅτε ἄρξεται ξηραίνεσθαι. ῥίζαι δ᾽ ὕπεισι πολλαὶ λεπταί. ἀπὸ κεφαλίου μικροῦ καὶ ἐπιμήκους. ὡς περὶ κρομμύου συμπεφυκυῖαι. φύεται ἐν ὀρεινοῖς τόποις καὶ τραχέσι.

Συλλέγειν δὲ δεῖ τὰς ῥίζας περὶ τὸν πυραμητόν. ἄριστος δέ ἐστιν αὐτοῦ, ὁ μετρίως τεταμένος καὶ λευκός. καὶ εὔθραυ-

στος καὶ σαρκώδης. οὐκ ἀπόξυς δὲ καὶ σχοινώδης. ἢ χνοῶν ἀφιεὶς ἐν τῷ θραύεσθαι. ἔχων δὲ καὶ τὴν ἐντεριώνην λεπτήν. ἐκ πυρῶν τὴν γεῦσιν οὐ λίαν, οὐ δὲ ἀθρόως. σίελον ἐπισπώμενος. πνιγώδης δὲ ὁ τοιοῦτος. πρωτεύει δὲ ὁ κυρηναϊκός. ὁ δὲ γαλατικὸς καὶ καππαδοκικὸς, λευκότερος καὶ χνοώδης καὶ πνιγωδέστερος. Καθαίρει δὲ δι' ἐμέτων ἄνω ποικίλα. μίγνυται δὲ καὶ κολλυρίοις τοῖς δυναμένοις τὰ ἐπισκοτοῦντα ταῖς κόραις ἀποκαθαίρειν. καὶ ἔμμηνα ἄγει. καὶ ἔμβρυα κτείνει προστιθέμενος. πταρμούς τε ἐρεθίζει. καὶ μύας κτείνει. σὺν μέλιτι καὶ ἀλφίτῳ φυραθείς. συγκαθεψόμενός τε κρέασι, συντήκει αὐτά. δίδοται δὲ νήστεσι καθ' ἑαυτὸν καὶ μετὰ σησάμου καὶ θαψίας χυλοῦ. ἢ ἄλικος ἢ μελικράτου ἢ πόλτου, ἢ φακοῦ ἢ ἄλλου ῥοφήματος. συσιτοποιεῖται δὲ καὶ ἄρτῳ καὶ ὀπτᾶται. ἡ δὲ προσαγωγὴ καὶ ἐπιδιαίτησις, ἐξείργασται παρὰ τοῖς προηγουμένως περὶ τῆς δόσεως αὐτοῦ γράψασι. μάλιστα δὲ, συγκατατιθέμεθα φιλωνίδῃ τῷ σικελῷ τῷ ἀπὸ ἔννης. μακρὸν γάρ ἐστιν ἐν ὕλης παραδόσει προηγουμένως θεραπευτικὴν ἐκτίθεσθαι ἀγωγήν. διδόασι δὲ ἔνιοι σὺν πολλῷ ῥοφήματι ἢ χυλοῦ πλήθει. ἢ καὶ τροφὴν ὀλίγην προδιδόντες, ἐπιδιδόασι τὸν ἐλλέβορον εὐθέως. ἐφ' ὧν μάλιστα πνιγμὸς ὑποπτεύεται ἢ ἀσθένεια σώματος ὑπόκειται. ἀκίνδυνος γὰρ ἐστὶ τῶν οὕτω λαμβανόντων ἡ κάθαρσις. διὰ τὸ μὴ ἀκαίρως τὸ φάρμακον παρατίθεσθαι τοῖς σώμασι. καὶ βάλανοι δὲ ἐξ αὐτοῦ προστεθεῖσαι τῇ ἕδρᾳ μετ' ὄξους, ἐμέτους κινοῦσιν.

## Περὶ ἐλλεβόρου μέλανος. Κεφ. ψλγ.

Ἐλλέβορος μέλας. οἱ δὲ μελαμπόδιον. οἱ δὲ ἔκτομον. οἱ δὲ πολύῤῥιζον. μελαμπόδιον δὲ λέγεται. ἐπειδὴ δοκεῖ μελάμπους τις αἰπόλος τὰς προίτου θυγατέρας, μανείσας ἐν αὐτῷ καθᾶραι πρῶτος καὶ θεραπεῦσαι. ἔχει δὲ τὰ φύλλα χλωρά. πλατάνῳ προσεμφερῆ. ἐλάττονα δὲ πρὸς τὰ τοῦ σφονδυλίου καὶ πολυσχιδέστερα καὶ μελάντερα καὶ ὑποτράχεα. καυλὸς, τραχύς. ἄνθη δὲ λευκὰ ἐμπόρφυρα. τῷ δὲ σχήματι βοτρυώδη. καὶ ἐν αὐτῷ καρπὸς κνίκῳ ὅμοιος. ὃν καὶ αὐτὸν καλοῦσιν οἱ ἐν ἀντικύρᾳ σησαμοειδῆ. χρώμενοι πρὸς τὰς καθάρ-

σεις

σεις αὐτῷ. ῥίζαι δ᾽ ὕπεισι λεπταί. μέλαιναι. οἱονεὶ ἀπό τινος
κεφαλίου κρομμυώδους ἠρτημέναι, ὧν καὶ ἡ χρῆσις. φύε-
ται ἐν τραχέσι καὶ γεωλόφοις καὶ καταξήροις τόποις. Καὶ
ἔστιν ἄριστος ὁ ἐκ τῶν τοιούτων λαμβανόμενος χωρίων. οἷος
ἐστὶν ὁ ἐξ ἀντικύρας. καὶ γὰρ ὁ μέλας καὶ κάλλιστος ἐν αὐ-
τῇ γεννᾶται. ἐκλέγου δὲ τὸν εὔσαρκον καὶ εὔτροφον. λεπτὴν
ἔχοντα τὴν ἐντεριώνην. δριμεῖαν ἐν τῇ γεύσει καὶ πυρώδη.
τοιοῦτος δέ ἐστιν ὁ ἐν τῷ ἑλικῶνι καὶ παρνασσῷ καὶ αἰτωλίᾳ
φυόμενος. διαφέρει μέντοι ὁ ἑλικώνιος. Καθαίρει δὲ τὴν
ἄνω κοιλίαν. ἄγων φλέγμα καὶ χολήν. καθ᾽ ἑαυτὸν ἢ μετὰ
σκαμμωνίας διδόμενος. καὶ ἁλῶν ∠ α´ ἢ τριωβόλου ὁλ-
κῆς. συνέψεται δὲ καὶ φακῇ. καὶ ζωμοῖς τοῖς εἰς κάθαρσιν
λαμβανομένοις. ὠφελεῖ δὲ ἐπιληπτικούς. μελαγχολικούς.
μαινομένους. ἀρθριτικούς. παραλελυμένους. προστεθεὶς δέ,
ἔμμηνα ἄγει. καὶ ἔμβρυα κτείνει. συρίγγας τε καθαίρει κα-
τατεθεὶς καὶ μετὰ τρίτην ἐξαιρεθείς. ὁμοίως καὶ ἐπὶ δυσηκο-
ούντων καθίεται εἰς τὸ οὖς, ἐώμενος ἐπὶ β´, ἢ γ´ ἡμέρας.
θεραπεύει δὲ καὶ ψώρας μετὰ λιβανωτοῦ ἢ κηροῦ καὶ πίσ-
σης καὶ κεδρίνου ἐλαίου καταχριόμενος. μετ᾽ ὄξους δὲ καθ᾽
ἑαυτὸν καταπλασσόμενος, ἀλφοὺς καὶ λειχῆνας καὶ λέ-
πρας θεραπεύει. ἑψηθεὶς δὲ σὺν ὄξει ὀδονταλγίας πραΰνει
διακλυζόμενος. σηπτοῖς τε μίγνυται. μετὰ δὲ κριθίνου ἀ-
λεύρου καὶ οἴνου, κατάπλασμά ἐστιν ὑδρωπικοῖς ὠφέλι-
μον. συμφυτευθεὶς δὲ ἀμπέλοις πρὸς τῇ ῥίζῃ, τὸν ἐξ αὐτῶν
οἶνον καθαρτικὸν ἐργάζεται. περιῤῥαίνουσι δὲ καὶ οἰκίαις αὐ-
τὸν καθαρτικὸν εἶναι νομίζοντες. ὅθεν καὶ ὀρύσσοντες ἵσταν-
ται προσευχόμενοι ἀπόλλωνι καὶ ἀσκληπιῷ φυλαττόμενοι
ἀετόν. ἐφίπτασθαι γάρ φασιν οὐκ ἀκινδύνως. δίδωσι γὰρ θά-
νατον ὁ ὄρνις ἐὰν περ ἴδῃ τὴν ὀρυγὴν τοῦ ἐλλεβόρου. συντό-
μως δὲ δεῖ ὀρύττειν. διὰ τὸ καρηβαρείαν ἐκ τῆς ἀποφορᾶς
γίνεσθαι. ὅθεν εἰς προφυλακὴν οἱ ὀρύττοντες, ἐσθίουσι σκό-
ροδα. καὶ οἶνον πίνουσιν. ἀβλαβέστεροι γὰρ οὕτω διατίθεν-
ται. ἐξεντερίζεται δὲ ὥσπερ καὶ ὁ λευκὸς ἐλλέβορος.

Περὶ σησαμοειδοῦς τοῦ μεγάλου. κεφ. ρλδ´.

Σησαμοειδὲς τὸ μέγα. ἐν Ἀντικύρᾳ, ἐλλέβορον καλοῦσι, διὰ τὸ μίγνυσθαι ἐν ταῖς καθάρσεσι τῷ λευκῷ ἐλλεβόρῳ. ἔοικεν ἡ πόα ἠριγέροντι ἢ πηγάνῳ. φύλλα, μακρά. ἄνθος, λευκόν. ῥίζα, ἰσχνή. ἄπρακτος σπέρμα. ὅμοιον σησάμῳ. πικρὸν ἐν τῇ γεύσει. ὃ καθαίρει ἄνω φλέγματά τε καὶ χολὴν ὅσον τοῖς τρισὶ δακτύλοις λεῖον ληφθὲν μετὰ ἐλλεβόρου λευκοῦ τριῶν ἡμιωβόλων σὺν μελικράτῳ.

Περὶ σησαμοειδοῦς τοῦ μικροῦ. κεφ. ψλέ.

Σησαμοειδὲς τὸ μικρόν. καυλία ἐστὶ σπιθαμιαῖα. ἔχοντα φύλλα κορωνόποδι ὅμοια. δασύτερα μέντοι καὶ μικρότερα. ἐπ' ἄκρου δὲ τῶν καυλίων κεφάλια ἀνθίων ὑποπορφύρων. ὧν τὸ μέσον, λευκόν. ἐν οἷς σπέρμα σησάμῳ ἐοικός. πικρόν. κιρρόν. ῥίζα, λεπτή. καθαίρει δὲ χολὴν καὶ φλέγμα κάτω ποθὲν τὸ σπέρμα, ὀξυβάφου ἥμισυ σὺν μελικράτῳ. καταπλασθὲν δὲ μεθ' ὕδατος, φύματα καὶ οἰδήματα διαφορεῖ. φύεται ἐν τραχέσι χωρίοις.

Περὶ σίκυος ἀγρίου. κεφ. ψλς'.

Σίκυος ἄγριος. τῷ καρπῷ μόνῳ διαφέρει τοῦ ἡμέρου σίκυος. ἐλάσσονα πολλῷ ἔχων βαλανείοις ἐπιμήκεσιν ἐοικότα. τὰ φύλλα καὶ τὰ κλήματα ἡμέρῳ ὅμοια. ῥίζαν δὲ λευκὴν καὶ μεγάλην. φύεται ἐν οἰκοπέδοις καὶ ἀμμώδεσι τόποις. ὅλος δὲ ὁ θάμνος πικρός. Ἁρμόζει δὲ ὁ τῶν φύλλων χυλὸς ἐνσταζόμενος ὠταλγίαις. ἡ δὲ ῥίζα καταπλασθεῖσα μετὰ ἀλφίτου πᾶν οἴδημα παλαιὸν διαφορεῖ. μετὰ ῥητίνης ἢ τερεβινθίνης ἐπιτεθεῖσα, φύματα ῥήττει. μετ' ὄξους δὲ ἑψηθεῖσα καὶ καταπλασθεῖσα. ποδάγρας διαφορεῖ. καὶ ἰσχιάδος δέ ἐστιν ἔγκλυσμα. καὶ ὀδονταλγίας διάκλυσμα τὸ ἀφέψημα. ξηρὰ δὲ λεία ἀλφούς. λέπρας καὶ λειχῆνας σμήχει. οὐλάς τε μελαίνας καὶ σπίλους τοὺς ἐν προσώπῳ ἐκκαθαίρει. καὶ ὁ χυλὸς δὲ τῆς ῥίζης, πλῆθος τριῶν ἡμιωβολίων τὸ ἐλάχιστον. καὶ ὁ φλοιὸς δὲ ὅσον τέταρτον ὀξυβάφου καθαίρει φλέγμα καὶ χολήν. καὶ μάλιστα ἐπὶ ὑδρωπικῶν. δίχα δὲ τοῦ τὸν στόμαχον ἀδικεῖν ποιεῖται τὴν κάθαρσιν. δεῖ δὲ τῆς ῥίζης λαβόντα ἡμίλιτρον, μετὰ δυοῖν ξεστῶν οἴνου μάλιστα λι

βυκοῦ λεαίνειν καὶ διδόναι ἐκ τούτου κυάθους γʹ ἕως ἂν ὁ ὄγκος ἱκανῶς συσταλῇ.

Περὶ ἐλατηρίου. Κεφ. ψλξʹ.

Τὸ δὲ λεγόμενον ἐλατήριον, ἐκ τοῦ καρποῦ τῶν σικύων σκευάζεται τὸν τρόπον τοῦτον. τοὺς ἅμα τῷ ἅψασθαι σικύους ἀποπηδῶντας ἐκλέγων, ἀποτίθεσο ἐῶν νύκτα. τῇ δὲ ὑστεραίᾳ ἐπὶ κρατῆρι κόσκινον μὴ πυκνὸν ἐπίθες. καὶ μαχαίριον ὕπτιον ἁρμόσας, τὴν ἀκμὴν ἔχον ἄνω. λαμβάνων ἀμφοτέραις ταῖς χερσὶ καθ᾽ ἕνα τῶν σικύων, διαίρει καὶ ἔκθλιβε διὰ τοῦ κοσκίνου τὸ ὑγρὸν εἰς τὴν ὑποκειμένην κρατηειαν. προσεκθλίβων καὶ τὸ ἐν αὐτοῖς σαρκῶδες ὃ δὴ περιπίπτει τῷ κοσκίνῳ. ἵνα καὶ αὐτὸ διεκπίπτῃ. καὶ εἰς λεκάνην παρακειμένην τὰ ἐκθλιβόμενα βάλλε. σωρεύσας δὲ τὰ τετμημένα ἐπὶ τοῦ κοσκίνου, ὕδατι γλυκεῖ περίχεε καὶ ἀποπιέσας, ταῦτα μὲν ῥίπτε. ταράξας δὲ τὸ ἐν τῇ λεκάνῃ ὑγρὸν καὶ σκεπάσας ὀθόνῃ, τίθεσο ἐν ἡλίῳ. καὶ ὅτε στῇ πᾶν τὸ ἐπινηχόμενον ὕδωρ μετὰ τοῦ ἐπιπάγου, ἀπόχει. καὶ τοῦτο ποίει πολλάκις ἄχρις οὗ καταστῇ τὸ ἐφιστάμενον ὕδωρ. ὅπερ ἐκστραγγίσας ἐπιμελῶς, τὴν ὑπόστάθμην βαλὼν εἰς θυΐαν, λέαινε. καὶ ἀνάπλαττε τροχίσκους. ἔνιοι δὲ πρὸς τὸ ταχέως ἀνικμασθῆναι τὸ ὑγρὸν, τέφραν σεσισμένην ἐπὶ γῆς καταστρώσαντες καὶ κοιλάναντες τὸ μέσον, ὀθόνιον τετραπλοῦν ἐπιτείναντες, κατὰ τούτου τὸ ἐλατήριον σὺν τῇ ἰκμάδι ἐπιχέουσιν. ἀναξηρανθέν. ἐν δὲ θυΐᾳ λεαίνουσιν ὡς προείρηται. ἔνιοι δὲ ἀντὶ τοῦ ὕδατος θάλατταν παραχέοντες, πλύνουσιν. οἱ δὲ, τῇ τελευταίᾳ πλύσει μελίκρατος παραχέουσι. δοκεῖ δὲ ἐλατήριον κάλλιστον εἶναι τὸ μετὰ τοῦ λευκοῦ ἡσυχῇ ἔνικμον. κοῦφον. λεῖον πικρότατον τῇ γεύσει. καὶ προσενεχθὲν λύχνῳ εὐκαές. τὸ μέντοι πρασίζον καὶ τραχὺ καὶ θολερὸν τῇ ὄψει, γέμον ὀροβίου καὶ τέφρας, βαρύ τε ἐστὶ καὶ φαῦλον. ἔνιοι δὲ καὶ τῷ χυλῷ τοῦ σικύου, μιγνύουσιν ἄμυλον. πρὸς τὸ μιμήσασθαι αὐτὸ λευκὸν καὶ κοῦφον. εἰς μέντοι τὰ καθαρτικὰ ὁ διετὴς ἁρμόζει ἄχρι δεκαετῶν. ἡ δὲ τελεία πόσις ὀβολός. ἡ δ᾽ ἐλαχίστη ἡμιωβόλιον. παιδίοις δὲ δίχαλκον. πλεῖον γὰρ ποθὲν κίνδυνον ἐπιφέρει. κινεῖ δὲ τὴν κάτω καὶ τὴν ἄνω κάθαρ-

στιν ἄγον φλέγμα καὶ χολήν. ἀρίστη δὲ τοῖς δυσπνοοῦσιν
ἡ δι' αὐτοῦ κάθαρσις. εἰ μὲν οὖν θέλεις κατὰ κοιλίαν καθαί-
ρειν, διπλάσιον ἁλῶν μίξας καὶ στίμμεως ὅσον χρῶσαι, δι'
ὕδατος ὀροβιαῖα καταπότια δίδου. ἐπιῤῥοφείτω δὲ χλιαροῦ
ὕδατος κύαθον ἕνα. εἰς δὲ ἔμμετον ὕδατι ἀνεὶς, πτερῷ τοὺς
ὑπὸ γλῶσσαν διάχριε τόπους ὡς ὅτι ἐσωτάτῳ. εἰ δὲ δυ-
σεμὴς εἴη, ἢ ἐλαίῳ ἢ ἰρίνῳ μύρῳ διείς. κώλυε δὲ κοιμᾶσθαι.
τοῖς δὲ ὑπερκαθαιρομένοις, συνεχῶς προσφέρειν δεῖ οἰνέ-
λαιον. ἐμοῦντες γὰρ ἀποκαθίστανται. μὴ παυομένων δὲ
τῶν ἐμέτων, ὕδωρ ψυχρὸν καὶ ἄλφιτον καὶ ὀξύκρατον καὶ
ὀπώραν, καὶ ὅσα δύνανται τὸν στόμαχον πυκνῶσαι προσε-
νεκτέον. κινεῖ δὲ τὸ ἐλατήριον καὶ ἔμμηνα. καὶ ἔμβρυα κτεί-
νει ἐν προσθέτῳ. ἐγχυθὲν τε μετὰ γάλακτος εἰς τοὺς ῥώθωνας,
ἴκτερον ἀποκαθαίρει, καὶ κεφαλαλγίας τὰς χρονίους ἀ-
παλλάττει. συναγχικοῖς τε διάχρισμα πρακτικὸν μετ' ἐ-
λαίου παλαιοῦ ἢ μέλιτος ἢ χολῆς ταυρείας. τοῦ δὲ ἡμέ-
ρου σικύου ἡ ῥίζα λεία ποθεῖσα σὺν ὑδρομέλιτι < α. ὁλ-
κὴ, ἐμέτους κινεῖ. εἰ δέ τις μετὰ τὸ δεῖπνον πραέως ἐμέσαι ἐ-
θέλει, ἀρκοῦσιν ὀβολοὶ β´.

## Περὶ σταφίδος ἀγρίας. κεφ. ψλη´.

Σταφὶς ἀγρία. φύλλα μὲν ἔχει ὥσπερ ἀμπέλου ἀγρίας ἐπε-
σχισμένα. καυλία ὀρθά. μαλακά. μέλανα. τὸ δὲ ἄνθος φέ-
ρει ἰσάτῃ ὅμοιον. τὸν δὲ καρπὸν ἐν θυλακίοις χλωροῖς ὥσπερ
ἐρεβίνθου. τρίγωνον. τραχύν. ὑπόκιῤῥον ἐν τῷ μέλανι. τὰ δὲ
ἔνδον λευκόν. γευσαμένῳ δριμύ. τούτου κόκκους ι´ ἢ ε´.
ἐάν τις λεάνας ἐν μελικράτῳ δῷ, καθαίρει δι' ἐμέτων πα-
χη. περιπατείτωσαν δὲ οἱ πεπωκότες. δεῖ μέντοι προσέ-
χειν συνετῶς μελίκρατον διδόντας, διὰ τὸ ἐπιφέρειν τοὺς
κατὰ πνιγμὸν κινδύνους. καὶ καίειν τὴν φάρυγγα. ἁρμό-
ζει δὲ τριφθεῖσα καὶ ἐλαίῳ συγχρισθεῖσα πρὸς φθειριάσεις
καὶ κνησμοὺς καὶ ψώρας. διαμασηθεῖσα δὲ, φλέγμα ἄγει
πλεῖστον, καὶ ὀδονταλγίας ὠφελεῖ σὺν ὄξει ἑψηθεῖσα καὶ
διακλυζομένη. οὖλά τε ῥευματιζόμενα στέλλει. καὶ ἄφθας
τὰς ἐν στόματι θεραπεύει μετὰ μέλιτος. μίγνυται καὶ τοῖς

πυρωτικοῖς μαλάγμασιν.

## Περὶ θαψίας. κεφ. ψλθ'.

Θαψία. ὠνόμασται μὲν θαψία, ἀπὸ τοῦ δοκεῖν πρῶτον εὑρῆσθαι ἐν θάψῳ τῇ νήσῳ τῇ ὁμωνύμῳ. τῇ δ' ὅλῃ φύσει ἔοικε νάρθηκι. ἰσχνοτέρα δ' αὐτῆς μᾶλλον ὁ καρπός. καὶ τὰ φύλλα μαράθρῳ ἐμφερῆ. ἐπ' ἄκρου δὲ σκιάδια καθ' ἑκάστην ἀπόφυσιν. ἀνήθῳ ὅμοια. ἐφ' ὧν ἄνθος μήλινον. σπέρμα ὑπόπλατυ. τῷ τοῦ νάρθηκος ἐμφερές. ἔλαττον. μέντοι. ῥίζα ἔνδοθεν. λευκή. μεγάλη. μέλαινα δ' ἔξωθεν παχύφλοιος. δριμεῖα. Ἥτις ὀπίζεται περιορυχθεῖσα καὶ ἐγκοπτομένη τὸν φλοιόν. ἢ κοιλανθεῖσα, αὐτὴ ἐν ἑαυτῇ θολοειδῶς ἡ ῥίζα καὶ πωμαζομένη πρὸς τὸ καθαρὸν μένειν τὸν ὀπόν. τῇ δὲ ὑστεραίᾳ δεῖ ἐπιόντας ἀναιρεῖσθαι τὸν ἐπισυλλεγέντα ὀπόν. χυλίζεται δὲ κοπεῖσα ἡ ῥίζα καὶ διὰ κυρτίδος καὶ ὀργάνου ἐκθλιβεῖσα καὶ ξηρανθεῖσα ἐν ἡλίῳ δι' ὀστρακίνου παχέος ἀγγείου. ἔνιοι δὲ καὶ τὰ φύλλα συναποθλίβουσιν. ἀσθενὴς δ' ὁ τοιοῦτος. διακρίνεται δὲ τῷ βρωματωδέστερον εἶναι τὸν ἀπὸ τῆς ῥίζης καὶ μένειν ἔνικμον. ξηραίνεσθαι δὲ τὸν ἀπὸ τῶν φύλλων καὶ τερηδονίζεσθαι. ὀπίζοντα δὲ δεῖ μὴ κατ' ἄνεμον ἵστασθαι. μᾶλλον δὲ νηνεμίας οὔσης. ἐποίδει γὰρ ἰσχυρῶς τὸ πρόσωπον καὶ φλυκταινοῦται τὰ γυμνὰ μέρη διὰ τὴν δριμύτητα τῆς ἀποφορᾶς. δεῖ οὖν κηρωταῖς στυφούσαις ὑγραῖς προχρίειν τὰ γυμνὰ τῶν μερῶν. καὶ οὕτω προσέρχεσθαι. Δύναμιν δὲ ἔχει καθαρτικὴν ὅ, τε φλοιὸς τῆς ῥίζης καὶ ὁ χυλός. καὶ ὁ ὀπὸς σὺν μελικράτῳ πινόμενος. ἄνω γὰρ καὶ κάτω χολὴν καθαίρουσι. δίδοται δὲ τῆς μὲν ῥίζης τετρώβολον μετὰ ἀνήθου σπέρματος < γ. τοῦ δὲ χυλίσματος τριώβολον. τοῦ δὲ ὀποῦ ὀβολός. πλεῖον γὰρ δοθέν, κινδυνῶδες. ἁρμόζει δὲ ἡ δι' αὐτοῦ κάθαρσις πάθεσιν ἀσθματικοῖς πλευρῶν ἀλγήμασι χρονίοις καὶ ἀναγωγαῖς. τοῖς δὲ δυσεμέσιν ἐν σιτίοις ἢ ἑψήματι δίδοται. κέκτηται δὲ καὶ μετὰ συγκριτικὴν δύναμιν ὅ τε ὀπὸς καὶ ἡ ῥίζα πάντων μάλιστα τῶν ἰσοδυναμούντων ὅπου τι δεῖ ἐκ βάθους ἑλκύσαι, ἢ μὲν ποροποιῆσαι. ὅθεν ἀλωπεκίας καταχριόμενος ὁ χυλὸς ἢ ἡ ῥίζα χλωρὰ προστριβομένη, δασύνει. ὑπώπιά τε

αἴρει καὶ πελιώματα λεία ἡ ῥίζα ἢ ὁ χυλὸς σὺν λιβανωτῷ καὶ κηρῷ ἴσοις. δεῖ δὲ μὴ πλέον δυοῖν ὡρῶν ἐᾶν. μετὰ δὲ ταῦτα πυριᾶν θερμῇ θαλάττῃ. αἴρει δὲ καὶ ἔφηλιν σὺν μέλιτι καταχρισθεὶς. καὶ λέπρας ἀφίστησι. φύματά τε ῥήττει μετὰ θείου καταχριόμενος ὁ χυλός. χρησίμως δὲ καταχρίεται καὶ ἐπὶ τῶν χρονίας ἐχόντων διαθέσεις περὶ πλευρὸν ἢ πνεύμονα. ἢ πόδας ἢ ἄρθρον. χρησιμεύει δὲ καὶ πρὸς ἐπαγώγια ἐπὶ τῶν μὴ ἐκ περιτομῆς λιποδέρμων οἴδημα ἐγείρων, ὅπερ καταντλούμενον καὶ τοῖς λιπαίνουσι μαλαττόμενον, τὸ ἐλλειπὲς τῆς πόσθης ἐκπληροῖ.

Περὶ Σπαρτίου. Κεφ. ρμ΄.

Σπάρτιον. θάμνος ἐστὶ φέρων ῥάβδους μακράς. ἀφύλλους. στερεάς. δυσθραύστους αἷς τὰς ἀμπέλους δεσμεύουσι. φέρει δὲ λοβοὺς ὥσπερ φασήλους. ἐν οἷς σπερμάτια φακοειδῆ.. ἄνθος μήλινον ὥσπερ λευκοΐου. Τούτου ὁ καρπὸς καὶ τὰ ἄνθη ποθέντα σὺν μελικράτῳ ὁλκὴ ὀβολῶν έ. καθαίρει ἄνω μετ' ἐντάσεως ὥσπερ ὁ ἐλλέβορος ἀκινδύνως. ὁ δὲ καρπὸς κινεῖ τὴν κάτω κάθαρσιν, καὶ αὐτῶν δὲ τῶν ῥάβδων ἐν ὕδατι βραχεισῶν, εἶτα κοπεισῶν καὶ χυλισθεισῶν, ἰσχιαδικῶν καὶ συναγχικῶν ἐστὶ βοήθημα. ὅσον κύαθος εἷς πινόμενος νήστεσιν. ἔνιοι δὲ ἐναποβρέξαντες ἅλμῃ ἢ θαλάττῃ, ἐγκλύζουσι τοὺς ἰσχιαδικούς. ἄγει δὲ αἱματώδες καὶ ξυσματώδες.

Περὶ Σιλύβου Κεφ. ρμα΄.

Σίλυβον. ἄκανθά ἐστι πλατεῖα. φύλλα ἔχουσα χαμαιλέοντι ὅμοια τῷ λευκῷ. ἥτις ἀρτιφυὴς ἐσθίεται ἑφθὴ σὺν ἐλαίῳ, καὶ ἁλσί. τῆς δὲ ῥίζης ὁ ὀπὸς ὅσον ὁλκὴ ποθεὶς σὺν μελικράτῳ, ἐμέτους κινεῖ.

Περὶ Βαλάνου μυρεψικῆς. Κεφ. ρμβ΄.

Βάλανος μυρεψική. καρπός ἐστι δένδρου μυρίκῃ ἐοικότος. ὅμοιος τῷ λεγομένῳ ποντικῷ καρύῳ. οὗ τὸ ἐντὸς θλιβόμενον ὥσπερ τὰ πικρὰ ἀμύγδαλα. ἐξίησιν ὑγρόν. ᾧ εἰς τὰ πολυτελῆ μύρα ἀντ' ἐλαίου χρῶνται. γεννᾶται δὲ ἐν αἰθιοπίᾳ καὶ αἰγύπτῳ καὶ ἀραβίᾳ καὶ ἐν τῇ κατὰ ἰουδαίαν πέ

ζα. διαφέρει δὲ αὐτῆς ἡ νέα καὶ πλήρης. λευκή τε καὶ εὐλέ-
πιστος. Ἥ τις μετ᾽ ὀξυκράτου ποθεῖσα λεία ὅσον < ὁλ-
κή, σπλῆνα τήκει· καταπλάσσεται δὲ ἐπ᾽ αὐτοῦ μετὰ
αἰγείνου ἀλεύρου, καὶ μετὰ μελικράτου καὶ ἐπὶ ποδαγρι-
κῶν. σὺν ὄξει δὲ ἑψηθεῖσα ἀποσμήχει ψώραν. λέπραν. σὺν
νίτρῳ δὲ ἀλφούς. οὐλὰς μελαίνας. σὺν οὔρῳ δὲ αἴρει φακοὺς,
ἰόνθους. ἐφήλεις. ἐξανθήματα ἐν προσώποις. ἐμέτους δὲ κι-
νεῖ, καὶ κοιλίαν λύει μετὰ ὑδρομέλιτος. κακοστόμαχος δὲ ἐστὶν
ἱκανῶς, καὶ τὸ ἐξ αὐτῆς ἔλαιον ποθὲν τὴν κοιλίαν ἐπάγει.
στυπτικώτερος δέ ἐστιν ὁ φλοιὸς αὐτῆς. τὸ δὲ ἐκ κοπείσης καὶ
ἐκθλιβείσης αὐτῆς ἔκπιεσμα, μίγνυται σμήγμασι τοῖς πρὸς
τραχύτητας καὶ κνησμοὺς εὐθετοῦσιν.

Περὶ Ναρκίσσου. Κεφ. ψμγ.

Νάρκισσος. ἔνιοι καὶ τοῦτον ὥσπερ ἐκεῖνον λείριον ἐκάλεσαν.
τὰ μὲν φύλλα, πράσῳ ἔοικε. λεπτὰ δὲ καὶ μικρότερα κατὰ
πολύ. καὶ στενώτερα. καυλὸν κενόν. ἄφυλλον. μείζω σπιθα-
μῆς. ἐφ᾽ οὗ ἄνθος λευκόν. ἔσωθεν δὲ κροκῶδες· ἐπ᾽ ἐνίων δὲ
πορφυροειδές. ῥίζα δὲ λευκή. ἔνδοθεν στρογγύλη. βολβοειδής.
καρπὸς ὡς ἐν ὑμένι, μέλας. πρόμηκης. φύεται ὁ κάλλιστος
ἐν ὀρεινοῖς τόποις. εὐώδης. ὁ δὲ λοιπὸς πρασίζει. καὶ βοτανώ-
δη τὴν ἀποφορὰν ἔχει. Τούτου ἡ ῥίζα βρωθεῖσα ἑφθὴ καὶ
ποθεῖσα, ἐμέτους κινεῖ. ἁρμόζει δὲ καὶ πυρικαύτοις σὺν μέ-
λιτι λεία. καὶ τὰ περὶ νεῦρα διακοπὰς παρακολλᾷ κατα-
πλασσομένη. στρέμματά τε σφυρῶν καὶ τὰ περὶ ἄρθρα χρό-
νια ἀλγήματα λεία σὺν μέλιτι καταπλασθεῖσα ὀνίνησι. κα-
θαίρει καὶ ἔφηλιν καὶ ἀλφὸν σὺν κνίδης σπέρματι καὶ ὄ-
ξει. σὺν ὀρόβῳ δὲ καὶ μέλιτι τὰς ἀκαθαρσίας τῶν ἑλκῶν
ἀποκαθαίρει. καὶ τὰ δυσέκπεπτα τῶν ἀποστημάτων ῥήσσει. ἄ-
γει καὶ σκόλοπας σὺν αἰγείνῳ ἀλεύρῳ καὶ μέλιτι καταπλασ-
σομένη.

Περὶ Ἱπποφαοῦς. Κεφ. ψμδ.

Ἱπποφαές. ᾧ γνάφουσι τὰ ἱμάτια. φύεται μὲν ἐν παραθα-
λαττίοις καὶ ἀμμώδεσι τόποις. θάμνος δέ ἐστι φρυγανώδης. πυ-
κνός. ἀμφιλαφής. φύλλα ἔχων μακρὰ πρὸς τὰ τῆς ἐλαίας.

στενώτερα δὲ καὶ λεπτότερα καὶ μεταξὺ ἀκάνθας ξηρὰς ὑπερλεύκους. γωνιοειδεῖς. ἀπ᾽ ἀλλήλων διεστώσας. ἄνθη κορύμβοις ἐοικότα κισσοῦ, ὡς βοτρύδια προσκείμενα ἀλλήλοις. πλὴν μικρότερα καὶ μαλακά. καὶ μετὰ τὸ λευκοῦ φοινίσσοντα ἐκ μέρους. ῥίζα παχεῖα καὶ μαλακή. ὀποῦ μεστή. γευσαμένῳ πικρά. ὀπιζομένη ὥσπερ θαψία. Ἀποτίθεται δὲ καθ᾽ ἑαυτὸν ὁ ὀπὸς καὶ σὺν ὀροβίνῳ ἀλεύρῳ ἀναλαμβανόμενος καὶ ξηραινόμενος. καθαίρει δὲ χολώδη. ὑδατώδη καὶ φλεγματώδη. κάτω ὅσον ὀβολὸς ἀκέραιος. τοῦ δὲ μετὰ τοῦ ὀροβίνου τετρώβολον σὺν μελικράτῳ. καὶ ὁ θάμνος δὲ σὺν ταῖς ῥίζαις ξηραινόμενος κόπτεται. καὶ δίδοται λεῖος μετὰ μελικράτου κοτύλης μιᾶς ἡμισείας. γίνεται δὲ καὶ χύλισμα τῆς ῥίζης καὶ τῆς πόας ὥσπερ ἐπὶ τῆς θαψίας. δίδοται δὲ τούτου ∠ α´ εἰς τὰς καθάρσεις.

## Περὶ ἱπποφαίστου. Κεφ. ρμε´.

Ἱππόφαιστον. οἱ δὲ καὶ τοῦτο ἱπποφαὲς καλοῦσι. φύεται ἐν τοῖς αὐτοῖς τόποις ἐν οἷς καὶ τὸ ἱπποφαές. καὶ αὐτὸ γναφαλικῆς ἀκάνθης εἶδος ὑπάρχον. ἔστι δὲ χαμαιπετές. ἔχον μόνον φυλλάρια μικρά. ἀκανθώδη. καὶ κεφάλια χαῦνα. οὔτε δὲ καυλὸν οὔτε ἄνθος φέρει. ῥίζαν δὲ παχεῖαν καὶ μαλακήν. Ταύτης τὰ φύλλα καὶ τὴν ῥίζαν καὶ τὴν κεφαλὴν χυλίσας, ξήραινε καὶ δίδου ὁλκὴν τριωβόλου μετὰ μελικράτου ὡς βούλει. ἡ γὰρ διὰ τούτου κάθαρσις, ὕδωρ καὶ φλέγμα ἄγει. ἰδίως δὲ ὀρθοπνοίαις ἁρμόζει καὶ ἐπιληψίαις καὶ τοῖς περὶ νεῦρα πάθεσιν ἡ διὰ τούτου κάθαρσις.

## Περὶ κίκεως. Κεφ. ρμϛ´.

Κίκι ἢ κρότον. οἱ δὲ σήσαμον ἄγριον. οἱ δὲ σέσελι κύπριον. οἱ δὲ κρότωνα. ὠνόμασται κρότων, διὰ τὴν ὡς πρὸς τὸ ζῶον ἐμφέρειαν τοῦ σπέρματος. δένδρον δ᾽ ἐστὶ συκῆς μικρᾶς μέγεθος ἔχον. φύλλα δὲ ὅμοια πλατάνῳ. μείζονα δὲ καὶ λειότερα καὶ μελάντερα. τὰ δὲ στελέχη καὶ τοὺς κράδους κοῖλα καλάμου τρόπον ἔχει. καρπὸν δὲ ἐν βότρυσι τραχέσι. λεπισθέντα, ὅμοιον κρότωνι τῷ ζώῳ. Ἐξ οὗ καὶ ἀποθλίβεται τὸ λεγόμενον

κίκινον ἔλαιον. ἄβρωτον μέν. ἄλλως δὲ χρήσιμον εἰς λύχνους
καὶ ἐμπλάστρους. καθαρθέντες δὲ ὅσον λʹ κόκκοι τὸν ἀρι-
θμὸν καὶ ποθέντες λεῖοι, ἄγουσι κατὰ κοιλίαν φλέγμα καὶ
χολὴν καὶ ὕδωρ. κινοῦσι δὲ καὶ ἔμετον. ἔστι δὲ λίαν ἀηδὴς καὶ
ἐργώδης ἡ τοιαύτη κάθαρσις. ἀνατρέπουσα στόμαχον ἰσχυρῶς.
κοπεῖσα δὲ καὶ καταπλασθεῖσα ἴονθους καὶ ἐφήλεις καθαί-
ρει. τὰ δὲ φύλλα τριβέντα μετὰ παιπάλης ἀλφίτου, ὀφθαλ-
μῶν οἰδήματα καὶ φλεγμονὰς παύει. καὶ σπαργῶντας μα-
στούς. ἐρυσιπέλατά τε σβεννύουσι καθ' ἑαυτὰ καὶ μετ' ὄξους κα-
ταπλασσόμενα.

## Περὶ τιθυμάλων. Κεφ. ψμζʹ.

Τιθυμάλων εἴδη ζʹ. ὧν ὁ μὲν ἄρρην χαρακίας καλεῖται. ὑπὸ
δέ τινων κομήτης. ἢ ἀμυγδαλοειδὴς ἢ κώβιος ὀνομάζεται. ὁ
δέ τις θῆλυς ἢ μυρσινίτης. ὃν καὶ καρυΐτην ἢ μυρσινίτην κα-
λοῦσιν. ὁ δὲ παράλιος. ὃν ἔνιοι τιθυμαλίδα ἐκάλεσαν. ὁ δέ
τις ἡλιοσκόπιος. ὁ δὲ κυπαρισσίας. ὁ δὲ δενδροειδής. ὁ δὲ πλα-
τύφυλλος. Τοῦ δὴ χαρακίου καλουμένου, καυλοὶ μὲν, ὑ-
πὲρ πῆχυν ἐρυθεῖς. ὀποῦ δριμέος καὶ λευκοῦ μεστοί. φύλ-
λα δὲ περὶ τὰς ῥάβδους ὅμοια ἐλαίᾳ. μακρότερα δὲ καὶ στε-
νότερα. ῥίζα ἁδρὰ καὶ ξυλώδης. ἐπ' ἄκρων δὲ τῶν καυλῶν,
κόμη σχοινοειδῶν ῥαβδίων. καὶ ὑπ' αὐτῶν ὑπόκοιλα ὅμοια πυε-
λοῖσιν. ἐν οἷς ὁ καρπός. φύεται ἐν τραχέσι καὶ ὀρεινοῖς τόποις.

Δύναμιν δὲ ἔχει ὁ ὀπὸς καθαρτικὴν τῆς κάτω κοιλίας.
ἄγων φλέγμα καὶ χολὴν ὀβολῶν βʹ πλῆθος λαμβανόμε-
νος μετ' ὀξυκράτου. σὺν μελικράτῳ δὲ καὶ ἔμετον κινεῖ. ὀπί-
ζεται δὲ περὶ τὸν τρυγητόν. συναχθεισῶν τῶν ῥάβδων καὶ
ἀποτμηθεισῶν. ἐγκεκλεῖσθαι δὲ αὐτὰς δεῖ εἰς ἀγγεῖον. ἔνιοι
δὲ ὀρόβινον ἄλευρον μιγνύντες, συναναπλάσσουσιν ὀροβι-
αῖα μεγέθη. τινὲς δὲ εἰς τὰ ξηραινόμενα σῦκα ἀποστάζουσι στα-
λαγμοὺς γʹ ἢ δʹ. καὶ ξηραίνοντες ἀποτίθενται. καθ' ἑαυτὸν
δὲ τριβόμενος ἐν θυΐᾳ ἀναπλάσσεται καὶ ἀποτίθεται. ἐν
δὲ τῷ ὀπίζειν οὐ δεῖ κατὰ ἄνεμον ἵστασθαι. οὐδὲ τὰς χεῖρας
ἄγειν τοῖς ὀφθαλμοῖς. ἀλλὰ καὶ πρὸ τοῦ ὀπίζειν τὸ σῶμα δεῖ
χρίειν στέατι ἢ ἐλαίῳ μετ' οἴνου καὶ μάλιστα πρόσωπον καὶ τρά-
χηλον καὶ ὄσχεον. τραχύνειν δὲ καὶ τὴν φάρυγγα. ὅθεν δεῖ κα-

τὰ πόρια περιπλάττειν κηρῷ ἢ μέλιτι ἑφθῷ. καὶ οὕτως δι-
δόναι. ἰσχάδες μέντοι δύο ἢ τρεῖς λαμβανόμεναι, αὐτάρκεις εἰ-
σὶ πρὸς κάθαρσιν. ψιλοῖ δὲ καὶ τρίχας ὁ ὀπὸς πρόσφατος ἐ-
πιχρισθεὶς μετ᾽ ἐλαίου, ἐν ἡλίῳ. καὶ τὰς ἐπιγινομένας δὲ ξαν-
θὰς καὶ λεπτὰς ποιεῖ. καὶ τέλος ἐκφθείρει πάσας. ἐντίθε-
ται δὲ καὶ τοῖς βρώμασι τῶν ὀδόντων κουφίζων τὰ ἀλγήμα-
τα. κηρῷ δὲ δεῖ τοὺς ὀδόντας ἐπιπλάττειν. ἵνα μὴ παραῤῥυεὶς
κακώσῃ τὴν φάρυγγα ἢ τὴν γλῶτταν. αἴρει δὲ καὶ μυρμηκίας.
καὶ ἀκροχορδόνας καὶ θύμους καὶ λειχῆνας ἐπιχριόμε-
νος. ἁρμόζει καὶ πρὸς πτερύγια καὶ ἄνθρακας. φαγεδαίνας.
γαγγραίνας. σύριγγας. καὶ ὁ καρπὸς δὲ φθινοπώρῳ συλλε-
γεὶς. καὶ ξηρανθεὶς ἐν ἡλίῳ. κοπεὶς τε κούφως καὶ ἀποβρα-
σθεὶς καθαρῶς ἀποτίθεται. καὶ τὰ φύλλα ὁμοίως ξηρά. ποιεῖ
δὲ καὶ ὁ καρπὸς καὶ τὰ φύλλα τὰ αὐτὰ τῷ ὀπῷ. πλῆθος
ἡμίσους ὀξυβάφου ποτιζόμενα. ἔνιοι δὲ καὶ ταριχεύουσιν
αὐτά. μιγνύντες τῷ διὰ τοῦ γάλακτος λεπιδίῳ. καὶ τυρῷ
κοπτῷ. καὶ ἡ ῥίζα δὲ ἐπιπασθεῖσα ∠ α´ σὺν ὑδρομέλιτι καὶ
ποθεῖσα, ἄγει κατὰ κοιλίαν. ἑψηθεῖσα δὲ σὺν ὄξει καὶ δια-
κλυζομένη, ὀδονταλγίας βοηθεῖ. Περὶ τοῦ θήλεος.

Ὁ δὲ θῆλυς ὃν ἔνιοι μυρσινίτην ἢ καρυΐτην ἐκάλεσαν, προσεμ-
φερὴς τῷ δαφνοειδεῖ τὴν φύσιν καὶ τὰ φύλλα ὅμοια ἔχει
μυρσίνῃ. μείζονα δὲ καὶ στερεὰ, ἐπ᾽ ἄκρου ὀξέα καὶ ἀκανθώδη.
κλήματα δὲ ἀπὸ τῆς ῥίζης σπιθαμιαῖα ἀφίησι. τὸν δὲ καρ-
πὸν φέρει παρ᾽ ἐνιαυτόν. καρύῳ ὅμοιον. ἡσυχῆ δάκνοντα τὴν
γλῶσσαν. ἐν τραχέσι δὲ χωρίοις καὶ οὗτος φύεται. Δυνά-
μιν δὲ ἔχει ὁ ὀπὸς καὶ ἡ ῥίζα καὶ ὁ καρπὸς καὶ τὰ φύλλα ὁ-
μοίαν τῷ πρὸ αὐτοῦ. ἐμετικώτερος μέντοι ἐκεῖνος τούτου
ἐστίν. Περὶ τοῦ παραλίου.

Ὁ δὲ παράλιος λεγόμενος τιθύμαλος, ὃν ἔνιοι τιθυμαλίδα ἢ
μήκωνα ἐκάλεσαν, φύεται ἐν παραθαλασσίοις τόποις. κλῶ-
νας δὲ ἔχει σπιθαμιαίους ὑπερύθρους. ε´ ἢ ς´ ἀπὸ τῆς ῥίζης
περὶ οὓς τὰ φύλλα στοιχηδὸν μικρά. ὑπόστενα προμήκη. ἐοι-
κότα λίνῳ. κεφαλὴν δὲ ἐπ᾽ ἄκρου περιφερῆ. ἐν ᾗ ὁ καρπὸς
ὡς ὄροβος. ποικίλος, ἄνθη λευκά. ὅλος δὲ ὁ θάμνος καὶ ἡ ῥί-
ζα, ὀποῦ λευκοῦ μεστή. καὶ τούτου χρῆσις καὶ ἀπόθεσις, ὁμοία

ὄζει τοῖς προειρημένοις.

Περὶ τοῦ ἡλιοσκοπίου.

Ὁ δὲ ἡλιοσκόπιος λεγόμενος, ἀνδράχνῃ ὅμοια φύλλα ἔχει. λεπτότερα δὲ καὶ περιφερέστερα. κλῶνας δὲ ἀφίησιν ἀπὸ τῆς ῥίζης δ΄ ἢ ε΄. σπιθαμιαίους λεπτοὺς καὶ ἐρυθρούς. ὀποῦ λευκοῦ μεστοὺς πολλοῦ. κεφαλὴ δὲ ἀνηθοειδής. καὶ ὁ καρπὸς δὲ ὥσπερ ἐν κεφαλίοις. συμπεριφέρεται δὲ τούτου ἡ κόμη τῇ τοῦ ἡλίου κλίσει. ὅθεν καὶ ὠνόμασται ἡλιοσκόπιος. ἐν ἐρειπίοις δὲ μάλιστα καὶ περὶ τὰς πόλεις φύεται. συλλέγεται δὲ ὁ ὀπὸς καὶ ὁ καρπὸς ὥσπερ καὶ τῶν ἄλλων. Δύναμιν ἔχων τὴν αὐτὴν τοῖς προτέροις ἀλλ' οὐχ οὕτως ἐπιτεταμένην.

Περὶ κυπαρισσίου.

Ὁ δὲ κυπαρισσίας, καυλὸν μὲν ἀνίησι σπιθαμιαῖον ἢ καὶ μείζονα. ὑπέρυθρον. ἐξ οὗ βεβλάστηκε τὰ φύλλα τοῖς τῆς πίτυος ὅμοια. τρυφερώτερα μέντοι καὶ λεπτότερα. καὶ καθόλου ἔοικε πίτυϊ ἀρτιφυεῖ. ὅθεν καὶ ὠνόμασται. πεπλήρωται δὲ καὶ οὗτος ὀποῦ λευκοῦ. Δύναμιν δὲ ἔχει ὁμοίαν τοῖς πρὸ αὐτοῦ.

Περὶ τοῦ ἐν ταῖς πέτραις φυομένου.

Ὁ δὲ ἐν ταῖς πέτραις φυόμενος δενδροειδὴς δὲ καλούμενος, ἀμφιλαφὴς ἄνωθεν καὶ πολύκομος. ὀποῦ μεστός. ὑπέρυθρος τοὺς κλάδους. περὶ οὓς τὰ φύλλα μυρσίνῃ λεπτῇ προσεοικότα. καρπὸς δὲ ὅμοιος τῷ τοῦ χαρακίου. παραπλησίως δὲ καὶ οὗτος ἀποτίθεται. καὶ ἐνεργεῖ ὁμοίως τοῖς προειρημένοις.

Περὶ πλατυφύλλου.

Ὁ δὲ πλατύφυλλος φλόμῳ ἔοικε. καὶ αὐτοῦ δὲ ἡ ῥίζα καὶ ὁ ὀπὸς καὶ τὰ φύλλα, ἄγει ὑδατώδη κατὰ κοιλίαν. ἀποκτείνει δὲ καὶ τοὺς ἰχθύας κοπεὶς καὶ διεθεὶς τῷ ὕδατι. καὶ οἱ προγεγραμμένοι δὲ τὸ αὐτὸ δρῶσι.

Περὶ πιτυούσης. Κεφ. ψμη΄.

Πιτύουσα. οἱ δὲ κλῆμα. οἱ δὲ κραμβίον. οἱ δὲ παράλιον. οἱ δὲ κανοπικὸν καλοῦσιν. εἴδει δὲ δοκεῖ διαφέρειν τοῦ κυπαρισσίου τιθυμάλου. ὅθεν καὶ εἶδος ἐν αὐτοῖς καταριθμεῖται. ἀνίησι δὲ καυλὸν πήχεως μείζονα πολυγόνατον φυλλαρίοις ὀξέσι λεπτοῖς κατειλημμένον, ἐμφερέσι τοῖς τῆς πίτυος. ἄνθη μικρὰ ὡσεὶ πορφυρᾶ. καρπὸν δὲ πλατὺν ὡς φακόν. ῥίζαν λευ

κὴν παχεῖαν ὀποῦ μεστήν. εὑρίσκεται δὲ κατὰ τόπους σφό-
δρα εὐμεγέθης ὁ θάμνος. Καθαίρει δὲ κάτω ἡ μὲν ῥίζα,
𐅵 β´ ὁλκῆ δοθεῖσα σὺν μελικράτῳ. τοῦ δὲ καρποῦ α´. τοῦ δὲ ὀ-
ποῦ ὅσον κοχλιάριον ἐν καταποτίῳ ἀναληφθέντος ἀλεύ-
ρῳ. τῶν δὲ φύλλων ὁλκαὶ γ´.

Περὶ λαθυρίδος.

Λαθυρίς. οἱ δὲ, καὶ ταύτην τιθύμαλον καλοῦσι. καταριθμοῦν-
ται τινὲς καὶ αὐτὴν ἐν τοῖς τιθυμάλοις. καυλὸν ἀνίησι πήχε-
ως τὸ ὕψος. κενόν. πάχος δακτύλου. ἐπ' ἄκρου δὲ αὐτοῦ μα-
σχάλαι. φύλλα δὲ τὰ μὲν ἐπὶ τοῦ καυλοῦ ἐπιμήκη. ὅμοια τοῖς
τῆς ἀμυγδαλῆς. πλατύτερα δὲ καὶ λειότερα. τὰ δὲ ἐπ' ἄ-
κρων τῶν κλωνίων μακρότερα. ὥσπερ ἀριστολοχίας ἢ κισ-
σοῦ τοῦ ἐπιμήκους. καρπὸν δὲ ἔχει ἐπ' ἄκρων τῶν κλάδων
τρίχωρον. περιφερῆ ὥσπερ κάππαριν. ἐν ᾧ τρία σπέρμα-
τα διειργόμενα ἐλύτροις ἀπ' ἀλλήλων. περιφερῆ. μείζονα ὀ-
ρόβων. λεπισθέντα δὲ λευκὰ καὶ γλυκέα ἐν τῇ γεύσει. ῥίζα
λεπτή. ἄχρηστος. ὅλος δὲ ὁ θάμνος ὀποῦ μεστὸς ὥσπερ τιθύ-
μαλος. Δύναμιν δὲ ἔχει καθαρτικὴν κοιλίας τὰ σπέρ-
ματα, ὅσον ζ´ ἢ η´ τὸν ἀριθμὸν λαμβανόμενα ἐν καταποτίῳ.
ἢ ἐσθιόμενα καὶ καταπινόμενα μετὰ ἰσχάδων ἢ φοινίκων ὕ-
δατος ψυχροῦ ἐπιρροφουμένου. ἄγει δὲ φλέγμα καὶ χολὴν
καὶ ὕδωρ. καὶ ὁ ὀπὸς ἀναληφθεὶς ὥσπερ ὁ τοῦ τιθυμάλου. τὸ
αὐτὸ ποιεῖ. συνέψεται δὲ καὶ ὄρνισιν ἢ λαχάνοις τὰ φύλλα
πρὸς τὴν αὐτὴν ἐνέργειαν.

Περὶ πέπλου. κεφ. φμθ´.

Πέπλος. οἱ δὲ, συκῆν. οἱ δὲ μήκωνα ἀφρώδη καλοῦσι. θαμνί-
σκος ἐστὶν ὀποῦ λευκοῦ μεστός. ἔχων φύλλον μικρὸν ὅμοιον
πηγάνῳ. πλατύτερον δέ. ἡ δὲ σύμπασα κόμη ὡς σπιθαμῆς.
περιφερής. ἐκκεχυμένη ἐπὶ τῆς γῆς. καὶ ὑπὸ τοῖς φύλ-
λοις. καρπὸς μικρὸς στρογγύλος, ἥττων τῆς λευκῆς μήκω-
νος. πολύχρηστος δὲ ἡ πόα. ῥίζα ἔχουσα μίαν ἄχρηστον. ἀφ'
ἧς ὅλος ὁ θάμνος πέφυκε. γεννᾶται δὲ ἐν κήποις καὶ ἀμπε-
λῶσι. Συνάγε δὲ ἐν πυραμητῷ ξηραινομένη ἐν σκιᾷ, καὶ
συνεχῶς στρεφομένη. ἀποτίθεται δὲ ὁ καρπὸς κοπεὶς καὶ
ἀποβραχθείς. ἄγει δὲ φλέγμα καὶ χολὴν ὀξυβάφου πλῆ-
θος, μετὰ ὑδρομέλιτος κυάθου πινόμενος. καὶ ἐν προσοψήμα

σι δὲ μιγνύμενος ταράσσει τὴν κοιλίαν ταριχεύεται δὲ εἰς ἀλμαίας.

Περὶ πεπλίδος. Κεφ. φν'.

Πεπλίς· οἱ δὲ ἀνδράχνην ἀγρίαν. Ἱπποκράτης δὲ πέπλιον καλεῖ. φύεται μάλιστα ἐν παραθαλασσίοις τόποις. θάμνος ἀμφιλαφής. ὀποῦ μεστὸς λευκοῦ. φύλλα ἔχων ὅμοια τῇ κηπαίᾳ ἀνδράχνῃ. περιφερῆ δὲ καὶ ἐκ τῶν κάτω ἔχοντα ἐνερευθές. καὶ ὁ καρπὸς δὲ στρογγύλος ὑποκάτω τῶν φύλλων. ὥσπερ τοῦ πέπλου. πυρώδης τῇ γεύσει. ῥίζα λεπτὴ μία ἄχρηστος. συλλέγεται δὲ καὶ ἀποτίθεται. καὶ δίδοται ὥσπερ ὁ πέπλος. καὶ ταριχεύεται. δύναμιν δὲ ἔχει τὴν αὐτήν.

Περὶ Χαμαισύκης. Κεφ. φνα'.

Χαμαισύκην· οἱ δὲ συκῆν καλοῦσι. κλῶνας ἀνίησι τετραδακτύλους ἀπὸ γῆς ἐῤῥιμμένους, περιφερεῖς. ὀποῦ μεστοὺς φύλλα φακοειδῆ. τῷ πέπλῳ ὅμοια. μικρά. λεπτὰ πρὸς τῇ γῇ. καρπὸς δὲ ὑπὸ τοῖς φύλλοις στρογγύλος ὡς πέπλου. οὔτε δὲ ἄνθος οὔτε καυλὸν ἔχει. ῥίζαν λεπτὴν καὶ ἄχρηστον. Δύναμιν δὲ ἔχουσιν οἱ κλῶνες λεανθέντες σὺν οἴνῳ, τὰς περὶ μήτραν ὀδύνας παύειν, ἀντὶ πεσσοῦ προστεθέντες. καταπλασσόμενοι δὲ οἰδήματα καὶ ἀκροχορδόνας καὶ μυρμηκίας αἴρουσιν. ἑφθοὶ δὲ ἐσθιόμενοι κοιλίαν ἐκλύουσι. καὶ ὁ ὀξ αὐτῶν δὲ ὀπὸς τὰ αὐτὰ δρᾷ. καὶ καταχριόμενος, σκορπίου πληγῇ βοηθεῖ. ἁρμόζει καὶ πρὸς ἀμβλυωπίαν καὶ ἀχλύας. καὶ ἀρχομένας ὑποχύσεις. οὐλάς. νεφέλια σὺν μέλιτι ἐγχριόμενος. φύεται ἐν πετρώδεσι καὶ αὐχμηροῖς τόποις.

Περὶ Σκαμμωνίας. Κεφ. φνβ'.

Σκαμμωνία· κλῶνας ἀνίησι πολλοὺς, ἀπὸ μιᾶς ῥίζης τριπήχεις. λιπαρούς. ἐμφαίνοντάς τι παχύτητος. καὶ τὰ φύλλα δὲ δασέα. ὅμοια ἐλξίνῃ ἢ κιττῷ. μαλακώτερα μέντοι καὶ τριγωνοειδῆ ἄνθη λευκὰ περιφερῆ. κοῖλα ὡς οἱ κάλαθοι βαρύοσμα. ῥίζα δὲ εὐμήκης. παχεῖα ὅσον πῆχυς λευκή. βαρύοσμος. ὀποῦ μεστή. Συλλέγεται δὲ ὁ ὀπὸς τῆς κεφαλῆς ἀπὸ τῆς ῥίζης ἀφαιρουμένης. καὶ θολοειδῶς τεμνομένης εἰς

κοιλότητα. συῤῥεῖ γὰρ εἰς αὐτὴν ὁ ὀπὸς καὶ οὕτως ἀναλαμβάνεται εἰς μύκητας. ἔνιοι δὲ τὴν γῆν ὀρύξαντες, θολοειδῶς καρύας φύλλα ὑποθέντες, καταχέουσι τὸν ὀπόν. καὶ οὕτω ξηρανθέντα ἀναιροῦνται. ἔστι δὲ καλὸς ὁ διαυγὴς καὶ κοῦφος. ἀραιός. ταυροκολλώδης τὴν χρόαν. σήραγγας ἔχων λεπτάς. σφογγώδης. τοιοῦτος δέ ἐστιν ὁ ἐκ μυσίας τῆς κατὰ τὴν ἀσίαν κομιζόμενος. μὴ προσέχειν δὲ μόνον τῷ λευκαίνεσθαι, αὐτὸν κατὰ τὴν τῆς γλώττης θίξιν. τοῦτο γὰρ γίνεται καὶ παραμιγέντος αὐτῷ ὀποῦ τιθυμάλου. μᾶλλον δὲ τοῖς προειρημένοις. καὶ τῷ μὴ λίαν πυροῦν τὴν γλῶσσαν. ὅπερ γίνεται τιθυμάλου μιγέντος. ὁ δὲ συριακὸς καὶ ὁ ἐν ἰουδαίᾳ γεννώμενος, χείριστοι. βαρεῖς. πυκνοί. δολούμενοι τιθυμάλῳ, καὶ ὀροβίνῳ ἀλεύρῳ. Δύναμιν δὲ ἔχει ὁ ὀπὸς ληφθεὶς σὺν μελικράτῳ, ἢ ὕδατι πλῆθος < ἢ τετρωβόλου, καθαίρειν κάτω χολὴν καὶ φλέγμα. εἰς δὲ τὸ λῦσαι τὴν κοιλίαν ἀρκέσουσιν ὀβολοὶ β΄. μετὰ σησάμου ἢ τινὸς ἄλλου σπέρματος λαμβανόμενοι. δίδοται καὶ πρὸς ἐνεργεστέραν κάθαρσιν τοῦ μὲν ὀποῦ τριώβολον. ἐλλεβόρου δὲ μέλανος ὀβολοὶ β΄. καὶ ἀλόης < α΄. σκευάζονται δὲ καὶ ἅλες καθαρτικοὶ πρὸς κυάθους ς΄ τῶν ἁλῶν ὁλκῶν κ΄. τῆς σκαμμωνίας τοῦ ὀποῦ μιγνυμένου. λαμβάνεται δὲ πρὸς δύναμιν τὸ μὲν τέλειον, τρία κοχλιάρια. μέσον δὲ β΄. τὸ δὲ ἐλάχιστον α΄. καθαίρει δὲ καὶ τῆς ῥίζης < α΄. ἢ < β΄ σὺν οἷς εἴρηται. ἔνιοι δὲ ἀφέψοντες αὐτὴν, πίνουσι. σὺν ἑψηθεῖσα δὲ ὄξει καὶ λεανθεῖσα μετὰ ἀλεύρου κριθίνου, ἰσχιαδικῶν ἐστι κατάπλασμα. ὁ δὲ ὀπὸς προστιθέμενος ἐν ἐρίῳ τῇ μήτρᾳ, ἔμβρυα φθείρει. διαφορεῖ δὲ καὶ φύματα σὺν μέλιτι ἢ ἐλαίῳ καταχριόμενος. ἑψηθεὶς δὲ ἐν ὄξει καὶ καταχρισθεὶς, λέπρας ἐξάγει. κεφαλαλγίας τε χρονίας ἐστὶν ἐπίβρεγμα σὺν ὄξει καὶ ῥοδίνῳ.

## Περὶ χαμελαίας. ΚΕΦ. ρνγ΄.

Χαμελαία. οἱ δὲ πυρὸς ἄχνη ἢ ἄκνηστος. οἱ δὲ κόκκος κνίδειος. κλῶνας μὲν ἔχει σπιθαμιαίους. ὁ δὲ θάμνος φρυγανώδης. φύλλα ἔχει ἐλαίᾳ παραπλήσια. λεπτότερα δὲ καὶ πυκνὰ, καὶ πικρά. δάκνοντα τὴν γεῦσιν. καὶ χαράττοντα τὴν ἀρ-

τηρίαν. Ταύτης τὰ φύλλα κάτω καθαίρει φλέγμα καὶ χολὴν μάλιστα ἐν καταποτίῳ λαμβανόμενα. μιγνυμένου διπλασίονος ἀψινθίου πρὸς ἓν μέρος τῆς χαμελαίας. ἀναλαμβανέσθω δὲ ὕδατι ἢ μέλιτι εἰς καταπότιον. ἔστι δὲ ἄδηκτα. διαχωρεῖται γὰρ ὅσα λαμβάνεται. ἀναλαμβανόμενα λεῖα τὰ φύλλα μετὰ μέλιτος ἀνακαθαίρει τὰ ῥυπαρὰ ἕλκη καὶ ἐσχαρωμένα.

## Περὶ θυμελέας. Κεφ. ψνδ´.

Θυμελαία. οἱ δὲ χαμελαίαν. οἱ δὲ πυρὸς ἄχνην. ἢ κέστρον ἢ κνέωρον καλοῦσιν. ἐκ ταύτης ὁ κνίδιος κόκκος καρπὸς ὢν συλλέγεται. ὃν εὐβοεῖς μὲν αἰτώλιον καλοῦσιν. οἱ δὲ λῖνον. διὰ τὸ εἶναι τῷ σπαρτῷ λίνῳ θάμνον τῇ φύσει παρόμοιον. ῥάβδους δὲ ἀνίησι καλὰς καὶ πολλὰς ὅσον διπήχεις. τὰ δὲ φύλλα χαμελαίᾳ ὅμοια. πλὴν στενώτερα καὶ λιπαρώτερα. ὑπόγλισχρα ἐν τῷ διαμασᾶσθαι καὶ κολλώδη. ἄνθη λευκά. καὶ μεταξὺ αὐτῶν ὁ καρπός, ὡς μύρτον μικρὸς στρογγύλος. ἐν ἀρχῇ μὲν χλωρός. αὖθις δὲ ἐρυθρός. τὸ δὲ περικάρπιον σκληρὸν καὶ μέλαν. τὸ δ᾽ ἐντὸς λευκόν. Ὅπερ καθαίρει κάτω χολὴν καὶ φλέγμα καὶ ὕδωρ, ὅσον κ. κόκκων τὸ ἐντὸς ποθέν. καίει δὲ τὴν φάρυγγα. διὸ μετὰ ἀλεύρου ἢ ἀλφίτου δοτέον. ἢ ἐν ῥαγὶ σταφυλῆς ἢ μέλιτι ἑφθῷ περιειλημμένον καταπιεῖν. συγχρίειν δὲ καὶ τοὺς δυσίδρους λεῖον μετὰ νίτρου καὶ ὄξους. τὰ δὲ φύλλα ἅπερ ἰδίως καλεῖται κνέωρον, συλλέγειν δεῖ περὶ τὸν πυραμητόν. καὶ ἀποτίθεσθαι ξηράναντας ἐν σκιᾷ. διδόντας δὲ δεῖ κόπτειν καὶ ἀφαιρεῖν τὰς ἐν αὐτοῖς ἶνας. καθαίρει δὲ ἐπιπλασσόμενον ὅσον ὀξυβάφου πλῆθος μετὰ κράματος ἄγον ὑδατώδες. μετριωτέραν δὲ ποιεῖ τὴν κάθαρσιν μιχθὲν ἑφθῇ φακῇ καὶ λαχάνοις τευτλοῖς. ἀποτίθεται δὲ λεῖα ἀναληφθέντα ὄμφακος χυλῷ. εἰς ἀρτίσκους. ἔστι δὲ κακοστόμαχος ἡ βοτάνη. προστεθεῖσα δὲ ἔμβρυα κτείνει. φύεται ἐν ὀρεινοῖς καὶ τραχέσι τόποις.

Πλανῶνται δὲ νομίζοντες τὸν κνίδειον κόκκον, τῆς χαμελαίας εἶναι καρπόν. ἀπατώμενοι διὰ τὸ τῶν φύλλων ὁμοειδές.

## Περὶ ἄκτης. Κεφ. ψνδ´.

Ἀκτή. διττή ἐστιν. ἡ μὲν, γάρ τις ἐστὶ δενδρώδης. κλάδους καλαμώδεις ἔχουσα. στρογγύλους. ὑπόκοίλους. ὑπολεύκους. εὐμήκεις. τὰ φύλλα γʹ. ἢ δʹ. ἐκ διαστημάτων περὶ τὴν ῥάβδον. καρύᾳ βασιλικῇ ὅμοια. βαρύοσμά τε καὶ τμητικώτερα. ἐπ' ἄκρων δὲ τῶν κλάδων ἢ τῶν καυλῶν, σκιάδια περιφερῆ ἔχοντα. ἄνθη λευκά. καρπὸν δὲ ἐοικότα τερμίνθῳ ἐν τῷ μέλανι. ὑπόπορφυρον. βοτρυώδη. πολύχυλον. οἰνώδη.

Περὶ Χαμαιάκτης. Κεφ. ψνϛʹ.

Τὸ δὲ ἕτερον αὐτῆς χαμαιάκτη καλεῖται. αὕτη χαμαιπετὴς οὖσα ἐλάσσων ἐστὶ καὶ βοτανωδεστέρα. καυλὸν ἔχουσα τετράγωνον καὶ πολυγόνατον. τὰ δὲ φύλλα ἐκ διαστημάτων περὶ ἕκαστον γόνυ τεταρσομενά. ὅμοια ἀμυγδαλῇ. κεχαραγμένα δὲ κύκλῳ, καὶ μακρότερα. βαρύοσμα. σκιάδιον δὲ ἐπ' ἄκρου ὅμοιον τῇ πρὸ αὐτῆς ἔχουσα. καὶ ἄνθος καὶ καρπόν. ῥίζα δ' ὕπεστι μακρά. δακτύλου πάχος. Δύναμις δὲ ἡ αὐτὴ ἀμφοτέραις καὶ χρῆσις. ξηραντική. ὑδραγωγός. κακοστόμαχος μέντοι. ἑψόμενα δὲ τὰ φύλλα ὡς λάχανα, καθαίρει φλέγμα καὶ χολήν. καὶ οἱ καυλοὶ δὲ ἁπαλοὶ ἐν λοπάδι ληφθέντες τὰ αὐτὰ ποιοῦσιν. ἡ ῥίζα δὲ αὐτῆς ἀφεψηθεῖσα σὺν οἴνῳ καὶ διδομένη παρὰ τὴν δίαιταν, ὑδρωπικοὺς ὠφελεῖ. βοηθεῖ καὶ ἐχιοδήκτοις ὁμοίως πινομένη. ἀφεψηθεῖσα δὲ μεθ' ὕδατος, ἐγκάθισμα, μαλάσσει ὑστέραν καὶ ἀναστομοῖ. καὶ διορθοῦται τὰς περὶ αὐτὴν διαθέσεις. καὶ ὁ καρπὸς δὲ σὺν οἴνῳ ποθεὶς, τὰ αὐτὰ ποιεῖ. μελαίνει δὲ καὶ τείχας ἐγχριόμενος. τὰ δὲ φύλλα πρόσβατα καὶ ἁπαλὰ, φλεγμονὰς πραΰνει μετὰ ἀλφίτων καταπλαττόμενα. καὶ κατακαύμασιν ἁρμόζει καὶ κυνοδήκτοις καταπλασσόμενα. κολλᾷ δὲ ὑποφορὰς καὶ ποδαγρικοῖς βοηθεῖ. μετὰ στέατος ταυρείου ἢ τραγείου καταπλασσόμενα.

Περὶ Πυκνοκόμου. Κεφ. ψνζʹ.

Πυκνόκομον φύλλα ἔχει ὅμοια εὐζώμῳ. τραχέα δὲ καὶ παχέα καὶ δριμύτερα. καυλὸν, τετράγωνον. ἄνθος δὲ τῷ τοῦ ὠκίμου ἐμφερές. καρπὸν δὲ, ὡς πρασίου. ῥίζαν, μέλαιναν. στρογγύλην.

λην. ὠχράν. ὡς μικρὸν μῆλον. γεώδες ὄζουσαν. φύεται ἐν πετρώδεσι τόποις. Δύναμιν δὲ ἔχει ὁ καρπὸς ποθεὶς ὅσον < α΄ πλῆθος, ταραχώδη καὶ δεινὰ ἐνύπνια ποιεῖν. διαφορεῖ δὲ καὶ οἰδήματα ἐπιπλαττόμενος σὺν ἀλφίτῳ. καὶ ἀκίδας καὶ σκόλοπας ἐξάγει. καὶ τὰ φύλλα δὲ καταπλαττόμενα, φύματα καὶ δοθιῆνας διαφορεῖ. ἡ δὲ ῥίζα αὐτῆς λυτικὴ κοιλίας καὶ κινητικὴ χολῆς. δίδοται < β΄ ἐν μελικράτῳ.

## Περὶ Ἀπίου.

Ἄπιος. οἱ δὲ, ἰσχιάδα. οἱ δὲ, χαμαιβάλανος, ὀρεινὴ ἢ ἀγρία. οἱ δὲ, λινόζωστις. κλωνία δύο ἢ τρία ἀπὸ γῆς ἀνίησι. σχινώδη. λεπτά. ἐρυθρά. μικρὸν ὑπὲρ τῆς γῆς αἴροντα. φύλλα πηγάνῳ ἐοικότα. ἐπιμηκέστερα μέντοι καὶ στενώτερα. χλωρά. καρπὸς μικρός. ῥίζα ἀσφοδέλῳ παραπλησία καὶ πρὸς τὸ τῆς ἀπίου σχῆμα. στρογγυλωτέρα δέ. μεστὴ ὀποῦ. φλοιὸν ἔχουσα ἔξωθεν μέλανα. ἔνδοθεν δὲ λευκόν. Ταύτης τὸ μὲν ἔνδοθεν μέρος τῆς ῥίζης ληφθὲν, δι᾽ ἐμέτων ἄγει χολὴν καὶ φλέγμα. τὸ δὲ πρὸς τῇ ῥίζῃ κάτω καθαίρει. ὅλη δὲ ληφθεῖσα, ἀμφοτέρας τὰς καθάρσεις κινεῖ. ὀπίσαι δὲ βουληθεὶς, κόπτε τὰς ῥίζας. καὶ βαλὼν εἰς κρατῆρα ὕδατος σὺν τάρασσε. καὶ τὸν ἐφιστάμενον ὀπὸν πτερῷ ἀναλέγων ξήραινε. τούτου τρία ἡμιωβόλια ποθέντα, ἄνω καὶ κάτω καθαίρει.

## Περὶ Κολοκυνθίδος. Κεφ. ψνζ΄.

Κολοκυνθίς. οἱ δὲ, κολόκυνθα ἀγρία. οἱ δὲ, σικύαν πικράν. οἱ δὲ, κολόκυνθα ἀλεξανδρίνη. κλημάτια καὶ φύλλα ἐστρωμένα, ἐπὶ τῆς γῆς ἀνίησιν. ὅμοια τοῖς τοῦ ἡμέρου σικύου. ἐπεσχισμένα. καρπὸν δὲ περιφερῆ. ὅμοιον σφαίρᾳ μέσῃ. πικρὸν ἰσχυρῶς. ὃν δεῖ συνάγειν ἀρχόμενον μεταβάλλειν ἐπὶ τὸ ὠχρότερον. Δύναμιν δὲ ἔχει ἡ μὲν ἐντεριώνη τοῦ καρποῦ καθαρτικήν. τετρωβόλου πλῆθος μετὰ ὑδρομέλιτος λαμβανομένη σὺν νίτρῳ καὶ σμύρνῃ καὶ μέλιτι ἑφθῷ εἰς καταπότιον. αὗται δὲ αἱ σφαῖραι ξηραὶ λεῖαι, ὠφελίμως μίγνυνται κλύσμασιν ἐπὶ ἰσχιαδικῶν. καὶ παραλυτικῶν. καὶ κω

λικῶν. ἄγουσαι φλέγμα καὶ χολὴν καὶ ξύσμα. ἔσθ' ὅτε δὲ καὶ αἱματώδη. ἔμβρυά τε φθείρουσι προστιθέμεναι. ὀδονταλγίας τε διάκλυσμα. ἐάν τις ἐκκαθάρας αὐτὴν καὶ περιπλάσας πηλῷ, ἀναποξέσας τε ἐν ὄξει καὶ νίτρῳ, δῷ διακλύζεσθαι. εἰ δέ τις ἀναφεψήσας μελίκρατον ἢ καὶ γλυκὺ καὶ ἐξαιθριάσας δῷ πιεῖν, καθαίρει πάχος καὶ ξύσμα. ἔστι δὲ κακοστόμαχος λίαν. προστίθεται δὲ καὶ βάλανος ἐξ αὐτῆς, πρὸς κομιδὴν τῶν περιττωμάτων. καὶ χλωρᾶς δὲ αὐτῆς ὁ χυλός, ἐπὶ ἰσχιαδικῶν ἀνατριβόμενος ἁρμόζει.

## Περὶ ἐπιθύμου. Κεφ. ρνη'.

Ἐπίθυμον θύμου ἐστὶν ἄνθος, τοῦ σκληροτέρου καὶ θύμβρᾳ ἐοικότος. ἔχει δὲ κεφάλια λεπτὰ κοῦφα. οὐραγοὺς ἔχοντα ὡς τρίχας. πινόμενον δὲ σὺν μέλιτι, κάτω καθαίρει φλέγμα καὶ χολὴν μέλαιναν. ἰδίως ἁρμόζον ἐπὶ μελαγχολικῶν καὶ ἐμπνευματουμένων, ὀξυβάφου πλῆθος πρὸς ὁλκὴν < δ' σὺν μέλιτι καὶ ἁλσὶ καὶ ὀλίγῳ ὄξει. γεννᾶται δὲ πλεῖστον ἐν καππαδοκίᾳ καὶ παμφυλίᾳ.

## Περὶ ἀλύπου. Κεφ. ρνθ'.

Ἄλυπον. φρυγανῶδές ἐστι πόα. ὑπέρυθρος. πλατύκαρφος. λεπτόφυλλος. ἄνθους μαλακοῦ καὶ κούφου μεστή. ῥίζα τεύτλου λεπτή. μεστὴ ὀποῦ δριμέος. σπέρμα ὡς ἐπιθύμου. γεννᾶται δὲ ἐν χωρίοις παραθαλασσίοις. μάλιστα τοῖς τῆς λιβύης τόποις πλεῖστον. καὶ ἄλλοις δὲ χωρίοις πλείοσι. καθαίρει δὲ τὸ σπέρμα μέλαιναν χολὴν κάτω λαμβανόμενον τὸ ἴσον πλῆθος μετὰ ἁλῶν τῷ ἐπιθύμῳ καὶ ὄξει. τὰ δὲ ἔντερα ἐλαφρῶς ἑλκοῖ.

## Περὶ ἐμπέτρου. Κεφ. ρξ'.

Ἔμπετρον. οἱ δὲ, φακοειδές. ἐν παραλίοις καὶ ὀρεινοῖς φύεται. ἁλυκὸν τῇ γεύσει. τὸ δὲ προσγειότερον, πικρότερον. διδόμενον δὲ ἐν ζωμῷ ἢ ὑδρομέλιτι, καθαίρει φλέγμα καὶ χολὴν καὶ ὑδατώδη.

## Περὶ κληματίτιδος. Κεφ. ρξα'.

Κληματῖτις. κλῆμα ἀνίησιν ὑπέρυθρον, λυγῶδες. φύλλον δριμὺ λίαν γευομένῳ καὶ ἑλκωτικόν. περιελίττεται δὲ τοῖς δένδροις ὡς σμῖλαξ. Ταύτης ὁ καρπὸς λεῖος μεθ' ὕδατος ἢ ὑδρομέλιτος ποθεὶς, ἄγει κάτω φλέγμα καὶ χολήν. τὰ δὲ φύλλα καταπλασθέντα, λέπρας ἀφίστησι. ταριχεύεται δὲ μετὰ τοῦ λεπιδίου εἰς βρῶσιν.

## Περὶ ἀμπέλου ἀγρίας. Κεφ. ψξβʹ.

Ἄμπελος ἀγρία κλήματα ἀνίησι μακρὰ ὡς ἀμπέλου, ξυλώδη, τραχέα, φλοιορραγοῦντα. φύλλα δὲ ὅμοια στρύχνῳ κηπαίῳ, πλατύτερα δὲ καὶ μακρότερα. ἄνθος ὡς τρίχας βρυώδες. καρπὸν δὲ βοτρυδίοις μικροῖς ὅμοιον, πεπαινόμενον, ἐρυθρόν. περιφερὲς δέ ἐστι τὸ σχῆμα τῶν κόκκων. Ταύτης ἡ ῥίζα ἀποζεσθεῖσα ἐν οἴνῳ καὶ μεθ' ὕδατος πινομένη τεθαλασσωμένων κυάθων βʹ, ὑδατώδες καθαίρει. δίδοται δὲ καὶ ὑδρωπικοῖς. οἱ δὲ βότρυες ἐφήλεις ἀποκαθαίρουσι καὶ πάντα σπίλον. ταριχεύονται δὲ καὶ οἱ ταύτης ἀκρέμονες ἀρτιφυεῖς εἰς βρῶσιν.

## Περὶ ἀμπέλου λευκῆς. Κεφ. ψξγʹ.

Ἄμπελος λευκή· οἱ δὲ βρυωνίαν, οἱ δὲ ὀφιοστάφυλον, οἱ δὲ χελιδόνιον ἢ μήλωθρον ἢ ψίλωθρον ἢ ἀρχέζωστιν ἢ ἄγρωστιν ἢ κέδρωστιν καλοῦσι. ταύτης τὰ κλήματα καὶ τὰ φύλλα καὶ οἱ ἕλικες, ὅμοια τῇ ἡμέρῳ ἀμπέλῳ. δασύτερα δὲ πάντα. καὶ ἐμπλέκεται τοῖς παρακειμένοις θάμνοις ἐλλαμβανομένη τοῖς ἕλιξι. καρπὸν δὲ ἔχει βοτρυοειδῆ πυρρόν. ᾧ ψιλοῦται τὰ δέρματα. ταύτης οἱ ἀσπάραγοι κατὰ τὴν πρώτην ἐκβλάστησιν ἑφθοὶ ἐσθίονται οὔρησιν καὶ κοιλίαν κινοῦντες.

Δύναμιν δὲ ἔχει τὰ φύλλα καὶ ὁ καρπὸς καὶ ἡ ῥίζα δριμεῖαν. ὅθεν εὔθετα τῶν χειρωνίων καὶ γαγγραινικῶν καὶ φαγεδαινικῶν καὶ σαπροκνήμων ἑλκῶν μεθ' ἁλὸς καταπλασσόμενα ποιεῖ. ἡ δὲ ῥίζα χρῶτα ῥύπτει καὶ τετανοῖ καὶ ἔφηλιν ἀποκαθαίρει ἰονθούς, φακούς. οὐλὰς μελαίνας σὺν ὀρόβῳ καὶ γῇ χίᾳ καὶ τήλει. καθεψηθεῖσα δὲ μετ' ἐλαίου μέχρι τακερωθῇ, πρὸς τὰ αὐτὰ ἁρμόζει. αἴρει δὲ καὶ ὑπώπια, καὶ

περιονύχια τὰ ἐν δακτύλοις συστέλλει. σὺν δὲ οἴνῳ καταπλασσομένη, διαφορεῖ φλεγμονάς. καὶ ἀποστήματα ῥήσσει. ἀνάγει δὲ καὶ ὀστᾶ λεῖα καταπλασσομένη. σηπταῖς τε μίγνυται ἐπιτηδείως. πίνεται δὲ καὶ πρὸς ἐπιληψίας ὁλκὴ α. καθ' ἡμέραν πρὸς ἐνιαυτόν. ὠφελεῖ ἀποπλήκτους καὶ σκοτωματικοὺς ὁμοίως λαμβανομένη. δυοῖν δὲ < ὁλκὴ ποθεῖσα, ἐχιοδήκτοις βοηθεῖ, καὶ ἔμβρυα φθείρει. ὑποταράττει δ' ἐνίοτε τὴν διάνοιαν. δὶ αὐτοῖς καὶ οὖρα πινομένη. καὶ ἐκλικτὸν δὲ καὶ προστεθεῖσα ὑστέρα ἔμβρυα καὶ δεύτερα ἐπισπᾶται, κινεῖ μετὰ μέλιτος τοῖς πνιγομένοις, καὶ βήσσουσι. πλευραῖ τε ἀλγοῦσι καὶ ῥήγμασι. καὶ σπάσμασι δίδοται. καὶ σπλῆνα τήκει τριωβόλου ὁλκὴ ποθεῖσα σὺν ὄξει ἐπὶ ἡμέρας λ'. καὶ καταπλάσσεται δὲ μετὰ σύκου πρὸς τὰ αὐτὰ χρησίμως. ἀφέψεται δὲ καὶ εἰς ἐγκάθισμα. καθαρτικὸν ὑστέρας ὄν. καὶ ἐκβόλιον. χυλίζεται δὲ ἡ ῥίζα αὐτῆς ἔαρος. πίνεται δὲ σὺν μελικράτῳ ὁ χυλὸς πρὸς τὰ αὐτὰ ἄγων φλέγμα. ὁ δὲ καρπὸς ποιεῖ πρὸς ψώρας καὶ λέπρας συγχριόμενος καὶ καταπλασσόμενος. κατασπᾷ δὲ καὶ γάλα ὁ καρπὸς αὐτῆς χυλισθείς. καὶ μετὰ πυρῶν ἑψημένων ῥοφηθείς.

## Περὶ Ἀμπέλου μελαίνης. Κεφ. ψξδ'.

Ἄμπελος μέλαινα. οἱ δὲ βρυωνία μέλαινα. οἱ δὲ χειρώνιον ἄμπελον. φύλλα ἔχει κισσῷ ὅμοια. μᾶλλον δὲ πρὸς τὰ τῆς σμίλακος. καὶ οἱ καυλοί. μείζονα δὲ ταῦτα ἐλλαμβάνεται, καὶ αὕτη τῶν δένδρων ταῖς ἕλιξι. καρπὸς βοτρυώδης. χλωρὸς κατ' ἀρχήν. πεπανθεὶς δὲ μέλας γίνεται ῥίζα μέλαινα ἔξωθεν. ἔνδοθεν δὲ πυξοειδής. Καὶ ταύτης οἱ καυλοὶ κατὰ τὴν πρώτην ἐκβλάστησιν λαχανεύονται. εἰσὶ δὲ καὶ οὐρητικοὶ καὶ καταμηνίων ἀγωγοί. τηκτικοὶ σπληνός. ἐπιληπτικοῖς. καὶ σκοτωματικοῖς. καὶ παραλυτικοῖς ἁρμόζουσιν. ἔχει δὲ ἡ ῥίζα δύναμιν ὁμοίαν τῇ λευκῇ πρὸς τὰ αὐτὰ ἁρμόζουσαν. ἧττον μέντοι ἐνεργεῖ. ποιεῖ δὲ πρὸς τοὺς τῶν ὑποζυγίων λόφους ἐπειδὰν ἑλκωθῶσι τὰ φύλλα σὺν οἴνῳ καταπλασσόμενα. καὶ πρὸς στρέμματα ὁμοίως ἐπιτίθενται.

Περὶ πτέριδος. Κεφ. ρξε'.

Πτέρις· ἣν οἱ δὲ βλῆχνον, οἱ δὲ πολύρριζον καλοῦσι. φύλλα ἐστὶν ἄκαυλα, καὶ ἀνανθῆ, καὶ ἄκαρπα, ἐξ ἑνὸς μόσχου, περὶ πῆχυν τὸ μέγεθος, ἐντετμημένα καὶ ἀνηπλωμένα ὡς πτέρυξ, ὑποδυσώδη. ῥίζαν δὲ ἔχει ἐπιπόλαιον, μέλαιναν, ὑπομήκη, ἐκφύσεις ἔχουσαν πολλάς, ὑποστύφουσαν τῇ γεύσει. φύεται ἐν ὀρεινοῖς καὶ πετρώδεσι τόποις. Ταύτης ἡ ῥίζα ἕλμιν πλατεῖαν ἐκτινάσσει < δ' ὁλκὴ μετὰ μελικράτου λαμβανομένη. βέλτιον δὲ εἰ μετὰ σκαμμωνίας ἢ ἐλλεβόρου μέλανος ὀβολῶν τεττάρων δοίη τις. δεῖ δὲ προσκοροδοφαγεῖν τοὺς λαμβάνοντας. ποιεῖ δὲ καὶ πρὸς ἀρχηκα τάστασιν σπληνιῶσι. καὶ μετὰ ἀξουγγίου δὲ ἡ ῥίζα ποθεῖσα καὶ καταπλασθεῖσα, ποιεῖ πρὸς τοὺς ὑπὸ καλάμου πληγέντας. ἡ δὲ δοκιμὴ τοιαύτη. ἔνθα ἐστὶ πολὺς κάλαμος καὶ πολὺ βλάχνον, στεφανῶσιν. ἀφανίζεται τὸ βλάχνον.

Περὶ Θηλυπτέριδος. Κεφ. ρξς'.

Θηλυπτερίς· οἱ δὲ νυμφαίαν πτέριν ὀνομάζουσι. τὰ μὲν φύλλα πτέριδι ὅμοια, οὐ μονόμοσχα δὲ ὡς τὰ ἐκείνης, ἀλλὰ πολλὰς ἔχοντα ἀποφύσεις καὶ ὑψηλοτέρας. ῥίζαι δὲ ὕπεισι μακραί, πλατεῖαι, πλείους, ὑπόξανθοι ἐν τῷ μέλανι, τινὲς δὲ ἐρυθραί. Καὶ αὗται δὲ σὺν μέλιτι ἐν ἐκλεικτῷ λαμβανόμεναι, πλατεῖαν ἕλμιν ἐκβάλλουσι. σὺν οἴνῳ δὲ πινόμεναι < γ' πλῆθος στρογγύλην ἐκτινάσσουσιν ἕλμιν. γυναιξὶ δὲ δοθεῖσαι, ἀσυλληψίαν ποιοῦσι. κἂν ἔγκυος δὲ διαβῇ ἐκτιτρώσκει. ξηραὶ δὲ ἐπὶ τῶν δυσαλθῶν καὶ καθύγρων ἑλκῶν ἐπιπάσσονται. λοφοὺς τε ὑποζυγίων ἰῶνται. τὰ δὲ φύλλα αὐτῆς ἀρτίβλαστα, λαχανεύεται ἑφθὰ βιβρωσκόμενα, καὶ κοιλίαν μαλάσσουσιν.

Περὶ Πολυποδίου. Κεφ. ρξζ'.

Πολυπόδιον· φύεται ἐν πέτραις βρύα ἐχούσαις καὶ ἐν τοῖς ἀγρίοις πρέμνοις τοῖς ἐπὶ τῶν δρυῶν, σπιθαμῆς ἔχουσα τὸ

ὕψος. ὅμοιον τῇ πτέριδι. ὑπόδασυ. τετμημένον. οὐ μὴν οὕτω λεπτοσχιδῶς. ῥίζα δ' ὕπεστι δασεῖα. πλεκτάνας ὥσπερ εἰ πολύποις ἔχουσα. πάχος μικροῦ δακτύλου. ξυσθεῖσα δὲ ἔνδοθεν, χλωρά. στρυφνή. τῇ δὲ γεύσει ὑπόγλυκυς. Δύναμιν ἔχουσα καθαρτικήν. δίδοται δὲ συγκαθεψομένη ὄρνιθι. ἢ ἰχθύσιν ἢ σεύτλῳ. ἢ μαλάχῃ πρὸς κάθαρσιν. ξηρὰ δὲ αὐτὴ πασσομένη ἐν μελικράτῳ, ἄγει φλέγμα καὶ χολήν. ποιεῖ καὶ πρὸς στρέμματα ἡ ῥίζα λεία καταπλασσομένη. καὶ πρὸς ῥαγάδας τὰς ἐν μεσοδακτύλοις.

## Περὶ Δρυοπτερίδος. Κεφ. ψξη´.

Δρυοπτερίς. φύεται κατὰ τὰ βρυώδη μέρη τῶν παλαιῶν δρυῶν. ὁμοία πτέριδι. ἐλάττων δὲ πολλῷ τῇ σχίσει. ῥίζας δὲ ἔχει κατ' ἐπιπλοκὴν δασείας. στρυφνὰς κατὰ τὴν γεῦσιν, ἐν τῷ γλυκεῖ ῥέπουσα. Αὕτη ἐπιπλασθεῖσα λεία σὺν ταῖς ῥίζαις, τρίχας ψιλοῖ. δεῖ δὲ ἀποψᾶν τὸ πρῶτον μετὰ τὸ ἱκμάσαι τὸν χρῶτα. καὶ νεαρὸν ἐπιπλάσσειν.

## Περὶ Κνίκου. Κεφ. ψξθ´.

Κνίκος φύλλα ἔχει ἐπιμήκη. ἐντετμημένα. τραχέα. ἀκανθώδη. καυλοὺς δὲ πηχυαίους ἐφ' ὧν κεφαλὴν κατὰ μέγεθος θαλλίας. ἄνθος κρόκῳ ὅμοιον. σπέρμα λευκὸν καὶ πυῤῥὸν, ἐπίμηκες. γεγωνιωμένον. Τούτῳ τῷ ἄνθει χρῶνται εἰς τὰ προσοψήματα. τὸ σπέρμα κοπτόμενον καὶ χυλιζόμενον σὺν ὑδρομέλιτι ἢ ζωμῷ ὄρνιθος, κοιλίαν καθαίρει. κακοστόμαχον δὲ ἐστί. γίνεται δὲ καὶ κοπτάρια κοιλίας μαλακτικά. τοῦ ὀποῦ αὐτῷ μιγέντος ἀμυγδάλῳ καὶ νίτρῳ. καὶ ἀνίσῳ, καὶ μέλιτι ἑφθῷ. δεῖ δὲ πρὸ δείπνου λαμβάνειν εἰς δ´. διελόντα. ὡς βασιλικοῦ καρύου μέγεθος β´. ἢ γ´. σκευάζειν δὲ τὸν τρόπον τοῦτον δεῖ. κνίκου λευκοῦ ξέστην α´. θασίων πεφωγμένων καὶ λελεπτυσμένων κυάθους τρεῖς ἀνήθου ξέστην ἕνα. ἀφρονίτρου < α´. ἰσχάδων τῆς σαρκὸς ἀριθμῷ λ´ πήσσει δὲ καὶ γάλα ὁ χυλὸς τοῦ σπέρματος. καὶ λυτικώτερον ποιεῖ.

## Περὶ λινοζώστεως. Κεφ. ψο΄.

Λινόζωστις· οἱ δὲ παρθένιον· οἱ δὲ ἑρμοῦ βοτάνιον καλοῦσιν. ἔχει τὰ
φύλλα ὅμοια ὠκίμῳ πρὸς τὰ τῆς ἐλξίνης, ἐλάττονα δέ. κλωνία
διὰ γόνατα. μασχάλας τε πολλὰς πυκνὰς ἔχοντα. τὸν δὲ καρπὸν,
ἡ μὲν θήλεια βοτρυοειδῆ καὶ πολύν. ὁ δὲ ἄρρην, πρὸς τοῖς
πετάλοις μικρὸν στρογγύλον ὥσπερ ὀρχίδια κατὰ δύο προ-
σκείμενα. ὅλος δὲ ὁ θαμνίσκος σπιθαμιαῖος ἢ καὶ μείζων.
κινοῦσι δ᾽ ἀμφότεραι κοιλίαν λαχανευόμεναι καὶ ἐσθιό-
μεναι. καθεψόμεναι δὲ ἐν ὕδατι καὶ πινομένου τοῦ ὕδατος,
ἄγουσι χολὴν καὶ ὑδατώδη. δοκεῖ δὲ τὰ μὲν τῆς θηλείας
φύλλα λεῖα πινόμενα καὶ προστιθέμενα μετὰ τὴν κάθαρσιν
τοῖς αἰδοίοις, σύλληψιν θήλεως ποιεῖσθαι. τὰ δὲ τοῦ ἄρρενος
ὁμοίως ἐπιτηδευθέντα ἀρρενογόνα γίνεσθαι.

## Περὶ κυνοκράμβης. * Κεφ. ψοα΄.

Κυνία ἡ κυνοκράμβη. οἱ δὲ, λινόζωστις ἀγρία ἄρρην. Ἄφροι ἀφ-
μάς. οἱ δὲ, ἀσουμέσλαβον. καυλίον ἀνίησι δισπιθαμιαῖον.
τρυφερόν. ὑπόλευκον. φύλλα ἐμφερῆ λινοζώστι δ᾽ ἢ κισσῷ.
ὑπόλευκα ἐκ διαστημάτων. τὸν δὲ καρπὸν πρὸς τοῖς πετάλοις
προσκείμενον μικρόν. στρογγύλον. Δύναμιν δὲ ἔχει ὅ, τε
καυλὸς καὶ τὰ φύλλα πινόμενα, κοιλίας κινητικήν. λαχανευό-
μενα. καθεψομένων δὲ, τὸ ὕδωρ ἄγει χολὴν καὶ ὑδατώδη.

## Περὶ ἡλιοτροπίου τοῦ μεγάλου. Κεφ. ψοβ΄.

Ἡλιοτρόπιον τὸ μέγα. ὃ ἔνιοι ἐκάλεσαν σκορπίουρον ἀπὸ τοῦ
περὶ τὸ ἄνθος σχήματος. ἡλιοτρόπιον δὲ ἀπὸ τοῦ συμπεριτρέπε-
σθαι τὰ φύλλα τῇ τοῦ ἡλίου κλίσει. ἔχει δὲ τὰ φύλλα ὠκί-
μῳ παραπλήσια. δασύτερα δὲ καὶ μελάντερα καὶ μείζονα.
κλωνία ἀπὸ τῆς ῥίζης ὅσον γ΄ ἢ δ΄. ἢ ε΄. καὶ ἐκ τούτων μασχά-
λας πλείους. ἐπ᾽ ἄκρων δὲ ἄνθος λευκόν. ὑπόπυρρον. ἐπικαμ-
πές. καθάπερ σκορπίου οὐρά. ῥίζα δὲ λεπτὴ καὶ ἄχρηστος. φύε-
ται ἐν τραχέσι τόποις. Τούτου ὅσον δέσμιοι ἀφεψηθεῖσα

μεθ᾽ ὕδατος καὶ ποθεῖσα, ἄγει φλέγμα καὶ χολὴν κατὰ κοιλίας. ἁρμόζει δὲ καὶ σκορπιοπλήκτοις μετὰ οἴνου πινομένη καὶ καταπλασσομένη. πρὸς ἀτόκιον δὲ περιάπτεται. φασὶ δὲ πρὸ μιᾶς ὥρας τῆς ἐπισημασίας, τοῦ καρποῦ δ΄ κόκκους μετ᾽ οἴνου ποθέντας, τεταρταίους καταπαύειν. τριταίους δὲ τρεῖς. καταπλασσόμενος δὲ ὁ καρπός, μυρμηκίας καὶ ἀκροχορδόνας καὶ θύμους καὶ ἐπινυκτίδας ξηραίνει. τὰ δὲ φύλλα ποδάγραις καὶ στρέμμασι καὶ σειριῶσι παιδίοις ἐπιπλάττεται ὠφελίμως. κινεῖ δὲ καὶ ἔμμηνα. καὶ ἔμβρυα ἄγει λεῖα προστεθέντα.

## Περὶ ἡλιοτροπίου τοῦ μικροῦ. κεφ ψοϛ΄.

Ἡλιοτρόπιον τὸ μικρόν. φύεται ἐν τελματώδεσι τόποις καὶ παρὰ λίμναις. ἔχον φύλλα παραπλήσια τῷ προειρημένῳ. στρογγυλώτερα δὲ καρπόν, στρογγύλον ἀποκρεμάμενον ὡς ἀκροχορδόνας. Δύναται δὲ ἡ πόα μετὰ τοῦ καρποῦ πινομένη σὺν νίτρῳ καὶ ὑσσώπῳ καὶ καρδάμῳ καὶ ὕδατι, ἕλμιν πλατεῖαν καὶ στρογγύλην ἐκτινάσσειν. αἴρει δὲ καὶ ἀκροχορδόνας σὺν ἁλσὶ καταπλασσομένη.

## Περὶ Σκορπιοειδοῦς. κεφ. ψοζ΄.

Σκορπιοειδές. βοτάνιον φύλλα ἔχον ὀλίγα καὶ σπέρματα. οὐραῖς σκορπίου ἐμφερῆ. βοηθεῖ δὲ καταπλασσόμενα σκορπιοπλήκτοις ἄκρως.

Τέλος τοῦ τετάρτου βιβλίου.

# ΠΕΔΑΚΙΟΥ ΔΙΟΣΚΟΡΙΔΟΥ ἈΝΑΖΑΡΒΕΩΣ ΠΕΡΙ ὝΛΗΣ ἸΑΤΡΙΚΗΣ ΒΙΒΛΙΟΝ ΠΕΜΠΤΟΝ.

Ποδύντες ἐν τοῖς προγραφεῖσι τέτρασι βιβλίοις φίλτατε ἄρειε τὸν περὶ ἀρωμάτων καὶ ἐλαίων καὶ μύρων καὶ δένδρων, καὶ τῶν ἐξ αὐτῶν καρπόν τε καὶ δακρύων, ἔτι τε ζώων καὶ μέλιτος καὶ γάλακτος καὶ στεάτων καὶ τῶν καλουμένων σιτηρῶν καὶ λαχάνων. καὶ τὸν σύμπαντα περὶ ῥιζῶν καὶ βοτανῶν καὶ χυλισμάτων, καὶ σπερμάτων λόγον, ἐν τούτῳ τελευταίῳ ὑπάρχοντι τῆς ὅλης πραγματείας, διαλεξόμεθα περὶ οἴνων καὶ τῶν καλουμένων μεταλλικῶν ἀρξάμενοι ἀπὸ τῆς περὶ ἀμπέλου παραδόσεως.

## Περὶ ἀμπέλου οἰνοφόρου. Κεφ. ψοέ.

Ἀμπέλου οἰνοφόρου τὰ φύλλα καὶ αἱ ἕλικες λεῖαι καταπλασσόμεναι κεφαλαλγίας πραΰνουσι. φλεγμονήν τε στομάχου καὶ καῦσον σὺν ἀλφίτῳ. καὶ καθ' ἑαυτὰ ἐπιτιθέμενα τὰ φύλλα ψυκτικὰ καὶ στυπτικὰ ὄντα. καὶ ὁ ἐξ αὐτῶν δὲ χυλὸς ποθεὶς ὠφελεῖ, δυσεντερικοὺς καὶ αἱμοπτοϊκοὺς καὶ στομαχικοὺς καὶ κισσώσας. ἀποβραχεῖσαι δὲ καὶ αἱ ἕλικες ἐν ὕδατι καὶ ποθεῖσαι, τὰ αὐτὰ ποιοῦσι. τὸ δὲ δάκρυον αὐτῆς ὅμοιον ὂν κόμμει, περιπηγνύμενον τοῖς στελέχεσι, λίθους ἐκτινάσσει πινόμενον σὺν οἴνῳ. ἰᾶται δὲ καὶ λειχῆνας καὶ ψώρας καὶ λέπρας καταχριόμενον. δεῖ δὲ προεκνιτροῦν τὸν τόπον. σὺν ἐλαίῳ δὲ ἐγχριόμενον συνεχῶς, ψιλοῖ τὰς τρίχας. καὶ μάλιστα ὁ ἀπὸ τοῦ χλωροῦ καιομένου κλήματος ἀφιδρούμενος ἰχώρ. ὃς καὶ μυρμηκίας ἐπιχριόμενος ἐκβάλλει. ἡ δὲ ἐκ τῶν κλημάτων καὶ στεμφύλων τέφρα, τὰ περὶ δακτύλιον ἀφαιρεθέντα κονδυλώματα καὶ θύμια, σὺν ὄξει καταπλασθεῖσα θεραπεύει. καὶ στρέμματα. καὶ ἐχιοδήκτους ὠφελεῖ. καὶ σπληνὸς φλεγμονὰς σὺν ῥοδίνῳ καὶ πηγάνῳ καὶ ὄξει καταπλασσομένη.

Περὶ ἀμπέλου ἀγρίας. Κεφ. ψος΄.

Ἄμπελος ἀγρία διττή. ἡ μὲν γὰρ αὐτῆς οὐ περκάζει τὴν στα-
φυλήν. ἄχρι δ' ἀνθήσεως ἄγει τὴν λεγομένην οἰνάνθην. ἡ δέ
τις τελεσφορεῖ μικρόρραξ οὖσα. καὶ μέλαινα καὶ στυπτική.
Δύναμιν δὲ ἔχει ταύτης τὰ φύλλα καὶ αἱ ἕλικες καὶ οἱ
καυλοὶ, ὁμοίως τῇ ἡμέρῳ.

Περὶ σταφυλῆς. Κεφ. ψοζ΄.

Σταφυλή. ἡ μὲν πρόσφατος πᾶσα ἐκταράσσει κοιλίαν. καὶ
ἐμπνευματοῖ στόμαχον. ἡ δὲ ἐπὶ χρόνον τινὰ κρεμασθεῖσα, ὀ-
λίγον μετέχει τούτων. διὰ τὸ πολὺ τῆς ἰκμάδος ἀνεξηράν-
θαι. εὐστόμαχός τε ἐστὶ καὶ ὀρέξεως ἀνακλητική. καὶ ἐπιτή-
δειος πρὸς τοὺς ἀσθενοῦντας. αἱ δὲ ἐκ τῶν στεμφύλων καὶ ἐκ
τῶν βικῶν, εὔστομοι. εὐστόμαχοι. κοιλίας ἐφεκτικαί. κύστεως
δὲ καὶ κεφαλῆς ἅπτονται. ἁρμόζουσι δὲ καὶ αἱμοπτοϊκοῖς.
ὅμοιαι δέ εἰσι καὶ αἱ εἰς τὸ γλεῦκος ἐμβαλλόμεναι. αἱ δὲ ἐκ τοῦ
ἑψήματος καὶ γλεύκους κακοστομαχώτεραι. συντίθενται
δὲ καὶ μετ' ὀμβρείου ὕδατος προσαφιδωθεῖσαι. γίνονται δὲ
αἱ τοιαῦται ἐπ' ὀλίγον οἰνώδεις. διψώδεσι δὲ καὶ καυσώδεσι
καὶ χρονίοις πυρετοῖς χρήσιμοι. τὸ δὲ στέμφυλον αὐτῶν ἀρτε-
θὲν, καταπλάττεται μεθ' ἁλῶν πρὸς φλεγμονὰς καὶ σκλη-
είας καὶ σπαργῶσιν μαστῶν. τὸ δὲ ἀφέψημα τῶν στεμφύλων,
δυσεντερικοὺς καὶ κοιλιακοὺς καὶ ῥοϊκοὺς ὠφελεῖ ἐνιέμενον.
καὶ εἰς ἐγκαθίσματα καὶ προσκλύσματα λαμβάνεται.
Τὰ δὲ ἐξ αὐτῶν γίγαρτα στυπτικά. εὐστόμαχα. φρυγέντα
δὲ καὶ ἀντὶ ἀλφίτου ἐπιπλασσόμενα λεῖα, ἁρμόζει δυσεν-
τερικοῖς. καὶ κοιλιακοῖς καὶ τοῖς τὸν στόμαχον ἀναλελυμένοις.

Περὶ σταφίδος. Κεφ. ψοη΄.

Τῆς δὲ σταφίδος λεπτικωτέρα ἐστὶν ἡ λευκή. ὠφελεῖ δὲ καὶ ἡ σὰρξ
αὐτῶν ἐσθιομένη ἀρτηρίας καὶ βῆχας καὶ νεφροὺς καὶ κύ-
στιν καὶ δυσεντερίαν σὺν τοῖς γιγάρτοις ἐσθιομένη καθ' ἑαυ-
τήν. μιγεῖσα δὲ ἀλεύρῳ κεγχρίνῳ καὶ κριθίνῳ καὶ ᾠῷ, καὶ
τηγανισθεῖσα μετὰ μέλιτος καὶ λαμβανομένη, εἴς τε ἀπο-
φλεγματισμοὺς καθ' ἑαυτήν. καὶ σὺν πεπέρει μασωμένη
εὐθετεῖ. διδύμων τε φλεγμονὰς παύει. καταπλασθεῖσα

μετὰ ἀλεύρου κυαμίνου. καὶ κυμίνου. ἐπινυκτίδας δὲ καὶ ἄν-
θρακας καὶ κηρία καὶ τὰς περὶ ἄρθρα σηπεδόνας καὶ γαγ-
γραίνας, χωρὶς γιγάρτων ἰᾶται λεία σὺν πηγάνῳ ἐπιτιθε-
μένη. πρός τε ποδάγραν ἁρμόζει μετὰ τοῦ ὀποπάνακος κα-
ταπλασσομένη. καὶ ὄνυχας δὲ θᾶττον ἀφίστησι σαλευθέντας
ἐπιπλασθεῖσα.

## Περὶ οἰνάνθης. Κεφ. φοθ΄.

Οἰνάνθη καλεῖται ὁ τῆς ἀγρίας ἀμπέλου καρπός. ὁπότε ἀν-
θεῖ. ἀποτίθεσθαι δὲ δεῖ εἰς ἀκόνιτον ἀγγεῖον ὀστράκινον. συλ-
λέγοντας καὶ ξηραίνοντας ὑπὸ ὀθονίου ἐν σκιᾷ. καλλίστη δὲ
γίνεται ἐν Συρίᾳ καὶ Κιλικίᾳ καὶ Φοινίκῃ. Δύναμις δὲ αὐ-
τῆς στυπτική. ὅθεν πινομένη εὐστόμαχός τε καὶ οὐρητική. κοιλίαν
ἐφιστῶσα καὶ αἵματος πτύσιν. ξηρὰ δὲ καταπλασθεῖσα, καὶ
πρὸς ἀσώδη καὶ ὀξωνοῦντα στόμαχον ποιεῖ. ἔστι δὲ καὶ κεφα-
λαλγίαις ἔμβρεγμα. σὺν ὄξει καὶ ῥοδίνῳ χλωρά τε καὶ ξη-
ρά. καταπλάσματί τε ἐναίμων ἀφλέγμαντον. καὶ ἀρχομέ-
νων αἰγιλώπων. καὶ τῶν ἐν στόματι ἑλκῶν. καὶ νομῶν τῶν
ἐν αἰδοίοις. σὺν μέλιτι καὶ κρόκῳ καὶ ῥοδίνῳ καὶ σμύρνῃ λεαν-
θεῖσα. εἴς τε πεσσοὺς μίγνυται πρὸς ἐπίσχεσιν αἵματος καὶ
ῥεύματα ὀφθαλμῶν καὶ καυσούμενον στόμαχον καταπλάσ-
σεται σὺν παιπάλῃ ἀλφίτου καὶ οἴνου. καυθεῖσα δὲ ἐπὶ ὀ-
στράκου διαπύροις ἄνθραξι, ποιεῖ πρὸς τὰ ὀφθαλμικά. πα-
ρωνυχίας τε καὶ πτερύγια καὶ οὖλα ἀφεστῶτα καὶ αἱμασ-
σόμενα σὺν μέλιτι θεραπεύει.

## Περὶ ὀμφακίου. Κεφ. φπ΄.

Ὀμφάκιον. ἔστι μὲν χυλὸς ὄμφακος θασίας σταφυλῆς μήπω
περκαζούσης. ἢ ἀμιναίας. δεῖ δὲ πρὸ κυνὸς ἐκθλίβοντα
τὸν χυλὸν ἡλιάζειν ἐν χαλκώματι ἐρυθρῷ ἐσκεπασμένῳ ὀ-
θονίῳ, μέχρις οὗ συστραφῇ. ὅλον ἀεὶ τὸ περιπηγνύμενον μίσ-
γων τῷ ὑγρῷ. νύκτωρ δὲ αἴρειν αὐτὸ ἀπὸ τοῦ ὑπαιθρίου. κω-
λύουσι γὰρ αἱ δρόσοι τὴν σύστασιν αὐτῶν. ἐκλέγου δὲ τὸ ξαν-
θόν. καὶ εὔθρυπτον. στῦφον ἱκανῶς καὶ δάκνον τὴν γλῶσσαν.
ἔνιοι δὲ ἕψοντες τὸν χυλὸν συστρέφουσιν. Ἁρμόζει δὲ πρὸς
παρίσθμια καὶ σταφυλὴν. ἄφθας. οὖλα πλαδαρά. ὦτα

πυοῤῥοοῦντα σὺν μέλιτι ἢ γλυκεῖ. πρὸς δὲ σύριγγας καὶ παλαιὰ ἕλκη καὶ νομὰς σὺν ὄξει. ἐγκλύζεται δὲ αὐτὸ δυσεντερικῶν καὶ ῥοϊκῶν. ἔστι δὲ καὶ ὀξυδερκές. τραχύτησι τῶν ὀφθαλμῶν ἁρμόζει καὶ πρὸς βρώσεσι κανθῶν. πίνεται καὶ πρὸς αἵματος πτύσιν τὴν πρόσφατον καὶ κατὰ ῥῆξιν γινομένην. ὑδαρεῖ δὲ δεῖ χρῆσθαι λίαν καὶ ὀλίγῳ. ἐπικαίει γὰρ ἱκανῶς.

## Περὶ ποιότητος τῶν οἴνων ἐκ τῆς ἡλικίας. Κεφ. ψπα.

Οἶνοι οἱ μὲν παλαιοὶ νεύρων βλαπτικοὶ καὶ τῶν λοιπῶν αἰσθητηρίων. πρὸς δὲ γεῦσιν ἡδίονες. ὅθεν αὐτῶν τῶν ἀσθενές τι μέρος ἐχόντων ἔνδον, παραιτητέον. αὐτῶν μέντοι τῆς ἐν ὑγείᾳ χρήσεως ὀλίγος τε καὶ ὑδαρὴς λαμβάνεται ἀβλαβῶς. ὁ δὲ νέος ἐμπνευματικός. δύσπεπτος. δυσόνειρος. οὐρητικός. ὁ δὲ μέσος τῇ ἡλικίᾳ, ἐκπέφευγε τὰ ἀμφότερα ἐλαττώματα. ὅθεν ἐγκριτέος ἐστὶν ἔν τε ὑγείας καὶ ἀσθενείας χρήσεσιν.

## Ἐκ τῆς χρόας. Κεφ. ψπβ.

Ἔτι ὁ μὲν λευκὸς λεπτός τε καὶ εὐανάδοτος καὶ εὐστόμαχος ὑπάρχει. ὁ δὲ μέλας παχὺς καὶ δύσπεπτος. μέθης καὶ σαρκῶν γεννητικός. ὁ δὲ κιῤῥὸς μέσος ὤν, μέσην ἔχει. καὶ τὴν πρὸς ἑκάτερα τούτων δύναμιν. αἱρετώτερος μέντοι ἔν τε ὑγείᾳ καὶ ἀσθενείᾳ ὁ λευκός. ἔτι καὶ πρὸς τὴν ποιότητα διαφέρουσιν.

## Ἐκ τῆς γεύσεως καὶ τῶν μεμιγμένων. Κεφ. ψπγ.

Ὁ μὲν γὰρ γλυκὺς οἶνος, ἁδρομερής τε ἐστὶ καὶ δυσδιάπνευστος. στομάχου πνευματωτικός. κοιλίας τε καὶ ἐντέρων ταρακτικός. ὥσπερ καὶ τὸ γλεῦκος ἧττον δὲ μεθύσκει. κύστει δὲ καὶ νεφροῖς εὔθετος. ὁ δὲ αὐστηρὸς οὐρητικώτερος. κεφαλαλγίας τε καὶ μέθης ποιητικός. ὁ δὲ στρυφνὸς εὐθετώτατος πρὸς ἀνάδοσιν σιτίων. κοιλίας τε σταλτικός. καὶ τῶν ἄλλων ῥευματισμῶν. ὁ δὲ ἁπαλὸς ἧττον ἅπτεται τοῦ νευρώδους. καὶ ἧττον ἐστὶν οὐρητικός. ὁ δὲ τεθαλασσωμένος. κακοστόμαχος, διψοποιός. νεύρων κακωτικός. εὐκοίλιος ἀνεπιτήδειος τοῖς ἐξ ἀσθενείας. ὁ δὲ ἐκ τῆς θηλοπαιδευθείσης σταφυλῆς ἢ αὐτὴ τῶν

κλήματι τοῦ ὀπτηθείσης, καὶ ζεσομένης γενόμενος, γλυκὺς καλούμενος κρητικὸς ἢ πρόδοπος ἢ πράμνιος. καὶ ὁ καθεψομένου τοῦ γλεύκους σείριος. ἢ ἕψημα καλούμενος, ὁ μὲν μέλας, καλούμενος δὲ μελαμψίνθιος παχύς ἐστι καὶ πολύτροφος. ὁ δὲ λευκὸς, λεπτότερος. ὁ δὲ μέσος, μέσην ἔχει καὶ τὴν δύναμιν. στυπτικὸς δὲ πᾶς ἐστι. σφυγμῶν ἀνακτητικός. πιὼν πρὸς πάντα τὰ θανάσιμα ὅσα κατὰ ἕλκωσιν ἀναιρεῖ. πινόμενος σὺν ἐλαίῳ, καὶ ἐξεμούμενος. καὶ πρὸς μηκώνειον δὲ καὶ φαρικὸν, καὶ τοξικὸν καὶ κώνειον. καὶ γάλα θρομβωθέν. καὶ πρὸς κύστιν καὶ νεφροὺς ὀδαξουμένους καὶ ἑλκωμένους. εἰσὶ δὲ πνευματικοὶ καὶ κακοστόμαχοι. ἰδίως δὲ εὐθετεῖ τῶν τὴν κοιλίαν ῥευματιζομένων ἁρμόζει ὁ μελαμψίνθιος. ὁ δὲ λευκὸς μαλακτικὸς κοιλίας τῶν ἄλλων μᾶλλον. ὁ δὲ τὴν γύψον ἔχων κακωτικὸς τῶν νεύρων, καρηβαρικός. πυρώδης. κύστει ἄθετος. πρὸς δὲ τὰ θανάσιμα τῶν ἄλλων εὐθετώτερος. οἱ δὲ πίσσαν ἢ ῥητίνην πιτυΐνην ἔχοντες θερμαντικοί. καὶ πεπτικοί. ἄθετοι δὲ τοῖς αἱμοπτοϊκοῖς οἱ δὲ καλούμενοι ἀπαράχυτοι, ἔχοντες δὲ ἕψημα μεμιγμένον, κεφαλῆς εἰσι πληρωτικοί. μέθης γεννητικοί. δυσδιάπνευστοι. κακοστόμαχοι.

## Περὶ διαφορᾶς ἐκ τῶν τόπων. κεφ. ψπδ'.

Ὁ μὲν οὖν δοκῶν πρωτεύειν τῶν ἐν ἰταλίᾳ οἴνων φαλέρνος δὲ καλούμενος. παλαιωθεὶς, ἄγαν εὔπεπτος. σφυγμῶν ἀνακλητικός. κοιλίας στεγνωτικὸς, καὶ εὐστόμαχος. κύστει ἄθετος. καὶ ἀμβλυωποῦσι καὶ πρὸς πολυποσίαν ἀνάρμοστος. ὁ δὲ ἀλβανὸς ἁδρομερέστερος τοῦ φαλέρνου, ἔγγλυκος. ἐμπνευματοῖ στόμαχον. κοιλίαν τε μαλάττων. πέψει τε οὐχ ὁμοίως συμφέρων. τοῦ δὲ νευρώδους ἧττον κακωτικός. παλαιωθεὶς δὲ καὶ οὗτος αὐστηρὸς γίνεται. ὁ δὲ καίκουβος γλυκὺς ὢν, ἁδρομερέστερός ἐστι τοῦ ἀλβανοῦ. σαρκῶν τε καὶ εὐχροίας γεννητικός. πέψει δὲ ἄθετος. ὁ δὲ συρεντῖνος αὐστηρὸς ἱκανῶς ἐστιν. ὅθεν ἐντέρων καὶ στομάχου ῥεῦμα ἵστησι. κεφαλῆς τε ἧττον ἅπτεται λεπτομερὴς ὤν. παλαιωθεὶς δὲ εὐστόμαχος καὶ ἰδίων γίνεται. ὁ δὲ ἀδριανὸς καὶ ὁ μαμερτῖνος γεννώμενοι ἐν σικελίᾳ, κατ' ἴσον εἰσὶν ἁδρομερεῖς. μετρίως στύφοντες.

καὶ τάχιον παλαιοῦνται. ἧττον τε τῶν νευρώδους ἅπτονται διὰ τὸ ἐν αὐτοῖς λεπτόν. οἱ δὲ πραιτιανὸς καὶ αὐτὸς ἐκ τῶν κατ' ἀδρίαν κομιζόμενος τόπων, εὐώδης καὶ λιπαρώτερός ἐστιν. οὐ δὲ λανθάνει πολὺς πινόμενος. φυλάττει τε ἐφ' ἱκανὸν τὴν μέθην καὶ καροῖ. ὁ δ' ἰστρικὸς λεγόμενος, ἔοικε τῷ πραιτιανῷ. οὐρητικώτερος ὑπάρχων. ὁ μέντοι χῖος ἁπαλώτερος τῶν προειρημένων. εὔτροφος. πότιμος. ἧττον μεθύσκων. ῥεύματος σταλτικός. χρήσιμος εἰς τὰ ὀφθαλμικά. ὁ δὲ λέσβιος εὐανάδοτος. κουφότερος τοῦ χίου καὶ εὐκοίλιος. τὴν αὐτὴν δὲ τούτῳ κέκτηται δύναμιν ὁ κατὰ ἔφεσον γινόμενος. καλούμενος δὲ φυγελίτης. ὁ δὲ ἐκ τῆς ἀσίας μεσογείτης ἐκ τοῦ τμώλου, κεφαλαλγὴς καὶ νεύρων βλαπτικός. ὁ δὲ κῶος, καὶ κλαζομένιος διὰ τὸ θαλάττης πολλῆς μετέχειν εὔφθαρτος, καὶ ἐμπνευματώδης. κοιλίας τε ταρακτικὸς καὶ νεύρων ἐστὶ βλαπτικός.

## Περὶ δυνάμεως τῶν οἴνων. Κεφ. ψπε'.

Κοινῶς δὲ πᾶς ἀμιγὴς οἶνος καὶ ἀκέραιος, αὐστηρὸς δὲ τὴν φύσιν, θερμαντικός. εὐανάδοτος. εὐστόμαχος. ὀρεκτικός. θρεπτικός. ὑπνοποιός. ῥωστικός. εὐχροίας παρασκευαστικός. ἱκανῶς δὲ ποθείς, βοηθεῖ τοῖς κώνειον, ἢ κόριον, ἢ φαρικὸν, ἢ ἰξίαν, ἢ μηκώνειον, ἢ λιθάργυρον, ἢ σμίλακα, ἢ ἀκόνιτον, ἢ μύκητας εἰληφόσι. πρός τε ἑρπετῶν δηγμοὺς καὶ πληγὰς πάντων. ὅσα πλήξαντα ἢ δακόντα κατὰ ψύξιν ἀναιρεῖ ἢ ἀνατρέπει στόμαχον. ποιεῖ καὶ πρὸς ἐμπνευμάτωσιν χρονίαν καὶ δῆξιν ὑποχονδρίου. καὶ πλατυσμόν. καὶ λύγγα στομάχου. ἐντέρων τε καὶ κοιλίας ῥευματισμόν. καὶ ἐφιδροῦσι καὶ διαφορουμένοις ἁρμόζουσι. μάλιστα δὲ οἱ λευκοὶ καὶ παλαιοὶ καὶ εὐώδεις. οἱ μέντοι παλαιοὶ καὶ γλυκεῖς. καὶ πρὸς τὰ περὶ κύστιν καὶ νεφροὺς ἐπιτηδειότεροι. πρός τε τραύματα καὶ φλεγμονὰς σὺν ἐρίοις οἰσηπηροῖς ἐπιτιθέμενοι. καταντλοῦνται δὲ ὠφελίμως πρὸς τὰ θηριώδη καὶ φαγεδαινικὰ καὶ ῥευματιζόμενα ἕλκη. πρὸς δὲ τὴν ἐν ὑγείᾳ χρῆσιν εὔθετοι οἱ ἀθάλασσοι αὐστηροὶ καὶ λευκοί. διαφέρουσι δὲ τούτων οἱ ἰταλικοί. ὡς ὁ φαλέρνος. σουρεντῖνος καὶ κέκουβος. ὅ τε σιγ

νηνὸς καὶ ἄλλοι πολλοὶ οἱ ἀπὸ τῆς καμπανίας. καὶ ὁ πραιπιανὸς ἀπὸ τοῦ ἀδριανοῦ. καὶ σικελιωτικὸς ὁ μαμερτινὸς καλούμενος. ἑλληνικῶν δὲ χῖος. λέσβιος φυγελλίτης ὁ ἐν ἐφέσῳ γεννώμενος. οἱ δὲ παχεῖς καὶ μέλανες κακοστόμαχοι. φυσώδεις. σαρκὸς μέν τοι γεννητικοί. οἱ μέν τοι λεπτοὶ καὶ αὐστηροὶ δυσστόμαχοι. ἧττον δὲ σαρκοποιοί. οὐρητικώτεροι δὲ καὶ κεφαλαλγεῖς οἱ σφόδρα παλαιοὶ καὶ λεπτοὶ καὶ λευκοί. ἅπτονται δὲ τοῦ νευρώδους πλεονασθέντες. οἱ μέσοι δὲ τὴν ἡλικίαν ἄριστοι πρὸς πόσιν. ὡς οἱ ἀπὸ ζ΄ ἐτῶν. ἡ δὲ ποσότης παρὰ τὴν ἡλικίαν καὶ τὴν τοῦ ἔτους ὥραν, καὶ ἔθη καὶ ποιότητα τοῦ οἴνου ὁριζέσθω. καὶ τὸ μὴ διψῆν δὲ ἄριστον ἐστὶ παράγγελμα. καὶ τὸ μετρίως βρεχῆναι τὴν τροφήν. μέθη δὲ πᾶσα, καὶ μάλιστα ἡ συνεχὴς ἐπιβλαβής. τά τε γὰρ νεῦρα πολιορκούμενα καθ' ἑκάστην ἐνδίδωσι καὶ παθῶν ὀξέων ἀρχὰς ἐμποιεῖ καθημέραν ἡ πολυποσία. μετρίως δὲ οἰνοῦσθαι ἐπί τινων ἡμερῶν, καὶ μάλιστα μετὰ ὑδροποσίας ὀφέλιμον. μετὰ συγκινεῖ γάρ πως τάς τε αἰσθητὰς ἀνακαθαίρει, ἐκκρίσεις. καὶ ἀδήλως πορωποιοῦσι. δεῖ μέν τοι γε μετὰ τὴν οἴνωσιν ὕδωρ πίνειν. ἀπὸ θεραπείας γάρ τινος τῆς συγκειμένης οἰνώσεως, τρόπον ἐπάγει βοηθείας.

## περὶ ὀμφακίτου οἴνου. κεφ. ψπϛ΄.

Ὁ δὲ καλούμενος ὀμφακίτης, σκευάζεται ἰδίως ἐν λέσβῳ. θηλοπαιδευομένης μή πω κατὰ πάντα πεπείρου τῆς σταφυλῆς οὔσης. ἔτι δὲ ὀξιζούσης, μετὰ ἡμέρας γ΄ ἢ δ΄. ἕως ἂν ῥυσσωθῶσιν οἱ βότρυες. καὶ μετὰ τὸ ἐκθλιβῆναι ἡλιάζεται ἐν κεραμέοις οἶνος. στυπτικὴν δὲ ἔχει τὴν δύναμιν καὶ εὐστόμαχον. καὶ καυσώδεσι καὶ ἡλεώδεσι καὶ τοῖς δυσπέπτοις καὶ ἐκλελυμένοις τὸν στόμαχον ἁρμόζουσι μέν. δοκεῖ δὲ καὶ λοιμικαῖς διαθέσεσι βοηθεῖν κατὰ ῥοφούμενος. χρήζουσι δὲ ἢ τοιοῦτοι οἶνοι ἐτῶν πλειόνων. ἄλλως γὰρ οὐκ εἰσὶ πότιμοι.

## περὶ δευτερίας καὶ ἀδυνάμου. κεφ. ψπζ΄.

Ὁ δὲ καλούμενος δευτερίας ὃν ἔνιοι πότιμον καλοῦσι, σκευάζεται τοῦτον τὸν τρόπον. εἰς τὰ στέμφυλα ὧν ἐξέθλιψας οἰ-

νου μετρητὰς λʹ, βάλε ὕδατος μετρητὰς γʹ. καὶ μίξας καὶ πατήσας ἔκθλιψον. καὶ ἀφέψησον εἰς τὸ τρίτον. χρὴ δὲ ἑκάστῳ τῶν ὑπολειφθέντων μετρητῶν, μίξον ἁλὸς ξϛ βʹ. καὶ μετὰ τὸν χειμῶνα διάχει εἰς κεράμια. χρῶ δὲ αὐτῷ μετ' ἐνιαυτόν. ταχέως γὰρ ἐξίτηλος γίνεται. ἁρμόζει δὲ ἐφ' ὧν διστάζομεν οἶνον διδόναι. ἀναγκαζόμενοι δι' ἐπιθυμίαν τοῦ νοσοῦντος. καὶ ἐπὶ τῶν νόσων ἀναλαμβανόντων χρονίως.

Γίνεται δὲ καὶ ἀδιώαμος λεγόμενος τὴν αὐτὴν ἔχων τῷ δευτερίῳ δύναμιν. δεῖ δὲ ἴσον μέτρον ὕδατος ἀπὸ τοῦ γλεύκους μίξαντας, ἑψῆσαι πραέως πυρὶ μαλακῷ ἄχρις ἂν ἐξαναλωθῇ τὸ ὕδωρ. καὶ μετὰ ταῦτα ψύξαντας καταγγίζειν εἰς ἀγγεῖον πεπισσωμένον. ἔνιοι δὲ θαλάττης πελαγίας καὶ ὕδατος ὀμβρείου καὶ μέλιτος καὶ γλεύκους ἴσα μίξαντες καὶ καταγγίσαντες, ἡλιάζουσιν ἐπὶ ἡμέρας μʹ. χρῶνται δὲ αὐτῷ πρὸς τὰ αὐτὰ μετ' ἐνιαυτόν.

Περὶ οἴνου ἐκ τῆς ἀγρίας σταφυλῆς. ΚΕΦ. ψπηʹ.

Ὁ δὲ, ἐκ τῆς ἀγρίας σταφυλῆς μέλας, στυπτικὸς ὑπάρχων, ἁρμόζει κοιλίᾳ ῥευματιζομένῃ. καὶ στομάχῳ. καὶ πρὸς τὰ ἄλλα ὅσα στύψεως καὶ συστολῆς χρῄζει.

Περὶ μελιτίτου οἴνου. ΚΕΦ. ψπθʹ.

Ὁ οἶνος μελιτίτης, δίδοται μὲν ἐν χρονίοις πυρετοῖς ἀσθενῆ στόμαχον ἔχουσιν. ὑπομαλάττει γὰρ τὴν κοιλίαν. οὖρα κινεῖ στόμαχον ἀποκαθαίρει. ἁρμόζει καὶ ἀρθριτικοῖς. καὶ νεφριτικοῖς. καὶ τοῖς ἀσθενῆ τὴν κεφαλὴν ἔχουσι. χρήσιμος δὲ καὶ γυναιξὶν ὑδροποτούσαις. εὐώδης γάρ ἐστι καὶ θρεπτικός. διαφέρει δὲ τοῦ οἰνομέλιτος. ὅτι ἐκεῖνος μὲν ἐξ αὐστηροῦ οἴνου, καὶ παλαιοῦ καὶ ὀλίγου μέλιτος σκευάζεται. ὁ δὲ μελιτίτης πρὸς εʹ. χόας αὐστηροῦ γλεύκους. μέλιτος χοῦν ἕνα καὶ ἁλὸς κύαθον ἕνα. σκευάζειν δὲ δεῖ ἐν μεγάλῳ ἀγγείῳ ἵνα τόπον ἔχῃ πρὸς τὸ ὑπερζεῖν παραπάσσοντας τοῦ προειρημένου ἁλὸς κατ' ὀλίγον ἄχρις ἂν ἐκζέσῃ παυσαμένου δὲ καταγγίζειν εἰς ἕτερα κεράμια.

Περὶ οἰνομέλιτος. ΚΕΦ. ψϟʹ.

Οἰνόμελι ἡ διαφέρει τὸ ἐκ τοῦ παλαιοῦ οἴνου καὶ αὐστηροῦ καὶ μέλιτος καλοῦ γινόμενον. ἧττον γὰρ πνευματοῖ καὶ ταχέως παρίσταται τὸ τοιοῦτον. ἔστι δὲ τὸ μὲν παλαιόν, θρεπτικόν. τὸ δὲ μέσον, εὐκοίλιον. οὐρητικόν. βλάπτει δὲ ἐπὶ τροφῇ ληφθέν. πινόμενον δὲ ἐν ἀρχῇ πληροῖ. ὄρεξιν δὲ μετὰ ταῦτα κινεῖ. σκευάζεται δὲ πρὸς δύο μετρητὰς ὡς τὸ πολύ, οἴνου ἑνὸς μετρητοῦ μέλιτος μιγνυμένου. οἱ δέ, ἵνα τάχιον αὐτὸ παραστήσωσι, συνέψουσι τὸ μέλι τῷ οἴνῳ. καὶ οὕτω καταγγίζουσιν. ἔνιοι δὲ διὰ λυσιτέλειαν, γλεύκους ζέοντος ξε ς' πρὸς ξε α' μέλιτος μιγνῦντες μετὰ τὸ ἀποζέσαι καταπίζουσι. μένει δὲ γλυκύ.

Περὶ μελικράτου. Κεφ. ϟα'.

Μελίκρατον δὲ τὴν αὐτὴν τῷ οἰνομέλιτι δύναμιν κέκτηται. χρώμεθα δὲ τῷ ἀφεψημένῳ. ἐφ' ὧν κοιλίαν μαλάξαι βουλόμεθα. ἢ ἔμετον κινῆσαι ὡς ἐπὶ τῶν θανάσιμον πεπωκότων. διδόντες αὐτὸ μετ' ἐλαίου. τῷ δὲ ἀφεψημένῳ ἐπὶ τῶν μικροσφύκτων καὶ ἀσθενῶν καὶ βηττόντων καὶ περιπνευμονικῶν καὶ διαφορουμένων. Τὸ δὲ σκευαστὸν καὶ ἀπόθετον ὃ ἰδίως ἔνιοι ὑδρόμελι καλοῦσι, μέσον μὲν τῇ ἡλικίᾳ ὑπάρχον ἀναλογεῖ τῷ δευτερίᾳ καὶ ἀδυνάμῳ οἴνῳ ὅθεν ἐπὶ τῷ τὰς δυνάμεις ἀνακτᾶσθαι.. ὅθεν ἐπὶ τῶν φλεγμαινόντων τι μέρος ἐστὶν εὔθετον μᾶλλον τῆς δευτερίας. τὸ δὲ παλαιότερον, ἀδόκιμον ἐπὶ τῶν φλεγμαινόντων καὶ στεγνῶν. ἐπὶ δὲ τῶν στόμαχον πεπονθότων ἢ ἀνορέκτων ἢ διαφορουμένων ἐπιτήδειον. Σκευάζεται δὲ πρὸς ἓν μέλιτος μέρος. δύο ὕδατος ὀμβρείου παλαιοῦ μιγνυμένου καὶ ἡλιαζομένου. οἱ δέ, πηγαῖον μίξαντες ἀφέψουσιν εἰς τὸ τρίτον καὶ ἀποτίθενται. καλοῦσι δέ τινες καὶ τὸ ἀπὸ μέλιτος ἐκ πλυνομένων τῶν κηρίων ὕδατι σκευαζόμενον, ὑδρόμελι, καὶ ἀποτιθέμενον δεῖ δὲ αὐτὸ καὶ ἀκρατέστερον ποιεῖν. οἱ δέ, καὶ ἐπὶ τὸ ἕψουσιν. ἔστι δὲ ἄθετον ἐπὶ νοσούντων διὰ τὸ πλεῖστον ἔχειν κηρανθέμου.

Περὶ ὕδατος. Κεφ. ϟβ'.

Ὕδωρ. τὴν μὲν ἐν τῷ καθόλου ἐπίχρησιν, δυσκερῆ ἔχει διὰ τὰς τῶν τόπων ἰδιότητας καὶ ἰδιοσυγκρισίας. καὶ τοὺς ἀέ-

ρας καὶ ἄλλα οὐκ ὀλίγα. ὡς δὲ ἐπὶ τὸ πολὺ ἄριστόν ἐστι τὸ καθαρὸν καὶ γλυκύ. ἀμέτοχον δὲ οἵας δήποτουν ποιότητος καὶ τοῖς ὑποχονδρίοις μὴ δι' ἐλάχιστον χρόνον ἐπιμένον. ἔτι τε ἀλύπως διοδοῦν καὶ ἐμπνευματοῦν μὴ ὂν διαφθειρόμενον.

## Περὶ θαλασσίου ὕδατος. Κεφ. ρξγʹ.

Θαλάττιον ὕδωρ, θερμόν. δριμὺ κακοστόμαχον. κοιλίας ταρακτικόν. ἄγον φλέγμα. θερμὸν δὲ καταντλούμενον, ἐπισπᾶται καὶ διαφορεῖ. ἁρμόζον τοῖς περὶ νεῦρα πάθεσι καὶ χιμέθλαις πρὸ τοῦ ἑλκωθῆναι.. ὠμηλύσει τε ἐπιτηδείως μίγνυται. καὶ ἐμπλάστροις καὶ μαλάγμασι διαφορητικοῖς εὔθετον. καὶ πρὸς τὰ κενώματα ἐνιέμενον χλιαρόν. καὶ πρὸς στρόφους θερμόν. ψώρας τε καὶ κνησμῶν καὶ λειχήνων καὶ κονίδων καὶ μαστῶν ἐπαιρόντων κατάντλημα. διαφορεῖ καὶ πελιώματα πυριώμενον. καὶ πρὸς τὰ τῶν θηρίων δήγματα ὅσα τρόμους καὶ ψυγμοὺς φέρει. μάλιστα δὲ σκορπίων καὶ φαλαγγίων. καὶ ἀσπίδων. καὶ εἰ προσεμβαίνει τις εἰς θερμὸν αὐτὸ ὠφελεῖ. καὶ ταῖς χρονίαις καχεξίαις τοῦ σώματος καὶ τῶν νεύρων, ὠφέλιμον τὸ δι' αὐτοῦ λουτρόν. ὑπατμιζόμενον δὲ θερμὸν, ὑδρωπικοὺς κεφαλαλγίας καὶ δυσηκοΐας παρηγορεῖ. ἀποτεθεῖσα δὲ ἡ ἀκραῖος θάλασσα καὶ ἀμιγὴς ποτίμου ὕδατος, ἄβρωμος γίνεται. οἱ δὲ, προέψουσιν αὐτὴν καὶ οὕτως ἀποτίθενται. δίδοται δὲ καὶ πρὸς κάθαρσιν καθ' ἑαυτὴν ἢ μετὰ ὀξυκράτου. ἢ οἴνου ἢ μέλιτος. καὶ μετὰ τὸ καθαρθῆναι, ἐπιδιδόασι ζωμὸν ὄρνιθος ἢ ἰχθύων. πρὸς τὸ κατακεράσαι τὴν τῆς δήξεως δριμύτητα.

## Περὶ θαλασσομέλιτος. Κεφ. ρξδʹ.

Θαλασσόμελι. δοκεῖ καθαίρειν ἀνδρικῶς. σκευάζεται δὲ ἐκ μέλιτος καὶ ὕδατος ὀμβρίου καὶ θαλάσσης. ἴσων διυλισθέντων καὶ ἡλιασθέντων ἐν ἀγγείῳ πεπισσωμένῳ ἐν τοῖς ὑπὸ κύνα καύμασιν. οἱ δὲ, δύο μέρη θαλάσσης ἀφεψημένης καὶ ἓν μέλιτος καταμίξαντες, καταγγίζουσι. μετριώτερον δὲ γίνεται καὶ ἐπιεικέστερον τὸ τοιοῦτον τῆς θαλάσσης.

## Περὶ ὄξους. Κεφ. ρξεʹ.

Ὄξος ψύχει καὶ στύφει. εὐστόμαχόν τε ἐστὶ καὶ εὐόρεκτον. σταλτικόν τε αἱμορραγίας πάσης. πινόμενόν τε καὶ ἐγκαθιζόμενον. καὶ ἐπὶ ῥευμάτων κοιλίας συνεψόμενον ταῖς τροφαῖς ἁρμόζει. ἔναιμόν τε ἐστὶ καὶ ἀφλέγμαντον σὺν ἐρίοις οἰσυπηροῖς ἢ σπόγγοις ἐπιτιθέμενον. στέλλει καὶ ὑστέραν καὶ ἕδραν προπεπτωκυῖαν. καὶ οὖλα ἀφεστῶτα καὶ αἱμορραγοῦντα. ποιεῖ καὶ πρὸς νομὰς καὶ ἐρυσιπέλατα. ἕρπητας. λέπρας. λειχῆνας. πτερύγια. σύν τινι τῶν ἐπιτηδείων μιγνύμενον. φαγεδαινικά τε ἕλκη συνεχῶς ἀπαντλούμενον. καὶ νομὰς ἵστησιν. ὠφελεῖ καὶ ποδαγρικοὺς καταντλούμενον θερμὸν μετὰ θείου. ὑπώπιά τε αἴρει σὺν μέλιτι καταχριόμενον. πρός τε τὰς ἐγκαύσεις τῆς κεφαλῆς σὺν ῥοδίνῳ καὶ οἰσυπηροῖς ἐρίοις ἢ σπόγγῳ. ὑδρωπικούς τε καὶ δυσηκόους ὑπατμισθὲν θερμὸν ὠφελεῖ. καὶ ἤχους καὶ συριγμούς. ἐνσταχθὲν δὲ κτείνει τοὺς ἐν ὠσὶ σκώληκας. στέλλει καὶ φύγεθλα χλιαρὸν καταντλούμενον. ἢ διὰ σπόγγων ἐπιτιθέμενον. καὶ κνησμοὺς παρηγορεῖ. πρός τε θηρίων δήγματα ὅσα ψύχει κατάντλημα θερμόν. ψυχρὸν δὲ τοῖς πυροῦσι τῶν ἰοβόλων. ποιεῖ καὶ πρὸς τὰ θανάσιμα πάντα πινόμενον θερμὸν καὶ ἐξεμούμενον. μάλιστα πρὸς μηκωνείου καὶ κωνείου πόσιν, καὶ αἵματος καὶ γάλακτος θρόμβωσιν ἐν κοιλίᾳ. πρός τε μύκητας καὶ ἰξίαν καὶ σμίλακας σὺν ἁλσί. βδέλλας τε ποθείσας καταρροφούμενον ἀποβάλλει. καὶ βῆχα χρονίαν πραΰνει. τὴν δὲ πρόσφατον ἐρεθίζει. ἁρμόζει καὶ πρὸς ὀρθόπνοιαν θερμὸν καταρροφούμενον. στέλλει δὲ ἀναγαργαριζόμενον καὶ τὰ ἐν βρόγχῳ ῥεύματα. συναγχικοῖς τε ἁρμόζει. καὶ πρὸς κιονίδα κεχαλασμένην. καὶ πρὸς ὀδόντων πόνον θερμὸν διακλυζόμενον.

## Περὶ ὀξυμέλιτος. κεφ. ψνε'.

Ὀξύμελι σκευάζεται οὕτω. λαβὼν ὄξους κοτύλας ε'. καὶ ἁλὸς θαλασσίου μνᾶν μίαν. μέλιτος μνᾶς ι'. ὕδατος κοτύλας ι'. μίξας ἕψησον ἄχρις οὗ δεκάκις ἀναβράσῃ. καὶ ψύξας κατάγγισον. δοκεῖ δὲ λαμβανόμενον πάχος ἄγειν. ὠφελεῖν ἰσχιαδικούς. καὶ ἀρθρητικοὺς ἐπιληπτικούς. ἀρήγει δὲ καὶ τοῖς

ἀπὸ ἐχίδνης τῆς καλουμένης σηπὸς δηχθεῖσι. καὶ τοῖς μηκώνειον ἢ ἰξίαν πιοῦσιν. ἀναγαργάρισμά τε συναγχικῶν ὠφέλιμον.

Περὶ ὀξάλμης. κεφ. ψϛζ'.

Ὀξάλμη ὠφελεῖ καταντλουμένη πρὸς νομάς. σηπεδόνας. κυνόδηκτα. καὶ τὰ ἀπὸ τῶν ἰοβόλων δήγματα. στέλλει δὲ καὶ τὰς ἐπὶ τῶν λιθοτομηθέντων αἱμορραγίας. εὐθέως μετὰ τὴν χειρουργίαν θερμὴ ἐγκλυζομένη. καὶ ἕδραν προπεπτωκυῖαν. ἐγκλύζεται δὲ ἐπὶ τῶν μετὰ νομῆς δυσεντερικῶν. δεῖ δὲ ἐπεγχυματίζειν γάλακτι. καταρροφουμένη δὲ καὶ ἀναγαργαριζομένη βδέλλας κτείνει. σμήχει δὲ καὶ πίτυρα καὶ ἀχῶρας.

Περὶ θυμοξάλμης. κεφ. ψϛη'.

Θυμοξάλμῃ ἐχρῶντο οἱ ἀρχαῖοι ἐπὶ τῶν ἀσθενῆ τὸν στόμαχον ἐχόντων. κατὰ τρεῖς ἢ τέσσαρας κυάθους πρὸς ὕδωρ θερμὸν κεραννύντες καὶ διδόντες. καὶ ἐπὶ ἀρθριτικῶν καὶ πνευματουμένων. ἄγει δὲ παχέα καὶ μέλανα. σκευάζεται δὲ οὕτω. θύμου λείου ὀξύβαφον. ἁλῶν ἴσον. γλήχωνος. ἑκάστου ὀλίγον βαλὼν εἰς ἄγγος, ἐπίχει ὕδατος κοτύλας ϛ'. ὄξους ἡμικοτύλιον περιθεὶς τε ὀθόνιον ἐξαιθρίαζε.

Περὶ σκιλλητικοῦ ὄξους. κεφ. ψϛθ'.

Τὸ δὲ σκιλλητικὸν ὄξος σκευάζεται τὸν τρόπον τοῦτον. καθάρας λευκὴν σκίλλαν καὶ κατατεμὼν καὶ διείρας λίνῳ ὥστε μὴ θιγγάνειν τοὺς τόμους ἀλλήλων, ξηραίνεις ἐν σκιᾷ ἐπὶ ἡμέρας μ', λαβὼν μνᾶν μίαν ἐξ αὐτῆς καθεὶς εἰς ξε. ὄξους καλοῦ ιβ'. ἄφες τῷ ἡλίῳ ἡμέρας ζ' βρέχεσθαι, πωμάσας τὸ ἀγγεῖον ἐπιμελῶς. μετὰ δὲ ταῦτα ἀνελόμενος τὴν σκίλλαν καὶ ἐκπιέσας, αὐτὴν μὲν ῥίψον. τὸ δὲ ὄξος ὑλίσας, καὶ τάγγιζε καὶ ἀποτίθεσο. ἔνιοι δὲ μνᾶν πρὸς ὄξους ξε. ε' μίσγουσιν. οἱ δὲ, αὐτόθεν καθάραντες δίχα τοῦ ξηραίνειν, τὸν σταθμὸν ἴσον βάλλουσι. καὶ ἐῶσι μῆνας ϛ'. γίνεται δὲ τὸ τοιοῦτον τμητικώτερον. εὐθετεῖ δὲ διακλυζόμενον, πρὸς οὖλα μυδῶντα στέλλον καὶ στερροποιοῦν αὐτά. καὶ ὀδόντας κινουμένους. καὶ τὰς περὶ τὸ στόμα σηπεδόνας καὶ δυσωδίας, ἱκα

νῶς ἀνασκευάζον. καταῤῥοφούμενον δὲ τόν τε βρόγχον στερεεῖ καὶ τυλώδη ποιεῖ καὶ τὸν ἦχον εὔτονον καὶ λαμπρὸν ἀποτελεῖ. παραλαμβάνεται δὲ πρὸς στομαχικοὺς καὶ δυσπεπτοῦντας. ἐπιληπτικούς. σκοτοδινιῶντας. μελαγχολικούς. ἀπηλιθιωμένους. ἔτι δὲ καὶ πρὸς ὑστερικὰς πνίγας. καὶ σπλῆνας ὑπερόγκους καὶ ἰσχιάδας. ἀναλαμβάνει δὲ καὶ τοὺς λίαν ἀσθενεῖς. καὶ τὸ σῶμα ὑγιεινὸν καὶ εὔχρουν κατασκευάζει. ἔστι δὲ καὶ ὀξυδερκές. καὶ πρὸς δυσηκοΐαν ἐνσταγῆναι δυνατὸν ἐὰν ἐγχυματίζηται. καὶ καθόλου πρὸς ἅπαντα ἐνεργεῖ πλὴν ἑλκώσεων τῶν ἐντὸς κεφαλαλγιῶν καὶ νευρικῶν. δίδου δὲ καθ' ἡμέραν ῥοφεῖν νήστει, τὴν μὲν ἀρχὴν ὀλίγον. κατὰ βραχὺ δὲ προσαύξων ἄχρι κυάθου. τινὲς δὲ κυάθους β' διδόασιν ἢ καὶ πλεῖον.

περὶ σκιλλητικοῦ οἴνου. κεφ. ϖ'.

Ὁ δὲ ἀπὸ τῆς σκίλλης οἶνος γίνεται οὕτως. κατατεμὼν ὡς εἴρηκα τὴν σκίλλαν, ξήρανον ἐν ἡλίῳ. ἔπειτα κόψας αὐτῆς μνᾶν μίαν καὶ διασήσας λεπτῷ κοσκίνῳ, ἔνδησον ὀθονίῳ ἀραιῷ. καὶ καθὲς εἰς γλεύκους καλοῦ καὶ προσφάτου ξε κ'. τρίμηνόν τε ἔασον βραχῆναι. μετὰ δὲ ταῦτα μετεράσας τὸν οἶνον εἰς ἕτερον ἀγγεῖον, ἀπόθου περισφηνώσας ἐπιμελῶς. ἔνεστι δὲ καὶ ὑγρᾷ τῇ σκίλλῃ χρῆσθαι. ἐπιτέμνοντα αὐτὴν γογγυλίδος τρόπον. καὶ τὴν ὁλκὴν διπλασιάσαντα. δεῖ δὲ ἡλιάζειν ἐπὶ ἡμέρας μ'. καὶ παλαιοῦν ἄγαν. ἔτι δὲ καὶ οὕτω σκευάζεται ὁ προειρημένος οἶνος. λαβὼν σκίλλης ἐντετμημένης καὶ κεκαθαρμένης μνᾶς γ', καθὲς εἰς γλεύκους καλοῦ μετρητὴν ἰταλικόν. καὶ μῆνας ἓξ ἔασον πωμάσας. εἶτα ὑλίσας καὶ μετεράσας ἀπόθου. εὐθετεῖ δὲ πρὸς ἀπεψίας καὶ διαφθορὰς τροφῆς. καὶ τοὺς ἀπεμοῦντας ταύτην. ἐφ' ὧν τε παχέος κοιλία παράκειται ἢ στομάχῳ. σπληνικοῖς καὶ καχέκταις. καὶ ὑδρωπικοῖς. ἰκτερικοῖς. δυσουροῦσι. στροφουμένοις. πνευματουμένοις. παραλυτικοῖς. ῥίγεσι χρονίοις. σκοτωματικοῖς. σπάσμασι. καταμηνίων τε ἀγωγός. ἥκιστα δὲ νεῦρα λυπεῖ. ἀμείνων δὲ ὁ παλαιότερος. φυλάσσεσθαι δὲ δεῖ αὐτοῦ τὴν χρῆσιν ἔν τε πυρετοῖς. καὶ ἐπὶ τῶν ἐντὸς ἐχόντων ἕλκος.

περὶ θαλασσίων οἴνων. κεφ. ϖα'.

Οἱ δὲ διὰ θαλάττης οἶνοι, ποικίλως σκευάζονται. οἱ μὲν γὰρ εὐθέως αὐτῶν μετὰ τὸ τρυγηθῆναι τὴν σταφυλήν, μιγνύουσι θάλασσαν. ἔνιοι δὲ προθηλοπαλεύουσι. καὶ οὕτω πατοῦσι μιγνύντες θάλασσαν. οἱ δὲ, σταφιδώσαντες τὴν σταφυλήν, βρέχουσιν ἐν πίθοις μετὰ θαλάσσης. καὶ οὕτω πατοῦντες ἐκθλίβουσι. γίνεται δὲ ὁ τοιοῦτος γλυκύς. οἱ μέντοι γε πρὸς τὴν γεῦσιν αὐστηρότερον σκευαζόμενοι, ποιοῦσι καὶ πρὸς πυρετῶν παρασκευὴν εἰ μὴ παρεῖεν ἀμείνους, καὶ πρὸς κοιλίας ὑπαγωγήν. καὶ ἐμπύοις. σκληροκοιλίοις. καὶ ὅσοι ἀπὸ τῶν ἀμιναίων ἅπτονται κεφαλῆς. κακοστόμαχοι μέντοι καὶ οὗτοι καὶ πνευμάτων γεννητικοί. Οὐκ ἄχρηστον δὲ ἀπογράψαι νομίζομεν πρὸς τὸ πλήρη τὴν ἱστορίαν τοῖς φιλιστοροῦσι γενέσθαι καὶ τὴν τῶν ποικιλοτέρων οἴνων σκευασίαν, οὐχ ὅτι πολλή τις ἐστὶν ἡ ἀναγκαία ἡ χρῆσις αὐτῶν, ἀλλ' ἵνα κατὰ μηδὲν αὐτῶν ἐλλείπειν δοκῶμεν. εἰσὶ δὲ αὐτῶν ἔνιοι, ἧττον περίεργοι καὶ πίπτοντες εἰς τὴν χρῆσιν. ὡς ὁ διὰ τῶν κυδωνίων καὶ ἀπίων καὶ κοραλίων. ἔτι δὲ καὶ ὁ διὰ μύρτων σκευαζόμενος.

Περὶ κυδωνίτου οἴνου. Κεφ. ωβ'.

Ὁ μὲν οὖν κυδωνίτης ὃν ἔνιοι μηλίτην καλοῦσι, σκευάζεται οὕτω. μήλων κυδωνίων ἐξελὼν τὸ σπέρμα καὶ τεμὼν ὡς γογγυλίδα εἰς μετρητὴν γλεύκους, χάλασον μνᾶς ιβ' πρὸς ἡμέρας λ'. εἶτα διυλίσας ἀπόθου. σκευάζεται δὲ καὶ οὕτω. δεῖ μετὰ τὸ κόψαι καὶ ἐκθλίψαι τὰ κυδώνια, τοῦ χυλοῦ τούτων μίξαι τοῖς ιβ' ξέσταις, ἕνα ξέστην μέλιτος. καὶ οὕτω χρὴ ἀποτίθεσθαι. ἔστι δὲ στυπτικός. εὐστόμαχος. δυσεντερίαις ἁρμόζων. ἡπατικοῖς νεφριτικοῖς τε καὶ δυσουροῦσι.

Περὶ μηλομέλιτος. Κεφ. ωγ'.

Καὶ μηλόμελι δὲ ὃ καὶ κυδωνόμελι ὀνομάζεται, σκευάζεται οὕτω. μήλων κυδωνίων ἐξαιρεθέντων τὰ σπέρματα καὶ βληθέντων εἰς μέλι ὅτι πλεῖστον ὥστε ἐνεσφηνῶσθαι, γίνεται προσηνὲς μετ' ἐνιαυτόν. οἰνομέλιτι ἐοικός. ἁρμόζον πρὸς ἃ καὶ ἡ πρὸ αὐτοῦ σκευασία.

Περὶ ὑδρομήλου. Κεφ. ωδ'.

Υδρόμηλον δὲ σκευάζεται, μιγνυμένου τοῦ ἐκ τῶν κυδωνίων μηλομέλιτος μετρητοῦ ἑνός, πρὸς β΄ μετρητὰς ἀφεψημένου ὕδατος καὶ ἡλιαζομένου ἐν τοῖς ὑπὸ κύνα. Δύναμις δὲ καὶ τούτου ἡ αὐτή.

Περὶ ὀμφακομέλιτος. Κεφ. ωε΄.

Ὀμφακόμελι δὲ σκευάζεται τόνδε τὸν τρόπον. λαβὼν ὄμφακας μήπω περκαζούσας, ἡλίαζε ἐπὶ ἡμέρας γ΄. καὶ μετὰ ταῦτα ἐκθλίψας, βάλε πρὸς γ΄ μέρη τοῦ χυλοῦ μέλιτος καλλίστου ἀπηφρισμένου μετρητοῦ μέρος ἕν. καὶ ἡλίαζε καταγγίσας εἰς κεράμους. Δύναμιν δὲ ἔχει σταλτικήν, ψυκτικήν. ὅθεν ἁρμόζει στομαχικοῖς, κοιλιακοῖς. ἡ χρῆσις δὲ αὐτοῦ μετ᾽ ἐνιαυτόν.

Περὶ ἀπίτου οἴνου. Κεφ. ως΄.

Ἀπίτης σκευάζεται ὁμοίως ὥσπερ καὶ ὁ κυδωνίτης. μὴ λίαν δὲ ἔστωσαν οἱ ἄπιοι πέπειροι. καὶ ὁ τῶν κερατίων δὲ καὶ ὁ τῶν μεσπίλων καὶ οὔων, ὁμοίως σκευάζεται. πάντες δὲ εἰσὶ στυπτικοὶ στρυφνοί, δυστόμαχοι, ῥεύματα ἔνδον ἐπέχοντες.

Περὶ οἰνανθίνου. Κεφ. ωζ΄.

Ὁ δὲ οἰνάνθινος σκευάζεται οὕτω. λαβὼν τῆς ἀγρίας ἀμπέλου τὸ ἄνθος βρυούσης ξηρὸν μνᾶς β΄ εἰς μετρητὴν γλεύκους πρὸς ἡμέρας λ΄, εἶτα διυλίσας ἀπόθου. ποιεῖ δὲ πρὸς ἀτονίαν στομάχου, ἀνορεξίαν, κοιλιακοὺς καὶ δυσεντερικούς.

Περὶ ῥοΐτου οἴνου. Κεφ. ωη΄.

Ὁ ῥοΐτης δὲ οἶνος, σκευάζεται οὕτως. ῥόας ἀπυρήνους λαβὼν ὡρίμους καὶ ἐκθλίψας τὸν χυλὸν τῶν κόκκων ἀφεψήσας εἰς τρίτον οὕτως ἀποτίθεσο. ποιεῖ δὲ πρὸς τὰ ἐντὸς ῥεύματα καὶ πυρετοὺς ῥοώδεις. ἔστι δὲ εὐστόμαχος καὶ στεγνωτικὸς κοιλίας, καὶ οὐρητικός.

Περὶ ῥοδίτου οἴνου. Κεφ. ωθ΄.

Ῥοδίτης δὲ οὕτω σκευάζεται. ῥόδων ξηρῶν κεκομμένων μνᾶν μίαν ἐνδήσας εἰς ὀθόνιον, κάθες εἰς γλεύκους ξέστας η΄. μετὰ δὲ τρεῖς μῆνας διυλίσας μετάγγιζε καὶ ἀποτίθεσο. χρήσιμος δὲ ἀπυρέτοις. πρὸς στομάχου πέψεις καὶ πόνους ἐπιπινόμε-

νος. πρός τε καθύγρους κοιλίας καὶ δυσεντερείαν. σκευάζεται δὲ καὶ διὰ χυλοῦ ῥόδων καὶ μέλιτος μιγνυμένου. ὃ καλεῖται ῥοδόμελι. ἁρμόζει πρὸς τὰς ἐν ἀρτηρείᾳ τραχύτητας.

Περὶ μυρτίτου οἴνου. Κεφ. ωι'.

Μυρτίτης δὲ σκευάζεται οὕτω. δεῖ μύρτα μέλανα παρακμάζοντα λαβόντα, κόπτειν καὶ ἐκθλίβειν τὸν χυλὸν δι' ὀργάνου καὶ καταγγίζειν. ἔνιοι δὲ καὶ ἀφεψοῦσιν εἰς τρίτον. οἱ δέ, καὶ προθήλοπαι δεύουσιν ἐν ἡλίῳ. καὶ ξηράναντες μίσγουσι τῇ χοίνικι κοπείσῃ, τρεῖς κοτύλας ὕδατος. καὶ οἴνου παλαιοῦ τὸ αὐτό. οὕτω τε ἐκθλίβουσι καὶ ἀποτίθενται. ἱκανῶς δέ ἐστι στυπτικὸς καὶ εὐστόμαχος. ῥευματιζομένῳ τε στομάχῳ καὶ κοιλίᾳ χρήσιμος, πρός τε τὰς ἐντὸς ἑλκώσεις καὶ ῥοῦν. μελαίνει δὲ καὶ τρίχας ἐν κεφαλῇ.

Περὶ μυρσινίτου οἴνου. Κεφ. ωια'.

Μυρσινίτης δὲ σκευάζεται οὕτω. δεῖ λαβόντα τῶν μελαίνων μυρσινῶν τοὺς ἀκρέμονας καὶ τὰ φύλλα σὺν τοῖς μύρτοις κόπτειν. καὶ βάλλειν εἰς τοὺς τρεῖς τοῦ γλεύκους χόας, τῆς μυρσίνης κεκομμένης μνᾶς ι'. καὶ ἕψειν ἄχρις ἂν δύο ἀπολειφθῶσιν ἢ τὸ ἥμισυ. καὶ διυλίσαντας ἀποτίθεσθαι. ποιεῖ δὲ οὗτος πρός τε ἀχῶρας καὶ πίτυρα. ἐξανθήματα. οὖλα. παρίσθμια. ὦτα πυορροοῦντα. στέλλει καὶ ἱδρῶτας.

Περὶ σχινίνου οἴνου. Κεφ. ωιβ'.

Καὶ ὁ σχίνινος δὲ ἐοικότως τῷ μυρσινίτῃ σκευάζεται.

Περὶ τερεμινθίνου οἴνου. Κεφ. ωιγ'.

Καὶ ὁ τερεμίνθινος ὁμοίως. ἔγκαρποι γὰρ καὶ τούτων οἱ ἀκρέμονες λαμβάνονται. καὶ παραπλησίας εἰσὶ δυνάμεως, στυπτικοὶ καὶ εὐστόμαχοι. ῥεύμασί τε ἁρμόζοντες στομάχου. ἐντέρων. κύστεως. αἱμορραγίας. κατουλοῦσι δὲ καὶ τὰ ῥευματικὰ πάντα ἕλκη ἐπαντλούμενοι. τούς τε περὶ ὑστέραν καὶ ἕδραν ῥευματισμοὺς στέλλουσιν ἐγκαθιζόμενοι.

Περὶ φοινικίτου οἴνου. Κεφ. ωιδ'.

Φοινικίτης. λαβὼν φοίνικας τοὺς χυδαίους πεπείρους, βάλε εἰς πυθάκνην τετρημένην ἐν τῷ πυθμένι. καὶ ἐσφηνωμένην καλάμῳ πεπατωμένῳ. τὸ δὲ τρῆμα λίνῳ βεβύσθω. ἐπίχεε δὲ τοῖς δέκα χοίνιξιν ὕδατος χόας γ. εἰ δὲ μὴ λίαν αὐτὸν γλυκὺν θέλεις εἶναι, πέντε χόας ἐπίχει. ἔα δὲ αὐτὸν ἡμέρας ι. τῇ δὲ ια ἀφαιρῶν τὸ ἀπὸ τοῦ καλάμου ὀθόνιον, ἀποδέχου οἶνον παχὺν καὶ γλυκὺν καὶ ἀποτίθεσο. Ἔστι δὲ ἡδὺς μὲν, κεφαλαλγὴς δέ. ποιῶν πρὸς ῥεύματα διὰ τὸ στῦφον. ὅθεν στομαχικοῖς καὶ κοιλιακοῖς. καὶ αἱμοπτοϊκοῖς ἁρμόζει. ἔνιοι δὲ τὸ αὐτὸ πάλιν τοῦ ὕδατος μίσγοντες δέχονται. καὶ τοῦτο τρίτον ποιοῦσι. καὶ τέταρτον καὶ πέμπτον ὅτε λοιπὸν ὀξίζει.

## Περὶ κατορχίτου οἴνου. ΚΕΦ. ωιε.

Καὶ ὁ κατορχίτης δὲ ὃν ἔνιοι συκίτην καλοῦσιν, ἐν κύπρῳ σκευάζεται ὁμοίως τῷ φοινικίτῃ. διαφέρει δὲ ὅτι ἀντὶ τούτου ἔνιοι ἀντὶ ὕδατος στεμφύλων ἀπόβρεγμα νεοθλίπτων, τὸ ἴσον μέτρον βάλλουσιν. ἰσχάδες δὲ λαμβάνονται αἱ χελιδόνιοι καλούμεναι. ἢ φοινικαῖ. μέλαιναι δέ εἰσι καὶ ἀποβρέχονται ὡς προείρηται. μετὰ δὲ ἡμέρας δέκα ἐκλαμβάνεται τὸ ὑγρόν. καὶ ἐκ δευτέρου καὶ τρίτου ἐπιχεῖται, τοῦ ἐκ τῶν στεμφύλων ἀποβρέγματος τὸ αὐτὸ μέτρον. ὁμοίως δὲ ἐκ διαστημάτων ἐκλαμβάνεται τὸ δ. καὶ ε. ἀπόβρεγμα ὁμοίως ὀξίζον. ᾧ ἀντὶ ὄξους χρῶνται. Λεπτομερὴς δέ ἐστι καὶ φυσώδης καὶ κακοστόμαχος. ἀποστρέφων ὄρεξιν. εὐκοίλιος μέντοι καὶ οὐρητικός. κατασπᾷ δὲ καὶ ἔμμηνα. καὶ γάλα δαψιλὲς ποιεῖ. αἷμα δὲ φαῦλον κατασκευάζει. καὶ ἐλεφαντιάσεως ἐστὶ ποιητικόν. ὡς καὶ τὸ ζῦθος. ἔνιοι δὲ καὶ ἁλῶν τοῖς ἓξ κεραμίοις, ξε ἐμβάλλουσι δέκα. οἱ δὲ, ἅλμης κεράμιον, δυσμετάβλητον καὶ εὐκοίλιον ἔσεσθαι διανοούμενοι. οἱ δὲ, καὶ θύμον καὶ μάραθρον προστιθέασι τῷ πυθμένι. εἶτα τὰς ἰσχάδας. καὶ ἐναλλὰξ τοῦτο ποιοῦσιν ἄχρις ἂν πληρώσωσι τὸ ἀγγεῖον.

## Περὶ συκομορείτου οἴνου. ΚΕΦ. ωις.

Σκευάζεται δὲ καὶ ὁ ἐκ τῶν συκομόρων ὡσαύτως. ὄξος δὲ γίνεται δριμὺ, διὰ τὸ μὴ ἰσχύειν τὴν δύναμιν αὐτῶν φυλάσ-

στειν τὴν γλυκύτητα τοῦ ῥυέντος.

Περὶ ῥητινίτου οἴνου. Κεφ. ωιζ'.

Ὁ δὲ ῥητινίτης καὶ κατὰ τὰ ἔθνη σκευάζεται. πλεονάζει δὲ ἐν γαλατίᾳ διὰ τὸ ἀποξυνέσθαι τὸν οἶνον ἀπεπάντου μενούσης τῆς σταφυλῆς διὰ τὸ ψύχειν, εἰ μὴ παραπλακῆ πευκίνη. κόπτεται δὲ σὺν τῷ φλοιῷ ἡ ῥητίνη. καὶ τῷ κεραμίῳ μίγνυται ἡμικοτύλιον. καὶ οἱ μὲν, ἀπηθοῦσι μετὰ τὸ ἀποζέσαι χωρίζοντες τὴν ῥητίνην. οἱ δὲ, ἐῶσι. παλαιωθέντες δὲ γίνονται ἡδεῖς. πάντες δὲ κεφαλαλγεῖς οἱ τοιοῦτοι καὶ σκοτωματικοί. πεπτικοὶ μέντοι καὶ οὐρητικοί. καταρροιζομένοις καὶ βήσσουσιν ἁρμόζοντες. κοιλιακοῖς. δυσεντερικοῖς. ὑδρωπικοῖς. καὶ ῥοϊκαῖς γυναιξί. τοῖς τε ἐν βάθει ἑλκωμένοις ἔγκλυσμα. στυπτικώτερος μέντοι τοῦ λευκοῦ ἐστιν ὁ μελανίζων.

Περὶ στροβιλίτου οἴνου. Κεφ. ωιη'.

Στροβιλίτης δὲ σκευάζεται ἐναποβρεχομένων τῷ γλεύκει στροβίλων προσφάτων καὶ τεθλασμένων. ποιεῖ δὲ τὰ αὐτὰ τῷ ῥητινίτῃ. ἐὰν δὲ γλεύκει ἐναποβρέξας τὶς τοὺς στροβίλους ἑψήσῃ, ἁρμόζει καὶ φθινώδεσιν ἱκανῶς πινόμενος.

Περὶ κεδρίνου. Κεφ. ωιθ'.

Ὁ δὲ κέδρινος ἢ ἀρκεύθινος ἢ κυπαρίσσινος ἢ δάφνινος ἢ πιτύϊνος ἢ ἐλάτινος, σκευάζεται ὁμοίως. χρὴ γὰρ τὰ ξύλα νεότμητα θλάζοντας ὅτε τὸν καρπὸν ἐκδίδωσι, τιθέναι πρὸς ἥλιον ἢ ἐν βαλανείῳ ἢ ἐν πυρὶ ὥστε συνιδρῶσαι. καὶ σμίγειν τῷ χοὶ τοῦ οἴνου μνᾶν μίαν καταμίξαντάς τε ἐᾶν μῆνας β'. εἶτα μεταγγίζειν. καὶ ἡλιάσαντα ἀποτίθεσθαι. πληροῦν δὲ δεῖ τὰ ἀγγεῖα τῶν σκευαστῶν οἴνων. ἀποξυνοῦνται γὰρ τὰ ἀπόκενα. ἄθετοι μέντοι οἱ φαρμακώδεις οἶνοι τοῖς ὑγιαίνουσι. θερμαντικοὶ δὲ πάντες. οὐρητικοί. ὑποστύφοντες. ὁ μέντοι δάφνινος θερμαντικώτερος. γίνεται δὲ καὶ ἐκ τοῦ καρποῦ τῶν μειζόνων κέδρων οἶνος. δεῖ δὲ τῷ χοὶ τοῦ γλεύκους ἡμιμναῖον κεκομμένων τῶν κεδρίδων μῖξαι. ἡλιάσαι τε ἐφ' ἡμέραις μ'. μετὰ δὲ ταῦτα διυλίζειν καὶ μεταγγίζειν.

Περὶ ἀρκευθίτου οἴνου. Κεφ. ωκ'.

Γίνεται καὶ ἐκ τοῦ τῶν ἀρκευθίδων καρποῦ. ὁμοίως τῷ κεδρίτῃ τὰ αὐτὰ ποιῶν.

Περὶ κεδρίτου. Κεφ. ωκα'.

Κεδρίτης δὲ γίνεται οὕτω. κεδρίαν πλύναντες ὕδατι γλυκεῖ, διακλύζουσιν ἕκαστον κεράμιον κυάθῳ ἑνί. καὶ οὕτω πληροῦσι γλεύκους. θερμαντικὸς δὲ καὶ οὗτος γίνεται καὶ λεπτυντικός. βηχὶ παλαιᾷ ἁρμόζων δίχα πυρετῶν. καὶ πόνοις θώρακος. πλευρῶν. στρόφοις. ἕλκεσι τοῖς ἐν κοιλίᾳ καὶ ἐντέροις. ἐμπυικοῖς. ὑστερικαῖς. ποιεῖ καὶ πρὸς ἕλμινς. καὶ πρὸς ῥῖγη. βοηθεῖ θηριοδήκτοις καὶ ἑρπετὰ κτείνει. ὠταλγίας τε ἐνσταζόμενος ἰᾶται.

Περὶ πισσίτου οἴνου. Κεφ. ωκβ'.

Οἶνος πισσίτης σκευάζεται διὰ πίσσης ὑγρᾶς καὶ γλεύκους. δεῖ δὲ τὴν πίσσαν πρῶτον πλύνειν θαλάσσῃ ἢ ἅλμῃ ἐφ' ἱκανὸν μέχρις ἂν λευκανθῇ. καὶ ἡ θάλασσα καθαρὰ ἀπορρέῃ. ἔπειτα ὕδατι γλυκεῖ. καὶ τοῖς η' χοεῦσι μίσγειν οὐγγ. πίσσης α'. ἢ β'. καὶ ἐᾶν. μετὰ δὲ τὸ ἀναζέσαι καὶ καταστῆναι καταγγίζειν. ἔστι δὲ θερμαντικός. πεπτικός. σμηκτικός. ἀνακαθαρτικός. εὔθετος τοῖς περὶ θώρακα. κοιλίαν ἢπαρ. σπλῆνα καὶ ὑστέρας πόνους. δίχα πυρετοῦ. καὶ χρονίοις ῥεύμασι. καὶ ἑλκώσεσι τοῖς ἐν βάθει. ποιεῖ καὶ πρὸς βῆχας. βραδυπεψίας. πνευματώσεις. ἄσθματα. καὶ πρὸς στρέμματα δὲ μᾶλλον μετ' ἰσυπηρῶν ἐρίων.

Περὶ ἀψινθίου οἴνου. Κεφ. ωκγ'.

Ἀψινθίτης δὲ ποικίλως σκευάζεται. οἱ μὲν γὰρ τοῖς μ'. ἢ ξεστ. τῶν ἰταλικῶν κεραμίων, μίξαντες ἀψινθίου ποντικοῦ λίτραν μίαν ἕψουσι μέχρι τὸ γ' ἀπολιφθῇ. ἔπειτα προσεπιχέαντες γλεύκους ξεστ. ς'. καὶ ἀψινθίου ἡμιλίτρον ἐπιμελῶς μίξαντες, καταγγίζουσι. κατασταθέντα δὲ διυλίζουσιν. οἱ δέ, μνᾶν ἀψινθίου εἰς τὸ κεράμιον καθιᾶσι. κόψαντες καὶ ἐνδήσαντες εἰς ὀθόνιον ἀραιὸν ἐῶσιν ἐπὶ μῆνας δύο. οἱ δέ, ἀψινθίου οὐγγ. γ'. ἔνιοι δὲ τέσσαρας. καὶ νάρδου συριακῆς

κινναμώμου. κασσίας. σχίνου ἄνθους καλάμου. ἐλάτης. φοινίκης ἀνὰ οὐγγίας β'. καθιᾶσιν εἰς μετρητὴν γλεύκους. ὅλην δὲ κόψαντες καὶ σφηκώσαντες, ἐῶσι δίμηνον ἢ τρίμηνον. εἶτα διυλίσαντες καὶ μεταγγίσαντες ἀποτίθενται. οἱ δὲ, εἰς γλεύκους μετρητὴν νάρδου κελτικῆς < ιδ' καὶ ἀψινθίου < μ' καθιᾶσιν ἐν ὀθονίῳ δήσαντες. καὶ μεθ' ἡμέρας μ' μεταγγίζουσιν. οἱ δὲ, εἰς τοὺς ξέστας ς' τοῦ γλεύκους λίτρας α'. ἀψινθίου ἐμβάλλουσι. καὶ πιτυίνης ξηρᾶς ῥητίνης οὐγγίας β'. μετὰ δὲ ἡμέρας ι'. διυλίσαντες ἀποτίθενται. ἔστι δὲ εὐστόμαχος. οὐρητικός. χρήσιμος βραδυπεπτοῦσιν. ἡπατικοῖς τε καὶ νεφριτικοῖς καὶ ἰκτερικοῖς. ἀνορέκτοις. κακουμένοις στόμαχον. καὶ πρὸς ὑποχονδρίων τάσιν χρόνιον. καὶ πρὸς ἐμπνευματώσεις. ἕλμινθας στρογγύλας. ἔμμηνα ἐπεχόμενα. πρός τε ἰξίον πόσιν πλεῖστος ποθεὶς καὶ ἠρεμούμενος ἁρμόζει.

### Περὶ ὑσσωπίτου οἴνου. κεφ. ωκδ'.

Ὑσσωπίτης δὲ ὁ ἐκ τοῦ κιλικίου ὑσσώπου, κάλλιστός ἐστι. σκευάζεται δὲ ὁμοίως τῷ ἀψινθίτῃ, δεῖ δὲ τῷ κεραμίῳ τοῦ γλεύκους λίτραν μίαν τοῦ ὑσσώπου κεκομμένων τῶν φύλλων προσδιδόναι. ἐνδοῦντας εἰς ὀθόνιον ἀραιόν. συγκαθίενται δὲ λιθάρια. ἵνα τῷ πυθμένι προσκαθίσῃ ὁ ἔνδεσμος. μετάγγιζε δὲ δι' ἡμέρας μ' διυλίζων. ἁρμόζει δὲ πρὸς τὰ ἐν θώρακι καὶ πλευρῷ καὶ πνεύμονι πάθη. βῆχας τε παλαιάς. καὶ ἆσθμα. ἔστι δὲ καὶ οὐρητικός. καὶ στροφουμένοις ἁρμόζει. πρός τε ῥίγη τὰ ἐν περιόδοις. κινεῖ δὲ καὶ ἔμμηνα.

### Περὶ χαμαιδρυΐτου οἴνου. κεφ. ωκε'.

Καὶ ὁ χαμαιδρυΐτης ὁμοίως τῷ ὑσσωπίτῃ σκευάζεται. θερμαντικὸς ὢν καὶ διαλυτικός. ἁρμόζων σπασμοῖς καὶ ἰκτέροις. ὑστερικαῖς πνευματώσεσι. βραδυπεψίαις. ὕδρωπι ἀρχομένῳ. ἀμείνων δὲ παλαιούμενος γίνεται.

### Περὶ στιχαδίτου οἴνου. κεφ. ωκς'.

Σκευάζεται καὶ στιχαδίτης ὁμοίως. δεῖ δὲ τοῖς ς' χουσὶ μναῖ μίαν στιχάδος διδόναι. διαλύει δὲ πάχη καὶ πνευματώσεις,

καὶ πόνους πλευρᾶς καὶ νεύρων. καὶ καταψύξεις. δίδοται δὲ καὶ ἐπιληπτικοῖς ὠφελίμως μετὰ πυρέθρου καὶ σαγαπηνοῦ.

Περὶ ὄξους στιχαδικοῦ. Κεφ. ωκζ'.

Γίνεται καὶ ὄξος διὰ στιχάδος πρὸς τὰ εἰρημένα. ἐναποβρεχομένης ὄξει τῆς πόας ὡς προείρηται. ποιεῖ δὲ πρὸς τὰ αὐτά.

Περὶ κεδρίτου οἴνου. Κεφ. ωκη'.

Γίνεται καὶ ἐκ τῆς κέδρου τῆς ψυχροφόρου οἶνος. δεῖ δὲ λαμβάνειν τὴν πόαν σπέρματος πλήρη πεπείρου σὺν τοῖς κλάδοις. καὶ μνᾶν μίαν βάλλειν εἰς οἴνου χόας β'. ἐᾶν τε ἑπτὰ μῆνας. καὶ οὕτω μεταγγίζειν. ποιεῖ δὲ πρὸς πολλὰ τῶν αὐτῆς καθάπερ καὶ ὁ θάμνος αὐτῆς. καὶ καθόλου πάντες οἱ σκευαστοὶ οἶνοι ἀναλαμβάνουσι τὴν δύναμιν τῶν μιγμάτων. διὸ τοῖς τὰς ἐκείνων ἐπεγνωκόσι φύσεις εὐχερὲς καὶ τὰς τῶν οἴνων δυνάμεις συμβάλλειν. ἀπυρέτοις μέντοι ἐστὶν ἡ τῶν οἴνων χρῆσις. καὶ ὄξος τὸ ἐξ αὐτῶν γινόμενον πρὸς τὰ ἐοικότα πάθη χρησιμεῦον.

Περὶ τραγοριγανίτου οἴνου. Κεφ. ωκθ'.

Τραγοριγανίτης. τραγοριγάνου δραχμὰς δ'. εἰς γλεύκους ξέστας δ'. ἐν ὀθονίῳ χάλα πρὸς μῆνας γ'. καὶ μετάσειζε. ἁρμόζει στρόφοις. σπάσμασι. ῥήγμασι. πόνοις πλευροῦ. πνευμάτων διαδρομαῖς. δυσπεψίαις.

Περὶ βουνίτου οἴνου. Κεφ. ωλ'.

Οἶνος διὰ βουνίου. βουνίου ∠ β' κόψας, κάθες εἰς κοτύλας γλεύκους τέσσαρας. καὶ τἄλλα ὁμοίως ποίει. ἁρμόζει δὲ στομαχικοῖς κεκοπωμένοις δι' ὁπλομαχίαν ἢ ἱππασίαν πολλήν.

Περὶ δικταμνίτου οἴνου. Κεφ. ωλα'.

Δικταμνίτης. δικτάμνου ∠ δ' εἰς γλεύκους κοτύλας η'. ἀπόβρεχε ὁμοίως. ποιεῖ δὲ ἀσωμένοις στόμαχον ἄγει καὶ λόχια καὶ ἔμμηνα.

Περὶ πρασίτου οἴνου. Κεφ. ωλβ'.

Ὁ διὰ πρασίου. πρασίου τοῦ ἀκμαίου φύλλα κόψας χοίνικας β' κάθες εἰς μετρητὴν γλεύκους. καὶ τἄλλα ὁμοίως ποίει. ἁρ-

μόζει δὲ τοῖς περὶ θώρακα καὶ πρὸς ὅσα τὸ πράσιον.

Περὶ θυμίτου οἴνου. κεφ. ωλγ'.

Θυμίτης. θύμου κεκομμένου καὶ σεσησμένου γρ. ρ' ἐνδήσας εἰς ὀθόνιον, κάθες εἰς γλεύκους κεράμιον. ἁρμόζει πρὸς δυσπεψίας. ἀνορεξίας. δυσεντερείας. νεύρων πόνους ὑποχονδρίων. φρίκας χειμερινάς. καὶ πρὸς ἰοβόλα τὰ ψύχοντα καὶ σήποντα.

Περὶ θυμβρίτου οἴνου. κεφ. ωλδ'.

Θυμβρίτης ὁμοίως σκευάζεται. καὶ πρὸς τὰ αὐτὰ ποιεῖ, πρὸς ἃ καὶ ὁ θυμίτης.

Περὶ ὀριγανίτου οἴνου. κεφ. ωλε'.

Ὀριγανίτης. δι' ὀρυγάνου ἡρακλεωτικῆς σκευάζεται ὁμοίως τῷ θυμίτῃ. ποιῶν πρὸς τὰ αὐτά.

Περὶ καλαμινθίτου γληχωνίτου καὶ ἀβροτονίτου οἴνου. κεφ. ωλϛ'.

Καλαμινθίτης. γληχωνίτης. ἀβροτονίτης, ὁμοίως σκευάζεται τῷ διὰ θύμου. ποιοῦσι δὲ στομαχικοῖς καὶ ἀνορεκτοῦσι. καὶ πρὸς ἴκτερον. οὐρητικοὶ γάρ εἰσιν.

Περὶ κονυζίτου οἴνου. κεφ. ωλζ'.

Οἶνος κονυζίτης ὁμοίως σκευάζεται. ἔστι δὲ πάντων μᾶλλον θυριακός.

Περὶ ἀρωματίτου οἴνου. κοφ. ωλη'.

Ὁ δὲ ἀρωματίτης οὕτω κατασκευάζεται· φοίνικος. ἀσπαλάθου. καλάμου. νάρδου κελτικῆς. ἑκάστου χοίνι κα λιώσας, φύρασον γλυκεῖ. καὶ ποιήσας εὐμεγέθεις μάζας, βάλε εἰς γλεύκους αὐστηροῦ ξέστας ιβ'. καὶ ἔασον ἡμέρας μ'. σφυκώσας τὸ ἀγγεῖον. εἶτα διυλίσας ἀπόθεσο. σκευάζεται δὲ καὶ ἄλλως· καλάμου ὁλκὰς η'. φοῦ ∠ ζ'. κόστου ∠ β'. νάρδου συριακῆς ∠ ϛ'. κασσίας η'. ∠ κρόκου ∠ δ'. ἀμώμου ∠ ε'. ἀσάρου ∠ δ'. ταῦτα ὁμοῦ λειώσας καὶ ἐν ὀθονίῳ δήσας χάλασον εἰς μετρητὴν γλεύκους. καὶ μετὰ τὸ ἀποζέσαι τὸν οἶνον μετάγγιζε. ποιεῖ δὲ πρὸς πόνους θώρακος. πλευ-

ρου. πνεύμονος. δυσουρίαις τε καὶ ῥίγεσιν. ἐμμηνίοις ἐπισχεθεῖσι. καὶ τοῖς διὰ κρυμὸν ὀδυνοῦσιν ἁρμόζει πινόμενος. καὶ πρὸς τοὺς πάχος γεννῶντας. περιποιεῖ δὲ καὶ εὔχροιαν. ὑπνωτικός τε ἐστὶ καὶ ἀνώδυνος τοῖς περὶ κύστιν καὶ νεφροῖς ἁρμόζων πάθεσι.

Περὶ οἴνου τοῦ ἐκ σμύρνης. πεπέρεως. καὶ ἴρεως. Κεφ. ωλθ΄.

Σκευάζεται δὲ οἶνος πρὸς καταῤῥόους. βῆχας. ὠμότητας. ἐμπνευματώσεις καὶ πλάδον στομάχου. σμύρνης < β΄. πεπέρεως λευκοῦ < α΄. ἴρεως < ϛ΄. ἀνήθου < γ΄. ταῦτα ὁλόκοπα ἐνδήσας εἰς ὀθόνιον κάθες εἰς ξε ϛ΄. οἴνου. μετὰ δὲ τρίτην διυλίσας ἀποτίθεσο εἰς λάγηνον. καὶ πότιζε μετὰ περίπατον διδοὺς ἄκρατον κύαθον α΄.

Περὶ νεκταρείτου οἴνου. Κεφ. ωμ΄.

Ὁ δὲ νεκταρείτης σκευάζεται ἐκ τοῦ ἑλενίου. ὃ ἔνιοι μηδικὴν. οἱ δὲ σύμφυτον. οἱ δὲ, ἰδαῖον φλόμιν. οἱ δὲ. ὀρέσιον. οἱ δὲ νεκτάρειον καλοῦσιν. ἑλενίου ῥίζης ξηρᾶς οὐγγίας ε΄. ἐνδήσας εἰς ὀθόνιον, κάθες εἰς χόας ϛ΄. γλεύκους. καὶ μετὰ γ΄ μῆνας ἀπόχει. ποιεῖ δὲ πρὸς στόμαχον. θώρακα. ἄγει δὲ καὶ οὖρα.

Περὶ τοῦ διὰ συριακῆς νάρδου καὶ κλητικῆς καὶ μαλαβάθρου οἴνου. Κεφ. ωμα΄.

Ὁ δὲ διὰ συριακῆς νάρδου καὶ κελτικῆς καὶ μαλαβάθρου, σκευάζεται οὕτως. ἑκάστου ἡμίμναιον λαβὼν, εἰς δίχουν γλεύκους κάθες. καὶ μετὰ μῆνας β΄ διύλιζε. δίδου δὲ καὶ κυάθους α΄. πρὸς τρεῖς ὕδατος. ποιεῖ νεφριτικοῖς. ἰκτερικοῖς. ἡπατικοῖς δυσουροῦσιν. ἀχροοῦσι στομαχικοῖς. οἱ δὲ ἀκόρου οὐγγίας. β΄. κελτικῆς νάρδου οὐγγίας γ΄. ἐν κεραμίῳ γλεύκους σκευάζουσιν.

Περὶ ἀσαρείτου οἴνου. Κεφ. ωμβ΄.

Ἀσαρείτης. ἀσάρου οὐγγίας γ΄. κάθες εἰς γλεύκους κοτύλας ιβ΄. ὁμοίως. ἔστι δὲ διουρητικός. ὑδρωπικοῖς ἁρμόζων. καὶ ἰκτεριώδεσιν. ἡπατικοῖς ἰσχιαδικοῖς.

Περὶ τοῦ διὰ τῆς ἀγρίας νάρδου οἴνου. Κεφ. ωμγ΄.

Ὁ δὲ διὰ τῆς ἀγρίας νάρδου. νάρδου ἀγρίας τῆς ῥίζης προσφάτου λειώσας σεσησμένης καθὲς οὐγγίας ἢ εἰς χοῦν γλεύκους ὁμοίως. καὶ ἔα μῆνας β΄. χρήσιμος ἡπατικοῖς. δυσουροῦσι. πνευματουμένοις. στομαχικοῖς.

Περὶ δαυκίτου οἴνου. Κεφ. ωμδ΄.

Δαυκίτης. δαύκου τῆς ῥίζης ὁλοκόπου ∠ ϛ΄. εἰς γλεύκους κεράμιον καθὲς ὁμοίως καὶ μετάγγιζε. ποιεῖ δὲ πρὸς πόνους θώρακος. ὑποχονδρίων. ὑστέρας. ἄγει ἔμμηνα. ἐρυγὰς κινεῖ. καὶ οὖρα ἁρμόζει βηχί. σπάσμασι ῥήγμασιν.

Περὶ ἐλελισφακίτου οἴνου. Κεφ. ωμε΄.

Ἐλελισφακίτης ὁμοίως. ἐλελισφάκου. οὐγγίας ο΄. ὁμοίως εἰς γλεύκους ἀμφορέα ὅ ἐστι κεράμιον καθὲς. ποιεῖ δὲ πρὸς νεφρῶν πόνους καὶ κύστεως πλευρῶν. αἵματος ἀναγωγάς. βῆχα. ῥήγματα. σπάσματα ἔμμηνα ἐστεγνωμένα.

Περὶ πανακίτου οἴνου. Κεφ. ωμϛ΄.

Πανακίτης. πάνακος οὐγγίαν α΄. εἰς χόα γλεύκους καθεὶς ὁμοίως μετάγγιζε. ποιεῖ σπάσμασι. ῥήγμασι. θλάσμασιν. ὀρθοπνοίαις. λεπτυντικὸς πάχους σπληνός. ποιεῖ δὲ καὶ πρὸς στρόφους ἰσχιάδας βραδυπεψίας. καταμήνια ἄγει καὶ ἔμβρυα. ὑδρωπικοῖς καὶ θηριοδήκτοις ἁρμόζει.

Περὶ ἀκορείτου οἴνου. Κεφ. ωμζ΄.

Ἀκορείτης δὲ καὶ ὁ ἀπὸ γλυκυῤῥίζης ὁμοίως σκευάζεται. δεῖ δὲ ἑκάστου οὐγγίας π΄ εἰς χόας ϛ΄. πρὸς μῆνας γ΄ ἀποβρέχοντας μεταγγίζειν. ποιοῦσι δὲ πρὸς πλευρὰν καὶ θώρακα κινοῦντες καὶ οὔρησιν.

Περὶ σελινίτου οἴνου. Κεφ. ωμη΄.

Σελίνου σπέρματος ὠείμου νέου σεσησμένου οὐγγίας ο̄. ἐνδήσας εἰς ὀθόνιον, βάλε εἰς κεράμιον γλεύκους ὁμοίως ποιεῖ δὲ ὄρεξιν. καὶ στομαχικοῖς ἁρμόζει. καὶ δυσουροῦσιν. ἔστι δὲ καὶ εὔπνους.

Περὶ μαραθείτου καὶ ἀνηθίνου οἴνου. Κεφ. ωμθ΄.

Καὶ μαρα-

Καὶ μαραθείτης καὶ ἀνήθινος. καὶ πετροσελινίτης ὁμοίως σκευάζονται πρὸς τὰ αὐτὰ ποιοῦντες.

Περὶ ἁλοσανθίνου. Κεφ. ων΄.

Σκευάζεται καὶ διὰ λὸς ἄνθους καθαρτικώτερος τοῦ διὰ θαλάττης. κακοὶ δὲ φάρυγγα καὶ νεφρούς. κύστιν. στόμαχον. ὅθεν οὔτε πρὸς ὑγείαν οὔτε πρὸς πάθη χρήσιμος ὁ τοιοῦτος.

Περὶ φθορείου ἐμβρύων. Κεφ. ωνα΄.

Γίνεται δὲ καὶ φθόριος ἐμβρύων οἶνος. φυτευομέναις γὰρ ταῖς ἀμπέλοις συμφύεται ἐλλέβορος ἢ σίκυς ἄγριος. ἢ σκαμμωνία ὧν ἀναλαμβάνει ἡ σταφυλὴ τὴν δύναμιν. καὶ ὁ ἐξ αὐτῆς οἶνος γίνεται φθόριος. γίνεται δὲ προσκεκμηκυίαις νήστεσι κυάθων πλῆθος η΄ κεκραμένος.

Περὶ θυμελαΐτου οἴνου. Κεφ. ωνβ΄.

Ὁ θυμελαΐτης. τῶν κλώνων σὺν τοῖς φύλλοις καὶ τῷ καρπῷ λίτρας λ΄ βάλε εἰς γλεύκους χόας γ΄. καὶ σκεύαζε ἕψων κούφως. ἄχρις ἂν β΄. ἀπολειφθῶσι χόες. καὶ διυλίσας ἀποτίθεσο. καθαίρει ὑδατώδη καὶ σπλῆνα τήκει.

Περὶ χαμαιλαΐτου. Κεφ. ωνγ΄.

Χαμαιλαΐτης. ἐπειδὰν ἀνθῇ ὁ θάμνος, μετὰ τῶν φύλλων κόψας, καὶ σήσας βάλε οὐγγίας ιβ΄ εἰς γλεύκους χοῦν. καὶ μετὰ μῆνας β΄ μετάγγιζε. ποιεῖ δὲ ὑδεριῶσιν. ἡπατικοῖς. κεκοπωμένοις. καὶ ταῖς ἐκ τοκετοῦ δυσκαθάρτοις.

Περὶ χαμαιπιτυΐνου. Κεφ. ωνδ΄.

Χαμαιπιτύινος ὁμοίως σκευάζεται, καὶ πρὸς τὰ αὐτὰ ἁρμόζει διουρητικὸς ὤν.

Περὶ μανδραγορείτου. Κεφ. ωνε΄.

Μανδραγορείτης. τοῦ φλοιοῦ τῆς ῥίζης κατατεμὼν, ἔνειρον εἰς λίνον ἢ μιμναῖον. καὶ κάθες εἰς μετρητὴν γλεύκους πρὸς μῆνας γ. εἶτα μετάγγιζε. ἡ μέση πόσις ἡμικοτύλιον. πίνεται δὲ γλυκέως προσδιδομένου εἰς διπλάσιον. φασὶ δὲ κοι

μίξον καὶ καρόου κοτύλην αὐτοῦ χοῒ ἑνὶ μιχθεῖσαν, καὶ ποθεῖσαν. μετὰ ξέστου δὲ οἴνου κύαθος εἷς ποθεὶς ἀναιρεῖ. ἔστι δὲ ἡ σύμμετρος χρῆσις ἀνώδυνος. ῥευμάτων παχυντική. ὀσφραινόμενος δὲ καὶ ἐγκλυζόμενος τὸ αὐτὸ ποιεῖ.

### Περὶ ἐλλεβορίτου. Κεφ. ωνϛ΄.

Ἐλλεβορίτης. εἰς χοῦς γλεύκους τε θαλασσωμένου μέλανος ἐλλεβόρου < ιβ΄ λείου βάλε ἐν ὀθονίῳ καθαρῷ. μετάχει δὲ ὅταν ἀναζέσῃ ἢ εἰς ἀθαλάσσου χοῶν < ιε΄. ἢ < ιδ΄. ὁλοσχερῶς συνθλάσας βάλε. καὶ μεθ' ἡμέρας τινὰς διυλίσας χρῶ. πότιζε δὲ κύαθον α΄. πρὸς κοιλίας λύσιν μεθ' ὕδατος ἐκ βαλανείου. ἐμημεκόσιν. ἀπὸ δείπνου. Ἢ ἐλλεβόρου < η΄ σχίνου οὐγγίας ιβ΄. στάχυος σικελικοῦ οὐγγίας ιγ΄. σεσησμένα ἐν ὀθονίῳ δήσας. κάθες εἰς κοτύλας ιδ΄ κώου οἴνου ἔα ἐπὶ ἡμέρας μ΄. εἶτα ἀπηθήσας πότιζε τρία ἡμικοτύλια.

Ἢ εἰς γλεύκους κεράμιον θαλάττης πελαγίας ἐψημένης ξέστας ιβ ἐλλεβόρου λευκοῦ λίτρας ϛ΄. ἔμβρεχε ἡμέρας μ΄ καὶ ἀπηθήσας χρῶ. ἢ ἐλλεβόρου < ιβ΄. ἀφρονίτρου < δ΄ γλεύκους κοτύλας ιβ βρέχε ἐπὶ ἡμέρας ιε΄. καὶ ἀπηθήσας χρῶ μετὰ μῆνας ἕξ. τοῦτο καὶ βρέφη ἐκτιτρώσκει.

Ἢ καὶ ἐκ θηλοπαιδευομένης σταφυλῆς βάλε εἰς γλεύκους μετρητήν. ἔστι δὲ ὁ μετρητὴς χόες ι΄. καὶ βάλε γύψον εἰς τὸν οἶνον < η. καὶ ἔασον ἡμέρας β΄. καὶ κάθες ἔνδεσμον ἐλλεβόρου μέλανος οὐγγίας λ΄. σχίνου οὐγγίας λ΄. καλάμου οὐγγίας λ΄. ἀρκευθίδων ἡμιχοίνικον καὶ δ΄. σμύρνης δὲ καὶ κρόκου ἀνὰ οὐγγίαν α΄. ἐνειλίσας ὀθονίῳ κρέμασον ἡμέρας μ. εἶτα διύλιζε καὶ δίδου κυάθους γ΄. ἢ β΄ κεράσας. καθαίρει τὰς ἐκ τοκετῶν καὶ ἐκτρωσμῶν. κατασπᾷ δὲ καὶ ἔμβρυα καὶ πρὸς τὰς ὑστερικὰς πνίγας ποιεῖ.

### Περὶ σκαμμωνίτου. Κεφ. ωνζ.

Σκαμμωνίτης. σκαμμωνίας τῆς ῥίζης < ιε. ὀρυττομένης ἐν πυραμητῷ, ἔμβαλε εἰς γλεύκους χοῦν ἕνα λείας δήσας ἐν ὀθονίῳ ἔα ἐπὶ ἡμέρας λ΄. καθαίρει δὲ κοιλίαν ἄγον χολὴν καὶ φλέγμα.

### Περὶ παντὸς λίθου μεταλλικοῦ.

Περὶ καδμείας. Κεφ. ωνη'.

Καδμεία ἀρίστη μέν ἐστιν ἡ κυπρία. καλουμένη δὲ βοτρυῖτις. πυκνή. βαρεῖα μέσως καὶ μᾶλλον ἐπὶ τὸ κουφότερον ῥέπουσα. ἔχουσα τὴν ἐπιφάνειαν βοτρυώδη. χρώματι σποδοειδής. θλασθεῖσα δὲ ἔντεφρος ἔνδοθεν καὶ ἰώδης. ἑχομένη δέ ἐστιν ἡ ἔξωθεν μὲν κυανίζουσα. ἔνδοθεν δὲ λευκοτέρα. διαφύσεις ἔχουσα ἐμφερεῖς ὀνυχίτῃ λίθῳ. τοιαῦται γάρ εἰσιν αἱ ἐκ τῶν παλαιῶν μετάλλων ὀρυσσόμεναι. Ἔστι δὲ καὶ πλακώδης τις λεγομένη ὥσπερ ζώνας ἔχουσα τὰς διαφύσεις. ὅθεν καὶ ζωνῖτιν αὐτὴν ἐκάλεσαν. καλεῖται δέ τις καὶ ὀστρακῖτις ἰσχνή. καὶ ὡς ἐπὶ τὸ πολὺ μέλαινα. γεώδης δὲ ἡ ὀστρακώδει κεχρημένη ἐπιφανείᾳ. φαύλη δὲ ἡ λευκή. χρησιμεύει δὲ πρὸς μὲν τὰ ὀφθαλμικὰ φάρμακα ἡ βοτρυῖτις καὶ ὀνυχῖτις καλουμένη. αἱ δὲ λοιπαὶ εἰς ἐμπλάστρους καὶ ξηρὰ καταπουλοῦν δυνάμεναι. καὶ πρὸς ταῦτα χρησιμεύει ἡ κυπρία. ἡ γὰρ ἐκ μακεδονίας καὶ θράκης καὶ ἱσπανίας κομιζομένη, ἄθετος.

Δύναμιν δὲ ἔχει στυπτικήν. κοιλωμάτων ἀναπληρωματικήν. καθαρτικὴν ῥυπαρῶν. παρεμπλάσσει δὲ καὶ ξηραίνει καὶ ἐσχαροῖ καὶ στέλλει τὰ ἐκ σαρκώματα. καὶ τὰ κακοήθη τῶν ἑλκῶν ἀπουλοῖ. Γεννᾶται δὲ ἡ καδμεία ἐκ τοῦ χαλκοῦ καμινευομένου. προσιζανούσης τῆς λιγνύος τοῖς τοίχοις καὶ τῇ κορυφῇ τῶν καμίνων. εἰσὶ δὲ αὗται σιδηραῖ παμμεγέθεις. ὑπὸ τῶν μεταλλουργῶν καλούμεναι ἀκεστίδες. κατὰ τὴν κορυφὴν συνημμέναι πρὸς τὸ κατέχεσθαι καὶ ἐφελξάνειν τὰ ἀναφερόμενα σώματα ἀπὸ τοῦ χαλκοῦ. ἅπερ δὴ καὶ μᾶλλον ἐφελξάνοντα ἐπισωματοῦται. καὶ ποτὲ μὲν ἓν εἶδος αὐτῆς. ποτὲ δὲ δύο ἢ ἅπαντα ἀποτελεῖται. μεταλλουργεῖται δὲ ἐκ τοῦ προυπερκειμένου Σολέου ὄρους τοῦ λεγομένου πυρίτου λίθου καιομένου. ἐν δὲ τῷ αὐτῷ ὄρει εὑρίσκεται οἱονεὶ διαζώματά τινα χαλκίτεως. μίσυος. σώρεως. μελαντηρίας κυανοῦ. χρυσοκόλλης. χαλκάνθου. διφρυγοῦς. τινὲς δὲ καὶ ἐν μετάλλοις φασὶ λιθίνοις εὑρίσκεσθαι καδμείαν πλανώμενοι ὑπὸ λίθων πολλὴν ἐμφέρειαν ἐχόντων. ὥσπερ καὶ ὁ ἐν τῇ κύμῃ λίθος εὑρισκόμενος. δύναμιν δὲ οὐδεμίαν ἐνδεικνύμενος. ἐπιγινωσκομένων αὐτῶν ἐκ τοῦ κα-

φωτέρους αὐτοὺς εἶναι τῆς καδμείας. καὶ διαμασηθέντας μὴ ἐπιεικεῖς ἐν τῇ γεύσει, ἀγανακτεῖν δὲ τοὺς ὀδόντας ἐν τῇ γεύσει εἰ λίθος εἴη ἐν τῇ διαμασήσει. εἰ δὲ καδμεία εἴη, ἀνέχεσθαι τῆς διαβρώσεως συνοικούσης αὐτῆς. ἔτι διακρίνεται καὶ τῷ τὴν μὲν καδμείαν λειοτριβηθεῖσαν σὺν ὄξει, καὶ ξηρανθεῖσαν ἐν ἡλίῳ ἐκπιέξειν. τὸν δὲ λίθον μὴ παχεῖαν ἴσχειν. καὶ ἐκ τοῦ ἐπιθέντα μὲν τὸν λίθον τετριμμένον πυρὶ ἀναπηδᾶν. καὶ τὸν ἐξ αὐτοῦ καπνὸν ὁμοειδῆ ὑπάρχειν τῷ πυρί. τὴν δὲ καδμείαν, μένειν τε καὶ ἀναδιδόναι αἰθάλην μηλίζουσαν καὶ χαλκοφανῆ. ὡς περὶ ζώνην τινὰ ποικίλην. ἔτι ὁ μὲν λίθος πυρωθεὶς καὶ ψυγεὶς ἀλλοιωθήσεται τῷ χρώματι. καὶ κουφότερος ἔσται. ἡ δὲ καδμεία κατ᾽ οὐδὲν μεταβάλλει εἰ μή τις αὐτὴν ἐφ᾽ ἱκανὰς ἡμέρας ἐγκαύσει. γίνεται δὲ καὶ ἐκ τῶν ἀργυρείων λευκοτέρα καὶ κουφοτέρα οὖσα. κατὰ δὲ τὴν δύναμιν ἥττων. καυστέον δὲ τὴν προειρημένην καδμείαν ἐγκρύπτοντας εἰς ἄνθρακας ἕως οὗ διαφανὴς γένηται. καὶ πομφολυγήσῃ ὡς σιδήρου σκωρία. εἶτα ἐν οἴνῳ σβεννύουσι ἀμιναίῳ. τὴν δὲ εἰς τὰ ψωρικὰ ὄξει. τινὲς δὲ τὴν οὕτω καεῖσαν ἀναλεάναντες, οἴνῳ καταπλῶσι πάλιν ἐν ὠμῇ χύτρᾳ μέχρι κισσηρώδης τὴν ὄψιν γένηται. πάλιν δὲ μετ᾽ οἴνου λειοτριβήσαντες τρίτον, καίουσι μέχρι τελείως εἰς σποδὸν ἀναλυθῇ. μηδὲν ἔχουσα τραχύ. καὶ ἀντὶ σποδίου χρῶνται τῇ τοιαύτῃ. πλύνεται δὲ ἐν θυίᾳ τριβομένη σὺν ὕδατι, ἀποχεομένου τοῦ ὕδατος ἄχρι μηδὲν ἐφιστῆται ῥυπαρὸν καὶ ἀναπλασθεῖσα ἀποτίθεται.

Περὶ πομφόλυγος. Κεφ. ωνθ'.

Πομφόλυξ σποδίου εἰδικῶς διαφέρει. γενικὴν γὰρ οὐκ ἔχει παραλλαγήν. ἡ μὲν γὰρ σποδὸς μελανίζει καὶ βαρυτέρα ἐστὶ κατὰ τὸ πλεῖστον. ἔμπλεως καρφῶν. καὶ τριχῶν καὶ γῆς ὥσπερ ἀπόψημά τι καὶ σύρμα τῶν ἐν τοῖς χαλκουργείοις ἐδάφων καὶ καμίνων οὖσα. ἡ δὲ πομφόλυξ λιπαρὰ ὑπάρχει καὶ λευκή. ἔτι δὲ κουφοτάτη, ὡς δύνασθαι αὐτὴν ποτᾶσθαι τῷ ἀέρι. καὶ ταύτης δὲ δύο ἐστὶν εἴδη. τὸ μὲν, ἀερίζον καὶ ὑπόπιμελον. τὸ δὲ, λεῖον ὂν. καὶ ἄκραν ἔχον κουφότητος. γί-

νεται δὲ ἡ λευκὴ πομφόλυξ ὅταν ἐν τῇ κατεργασίᾳ καὶ τε-
λειώσει τοῦ χαλκοῦ, πυκνότερον οἱ ἐκ τῶν χαλκουργείων
συνεμπάσωσι λελεασμένην καδμείαν. βελτιοῦν αὐτὴν βου-
λόμενοι. ἡ γὰρ ἀπὸ ταύτης ἀναφερομένη αἰθάλη λευκοτά-
τη οὖσα πομφολυγοῦται. οὐ μόνον δὲ ἐκ τῆς τοῦ χαλκοῦ κα-
τεργασίας τε καὶ ὕλης γίνεται πομφόλυξ, ἀλλὰ καὶ ἐκ κα-
δμείας προηγουμένως ἐκφυσωμένης εἰς γένεσιν αὐτῆς. ποιεῖ-
ται δὲ οὕτως ἐν οἴκῳ διστέγῳ κατασκευάζεται κάμινος. καὶ
κατὰ ταύτην πρὸς τὸ ὑπερῷον ἐκτομὴ σύμμετρός τε καὶ
ἐκ τῶν ἄνωθεν μερῶν ἀνεῳγμένη. ὁ δὲ τοῖχος τοῦ οἰκήματος
ᾧ πλησιάζει ἡ κάμινος, τιτρᾶται λεπτῷ τρήματι ἄχρις αὐ-
τῆς τῆς χώνης εἰς παραδοχὴν φυσητῆρος. ἔχει δὲ καὶ θύραν
σύμμετρον πρὸς εἴσοδον καὶ ἔξοδον κατεσκευασμένην ὑπὸ
τοῦ τεχνίτου. συνῆπται δὲ τούτῳ τῷ οἰκήματι ἕτερος οἶκος,
ᾧ αἱ φῦσαι καὶ ὁ φυσητὴρ ἐργάζεται. λοιπὸν ἄνθρακες
ἐντίθενται τῇ καμίνῳ καὶ πυροῦνται. ἔπειτα παρεστὼς ὁ
τεχνίτης ἐμπάσσει λελεπτοκοπημένην τὴν καδμείαν ἐκ
τῶν ὑπὲρ κεφαλῆς τῆς χώνης τόπων. ὁ ὑπὸ χεῖρά τε τὸ
αὐτὸ ποιεῖ ἅμα καὶ ἄνθρακας προσεμβάλλει ἄχρις ἂν ὁ προ-
σεθεὶς τὸ πλῆθος ἀναλώσῃ. ἐκθυμιωμένης οὖν αὐτῆς, τὸ μὲν
λεπτομερὲς καὶ κοῦφον, εἰς τὸν ἄνω ἀναφέρεται οἶκον. καὶ
προσιζάνει τοῖς τοίχοις αὐτοῦ καὶ τῇ ὀροφῇ. τὸ δὲ σῶμα τὸ ποι-
ούμενον ὑπὸ τῶν ἐπιφερομένων, κατ' ἀρχὰς μὲν ταῖς ἐπα-
νισταμέναις τῶν ὑδάτων πομφόλυξιν ἐοικὸς γίνεται. ὕστερον
δὲ πλείονος τῆς αὐξήσεως συμβαινούσης ἐρίων τολύπαις
ἀφομοιοῦνται. τὸ δὲ βαρύτερον εἰς τοὺς ὑπὸ πόδας χωρεῖ
τόπους. καὶ περιχεῖται ποτὲ μὲν τῇ καμίνῳ. ποτὲ δὲ τῷ ἐ-
δάφει τοῦ οἴκου. ὃ καὶ φαυλότερον τοῦ λεπτομεροῦς ἡγητέον,
διὰ τὸ γεῶδες καὶ ἔμπλεων ἀκαθαρσίας εἶναι ἐν τῇ συγκο-
μιδῇ. τινὲς δὲ μόνως οὕτως οἴονται γίνεσθαι τὴν προειρη-
μένην σποδόν. ἀρίστην δὲ ἡγητέον τὴν κυπρίαν ἐν τῷ ὄξει φυ-
ραθεῖσαν. ἀποφορὰν μὲν ἔχουσαν χαλκοῦ. χρόαν δὲ πισσίζου-
σαν ποσῶς. ἔτι δὲ βορβορίζουσαν ἐν τῇ γεύσει. κἂν ἐπ' ἄν-
θρακος διαπύρου ἐπιτεθῇ ἄδολος, ἐπιζεῖ ἀερόχρους γινομέ-
νη. ἐπιμελῶς δὲ προσεκτέον τοῖς προειρημένοις κριτηρίοις.

δολοῦται γὰρ ὑπό τινων ταυροκόλλῃ ἢ πνεύμοσιν ἀρνείοις ἢ θαλασσίοις ἢ κεκαυμένοις ὀλύνθοις καὶ τισὶν ἄλλοις παραπλησίοις. εὐχερὲς δὲ τὸ διαγνῶναι. οὐδὲν γὰρ τῶν προειρημένων ἐν τῇ δοκιμασίᾳ αὖθι τούτων εὑρίσκεται. πλυτέον δὲ κοινῶς πομφόλυγα τὸν τρόπον τοῦτον. ἐνδήσας αὐτὴν ἐν καθαρῷ ὀθονίῳ μέσως ἔχουσαν ἀραιότητος, ἢ ξηρὰν ἢ ὕδατι πεφυραμένην, καθὲς εἰς λεκάνην ὕδωρ ἔχουσαν ὄμβριον. καὶ ἔγκλυζε ὧδε κἀκεῖσε διαφορῶν τὸν ἔνδεσμον. οὕτω γὰρ τὸ μὲν ἰλυῶδες καὶ νόσιμον αὐτοῦ ἀπορρυήσεται. τὸ δὲ σκύβαλον πᾶν ἐν τῷ ὀθονίῳ μενεῖ. εἶτα ἐάσας καταστῆναι, ἀπήθησον τὸ ὕδωρ σὺν τῇ σποδῷ. καὶ πάλιν ἄλλο ἐπιχέας ἀνατάρασσε καὶ ἀπόχει. καὶ ταῦτα ποίει ἀπηθῶν τε καὶ ἀποχέων μέχρις ἂν μηδὲν ἀμμῶδες ὑφιζάνῃ. λοιπὸν δὲ τὸ ὕδωρ ἐξίπωσον. τὴν δὲ σποδὸν ξηράνας ἀπόθεσο. τινὲς δὲ ξηράναντες ἐφ' ὅσον ἐνδέχεται, ταῖς χερσὶ λεαίνουσι μετὰ ὕδατος. καὶ μελιτώδη τὴν σύστασιν ποιήσαντες, διηθοῦσι δι' ὀθονίου περιπετάσαντες αὐτὸ τῷ ὑποδέχεσθαι μέλλοντι ἀγγείῳ. ἢ καὶ ἀποδήσαντες οὐ λίαν ἀποτεταμένον. πρὸς δὲ τὸ ῥαδίως διεξελθεῖν δαψιλὲς ὕδωρ ἐπιχέαντες τῷ ὀθονίῳ, ἀναταράσσουσι τὴν σποδόν. εἶτα τὸ διυλισθὲν καὶ ἐπινηχόμενον αὐτῆς τῷ ἀγγείῳ ἀφρῶδες ὄν, αὐτόθεν μύακι ἀναλαμβάνοντες, ἀποτίθενται εἰς ὀστράκινον καινὸν ἀγγεῖον. τὸ δ' ἐγκαθήμενον πράως διασείσαντες μεταχέουσιν εἰς ἕτερον ἀγγεῖον. ἀπολειπομένου τοῦ ἐν τῷ πυθμένι ἀμμώδους. πάλιν δὲ ἐάσαντες ὑποστῆναι τὰ λιθώδη εἰς ἄλλο ἀγγεῖον καθαρόν, ἀπηθοῦσι. καὶ τοῦτο πολλάκις δρῶσιν ἕως ἂν καθαρὰ καὶ ἀμέτοχος ἄμμου γίνηται ἡ σποδός. ἄλλοι δὲ ὡς ἔστιν ὁλομερῆ εἰς ὕδωρ κατ' ὀλίγον ἐμπάσσουσι τὴν προειρημένην οἰόμενοι ἄμμον μὲν καὶ τὰ λιθώδη τῷ ἰδίῳ βάρει εἰς τὸν πυθμένα τοῦ ἀγγείου καταρρυήσεσθαι. τρίχας δὲ καὶ κάρφη καὶ τὰ ὅμοια ἐπαιωρηθήσεσθαι διὰ τὴν κουφότητα. λοιπὸν δὲ χωρίσαντες αὐτῶν τὴν σποδὸν ἐν μέσῳ οὖσαν καὶ εἰς θυΐαν βαλόντες, πλύνουσιν ὡς καδμείαν. πλύνεται δὲ καὶ οἴνῳ χίῳ τεθαλασσωμένῳ κατὰ τοὺς προειρημένους τρόπους. καὶ γίνεται στυπτικωτέρα τῆς ὕδατι πλυνομένης.

δὲ ἔχει ἡ πομφόλυξ στυπτικήν. ψυκτικήν. ἀναπληρωτικήν. καθαρτικήν. περισταλτικήν. καὶ ποσῶς ξηραντικήν. ἐὰν δὲ ὀπτῆσαι δέῃ τὴν σποδὸν, λεάνας ἐπιμελῶς αὐτὴν καὶ ἀναδεύσας ὕδατι, ποιήσας τροχίσκους, θὲς ἐπ' ὄστρακον καινόν. ἐπιτίθει δὲ ὑπὲρ ἤδη λεπτὴν καὶ κούφην ἀνθρακιάν. καὶ στρέφε τοὺς κυκλίσκους συνεχῶς ἄχρις ἂν πυρροὶ καὶ ξηροὶ γένωνται. γνωστέον δὲ ὅτι ἐκ τοῦ χρυσοῦ καὶ ἀργύρου ἔτι δὲ καὶ μολύβδου γίνεται σποδιά. καὶ ἔστι μετὰ τὴν κυπρίαν ἡ ἐκ τοῦ μολύβδου ἀρίστη.

## Περὶ ἀντισπόδων. κεφ. ωξ'.

Ἐπειδὴ δὲ καὶ τὰ ἀντίσποδα ἱκανῶς εὐχρηστεῖ, ὑστερούσης πολλάκις σποδοῦ, τὰ ἰσοδυναμοῦντα ἀναγκαῖον ἐστὶν ὑποδεῖξαι, ἵνα τε ὑπάρχει καὶ ὃν τρόπον παραληφθείη. λαβὼν τοίνυν μυρσίνης τὰ φύλλα σὺν τοῖς ἄνθεσι καὶ τοῖς μύρτοις ἀώροις ἔτι οὖσιν, ἔμβαλε εἰς ὠμὴν χύτραν. καὶ περιπλάσας τὸ πῶμα κατατετρημένον συνεχέσιν ὀπαῖς, δὸς εἰς καιόμενον κεραμεικόν. ὅταν δὲ ὀπτηθῇ ὁ κέραμος, εἰς ἄλλην χύτραν ὠμὴν μετάραξον αὐτό. καὶ πάλιν κατοπτηθείσης καὶ τῆς δευτέρας, ἐξελὼν πλῦνε καὶ χρῶ. ὡσαύτως δὲ καὶ θαλίαν σκευάζας παραλάμβανε. ἔστω δὲ τῆς ἀγρίας ἐλαίας. εἰ δὲ μὴ, τοῦ ἡμέρου σὺν τοῖς ἄνθεσιν. ἢ δὲ μὴ μῆλα κυδώνια κατατετμημένα καὶ ἐξοστεισμένα. ἢ κηκίδα. ἢ ῥάκη λινᾶ. ἢ ἄωρα συκάμινα λευκὰ προεξηραμένα ἐν ἡλίῳ. ἢ βοτάνην σχοῖνον. ἢ τέρμινθον, ἢ οἰνάνθην. ἢ βάτου τὰ ἁπαλὰ φύλλα, ἢ πύξου κόμας, ἢ τὴν λεγομένην ψευδοκύπειρον σὺν τῷ ἄνθει. τινὲς δὲ κράδας συκῆς προεξηραμένας ἐν ἡλίῳ, ὡσαύτως σκευάζουσιν. ἄλλοι δὲ ταυρείαν κόλλαν. οἱ δὲ, ἔρια οἰσυπηρὰ βραχέα πίσσῃ ἢ μέλιτι δεύσαντες, ὁμοίως σκευάζουσι.

## Περὶ κεκαυμένου χαλκοῦ. κεφ. ωξα'.

Ὁ δὲ κεκαυμένος χαλκὸς ἔστι καλὸς ὁ ἐρυθρὸς καὶ ἐν τῇ τρίψει κινναβαρίζων. ὁ δὲ μέλας πλέον ἢ δεῖ κέκαυται. σκευάζεται δὲ ἐκ τῶν ἥλων τῶν λελυμένων πλοίων. συντιθεμένων ἐν ὠμῇ χύτρᾳ. ὑποπασσομένου θείου μετὰ ἁλῶν ἴσων τούτων καὶ ἐπιπασσομένων ἐναλλάξ. πωμασθεῖσα δὲ ἡ χύτρα καὶ

ὑποχρισθεῖσα πηλῷ κεραμικῷ, δίδοται εἰς κάμινον ἄχρις οὗ τελείως ὀπτηθῇ. οἱ δὲ, ἀντὶ τοῦ θείου καὶ τῶν ἁλῶν στυπτηρίαν παρεμπλάσσουσιν. ἔνιοι δὲ δίχα τοῦ θείου καὶ τῶν ἁλῶν συνθέντες ἐν χύτρᾳ, καίουσιν ἐφ' ἱκανὰς ἡμέρας. οἱ δὲ, τῷ θείῳ μόνῳ χρῶνται. ἀπασβολοῦνται μέντοι. ἄλλοι δὲ χρίοντες τοὺς ἥλους σχιστῇ στυπτηρίᾳ μετὰ θείου καὶ ὄξους, καίουσιν ἐν ὠμῇ χύτρᾳ. ἄλλοι δὲ ἐν χαλκῇ χύτρᾳ ὄξει καταρραίνοντες αὐτοὺς οὕτως ὀπτῶσι. μετὰ δὲ τὸ καῆναι πάλιν τὸ αὐτὸ ποιοῦσιν ἕως τρὶς, ἔπειτα ἀποτίθενται. πρωτεύει δὲ ὁ ἐν Μέμφιδι καιόμενος. ἔπειτα ὁ ἐν Κύπρῳ. δύναται δὲ στύφειν. ξηραίνειν. λεπτύνειν. καταστέλλειν. ἐπισπᾶσθαι. ἀνακαθαίρειν ἕλκη διαπουλοῦν. σμήχειν τὰ ἐν ὀφθαλμοῖς. τήκειν τὰ ὑπερσαρκοῦντα. νομάς. ἱστᾶν. κινεῖ δὲ καὶ ἐμέτους μετὰ ὑδρομέλιτος ποθεὶς ἢ ἐκλειχθεὶς σὺν μέλιτι. ἢ διαχριόμενος. πλύνεται δὲ ὡς ἡ καδμεία τετράκις τῆς ἡμέρας ἀλλασσομένου τοῦ ὕδατος ἄχρι μηδεμία ἐφίστηται λάμπη. καὶ ἡ σκωρία δὲ αὐτοῦ ὡσαύτως πλυνομένη, τὴν αὐτὴν ἔχει δύναμιν. ἀσθενεστέραν μέντοι.

## Περὶ ἄνθους χαλκοῦ. Κεφ. ωξβ'.

Χαλκοῦ δὲ ἄνθος ὅ τινες τῶν παλαιῶν ἥλων ψῆγμα ἐκάλεσαν, ἄριστόν ἐστι τὸ εὔθρυπτον καὶ κατὰ τὸ πυρρὸν ἐν τῷ λεαίνεσθαι. κεγχροειδές τε τῷ ῥυθμῷ καὶ βραχὺ καὶ βαρὺ καὶ μέσως στίλβον. ἔτι δὲ ῥινισμάτων χαλκοῦ ἀμέτοχον οἷς δολοῦται. ἐλέγχεται δὲ πλατυνομένων αὐτῶν ταῖς τῶν ὀδόντων ἐπερείσεσι. γίνεται δὲ οὕτως ὅταν ἐν μεταλλικαῖς χώναις τακεὶς ὁ χαλκὸς εἰς τὰς δεξαμενὰς καταρρυῇ διὰ τῶν ἠθμῶν τῶν διηκόντων σωλήνων. διακαθαίροντες τὴν ἀκαθαρσίαν οἱ πρὸς τούτοις ὄντες, ὕδωρ ἐπιχέουσιν ἀκραιφνέστατον αὐτῷ, ψῦξαι προαιρούμενοι. ὑπὸ οὖν τῆς αἰφνιδίου πυκνώσεως καὶ συναγωγῆς, ὡσπερεὶ ἐκπτύεται καὶ ἐπανθεῖ τὸ προειρημένον. στύφει δὲ καὶ τοῦτο καὶ καταστέλλει τὰς ὑπεροχάς. καὶ σμήχει τὰ ταῖς κόραις ἐπισκοτοῦντα δάκνον ἱκανῶς. ἔστι δὲ καὶ παχέων ἀγωγὸν τετρωβόλου πλῆθος διδόμενον. ἐκτήκει δὲ καὶ τὰ ἐν μυκτῆρσι σαρκώματα.

καὶ δακτυλίων ἐξανθήματα. σὺν οἴνῳ στέλλει. καὶ πρὸς δυσκώφους χρονίους τὸ λευκὸν ἐμφυσᾶται διὰ σίφωνος λεῖον. στέλλει δὲ καὶ κονίδας καὶ παρίσθμια. λεῖον σὺν μέλιτι προσαπτόμενον.

Περὶ λεπίδος. Κεφ. ωξγ.

Λεπὶς δὲ ἡ μὲν ἐκ τῶν κυπρίων μετάλλων καλουμένη δὲ ἡλῖτις, καλή. φαύλη δὲ ἡ ἐκ τοῦ χαλκοῦ. λευκοῦ λεπτὴ καὶ ἀσθενὴς ὑπάρχουσα. ἣν ἀποδοκιμάζομεν. ἐκλέγοντες τὴν παχεῖαν καὶ ἔγκιρρον. καὶ ὄξους ἐπιρραινομένου ἰουμένην.

Δύναμιν δὲ ἔχει στατικήν. λεπτυντικήν. νομῶν ἐφεκτικήν. σηπτικήν. ἀπουλωτικήν. πινομένη δὲ μετὰ μελικράτου, ὕδωρ ἄγει. τινὲς δὲ φυρῶντες αὐτὴν μετὰ ἀλεύρου, ἐν καταποτίῳ διδόασι. μίγνυται δὲ καὶ ταῖς ὀφθαλμικαῖς δυνάμεσι. ξηραίνει γὰρ τὰ βλέφαρα τὰ τραχέα ἀποτήκουσα. καὶ τὰ ῥεύματα. πλύνεται δὲ οὕτως καθαρᾶς τῆς ξηρᾶς λεπίδος ἡμιμναῖον, βάλε εἰς θυΐαν μεθ᾽ ὕδατος διαυγοῦς, καὶ συνταράξας τῇ χειρὶ ἐπιμελῶς ἄχρις οὗ καταστῇ ἡ λεπίς, ἀφαίρει τὰ ὑφεστῶτα. ἀποχέας τε τὸ ὕδωρ, ἐπίχει ὀμβρίου ὕδατος κοτύλην α΄. πλατείᾳ τε τῇ χειρὶ τρίβε εὐτόνως ἐν τῇ θυΐᾳ. οἱονεὶ ἀποψύχων. ἐπὰν δὲ ἄρξηται ἀνιέναι τινὰ γλισχρότητα κατὰ μικρὸν, ὕδωρ προσεπίχει ἄχρι κοτυλῶν ς΄ τρίβων εὐτόνως. ἀναλαβών τε τὴν λεπίδα τῇ χειρὶ ὡς πρὸς τὸ πλευρὸν τῆς θυΐας, τρίβε εὐτόνως. καὶ ἐξιπώσας ἀνελοῦ τὸ ἀπορρέον εἰς πυξίδα ἐρυθροῦ χαλκοῦ. τοῦτο γάρ ἐστι τὸ ὡς πρὸς ἄνθος τῆς λεπίδος καὶ εὔτονον τῇ δυνάμει. καὶ εὔτονον εἰς τὰ ὀφθαλμικά. τὸ δὲ λοιπὸν, ἄτοπον καὶ τὸ καταληφθὲν δὲ ὁμοίως πλύνων, ἀναιροῦ μέχρις ἂν μηδεμίαν γλισχρότητα ἀποκρίνει. τὸ δὲ λοιπὸν σκεπάσαντα δεῖ ὀθονίῳ ἐᾶσαι ἀκίνητον ἐπὶ δύο ἡμέρας. εἶτα ἀποχέαντας τὸ ἐφεστικὸς ὕδωρ καὶ ξηράναντας ἀποτίθεσθαι εἰς πυξίδα. ἔνιοι δὲ καὶ ταύτην πλύναντες, ὡς τὴν καδμείαν ἀποτίθενται.

Περὶ λεπίδος στομώματος. Κεφ. ωξδ.

Λεπίδος δὲ στομώματος δύναμις ἐστὶν ἡ αὐτὴ τῇ τοῦ χαλκοῦ

λεπίδι. καὶ πλύσις καὶ ἀπόθεσις ὁμοία. ἐν μέντοι τῷ τὴν κοιλίαν καθαίρειν. λείπεται τῆς τοῦ χαλκοῦ.

Περὶ ἰοῦ ξυστοῦ. Κεφ. ωξε.

Ἰὸν δὲ ξυστὸν οὕτω σκευαστέον. εἰς πιθάκνην ἢ ἄλλο ὅμοιον ἀγγεῖον ἐγχέας δριμύτατον ὄξος, ἐπικατάστρεψον χαλκοῦν ἀγγεῖον. καλὸν μὲν εἰ καμαρῶδες. εἰ δὲ μή γε, ἰσόπεδον. ἔστω δ' ἐσμηγμένον καὶ διαπνοὴν μηδεμίαν ἔχον. διὰ δὲ ἡμερῶν δέκα ἀναιρούμενος τὸ πῶμα. ἀπόξυε τὸν ἐπιτρέχοντα ἰόν. ἢ λεπίδα ἀπὸ τοῦ αὐτοῦ ποιήσας χαλκοῦ, ἐγκρέμασον εἰς τὸ ἀγγεῖον ἵνα μὴ ψαύσῃ τοῦ ὄξους. καὶ διὰ τῶν ἴσων ἡμερῶν ἀπόξυε. ἢ εἰς τὰ στέμφυλα μὴ πρόσφατα ὄντα ὀξίζοντα ἐγκρύψας μάζαν ἢ λεπίδα μίαν ἢ καὶ πλείονας, ὡσαύτως ἀνάστρεφε. ἔστι δὲ καὶ ἐκ ῥινισμάτων ποιῆσαι ἢ λεπίδων, αἷς περιεχόμενα τὰ χρυσᾶ πέταλα ἐλαύνεται. ἐάν τις αὐτὰ ἐπιρραίνων ὄξει, ἀνακινῇ τρεῖς ἢ τετράκις ἄχρις ἂν παντελῶς ἰωθῇ. γίνεσθαι δέ φασι ἕτερον τὸν ἰὸν καὶ ἐν τοῖς κυπριακοῖς μετάλλοις. τῶν μὲν, λίθοις τισὶν ἐπανθοῦντα ἐχόντων τὸν χαλκόν. τῶν δὲ ἔκ τινος σπηλαίου στάζοντα ἐν τοῖς ὑπὸ κύνα καύμασι. καὶ τὸν μὲν ὀλίγον τε καὶ κάλλιστον εἶναι. τὸν δὲ ἐκ τοῦ σπηλαίου, δαψιλῆ μὲν ἐπιρρεῖν καὶ εὔχρουν. φαῦλον δὲ ὑπάρχειν διὰ τὸ πολλοῖς ἀναμεμίχθαι λιθώδεσι. δολοῦται δὲ καὶ ἄλλοις πολλοῖς μισγόμενος. μᾶλλον δὲ τούτοις. τινὲς μὲν γὰρ κισσήρει. οἱ δὲ, μαρμάρῳ. ἄλλοι δὲ χαλκάνθῳ. κυκῶσιν αὐτόν. καταληψόμεθα δὲ τὴν μὲν κίσσηριν καὶ τὸ μάρμαρον, διὰ τοῦ νωτίσαι καὶ τὸν ἀντίχειρα τῆς εὐωνύμου χειρὸς καὶ τῷ ἑτέρῳ προστρίβειν τι μέρος ἰοῦ. συμβαίνει γὰρ τὸ μὲν, αὐτοῦ διαχεῖσθαι. τὰ δ' ἀπὸ τῆς κισσήρεως καὶ μαρμάρου μέρη ἀδιάχυτα μένειν. καὶ τέλος ἀπολευκαίνεσθαι τῇ ἐπὶ πλέον παρατρίψει καὶ τῇ τοῦ ὑγροῦ παραπλοκῇ. οὐ μὴν, ἀλλὰ διὰ τῆς καὶ τῶν ὀδόντων ἐπερείσεως. λεῖον γὰρ ὑποπίπτει καὶ οὐ τραχὺ τὸ ἀμιγές. τὸ δὲ χάλκανθον ἀπελέγχεται τῷ πυρί. εἰ γάρ τις ἐμπλάσας τὸν οὕτω δεδολωμένον ἰὸν ἐπὶ λεπίδα ἢ ὄστρακον, καὶ τὸ ἕτερον τούτων ἐπιθήσει ἐν θερμῇ τέφρᾳ ἢ ἐπὶ ἄνθραξι, μεταβάλλεται,

καὶ ἐρυθραίνεται τὸ χαλκανθῶδες, διὰ τὸ φύσει καιόμενον αὐτὸ τοιαύτην ἔχειν χροιάν.

### Περὶ ἰοῦ σκώληκος. Κεφ. ωξϛ΄.

Τοῦ δὲ λεγομένου σκώληκος ἰοῦ, διττὸν εἶδος ὑπάρχει. ὁ μὲν γὰρ ὀρυκτός ἐστιν. ὁ δέ, σκευάζεται οὕτως. εἰς θυΐαν κυπρίου χαλκοῦ ἔχουσαν δὲ καὶ δοίδυκα ἀπὸ τῆς αὐτῆς πεποιημένον ὕλης, ἐγχέας ὄξους λευκοῦ καὶ δριμέος κοτύλης ἥμισυ, τρῖβε ἕως οὗ γλοιωθῇ. εἶτα ἔμβαλλε στυπτηρίας στρογγύλης δραχ. δ΄. καὶ ἁλὸς ὀρυκτοῦ διαφανοῦς ἢ θαλασσίου ὡς ὅτι λευκοτάτου καὶ στερεοῦ. εἰ δὲ μή γε νίτρου τὸ ἴσον. εἶτα λέαινε ἐν ἡλίῳ ἐν τοῖς ὑπὸ κύνα καύμασιν. ἕως τῇ μὲν χροιᾷ ἰώδης. τῇ δὲ συστάσει γλοιώδης γένηται. καὶ οὕτως ἀναπλάσας σκώληκας τοῖς ῥοδιακοῖς ὁμοίους, ἀπόθεσο. ἐνεργὴς δὲ καὶ εὔχρους γίνεται ἄγαν, ἐὰν ὄξους μὲν λάβῃ μέρος ἕν. οὔρου δὲ παλαιοῦ μέρη δύο. τὰ δ᾽ ἄλλα ὡς προείρηται. τινὲς δὲ τὸν ἀποτετευγμένον ἐν τῷ ξυστῷ κόμμει μίξαντες ἀναπλάσσουσιν. ὃν παραιτητέον ὡς φαῦλον. ἔστι δέ τις καὶ ὑπὸ τῶν χρυσοχόων γινόμενος ἰὸς διὰ θυΐας καὶ δοίδυκος κυπρίου χαλκοῦ. ἔτι δὲ οὔρου παιδίου. ᾧ τὸ χρυσίον κολλῶσιν. ἀναλογοῦσι δὲ κοινῶς οἱ προειρημένοι ἰοὶ κεκαυμένῳ χαλκῷ. μᾶλλον δ᾽ ἐρρωμένοι περὶ τὴν ἐνέργειαν. ἰστέον δὲ ὅτι προέχει μὲν αὐτῶν ὁ ὀρυκτὸς σκώληξ. ἑπομένως δέ ἐστιν ὁ ξυστός. εἶτα ὁ σκευαστός. δηκτικώτερος μέντοι καὶ μᾶλλον στύφων οὗτος ὑπάρχει. ὁ δὲ τῶν χρυσοχόων ἀνάλογος τῷ ξυστῷ. Δύναται δὲ πᾶς ἰὸς στύφειν. θερμαίνειν. ἀποσμᾶν τὰς ἐν ὀφθαλμοῖς οὐλὰς καὶ λεπτύνειν. δάκρυον ἄγειν. νομὰς ἴσχειν. τραύματα ἀφλέγμαντα τηρεῖν. ἀπουλοῦν ἕλκη σὺν ἐλαίῳ καὶ κηρῷ. σὺν μέλιτι δὲ ἑψηθέντες, τύλους καὶ τὰ ῥυπαρὰ τῶν ἑλκῶν ἀνακαθαίρουσιν. ἀμμωνιακῷ δὲ ἀναληφθέντες εἰς κολλύρια, σύριγγας καὶ τύλους ἐκτήκουσι. χρήσιμοι δὲ καὶ πρὸς ἐπουλίδας καὶ τὰς τῶν οὔλων ὑπεροχάς. ἱκανῶς δὲ καὶ βλέφαρα λεπτύνουσι σὺν μέλιτι ἐγχριόμενοι. δεῖ δὲ πυριᾶν μετὰ τὴν ἔγχρισιν σπόγγῳ ὑπὸ ὕδατος θερμοῦ. ἀναληφθέντες δὲ ῥητίνῃ τερεβινθίνῃ σὺν χαλκῷ ἢ νίτρῳ, λέπρας ὑπάγου

σι. καυστέον δὲ ὃν ἂν ἐθέλῃς ἰὸν οὕτω. θλάσας αὐτὸν εἰς ὁλοι-
σχερέστατα μέρη, καὶ τηγάνῳ κεραμέῳ ἐπιθεὶς, ἀπερείσας ἐπ᾽
ἀνθράκων διαπύρων, κίνει ἕως ἂν μεταβάλλῃ καὶ ὑποσπο-
δίσῃ τῇ χρόᾳ. λοιπὸν δὲ ψύξας, ἀποτίθεσο καὶ χρῶ. τινὲς
δὲ ἐν ὠμῇ χύτρᾳ καίουσιν αὐτὸν ὡς προείρηται. οὐκ εἰς τὸ αὐ-
τὸ δὲ πάντοτε καιόμενος μεταβάλλει χρῶμα.

## Περὶ ἰοῦ σιδήρου. Κεφ. ωξζ΄.

Ἰὸς δὲ σιδήρου στύφει. ῥοῦν τε γυναικεῖον προστεθεὶς ἴσχει. πινό-
μενός τε ἀσυλληψίαν ποιεῖ. ἐπιχριόμενος δὲ σὺν ὄξει ἐρυσι-
πέλατα καὶ ἐξανθήματα ἰᾶται. πρός τε παρωνυχίας καὶ
πτερύγια καὶ τραχέα βλέφαρα εὔχρηστος. καὶ κονδυλώμα-
τα καὶ οὖλα κρατύνει. ποδαγρικούς τε ὠφελεῖ ἐπιχριόμε-
νος. καὶ ἀλωπεκίας δασύνει. σίδηρος δὲ πεπυρωμένος ἐν σβε-
θεὶς ὕδατι ἢ οἴνῳ καὶ πινόμενος, ἁρμόζει κοιλιακοῖς. δυσεν-
τερικοῖς. σπληνικοῖς. χολεριῶσι. καὶ στομάχῳ ἀναλελυμένῳ.

## Περὶ σκωρίας σιδήρου. Κεφ. ωξη΄.

Ἡ δὲ σκωρία τοῦ σιδήρου δύναται ὅσα καὶ ὁ ἰὸς τοῦ σιδήρου. ἐπ᾽ ἔ-
λαττον δέ. βοηθεῖ δὲ ἀκονίτῳ μετ᾽ ὀξυμέλιτος ποθεῖσα.

## Περὶ μολίβδου πεπλυμένου. Κεφ. ωξθ΄.

Σκευάζεται καὶ ὁ πεπλυμένος μόλιβδος τοῦτον τὸν τρόπον.
βαλὼν εἰς μολιβδίνην θυΐαν ὕδωρ, τρίβε μολιβδίνῳ δοί-
δυκι. ἕως ἂν μελανθῇ τὸ ὕδωρ καὶ γένηται ὑλῶδες. ἢ χυλώ-
δες ἢ πηλῶδες. εἶτα διήθει αὐτὸ δι᾽ ὀθονίου, προσεπιχέων τε
ὕδωρ ἵνα πᾶν τὸ διαλυθὲν ὑλισθῇ. καὶ ποίει τὸ αὐτὸ πάλιν
ἄχρις ἄν σοι αὐτάρκως ἔχειν δόξῃ. εἶτα ἐάσας καταστῆναι τὸ
πεπλυμένον, ἀποχέας τό τε ὕδωρ καὶ ἄλλο ἐπιχέας, πλῦ-
νε ὡς τὴν καδμείαν, ἄχρις ἂν μηκέτι ἐφίστηταί τις μελανία.
ἀναπλάσας δὲ τροχίσκους ἀποτίθεσο. οἱ δὲ, καθαρὸν μόλι-
βδον ῥινήσαντες, τρίβουσιν ἐν λιθίνῃ θυΐᾳ δοίδυκι λιθίνῳ. ἢ
ταῖς χερσὶ μεθ᾽ ὕδατος ὑπὸ χεῖρα κατ᾽ ὀλίγον ἐπιχέοντες
τὸ μελαινόμενον. ὅπερ ἐάσαντες ὑποστῆναι καὶ ἀποχέαν-
τες, ἀναπλάσσουσιν εὐθέως. τὸ γὰρ ἐφ᾽ ἱκανὸν τριβόμενον,

γίνεται ψιμμιθίῳ ὅμοιον. ἔνιοι δὲ προσεμβάλλουσι τοῖς ῥινίσμασιν ὀλίγην μολίβδαιναν. φάσκοντες βελτίονα εἶναι τὸν οὕτω πλυνόμενον μόλιβδον. Δύναται δὲ ψύχειν. στύφειν. παρεμπλάττειν. μαλάττειν. πληροῦν τὰ κοιλώματα. στέλλειν τὰ ἐν τοῖς ὀφθαλμοῖς ῥεύματα. καὶ τὰ ὑπερσαρκοῦντα τῶν ἑλκῶν. ἔστι δὲ καὶ ἴσχαιμος. καὶ πρὸς τὰ ἐν τῷ δακτύλῳ ἕλκη. κονδυλώματα. αἱμορροΐδας μετὰ ῥοδίνου. καὶ τὰ δυσκατούλωτα. καὶ καθόλου ποιεῖ ὅσα καὶ ἡ σποδὸς, δίχα τοῦ ἐσχαροῦν. ὁ δὲ ἀκραῖος μόλιβδος παρατριβόμενος βοηθεῖ τῇ τοῦ θαλασσίου σκορπίου καὶ δράκοντος πληγῇ.

## Περὶ μολίβδου κεκαυμένου. ΚΕΦ. ωο'.

Καίεται δὲ ὁ μόλιβδος οὕτω. λαβὼν μολίβδου ἐλάσματα ὡς ὅτι λεπτότατα, ἐπίθες εἰς καινὴν λοπάδα. καὶ ἐπιπάσσας θεῖον, πάλιν ἕτερα ἐπίθες πέταλα. καὶ θεῖον ἐπίπασσε. καὶ πάλιν ἕτερα καὶ τοῦτο ποίει ἄχρις ἂν πληρώσῃς τὴν λοπάδα. εἶτα ὑπόκαιε. ἀναφθέντος δὲ τοῦ μολίβδου, κίνει σιδήρῳ ἄχρις ἂν ἀποτεφρωθῇ τελέως καὶ μηδὲν ἔχῃ μολιβδῶδες. καὶ ἀναιροῦ σκεπάσας τοὺς ῥώθωνας. βλαβερὰ γὰρ ἡ ἀποφορά. ἢ ῥινίσματα μολίβδου βαλὼν μετὰ θείου εἰς λοπάδα οὕτω καῖε. οἱ δὲ, εἰς χύτραν ὠμὴν βαλόντες τὰ πέταλα ὡς εἴρηται, καμίνῳ ἐντιθέασιν. ἢ ἐπ᾽ ἐσχάρας περιπλάσαντες τὸ πῶμα καὶ ὀλίγην δόντες ἀναπνοὴν, καίουσιν. οἱ δὲ, ψιμμίθιον παρεμπάσσουσιν ἀντὶ τοῦ θείου ἢ κριθάς. οἱ δὲ, ἀκραίοις τὰς λεπίδας ἐπιθέντες ὄξει, πυρὶ χρῶνται. καὶ κινοῦσιν ἐπιτεταμένως σιδηρείῳ ἄχρις ἂν ἐκτεφρωθῇ. ἔστι γὰρ δυσχερὴς ἡ τοιαύτη καῦσις. καὶ ἐπιπλέον γὰρ καεὶς, οὕτω λιθαργύρου λαμβάνει τὸ χρῶμα. ἡ μὲν μέντοι ἀρέσκει ἡ πρώτη καῦσις. δεῖ δὲ πλύνειν αὐτὸν ὡς τὴν καδμείαν καὶ ἀποτίθεσθαι. Δύναμιν δὲ ἔχει τὴν αὐτὴν καὶ ὁ πεπλυμένος μόλιβδος. εὐτονωτέραν δὲ μᾶλλον.

## Περὶ σκωρίας μολίβδου. ΚΕΦ. ωοα'.

Σκωρία μολίβδου, ἀρίστη ἐστὶν ἡ ψιμμιθιοφανής. πυκνὴ καὶ δύθραυστος. μηδὲν ἔχουσα μολιβδῶδες. μηλοειδὴς δὲ τῷ

χρώματι καὶ ὑελίζουσα. δύναται δὲ τὰ αὐτὰ τῷ κεκαυμένῳ μολίβδῳ. στύφουσα μᾶλλον. πλύνεται δὲ ἐν θυΐᾳ ἐπιχεομένου ὕδατος. καὶ ἀποχεομένου τοῦ ἐφισταμένου μηλίνου χρώματος. πολλάκις τε τοῦτο γίνεται ἄχρις ἂν ἀναλωθῇ ἡ σκωρία. τό τε λοιπὸν ἐάσαντες ὑποστῆναι αὐτὴν, ἀποχέομεν τὸ ὕδωρ. καὶ οὕτως ἀναπλάσσομεν.

### Περὶ τοῦ μολιβδοειδοῦς λίθου. ΚΕΦ. ωοβʹ.

Κ αὶ ὁ μολιβδοειδὴς δὲ λίθος, ἀνάλογον ἔχει τὴν δύναμιν τῇ σκωρίᾳ. πλύνεται δὲ ὁμοίως.

### Περὶ Στίμμεως. ΚΕΦ. ωογʹ.

Σ τίμμι δὲ κράτιστόν ἐστι τὸ στιλπνότατον, καὶ λαμπυρίζον. ἐν τῇ θραύσει πλακῶδες. μηδὲν ἔχων γεῶδες ἢ ῥυπαρόν. εὐχερῶς τε θλώμενον. τοῦτο οἱ μὲν στίβι. οἱ δὲ, πλατυόφθαλμον. οἱ δὲ, λάρβασον ἐκάλεσαν. Δύναμιν δὲ ἔχει ἐμπλαστικήν. στυπτικήν. ψυκτικήν. σταλτικὴν τῶν ὑπερσαρκούντων. ἀπουλωτικὴν ἑλκῶν καὶ καθαρτικὴν ῥυπαρῶν καὶ τῶν ἐν ὀφθαλμοῖς ἑλκῶν. ἐπέχει δὲ καὶ τὰς ἐκ μήνιγγος αἱμορῥαγίας. καὶ καθόλου δὲ ἐμφερής ἐστιν ἡ δύναμις αὐτοῦ τῷ κεκαυμένῳ μολίβδῳ. ἰδίως δὲ τὰ κατακαύματα οὐκ ἐᾷ ἐσχαροῦσθαι σὺν στέατι καταχρισθὲν νεαρῷ. καὶ ἀπουλοῖ τὰ ἐσχαροῦντα κηροῦ καὶ ὀλίγου ψιμμιθίου μιχθέντων. ὀπτᾶται δὲ στέατι περιπλασθὲν καὶ ἐγκρυβὲν εἰς ἄνθρακας, ἄχρις ἂν ἀνθρακωθῇ τὸ στέαρ. ἐξαιρεθὲν δὲ σβέννυται γάλακτι ἀρρενοτόκου γυναικὸς ἢ οἴνῳ παλαιῷ. καίεται δὲ ἐπ᾽ ἀνθράκων ἐπιτεθὲν καὶ ἐμφυσηθὲν ἄχρι πυρώσεως. ἐὰν γὰρ ἐπιπλέον καῇ μολιβδοῦται. πλύνεται δὲ ὡς ἡ καδμεία καὶ ὁ χαλκός. ἔνιοι δὲ ὁμοίως τῇ τοῦ μολίβδου πλύνουσι σκωρίᾳ.

### Περὶ Μολιβδαίνης. ΚΕΦ. ωοδʹ.

Μ ολίβδαινα δὲ ἀρίστη ἐστὶν ἡ λιθαργυροφανής. ξανθή. ὑποστίλβουσα καὶ κιῤῥὰ ἐν τῷ λειοτριβεῖσθαι. ἑψηθεῖσά τε ἐλαίῳ, ἡπατοειδὴς τῷ χρώματι γίνεται. ἡ δὲ ἀερίζουσα ἢ μολιβδόχρους φαύλη. γίνεται δὲ ἐξ ἀργύρου καὶ χρυσοῦ. ἔστι δέ τις καὶ ὀρυκτὴ κατὰ σεβάστειαν καὶ κώρυκον εὑρισκο-

μένη. καὶ ταύτης ἐστὶ βελτίων ἡ μὴ σκωροειδὴς μηδὲ λιθώδης. ξανθὴ δὲ καὶ στίλβουσα. Δύναμιν δὲ ἔχει ὁμοίαν λιθαργύρῳ καὶ σκωρίᾳ μολίβδου. πλῦσιν δὲ καὶ καῦσιν τὴν αὐτήν. μίγνυται δὲ ἐπὶ τὸ λειότερον αὐτῇ. καὶ ταῖς λιπαραῖς καὶ ἀνεπιδέτοις ἐμπλάστροις χρησίμως. οὖσα σαρκωτικὴ καὶ ἀπουλωτική. ταῖς μέντοι κολλητικαῖς καὶ σμηκτικαῖς οὐχ ἁρμόζει δυνάμεσιν.

**Περὶ σκωρίας ἀργύρου. Κεφ. ωοε΄.**

Ἡ δὲ τοῦ ἀργύρου σκωρία καλεῖται ἔγκλυσμα. ἢ ἔγκαυμα. τὴν αὐτὴν δ' ἔχει δύναμιν τῇ μολυβδαίνῃ. ὅθεν ἐμπλάστροις φαιαῖς μίγνυται καὶ ἀπουλωτικαῖς. στυπτικὴ οὖσα καὶ ἐπισπαστική.

**Περὶ λιθαργύρου. Κεφ. ωος΄.**

Λιθάργυρος. ἡ μέν τις ἐκ τῆς μολυβδίτιδος καλουμένης ἄμμου γεννᾶται. χωνευομένης ἄχρι τελείας ἐκπυρώσεως. ἡ δ' ἐξ ἀργύρου. ἡ δ' ἐκ μολίβδου. διαφέρει δὲ ἡ ἀττική. δευτερεύει δ' ἡ ἱσπανή. μεθ' ἃς ἡ ἐν δικαιαρχίᾳ. καὶ ἐν καμπανίᾳ. καὶ σικελίᾳ. πλείστη γὰρ ἐν τοῖς τοιούτοις τόποις γεννᾶται. μολιβδίνων ἐλασμάτων ἐκφλογουμένων. καλεῖται δ' ἡ μὲν ξανθὴ καὶ στίλβουσα χρυσῖτις. ἥτις ἐστὶ κρείττων. ἡ δ' ἐν σικελίᾳ ἀργυρῖτις. ἡ δ' ἐκ τοῦ ἀργύρου καλαυρῖτις. Δύναμιν δὲ ἔχει στυπτικὴν μαλακτικήν. κοιλωμάτων πληρωτικήν. σταλτικὴν τῶν ἐκσαρκούντων. καὶ ἀπουλωτικήν. ψυκτικήν. παρεμπλαστικήν. καύσεις δὲ αὐτὴν οὕτω. κατακόψας εἰς καρύων μεγέθη, καὶ ἐπιθεὶς ἐπ' ἄνθρακας, ἐκριπίζε ἄχρι πυρώσεως, καὶ περιμάξας τὴν περικειμένην ἀκαθαρσίαν, ἀποτίθεσο. ἔνιοι δὲ ὄξει ἢ οἴνῳ σβέσαντες αὐτὴν ἐπὶ τρεῖς, πάλιν καίουσι. καὶ ταῦτα ποιήσαντες ἀποτίθενται. πλύνεται δὲ ὡς ἡ καδμεία. λευκαίνεται δὲ οὕτω. λαβὼν τῆς ἀργυρίτιδος λεγομένης, εἰ δὲ μή γε τῆς ἄλλης κατάθραυσον εἰς μεγέθη κυάμων ὅσον χοίνικα ἀττικήν. βαλὼν τε εἰς καινὴν χύτραν, ἐπίχει ὕδωρ προσεμβάλλων πυρῶν λευκῶν χοίνικα. καὶ ἰδίᾳ ἐν ὀθονίῳ καθαρῷ ἀραιῷ κριθῶν δράκα δήσας ἀπὸ τοῦ ὠτὸς τῆς χύτρας κρέμασον. ἕψε δὲ ἕως ἂν ῥαγῶσιν αἱ κρι-

θαι. εἶτα κατατρίψας πάντα εἰς κρατῆρα πλατύστομον
καινόν, τοὺς μὲν πυροὺς ῥίψον χωρίσας. τὴν δὲ λιθάργυρον
πλῦνον ἐπιχέας ὕδωρ. βιαίως ταῖς χερσὶ προστρίβων
ἅμα. εἶτα ἀνελόμενός τε αὐτὴν καὶ ξηράνας, τρίβε ἐν θυΐᾳ
θηβαϊκῇ. ἐπιχέων θερμὸν ὕδωρ ἕως ἂν διαλυθῇ. καὶ ἀπηθή-
σας τὸ ὕδωρ πάλιν τρίβε δι' ὅλης τῆς ἡμέρας. εἰς ἑσπέραν
δὲ ἐπιχέας ὕδωρ θερμὸν ἔασον. καὶ πρωῒ ἀπηθήσας ἄλλο ἐ-
πίχει καὶ ἀπήθει τῆς ἡμέρας τρίς. τοῦτο ποίει ἐφ' ἡμέρας
ζ΄. εἶτα μίξας τῇ μνᾷ τῆς λιθαργύρου ἁλῶν ὀρυκτῶν οὐγ ε΄
θερμόν τε παραχέων, λέαινε τρὶς τῆς ἡμέρας ἀπηθῶν
καὶ μιγνὺς ὕδωρ. ὅταν δὲ λευκὴ γένηται θερμὸν ἐπιχέων,
τὸ αὐτὸ ποίει ἄχρις ἂν μηδεμιᾶς ἔμφασιν ἁλυκότητος ἔχῃ.
καὶ ξηράνας ὀξυτάτῳ ἡλίῳ, προεκβάλλων τὴν ἰκμάδα ἀ-
ποτίθεσο. εἰ δὲ μή, μνᾶν μίαν λαβὼν τῆς ἀργυρίτιδος, λέα-
νον ἐπιμελῶς. καὶ τρίψας μίξον ἁλῶν τριπλάσιον, λείων
ὀρυκτῶν. καὶ βάλλε εἰς καινὴν χύτραν ἐπιχέας τε ὕδωρ ὥσ-
τε ὑποβρέχειν αὐτό, κίνει ἑκάστης ἡμέρας πρωῒ καὶ δείλης
προσεπιχέων ὕδωρ, μηδὲν τοῦ πρώτου ἀποχέων. καὶ ποίει τοῦ-
το ἐφ' ἡμέρας λ΄. μὴ κινουμένου γὰρ ἀποστρακοῦται. μετὰ
δὲ ταῦτα ἀποχέας πραέως τὴν ἅλμην ἐν θηβαϊκῇ θυΐᾳ, τὴν
λιθάργυρον λέαινε. καὶ βαλὼν αὐτὴν εἰς κεραμεοῦν ἀγγεῖον,
ἐπιχέας τε ὕδωρ, κίνει ταῖς χερσὶν ἐπιμελῶς. ἀποχέων τὸ
πρῶτον καὶ ἐπιχέων τὸ ἕτερον, ἄχρις ἂν μηδεμίαν ἔμφασιν
ἁλυκότητος ἔχῃ. εἶτα ἀποχέας τὸ λευκὸν τῆς λιθαργύρου
εἰς ἄλλο ἀγγεῖον. ἀνάπλασσε τροχίσκους καὶ ἀπόθου εἰς μολι-
βδίνην πυξίδα. οἱ δὲ καταθραύσαντες εἰς μεγέθη κυάμων
τὴν λιθάργυρον, καὶ βαλόντες εἰς χοίρειον κοιλίαν ὠμὴν
ἕψουσιν ἐν ὕδατι. ἄχρις ἂν τακερωθῇ τὸ σπλάγχνον. εἶτα
ἐξελόντες καὶ μετὰ ἴσων ἁλῶν τρίψαντες, πλύνουσιν ὡς
προείρηται. ἔνιοι δὲ ἁλῶν λίτραν μίαν καὶ λιθαργύρου το-
σοῦτον, τρίβουσιν ἐν ἡλίῳ μεθ' ὕδατος συνεχῶς ἀποχέοντες
ἄχρις ἂν λευκὸν γένηται. ἢ καὶ οὕτω. λαβὼν τῆς λιθαργύ-
ρου ὅσον θέλεις. καὶ εἰλήσας ἐρίοις λευκοῖς. καὶ θεὶς εἰς κε-
ραμέαν χύτραν καινήν, ἐπιδοὺς τε ὕδωρ καὶ κυάμων καθα-
ρῶν καὶ νέων δραχμὴν μίαν ἕψε. ὅταν δὲ οἱ κύαμοι διαρραγῶσι,

τότε

τό, τε θρύον λεανθῇ, ἐξελὼν τὴν λιθάργυρον καὶ ἑτέρῳ εἰλήσας θρύῳ, ἐκ δευτέρου ἕψε. κύαθον ἐπιδοὺς ὕδατος. κυάμων τε τὸ ἴσον πλῆθος, καὶ τὰ αὐτὰ ποίει τοῖς προειρημένοις ἐκ τρίτου. καὶ καθόλου ἕως τὸ θρύον μηκέτι βάπτηται. καὶ τὸ λοιπὸν κατερράσας εἰς θυΐαν πρὸς < π΄. ἀττικὰς λιθαργύρου, μῖξον ἁλὸς ὀρυκτοῦ λίτραν α΄. καὶ λέαινε. διαλιπών τε ἐπίδος νίτρου πάνυ λευκοτάτου διειλημμένου μεθ᾽ ὕδατος ὁλκὰς μζ΄. καὶ πάλιν τρίβε ἄχρις ἂν ἡ λιθάργυρος ἱκανῶς λευκὴ γένηται. οὕτω δὲ καταντλήσας αὐτὴν εἰς κεραμεοῦν πλατύστομον ἀγγεῖον, καὶ προσεπιχέας δαψιλὲς ὕδωρ, ἐάσας τε καταστῆναι, τὸ μὲν ἀπήθησον. ἕτερον δὲ ἐπιδοὺς ὕδωρ καὶ ταῖς χερσὶν ἀναταράξας, πάλιν ἐάσας καταστῆναι ἀπήθησον. ἐναλλὰξ δὲ τοῖς προειρημένοις ποίει, ἕως ἂν καθαρὸν ἄγαν τὸ ἀπορρέον ὕδωρ, καὶ γλυκὺ καὶ ἁλυκότητος ἀμέτοχον γένηται. ἔπειτα πᾶσι δὲ καταρράσας αὐτὴν εἰς λοπάδα κεραμέαν καινὴν, ἀπηθημένου παντὸς πράως τοῦ ὑγροῦ, θὲς ἐν ἡλίῳ ἡμέρας μ΄. ὑπὸ κύνα. καὶ ξηράνας χρῶ. δοκεῖ δὲ ἡ πεπλυμένη ἁρμόζειν εἰς τὰ ὀφθαλμικά. καὶ οὐλὰς ἀπρεπεῖς, καὶ ἐρρακωμένα πρόσωπα. καὶ σπίλων ἔμπλεα.

## Περὶ ψιμμυθίου. Κεφ. ωοζ΄.

Ψιμμύθιον δὲ γίνεται οὕτως. εἰς πιθάκνην πλατύστομον ἢ εἰς κεραμέαν γάστραν, ἐγχέας δριμύτατον ὄξος, ἀπέρεισον μολιβδίνην πλίνθον ἐπὶ τὸ στόμα τῆς κεραμέας, προϋποκειμένου καλαμίνου ψιαθίου. ἄνωθέν τε αὐτῆς ἐπίρριψον σκεπάσματα πρὸς τὸ μὴ διαπνεῖσθαι τὸ ὄξος. ὅταν διαλυθῇ. καὶ συγκαταρρυεῖσα διαπέσῃ. καὶ τὸ μὲν ἐπαιωρούμενον καὶ καθαρὸν ὑγρὸν ἀπήθει. τὸ δὲ γλοιῶδες εἰς ἀγγεῖον ἐγχυτέον. καὶ ξηραντέον ἐν ἡλίῳ. εἶτα ἀλεστέον ἐν χειρομύλῳ. ἢ λεαντέον ἄλλως καὶ σηστέον καὶ μετὰ ταῦτα λοιπὸν τοῦ στερεμνίου λεπτοποιητέον. καὶ σηστέον ἐναλλάξ τε τὰ αὐτὰ καὶ τρίτον καὶ τέταρτον ποιητέον. ἄμεινον δέ ἐστι τὸ πρῶτον ἀποσηθέν. ὃ καὶ εἰς τὰς ὀφθαλμικὰς παραληπτέον δυνάμεις. δεύτερον δὲ τὸ ἐχόμενον. καὶ κατὰ τάξιν τὰ λοι-

πά. τινὲς δὲ κατὰ μέσον τὰ ἀγγεῖον κατερείξαντες τὸν ῥύπον ἐπιτιθέασιν ὡς μικρὸν ψαύειν τοῦ ὄξους. τὸ δὲ σῶμα αὐτοῦ πωμάσαντες καὶ περιχρίσαντες ἐῶσι καὶ δι' ἡμερῶν ἀφαιρούμενοι τὸ πῶμα ἐπισκοποῦνται. ὅ τι δὲ διαλυθῇ, τὰ ἄλλα ποιοῦσιν ὁμοίως τοῖς προειρημένοις. εἰ δὲ ἀναπλάσαι τις αὐτὸ ἐθέλει, ὄξει δριμεῖ φυρατέον. καὶ οὕτως ἀναπλαστέον. καὶ ξηραντέον ἐν ἡλίῳ θέρους μέντοι ἐργαστέον τὰ προειρημένα. οὕτω γὰρ λευκὸν καὶ ἐνεργὲς γίνεται. σκευάζεται δὲ καὶ χειμῶνος τῶν πιθακνῶν ὑπεράνω ἰπνῶν ἢ βαλανείων ἢ καμίνων τιθεμένων. ἡ γὰρ ἄνωθεν φερομένη θερμασία τὸ αὐτὸ δρᾷ τῷ ἡλίῳ. κάλλιστον δὲ ἡγητέον τὸ ἐν ῥόδῳ σκευασθὲν, ἢ ἐν κορίνθῳ, ἢ ἐν λακεδαίμονι. δευτερεύει δὲ τὸ ἐκ δικαιαρχίας. ὀπτητέον δὲ αὐτὸ τὸν τρόπον τοῦτον. ἐπ' ἀνθράκων πεπυρωμένων θεὶς ὄστρακον καινὸν καὶ μάλιστα ἀττικὸν, ἔμπασον λεῖον τὸ ψιμμύθιον. καὶ κίνει συνεχῶς ὅταν δὲ τῇ χρόᾳ σποδοειδὲς γένηται, ἀνελόμενος ψῦξαι καὶ χρῶ. καῦσαι δὲ θέλων εἰς κοίλην λοπάδα λεῖον ἀπόθου. ἐπιθεὶς τε αὖθι τοὺς ἄνθρακας, νάρθηκι κίνει ἕως ἂν τὴν χρόαν ἐοικὸς σανδαράχῃ γένηται. καὶ ἀνελόμενος χρῶ. τὸ δὲ οὕτω σκευασθὲν σάνδυξ ὑπό τινων λέγεται. πλύνεται δὲ τὸ ψιμμύθιον ὁμοίως τῇ καδμείᾳ. Δύναμιν δὲ ἔχει ψυκτικήν. ἐμπλαστικήν. μαλακτικήν. πληρωτικήν. λεπτυντικήν. ἔτι τε πράως κατασταλτικὴν ὑπεροχῶν καὶ κατουλωτικήν. μιγνύμενον κηρωταῖς καὶ λιπαραῖς ἐμπλάστροις. καὶ τροχίσκοις. ἔστι δὲ καὶ τῶν ἀναιρετικῶν.

## Περὶ Χρυσοκόλλης. Κεφ. ωοη'.

Χρυσόκολλα δὲ διαφέρει ἡ ἀρμενιακή. τῇ χρόᾳ κατακόρως πρασίζουσα. δευτερεύει δὲ ἡ μακεδονική. εἶτα ἡ κυπρία. καὶ ταύτης τὴν καθαρὰν προκριτέον. τὴν δὲ γῆς καὶ λίθων ἔμπλεων ἀποδοκιμαστέον. πλυτέον τε τὴν προειρημένην οὕτω. κόψας αὐτὴν ἔμβαλε εἰς θυΐαν. καὶ ἐπιχέας ὕδωρ τρῖβε πλατείᾳ τῇ χειρὶ πρὸς τὴν ἴγδην εὐτόνως. εἶτα ἐάσας ἀποκαταστῆναι ἀπήθησον. καὶ ἕτερον ἐπιχέας ὕδωρ πάλιν τρῖβε. ταῦτα δὲ ποίει ἐναλλάξ. ἕως καθαρὰ καὶ εἰλικρινὴς γένη

ται. λοιπὸν ξηράνας ἐν ἡλίῳ ἀποτίθεσο, καὶ χρῶ. ἐὰν δὲ καῦσαι θέλῃς κατὰ τὸν τρόπον τοῦτον. λεάνας αὐτῆς τὸ αὔταρκες, ἐπίθες εἰς τήγανον. καὶ ἀπόθου ἐπ᾽ ἀνθράκων. καὶ τὰ ἄλλα ποίει ὡς προείρηται ἐπὶ τῶν πρὸ αὐτοῦ. Δύναμιν δὲ ἔχει ἡ χρυσοκόλλα σμηκτικὴν οὐλῶν. κατασταλτικὴν ὑπερσαρκωμάτων. καὶ ἀνακαθαρτικήν. στυπτικήν τε καὶ θερμαντικήν. σηπτικὴν πράως μετὰ τοῦ ἐπὶ ποσὸν δάκνειν. ἔστι δὲ καὶ τῶν ἔμετον κινούντων καὶ ἀναιρεῖν δυναμένων.

### Περὶ Ἀρμενίου λίθου. Κεφ. ωοθ΄.

Ἀρμένιον δὲ προκριτέον τὸ λεῖον καὶ τὸ χρῶμα κυανέον. ὁμαλόν τε ἄγαν καὶ ἄλυθον. εὐθρυβές. τὰ αὐτὰ ποιεῖ τῇ χρυσοκόλλῃ περὶ τὴν εὐτονίαν μόνον λειπόμενον αὐτῆς. ἔστι δὲ καὶ τῶν ἐν βλεφάροις τριχῶν αὐξητικόν.

### Περὶ κυανοῦ. Κεφ. ωπ΄.

Κυανὸς δὲ γεννᾶται μὲν ἐν Κύπρῳ ἐκ τῶν χαλκουργῶν μετάλλων. ὁ δὲ πλείων ἐκ τῆς αἰγιαλίτιδος ἄμμου εὑρισκόμενος κατά τινας σπηλαιώδεις ὑποσκαφὰς τῆς θαλάσσης. ἥτις καὶ διαφέρει. παραληπτέον δὲ τὸν σφόδρα κατακορῆ. καυστέον δὲ ὡς χαλκῖτιν. καὶ πλυτέον ὡς καδμείαν. Δύναμιν δὲ ἔχει κατασταλτικὴν καὶ μετρίως σηπτικήν. ἐσχαρωτικήν τε καὶ ἑλκωματικήν.

### Περὶ Ἰνδικοῦ λίθου. Κεφ. ωπα΄.

Τοῦ δὲ λεγομένου Ἰνδικοῦ, τὸ μὲν αὐτομάτως γίνεται. οἱονεὶ ἔκβρασμα ὂν τῶν Ἰνδικῶν καλάμων, τὸ δὲ βαφικόν ἐστιν ἐπανθισμὸς πορφυροῦς ἐπαιωρούμενος τοῖς χαλκείοις. ὃν ἀποσύραντες ξηραίνουσιν οἱ τεχνῖται. ἄριστον δὲ ἡγητέον εἶναι τὸ κυανοειδές τε καὶ ἔγχυλον. λεῖον. ἔστι δὲ τῶν στυφόντων ἐλαφρῶς καὶ ῥησσόντων φλεγμονὰς καὶ οἰδήματα. ἀνακαθαίρει δὲ καὶ καταστέλλει ἕλκη.

### Περὶ ὤχρας. Κεφ. ωπβ΄.

Ὤχραν δὲ ληπτέον τὴν κουφοτάτην καὶ μηλίνην δι᾽ ὅλου. κατακορῆ δὲ καὶ ἄλιθον καὶ εὐθρυβῆ· ἀττικὴν δὲ τῷ γένει. καυστέον δὲ καὶ πλυτέον καὶ ταύτην ὡς τὴν καδμείαν. Δύναμιν δὲ ἔχει στυπτικήν. σκεδαστικὴν φλεγμονῶν καὶ φυμάτων. καταστέλλει τε τὰ ὑπερσαρκοῦντα. καὶ τὰ κοῖλα πληροῖ σὺν κηρωτῇ. καὶ πώρους θρύπτει.

## Περὶ κινναβάρεως. Κεφ. ωπγ.

Κιννάβαρι οἴονταί τινες ταὐτὸν ὑπάρχειν τῷ καλουμένῳ ἀμμίῳ, πλανώμενοι. τὸ μὲν γὰρ ἄμμιον σκευάζεται ἐν Ἰσπανίᾳ. ἐκ λίθου τινὸς μεμιγμένου τῇ ἀργυρίτιδι ψάμμῳ. ἄλλως δὲ οὐ γνώσκεται. ἐν δὲ τῇ χωνῇ μεταβάλλει εἰς εὐανθέστατον καὶ φλογωδέστατον χρῶμα. ἔχει δὲ τὴν ἀποφορὰν ἐν τοῖς μετάλλοις πνιγώδη. περιτίθενται γοῦν οἱ ἐπιχώριοι τοῖς προσώποις φύσας πρὸς τὸ βλέπειν μέν, μὴ σπᾶν δὲ τὸν ἀέρα. χρῶνται δὲ αὐτῷ οἱ ζωγράφοι εἰς τὰς πολυτελεῖς τῶν τοίχων ἐκκοσμήσεις. τὸ δὲ κιννάβαρι ἐπικομίζεται μὲν ἀπὸ λιβύης. πιπράσκεται δὲ πολλοῦ. καὶ τοσοῦτόν ἐστιν ὡς μόλις ἐξαρκεῖν τοῖς ζωγράφοις εἰς τὴν ἐν ταῖς γραμμαῖς ποικιλίαν. ἔστι δὲ καὶ βαρύχρουν. ἢ βαθύχρουν. ὅθεν ἐνόμισαν τινὲς αὐτὸ εἶναι αἷμα δράκοντος. Δύναμιν δὲ ἔχει τὸ κιννάβαρι τὴν αὐτὴν τῷ αἱματίτῃ. ἁρμόζον εἰς ὀφθαλμικά. πλὴν ἐπιτεταμένως. μᾶλλον γὰρ στῦφόν ἐστι καὶ ἴσχαιμον. καὶ πυρίκαυτα καὶ ἐξανθήματα ἀναληφθὲν κηρωτῇ θεραπεύει.

## Περὶ ὑδραργύρου. Κεφ. ωπδ.

Ὑδράργυρος δὲ σκευάζεται ἀπὸ τοῦ ἀμμίου λεγομένου. καταχρηστικῶς δὲ καὶ τούτου κινναβάρεως λεγομένου. θέντες γὰρ ἐπὶ λοπάδος κεραμέας κόγχον σιδηροῦν ἔχοντα κιννάβαρι, περικαθάπτουσιν ἄμβικα περιαλείψαντες πηλῷ. εἶτα ὑποκαίουσιν ἄνθραξιν. ἡ γὰρ προσίζουσα τῷ ἄμβικι αἰθάλη ἀποξεσθεῖσα καὶ ἀποψυχθεῖσα. ὑδράργυρος γίνεται. εὑρίσκεται δὲ καὶ ἐν τῷ μεταλλεύεσθαι τὸν ἄργυρον ἐν ταῖς στέγαις κατὰ σταλαγμοὺς συνεστῶσα. ἔνιοι δὲ ἱστο-

ροῦσι καὶ καθ' ἑαυτὴν ἐν τοῖς μετάλλοις εὑρίσκεσθαι τὴν ὑδράργυρον. φυλάττεται δὲ ἐν ὑελίνοις ἢ μολιβδίνοις ἢ κασσιτερίνοις ἢ ἀργυροῖς ἀγγείοις. τὴν γὰρ ἄλλην ὕλην, πᾶσαν διεσθίει. καὶ ποιεῖ ἀπορρεῖν. Δύναμιν δὲ ἔχει φθαρτικὴν ποθεῖσα. τὸ βάρος διαβιβρώσκουσα τὰ ἐντός. βοηθεῖται δὲ γάλακτι πολλῷ πινομένῳ καὶ ἐξεμουμένῳ. ἢ οἴνῳ σὺν ἀψινθίῳ. ἢ ἀφεψήματι σελίνου. ἢ ὁρμίνου σπέρματι ἢ ὀριγάνῳ. ἢ ὑσσώπῳ σὺν οἴνῳ.

### Περὶ μίλτου σινωπικῆς. κεφ. ωπε.

Μίλτος σινωπική. κρατίστη ἡ πυκνὴ, καὶ βαρεῖα. ἡπατίζουσα. ἄλιθος. ὁμόχρους. πολύχυτος ἐν τῇ ἀνέσει. συλλέγεται δὲ ἐν τῇ καππαδοκίᾳ ἐν σπηλαίοις τισί. διυλίζεται δὲ καὶ φέρεται εἰς σινώπην καὶ πιπράσκεται. ὅθεν καὶ τὴν ἐπωνυμίαν ἔσχηκε. Δύναμιν δὲ ἔχει ξηραντικὴν. ἐμπλαστικήν. διὸ καὶ ἐμπλάστροις τραυματικαῖς μίγνυται. καὶ τροχίσκοις ξηραντικοῖς καὶ στεγνωτικοῖς. ἵστησι δὲ καὶ κοιλίαν ἐν ᾠῷ λαμβανομένη καὶ ἐγκλυζομένη. δίδοται καὶ ἡπατικοῖς.

### Περὶ τεκτονικῆς. κεφ. ωπϛ.

Ἡ δὲ τεκτονικὴ ἥττων ἐστὶ κατὰ πάντα τῆς σινωπικῆς. ἀρίστη δὲ ἡ αἰγυπτιακὴ καὶ ἡ καρχηδονική. ἄλιθος. εὐθρυβής. γίνεται καὶ ἐν τῇ πρὸς ἑσπέραν ἰβηρίᾳ. τῆς ὤχρας καιομένης καὶ μεταβαλλούσης εἰς μίλτον.

### Περὶ λημνίας γῆς. κεφ. ωπζ.

Ἡ δὲ λημνία λεγομένη γῆ, ἐστὶν ἔκ τινος ὑπονόμου ἀντρώδους. ἀναφερομένη ἀπὸ λήμνου τῆς νήσου. ἐχούσης ἑλώδη τόπον. κἀκεῖθεν ἐκλέγεται καὶ μίγνυται αἵματι αἰγείῳ ἣν οἱ ἐκεῖ ἄνθρωποι ἀναπλάσσοντες καὶ σφραγίζοντες εἰκόνι αἰγὸς, σφραγῖδα καλοῦσιν αἰγός. Δύναμιν δὲ ἔχει ἀντιδότου θανασίμων φαρμάκων ἔξοχον. πινομένη σὺν οἴνῳ. καὶ προληφθεῖσα ἐξεμεῖσθαι ἀναγκάζει τὰ δηλητήρια. ἁρμόζει δὲ καὶ πρὸς τὰς τῶν θανασίμων ἰοβόλων πληγὰς καὶ δήξεις μίγνυται δὲ καὶ ἀντιδότοις. χρῶνται δέ τινες καὶ εἰς τελετὰς αὐτῇ. ἔστι δὲ καὶ δυσεντερίαις χρήσιμος.

## Περὶ χαλκάνθου. κεφ. ωπθ'.

Χάλκανθον τῷ μὲν γένει ἓν καὶ ταυτὸν ὑπάρχει. ὑγρὸν γάρ ἐστι πεπηγός. εἰδικὰς δὲ ἔχει διαφορὰς τρεῖς. τὸ μὲν γὰρ κατὰ σταλαγμὸν διηθουμένων ὑγρῶν εἴς τινας ἀπονόμους συνίσταται. ὅθεν καὶ σταλακτὶς καλεῖται ὑπὸ τῶν τὰ κύπρια καὶ μέταλλα ἐργαζομένων. πετήσιος δὲ αὐτὸ καλεῖ πινάριον. οἱ δὲ, σταλακτικόν. πηκτόν. ἑφθόν. ἀρακτόν. λογχωτόν. τὸ δὲ ἁπλῶς ἐργαζόμενον ἐν σπηλαίοις, ἔπειτα μεταχεόμενον εἰς βόθρους τὴν πῆξιν λαμβάνει. ὃ δὴ καὶ πηκτὸν ἰδίως ὀνομάζεται. τὸ δὲ τρίτον καλεῖται μὲν ἑφθόν. σκευάζεται δὲ ἐν ἰσπανίᾳ. σκευὴν δὲ ἔχει τοιαύτην ἄχρηστόν τε καὶ ἀσθενέστατον ὑπάρχον. ὕδατι διέντες αὐτὸ ἕψουσιν. εἶτα εἰς τὰς δεξαμενὰς καταῤῥάσαντες, ἐῶσι. τοῦτο δὴ πήγνυται τεταγμέναις ἡμέραις. εἰς πολλὰ διαιρούμενον κυβοειδῆ σχήματα, βοτρυδὸν ἀλλήλοις προσεχόμενα. ἄριστον δ' αὐτοῦ ἡγητέον τὸ κυάνεον καὶ βαρύ. πηκτόν τε καὶ διαυγὲς οἷόν ἐστι τὸ σταλακτόν. ὑπ' ἄλλων δὲ λογχωτὸν καλούμενον. ἐχόμενον δὲ τὸ πυκνόν. τὸ δὲ ἑφθὸν πρὸς μὲν βαφὰς καὶ μελάσματα, ἐπιτηδειότερον τῶν ἄλλων δοκεῖ εἶναι. πρὸς δὲ ἰατρικὴν, ἀσθενέστερον ἡ πεῖρα δείκνυσι. Δύναται δὲ στύφειν. θερμαίνειν. ἐσχαροῦν. ἕλμινς πλατείας ἀναιρεῖν < α βάρος καταπινόμενον ἢ μετὰ μέλιτος ἐκλειχόμενον. ἐμέτους τε κινεῖ. καὶ μύκητας λαβοῦσι βοηθεῖ σὺν ὕδατι ποθέν. κεφαλήν τε καθαίρει ἐνεθὲν ὕδατι. καὶ δι' ἐρίου ῥινεγχυτούμενον. καίεται δὲ ὡς ὑποδείξομεν αὐτίκα ἐπὶ τῆς χαλκίτεως.

## Περὶ χαλκίτιδος. κεφ. ωπθ'.

Χαλκῖτιν προκριτέον τὴν χαλκοειδῆ καὶ εὔθρυπτον. ἄλιθόν τε καὶ οὐ παλαιάν. ἔτι δὲ τὰς ἶνας ἐπιμήκεις καὶ ἀποστιλβούσας ἔχουσαν. Δύναμιν δὲ ἔχει στυπτικήν τε καὶ θερμαντικήν. καὶ ἐσχαρωτικήν. ἀποκαθαρτικὴν τῶν περὶ κανθοὺς καὶ ὄμματα. ἔστι δὲ καὶ τῶν μετρίως στυφόντων. ποιεῖ δὲ καὶ πρὸς ἐρυσιπέλατα. ἕρπητας. αἱμοῤῥαγίας. τὰς ἐξ ὑστέρας καὶ μυκτήρων σὺν πράσου χυλῷ. ξηρὰ δὲ πρός τε ἐπουλίδας καὶ νομὰς καὶ παρίσθμια. κεκαυμένη δὲ πρὸς τὰ ὀφθαλ-

μικοῖς μᾶλλον χρησιμεύει λεία σὺν μέλιτι. τετυλωμένα μὲν βλέφαρα καὶ τραχέα ἀποτήκει καὶ σμήχει. συνεργεῖ δὲ αἴρει ἐν κολλουρίου σχήματι ἐντιθεμένη.

Περὶ ψωρικοῦ. Κεφ. ωϛʹ.

Σκευάζεται δὲ ἐξ αὐτῆς τὸ καλούμενον ψωρικόν. διπλασίονος χαλκίτεως πρὸς ἁπλῆν καδμείαν μιγνυμένου. καὶ σὺν ὄξει λεαινομένου. δεῖ δὲ ἐν κεραμέῳ ἀγγείῳ κατορύσσειν ἐν κοπρίᾳ ἐν τοῖς ὑπὸ κύνα καύμασιν ἡμέρας μʹ. γίνεται δὲ δριμύτερον. δυνάμενον ὅσα καὶ ἡ χαλκῖτις. ἔνιοι δὲ ἴσα μίξαντες οἴνῳ λεαίνουσι καὶ τὰ αὐτὰ ποιοῦσι. καυστέον δὲ αὐτὴν ἐν ὀστράκῳ καινῷ ἐντιθέντας, καὶ διαπύροις ἄνθραξιν ἀπερεισαμένους. μέτρον δὲ ἔστω τῆς καύσεως, ἐπὶ μὲν τῶν πολύχρων τὸ ἀπομφολύγωτον καὶ καλῶς ξηρὸν γενέσθαι. ἐπὶ δὲ τῶν λοιπῶν ἡ ἐπὶ τὸ εὐανθέστερον μεταβολή. ὅταν δὲ μιλτώδης γένηται τὴν χρόαν κατὰ βάθος, ἀναιρετέον αὐτήν. τήν τε προσκαθημένην ἀκαθαρσίαν ἀποφυσητέον καὶ ἀποθετέον. ὀπτᾶται δὲ ἐπὶ ἀνθράκων ἐμφυσωμένων, μέχρι τοῦ ὕπωχρον αὐτὴν γενέσθαι. ἢ ὑπ' ὀστράκου καὶ διαπύρων ἀνθράκων στρεφομένη πυκνῶς, ἕως ἂν πυρωθῇ καὶ μεταβάλλῃ τὴν χρόαν.

Περὶ μίσυος. Κεφ. ωϛαʹ.

Μίσυ δὲ παραληπτέον τὸ κύπριον. χρυσοφανές. σκληρόν. καὶ ἐν τῷ θραυσθῆναι χρυσίζον, καὶ ἀποστίλβον ἀστεροειδῶς. δύναμιν δὲ ἔχει καὶ καῦσιν τὴν αὐτὴν τῇ χαλκίτιδι, δίχα τῆς τοῦ ψωρικοῦ κατασκευῆς. ἐν τῷ μᾶλλόν τε καὶ ἧττον διαφέρον. τὸ δὲ αἰγύπτιον, πρὸς μὲν τἆλλα διαφέρει ἐμπρακτικώτερον ὄν. πρὸς δὲ τὰς ὀφθαλμικὰς δυνάμεις, πολλῷ λείπεται τοῦ προειρημένου.

Περὶ μελαντηρίας. Κεφ. ωϛβʹ.

Τῆς δὲ μελαντηρίας, ἡ μέν τις τοῖς τῶν ὀρυγμάτων στομίοις, ἀφ' ὧν ἂν μεταλλευθῇ ὁ χαλκὸς ἐπιπήσσεται ἁλμυρίδος τρόπον. ἡ δὲ, ἐκ τῆς ἄνωθεν ἐπιφανείας τῶν προειρημένων τόπων. ἥτις καὶ γεώδης ἐστίν. εὑρίσκεται δέ τις καὶ ὀρυκτὴ ἐν κιλικίᾳ καὶ ἐν ἄλλοις τισὶ τόποις. διαφέρει δ' αὐτῆς ἡ θειό-

χρους λεία. ὁμαλή. καθαρά. καὶ ἐν τῷ θίγειν ὕδατος μελαινομένη ταχέως. Δύναμιν δὲ ἔχει καυστικὴν τὴν αὐτὴν τῷ μίσυϊ.

Περὶ Σώρεως. Κεφ. ωϛγ΄.

Τὸ δὲ σῶρυ ἔνιοι ὑπέλαβον μελαντηρίαν πλανώμενοι. ἴδιον γάρ ἐστι γένος. οὐκ ἀφόμοιον. βρωμωδέστερον δὲ τὸ σῶρυ καὶ ναυτίας ποιητικόν. εὑρίσκεται δὲ ἐν αἰγύπτῳ. καὶ ἐν ἄλλοις δὲ τόποις. ὡς ἐν λιβύῃ καὶ ἱσπανίᾳ καὶ κύπρῳ. προκριτέον δὲ τὸ αἰγύπτιον, καὶ ἐν τῷ θραυσθῆναι μελάντερον φαινόμενον. κατατρήσεις τε πολλὰς ἔχον καὶ ὑπολίπαρον. ἔτι δὲ στῦφον. καὶ πρὸς τὴν κατάποσιν ἢ ὄσφρησιν βρωμῶδες καὶ ἀνατρεπτικὸν στομάχου. τὸ δὲ μὴ λαμπυρίζον ἐν τῷ θραυσθῆναι ἐμφερῶς μίσυϊ, ἑτερογενές τε καὶ ἀσθενὲς οἰητέον εἶναι.

Δύναμιν δὲ ἔχει καὶ καῦσιν τὴν αὐτὴν τοῖς προειρημένοις. ἰᾶται δὲ καὶ ὀδονταλγίας ἐντιθέμενον εἰς τὰ βρώματα. καὶ τοὺς ὑποσάλους δὲ ὀδόντας κρατύνει. καὶ ἰσχιαδικοῖς βοηθεῖ μετ' οἴνου ἐγκλυζόμενον. ἰόνθους τε σβέννυσι μεθ' ὕδατος καταχρισθέν. μίγνυται καὶ εἰς τὰ τριχῶν μελάσματα. κοινῶς δὲ τρόπῳ ἐπὶ τούτων σχεδὸν καὶ τῶν ἄλλων πάντων δυναμικώτερα τὰ ἄκαυστα τῶν κεκαυμένων ἡγητέον πλὴν ἁλῶν καὶ τρυγός. καὶ νίτρου καὶ τιτάνου καὶ τῶν ὁμοίων. ὅσα ὠμὰ ὄντα ἀνίεται. καιόμενα γὰρ τὴν δύναμιν ἐμπρακτότερα γίνεται.

Περὶ Διφρυγοῦς. Κεφ. ωϛδ΄.

Τοῦ δὲ διφρυγοῦς τρία ἡγητέον εἴδη. τὸ μὲν γὰρ μεταλλικόν ἐστιν. ὃ δὴ ἐν κύπρῳ μόνῃ γίνεται. πηλῶδες γὰρ ὂν ἀναφέρεται ἐκ βυθοῦ τινος τῶν ἐκεῖ τόπων. εἶτα ἀνενεχθὲν ξηραίνεται ἐν ἡλίῳ καὶ μετὰ ταῦτα φρυγάνοις κύκλῳ περιτεθειμένοις καίεται. ὅθεν καὶ διφρυγὲς ἐγκλήθη. διὰ τὸ ὑπὸ ἡλίου καὶ τῶν φρυγάνων καίεσθαι. καὶ ξηροποιεῖσθαι, καὶ οἱονεὶ φρύγεσθαι. τὸ δὲ ἕτερον τοῦ κατεργαζομένου χαλκοῦ ὥσπερ ὑποστάθμη ἐστὶ καὶ τρὺξ ὑπάρχει. μετὰ γὰρ τὴν τοῦ ψυχροῦ ὕδατος περίχυσιν, ὡς ἀνωτέρω ἔφαμεν περὶ λίθους χαλκοῦ διαλεγόμενοι, μετὰ τὴν ἀναίρεσιν τοῦ χαλκοῦ εὑρίσκεται ἐν τῇ χώνῃ ἐγκείμενον τῷ πυθμένι αὐτῆς τὸ τοιοῦτον εἶδος. τήν τε

στύφειν καὶ τὴν γεῦσιν χαλκοῦ ἔχον. τὸ δὲ τρίτον σκευάζεται
οὕτω. λίθον τὸν λεγόμενον πυρίτην συνθέντες εἰς κάμινον
οἱ πρὸς τούτοις ὄντες, καίουσιν ἐπὶ ἡμέρας ἱκανὰς ὥς τιτά-
νου. ὅταν δὲ ἡ χρόα μιλτώδης γένηται, ἀνελόμενοι ἀποτί-
θενται. τινὲς δέ φασιν ἐκ μόνης τῆς τὸν χαλκὸν λίθον ἀπο-
τελούσης, γεννᾶσθαι τὸ προειρημένον. ὅταν ὀπτηθεῖσα ἐν
ταῖς λεγομέναις ἅλωσιν, ἀνενεχθῇ εἰς τοὺς βόθρους καὶ ἐν-
ταῦθα καίηται. τόν τε γὰρ κύκλῳ τόπον τῶν βόθρων ἐπι-
λαμβάνει. καὶ μετὰ τὴν ἀναίρεσιν τῶν λίθων οὐδὲν ἧττον εὑ-
ρίσκεται. προκριτέον δ' αὐτοῦ τὸ τῇ γεύσει ἔγχαλκον. ἰίζον
στῦφόν τε καὶ ἀναξηραῖνον ἱκανῶς τὴν γλῶσσαν. ὅπερ ἡ κε-
καυμένη ὤχρα οὐ κέκτηται. ἣν δὴ καίοντες ἀντὶ διφρυγοῦς
πιπράσκουσι. Δύναμιν δὲ ἔχει στυπτικήν τε καὶ ἀνακα-
θαρτικὴν ἐπιτεταμένως. σμηκτικήν τε καὶ ξηραντικήν,
καὶ κατασταλτικὴν ὑπερσαρκώσεως. ἀπουλωτικὴν κακοή-
θων καὶ ἑρπυστικῶν. διαφορεῖ καὶ ἀποστήματα ἀναληφθὲν
τερεβινθίνῃ ἢ κηρωτῇ.

## Περὶ Ἀρσενικοῦ. ΚΕΦ. ωϛε΄.

Ἀρσενικὸν κατὰ τὰ αὐτὰ γεννᾶται μέταλλα τῇ σανδαρά-
χῃ. ἄριστον δὲ ἡγητέον τὸ πλακῶδες καὶ χρυσίζον τῇ χρόᾳ.
τάς τε πλάκας λεπιζομένας ἔχον ὡς ἀεὶ ἐπικειμένας ἀλ-
λήλαις. ἔστι δὲ ἀμιγὲς ἑτέρας φύσεως. τοιοῦτον δέ ἐστι τὸ
γεννώμενον ἐν Μυσίᾳ τῇ ἐν Ἑλλησπόντῳ. ἔστι δὲ αὐτοῦ δύο εἴ-
δη. τὸ μὲν ἓν οἷον προείρηται. τὸ δὲ ἄλλο βωλῶδες καὶ σαν-
δαραχίζον τῇ χρόᾳ. ἐκ Πόντου. καὶ Καππαδοκίας φερόμε-
νον. δευτερεύει δὲ τὸ τοιοῦτον. ὀπτᾶται δὲ οὕτως. ἐπ' ὀστρά-
κου καινοῦ ἐπιθεσάμενος αὐτὸ θὲς ἐπὶ διαπύρων ἀνθράκων καὶ
στρέφε συνεχῶς. ὡς δ' ἂν πυρωθῇ καὶ μεταβάλῃ, ψύξας καὶ
λεάνας ἀποτίθεσο. Δύναμιν δὲ ἔχει σηπτικήν τε καὶ στυπτικὴν
καὶ ἐσχαρωτικὴν μετὰ πυρώσεως καὶ βιαίου δήξεως. ἔστι δὲ
καὶ τῶν στελλόντων. ψιλοῖ δὲ τρίχας.

## Περὶ Σανδαράχης. ΚΕΦ. ωϛϛ΄.

Σανδαράχην δὲ προκριτέον τὴν κατακορῆ. πυῤῥὰν εὔθραυ-

στον. εὐλέαντόν τε καὶ καθαράν. κινναβαρίζουσαν τὴν χρόαν
ἔτι δὲ θειώδη ἀποφορὰν ἔχουσαν. Δύναμιν δὲ ἔχει καὶ
ὄπτησιν τὴν αὐτὴν τῷ ἀρσενικῷ. θεραπεύει δὲ καὶ ἀλωπεκί-
ας ἀναληφθεῖσα ῥητίνῃ. καὶ λεπροὺς ὄνυχας σὺν πίσσῃ ἀ-
φίστησι. καὶ πρὸς φθειριάσεις σὺν ἐλαίῳ ποιεῖ. φύματά τε
σὺν στέατι διαφορεῖ. ἁρμόζει δὲ καὶ πρὸς τὰ ἐν ῥισὶ καὶ στό-
μασιν ἕλκη. καὶ πρὸς τὰ λοιπὰ ἐξανθήματα σὺν ῥοδίνῳ. καὶ
πρὸς κονδυλώματα. δίδοται καὶ ἐμπυϊκοῖς σὺν οἰνομέλι-
τι. καὶ ἀποθυμιᾶται σὺν ῥητίνῃ καὶ πρὸς παλαιὰν βῆ-
χα. διὰ σίφωνος ἑλκομένου τοῦ ἀτμοῦ τῷ στόματι. φωνήν τε
ἀποκαθαίρει ἐκλειχομένη σὺν μέλιτι, καὶ ἀσθματικοῖς σὺν
ῥητίνῃ καταπότιον δίδοται.

### Περὶ στυπτηρίας. Κεφ. ωϛξʹ.

Στυπτηρίας δὲ σχεδὸν πᾶν εἶδος, ἐκ τῶν αὐτῶν ἐν τῇ αἰγύ-
πτῳ μετάλλων εὑρίσκεται. ἔστι γὰρ σχιστὴ οἱονεὶ τῆς βολίτι-
δος ἄνθος. γεννᾶται δὲ καὶ ἐν ἄλλοις τισὶ τόποις. ἐν μήλῳ.
ἐν μακεδονίᾳ. ἐν λιπάραις. καὶ σαρδονίᾳ καὶ ἱεραπόλει τῆς
φρυγίας. λιβύῃ. ἀρμενίᾳ. καὶ ἐν ἄλλοις δὲ τόποις πλείοσιν
ὥσπερ ἡ μίλτος. ἔστι δὲ αὐτῆς εἴδη πλεῖστα. πρὸς δὲ ἰατρικὴν
χρῆσιν λαμβάνεται ἥ τε σχιστή καὶ ἡ στρογγύλη καὶ ἡ ὑγρά. ἀ-
ρίστη δ᾽ ὑπάρχει ἡ σχιστή, καὶ ταύτης ἡ πρόσφατος καὶ λευκὴ
ἄγαν καὶ ἄλιθος καὶ βαρύοζος στύφουσά τε εὐτόνως. ἔτι τε
οὐ πεπιεσμένη βωληδόν. ἢ σχιδακηδόν. ἀλλ᾽ ἐξασμένη κατὰ
μονάδας πολιὰς θριξὶν ἐμφερῶς. οἵα ἐστὶν ἡ λεγομένη τριχῖ-
τις. γινομένη δὲ ἐν αἰγύπτῳ. εὑρίσκεται δὲ καὶ λίθος ἐμφε-
ρὴς αὐτῇ ἄγαν. ὃν διακριτέον τῷ τῆς γεύσεως κριτηρίῳ μὴ
στύφοντα, τῆς δὲ στρογγύλης ἡ χειροποίητος ἀδόκιμος ὑπάρ-
χει. γνωρίζεται δὲ ἐκ τοῦ σχήματος. παραληπτέα δ᾽ ἂν εἴη ἡ
φυσικῶς στρογγύλη καὶ πομφολυγώδης. ὑπόλευκός τε καὶ στύ-
φουσα ἐρρωμένως. ἔτι δὲ ποσὸν ὠχρότητος ἅμα καὶ λιπα-
ρίας ἔχουσα. πρὸς δὲ τούτοις ἄλιθός τε καὶ εὔθρυβής. καὶ
γένει μηλία ἢ αἰγυπτία. τῆς δὲ ὑγρᾶς τὴν μάλιστα διαφανῆ
προκριτέον καὶ γαλακτώδη. ὁμαλήν τε καὶ δι᾽ ὅλου χυλώ-
δη. ἔτι δὲ ἄλιθον καὶ πυρῶδες ἀποπνέουσαν. Δύναμιν δὲ ἔ-

χουσι θερμαντικὴν. στυπτικήν. ἀποκαθαρτικὴν τῶν ἐπισκοτούντων ταῖς κόραις. τήκουσιν δὲ καὶ τὰς ἐπὶ τῶν βλεφάρων σάρκας καὶ τὰ ἄλλα ὑπερσαρκώματα. ἐνεργεστέραν δὲ τῆς στρογγύλης τὴν σχιστὴν ἡγητέον. καίονται δὲ καὶ ὀπτῶνται ὡς χαλκῖτις. ἴσχουσι δὲ καὶ σηπεδόνας. αἱμορραγίας. οὖλα πλαδῶντα στέλλουσι. καὶ ὀδόντας σειομένους κρατύνουσι σὺν ὄξει ἢ μέλιτι. ἄφθας δὲ ὠφελεῖ σὺν μέλιτι. καὶ ἐξανθήματα καὶ ῥεύματα ἐν ὠσὶ σὺν πολυγόνου χυλῷ. λέπραις δὲ ἁρμόζουσι σὺν κράμβης φύλλοις. ἢ σὺν μέλιτι ἑψηθεῖσαι καὶ κνησμοῖς. ὄνυξί τε λεπροῖς καὶ πτερυγίοις καὶ χυμέθλοις σὺν ὕδατι καταιονούμεναι. σὺν τρυγὶ δὲ ὄξους καταχριόμεναι μετὰ κηκῖδος ἴσης κεκαυμένης πρὸς φαγεδαινικά. πρὸς δὲ νομὰς σὺν ἁλσὶ διπλοῖς. πιτυριάσεις δὲ σὺν ὀρόβῳ καὶ πίσσῃ σμήχουσι καταχριόμεναι. κονίδων τε καὶ φθειρῶν καὶ πυρικαύτων σὺν ὕδατι καταχριόμεναι, βοήθημα. οἰδήμασί τε καὶ μασχαλῶν καὶ βουβώνων δυσωδίαις καταχριστοί. ἡ δὲ μηλία καὶ πρὸς ἀσυλληψίαν συνεργεῖ πρὸ τῆς συνόδου παρατεθεῖσα τῷ στόματι τῆς ὑστέρας. καὶ ἔμβρυα ἐκτινάσσει. ἐπουλίσι τε καὶ σταφυλαῖς καὶ παρισθμίοις ἐπιτήδειοι. καὶ στόμασι καὶ πρὸς ὦτα καὶ αἰδοῖα σὺν μέλιτι ἐπίχριστοι.

## Περὶ θείου. Κεφ. ωϛή.

Θεῖον δὲ ἄριστον ἡγητέον, τὸ ἄπυρον καὶ λαμπρίζον τῇ χρόᾳ. διαφανές τε καὶ ἄλιθον. τοῦ δὲ πεπυρωμένου, τὸ χλωρόν τε καὶ εὐλιπές. γίνεται δὲ πλεῖστον ἐν Μήλῳ καὶ Λιπάρᾳ. θερμαίνει δὲ τὸ προειρημένον καὶ διαφορεῖ καὶ πεπαίνει ταχέως. βῆχας τε καὶ ἐμπύους καὶ ἀσθματικοὺς ὠφελεῖ ἐν ᾠῷ λαμβανόμενον καὶ ὑποθυμιώμενον. πρὸς δὲ τούτοις ἔμβρυα κατασπᾷ ὑποθυμιαθέν. καὶ λέπρας. ἔτι δὲ λειχῆνας καὶ ὄνυχας λεπρούς, αἴρει τερεβινθίνῃ μιχθὲν ῥητίνῃ. σὺν ὄξει δὲ καταχριόμενον, ποιεῖ μὲν καὶ πρὸς λέπρας. αἴρει δὲ καὶ ἀλφούς. ἰᾶται καὶ σκορπίων πληγὰς μιγὲν ῥητίνῃ. σὺν ὄξει δὲ καὶ δρακοντίου θαλασσίου καὶ σκορπίου πληγὴν ἰᾶται. παύει καὶ τοὺς καθ' ὅλον τὸ σῶμα κνησμοὺς σὺν νίτρῳ σμηχόμενον. ἀποκαθαίρει δὲ καὶ ἴκτερον. κοχλια-

ρίου πλῆθος ἐπιπασσόμενον τῷ μετώπῳ. ἢ μετὰ ᾠοῦ ῥοφη-
τοῦ λαμβανόμενον. καὶ πρὸς κόρυζαν δὲ καὶ καταῤῥοῦν ποιεῖ.
καὶ ἱδρῶτας στέλλει καταπασσόμενον, καὶ ποδαγρικοῖς σὺν
νίτρῳ καὶ ὕδατι καταχρισθὲν συμβάλλεται. καὶ δυσηκοΐαν
ὑποθυμιώμενον διὰ σίφωνος θεραπεύει. καὶ ληθαργικοὺς
ὑποθυμιώμενον. αἱμοῤῥαγίαν τε ἴσχει. θλάσεις τε ὤτων
σὺν οἴνῳ καὶ μέλιτι καταχριόμενον ἰᾶται.

### Περὶ κισσήρεως. Κεφ. ωϛθʹ.

Κίσσηριν δὲ προκριτέον τὴν ἄγαν κούφην. καὶ πολύκενον.
σχιστήν τε καὶ ἄλιθον. ἔτι δὲ ψαθυράν τε καὶ λευκήν. καυστέον
δὲ οὕτω. λαβὼν αὐτῆς ὁπόσον ἂν θέλῃς, διαπύροις ἐγκρυ-
ψον ἄνθραξιν. ὡς δ᾽ ἂν ἐκπυρωθῇ, ἀνελόμενος σβέσον οἴνῳ
εὐώδει. καὶ πάλιν πυρώσας σβέσον. τὸ δὲ τρίτον ἀνελόμε-
νος αὐτὴν καθ᾽ ἑαυτήν, ἔα ψυγῆναι. καὶ ἀποθέμενος χρῶ.
Δύναμιν δὲ ἔχει στυπτικήν τε καὶ σμηκτικὴν οὔλων. ἀποκα-
θαρτικὴν τῶν ἐπισκοτούντων ταῖς κόραις μετὰ τοῦ θερμαί-
νειν. ἑλκῶν τε πληρωτικὴν καὶ κατουλωτικήν. ἔτι δὲ καὶ κα-
τασταλτικὴν ὑπεροχῶν. καὶ σμηκτικὴν ὀδόντων λεία. καὶ
ἐσχαρωτικὴν σώματος. καὶ εἰς ψίλωσιν τριχῶν ἐπιτήδειον.
Θεόφραστος δὲ ἱστορεῖ. ἐὰν εἰς ζέοντά τις οἴνου πίθον καθῇ κίσ-
σηριν, παύεσθαι παραχρῆμα τὴν ζέσιν τοῦ οἴνου.

### Περὶ ἁλῶν. Κεφ. ϡʹ.

Τῶν δὲ ἁλῶν ἐνεργέστερον μέν ἐστι τὸ ὀρυκτόν. τούτου δὲ κοινῶς
μὲν τὸ ἄλιθον καὶ λευκὸν καὶ διαφανές. πυκνόν τε καὶ ὁμα-
λὸν τῇ συγκρίσει. ἰδίως δὲ τὸ ἀμμωνιακὸν τῷ γένει. εὔσχιστόν
τε καὶ εὐθείας τὰς διαφύσεις ἔχον. τοῦ δὲ θαλασσίου τὸ πυ-
κνὸν παραληπτέον καὶ λευκὸν καὶ ὁμαλόν. κάλλιστον δὲ ἐν
κύπρῳ. καὶ κύπρου τῇ σαλαμῖνι γίνεται καὶ μεγάροις. καὶ
ἐν σικελίᾳ καὶ λιβύῃ. ἐν τοῖς λεγομένοις δὲ καὶ τὰ λημναῖα
προκριτέον. εὐτονώτατον δὲ αὐτοῦ ἐστι τὸ φρύγιον. καλούμε-
νον δὲ τάττεον, ἢ τριταῖον, ἢ γανταῖον. Δύναμιν δὲ ἔχουσιν
οἱ προειρημένοι ἅλες κοινῶς πολύχρηστον. στυπτικήν τε καὶ
σμηκτικήν. καὶ ἀποκαθαρτικὴν καὶ διαχυτικήν. ἔτι δὲ κα-

σταλτικὴν καὶ ἰσχνωτικήν. καὶ ἐσχαρωτικήν. τῷ μᾶλλον καὶ ἧττον διαφέροντες. εἰσὶ δὲ καὶ σηπεδόνων ἐφεκτικοί. καὶ σμήξεσι ψωρικαῖς μίγνυνται. στέλλουσι καὶ τὰς ἐν ὀφθαλμοῖς ὑπεροχάς. καὶ πτερύγια τήκουσι. καὶ τὰς ἄλλας δὲ ὑπερσαρκώσεις αἴρουσι. καὶ κλυσμοῖς εὔθετοι. καὶ κόπου λυτήριοι σὺν ἐλαίῳ χριόμενοι. καὶ πρὸς τὰ οἰδήματα τῶν ὑδρωπικῶν. πυρία τε ἡ δι' αὐτῶν ἐν σακκίοις πραϋντικὴ ἀλγημάτων. καὶ κνησμοὺς δὲ παύουσι μετ' ἐλαίου καὶ ὄξους συγχριόμενοι παρὰ πυρὶ ἄχρις ἂν ἱδρώσωσιν. ὁμοίως καὶ λειχῆνας καὶ ψώρας καὶ λέπρας. συναγχικούς τε κουφίζουσι σὺν μέλιτι καὶ ὄξει καὶ ἐλαίῳ διαχριόμενοι. πρὸς δὲ παρίσθμια καὶ κιονίδας σὺν μέλιτι ὀπτοὶ καὶ ἄφθας καὶ οὔλων πλαδῶν. καὶ πρὸς φαγεδαίνας σὺν ἀλφίτῳ κεκαυμένοι καταπλάσσονται. πρὸς δὲ σκορπίων πληγὰς σὺν λινοσπέρμῳ. πρὸς δὲ ἐχιδνῶν δήγματα σὺν ὀριγάνῳ καὶ μέλιτι καὶ ὑσσώπῳ. πρὸς δὲ κεράστου μετὰ πίσσης ἢ κεδρίας ἢ μέλιτος. πρὸς δὲ σκολοπένδρας δῆγμα σὺν μέλιτι καὶ ὄξει. πρὸς δὲ σφηκῶν πληγὰς καὶ τερηδόνας καὶ πρὸς ψυδράκια τὰ ἐν κεφαλῇ. θύμους τε καὶ φύματα σὺν στέατι μοσχείῳ ἀναληφθέντες. σὺν σταφίδι δὲ ἢ στέατι ὑείῳ ἢ μέλιτι, δοθιῆνας διαφοροῦσι. καὶ ὄρχεων οἰδήματα. σὺν ὀριγάνῳ καὶ ζύμῃ θᾶττον πεπαίνουσι. καὶ κροκοδειλοδήκτοις βοηθοῦσιν. ἐνδεθέντες εἰς ὀθόνιον λεῖοι. καὶ βαπτόμενοι εἰς ὄξος συφομένων τῶν μερῶν τοῖς ἐνδέσμοις. θηριοδήκτοις τε βοηθοῦσι. καὶ πρὸς ὑπώπια προσώπου σὺν μέλιτι. καὶ πρὸς ὀποῦ μήκωνος πόσιν. καὶ πρὸς μύκητας σὺν ὀξυμέλιτι πινόμενοι. πρὸς δὲ στρέμματα σὺν ἀλεύρῳ καὶ μέλιτι. πρὸς πυρίκαυτα δὲ σὺν ἐλαίῳ ἐπιτεθέντες οὐκ ἐῶσι φλυκταινοῦσθαι. ποδαγρικοῖς τε ὁμοίως ἐπιτίθενται. πρὸς ὠταλγίαν τε σὺν ὄξει. βρωσιπέλατά τε καὶ ἕρπητας ἰῶνται μετ' ὄξους καταχρισθέντες ἢ καταπλασθέντες σὺν ὑσσώπῳ. καυστέον δὲ αὐτοὺς εἰς ὀστράκινον ἀγγεῖον ἐμβαλόντας καὶ ἐπιμελῶς πωμάσαντας ἵνα μὴ ἐκβάλλωνται. ἀνθρακιᾷ τε ἐγκρύψαντας ἄχρις ἐκπυρώσεως. τινὲς δὲ τοὺς ὀρυκτοὺς σταιτὶ περιπλάσαντες, εἰς ἄνθρακας ἀποτιθέντες, ἐῶσιν ἄχρις ἂν

τὸ στῦς κατακαῆ. ἔνεστι δὲ καὶ τοὺς κοινοὺς ἅλας τὸν αὐτὸν τρόπον. καίειν ἀποκλύσας αὐτοὺς ἅπαξ ὕδατι, καὶ ἐάσας ξηρανθῆναι, ἔμβαλε εἰς χύτραν. καὶ πωμάσας ὑπόκαιε κινῶν ἕως ἂν μηκέτι ἐξάλλωνται.

Περὶ Ἄχνης ἁλός. Κεφ. ϶α'.

Ἁλὸς ἄχνη. ἐπίψηγμά ἐστιν ἁλὸς ἀφρώδους. εὑρισκόμενον ἐπὶ τῶν πετριδίων. Δύναμιν δὲ ἔχει τὴν αὐτὴν τοῖς ἁλσίν.

Περὶ Ἅλμης. Κεφ. ϶β'.

Ἅλμη. τὴν αὐτὴν τοῖς ἁλσὶν ἔχει ἐνέργειαν. σμηκτικήν. δυσεντερικοῖς τέ ἐστι τοῖς κατὰ νομὴν ἔγκλυσμα. καὶ ἰσχιαδικοῖς χρονίοις. πρός τε καταντλήσεις ἁρμόζει ἐφ' ὧν θαλαττία ἐστὶ χρησίμη.

Περὶ Ἄνθους ἁλός. Κεφ. ϶γ'.

Ἁλὸς δὲ ἄνθος, καταρρεῖ μὲν τῷ νείλῳ ποταμῷ. ἐφίσταται ἢ λίμναις τισί. παραληπτέον δὲ τὸ κροκίζον τῇ χρόᾳ ὑποδυσωδέστερον, ὥσπερ γάρος. ἐνίοτε δὲ καὶ δυσωδέστερον μᾶλλον καὶ τῇ γεύσει δηκτικώτερον καὶ ὑπολίπαρον. τὸ δὲ ἔμμιλτον ἢ θρόμβους ἔχον, φαῦλον ἡγητέον. ἔτι τὸ ἀκέραιον ἐλαίῳ συνανίεται μόνον. τὸ δεδολωμένον δὲ ἐκ μέρους καὶ ὕδατος. ποιεῖ δὲ πρὸς τὰ κακοήθη καὶ φαγεδαινικὰ ἕλκη. καὶ νομὰς τὰς ἐν αἰδοίοις. καὶ ὦτα πυορροοῦντα. καὶ ἀμβλυωπίας καὶ τὰς οὐλὰς αἴρει καὶ λευκώματα. μίγνυται καὶ ἐμπλάστροις καὶ μύροις εἰς χρῶσιν ὡς καὶ τῷ ῥοδίνῳ. ἔστι δὲ καὶ ἱδρώτων κινητικόν. κοιλίας ταρακτικόν. σὺν οἴνῳ καὶ ὕδατι ληφθέν. κακοστόμαχον. μίγνυται καὶ ἀκόποις καὶ σμήγμασι πρὸς τριχῶν λευκασμόν. καὶ καθόλου ἐστὶ δριμύ. πυρωτικὸν ὥσπερ οἱ ἅλες.

Περὶ Νίτρου. Κεφ. ϶δ'.

Νίτρον. προκριτέον τὸ κοῦφον. καὶ ῥοδωπὸν ἢ λευκὸν τὴν χρόαν, κατατετρημένον. οἱονεὶ σπογγῶδές τι. τοιοῦτον δέ ἐστι τὸ ἐκ τῶν βουνῶν. Δύναμιν δὲ ἔχει μετασυγκριτικήν.

Περὶ Ἀφροῦ νίτρου. Κεφ. ϶ε'.

Ἀφρὸς δὲ νίτρου, ἄριστος μὲν εἶναι δοκεῖ ὁ κουφότατος καὶ πλακώδης· εὔθρυπτός τε καὶ ἐμπόρφυρος ἢ ἀφρώδης· ἔτι δὲ δηκτικός· οἷός ἐστιν ὁ ἐκ φιλαδελφίας κομιζόμενος τῆς ἐν λυδίᾳ. δευτερεύει δὲ ὁ αἰγύπτιος. γεννᾶται δὲ καὶ ἐν μαγνησίᾳ τῆς καρίας. Δύναμιν δὲ ἔχει καὶ καῦσιν οὗτός τε καὶ τὸ νίτρον ἅλσιν ἐμφερῆ. ἐκ περισσοῦ δὲ τὸ νίτρον καὶ στρόφους παύει λεανθὲν μετὰ κυμίνου καὶ ποθὲν μετὰ ὑδρομέλιτος ἢ μετὰ ἑψήματος ἢ τινὸς τῶν διαφορεῖν δυναμένων πνεύματα, οἷον πηγάνου ἢ ἀνήθου. ἔστι δὲ καὶ περιοδικῶν σύγχρισμα πρὸ τῆς ὑπόπτου προσβολῆς. μίγνυται καὶ διαφορητικαῖς καὶ ἐπισπαστικαῖς καὶ λεπρικαῖς ἐμπλάστροις καὶ λεπτυντικαῖς. σὺν ὕδατι δὲ θερμῷ ἢ οἴνῳ ἐγχεόμενον ἐμπνευματώσεις τε καὶ ἤχους ὤτων ἰᾶται καὶ πυορροίας. καθαίρει δὲ καὶ ῥύπον σὺν ὄξει ἐγχεόμενον. κυνοδήκτους τε ἰᾶται σὺν στέατι ὀνείῳ ἢ ὑείῳ. ἀναστομοῖ δὲ καὶ δοθιῆνας ἀναληφθὲν τερμινθίνῃ ῥητίνῃ. μετὰ σύκων δὲ ὑδρωπικῶν ἐστι κατάπλασμα. σὺν μέλιτι δὲ ἐγχριόμενον ὀξυδερκές. καὶ πρὸς μύκητας σὺν ὀξυκράτῳ ποθὲν ἁρμόζει. πρὸς δὲ βουπρήστεις σὺν ὕδατι. πρὸς ταύρειον δὲ αἷμα σὺν σιλφίῳ. ἀλφοῖς τε χρήσιμον κατάπλασμα. παρακμάζουσί τε ὀπισθοτονικοῖς πάθεσι σὺν κηρωτῇ καὶ στρέμμασι. μίγνυται καὶ ἄρτῳ ὠφελίμως ἐπὶ τῶν τὴν γλῶτταν παραλελυμένων. ἔνιοι δὲ καίουσι τὰ προειρημένα ἐπ᾽ ἄνθρακας πεπυρωμένους ἀπερεισάμενοι. προϋποκειμένου καινοῦ ὀστράκου ἕως ἂν ἐκπυρωθῇ.

## Περὶ τρυγός. ΚΕΦ. ϟϛʹ.

Τρύγα δὲ παραληπτέον μάλιστα μὲν τὴν ἀπὸ οἴνου παλαιοῦ ἰταλικοῦ. εἰ δὲ μή, κἂν ἀπὸ ἄλλου ὁμοίου. ἡ γὰρ ἀπὸ ὄξους ἐπιτέταται τῇ δυνάμει. καυστέον δὲ ὡς ἁλκυόνιον προεξηραμένην ἐπιμελῶς. τινὲς δὲ ἐπ᾽ ὀστράκων καινῶν θέντες καίουσι πυρὶ δαψιλεῖ. ἕως ἂν ἐμπυρωθῇ κατὰ βάθος. ἄλλοι δὲ εἰς ἄνθρακας πεπυρωμένους ἐγκρύψαντες βῶλον, τὸ ὅμοιον ποιοῦσι. σημεῖον δὲ τῆς δεούσης καύσεως ἡγητέον, τὸ λευκὸν ἢ ἀερόχρουν τοῦ χρώματος. καὶ τὸ προσενεχθεῖσαν τῇ γλώσσῃ οἱονεὶ φλέγειν αὐτήν. ὡσαύτως δὲ καὶ ἡ ἀπὸ ὄξους καίεται.

Δύναμιν δὲ ἔχει καυστικὴν σφόδρα. καὶ σμηκτικήν. κατουλωτικήν. στυπτικήν. καὶ σηπτικὴν ἄγαν καὶ ξηραντικήν. χρηστέον δὲ τῇ φυγὶ προσφάτῳ οὔσῃ. ταχὺ γὰρ διαπνεῖται. ὅθεν οὐδὲ ἀσκέπαστον. οὐδὲ χωρὶς ἀγγείου αὐτὴν ἀποθετέον. πλύνεται δὲ αὐτὴ ὡς πομφόλυξ. ἡ δὲ ἄκαυστος στέλλει οἰδήματα καὶ καθ' ἑαυτὴν καὶ μετὰ μυρσίνης. κοιλίαν τε καὶ στόμαχον ῥευματιζόμενον καταπλασθεῖσα στέλλει. καὶ ῥοῦν γυναικεῖον κατὰ ἤτρου καὶ αἰδοίου καταπλαττομένη πραΰνει. καὶ φύγεθλα ἀνέλκωτα διαφορεῖ. καὶ φύματα μαστούς τε σπαργῶντας ῥέοντας γάλα σβέννυσι σὺν ὄξει καταχρισθεῖσα. ἡ δὲ κεκαυμένη λεπροὺς ἀφίστησιν ὄνυχας σὺν ῥητίνῃ. καὶ μετὰ σχινίνου ἐλαίου συγχρισθεῖσα νύκτα ὅλην, ξανθὰς ποιεῖ τὰς τρίχας. πλυθεῖσα δὲ μίγνυται εἰς τὰ ὀφθαλμικὰ ὡς σποδός. σμήχει τε οὐλὰς καὶ ἀχλῦς τὰς ἐν ὀφθαλμοῖς ἡ τοιαύτη.

### Περὶ ἀσβέστου. Κεφ. ϙζ΄.

Ἄσβεστος γίνεται οὕτω. τῶν θαλαττίων κηρύκων τὰ ὄστρακα λαβών, πυρὶ ἔγκρυψον. ἢ εἰς κλίβανον διάπυρον καθεὶς ἄφες ἐν νυκτερεῦσαι. τῇ δὲ ἐχομένῃ ἐὰν μὲν λευκοτάτη γένηται ἀνελοῦ. εἰ δὲ μή, πάλιν καῖε ἄχρις ἂν ἱκανῶς λευκανθῇ. εἶτα ἀποβάψας αὐτὰ εἰς ψυχρὸν ὕδωρ, ἔμβαλε εἰς χύτραν καινήν. καὶ σκεπάσας αὐτὰ ῥάκεσιν ἐπιμελῶς, ἔασον ἐνταῦθα νύκτα μίαν. πρωῒ δὲ ἀνελόμενος ἀπειληφυῖαν τὸ παντελὲς τῆς κατεργασίας ἀποτίθεσο. σκευάζεται. δὲ καὶ ἐκ λίθων κοχλάκων καιομένων. καὶ ἐκ τῆς χυδαίας μαρμάρου. ἥτις καὶ προκρίνεται τῶν ἄλλων. Δύναμιν δὲ ἔχει πᾶσα κοινῶς ἄσβεστος, πυρωτικήν. δηκτικήν. καυστικήν. ἐσχαρωτικήν. μιγνυμένη δέ τισιν ἑτέροις ὡς στέατι ἢ ἐλαίῳ, γίνεται πεπτική. μαλακτική. διασκεδαστική. κατουλωτική. ἐνεργεστέρα δὲ αὐτῆς ἡ ζητέον τὴν πρόσφατον καὶ ἄβροχον.

### Περὶ γύψου. Κεφ. ϙη΄.

Γύψος δύναμιν ἔχει στυπτικήν. ἐμπλαστικήν. αἱμορραγίας τε καὶ ἱδρῶτος ἐφεκτικήν. ποθεῖσα δὲ πνίγει κατὰ πνιγμὸν τρόπῳ.

### Περὶ τέφρας κληματίνης. Κεφ. ρθ'.

Τέφρα κληματίνη δύναμιν ἔχει καυστικήν. σὺν ὀξυγγίῳ δὲ ἢ ἐλαίῳ καταπλασθεῖσα, θλάσματα νεύρων καὶ ἄρθρων λυγίσματα καὶ συστροφὰς νεύρων ὠφελεῖ. σὺν νίτρῳ δὲ καὶ ὄξει. σαρκώσεις ὀχώου στέλλει. καταπλασθεῖσα δὲ σὺν ὄξει, ἑρπετόδηκτα καὶ κυνόδηκτα ἰᾶται. ἐσχαρωτικαῖς τε μίγνυται. καὶ γίνεται ἡ ἐξ αὐτῆς κονία πρὸς πτώματα, καὶ μύκητας σὺν ὄξει καὶ ἁλσὶ καὶ μέλιτι.

### Περὶ ἀλκυονίου. Κεφ. ρι'.

Τοῦ δὲ ἀλκυονίου πέντε γνωστέον εἴδη ὑπάρχειν. τὸ μὲν γὰρ πυκνόν ἐστι καὶ στρυφνὸν, καὶ τῷ ἰδεῖν σπογγῶδες. ἔτι δὲ βρωμῶδες καὶ βαρύ. καὶ ἰχθύος ὄζον. ὃ δεῖ πλεῖστον ἐπὶ τῶν ἠιόνων εὑρίσκεται. τὸ δὲ ἑξῆς κατὰ μὲν τὸ σχῆμα πτερυγίῳ ὀφθαλμικῷ ἢ σπόγγῳ ἔοικε κοῦφόν τέ ἐστι καὶ πολύκενον. καὶ φυκώδη ἀποφορὰν ἔχον. τὸ δὲ τρίτον σκωληκοειδὲς ὑπάρχει τῷ τύπῳ. καὶ τῇ χρόᾳ πορφυρώτερον. ὅ τινες μιλήσιον καλοῦσι. τὸ τέταρτον δὲ ἐρίοις οἰσυπηροῖς ὅμοιον. πολύκενον. κοῦφον. τὸ δὲ πέμπτον ἔοικε μὲν κατὰ σχῆμα μύκητι ἄνοσμόν τέ ἐστι καὶ τραχύ. ἔνδοθεν μὲν κισσηρὲς κατά τι ἐοικός ἔξωθεν δὲ λεῖον. δριμύ. ὃ πλεῖστον ἐν τῇ Προποντίδι κατὰ τὴν καλουμένην Βέσβικον νῆσον γεννᾶται. ὃ ἐπιχωρίως ἁλὸς ἄχνην καλοῦσι. τούτων τὸ μὲν πρῶτον καὶ δεύτερον, εἰς σμήγματα παραλαμβάνεται γυναικῶν, καὶ πρὸς φακούς. λειχῆνάς τε καὶ λέπρας ἀλφούς τε καὶ μελανίας καὶ σπίλους τοὺς ἐπὶ προσώπου καὶ τοῦ λοιποῦ σώματος. τὸ δὲ τρίτον εὐθετεῖ πρὸς δυσουροῦντας καὶ ἀμμώδη συλλέγοντας ἐν τῇ κύστει. καὶ πρὸς νεφρικούς. πρὸς ὕδρωπα. σπλῆνα. καὲν δὲ καὶ καταπλασθὲν σὺν οἴνῳ, ἀλωπεκίας δασύνει. τὸ δ' ὕστατον ὀδόντας λευκαίνειν δύναται. παραλαμβάνεται δὲ καὶ πρὸς ἄλλα σμήγματα καὶ ψίλωθρα. μιγνύμενον σὺν ἁλσί. καῦσαι δέ τοι τούτων βουλόμενος, μεθ' ἁλῶν εἰς ὠμὴν χύτραν ἔμβαλε. καὶ περιαλείψας τὸ στόμα αὐτῆς πηλῷ, δὸς εἰς κάμινον. ὅταν δὲ ὀπτηθῇ ὁ κέραμος αὐτῆς, ἀνελόμενος ἀπόθου καὶ χρῶ. πλύνεται δὲ ὡς ἡ καδμεία.

## Περὶ ἀδάρκου. Κεφ. ϶ια'.

Ὁ δὲ προσαγορευόμενος ἀδάρκης, γίνεται μὲν ἐν Γαλατίᾳ. ἔστι δὲ, ὥσπερ ἐπίπαγος ὑφαλμυρίζων. καθ' ὑγρῶν καὶ τελματωδῶν τόπων ἐν ξηρασίᾳ ἐπιγινόμενος. καὶ περιπηγνύμενος καλάμοις καὶ χορταρίοις. ἔοικε δὲ τὴν χρόαν ἄνθει ἀσίου λίθου. τῷ δὲ ὅλῳ τύπῳ ἀλκυονίῳ τῷ μαλακῷ. καὶ πολυκένῳ. καὶ ἔστιν οἱονεὶ λιμναῖον ἀλκυόνιον. εὐθετεῖ δὲ πρὸς ἐκδορὰν λεπρῶν καὶ ἐφηλίδων καὶ λειχήνων. καὶ φακῶν. καὶ τῶν ὁμοίων. καθόλου δέ ἐστι δριμύ. καὶ μετασυγκριτικόν. ὠφελεῖ καὶ ἰσχιαδικούς.

## Περὶ σπόγγων. Κεφ. ϶ιβ'.

Τῶν δὲ σπόγγων τοὺς μὲν ἄρρενας ἐκάλεσάν τινες λεπτοτρήτους καὶ πυκνοὺς ὄντας. ὧν τοὺς σκληροτέρους τράγους ὠνόμασαν. τοὺς δὲ, θήλεις οἳ ἐναντίως τοῖς προειρημένοις διάκεινται. καῦσιν δὲ ἔχουσι τὴν αὐτὴν ἀλκυονίῳ. ὁ καινὸς δὲ καὶ ἀλιπὴς, τραυματικός τέ ἐστι καὶ οἰδήματα στέλλει. καὶ τὰ νεότρωτα κολλᾷ σὺν ὕδατι ἢ ὀξυκράτῳ. σὺν μέλιτι δὲ ἑφθῷ παλαιοὺς κόπους παρακολλᾷ. ὁ δὲ παλαιὸς, ἄχρηστος. διαστέλλουσι δὲ καὶ μεμυκότα ἕλκη. καὶ τύλους ἀποδεσμούμενοι λίνῳ καὶ αὐτοὶ ξηροὶ παρεντιθέμενοι ὥσπερ μοτά. τὰ δὲ ῥευματικὰ ὑπόνομα καὶ χρόνια ἕλκη, ἐξικμάζουσιν ἐπιτιθέμενοι ἄνικμοι νέοι καὶ κενοί. ἐπέχουσι δὲ καὶ αἱμορραγίας. σὺν ὄξει δὲ κεκαυμένοι, πρὸς ξηροφθαλμίας, καὶ ὅπου δεῖ σμῆξαί τι ἢ στύψαι. βέλτιον δὲ ποιοῦσι πλυθέντες εἰς τὰ ὀφθαλμικά. σὺν δὲ πίσσῃ καέντες πρὸς αἱμορραγίαν ἁρμόζουσι. λευκαίνονται δὲ αὐτῶν οἱ ἁπαλώτατοι ἐν τοῖς καύμασι, βρεχόμενοι τῇ [illegible] τῶν πετρῶν συνισταμένοι ἁλὸς ἄχνῃ, καὶ ἡλιαζόμενοι. ἐπιβλεπέτω δὲ τὸ μὲν κοῖλον αὐτῶν ἄνω. κάτω δὲ ἡ ἀποτομή. εἰ δὲ εἴη αἰθρία θερεία καὶ ὑπὸ τὴν σελήνην τίθενται βρεχόμενοι ἁλὸς ἄχνῃ ἢ θαλάσσῃ. γίνονται δὲ λευκότατοι οἱ τοιοῦτοι.

## Περὶ κοραλλίου. Κεφ. ϶ιγ'.

Τὸ δὲ κοράλλιον ὅπερ ἔνιοι λιθόδενδρον ἐκάλεσαν, δοκεῖ μὲν

εἶναι φυτὸν ἐνάλιον. στερροποιεῖσθαι δὲ ὅταν ἐκ τοῦ βυθοῦ ἑλκυσθῇ. ἔξαλον γινόμενον. καὶ βαπτόμενον ἤτοι πηγνύμενον ὡς ὑπὸ τοῦ περικεχυμένου ἡμῖν ἀέρος. εὑρίσκεται δὲ πλεῖστον ἐν τῷ κατὰ συρακούσας ἀκρωτηρίῳ τῷ καλουμένῳ παχύνῳ. ἄριστον δέ ἐστι τὸ πυῤῥὸν τῇ χρόᾳ καὶ ἐμφερὲς ἀνθηρικῷ χρώματι, ἢ σάνδυκι κατακορεῖ. εὔτριβές τε ὡσαύτως, καὶ ὁμαλὸν δι' ὅλης τῆς συγκρίσεως. ἔτι δὲ ὀσμὴν βρυώδη καὶ φυκίῳ ἐμφερῆ ἔχον. πρὸς δὲ τούτοις. πολύοζον καὶ κινναμωμίζον τῷ τύπῳ τῶν θαμνίσκων. τὸ δὲ λιθῶδες τῇ συγκρίσει καὶ τῇ χρόᾳ ψωρὸν, ἐσηραγγωμένον τε καὶ χαῦνον, φαῦλον οἰητέον εἶναι. στύφει δὲ τῇ δυνάμει καὶ ψύχει ἐπιεικῶς. καταστέλλει δὲ τὰ ὑπερέχοντα. καὶ οὐλὰς σμήχει τὰς ἐν ὀφθαλμοῖς. πληροῖ δὲ καὶ κοιλώματα καὶ οὐλάς. πρός τε αἵματος ἀναγωγὰς ἱκανῶς ἐνεργεῖ. καὶ δυσουροῦσιν ἁρμόζει. καὶ σπλῆνα τήκει σὺν ὕδατι πινόμενον.

Περὶ ἀντιπαθοῦς κεφ. ριδ'.

Κ αὶ τὸ καλούμενον δὲ ἀντιπαθὲς, κοράλλιον οἰητέον ὑπάρχειν. εἰδικὴν ἔχον διαφοράν. ἔστι δὲ τῇ μὲν χρόᾳ μέλαν. δενδρίζον δὲ καὶ αὐτὸ καὶ ἀζῶδες μᾶλλον. Δύναμιν δὲ ἔχει τὴν αὐτὴν τῷ προειρημένῳ.

Περὶ φρυγίου λίθου. κεφ. ριε.

Λ ίθος φρύγιος. ᾧ οἱ βαφεῖς. ἐν φρυγίᾳ χρῶνται. ὅθεν καὶ ὠνόμασται, γεννᾶται ἐν καππαδοκίᾳ. ἄριστος δ' ἐστὶν ὁ ὠχρὸς καὶ μέσως βαρύς. οὐκ εὔτονος τῇ συγκρίσει τοῦ σώματος. ἔχων δὲ διαφύσεις λευκὰς ὡς καδμεία. καίεται δ' ὁ λίθος οὕτω. βρέξας αὐτὸν καλλίστῳ οἴνῳ, διαπύροις ἔγκρυψον ἄνθραξι. καὶ ῥίπιζε συνεχῶς. ἐὰν δὲ μεταβάλλῃ τὴν χρόαν κιῤῥότερος γενόμενος, ἐξελὼν αὐτὸν τῷ αὐτῷ σβέσον οἴνῳ. καὶ πάλιν εἰς τοὺς ἄνθρακας ἀποθέμενος τὰ αὐτὰ ποίει. καῖε δὲ αὐτὸν ἐκ τρίτου, προσέχων μὴ θρυβῇ καὶ ἀπασβολωθῇ.

Δύναμιν δὲ ἔχει ὠμός τε καὶ κεκαυμένος στυπτικὴν ἐναργῶς. ἔτι δὲ ἀνακαθαρτικὴν καὶ ἐσχαρωτικὴν ποσῶς. καὶ καταπλάσματι τε ἰατικὴν σὺν κηρωτῇ. πλύνεται δὲ ὡς ἡ καδμεία.

Περὶ ἀσίου λίθου. Κεφ. ιϛ΄.

Ἄσιον δὲ λίθον παραληπτέον τὸν κισηρώδη τὴν χρόαν, χαῦνόν τε καὶ κοῦφον. ἔτι δὲ εὔθρυπτον. καὶ διαφύσεις μηλίνας ἔχοντα διὰ βάθος. τὸ δὲ ἄνθος αὐτοῦ ἐστὶν ἡ ἐφιζάνουσα ἐπίξανθος ἁλμυρὶς τῇ ἐπιφανείᾳ τῶν λίθων, τῇ μὲν συστάσει λεπτή. τῇ δὲ χρόᾳ τὸ μέν τι λευκόν ἐστι. τὸ δέ τι ἔοικε κισήρει. ὥστε τὸ μήλινον τετραμμένον. προσαγόμενόν τε τῇ γλώττῃ δάκνει ποσῶς. Δύναμιν δὲ ἔχει ἑκάτερον στυπτικήν. σηπτικὴν ἠσυχῆ, καὶ διαφορητικὴν φυμάτων τερεβινθίνῃ ἀναλαμβανόμενον ῥητίνῃ ἢ ὑγρᾷ πίσσῃ. εὐτονώτερον δὲ τὸ ἄνθος ἡγητέον. ἐκ περισσοῦ δὲ [illegible] ξηραινόμενον, τὰ παλαιὰ καὶ δυσκατούλωτα ἕλκη ἰᾶται. καταστέλλει δὲ τὰ ὑπερσαρκοῦντα καὶ ἀνακαθαίρει σὺν μέλιτι, τὰ μύκησιν ὅμοια καὶ θηριώδη. πληροῖ δὲ καὶ τὰ κοῖλα τῶν ἑλκῶν καὶ ἀνακαθαίρει σὺν μέλιτι. καὶ τὰ νεμόμενα δὲ ἵστησι μιγὲν κηρωτῇ καὶ ποδαγρικοῖς ἐν καταπλάσμασι μετὰ ἐρέγμου. καὶ σπληνικοῖς μετ᾽ ὄξους καὶ ἀσβέστου. ἐκλειχόμενόν τε τὸ ἄνθος μετὰ μέλιτος φθισικοὺς ὠφελεῖ. κατασκευάζονται δὲ καὶ πύελοι ἐκ τοῦ λίθου. εἰς ἃς οἱ ποδαγρικοὶ τοὺς πόδας ἐντιθέντες ὠφελοῦνται. καὶ σοροὶ σαρκοφάγοι γίνονται. ἰσχναίνουσαι τὰ πολύσαρκα καὶ παχέα σώματα. καταπλαττόμεναι ἀντὶ νίτρου ἐν βαλανείῳ. ἐὰν δέ τις πλῦναι θέλῃ τὰ προγεγραμμένα, πλυνέτω ὡς τὴν καδμείαν.

Περὶ πυρίτου λίθου. Κεφ. ιζ΄.

Πυρίτης εἶδός ἐστι λίθου. ἀφ᾽ οὗ χαλκὸς μεταλλεύεται. ληπτέον μέντοι τὸν χαλκοειδῆ. εὐχερῶς δὲ σπινθῆρας ἀφιέντα. καυστέον δὲ τρόπῳ τοιούτῳ. μέλιτι δεύσας αὐτόν, ἔνθες εἰς ἀνθρακιὰν μαλακήν. καὶ ῥίπιζε συνεχῶς ὡς ἂν τὴν χροιὰν κιρρὸς γένηται. ἔνιοι δὲ εἰς πολλοὺς καὶ πεπυρωμένους ἄνθρακας ἀποτίθενται ἱκανῶς βεβρεγμένον τῷ μέλιτι τὸν λίθον. ὅταν δὲ μέλλῃ τρέπεσθαι εὐθὺ τὸ κιρρὸν ἀναιροῦνται. καὶ ἀποφυσήσαντες τὴν σποδόν, πάλιν καίουσι διάβροχον. ἕως ἂν ψαθυρώτερος γένηται ὁμαλῶς. πολλάκις γὰρ μόνον ἐπικαίεται τὴν ἐπιφάνειαν. οὕτω δὲ ἀποκαύσαντες καὶ ξη-

ῥάναντες ἀποτίθενται. ἐὰν δὲ πεπλυμένου χρεία ὑπάρχῃ, πλυτέον ὡς καδμείαν. Δύναμιν δὲ ἔχει κεκαυμένος καὶ ὠμός, θερμαντικήν. σμηκτικήν. ἀποκαθαρτικὴν τῶν ἐπισκοτούντων ταῖς ὄψεσι. διαφορητικήν τε καὶ πεπτικὴν σκληρωμάτων. ἀναληφθεὶς δὲ ῥητίνῃ καταστέλλει τὰ ὑποσαρκοῦντα μετὰ ποσῆς θερμασίας καὶ στύψεως. καλοῦσι δὲ ἔνιοι τὸν οὕτω καέντα διφρυγές.

## Περὶ αἱματίτου λίθου. Κεφ. ʒικ.

Αἱματίτης δὲ λίθος ἄριστός ἐστιν ὁ εὔθρυβης μὲν καὶ κατακορὴς ἤτοι μέλας. ἐν ἑαυτῷ δὲ σκληρὸς καὶ ὁμαλός. ἀνεπίμικτος ῥυπαρείας τινὸς ἢ διαζωμάτων. Δύναμιν δὲ ἔχει στυπτικήν. θερμαντικὴν ποσῶς, καὶ λεπτυντικὴν καὶ σμηκτικὴν οὔλων τῶν ἐν ὀφθαλμοῖς καὶ τραχωμάτων σὺν μέλιτι. σὺν δὲ γάλακτι γυναικείῳ πρὸς ὀφθαλμίας καὶ ῥήξεις. καὶ ὑφαίμους ὀφθαλμούς. πίνεται δὲ σὺν οἴνῳ πρὸς δυσουρίαν καὶ ῥοϊκάς, καὶ πρὸς αἵματος πτύσεις σὺν χυλῷ ῥοιᾶς. γίνεται δὲ καὶ κολλύρια ἐξ αὐτοῦ καὶ ἀκόνια πρὸς τὰ ἐν ὀφθαλμοῖς πάθη ἐπιτήδεια. καίεται δ' ἐμφερῶς τῷ φρυγίῳ λίθῳ τοῦ οἴνου προειρημένου. μέτρον δὲ ἔστω τῆς καύσεως τὸ γενέσθαι αὐτὸν μέσως κοῦφον καὶ πεπομφολυγωμένον. δολοῦσι δέ τινες τὸν προειρημένον οὕτω. λαβόντες βῶλον σχιστοῦ λίθου πυκνόν τε καὶ στρογγύλον, τοιαῦται δέ εἰσιν αἱ λεγόμεναι ῥίζαι αὐτοῦ, εἰς κεραμίαν γάστραν ἔχουσαν θερμοσποδιὰν θερμὴν ἐγκρύπτουσιν. εἶτα διαλιπόντες, μικρὸν ἀναιροῦνται. καὶ ἐπ' ἀκόνης τρίβουσι δοκιμάζοντες, εἰ τὴν τοῦ αἱματίτου χρόαν ἀπείληφε. κἂν μὲν οὕτως ἔχῃ, ἀποτίθενται. εἰ δὲ μή, πάλιν ἐγκρύπτουσι. συνεχῶς ἐφορῶντες καὶ δοκιμάζοντες. ἀφεθεὶς γὰρ ἐπὶ πολὺ ἐν τῇ σποδιᾷ μεταβάλλει τῷ χρώματι. ἔπειτα διαχεῖται. ἀπελέγχεται δὲ ὁ κακοτεχνημένος πρῶτον μὲν ταῖς διαφύσεσι. ὁ μὲν γὰρ εἰς κτηδόνας ἐπ' εὐθείας ἀποκλᾶται. ὁ δὲ αἱματίτης οὐχ οὕτως ἔχει ἐν τῇ χρόᾳ. ὁ μὲν γὰρ εὐανθῆ ἀνίησιν. ὁ δὲ αἱματίτης βαθυτέραν καὶ τῷ κινναβάρει ἐοικυῖαν. εὑρίσκεται δὲ καὶ ἐν τῇ σινωπικῇ μίλτῳ. καὶ ἐκ τῆς μαγνήτιδος πέτρας καιομένης ἐφ' ἱκανόν, κατασκευά-

ξεται αἱματίτης. ὁ δὲ αὐτοφυὴς ἐν αἰγύπτῳ μεταλλεύεται.

Περὶ σχιστοῦ λίθου. Κεφ. ριθ΄.

Σχιστὸς δὲ λίθος γεννᾶται μὲν ἐν τῇ κατὰ ἑσπέραν ἰβηρείᾳ. ἄριστος δὲ εἶναι δοκεῖ ὁ παρακροκίζων τῇ χρόᾳ. εὐθρυβής τε καὶ εὔσχιστος ὡς ἐν ἑαυτῷ. ἔοικε δὲ τῆς συνθέσεως ἕνεκεν καὶ τῆς ἀλληλουχίας τῶν κτηδόνων αὐτοῦ ἀμμωνιακῷ ἁλί. δύναμιν δὲ τὴν αὐτὴν τῷ αἱματίτῃ εἰσφέρεται. τῇ εὐτονίᾳ μόνον λειπόμενος αὐτοῦ. πληροῖ δὲ καὶ κοιλώματα γυναικείῳ διεθεὶς γάλακτι. καὶ πρὸς ῥήξεις καὶ προπτώσεις, ἔτι δὲ παχύτητας βλεφάρων καὶ σταφυλώματα λίαν ἐνεργεῖ.

Περὶ γαγάτου λίθου. Κεφ. ρκ΄.

Τοῦ δὲ γαγάτου προκριτέον τὸν ταχέως ἐξαπτόμενον. καὶ ἀσφαλτίζοντα τῇ ὀσμῇ. μέλας δὲ κοινῶς ὑπάρχει καὶ αὐχμηρός. ἔτι δὲ πλακώδης καὶ κοῦφος ἄγαν. Δύναμιν δὲ ἔχει μαλακτικὴν καὶ διαφορητικήν. ἔστι δὲ καὶ ἐπιληπτικῶν ἔλεγχος ὑποθυμιαθείς. καὶ ὑστερικὰς ἀνακαλεῖται. διώκει δὲ καὶ ἑρπετὰ θυμιαθεὶς καὶ ποδαγρικαῖς καὶ ἀκόποις μίγνυται δυνάμεσι. γεννᾶται δὲ ἐν κιλικίᾳ κατά τινα ποταμοῦ εἰσροῖν εἰς θάλασσαν ἐκχεομένου. ἔστι δὲ πλησίον τῆς λε-γομένης πλαγίου πόλεως. καλεῖται δὲ ὁ τόπος ἢ ὁ ποταμὸς γάγας. παρ᾽ οὗ τῷ στόματι εὑρίσκονται οὗτοι οἱ λίθοι.

Περὶ θρακίου λίθου. Κεφ. ρκα΄.

Ὁ δὲ λεγόμενος θρακίας, γεννᾶται μὲν ἐν σκυθίᾳ ἐν ποταμῷ τῷ λεγομένῳ πόντῳ. Δύναται δὲ τὰ αὐτὰ τῷ γαγάτῃ. ἱστορεῖται δὲ ἐκκαίεσθαι μὲν αὐτὸν ὕδατι. σβέννυσθαι δὲ ὑπὸ ἐλαίου. ὅπερ καὶ ἐπὶ τῆς ἀσφάλτου γίνεται.

Περὶ μαγνίτου λίθου. Κεφ. ρκβ΄.

Τοῦ δὲ μαγνίτου λίθου ἄριστός ἐστιν ὁ τὸν σίδηρον εὐχερῶς ἕλκων καὶ τὴν χρόαν κυανίζων. πυκνῶς τε καὶ οὐκ ἄγαν βαρύς. Δύναμιν δὲ ἔχει πάχους ἀγωγόν. διδόμενος μετὰ μελικράτου τριωβόλου βάρος. ἔνιοι δὲ τοῦτον καίοντες ἀντὶ αἱμα-

τίτου πιπράσκουσιν.

Περὶ Ἀραβικοῦ λίθου. Κεφ. ρκγ΄.

Ὁ δὲ ἀραβικὸς λεγόμενος λίθος ἔοικεν ἐλέφαντος σπίλῳ. οὗτος λεῖος καταπλασθεὶς αἱμορροΐδας ἀποξηραίνει. ὀδόντων δὲ σμῆγμα γίνεται καυθείς.

Περὶ γαλακτίτου λίθου. Κεφ. ρκδ΄.

Ὁ δὲ γαλακτίτης ὠνόμασται, ἀπὸ τοῦ γαλακτῶδες ἀνιέναι. ἔστι μέν τοι ἄλλως ἐντεφρος τὴν χρόαν. γλυκὺς πρὸς τὴν γεῦσιν. ἁρμόζει δὲ πρὸς ὀφθαλμῶν ῥεύματα καὶ ἕλκη ἐγχριόμενος. δεῖ δὲ τρίψαντας αὐτὸν ὕδατι ἀποτίθεσθαι ἐν πυξίδι μολιβδίνῃ, διὰ τὸ περὶ αὐτὸν κολλῶδες.

Περὶ μελιτίτου λίθου. Κεφ. ρκε΄.

Ὁ δὲ μελιτίτης κατὰ πάντα ἔοικε τῷ γαλακτίτῃ. διαφορῶν ἐν τῷ γλυκύτερον ἀνιέναι τὸν χυλόν. ποιεῖ δὲ πρὸς ἃ καὶ ὁ γαλακτίτης.

Περὶ μοροχθου λίθου. Κεφ. ρκϛ΄.

Λίθος μόροχθος ὃν ἔνιοι γαλαξίαν ἢ λευκογραφίδα ἐκάλεσαν, ἐν αἰγύπτῳ γεννᾶται. ᾧ καὶ οἱ ὀθονοποιοὶ πρὸς λεύκωσιν τῶν ἱματίων χρῶνται μαλακῷ καὶ εὐανέτῳ ὄντι. δοκεῖ δὲ παρεμπλάσσειν, ἁρμόζων εὐθὺ αἱμοπτοϊκῶν. καὶ κοιλιακῶν καὶ κύστεων ἀλγήματα σὺν ὕδατι πινόμενος. καὶ ῥοϊκαῖς ὁμοίως. καὶ ἐν προσθέματι. εἴς τε τὰ μαλακτικὰ ὀφθαλμικὰ μίγνυται. πληροῖ γὰρ κοιλώματα. καὶ ῥεύματα ἵστησι. σὺν δὲ κηρωτῇ ἀναληφθεὶς, τὰ ξυφθρὰ τῶν ἑλκῶν ἀπουλοῖ.

Περὶ ἀλαβαστρίτου λίθου. Κεφ. ρκζ΄.

Λίθος ἀλαβαστρίτης ὁ καλούμενος ὄνυξ. ἀναληφθεὶς κεκαυμένος ῥητίνῃ ἢ πίσσῃ, διαφορεῖ σκληρίας. στομάχου δὲ ἀλγήματα μετὰ κηρωτῆς παρηγορεῖ. στέλλει δὲ καὶ οὖλα.

Περὶ θυΐτου λίθου. Κεφ. ρκη΄.

Λίθος ὁ καλούμενος θυΐτης. γεννᾶται μὲν ἐν τῇ αἰθιοπίᾳ. ἔστι δὲ ὑπόχλωρος. ἰασπίζων ἐν δὲ τῷ ἀνίεσθαι γαλακτώδης

φαινόμενος. ἀναδείκνων σφοδρῶς. Δύναμιν δὲ ἔχει ἀποκαθαρτικὴν τῶν ταῖς κόραις ἐπισκοτούντων.

### Περὶ ἰουδαϊκοῦ λίθου. Κεφ. ρκθ'.

Ὁ δὲ ἰουδαϊκὸς λίθος γεννᾶται μὲν ἐν τῇ ἰουδαίᾳ. τῷ σχήματι βαλανοειδής. λευκός. εὔρυθμος ἱκανῶς. ἔχων καὶ γραμμὰς παραλλήλους ὡς ἀπὸ τόρνου. ἀνιέμενος δ' ἐστὶν ἄποιος ἐν τῇ γεύσει. δύναται δὲ ἐρεβινθιαῖον μέγεθος διεθὲν ὡς κολλύριον ἐπ' ἀκόνης σὺν ὕδατος θερμοῦ κυάθοις τρισὶ καὶ ποθὲν δυσουρίαις βοηθεῖν. καὶ τοὺς ἐν κύστει λίθους θρύπτειν.

### Περὶ ἀμιάντου λίθου. Κεφ. ρλ'.

Λίθος ἀμίαντος. γεννᾶται μὲν ἐν κύπρῳ στυπτηρίᾳ σχιστῇ ἐοικώς. ὃν ἐργαζόμενοι ὑφάσματα ποιοῦσιν ἐξ αὐτοῦ ὄντος ἱμαντώδους πρὸς θέαν. ἃ βληθέντα εἰς πῦρ φλογοῦνται μὲν λαμπρότερα δὲ ἐξέρχονται μὴ κατακαιόμενα.

### Περὶ σαπφείρου λίθου. Κεφ. ρλα'.

Λίθος σάπφειρος δοκεῖ ὠφελεῖν σκορπιοπλήκτους πινόμενος. πίνεται δὲ καὶ πρὸς τὰς ἐντὸς ἑλκώσεις. καὶ πρὸς τὰς ἐν τοῖς ὀφθαλμοῖς δὲ ὑπεροχάς. καὶ σταφυλώματα, καὶ φλυκταίνας στέλλει. καὶ τὰς ῥήξεις τῶν ὑμένων συνάγει.

### Περὶ μεμφίτου λίθου. Κεφ. ρλβ'.

Λίθος μεμφίτης. εὑρίσκεται ἐν αἰγύπτῳ κατὰ μέμφιν. ἔχων ψηφίδων μέγεθος. λιπαρὸς καὶ ποικίλος. οὗτος ἱστορεῖται καταχρισθεὶς λεῖος ἐπὶ τῶν μελλόντων τέμνεσθαι ἢ καίεσθαι τόπων, ἀναισθησίαν ἀκίνδυνον ἐπιφέρειν.

### Περὶ σεληνίτου λίθου. Κεφ. ρλγ'.

Λίθος σεληνίτης, ὅν τινες ἀφροσέληνον ἐκάλεσαν διὰ τὸ εὑρίσκεσθαι αὐτὸν νυκτὸς μέσον ἐν τῇ τῆς σελήνης παραυξήσει. γεννᾶται δὲ ἐν ἀραβίᾳ, λευκός. διαυγής. κοῦφος. τοῦτον ἀποξύσαντες, διδόασι πόμα ἐπιληπτικοῖς. καὶ ἀντὶ φυλακτηρίου δὲ περιάμματι αὐτῷ αἱ γυναῖκες χρῶνται. δοκεῖ

δὲ καὶ δένδρεσι προσδεθεὶς, καρποgόνος εἶναι.

### Περὶ ἰάσπιδος λίθου. Κεφ. ρλδʹ.

Λίθος ἴασπις. ὁ μέν τις ἐστὶ σμαραγδίζων. ὁ δὲ κρυσταλλώδης. ἐοικὼς φλέγματι. ὁ δὲ ἀερίζων. ὁ δὲ καπνίας, ὡς περικεκαπνισμένος. ὁ δέ τις καὶ διαφύσεις ἔχων διαλεύκους, καὶ ἀποστιλβούσας ἀσσύριος καλούμενος. ὁ δέ τις τερεβινθίζων λέγεται. καλαΐνῳ χρώματι προσόμοιος. λέγονται δὲ πάντες εἶναι φυλακτήρια περίαπτα καὶ ὠκυτόκια μηρῷ περιαπτόμενα.

### Περὶ ἀετίτου λίθου. Κεφ. ρλεʹ.

Ἀετίτης λίθος ὁ ἐν τῷ κινεῖσθαι ἦχον ἀποτελῶν. ὡς ἑτέρου ἐγκύμονον λίθου ὑπάρχων κατόχιον ἐμβρύων ἐστίν. ὅταν ὀλισθηραὶ ὦσιν αἱ μῆτραι, περιαπτόμενοι ἀριστερῷ βραχίονι. ἐν δὲ τῷ καιρῷ τῆς ἀποτέξεως, ἄρας ἐκ τοῦ βραχίονος, περίαπτε τῷ μηρῷ. καὶ ἐκτὸς ὠδίνων τέξεται. ἔστι δὲ κλεπτέλεγχος. εἰ ἐπιθείη τις εἰς τὸν προσφερόμενον ἄρτον. ὁ γὰρ κλέψας οὐκ ἂν δυνηθείη καταποιεῖν τὰ μασηθέντα. φασὶ δὲ ὅτι καὶ συνεψόμενος ὁ ἀετίτης τοῖς ἐδέσμασι, κλεπτέλεγχος γίνεται. οὐ γὰρ δυνήσεται ὁ κλέψας καταπιεῖν τὰ συνεψόμενα αὐτῷ. λειωθεὶς δὲ καὶ ἀναλαμβανόμενος κηρωτῇ σκευασθείσῃ διὰ κυπρίνου ἢ γλευκίνου ἢ τινὸς ἑτέρου τῶν θερμαινόντων, ὀνίνησι μεγάλως ἐπιληπτικούς.

### Περὶ ὀφίτου λίθου. Κεφ. ρλςʹ.

Λίθος ὀφίτης. ὁ μέν τις ἐστὶ βαρὺς καὶ μέλας. ὁ δὲ, σποδοειδὴς τὴν χρόαν καὶ κατεστιγμένος. ὁ δέ τις γραμμὰς ἔχων λευκάς. πάντες δ' εὖ χρησοῦσι περιαπτόμενοι ἐπὶ ὀφιοδήκτων καὶ κεφαλαλγούντων. ὁ δὲ τὰς γραμμὰς ἔχων, ἰδίως ἱστορεῖται ληθάργῳ καὶ κεφαλαλγίας βοηθεῖν.

### Περὶ τῶν ἐν τοῖς σπόγγοις λίθων. Κεφ. ρλζʹ.

Λίθοι οἱ ἐν τοῖς σπόγγοις εὑρισκόμενοι, σὺν οἴνῳ ποθέντες τοὺς ἐν κύστει λίθους θρύπτουσιν.

### Περὶ λιθοκόλλης. Κεφ. ρληʹ.

Ἡ δὲ λιθοκόλλα μίγμα οὖσα μαρμάρου ἢ λίθου παρίου καὶ ταυροκόλλης, δύναται διὰ μηλωτίδος πεπυρωμένης, τρίχας ἀνακολλᾶν τὰς ἐν ὀφθαλμοῖς.

Περὶ ὀστρακίτου λίθου. Κεφ. ρλθ'.

Λίθος ὀστρακίτης ὅμοιός ἐστιν ὀστράκῳ, πλακώδης καὶ εὔσχιστος. ᾧ χρῶνται ἀντὶ κισσήρεως πρὸς τριχῶν ἄρσιν αἱ γυναῖκες. ἴσχει δὲ καὶ καταμήνια πινόμενος σὺν οἴνῳ ∠ α'. πλῆθος. δυοῖν ∠ βάρος ἐὰν πίνῃ τις ἐφ' ἡμέρας δ'. μετὰ τὴν ἄφεδρον, ἀσυλληψίαν ποιεῖ. σὺν μέλιτι δὲ ἐπιτιθέμενος, φλεγμαίνοντας μαστοὺς παρηγορεῖ καὶ νομὰς ἵστησι.

Περὶ σμύριδος. Κεφ. ρμ'.

Σμύρις λίθος ἐστίν, ᾗ τὰς ψήφους οἱ δακτυλογλύφοι σμήχουσι χρησίμη εἰς σηπτὰς καὶ καυστικάς. καὶ πρὸς οὔλων πλαδῶν καὶ ὀδόντων σμῆξιν.

Περὶ ἄμμου. Κεφ. ρμα'.

Ἄμμος ἡ παρὰ τοῖς αἰγιαλοῖς πυρωθεῖσα ὑπὸ τοῦ ἡλίου, ἐξικμάζει τὰ ὑδερώδη σώματα περιχωννύμενα δίχα κεφαλῆς. φώγνυται δὲ καὶ εἰς τὰς ξηρὰς πυρίας ἀντὶ κέγχρου ἢ ἁλῶν.

Περὶ ἀκόνης. Κεφ. ρμβ'.

Ἀκόνης ναξίας τὸ ἀπότριμμα τοῦ πρὸς αὐτὴν ἀκονηθέντος σιδήρου ἐγχρισθὲν, ἀλωπεκίας τριχοῖ. καὶ μαστοὺς παρθένων κωλύει αὔξεσθαι. ποθὲν δὲ μετ' ὄξους, σπλῆνα τήκει καὶ ἐπιληπτικοὺς ὠφελεῖ.

Περὶ λίθου γεώδους. Κεφ. ρμγ'.

Λίθος γεώδης στύφει. ξηραίνει. ἀποκαθαίρει τὰ ἐπισκοτοῦντα τοῖς ὀφθαλμοῖς. καταχρισθεῖσα δὲ μεθ' ὕδατος, μαστῶν καὶ ὄρχεων παύει φλεγμονάς.

Περὶ γῆς. Κεφ. ρμδ'.

Γῆ πᾶσα ἡ πίπτουσα εἰς ἰατρικὴν χρῆσιν, τὴν μὲν αὐτοτάτην δύναμιν ἔχει ψύχουσαν καὶ παρεμπλάσσουσαν. κατ' εἶδος

δὲ διαφορεῖ. ἄλλης. εἰς ἄλλα μετά τινος σκευασίας χρησιμευούσης.

Περὶ ἐρετριάδος γῆς. κεφ. ρμε.

Τῆς ἐρετριάδος γῆς, ἡ μέν ἐστι λευκὴ ἐπιτεταμένως. ἡ δὲ, σποδοειδής. ἀρίστη δὲ ὑπάρχει ἡ τῇ χρόᾳ σποδίζουσα καὶ μαλακὴ ἄγαν. πρός τε χαλκώματα ἑλκυσθεῖσα γραμμὴν ἰώδη ἀποφερομένη. πλατύνεται δὲ ὡς ψιμμίθιον. ἢ οὕτω λεαίνας αὐτῆς ὅσον ἂν θέλῃς κατ᾽ ἰδίαν τε καὶ σὺν ὕδατι, ἔασον καταστῆναι. εἶτα τὸ μὲν ὑγρὸν ἐλαφρῶς ἀπήθησον. τὴν δὲ γῆν ἐν ἡλίῳ ξηράνας, πάλιν τρίβε δι᾽ ὅλης ἡμέρας ἐπιδοὺς ὕδωρ. ἑσπέρας δὲ ἐάσας ὑποστῆναι, περὶ τὸν ὄρθρον ἀπήθησον. καὶ λεαίνας ἐν ἡλίῳ τροχίσκους ἀνάπλασσε ὡς δυνατόν. ἐὰν δὲ καὶ ὠπτημένης χρεία ὑπάρχῃ λαβὼν ἐρεβινθιαῖα μεγέθη τῆς γῆς δὸς εἰς ἀγγεῖον κεραμεοῦν κατατετρημμένον. πωμάσας τε τὸ στόμα ἐπιμελῶς, ἔνθες εἰς διαπύρους ἄνθρακας. καὶ ῥίπιζε συνεχῶς. ὅτε δὲ ἡ σποδὸς αἰθαλωθῇ ἤτοι ἀερώδης μᾶλλον γένηται τὴν χρόαν ἀνελόμενος ἀπόθου. Δύναμιν δὲ ἔχει στυπτικὴν καὶ ψυκτικὴν κούφως μαλακτικὴν καὶ κοιλωμάτων πληρωτικήν. καὶ ἐναίμων κολλητικήν.

Περὶ σαμίας γῆς. κεφ. ρμϛ.

Τῆς δὲ σαμίας γῆς τὴν ἄγαν λευκὴν προκριτέον. καὶ ἐλαφράν. καὶ ἐν τῷ θιγεῖν τὴν γλῶσσαν, κρατουμένην ἔχει κόλλως ἔτι τε εὔχυλον καὶ μαλακὴν καὶ εὔθρυπτον οἵα ἐστὶν ἣν τινες κολλύριον καλοῦσιν. ἔστι γὰρ αὐτῆς δύο εἴδη. τό, τε προειρημένον, καὶ ὁ καλούμενος ἀστήρ. πλακώδης ὢν καὶ πυκνὸς, ὡς ἀκόνη. Δύναμιν δὲ ἔχει καὶ καῦσιν καὶ πλύσιν ἐμφερῆ ἐρετριάδι. ἵστησι δὲ αἵματος ἀναγωγήν. καὶ ῥοϊκαῖς δίδοται γυναιξὶ σὺν βαλαυστίῳ καὶ ὄρχεων καὶ μαστῶν φλεγμονὰς καταχριομένη σὺν ὕδατι καὶ ῥοδίνῳ. στέλλει καὶ ἱδρῶτας. καὶ θηριοδήκτοις καὶ θανασίμοις ἀρήγει σὺν ὕδατι πινομένη.

Περὶ τοῦ ἐν σάμῳ λίθου. κεφ. ρμζ.

Εὑρίσκεται δέ τις ἐν τῇ σαμίᾳ γῇ λίθος, ᾧ οἱ χρυσοχόοι χρῶνται πρὸς τὸ λεαίνειν καὶ στιλβοῦν. διαφορεῖ δὲ ὁ λευκὸς καὶ

σιβαρός. Δύναμιν δὲ ἔχει στυπτικήν. ψυκτικήν. ὠφελῶν στομαχικοὺς ἐν ποτῷ. ἀμβλυντικὴν τοῖς αἰσθητηρίοις. ποιεῖ πρὸς τὰ ἐν ὀφθαλμοῖς ῥεύματα καὶ ἕλκη σὺν γάλακτι. δοκεῖ δὲ καὶ ὠκυτόκιος εἶναι καὶ φυλακτήριος τῶν συνειληφυιῶν περιαπτόμενος.

Περὶ Χίας γῆς. κεφ. μη΄.

Καὶ τῆς χίας δὲ τὴν λευκὴν καὶ ὑπότεφρον παραληπτέον, καὶ τῇ σαμίᾳ ἐμφερῆ. πλακώδης δέ ἐστι καὶ λευκή. τοῖς δὲ σχήμασι τῆς ἀναπλάσεως διαφέρουσα. Δύναμιν δὲ ἔχει τὴν αὐτὴν τῇ σαμίᾳ. τετανὸν δὲ καὶ στίλβον ἔτι δὲ εὔχρουν τὸ πρόσωπον καὶ ὅλον τὸ σῶμα ἀποτελεῖ. σμήχει δὲ ἀντὶ νίτρου ἐν βαλανείῳ.

Περὶ Σελινουσίας γῆς. κεφ. μθ΄.

Τὰ αὐτὰ δὲ ποιεῖ καὶ ἡ σελινουσία γῆ. ἀρίστη δέ ἐστιν ἡ ἄγαν στίλβουσα καὶ λευκή. εὔθρυβής δὲ καὶ ταχέως ἄγαν χυλουμένη ἐπειδὰν ὑγρὸν λάβῃ.

Περὶ κιμωλίας γῆς. κεφ. ν΄.

Τῆς δὲ κιμωλίας ἡ μέν ἐστι λευκή. ἡ δὲ ἐμπόρφυρος. καὶ λιπαρείαν τινὰ ἔμφυτον κεκτημένη. πρός τε τὴν ἀφὴν κατάψυχρος. ἣν ἀρίστην ἡγητέον. ἑκάτεραι δὲ διαφοροῦσιν ὄξει διειμέναι, παρωτίδας καὶ τὰ ἄλλα φύματα. πρός τε τὰ πυρίκαυτα ποιοῦσιν ἐπιχριόμεναι παραχρῆμα. ὥς τε ἀφλυκταίνωτα διατηρεῖν τὰ πεπονθότα μέρη. καταστέλλουσι δὲ καὶ διδύμων σκληρίας καὶ φλεγμονὰς τὰς περὶ ὅλον τὸ σῶμα. ἔτι δὲ ἐρυσιπέλασιν ἐνίστανται. καθόλου δὲ πολύχρηστοι εἰσὶν αἱ γνήσιοι ἐὰν μὴ νόθοι παραλαμβάνονται.

Περὶ πνιγίτιδος γῆς. κεφ. να΄.

Ἡ δὲ λεγομένη πνιγῖτις γῆ, τῇ χρόᾳ ἔοικέ πως τῇ ἐρετριάδι. ἔστι δὲ ἁδρόβωλος. ψυκτικὴ πρὸς τὰς τῶν χειρῶν ἐπιβολάς. τῇ τε γλώσσῃ μάλιστα κολλᾶται ὡς ἐκκρεμᾶσθαι. δύναμιν δὲ τὴν αὐτὴν ἔχει τῇ κιμωλίᾳ. βραχὺ τῆς εὐτονίας

ὑδροῦσα ταύτην ἀντὶ ἐρετριάδος τινὲς πιπράσκουσι.

Περὶ ὀστράκων. Κεφ. ρνβ′.

Ὄστρακα δὲ τὰ ἐξ ἰπνῶν τὰ λίαν κατοπτὰ, ἐσχαρωτικά. ὅθεν ἐπιχριόμενα σὺν ὄξει, κνησμοὺς καὶ ἐξανθήματα ἰᾶται. καὶ ποδαγρικοὺς ὠφελεῖ. ἀναληφθέντα τε κηρωτῇ χοιράδας διαφορεῖ.

Περὶ τῆς ἐκ τῶν καμίνων γῆς. Κεφ. ρνγ′.

Καὶ ἡ ἐκ τῶν καμίνων δὲ κατοπτὸς γῆ πυῤῥὰ, τὴν αὐτὴν ἔχει δύναμιν τοῖς ὀστράκοις.

Περὶ μηλιάδος γῆς. Κεφ. ρνδ′.

Ἡ δὲ μηλιὰ τὴν μὲν χρόαν καὶ αὐτὴ ἐστὶν ἐμφερὴς ἐρετριάδι τῇ σποδοειδεῖ. ἐντραχὺς δὲ καὶ παρατριβομένη τοῖς δακτύλοις, ὡς ψιθυρισμόν τινα ἀποτελεῖν ὅμοιον ψωχομένῃ κισσήρει. τῇ δὲ δυνάμει στυπτηριώδης ἐστίν. ἀνειμένως δὲ μᾶλλον, ὃ δὴ καὶ διὰ τῆς γεύσεως ἐμφαίνει. ἀναξηραίνει δὲ καὶ τὴν γλῶσσαν πραέως. δύναται δὲ καθαρὸν καὶ εὔχρουν ἀποτελεῖν τὸ σῶμα. λεπτύνει δὲ καὶ τὰς τρίχας καὶ ἀλφοὺς καὶ λέπρας σμήχει. χρησιμεύει δὲ καὶ ζωγράφοις πρὸς πλείονα παραμονὴν χρωμάτων. καὶ χλωραῖς δυνάμεσι συνεργεῖ. καὶ ταύτης δὲ κοινῶς ἁπάσης γῆς τὴν ἄληθον ἐκλεκτέον καὶ πρόσφατον. μαλακήν τε καὶ εὔθρυβῆ. καὶ εὔλυτον ὅταν ὑγροῦ θίγῃ.

Περὶ ἀμπελίτιδος γῆς. Κεφ ρνε′.

Τῆς δὲ ἀμπελίτιδος γῆς ἣν τινὲς φαρμακῖτιν καλοῦσι γεννωμένης ἐν σελευκείᾳ τῇ κατὰ συρίαν, τὴν μέλαιναν προκριτέον, καὶ πευκίνοις ἄνθραξι μικροῖς ἐμφερὴς ἐστίν. ὑποσχιδακώδης τε καὶ στίλβουσα ἴσως. ἔτι δὲ οὐδὲ βραδέως τηκομένη. ὅταν λεανθείσῃ ἐπιχυθῇ ποσῶς ἔλαιον. τὴν δὲ λευκὴν καὶ τεφρώδη καὶ ἄτηκτον, φαύλην ἡγητέον. δύναμιν δὲ ἔχει διαχυτικὴν καὶ ψυκτικήν. παραλαμβάνεται δὲ καὶ πρὸς καλλιβλέφαρα καὶ βαφὰς τριχῶν. καὶ

τὰς τῶν ἀμπέλων χρίσεις πρὸς τὴν τῆς ἐκβλαστήσεως ὥραν, κτείνουσα τοὺς ἐπιγινομένους σκώληκας.

## Περὶ Ἀσβόλης. Κεφ. ρνϛʹ.

Ἀσβόλη ᾗ οἱ ζωγράφοι χρῶνται, λαμβάνεται μὲν ἐκ τῶν ὑελουργῶν. διαφορεῖ γὰρ αὕτη. Δύναμιν δὲ ἔχει σηπτικὴν. στυπτικὴν. ἀπουλοῖ δὲ καὶ κατάγματα σὺν ῥοδίνῃ κηρωτῇ.

## Περὶ Μέλανος. Κεφ. ρνζʹ.

Μέλαν ᾧ γράφομεν, συνάγεται ἐκ λιγνύος συναγομένης ἐκ δᾳδίων. μίγνυται δὲ πρὸς τὴν οὐγγίαν α τοῦ κόμμεως οὐγγίαι τρεῖς λιγνύος. σκευάζεται δὲ καὶ ἀπὸ τῆς ῥητίνης λιγνύος καὶ τῆς προειρημένης ζωγραφικῆς ἀσβόλης. δεῖ δὲ τῆς μὲν ἀσβόλης μνᾶν μίαν λαμβάνειν. κόμμεως δὲ λίτραν μίαν ἥμισυ. ταυροκόλλης οὐγγίαν μίαν ἥμισυ χαλκάνθου οὐγγίαν μίαν ἥμισυ. ἁρμόζει δὲ εἴς τε σηπτὰ καὶ πυρίκαυστα. καταχριόμενον μεθ' ὕδατος παχύ. καὶ ἐώμενον ἄχρις ἀπουλώσεως. ἀποπίπτει γὰρ αὐτόματον ὑγιαθέντων τῶν ἑλκῶν. Καὶ δὴ
σχεδὸν ἐφ' ὅσον ἱκανὸν ἐδόξαμεν ὦ φίλτατε Ἄρειε
ἅμα εἶναι καὶ μήκους συντάξεως, καὶ πλή-
θους ὕλης τε καὶ βοηθημάτων-
τα μηνύσασθαι, ἅ-
λις ἔχει.

ΤΕΛΟΣ.

# ΠΕΔΑΚΙΟΥ ΔΙΟΣΚΟΡΙΔΟΥ ἈΝΑΖΑΡΒΕΩΣ ΠΕΡῚ ΔΗΛΗΤΗΡΙΩΝ ΦΑΡΜΑΚΩΝ ΚΑῚ ΤΗΣ ΑΥΤΩΝ ΠΡΟΦΥΛΑΚΗΣ ΒΙΒΛΙΟΝ ἝΚΤΟΝ.

Προειδότες ἐν τοῖς προγεγραφόσι βιβλίοις φίλ
τατε Ἄρειε, τὸν περὶ ἀρωμάτων καὶ ἐλαίων
α καὶ μύρων καὶ δένδρων καὶ τῶν ἐξ αὐτῶν
καρπῶν καὶ δακρύων, ἔτι τε ζώων καὶ μέ
λιτος, καὶ γάλακτος καὶ στέατος, καὶ τῶν λε
γομένων σιτηρῶν καὶ λαχάνων, ἔτι τε τὸν
σύμπαντα περὶ ῥιζῶν καὶ βοτανῶν καὶ χυλισμάτων,
καὶ οἴνων καὶ μεταλλικῶν λόγον, ἐν τούτῳ τελευταίῳ ὑ
πάρχοντι τῆς ὅλης πραγματείας καταλεξόμεθα, περὶ
τῆς τῶν ὠφελεῖν ἡμᾶς ἢ βλάπτειν δυναμένων φαρμάκων
ἐνεργείας. Παραιτησόμενοι οὖν τὴν πολυλογίαν, ἐπά
νιμεν εὐθὺ ἐπὶ τὸ προκείμενον. μεριζομένου δὲ τοῦ τοιούτου δί
χη, εἴς τε προφυλακὴν τοῦ μηδὲ τὴν ἀρχὴν λαμβάνειν, ἢ εἰ
καί ποτε λάθοι διδόμενα, ἀνενέργητα γίνεσθαι, καὶ εἰς τὸ
βοηθηματικὸν τῶν πεπωκότων. Πρῶτον δίειμι περὶ τοῦ
προφυλακτικοῦ τρόπου, δυσχεροῦς ὄντος ὡς οἱ ἀρχαῖοι ὑπέ
λαβον διὰ τὸ τοὺς λάθρα διδόντας οὕτω μηχανᾶσθαι ὡς καὶ
τοὺς ἐμπειροτάτους ἐξαπατᾶν. τὰς μὲν γὰρ πικρίας ἐ
ξαιροῦνται τῶν φθαρτικῶν φαρμάκων ταῖς μιγνυμέ
ναις γλυκύτησι. τὰς δὲ δυσωδίας ταῖς τῶν ἀρωμάτων κα
ταμίξεσιν ἢ ταῖς τῶν ὑλῶν ἐπ᾽ ὠφελείᾳ δοκουσῶν προσφέ
ρεσθαι. μάλιστα δ᾽ ἐν ταῖς ἀηδίαις ὡς ἀψινθίῳ ἢ τραγορι-
γάνῳ ἢ ὑσσώπῳ ἢ θύμβρᾳ. θύμῳ τε καὶ ὀριγάνῳ ἢ ἀβροτό
νῳ. ἴριδι ἢ κασσίᾳ. καὶ ἔτι δοκεῖ κατάλληλον τοῖς καταρ
γουμένοις φαρμάκοις ἔχειν ποιότητα. εὐθὺ δὲ τῶν πινομέ-
νων ἐν οἴνοις σκληροῖς ἢ ζωμοῖς. ἢ ἐν γλυκεῖ. ἢ ἐν μελικράτῳ.
ἢ ἐν γλεύκει. ἢ ἐν χυλοῖς. ἢ φακῷ. ἢ ἐν ἀλφίτοις. ἢ ἐν φαρμα

κοις ἢ ἐν ἄλλοις τισὶ τῶν προσφερομένων συναποποιοῦντες. ὅθεν τὸν ὑποπτεύοντα δεῖ παραιτεῖσθαι τὰ κατηρτυσμένα τῶν ἐδεσμάτων. καὶ πᾶσαν ἐπιτεταμένην ποιότητα γεύσεων, ὅσαι εἰσὶ διὰ τῶν γλυκέων ἢ ἁλυκῶν ἢ ὀξέων διαφυλάττεσθαι καὶ τοὺς δεδιψηκότας ἢ πεινῶντας δι᾽ ἐπιτάσεως, μὴ ἀθρόως πίνειν ἢ ἐσθίειν προσέχοντας τῇ ποιότητι τούτων. μάλιστα δὲ ψυχρὸν ὕδωρ προλαμβάνειν πίνοντας. ἀποπληρωθείσης γὰρ τῆς ὀρέξεως, ἀπεπλότατοι γίνονται τὸ λοιπὸν αἱ ποιότητες. καὶ ὧδε μὲν τῶν ἀσθενούντων, καλῶς παραιτούμεθα τὰς παρὰ τῶν ἐπ᾽ ὠφελείᾳ δίδοσθαι φαρμάκων πόσεις. ἃς εἰσφέρουσιν οἱ κακουργοῦντες τὰ δηλητήρια. ὥστε διὰ τούτου δυσεπιχειρήτους γίνεσθαι τοὺς νοσοῦντας. καὶ ἡ μὲν πρὸς τὸ μὴ εὐχερῶς ἁλίσκεσθαι πλανωμένους ἔφοδος, αὕτη. ἑτέρα δὲ ἥ τις ἐστὶν αὐτικωτέρα, δεῖ τοὺς ὑποπτεύοντάς τι τοιοῦτον, προλαμβάνειν τι. καὶ ἀδύνατα κατασκευάζειν τὰ φάρμακα. ὡς τάς τε ἰσχάδας μασσωμένους μετὰ βασιλικῶν καρύων, καὶ τὰ καλούμενα δὲ κεδρόμηλα, βουνιάδος τε σπέρματος ὁλκὴν μετ᾽ οἴνου, ἢ καλαμίνθης τῶν φύλλων ὁμοίως, ἢ μίλτου τῆς καλουμένης λημνίας σφραγῖδος, τὸ αὐτὸ πλῆθος σὺν οἴνῳ, ἢ πηγάνου φύλλα καὶ καρύων βασιλικῶν τὸ ἐντὸς, ἢ ἁλῶν χόνδρον καὶ ἰσχάδας δύο νήστεις προσφερέσθωσαν. καὶ ὑπ᾽ οὐδενὸς οἱ τοιοῦτοι βλαβήσονται φαρμάκου. καὶ ἀντίδοτοι δὲ προσλαμβανόμεναι μετ᾽ οἴνου τὸ αὐτὸ ποιοῦσιν. ὧν ἐστὶν ἡ διὰ τοῦ σκίγκου, καὶ ἡ διὰ τῶν αἱμάτων καὶ ἡ καλουμένη μεγάλη μιθριδάτειος. ἀντιπάσχουσι γὰρ πολλάκις καὶ ἰδιοσυγκρίσεις σωμάτων αἱ πρὸς διαθέσεις, διά τινας βρωμάτων ἢ πωμάτων ποιότητας. ἢ πλῆθος οἴνου. ἐκλύουσι γὰρ τὰς ἐνεργείας τῶν ἐπιφερομένων φαρμάκων. καὶ τὴν ἀνάδοσιν αὐτῶν κωλύουσι προπεπληρωμένων τῶν πόρων διὰ τῆς προληφθείσης τροφῆς.

Ἐπειδὴ δὲ καὶ περιστάσεις τινὲς ἐν ἀποδημίᾳ δίχα ἐπιβουλῆς πολλάκις ἐπιφέρουσιν ὁμοίους κινδύνους, ἀναγκαῖον ὑπολαμβάνω καὶ περὶ τούτου διαλαβεῖν. δεήσει γὰρ πρῶτον μὲν ἐν ὑπαίθροις τόποις, ὡς δυνατὸν ἕψειν. καὶ ἑτοιμάζειν τὰ πρὸς βρῶσιν καὶ πόσιν. δεύτερον δ᾽ ἐν ὑποστέγῳ

ἐπιμελῶς

ἐπιμελῶς καταμανθάνειν τὰς ὀσφράς. πολλάκις γοῦν ἐκ τῶν ὑποκειμένων ἐπιπίπτει ζωΰφια φθοροποιά, ὥσπερ φαλάγγια. καὶ ἄλλα τινὰ ἑρπετά. καὶ ὁ καλούμενος ἀσκαλαβώτης. καὶ τοῖς ἐπιχέουσι δὲ τὸν οἶνον ἀγγείοις ἀναρτῶς καὶ ἐπιμελῶς προσέχειν δεῖ. ἕλκεται γὰρ ὑπὸ τῆς ὀσμῆς τοῦ οἴνου τὰ ἑρπετά. ἅτινα πολλάκις ἐπιόντα μὲν τὸν ἰὸν ἀπήμεσαν. ἐμπεσόντα δὲ ἀπέθανον. καὶ ἀπωλείας ἐγίνοντο αἴτια τοῖς προσενεγκαμένοις. Πρὸς μὲν τὸ ἀνεπιβούλευτον εἶναι, καὶ προφυλάσσεσθαι, ταῦτα εἰρήσθω. εἰ δέ τινες ἑκουσίᾳ γνώμῃ προσενέγκοιντο, ἢ καὶ ἐξ ἐπιβουλῆς τινων λάβοιεν, δεήσει μηδὲν ἀναβαλλομένους βοηθεῖν. εἰς γὰρ τὸ ὑπομένειν τὰ παρακολουθοῦντα σημεῖα ἑκάστου τῶν φαρμάκων ἀνίατον ἐστὶ δυσβοηθήτων αὐτῶν διὰ τὸν χρόνον γινομένων. ἐὰν μὲν οὖν οἱ προσενεγκάμενοι νοσήσαντες ὁμολογήσωσι τὸ ποθὲν φάρμακον, ἤ τινες τῶν συμπαρόντων, παραχρῆμα ἐλθόντες εὐθὺ τὰ κατάλληλα βοηθήματα, ῥᾳδίως εἰς τὸ κατὰ φύσιν καὶ οἰκεῖον ἄξομεν αὐτοὺς κατάστημα. οὐ συγκατατιθέμεθα τοῖς λέγουσιν ἔνια αὐτῶν κατὰ πᾶν ἀθεράπευτα γίνεσθαι. πῶς γὰρ τὰ μὲν εὐθὺ τῶν ἐν τῷ σώματι γινομένων αὐτῶν πάθη, θεραπείαν ἐπιδέχεται. τὰ δὲ ἀπὸ τῶν ἔξωθεν συμπιπτόντων φαρμάκων ἀθεράπευτα τυγχάνει. ὁμοίως γὰρ πάντα τὰ περὶ τὰ σώματα γινόμενα νοσήματα, θεραπευτά τε καὶ ἀθεράπευτα. κατὰ τὰ μεγέθη τῶν προσπιπτόντων αἰτίων, καὶ τὰς προδιαθέσεις καὶ ἐπιτηδειότητας τῶν σωμάτων. εἰ δέ τινες αὐτῶν καταληφθέντες ἀφωνίαις ἢ παροινίαις, ἢ ἄλλως διὰ τὸ μὴ βούλεσθαι ἐξαγγέλλειν αὐτὸ ἀσυμφανὲς ἡμῖν ποιοῦσι τὸ φάρμακον, τότε δεῖ ταχέως ἔρχεσθαι εὐθὺ τὰ κοινῶς ἁρμόττοντα τοῖς οἱονδήποτε φάρμακον πεπωκόσιν. οὐδὲν δὲ δύναται κοινότερον βοήθημα δίδοσθαι, τοῦ τὸ δοθὲν φάρμακον πρὸ τοῦ ἐνισχῦσαι, διὰ τῶν ἔγγιστα τόπου κενοῦν εἰς τὸ ἐκτός. ὅθεν μηδὲν ἀναβαλλομένους προσφέρειν δεῖ ἔλαιον θερμόν. ἢ κατ' ἰδίαν ἢ μεθ' ὕδατος ἐμεῖν ἀναγκάζοντας. εἰ δὲ μὴ παρείη ἔλαιον τῶν τόπων μὴ φερόντων. βούτυρον ἀντὶ ἐλαίου μεθ' ὕδατος θερμοῦ ἢ μαλάχης. ἢ λινοσπέρμου ἢ τράγου. ἢ τήλεως ἢ κνίδης

σπέρματος. ἢ χόνδρου ἀφεψήματος. οὐ μόνον γὰρ κενώσει
ταῦτα διὰ τῶν ἐμέτων εὐχερῶς χαλασμὸν καὶ ναυτίαν ἐμ
ποιοῦντα. ἀλλὰ καὶ ὑπάξει τὴν κοιλίαν. καὶ ἐναντιωθήσε
ται τῇ κενώσει τῶν σωμάτων, ἀμβλυντικὰ τῶν δριμυτή
των καθεστῶτα. ἔστι δὲ ἐναργῶς καταλαβέσθαι τοῦτο. εἰ γάρ
τις ἑλκῶσαι προαιρούμενος δι' ἀσβέστου, ἢ φυγὸς ἢ κανθαρ
ίδος ἢ τινὸς ἄλλου δριμέως τὸ σῶμα ἀποχρίσει ἐλαίῳ, οὐ
χ' ἑλκωθήσεται ἀπὸ τούτου. καὶ μὴν οὐδ' εἴ τις στύψαι
θελήσει ἰσχυρῶς ἢ ψύξαι, δύναται προλιπαίνων. ἔτι μὴν
ἔμετος οὐ μόνον καθ' ὃ κενοῖ καὶ ἀποκρίνει τὸ βλάπτον ὠφε-
λεῖ, ἀλλ' ὅτι καὶ δείκνυσι τὸ ληφθὲν ἐνίοτε, ἔκ τε ὀσμῆς. ἢ
θρόμβων ἢ χρώματός τινος. ἐκ μὲν γὰρ τῆς ὀσμῆς, καὶ πικεί
ας, μηκώνειον. ἐκ δὲ χρόας ψιμμύθιον ἢ γύψον, ἀπὸ δὲ θρόμ
βου, γάλα ἢ τὸ νεοσφαγὲς αἷμα. ἀπὸ δὲ βρώμου καὶ ποιότη
τος τοῦ ἐμουμένου καὶ ὀσμῆς, λαγωὸν θαλάττιον καὶ φρῦνον
ὡς διὰ τούτων ἢ δι' ἑτέρων ἔνια δύνασθαι βοηθεῖν. ἀρχομένους
εὐθὺ τὰ ἑκάστῳ ἁρμόζοντα βοηθήματα. παραμίγνυται
δὲ τῷ ἐλαίῳ μαλάχης ἀφέψημα. ἢ γλαύκιον, ἢ στέαρ χήνειον,
ἢ ζωμὸς ἐκ λιπαρῶν κρεῶν γεγονώς. ἢ κονία ἡ διὰ τῶν ξύ-
λων. κομισάμενος δὲ διὰ τῶν ἐμέτων ἐπιμελῶς, διὰ τὸ μηδὲν
ἀπολείπεσθαι ἐν τῇ κοιλίᾳ, τὸ ἐμμεῖναν ἐν τοῖς ἐντέροις
κλύσματι δριμεῖ κομιούμεθα. ποιεῖ δὲ καὶ τὸ νίτρον λεῖον σὺν
ὑδρομέλιτι παραλαμβανόμενον, καὶ οἶνοι πολλοὶ καὶ πα
λαιοὶ πινόμενοι. καὶ ζωμοὶ ὀρνίθειοι. ἰχθύες λιπαροί. καὶ κρέα
παλαιὰ καὶ λιπαρά. καὶ τὰ διὰ στέατος ἢ βουτύρου προσφάτου.
ὑπάγοντα γὰρ τὴν κοιλίαν ὡς προεῖπον καὶ τὸν στόμαχον ἀναλύον
τα, ἑτοιμότερον κατασκευάζει τὸν στόμαχον πρὸς τὸν ἔμετον.
ἀμβλύνει τε τὴν δριμύτητα αὐτῶν. καὶ παρεμπλαττόμενα
τοῖς πόροις κωλύει τὴν ὀξύτητα τῆς τῶν φαρμάκων δυνά
μεως. δίδονται δὲ καὶ ἁρμόζοντα φάρμακα. κοινῶς. ὧν ἐστὶν
ἡ λημνία μίλτος. ἀγαρικόν. ἀβρότονον. ἐρύσιμον. ἠρυγγίου ῥί
ζα. σταφυλίνου σπέρμα καὶ καλαμίνθης. νάρδος κελτική.
καστόρειον. νάρθηκος χλωροῦ ἐντεριώνη. νηρείου τοῦ καλουμέ
νου ῥοδοδένδρου ἄνθος. πρασίου χυλός. σίλφιον. ἢ ὁ ὀπὸς
αὐτοῦ. σαγάπηνον. ὀποπάναξ. πευκεδάνου ὀπός, καὶ ἡ ῥίζα

τὴν καὶ μαγύδαριν ἐκάλεσαν. ἀριστολοχία μακρά. πηγάνου ἀγρίου σπέρμα. κέδρου τῆς βεττονικῆς καλουμένης τὰ φύλλα. δίδοται δὲ ἕκαστον σὺν οἴνῳ ∠ α΄ πλῆθος. ποιεῖ καὶ πολίου ἀφέψημα καὶ σέσελι καὶ πάντα ὑγρὰ λεῖα ἐκλειχόμενα. γενναιότατα δὲ βοηθοῦσι καὶ αἱ ἀντίδοτοι. ὧν τὰς σκευασίας ἐπὶ τέλει ἀναγράψομεν. κοινῶς δὲ βοηθητέον τούτοις τὸν τρόπον τοῦτον. δυνατὸν δὲ καὶ ἐκ τῶν παρακολουθούντων συμπτωμάτων, κοινὰ καὶ τὰ βοηθήματα συμπαραλαμβάνεσθαι. σχεδὸν γὰρ αἱ τῶν πλείστων φαρμάκων δυνάμεις, εἰς ὁμοιοτρόπους περιάγουσι τὸ σῶμα διαθέσεις. δι' ἣν αἰτίαν ἐπὶ τῶν πλείστων τὰ κοινὰ βοηθήματα αἰνεῖ. ποικίλα μὲν γὰρ τὰ δηλητήρια φάρμακα. κοιναὶ δὲ καὶ οὐ πολλαὶ αἱ ἐξ αὐτῶν γινόμεναι διαθέσεις. ἀδύνατον γὰρ πάντα τὰ συμπτώματα ἐνὶ παρακολουθῆσαι. εἰ γὰρ τὴν τούτων, παρεῖλκεν ἂν ἡ καθ' ἕκαστον φάρμακον διὰ τῶν βοηθημάτων παράδοσις. τό, τε γὰρ ἀλγεῖν στόμαχόν τε λίαν καὶ ἔντερα ἢ πάρτε καὶ νεφροὺς καὶ κύστιν, ἔτι δὲ λύζειν καὶ δάκνεσθαι καὶ τρέμειν, ἀφώνους τε εἶναι καὶ περιψύχεσθαι, σπᾶσθαί τε καὶ ἀσφυκτεῖν καὶ δυσπνοεῖν. καὶ καταφέρεσθαι καὶ σκοτοῦσθαι καὶ πνίγεσθαι καὶ διψᾶν καὶ αἱμορραγεῖν, πυρέσσειν τε καὶ δυσουρεῖν. καὶ στροφοῦσθαι. καὶ ἐμεῖν πυκνὰ ἢ ναυτιᾶν. ἐρυθραίνεσθαί τε καὶ πελιδνοῦσθαι καὶ ὠχριᾶν. παραφρονεῖν τε καὶ ῥέγχειν καὶ παρίεσθαι, καὶ ἄλλα πολλὰ ποιεῖν καὶ διάφορα πάσχειν, ἐνὶ μόνῳ δύσκολον εὑρεῖν παρεπόμενον, ἕκαστον μυρίαθεν εἰς ὀλίγας διαθέσεις ὀλίγων ἀριθμὸν καὶ κοινῶν ὑποδεῖξαι συμπτωμάτων. διὸ καὶ ἐφ' ἑνὸς ἑκάστου τῶν προειρημένων οὐκ εὔκολον τὸ εἰλημμένον φάρμακον γινώσκεσθαι. τὸ γὰρ δάκνεσθαι τὸ στόμα καὶ γλῶτταν, καὶ φλεγμαίνειν στόμαχον καὶ κοιλίαν τε καὶ νεφροὺς καὶ κύστιν, δυσουρεῖν τε ἰσχυρῶς, ἐνίοτε δὲ καὶ αἷμα δι' οὔρων πορεύεσθαι, καὶ λακιδοῦσθαι. διαπεπρῆσθαί τε πολλὰ μέρη τοῦ σώματος, οὐ μόνον ἐπὶ κανθαρίδων εὑρίσκεται παρακολουθοῦντα, ἀλλὰ καὶ ἐπὶ πιτυοκάμπης καὶ βουπρήστεως καὶ σαλαμάνδρας. τό, τε καταφέρεσθαι ἢ καροῦσθαι ἢ ῥέγχειν, πελιοῦσθαί τε καὶ νωθρειᾶν καὶ καταψύχεσθαι καὶ

ναρκᾶν, ἀναισθητεῖν τε καὶ ὀδαξεῖσθαι τὸ ὅλον σῶμα, οὐ μόνον τοῖς τὸ μηκώνειον πεπωκόσι παρέπεται, ἀλλὰ καὶ τοῖς μανδραγόραν ἢ κώνειον προσενηνεγμένοις. ἔτι, τὸ παραφρονεῖν, οὐ μόνον ὑοσκύαμος ἐπιφέρει, ἀλλὰ καὶ τὰ τοξικὰ καλούμενα τῶν φαρμάκων. καὶ ἀκόνιτον δὲ, καὶ τὸ μέλι τὸ γεννώμενον ἐν ἡρακλείᾳ τῇ ποντικῇ. καὶ τὸ πνίγεσθαι δὲ οὐ μόνον ἐπὶ μυκήτων ὁρᾶται, ἀλλὰ καὶ ἐπὶ αἵματος ταυρείου. καὶ γάλακτος καὶ ἀκονίτου καὶ γύψου καὶ ψιμμιθίου. καὶ καθόλου δύσκολον ἐὰν θέλῃς εὑρεῖν σημεῖον δυνάμενόν τι τῶν πινομένων καὶ γινομένων φαρμάκων δηλῶσαι, καὶ μάλιστα ὅτι κοινὰ καὶ τοῖς ἄλλοις ἐπιγινομένοις πάθεσι παρακολουθεῖ ταῦτα. πλὴν ἐπὶ μὲν τῶν ὀξέως ἀναιρούντων, ἔστι που καὶ σημειώσασθαι τὸ βλεπόμενον ὡς παραδώσομεν. ἐπὶ δὲ τῶν χρονίας διαθέσεις παρασκευαζόντων, δύσκολον οὐδὲν πρὸς τὴν θεραπείαν τοῦ περὶ τὴν σημείωσιν δυσχεροῦς βλάπτοντος. ἐκφυγόντα γὰρ τὴν ὀξύτητα τῆς ἐνεργείας τὰ φάρμακα, καὶ μεταληφθέντα εἰς χρονίους, κοινῶς λαμβάνει τοῖς λοιποῖς πάθεσι τὰς κατασκευὰς, καὶ τὰς βοηθείας, τῆς ἰδιότητος τῶν πινομένων φαρμάκων μηκέτ' ἐνούσης. διαθέσεως δὲ χρονίου κατεσκευασμένης ὑπ' αὐτῶν ἡ διάθεσις πάντων εἰς ἕν τι γένος τῶν χρονίων ἐμπίπτει παθῶν. ἐφ' ὧν εὐχερές ἐστι καὶ τὴν θεραπείαν ἀναλαμβάνειν. καὶ τὰ μὲν κοινῶς βοηθοῦντα ταῦτ' ἐστίν. οἷς ἀκολούθως ἀναγράψομεν καὶ τὰ ἴδια ἑκάστοις ἁρμόζοντα. προεκθέμενοι ὑφ' ἓν ὅσα φθαρτικὴν ἢ κακωτικὴν ἔχει δύναμιν ἑκάστης τάξεως. καὶ ἵνα πεφυλαγμένως ἔχῃς τινὰ τῶν πρὸς ὑγείαν ἀναγεγραμμένων φαρμάκων ἔχοιεν τινὰ τούτων μεμιγμένα φάρμακα οἱ φιλοσοφοῦντες οἷς χρῶνται. τὸ γὰρ ἀπειρόσκεπτον μεγάλας ἐπιφέρει βλάβας. καὶ πολλάκις διὰ τὴν συνεχῆ χρῆσιν αὐτῶν, ἀπωλείας αἴτια γίνεται. ζῶα μὲν οὖν ἐστι φθαρτικὰ τάδε. κανθαρίδες. βούπρηστις. σαλαμάνδρα. πιτυοκάμπη. λαγωὸς θαλάσσιος. φρῦνος ὁ λεῖος. βάτραχος ἕλειος ἄφωνος. βδέλλαι καταποθεῖσαι. σπερμάτων ὑοσκύαμος. κόρειον. κώνειον. μελάνθιον. ψύλλιον. ὀπισμάτων δὲ μηκώνειον. ὀποκάρπασον. θαψίας χυλός. ἐλατήριον. μαν

δραγόρας ῥιζῶν δὲ χαμαιλέων. ἀκόνιτον. θαψία. ἐλλέβορος. ἰξίας. ἀγαρικὸν τὸ μέλαν. ἐφήμερον ὃ ἔνιοι κολχικὸν καλοῦσι διὰ τὸ ἐν κολχίδι γίνεσθαι. ποῶν δὲ καὶ λαχάνων, σμίλαξ. ἣν ἔνιοι τιθύμαλον. ῥωμαῖοι δὲ τάξιον ἢ τάξον καλοῦσι. στρύχνον μανικὸν ὃ καὶ δορύκνιον καλοῦσιν. ἥ τε σαρπηδόνιος πόα οὖσα βατράχου εἶδος. μήκων. κερατῖτις. φθαρικόν. τοξικόν. πήγανον ἄγριον. μύκητες. ἀπὸ ζώων δὲ αἷμα ταύρειον νεαρόν. καὶ τὸ ἐμπυτιασθὲν γάλα. μέλι τε τὸ ἐν ἡρακλείᾳ τῇ ποντικῇ γινόμενον. μεταλλικὰ δὲ, γύψος. ψιμμίθιον. τίτανος. ἀρσενικόν. σανδαράχαι δύο. λιθάργυρος. ἀδάρκη. μόλιβδος. καὶ ἡ καλουμένη ὑδράργυρος. τῶν δὲ στεμφύλων, οἶνος ἄθρους ποθεὶς πολὺς ἀπὸ βαλανείου ἢ γλυκύς. ἢ ψυχρὸς ὁμοίως.

## Περὶ κανθαρίδων. Κεφ. ξνη.

Τοῖς οὖν κανθαρίδας προσενηνεγμένοις, παρέπεται χαλεπώτατα σημεῖα. σχεδὸν γὰρ ἀπὸ τοῦ στόματος μέχρι κύστεως πάντα δάκνεσθαι δοκεῖ αὐτοῖς. καὶ κατὰ τὴν γεῦσιν, πίσσῃ ἢ κεδρίᾳ ὅμοιόν τι ἐγγίνεσθαι. φλεγμαίνουσι δὲ τὸ δεξιὸν ὑποχόνδριον καὶ δυσουροῦσι. πολλάκις δὲ αἷμα προΐενται δι᾽ οὔρων. φέρεται δ᾽ αὐτοῖς κατὰ κοιλίαν ὅμοια τοῖς ἐπὶ δυσεντερικῶν. λειποθυμίαις τε καὶ ἄσαις καὶ σκοτοδινίαις περιπίπτουσιν. ἐπὶ τέλει δὲ παραφρονοῦσι τὴν διάνοιαν. δεῖ οὖν πρὸ τοῦ παρακολουθῆσαί τι τοιοῦτον, ἀναγκάζειν ἐμεῖν. διδόντας αὐτοῖς τὸ ἔλαιον. ἢ ἄλλο τι τῶν προειρημένων. καὶ μετὰ τὸ κομίσασθαι τὰ πλεῖστα διὰ τῶν ἐμέτων ἐνιέναι διὰ κλυστῆρος χυλὸν χόνδρου, ἢ ὀρύζης, ἢ τράγου. ἢ πτισάνης, ἢ μαλάχης ἀφέψημα, ἢ λινοσπέρμου, ἢ τήλεως. ἢ τῶν ῥιζῶν τῆς ἀλθαίας. ἣν ἐβίσκον ὀνομάζουσι ῥωμαῖοι. ἐπιδιδόναι τε αὐτοῖς νίτρον σὺν ὑδρομέλιτι πρὸς τὸ καταβιβάσαι καὶ ἐκνίψαι τὰ ἔτι παρακείμενα τῷ στομάχῳ καὶ ἐντέροις. καὶ ἐὰν μὴ διακοπῇ, κενοῦν δεῖ μελίκρατον ἐνιέντας μετὰ νίτρου καὶ ἐπιδιδόναι οἶνον ἢ γλυκύ. συντετριμμένων αὐτῷ στροβίλων καὶ σικύων σπέρματος. ἢ γάλακτος ἢ μελικράτου. ἢ στέαρ χοίρειον συντετηκὸς ἐν γλυκεῖ. τὰ δὲ φλεγμαίνοντα μέρη καταπλάσσοντας κριθῶν ἀλεύρῳ ἑψημένῳ μετὰ με-

λικράτου κατ᾽ ἀρχὰς μετ᾽ οἴνου παραλαμβανόμενα τὰ κατα
πλάσματα, βλάπτει διὰ τὸ ἀπὸ τῆς γινομένης θερμασί/
ας κατέχεσθαι τὸ δοθέν. στηρίζον ἤδη τοὺς τόπους ὄντας κυ
ρίους. χρονισθέντων δὲ ὠφελεῖ τὰς χαλεπωτάτας φλεγ/
μονάς. παρηγοροῦντα καὶ παραμυθούμενα τὰς ἀλγηδόνας.
ἐν δὲ τούτῳ τῷ καιρῷ ἁρμόζει προσλιπάναντας, ἐλαίῳ
θερμαντικῷ τὸ σῶμα λούειν, καθιέντας εἰς ἔμβασιν. ἑκάστω
δὲ ἡ ἰατρεία, διὰ τῆς ἐπιφανείας τὰ ἤδη βλαβῆ παρατε-
θέντα τῷ σώματι ἐκκρίνεσθαι. καὶ καθόλου παντοίως δεῖ
κινεῖν τὰς ἐκκρίσεις, πρὸς τὸ μὴ ἔμμονον κατασκευὴν λαμ
βάνειν τὴν διάθεσιν. διδόναι δὲ καὶ κρέα ὀρνίθεια καὶ ἄρνεια
δελφάκια καὶ ἐρίφεια. λιπαρὰ δὲ ταῦτα καὶ ἁπαλώτα/
τα καὶ καθεψημένα σὺν λινοσπέρμῳ. εὐκοίλια γάρ ἐστι καὶ
ἀμβλωτικὰ τῶν δριμέων καὶ οἶνον γλυκὺν καὶ πολύν. ἁρ
μόζει δ᾽ ἐπ᾽ αὐτῶν καὶ λιβάνου φλοιός. καὶ γῆς τῆς καλου
μένης ἀστέρος. ἑκάστου < δ᾽. μετὰ γλυκέος < α᾽ λαμβανομένη.
γλήχων τε μεθ᾽ ὕδατος τριφθεὶς καὶ ἴρινον ἢ ῥόδινον μύρον
μετὰ πηγάνου ἀφεψόμενον. καὶ ἀμπέλου ἀκρέμονες ἁπα/
λοὶ λεῖοι μετὰ γλυκέος. δυνατώτατα δὲ πάντων βοηθοῦ/
σιν αἱ ἀντίδοτοι πινόμεναι σὺν μελικράτῳ πλῆθος < δ᾽.

### Περὶ πιτυοκάμπης. Κεφ. ∋νθ᾽.

Τοῖς δὲ πιτυοκάμπην λαβοῦσιν εὐθέως πόνος περὶ τὸ στόμα
καὶ τὸν οὐρανίσκον παρακολουθεῖ. φλεγμονή τε ἰσχυρὰ γλώσ/
σης καὶ στομάχου καὶ κοιλίας. καὶ ἐντέρων πόνος ἰσχυρὸς με/
τὰ τοῦ δοκεῖν ὀδάξεσθαι τὰ ἐντός. πύρωσίς τε καθ᾽ ὅλον τὸ
σῶμα. τούτοις βοηθητέον ὁμοίως τοῖς τὰς κανθαρίδας πε/
πωκόσιν. ἰδίως δὲ ἐπ᾽ αὐτῶν παραληψόμεθα ἀντὶ ἐλαίου τοῦ
λιτοῦ καὶ ἰρίνου τὸ μήλινον. κατασκευαζόμενον ἐκ μήλων
κυδωνίων καὶ ἐλαίου.

### Περὶ βουπρήστεως. Κεφ. ∋ξ᾽.

Τοῖς δὲ βούπρηστιν πεπωκόσι, δοκεῖ κατὰ τὴν γεῦσιν ὅμοιόν τι
βρωμώδει νίτρῳ. παρακολουθεῖ δὲ ἄλγημα στομάχου καὶ κοι
λίας σφοδρόν, ὄγκος τε στομάχου καὶ κοιλίας σφοδρὸς ὁ
μοίως ὑδρωπικοῖς. καὶ περιτείνεται αὐτοῖς ἡ ἐπιφάνεια ὅ

λου τοῦ σώματος. τά τε οὖρα ἐπέχεται. βοηθεῖ δὲ αὐτοῖς ὅσα καὶ τοῖς κανθαρίδας πεπωκόσιν. ἰδίως δὲ ὠφελοῦνται μετὰ τὸ τῶν ἐμέτων καὶ τοῦ κλυστῆρος κενωθῆναι σῦκα ξηρὰ λαμβάνοντες. καὶ τὸ ἀφέψημα δὲ αὐτῶν σὺν οἴνῳ. παρακμάζοντος δὲ τοῦ κατ' ὀξύτητα κινδύνου, ὠφελοῦνται θηβαϊκὰς βαλάνους ἐσθίοντες. ἢ λελεασμένας σὺν οἰνομέλιτι. ἢ γάλακτι πίνοντες. ἢ καὶ ἀπίων ἅπαν τὸ γένος ἐσθίοντες καὶ γάλα γυναικεῖον πίνοντες.

### Περὶ σαλαμάνδρας. Κεφ. ξα΄.

Τοῖς δὲ σαλαμάνδραν λαβοῦσι, παρέπεται γλώσσης φλεγμονή. καὶ διανοίας ἐμποδισμὸς καὶ τρόμος μετὰ νάρκης ἢ φρίκης τινὸς καὶ ἑλκώσεως πελιοῦται δέ τινα μέρη κυκλοτερῶς αὐτοῖς τοῦ σώματος. ὡς πολλάκις ἐμμείναντος τοῦ φαρμάκου, σηπόμενα ἀπορρεῖν, ἐφ' ὧν πάντα ποιησάμενοι ὅσα καὶ ἐπὶ κανθαρίδων, ἰδιαίτερον αὐτοῖς προσφέρομεν φάρμακον ῥητίνην τὴν πιτυΐνην. ἢ χαλβάνην σὺν μέλιτι ἀντὶ ἐκλεικτοῦ. καὶ χαμαιπίτυος ἀφέψημα. συνεκλεανθέντων αὐτῷ στροβίλων. ἢ κνίδης φύλλα συνεψηθέντα κρίνω μετ' ἐλαίου. ποιεῖ δὲ ἐπ' αὐτῶν καὶ θαλασσίας χελώνης ἢ χερσαίας ὠά, ὀπτὰ ἢ ἑψημένα. καὶ βατραχίων ζωμός. συγκαθεψηθείσεις αὐτοῖς ἠρυγγίου ῥίζης.

### Περὶ ἐφημέρου. Κεφ. ξβ΄.

Τοῖς δὲ τὸ ἐφήμερον λαβοῦσιν ὃ ἔνιοι καλοῦσι κολχικὸν ἢ βολβὸν ἄγριον, παρακολουθεῖ κνησμὸς καθ' ὅλον τὸ σῶμα. ὡς ὑπὸ σκίλλης ἢ κνίδης ἐρεθιζομένοις. τὰ δὲ ἐντὸς ἀναδάκνονται. καυσοῦνται δὲ τὸν στόμαχον μετὰ βάρους ἱκανοῦ. ἐπισχύοντος δὲ τοῦ πάθους, κατὰ κοιλίαν φέρεται αἱματώδη, ξύσμασι μεμιγμένα. οἷς βοηθητέον καθάπερ καὶ τοῖς σαλαμάνδραν πεπωκόσι διά τε ἐμέτων καὶ κλυσμάτων. πρὸ δὲ τοῦ ἐνισχῦσαι τὸ φάρμακον, μεταδοτέον αὐτοῖς δρυὸς τῶν φύλλων ἢ βαλάνων ἢ σιδίων ἀφέψημα, ἢ ἑρπύλλου σὺν γάλακτι πίνειν. ἢ πολυγόνου χυλὸν ἢ ἀμπέλου ἀκρεμόνων. ἢ βάτου ἢ νάρθηκος ἁπαλοῦ τῆς ἐντεριώνης. ἢ μύρτου μετ'

οἴνου. αὐτὰ δὲ τὰ μύρτα λεῖα κοπέντα καὶ ἀποβραχέντα ἐν ὕδατι, βοηθεῖ τοῦ ἐξ αὐτῶν ὑγροῦ λαμβανομένου. ποιεῖ δὲ ὡσαύτως καὶ ὁ τῶν σαρδονίων βαλάνων ὑμὴν μέσος. ὠμὸς λαμβανόμενος μετά τινος τῶν προειρημένων χυλῶν. ὀρίγανός τε σὺν κονίᾳ ποθεῖσα. ἀκριβῶς δὲ βοηθοῦνται οἱ τὸ ὄνειον ἢ βόειον γάλα θερμὸν πίνοντες καὶ κατέχοντες ἐν τῷ στόματι. ὥς τε τοὺς εὐπορήσαντας τούτου, ἄλλου μηδενὸς χρῄζειν βοηθήματος.

### περὶ δορυκνίου. κεφ. ξγ΄.

Δορυκνίου δὲ ποθέντος ὃ ἔνιοι στρύχνον μανικὸν ἐκάλεσαν, παρακολουθεῖ ὥσπερ γάλακτος ποιότης ἐν τῇ γεύσει, καὶ λυγμοὶ συνεχεῖς. γλώττης τε ὑγρότης. καὶ αἵματος ἀναγωγὴ ἀθρόα κατὰ κοιλίαν δὲ αὐτοῖς μυξώδη φέρεται ὡς ἐπὶ δυσεντερικῶν. οἷς βοηθεῖ πρὸ τοῦ τούτων τι παρακολουθῆσαι ἃ καὶ τοῖς προειρημένοις. ὅ, τε ἔμετος καὶ τὸ κλύσμα. καὶ ὅσα δύναται τὸ ποθὲν ἐκκεῖναι φάρμακον. ἰδίως δ᾽ ἐπ᾽ αὐτῶν βοηθεῖ τὸ μελίκρατον ἢ ὄνειον ἢ αἴγειον γάλα. καὶ γλυκὺς οἶνος χλιαρὸς μετ᾽ ἀνίσου πινόμενος. καὶ ἀμύγδαλα πικρά. στήθη τε ὀρνίθεια καθεψημένα. καὶ πάντα τὰ κογχύλια ὠμὰ καὶ ὀπτὰ ἐσθιόμενα. καὶ κάραβοι. καὶ ἀστακοί. καὶ ὁ ἐξ αὐτῶν ζωμὸς πινόμενος.

### περὶ ἀκονίτου. κεφ. ξδ΄.

Τὸ δὲ ἀκόνιτον εὐθέως ἅμα τῷ πίνεσθαι γλυκαίνει τὴν γλῶσσαν μετά τινος στύψεως. καὶ ἀπὸ τοῦ γλυκασμοῦ σκοτοδινίαν, καὶ μάλιστα ἐν τῷ ἐξανίστασθαι, καὶ ὑγρότητας ὀφθαλμῶν ἐπιφέρει. βάρος τε θώρακος. καὶ ὑποχονδρίου μετὰ τοῦ πολλὰ πνεύματα ἀποδίδοσθαι. ἐφ᾽ ὧν δὲ δι᾽ ἐμέτων ἐκκομισθῆναι δεῖ τὸ φάρμακον. ἢ καὶ διὰ κλυστῆρος καθαρθῆναι τὴν κοιλίαν, χρησόμεθα προποτισμῷ ὀριγάνῳ. ἢ πηγάνῳ. ἢ πρασίῳ. ἢ ἀψινθίου ζέματι μετ᾽ οἴνου ἀψινθίτου. ἢ ἀειζώου, ἢ ἀβροτόνου. ἢ χαμελέας, ἢ χαμαιπίτυος. ἁρμόζει δὲ αὐτοῖς καὶ ὀποβαλσάμου ὁλκὴ ∠ α΄. σὺν μέλιτι ἢ καὶ καστορίου καὶ πεπέρεως καὶ πηγάνου ἴσης ὁλκῆς σὺν οἴνῳ. καὶ τι

τία ἐρίφου. ἢ λαγωοῦ ἢ νέβρου σὺν ὄξει. καὶ σιδήρου σκωρία, ἢ αὐτὸς ὁ σίδηρος, ἢ χρυσὸς, ἢ ἄργυρος διάπυρος ἐν οἴνῳ σβεσθέντα. τοῦ ὑγροῦ λαμβανομένου. κονία τε σὺν οἴνῳ, καὶ ὄρνιθι καθεψηθεῖσα. ἢ κρεῶν λιπαρῶν βοείων ζωμὸς λαμβανόμενος σὺν ὄξει λέγεται δὲ καὶ ἡ χαμαιπίτυς ἰδίως ἐπ' αὐτῶν ἁρμόζειν.

περὶ τοῦ ἐν ἡρακλείᾳ μέλιτος. κεφ. ρξε΄.

Μέλι τὸ ἐν ἡρακλείᾳ τῇ ποντικῇ ἐν ᾗ καὶ τὸ ἀκόνιτον γεννᾶται. ἀθήνησι δ' ἰωνία καλεῖται. ἐν εὐβοίᾳ σιδηρεῖτις. ὁμοίως δὲ πάσχουσι καὶ οἱ ἐν ἡρακλείᾳ τῇ ποντικῇ τὸ μέλι γεννώμενον φαγόντες, ἢ πιόντες ἐφ' ὧν ἁρμόζει τὰ αὐτὰ τῷ ἀκονίτῳ. εἰσὶ δὲ εὐβοήθητοι μάλιστα ὠφελούμενοι ἀπὸ οἰνομέλιτος συνεχῶς αὐτὸ πίνοντες. μιγνυμένων αὐτῷ πηγάνου φύλλων.

περὶ κορίου. κεφ. ρξϛ΄.

Τὸ δὲ κόριον λαθεῖν μὲν οὐ δύναται διὰ τὴν ὀσμὴν, ποθὲν δὲ τὴν φωνὴν δασεῖαν καὶ μανίαν ἐπιφέρει ὁμοίαν τοῖς διὰ μάχην βλαβεῖσι μετ' αἰσχρολογίας. καθ' ὅλου δὲ τοῦ σώματος αὐτῶν, ἡ ὀσμὴ διαφαίνεται τοῦ κορίου. βοηθεῖ δὲ αὐτοῖς μετὰ τὸ ἐξαιρεθῆναι διὰ τοῦ ἰρίνου ἐλαίου ὡς προείρηται, ἔλαιον σὺν ἀψινθίῳ πινόμενον καθ' ἑαυτὸ ἢ ἔλαιον ὠά τε κενωθέντα εὐθὺς αὐτὸ καὶ χλιανθέντα σὺν ἅλμῃ καὶ ῥοφούμενα. καὶ ἅλμη δὲ πινομένη καὶ ζωμὸς ἁλμυρὸς ἔκ τε ὄρνιθος καὶ χηνός. γλυκύς τε σὺν κονίᾳ παραλαμβανόμενος.

περὶ ψυλλίου. κεφ ρξζ΄.

Καὶ τὸ ψύλλιον δὲ καλούμενον ποθὲν, ἐπιφέρει ψύξιν ὅλου τοῦ σώματος. καὶ νάρκην μετ' ἐκλύσεως καὶ ἀδημονίας. ᾧ βοηθεῖ πάντα ὅσα τοῖς κόριον πεπωκόσι.

περὶ κωνείου. κεφ. ρξη΄.

Κώνειον δὲ ποθὲν ἐπιφέρει σκοτώματα καὶ ἀχλύν. ὥστε μὴ δ' ἐπ' ὀλίγον βλέπειν. λυγμόν τε καὶ διανοίας παραφοράν. καὶ ψύξιν ἄκρων. εὐθὺ τέλει δὲ σπώμενοι πνίγονται.

στάσιν λαμβανόντος τοῦ κατὰ τὴν ἀφθηνείαν πνεύματος. κατὰ ἀρχὰς μὲν οὖν ὡς καὶ ἤδη τῶν ἄλλων, διὰ τῶν ἐμέτων αὐτοὺς κομιούμεθα. ἔπειτα κενώματι χρησάμενοι, τὸ εἰς τὰ ἔντερα παρολισθηκὸς ἐκκενοῦμεν. καὶ τό γε ὡς ἤδη μέγιστον βοήθημα ἤδη τὴν ἀκρατοποσίαν παραγινόμεθα. διδόντες μεταξὺ διάστημα ἐν οἷς πιεῖν διδόμενον βοηθεῖ γάλα ὄνειον ἢ ἀψίνθιον μετὰ πεπέρεως καὶ οἴνου, καὶ καστορείου καὶ πηγάνου ἢ ἡδυόσμου σὺν οἴνῳ. ἢ καρδαμώμου ἢ στύρακος. ἢ πεπέρεως μετὰ κνίδης σπέρματος σὺν οἴνῳ. ἢ δάφνης τὰ φύλλα. ὁμοίως τὸ σιλφίου ὀπὸς σὺν ἐλαίῳ καὶ γλυκεῖ. καὶ ὁ γλυκὺς οἶνος δὲ καθ' ἑαυτὸν πολὺς πινόμενος, ἱκανῶς ἁρμόζει.

### Περὶ σμίλακος. κεφ. * ∋ξθʹ.

Ἡ δὲ καλουμένη σμίλαξ, ὑπ' ἐνίων δὲ θύμιον καὶ παρὰ Ῥωμαίοις τάξον ποθεῖσα ἐπιφέρει ψύξιν καθ' ὅλου τοῦ σώματος. καὶ πνιγμόν. ὀξύν τε τὸν θάνατον. οἷς βοηθεῖ πάντα ἃ καὶ τοῖς τὸ κώνειον πεπωκόσι.

### Περὶ ὀποῦ καρπάσου. κεφ. ∋οʹ.

Καὶ ὁ τῆς καρπάσου ὀπὸς, ποθεὶς κάρον ἐπιφέρει καὶ πνιγμὸν ὀξύν. βοηθοῦνται δὲ καὶ οὗτοι ὑφ' ὧν καὶ οἱ τὸ κώνειον πεπωκότες.

### Περὶ σαρδονίας πόας. κεφ. ∋οαʹ.

Ἡ δὲ σαρδόνιος λεγομένη πόα, βατράχου εἶδος οὖσα, ποθεῖσα ἢ βρωθεῖσα, παραφθορὰν διανοίας ἐπιφέρει καὶ σπάσματα μετὰ συνολκῆς χειλέων. ὥστε γέλωτος φαντασίαν παρέχειν. ὑφ' ἧς διαθέσεως καὶ ὁ σαρδόνιος γέλως οὐκ εὐφήμως ἐν τῷ βίῳ καθωμίληται. ἐφ' ὧν ἰδίως καὶ μετὰ τὸν ἔμετον, ἁρμόζει μελίκρατον πολὺ διδόμενον καὶ γάλα. ἐμβροχή τε καὶ λιπασμὸς ὅλου τοῦ σώματος διὰ θερμαντικῶν φαρμάκων. καὶ ἐμβάσεις δι' ὑδρελαίου θερμοῦ. ὑπαλείφειν μέντοι ἱκανῶς δεῖ καὶ ἀνατρίβειν μετὰ τὴν ἔμβασιν αὐτοὺς καθόλου δὲ ὡς πρὸς σπασμὸν, ὅλην τὴν θεραπείαν δεῖ ποιεῖσθαι.

### Περὶ ὑοσκυάμου. κεφ. ∋οβʹ.

Ὑοσκύαμος δὲ ποθεὶς ἢ βρωθεὶς παρακοπὴν τοῖς μεθύουσιν ὁμοίαν ἐπιφέρει. ἔστι δὲ εὐΐατος. βοηθούμενος μελικράτῳ πολλῷ ποτιζομένῳ. καὶ γάλακτι μάλιστα ὀνείῳ. εἰ δὲ μή γε ἢ βοείῳ, ἢ σύκων ξηρῶν ἀφεψήματι. ποιοῦσι δ᾽ ἐπ᾽ αὐτῶν καὶ στρόβιλοι. καὶ τὸ σικύων σπέρμα σὺν γλυκεῖ λαμβανόμενον καὶ ἁλμυρὸς οἶνος σὺν στέατι ὑείῳ νεαρῷ καὶ γλυκεῖ σὺν ὕδατι καὶ κνίδης σπέρμα ὁμοίως. ἢ νίτρον σὺν ὕδατι ἁρμόζει καὶ κιχώριον. καὶ νάπυ. καὶ κάρδαμος καὶ ῥάφανον καὶ κρόμμυα. καὶ σκόροδα. ἕκαστον τούτων σὺν οἴνῳ λαμβανόμενον. ἡσυχάζειν δὲ αὐτοὺς ἀναγκάζειν δεῖ. ὥσπερ οἱ τὸν οἶνον πιόντες.

Περὶ Μανδραγόρου. Κεφ. ∋ογ΄.

Μανδραγόρου δὲ ποθέντος εὐθέως κάρος ἐπακολουθεῖ καὶ ἔκλυσις καταφορά τε ἰσχυρὰ κατὰ μηδὲν διαφέρουσα πάθους τοῦ λεγομένου ληθάργου, ὧ περὶ τοῦ τί τούτων συμβῆναι, ἁρμόζει ὅ, τε ἔμετος καὶ μελίκρατον, καὶ μετὰ ἐλαίου καὶ νίτρον. καὶ ἀψίνθιον σὺν γλυκεῖ ἢ οἴνῳ γλυκάζοντι λαμβανόμενα. καὶ ἡ τῆς κεφαλῆς ἐμβροχὴ διὰ ῥοδίνου καὶ ὄξους. καὶ διέγερσις δὲ καὶ κίνησις τοῦ σώματος. καὶ ἡ δι᾽ ὀσφρανικτῶν καὶ εὐπατορίου καὶ πεπέρεως καὶ νάπυος, καὶ καστορίου καὶ πηγάνου ὄξει τετριμμένων. καὶ πίσσης ὑγρᾶς καὶ τῶν κεκαυμένων, καὶ ἐσβεσμένων ἐλλυχνίων. δυσανακλήτως δὲ αὐτῶν ἐχόντων, καὶ πταρμικὰ ἐπάγειν. καὶ τοῖς ἄλλοις κοινοῖς βοηθήμασι χρῆσθαι καὶ ἐπὶ τούτων.

Περὶ Μήκωνος. Κεφ. ∋οδ΄.

Μήκωνος δὲ ὀποῦ ποθέντος, παρακολουθεῖ καταφορὰ μετὰ καταψύξεως καὶ κνησμοῦ ἐπιτεταμένου. ὡς πολλάκις ἀνιχνοῦντος τοῦ φαρμάκου, ἐπιγίνεσθαι τοσοῦτον κνησμὸν, ὡς τε διεγείρεσθαι ὑπ᾽ αὐτοῦ. ὀσμή τε τοῦ φαρμάκου δι᾽ ὅλου τοῦ σώματος ἐκδίδοται. εἰς βοήθειαν μετὰ τὸν τοῦ ἐλαίου ἔμετον. καὶ κλυσθῆναι δριμεῖ κλύσματι, ὀξύμελι σὺν ἁλσὶ πινόμενον ἢ μέλι σὺν ῥοδίνῳ θερμῷ. καὶ ἄκρατος πολὺς σὺν ἀψινθίῳ ἢ κινναμώμῳ. ἢ ὄξος θερμὸν καθ᾽ ἑαυτό. νίτρον τε σὺν ὕδατι καὶ ὀρίγανον σὺν κονίᾳ. πηγάνου τε ἀγρίου σπέρμα

σὺν πεπέρει καὶ οἴνῳ καὶ πάνακι. ὡσαύτως τε μετὰ καστορίου καὶ ὀξυμέλιτος. ἢ μετὰ θύμβρας ἢ ὀριγάνου σὺν οἴνῳ. δεῖ δὲ καὶ τούτους διεγείρειν τοῖς ὀσφραντικοῖς καλουμένοις καὶ ἐμβιβάζειν εἰς θερμὸν καὶ πυελον διὰ τὸ ἐπιγινόμενον κνησμόν. ὀνήσει αὐτοὺς καὶ μετὰ τὸ λουτρὸν χρῆσθαι ζωμοῖς λιπαροῖς μετ' οἴνου ἢ γλυκέως καὶ μυελὸς δὲ μετ' ἐλαίου πινόμενος.

Περὶ μήκωνος κερατίτιδος. Κεφ. ροε'.

Ἡ δὲ λεγομένη κερατῖτις μήκων, ἐν τῷ βρωθῆναι ἢ ποθῆναι τὰ αὐτὰ ἐπιφέρουσα τῷ ὀπῷ τῆς μήκωνος συμπτώματα, τοῖς αὐτοῖς βοηθήμασιν ὑποπίπτει.

Περὶ φαρικοῦ. Κεφ. ρος'.

Τὸ δὲ καλούμενον φαρικὸν, τὴν μὲν γεῦσιν παρέχειν νάρδῳ ἀγρίᾳ ἔοικεν. ἐπιφέρει δὲ παράλυσιν ποθὲν μετὰ παρακοπῆς καὶ σπασμοῦ. δεῖ δὲ μετὰ τὸ ἐξεμέσαι αὐτοὺς, ποτίζειν οἶνον ἀψινθίτην, σὺν κινναμώμῳ ἢ σμύρνῃ ἢ νάρδῳ κελτικῇ ἣν ἔνιοι ὀρείνην ἐκάλεσαν. ἢ ναρδοστάχυος ὁλκὰς β'. καὶ σμύρνης β'. ὀβολοὺς μεμιγμένους σὺν γλυκεῖ. ἢ ἶριν μετὰ κρόκου σὺν οἴνῳ. δεῖ δὲ καταπλάττειν δὲ τὴν κεφαλὴν αὐτῶν ξυρήσαντας, κριθίνῳ ἀλεύρῳ σὺν πηγάνῳ λείῳ καὶ ὄξει.

Περὶ τοξικοῦ. Κεφ. ροζ'.

Τὸ δὲ τοξικὸν, δοκεῖ μὲν ὠνομάσθαι, ἐκ τοῦ τὰ τόξα τῶν βαρβάρων ὑπ' αὐτοῦ χρίεσθαι. παρακολουθεῖ δὲ τοῖς πεπωκόσι χειλέων καὶ γλώττης φλεγμονή. μανία τε ἀκατάσχετος. ποικίλας ἐπιβάλλουσα φαντασίας. ὡς καὶ διὰ τοῦτο δυσιάτους εἶναι ἐν ταῖς θεραπείαις. σπανίως δὲ καὶ σώζεσθαί τινας τῶν πεπωκότων. δεῖ μέντοι συνέχειν αὐτοὺς δεσμοῖς ἀναγκάζοντας καὶ βιαζομένους γλυκὺν οἶνον σὺν ῥοδίνῳ πίνειν καὶ ἐξεμεῖν. τό τε τῆς γογγύλης σπέρμα σὺν οἴνῳ ἰδίως δ' ἐπ' αὐτῶν ἁρμόζει καὶ ἡ τῆς πενταφύλλου ῥίζα αἷμά τε τράγου ἢ αἰγὸς ὁμοίως λαμβανόμενα, δρυός τε φλοιὸς ἢ φηγοῦ. ἢ πρίνου γάλακτι συνεκλεανθείς. καὶ μῆλα κυδώνια ἐσθιόμενα ἢ σὺν γλήχωνι καὶ ὕδατι πινόμενα. ἀμφοτέρως

τε καὶ βαλσάμου καρπὸς σὺν οἴνῳ. καὶ εἴ τινες αὐτοῦ φύγοιεν τὸν κίνδυνον, πολὺν χρόνον κλινοπετεῖς διαμένουσι. καὶ ἀναστάντες ἐπτοημένοι τὸν λοιπὸν χρόνον διάγουσιν.

Περὶ Ἰξίου. Κεφ. ροη΄.

Ἰξίας δὲ ὃς καὶ οὔλοφον καλεῖται ἐν τῷ πίνεσθαι, οἷόν τι ὠκίμῳ κατὰ τὴν ὀσμὴν καὶ κατὰ τὴν γεῦσιν ἐμφαίνει. ἐπιφέρει δὲ γλώσσης φλεγμονὴν ἰσχυράν. καὶ παρακοπήν. καὶ τὰς ἐκκρίσεις ἐπέχει πάσας. βορβορυγμούς τε καὶ ψόφους μετὰ λειποθυμίας ἐπιφέρει δίχα τοῦ προχωρεῖν τι. βοηθεῖ δὲ αὐτοῖς μετὰ τὸ ἐξεμέσαι τὸ πλεῖον ἢ μετὰ τὸ τὴν κοιλίαν λυθῆναι πινόμενον ἀψινθίου ἀπόβρεγμα σὺν οἴνῳ πολλῷ, ἢ ὀξυμέλιτι. πηγάνου τε ἀγρίου σπέρμα ἢ σιλφίου ῥίζα. ὁμοίως τε τραγοριγάνου ἀφέψημα σύν τινι τῶν προειρημένων. ἐλατίνη ῥητίνη σὺν οἴνῳ ἢ νάρδου, ἢ καστορίου, ἢ σιλφίου, ἑκάστου, ὀβολός. ἁρμόζουσι δὲ καὶ ἡ τῆς βασιλικῆς καρύας οἴνῳ ἢ λεῖοι σὺν βλαστοὶ ῥητίνη καστορίου πηγάνου, ἑκάστου ∠ α΄. ὁμοίως χαμελαίας ℥ β΄. ἢ ἀψινθίου χυλοῦ ∠ β΄ σὺν μελικράτῳ καὶ ὄξει πολλῷ πινόμενον.

Περὶ Ψιμμυθίου. Κεφ. ροθ΄.

Τὸ δὲ ψιμμύθιον λαθεῖν οὐ δύναται διὰ τὸ χρῶμα. ἑκουσίως γὰρ ληφθέν, λευκαίνει τὸν οὐρανίσκον καὶ τὰ οὖλα καὶ τὴν γλῶτταν καὶ τὸ μεταξὺ τῶν ὀδόντων. ἐπιφέρει δὲ λυγμοὺς καὶ βῆχα καὶ γλώττης ξηρότητα. καὶ ψύξιν ἀκρωτηρίων μετὰ παρακοπῆς καὶ δυσκινησίας. οἷς ἁρμόζει μελίκρατον διδόναι ἢ σύκων ἢ μαλάχης ἀφέψημα. ἢ γάλα θερμὸν ἢ σήσαμον λεῖον μετ' οἴνου. ἢ κονίαν κληματίνην. ἢ ἀμαράκινον ἔλαιον ἢ ἴρινον. ἢ περσικῶν τὰ ὀστᾶ. περιστερῶν δὲ ὠὰ σὺν λιβανῷ ἢ κεδρίνῳ ἀφεψήματι. ἢ κοκκυμήλοις. ἢ κόμμι πτελέας ἢ τὸ ἐν τοῖς φύλλοις τῆς πτελέας ὑγρὸν μετὰ χλιαροῦ ὕδατος ἁρμόζει δὲ ἐπ' αὐτῷ, καὶ θαψίας χυλὸς, ἢ σκαμμωνίας ὀπὸς σὺν μελικράτῳ πινόμενα.

Περὶ Μυκήτων. Κεφ. ρπ΄.

Μυκήτων δὲ οἱ μὲν τῷ γένει βλάπτουσιν. οἱ δὲ τῷ πλήθει. [illegible]

φέρουσι δὲ πάντες πνιγμοὺς ἐοικότας ἀγχόναις. οἷς εὐθέως βοηθεῖν δεῖ κοινῶς, ἀναγκάζοντας ἐμεῖν δι' ἐλαίου. θαυμαστῶς δὲ ὠφελοῦνται πίνοντες κονίαν κληματίνην, ἢ ἐξ ἀχραδίνου ξύλου. μετὰ ὀξυκράτου καὶ ἁλῶν ἢ νίτρου. καὶ συνεψόμεναι δὲ αἱ ἀχράδες ἢ τὰ φύλλα τοῖς μύκησιν ἀφαιροῦνται τὸ πνιγῶδες αὐτῶν. ἐσθιόμεναι δὲ ὠφελοῦσι. βοηθεῖ δὲ αὐτοῖς ἀλεκτορίδων ὠὰ σὺν ὀξυκράτῳ πινόμενα μετὰ ἀριστολοχίας ὁλκῆς α΄. ἢ ἀψίνθιον σὺν οἴνῳ καὶ μέλιτι ἐσθιόμενον καὶ πινόμενον σὺν ὕδατι, μελισσόφυλλόν τε σὺν οἴνῳ πάνακός τε ῥίζα καὶ καρπὸς σὺν οἴνῳ, τρύξ τε οἴνου κεκαυμένη μεθ' ὕδατος. καὶ χάλκανθος σὺν ὄξει. ῥάφανός τε ἢ νάπυ καρδάμωμον ἐσθιόμενα.

## Περὶ γύψου. Κεφ. πα΄.

Καὶ ἡ γύψος πνιγμὸν ἐπιφέρει λιθουμένη. ὅθεν καὶ τούτοις ἁρμόζει διδόναι τὰ πρὸς τοὺς μύκητας βοηθήματα καὶ ἐπὶ τούτων τὸ τῆς μαλάχης ἀφέψημα. ὃ παραληπτέον ἀντὶ τοῦ ἐλαίου. λιπαρὸν γὰρ ὂν καὶ ἐν τῷ ἐξεμεῖσθαι ὄλισθον ἐμποιοῦν, οὐκ ἐᾷ καταξύεσθαι τὰ σώματα. λιθουμένη γὰρ ἡ γύψος ἐργάζεται τοῦτο. ἁρμόζει δὲ καὶ τὸ ἔλαιον σὺν μελικράτῳ ἢ σύκων ἀφεψήματι, καὶ κονία συκίνη ἢ κληματίνη σὺν οἴνῳ πολλῷ πινομένη, καὶ ὀρίγανος ἢ θύμος σὺν κονίᾳ, ἢ ὄξει ἢ γλυκεῖ. δεῖ δὲ καὶ τούτους ἀποκλύζειν τῷ τῆς μαλάχης ἀφεψήματι.

## Περὶ αἵματος ταυρείου. Κεφ. πβ΄.

Αἷμα δὲ ταύρειος νεοσφαγὲς ποθὲν, δύσπνοιαν ἐπιφέρει καὶ πνιγμόν. ἐμφράττον τοὺς περὶ τὰ παρίσθμια καὶ τὴν κατάποσιν πόρους μετὰ πνιγμοῦ ἰσχυροῦ. εὑρίσκεταί τε ἐπ' αὐτῶν ἡ γλῶττα ἐρυθρά. καὶ ὀδόντες βεβαμμένοι. καὶ θρόμβια μεταξὺ αὐτῶν. ἐφ' ὧν τὸν ἔμετον παραιτούμεθα. τῶν θρόμβων μᾶλλον ἐν τῷ στομάχῳ σφηνουμένων διὰ τὸ μετεωρίζεσθαι αὐτοὺς κατὰ τὴν ὁλκήν. δίδοται δὲ ὅσα δύναται τὴν πῆξιν διαλύσαι τοῦ αἵματος. καὶ τὴν κοιλίαν ὑπάγειν. τούς τε ὀλύνθους πλήρεις ὄντας τοῦ ὀποῦ σὺν ὀξυκράτῳ. καὶ νίτρον δὲ καθ' ἑαυτὸ ὠφελεῖ. καὶ πιτύα ἅπασα σὺν ὄξει

καὶ σιλφίου ῥίζη ἢ τῷ ὀπῷ. ὁμοίως καὶ κράμβης σπέρμα. κονία τε συκίνη. καὶ κονύζης σπέρμα σὺν πεπέρει. καὶ βάτου χυλὸς σὺν ὄξει. δεῖ δὲ τὴν κοιλίαν ὑπάγειν. εἴωθε δὲ τοῖς σωζομένοις ἀποδίδοσθαι διὰ τῆς ἕδρας καὶ ῥοώδη. καταπλάσσειν δὲ καὶ στόμαχον καὶ τὴν κοιλίαν, ἀλεύρῳ κριθίνῳ μετὰ μελικράτου.

Περὶ γάλακτος ἐμπυτιασθέντος. Κεφ. πγ΄.

Καὶ τοῖς λαβοῦσιν ἐμπυτιασθὲν γάλα, ἀθρόως πολὺς πνιγμὸς γίνεται διὰ τὸ θρομβοῦσθαι. οἷς βοηθοῦντας, προσφέρειν δεῖ ὡς πρὸς ἀντίδοτον πυτίαν σὺν ὄξει. πολλάκις ἀναγκάζοντας πίνειν. καὶ καλαμίνθης τὰ φύλλα ξηρὰ ἢ τὸν χυλὸν ὁμοίως. ἢ σιλφίου ῥίζαν ἢ τὸν ὀπὸν σὺν ὀξυκράτῳ. θύμον τε σὺν ὄξει. καὶ τὴν πηλοποιητικὴν κονίαν. ἀλυκὸν δὲ μηδὲν προσφερέσθω. μᾶλλον γὰρ πήγνυται καὶ τυροῦται τὸ γάλα. ἀλλ' οὐδὲ τούτους ἐμεῖν δεῖ. ἐνιστάμενον γὰρ ἐπὶ τὰ τοῦ στομάχου στενὰ τεθρομβωμένον πνίγει.

Περὶ λιθαργύρου. Κεφ. πδ΄.

Λιθάργυρος δὲ ποθεῖσα βάρος ἐπιφέρει στομάχῳ καὶ κοιλίᾳ καὶ ἐντέροις μετὰ στρόφων ἐπιτεταμένων. ἐνίοτε δὲ καὶ τιτρώσκει τὰ ἔντερα διὰ τὸ βάρος καὶ τὸ σῶμα μολιβδῶδες γίνεται τὴν ἀπρέπειαν λαμβάνον. ἐφ' ὧν ἁρμόζει μετὰ τὸν ἔμετον πινόμενα σὺν οἴνῳ τερμίνθου ἀγρίου σπέρμα. ἢ πέπερι. ἢ κύπρου ἄνθος σὺν οἴνῳ. περιστερῶν τε ἀγρίων ἄφοδος ξηρὰ μετὰ νάρδου καὶ οἴνου.

Περὶ ὑδραργύρου. Κεφ. πε΄.

Ὑδράργυρος δὲ ποθεῖσα, τὰ αὐτὰ ἐπιφέρει τῇ λιθαργύρῳ καὶ ἐπὶ τούτων δεῖ τοῖς αὐτοῖς βοηθήμασι χρῆσθαι. δοκεῖ δὲ αὐτοὺς ὠφελεῖν γάλα πινόμενον. ἐμείτωσαν δὲ καὶ οὗτοι.

Περὶ τιτάνου. Κεφ. πϛ΄.

Τίτανος σανδαράχη καὶ ἀρσενικὸν ποθέντα, τὰ αὐτὰ ἀλγήματα κοιλίας καὶ ἐντέρων ἐπιφέρει μετὰ δηγμοῦ σφοδροῦ. ὅθεν προσφέρειν δεῖ ἅπαντα ὅσα μετὰ τοῦ κερναίου,

δύναται τὸ εὐμενὲς καὶ πρὸς τὴν κοιλίαν ὀλισθηρὸν παρέχειν. οἷς ἐστιν ὁ τοῦ ἐβίσκου καὶ τῆς μαλάχης χυλός. λίαν ὀλισθηρὸς ὑπάρχων. παρέχειν δὲ δεῖ καὶ ἀφέψημα λινοσπέρμου. καὶ ὁ τῆς σφάγου καλουμένης βοτάνης καρπός. ἢ ὀρύζης. καὶ γάλα πολὺ σὺν μελικράτῳ. καὶ ζωμοὶ λιπαροὶ καὶ εὔχυμοι.

### Περὶ λαγωοῦ θαλασσίου. Κεφ. ϡπζ´.

Λαγωοῦ δὲ θαλασσίου ποθέντος παρακολουθεῖ γεῦσις ὁμοία ἰχθύσι βρωμώδεσιν. ἐν δὲ τῷ χρονίσαι, κοιλία τε ἀλγεῖ. καὶ οὖρα ἐπέχεται. εἴποτε δὲ ἐκκριθείη, πορφυρίζοντα τῇ χρόᾳ ὁρᾶται. ἀποστροφή τε καὶ μῖσος πρὸς πάντα ἰχθύν. καὶ ἱδροῦσι δυσώδη. παρέπεται δὲ αὐτοῖς καὶ ἔμετος χολώδης, ἐνίοτε αἵματι μεμιγμένος. οἷς δοτέον γάλα ὄνειον ἢ γλυκὺ συνεχῶς. καὶ μαλάχης ῥίζης καὶ τῶν φύλλων τὸ ἀφέψημα. ἢ κυκλαμίνου ῥίζαν λείαν σὺν οἴνῳ. ἢ ἐλλεβόρου μέλανος ἢ σκαμμωνίας ὀποῦ μετὰ μελικράτου. ῥοῶν τε πυρήνων. ἢ κεδρίας λείας μετ᾽ οἴνου. ποιεῖ καὶ χηνὸς αἷμα ποθὲν θερμόν. μὴ δυνάμενοι δὲ οὗτοι ἰχθύας προσενέγκασθαι, μόνους τοὺς ποταμίους καρκίνους ἑφθοὺς ἐσθίουσι. καὶ πίνουσιν οἴνῳ μεμιγμένῳ ἐπ᾽ αὐτῶν. τεκμήριον δ᾽ ἐστὶν ἐπ᾽ αὐτῶν σωτηρίας ὅταν ἄρξωνται ἰχθύας προσφέρεσθαι.

### Περὶ φρύνου. Κεφ. ϡπη´.

Φρῦνος βάτραχος ἕλειος προσενεχθεὶς, ἐπιφέρει οἰδήματα σώματος μετὰ ὠχρότητος ἐκτεταμένης. ὡς δοκεῖν πύξῳ ἐοικέναι. δυσπνοεῖν τε καὶ δυσωδίᾳ ὀδωδέναι τὸ στόμα. καὶ λυγμὸς αὐτοῖς ἕπεται. ἐνίοτε δὲ καὶ σπέρματος ἀπροαίρετος ἔκκρισις. εὐβοήθητοί τε τυγχάνουσι μετὰ τὸν ἔμετον λαμβάνοντες ἄκρατον πολύν. καὶ καλάμου ῥίζης ∠ β´. ἢ κυπείρου τὸ αὐτό. δεῖ δὲ αὐτοὺς καὶ ἀναγκάζειν συντόνως περιπατεῖν καὶ τρέχειν διὰ τὸ ἐν αὐτοῖς ναρκῶδες. λούειν τε καθ᾽ ἑκάστην ἡμέραν.

### Περὶ βδέλλας. Κεφ. ϡπθ´.

Βδέλλας τὰς καταπινομένας σὺν τῷ ὕδατι καὶ προσφυομένας ἐν τῇ καταπόσει τῷ στόματι τῆς κοιλίας, ἑλκύσας

τὰ μέρη,

τὰ μέρη, καὶ φαντασίαν ἐκμυζήσεως παρεχούσας, ὅπερ καὶ σημεῖόν ἐστι τοῦ βδέλλας καταπεπόσθαι, ἀποβάλλει δ' ἅλμη καταῤῥοφουμένη. καὶ ὀπὸς κυρηναϊκὸς ἢ φύλλα σιλφίου. ἢ τεύτλου σὺν ὄξει πινόμενα. ἀναγαργαρίζεσθαί τε νίτρον σὺν ὕδατι. καὶ χάλκανθον σὺν ὄξει ἀνεθέντι. τὰς δὲ ἐν τῷ βρόγχῳ προσφυείσας ἐμβιβάσας εἰς ἔμβασιν θερμὴν, δίδου ψυχρὸν ὕδωρ ἐν τῷ στόματι διακρατεῖν. καὶ ἐξελκύονται. προνοητέον δὲ καὶ τῶν ἐπ' ὠφελείᾳ διδομένων, ἐπιφερόντων δὲ πολλάκις κίνδυνον οὐχ ἥττονα τῶν ἄλλων φαρμάκων ὡς ἐλλεβόρου λευκοῦ καὶ θαψίας καὶ ἐλατηρίου. καὶ ἀγαρικοῦ τοῦ μέλανος. πνιγμὸν γὰρ ὑπερφέρει ταῦτα ἢ ὑπερκάθαρσιν. θεραπεύομεν δὲ ὡς προείρηται ἐπὶ μυκήτων καὶ τῶν ὁμοίων. τὰς δὲ ὑπερκαθάρσεις τοῖς δυναμένοις ἐπέχειν τὰς ἐκκρίσεις στέλλομεν. καὶ τῶν μὲν δοκούντων ἐπ' ὀλίγον βλάπτειν, ἐνίοτε δὲ κινδύνους ἐπιφερόντων, οὐκ ἀμελητέον. ὧν ἐστι τὸ ἄγριον πήγανον καὶ τὸ μελάνθιον καὶ οἱ νεαροὶ παγετοί.

### Περὶ ἄξους. κεφ. ϡϛ'.

Ἄξος. ἄνθος ἐστὶν ἀκάνθης τῆς καλουμένης ἄξου. ἐφ' ὧν ἔμετος μόνος παραληφθεὶς ἀποκαθίστησι τοὺς λαμβάνοντας.

### Περὶ ὕδατος ψυχροῦ. κεφ. ϡϛα'.

Καὶ τὸ ψυχρὸν ὕδωρ ἀθρόον ποθὲν ἢ ἄκρατος πολὺς καὶ γλυκὺς οἶνος ποθεὶς, μάλιστα ἀπὸ βαλανείου ἢ δρόμου καὶ τῶν εὐτόνων γυμνασίων, πνιγμοὺς καὶ ἀλγήματα ἐπιφέρει. ἐφ' ὧν φλεβοτομία ταχέως παραληφθεῖσα καὶ κενώσασα λύει τὸν ἐπηρτημένον κίνδυνον. καὶ περὶ μὲν τῶν σημείων τοῖς λαβοῦσι τὰ θανάσιμα τῶν φαρμάκων, καὶ τῆς ἁρμοζούσης αὐτοῖς θεραπείας, ἔτι δὲ προφυλακτικῆς ἀγωγῆς, ἐπὶ τοσοῦτον ἡμῖν εἰρήσθω. ὑπογράψομεν δὲ καὶ τὰς ἀντιδότους ἀναγκαιότατα καὶ γενναιότατα βοηθούσας αἷς ἐχρήσαντο. τῇ τε μιθριδατείῳ. καὶ τῇ δι' αἱμάτων καὶ τῇ διὰ σκίγκων. ἃς διὰ τὸ ἐν ταῖς ἀντιδότοις ἀκριβέστατα ἀναγεγράφθαι, παρῃτησάμην ἀναγράφειν ἐνταῦθα.

# ΠΕΔΑΚΙΟΥ ΔΙΟΣΚΟΡΙΔΟΥ ἈΝΑΖΑΡΒΕΩΣ ΒΙΒΛΙΟΝ ἝΒΔΟΜΟΝ.

## Περὶ ἰοβόλων. ἐν ᾧ καὶ περὶ λυττῶντος κυνός. κεφ. ϡνϛʹ.

Ὁ μὲν περὶ τῶν ἰοβόλων ζώων καὶ θανασίμων φαρμάκων λόγον προτιθέμεθα διελθεῖν, εἰς συμπλήρωσιν τοῦ περιοδευτικοῦ τόπου. καὶ γὰρ οὐδενὸς τῶν ἄλλων ἧσσον ἀναγκαῖόν ἐστι τοῖς ἰατρεύουσιν. ἐπειδήπερ, καὶ κινδύνων καὶ περιοδυνιῶν. καὶ ἀλγηδόνων. καὶ πλείστων ἄλλων κακῶν ἀπαλλάσσεσθαι τοὺς ἀνθρώπους συμβαίνει διὰ τῶν ἐν αὐτῷ παραδιδομένων. κατὰ δὲ τῶν αὐτῶν τάττω μερίζεται δίχη καθάπερ ἐν ἀρχῇ προανεπεφώνηται. καὶ ὁ μὲν περὶ τῶν ἰοβόλων, προσαγορεύεται θηριακός. ὁ δὲ περὶ τῶν θανασίμων ἀλεξιφάρμακος. ὃν τάξαντες δὴ προδείξομεν τὰ εἰωθότα παρακολουθεῖν. τά τε δυνάμενα βοηθεῖν πρὸς ἕκαστον αὐτῶν. δεῖ δὲ πάντα πρόχειρα τὸν τεχνίτην ἔχειν. διὰ τὸ κατεπεῖγον πολλάκις τὴν χρείαν. ὀλίγα μὲν γὰρ καὶ τῶν ἰοβόλων καὶ τῶν θανασίμων σχολαίους καὶ ἐξ ἀναβολῆς φέρει τοὺς κινδύνους. τὰ πολλὰ δὲ εὐθέως. καὶ οἱ δι' ἔμφυτον πονηρίαν ἐπιβουλεύοντες ἑτέροις, ἀνυπέρθετον τὸ κακὸν ἀπεργάζεσθαι βούλονται. καὶ οἱ διὰ μοχθηρὰν συνείδησιν ἢ χαλεπὴν περίστασιν ἑκουσίως προσενεγκάμενοι θανάσιμα, εἶτα φωραθέντες ἢ μετανοήσαντες ὀξυτάτης δέονται βοηθείας. καὶ πολέμια δὲ τόξων χρίοντες βέλη καὶ φρέατα καὶ πηγὰς δηλητηρίοις διαφθείροντες φαρμάκοις, ἀνυπέρθετον μηχανῶνται τοῖς ἐναντίοις τὸν θάνατον. ἐφ' ὧν οὐχ εὐθὺς ἀλλ' ἐς ὕστερον ἀπαντᾶν τὸ κακὸν πέφυκεν εἰ μὴ παραχρῆμα παραληφθείη τοῖς βοηθήμασιν, ἀνόνητος ἡ εἰσαῦθις ἐπικουρία, τῆς φθοροποιοῦ δυνάμεως καταδραξαμένης τῶν σωμάτων. διόπερ οὐχ ὅπως ἔτυχε καὶ τὴν ἐν τούτοις ποιητέον ἐντρέχειαν. ἵνα ὥσπερ ἐν τοῖς ἄλλοις, οὕτω καὶ ἐνταῦθα ὅλη ἡ τέχνη παρέχοι τοῖς ἀνθρώποις τὴν σωτηρίαν. παρὰ μὲν οὖν τοῖς ἀρχαίοις τοῦ θεραπευτικοῦ μέρους ὑπελαμβάνετο οὗτος ὁ τόπος. οἱ δὲ νεώτεροι αὐτὸν ἐχώρισαν.

προφυλακτικὴν καὶ προφυλακτικὸν ὀνομάζοντες. τοῦ δὲ ὑγιεινοῦ καὶ τοῦ θεραπευτικοῦ μέσον τάξαντες. μικρὰ καὶ παντάπασιν ἐπὶ πολλῷ πλανηθέντες πιθανότητι. φασὶ γὰρ γίνεσθαι τρεῖς καταστάσεις τοῖς ἀνθρωπίνοις σώμασι. μίαν μὲν, καθ' ἣν ὑγιαίνουσι. ἑτέραν δὲ καθ' ἣν νοσοῦσι. τρίτην δὲ μέσην ἑκατέρων. καθ' ἣν δοκοῦσι μὲν ὑγιαίνειν, εὐεμπτώτως δὲ εἰς τὰ πάθη καὶ τοὺς κινδύνους ἔχουσι, διά τινα φθοροποιὸν ἐγκειμένην τοῖς σώμασι δύναμιν. ὡς ἐπὶ τῶν ὑπὸ κυνὸς λυσσῶντος δεδηγμένων θεωρεῖται καὶ μήπω πεπτωκότων ὑδροφόβῳ. καὶ τῶν κανθαρίδας εἰληφότων μήπω δὲ περιωδυνωμένων ἢ δυσουρούντων. ἀναλόγως οὖν ταύταις ταῖς τρισὶ καταστάσεσιν, εἰς τρία διῃρῆσθαι τὴν τέχνην. εἴς τε τὸ ὑγιεινὸν ὃ δὴ τηρητικόν ἐστι τῆς ὑγείας. καὶ εἰς τὸ προφυλακτικόν. ὅπερ κωλυτικόν ἐστι τῆς εἰς τὰς νόσους ἐμπτώσεως καὶ εἰς θεραπευτικόν. δι' οὗ λύεται τὰ πάθη. ῥητέον δὲ πρὸς αὐτοὺς ὅτι πρῶτον μὲν κατὰ τὴν ἐπιβολὴν ταύτην, οὐχὶ τρεῖς καταστάσεις περὶ τὸ σῶμα. ἀλλὰ τέσσαρας εἶναι λέγονται. ὡς γὰρ εἰσί τινες οἱ μήπω μὲν νοσοῦντες, ἐπιτηδείως δὲ πρὸς τοῦτο διακείμενοι διὰ τὴν ἐπικειμένην αἰτίαν, οὕτως εἰσί τινες οἱ μηκέτι νοσοῦντες, μήπω δὲ τὴν ὑγείαν εἰληφότες, ὅπερ ἰδεῖν ἐστιν ἐπὶ τῶν ὑπογύως ἀπηλλαγμένων τῆς νόσου. ἀναλήψεως δὲ καὶ ῥώσεως δεομένων. ἀλλ' ὅνπερ τρόπον ἡ ἐπιμέλεια τοῦ θεραπευτικοῦ μέρους τῆς τέχνης ἐστί, τὸν αὐτὸν τρόπον καὶ τὸ προφυλακτικὸν ὑπὸ τούτῳ τετάχθαι προσήκει. βοηθήμασι χρώμεθα καὶ τοῖς σφοδροτάτοις ἐν τῇ προφυλακῇ, κατασχάσματι βαθυτέρῳ. καὶ καύσεσι καὶ περικοπῇ καὶ δηκτικοῖς ἐπιθέμασι καὶ προποτισμοῖς. καὶ ἄλλοις πλείοσιν. ἀλλά γε οὕτως εἰσί τινες ἀγνώμονες, ὡς μὴ δὲ βοηθήματα καλεῖν τὰ προφυλακτικά. οὐ ῥάδιον εἰπεῖν καθ' ὅν τινα λόγον. καὶ τὸ ὄνομα μὲν γὰρ προφυλακή. καὶ ὁ τῆς ἐνεργείας δὲ τρόπος τοῦτο αὐτὸ πάντως βοήθημα ἀποδείκνυσι. πῶς δὲ οὐχ ὑποτάττουσι τῇ διαιρέσει καὶ τοὺς ἐν ταῖς λοιμικαῖς περιστάσεσιν, οὔπω μὲν ἑαλωκότας πάθει. διακειμένους δὲ πρὸς τοῦτο ἐπιτηδείως πως διὰ τὴν ἐκ τοῦ περιέχοντος ἀφορμήν. εἴποι δ' ἄν τις καὶ τὴν τῶν ὑγιει-

τῶν παραγγελιῶν ἀπωγήν, οὐδὲν ἕτερον ἢ προφυλακτικὸν ὑπάρχειν. δυνάμεθα γὰρ τὰ σώματα καὶ στερεὰ παρασκευάζειν πειρώμεθα χάριν τοῦ δυσάλωτα γενέσθαι ταῖς νόσοις. τὸ δὲ κυριώτατον ῥητέον ἐστί. τὰ μόρια τῆς ἰατρικῆς, οὐχὶ ταῖς καταστάσεσι τοῦ σώματος ἀναλόγως δεῖν εἰρῆσθαι. ἀλλὰ φυσιολογεῖν διὰ τὸ σημειωτικὸν ἰδίᾳ ἕκαστον τῶν ἄλλων. ὡς ἐν τοῖς οἰκείοις τόποις ἀποδείκνυμεν. πρὸς τούτους μὲν οὖν οὐ πλείονα ῥητέον. ἐκεῖνο δὲ μᾶλλον παρασημειωτέον. ὅτι καλεῖται μὲν ἀναιτιολόγητα τὰ ἀπὸ τῶν ἰοβόλων ζώων. καὶ τὰ ἀπὸ τῶν θανασίμων συμβαίνοντα φαρμάκων, καὶ πρὸς ταῦτα βοηθεῖ. διὰ τοῦτό γε καὶ παρατηρητικῆς τυγχάνει ἀναλογητικῆς τε τέχνης προσδεούσης ἀπόρημα. ἣν δὴ ὁ λόγος πεπίστευται. οὐ δὲ γὰρ ἐν τῷ καθάπαξ τοῦτο ἦν ἀληθές. ἀλλ᾽ ἀεὶ τὸ παρέλκον καὶ μηδεμίαν χρείαν ἐπί τινα τῶν ἔργων παρεχόμενον δυσόχαστον. εἰ καὶ τελέως ἀναιτιολόγητον ὑπάρχει κατὰ τὰς ἰδιότητας. τοῦτο δὲ ἐπὶ τῶν θανασίμων φαρμάκων καὶ τῶν ἰοβόλων ζώων εἰωθὸς ἀποβαίνειν. τὸ μέν τοι ἄχρηστον εἰς τὰ ἔργα, καὶ τὸ παρέχοντας τοῦ θεραπεύειν ἀφορμὰς, οὔτ᾽ ἀκατάληπτόν ἐστιν, οὔτ᾽ ἀναιτιολόγητον. καὶ μᾶλλόν τις ὁρμώμενος ἀπ᾽ αὐτοῦ, πίστιν καὶ παῤῥησίαν ἔχειν διεβεβαιοῦτο περὶ τῆς καταλήψεως τῶν ἀδήλων, διαφεύγουσι μὲν γὰρ ταῖς αἰσθήσεσιν ἀπὸ τῶν ἰδίων διὰ σμικρότητα. καταλήψεως δὲ ἐναργοῦς ἐξ ἀλλήλων τυγχάνουσιν. ἱκανῶς δὲ ἐφώδευσε τοὺς τόπους διοκλῆς ἐν τῷ πρὸς πλείσταρχον ὑπομνήματι. γράφων ταῦτα κατὰ λέξιν. γνοίη δ᾽ ἄν τις τοῦτο καὶ ἐπ᾽ ἄλλων οὐκ ὀλίγων, καὶ ἐπὶ τὰ τῶν ἐχιδνῶν ἢ σκορπίων καὶ ἑτέρων τοιούτων ἀτενίζεις δὲ ὡς ἄδηλα καὶ μικρὰ τὸ γένος ὄντα, μεγάλων αἴτια κινδύνων καὶ πόνων γίνεται. ὧν οὐ δὲ ἰδεῖν ἔνια ῥάδιον παρά τινα σμικρότητα καὶ ἰσχνὸν ἀπολειπομένην αὐτοῖς ἀπὸ τῶν ἄλλων θηρίων. ὁ πηλίκον γάρ τι νομίζειν τὸ μέγεθος, ὅσον ἀπὸ τῆς πληγῆς τοῦ σκορπίου καὶ τῶν ἄλλων τῶν τοιούτων τῇ σαρκὶ λυμαινομένων. ὧν τὰ μέν ἐστι ποιοῦντα πόνον ἰσχυρόν. τὰ δὲ, σήποντα. τὰ δὲ, κτείνοντα συντόμως. ἢ τὸ διὰ τοῦ φαλαγγίου δήγματος ἐνιέμενον, καὶ ὅλον τὸ σῶμα διαπονοῦ-

μένον, οὐδὲ γὰρ ἂν διαγνῶναι τὸ μέγεθος αὐτῶν δύναιτό τις, διὰ τὸ παντάπασιν εἶναι μικρόν. ὅτι μὲν οὖν πρὸς τὰς διαθέσεις ταῦτά ἐστιν, ὁμολογεῖται παρὰ πάντων. ὅτι δὲ καὶ ἀκριβῶς κατείληπται τῷ τὴν δύναμιν αὐτῶν γίνεσθαί τινα φθοροποιὸν, ἤ τις καταμιγνυμένη τοῖς σώμασιν αἰτία τῶν συμβαινόντων κακῶν γίνεσθαι συγκεχώρηται, καὶ τοῦτο πεπίστευται. καὶ οὐδεὶς ἂν οὕτως εὑρεθείη φιλόνεικος, ὡς ἄλλωθεν φῆσαι τὰς ὀχλήσεις καὶ οὐχὶ δι' ὕλης φθοροποιοῦ καθαπτομένης τῶν σωμάτων μόνων ἀπὸ μέρους συμπίπτειν. τοῦτο δὲ ἦν τὸ πρὸς τὰ ἔργα τῆς τέχνης χρησιμεύοντα, κατὰ πᾶν ἔργον, τὸν ἔργον τοῦτο πινούμενον ὑπαγορεύειν ὥστε ἡμᾶς μηδὲ βλάπτεσθαί τι κατὰ πάντα ὑπὸ τῆς κατὰ τὴν ἰδιότητα ἀκαταληψίας τῆς κοινῆς αἰτίας. καὶ τό τε ἐνδείκνυσθαι δυναμένης βεβαίως κατειλημμένης. διὸ καὶ ὁ Ἐρασίστρατος ἐπισκώπτων τὴν αὐθάδειαν τῶν ἐμπειρικῶν, αἰτίαν τοῖς ἀναιτιολογήτοις ἀνέθηκεν. οὐ συγχωρῶν αὐτοῖς τὴν αἰτίαν τὴν ἐπαναβεβηκυῖαν καὶ καθολικὴν, ἄληπτον οὐδὲ τῇ νόσῳ ὑπάρχειν. τῇ τε ἀπορίᾳ αἰτιῶν γραφῇ ταύτην διαλευκαίνων, ᾧ τε μὴ λέγειν οὐδὲ τίνων ἀρκούμεθα τῇ τετριμμένῃ θεραπείᾳ οἷ οὐδὲ τῶν θηριοδήκτων καὶ θανασίμων καὶ οὐδὲ τῶν λοιπῶν, ἀρκεσθησόμεθα τῇ παρατηρήσει τῆς τῶν αἰτιῶν προσλήψεως χωριζόμενοι τελέως. πρῶτον μὲν γὰρ κατὰ γένος ἐγκαταληπτά εἰσιν. ὅτι μὲν γὰρ δύναμις ὑπάρχει φθαρτικὴ, καὶ τῶν ὑποκειμένων ἀλλοιωτικὴ ὥστε ἀναιρεῖν ἐκ τῶν κατὰ γένος οὐ μὴν κατ' εἶδος, ὑπογραφῇ θεραπείαν διὸ ταῦτα ἀμβλωτέον καὶ κατεργαστέον. ὅτι δὲ φησὶν ἦλθέ τις ἐφ' ὕδωρ γλυκὺ καὶ πότιμον, καὶ πρὸ τῆς παρατηρήσεως ἐπ' ἔμετον διὰ τάσιν τοῦ πεπληγότος, ἢ δεδειγμένου μέρους ἀποθηλασμὸν, σικύας προσβολὴν, ἐκτομὴν καυτηρίων, φαρμάκων τὸ αὐτὸ δυναμένων ἐπίθεσιν, ἔτι λουτρὸν ἀποκοπὴν τοῦ μέρους, ἀνελογήσατο τῶν πεφυκότων φαρμάκων εἰς τὴν ἐπιφάνειαν φέρεσθαί τινα, τῇ ἐνειμένῃ εἰς τὰ κατὰ βάθος ἐναντιοῦσθαι φθορᾷ. ταῦτα μὲν οὖν δι' ὧν εἴρηκεν Ἐρασίστρατος πάντα εἴρηκε καλῶς καὶ τοῖς ἔργοις ἀκολούθως.

θαυμάζειν δέ ἐστιν ἄξιον τῶν μεθοδικῶν, οἳ τινὸς οὐ συγχωροῦσιν αἰτίαν εἶναι τὴν φθοροποιὸν ἐνισταμένην δύναμιν ἐκ τῶν ἀπ' αὐτῆς γινομένων ὀχλήσεων. ἀλλὰ τρόπον μὲν ἀνοήτως οὕτω τῷ ὀνόματι προσέχουσι. φθοροποιὸς γὰρ καὶ παρ' αὐτοῖς αὔτικρυς ἡ ἐνισταμένη δύναμις προσαγορεύεται. τὸ δὲ φθοροποιὸν εἶναί τι αἰτίας οὐκ ἄλλου τινὸς ἔργου ἐστί. φασὶ δὲ τὸ μὲν ὄνομα τὸ μάρσιππος καὶ τὸ ἀνακαλύπτειν, τοῖς λοιποῖς πᾶσι παραπλήσιον ὑπάρχειν. ἐφ' ὧν μόρια τινὰ τῶν λέξεων οὐχ ὅτι κατὰ δύναμιν, ἀλλὰ κατὰ ψιλὴν περιείληπται τὴν ἐκφοράν. ἔν τε γὰρ τῷ μάρσιππος καὶ τῷ ἀνακαλύπτειν, ὡς τὰς κυρίας καὶ προηγουμένας οὐκ ἔχει σημασίας, οὕτω καὶ ἐν τῷ φθοροποιεῖν παρελκόντως καὶ οὐ κατὰ δύναμιν ἐντέτακται. μεταβαίνουσι δὲ ἐνταῦθα ἐπὶ τὰς τῶν αἰτίων διαφοράς. καὶ λέγουσιν ὅτι τῶν αἰτίων, τινὰ μέν ἐστι τὰ προκατάρξαντα. ἃ ποιήσαντα πάθος χωρίζεται. οἷον, κόπος ἢ ψύξις. ἔγκαυσις, καὶ τὰ παραπλήσια. τὰ δὲ, συνεκτικὰ διὰ τὸ ποιεῖν τὸ πάθος καὶ παραμένειν. τουτέστιν ὧν μὲν παρόντων τὰ ἀποτελέσματα πάρεστιν. αὐξανομένων δὲ αὔξεται καὶ μειουμένων μειοῦται. καὶ παυομένων παύεται. καὶ αὐτοτελῆ δύναται εἶναι καθ' ἑαυτὰ παραγινόμενα τῶν ἀποτελεσμάτων. καὶ τοιαῦται μὲν τῶν αἰτίων αἱ δοκιμώταται διαφοραί. τὸ δὲ φθοροποιὸν οὐδὲ μιᾷ τούτων ὑποτάσσεσθαι πέφυκε. προκαταρκτικὸν μὲν γὰρ οὐκ ἔστιν. ἐπειδὴ περὶ τὸ πάθος αὐτὸ παραμένει καὶ τοῦ σώματος οὐ χωρίζεται. συνεκτικὸν δ' οὐκ ἂν λέγοιτο. πλεῖστον μὲν γὰρ χρόνον πάρεστι. καὶ καθάπερ ὑπὸ λυσσῶντος κυνὸς δεδηγμένον γίνεται. εἰ δὲ μὴ προκαταρκτικὸν μὴ δὲ συνεκτικὸν, οὐδὲ αὐτοτελὲς, τὸ δὲ συναίτιον ἂν εἴη. εἰ δὲ ἐκ μηδεμιᾶς διαφθορᾶς τῶν αἰτίων ἄγειν δυνησόμεθα τὸ φθοροποιὸν, συγχωροῦμεν αὐτὸ μηδὲ αἴτιον ὑπάρχειν. τοιούτων δὲ λεγομένων καὶ ὄντων, τὸ μὲν τινὰ τῶν ὀνομάτων ἐν αὐτοῖς μὴ ἔχειν μόρια σημαντικὰ τῶν πραγμάτων, ἀλλὰ κατὰ ψιλὴν τὴν ἐκφορὰν πεποιημένα, συγχωρητέον. ὅτι δὲ μὴ πάντα ὑποληπτέον τοιαῦτα ὑπάρχειν, ἀλλὰ παντελῶς ὀλίγα, οὐδὲ τὸ ποιεῖν ἐν τῷ φθοροποιῷ παραπλη-

σίως τοῖς ὑπολειφθεῖσιν ἐξενήνεκται. κυριωτάτην δὲ ἔχει τὴν σημείωσιν. ὡς γὰρ τὸ τῆς φθορᾶς ὄνομα, οὕτω, καὶ τὸ ποιεῖν τὸ χεῖρον μεταβολῆς σημαντικόν ἐστιν τῆς ἐπὶ παραληπτέον, μηδὲν ἐν τῷ φθορὰν ἔχειν δηλοῦν. τούτου δ' οὖν περιακούουσι πάντες, τελέως ἄσημον γίνεται τοὔνομα. καὶ παραπλήσιον τῷ παιδὶ ἔχειν δίψος. εἰ δίδωσιν ἀπὸ τῆς φθορᾶς ἢ γῆ γίνεσθαι τὴν νόσον, συγχωροῦσι δηλονότι καὶ ἐπὶ τοῦ ποιεῖν. εἰ μή τι φθορᾶς ἀπεργαστικόν ἐστι. πᾶν δὲ τὸ ποιοῦν καὶ ἀπεργαζόμενόν τι, καθ' ἕκαστον αἴτιον δείκνυται τῶν ὑποκειμένων ἐν τοῖς σώμασιν. ἐπί τε τῶν ἐνιεμένων καὶ θανασίμων φαρμάκων. ἀλλὰ ὑποπίπτειν τι φασὶ ταῖς τῶν αἰτίων διαφοραῖς. πεπλάνηνται δὲ κἀνταῦθα διαίρεσιν ἀκριβῆ οὐκ εἰληφότες. λέγεται δὲ καὶ παρὰ τοῖς δογματικοῖς αἴτιον ὑπάρχειν καὶ αὐτὸ κατὰ μέν τι παρασκευαστικόν. κατὰ δέ τι συνεκτικόν.. ὡς βουβώνων ἕλκος καὶ βουβώνων πυρετός. καὶ τὸ συνεφιστάμενον τῷ ἀποτελεσματικῷ. χωριζόμενόν τε ὡς πτῶμα κατάγματος. καὶ καθόλου δὲ ὅταν ᾖ κατὰ τὴν ἑαυτοῦ φύσιν αἴτιον ὑπάρχῃ μὴ περιέχηται δὲ ἔν τινι διαιρέσει μοχθηρὸν μὲν οὐχί· δὲ καὶ αἴτιον τῆς τῶν ὁμογενῶν περιγέγραπται φύσεως. ὅτι δὲ τὸ φθοροποιόν ἐστιν αἴτιον, ἐλέγχεται μὲν καὶ ἀπὸ τοῦ ὀνόματος, δείκνυται δὲ ἐναργέστερον ἐπὶ τῶν συμβαινόντων. τί γὰρ αἴτιον ὑπέλαβον εἶναι μετὰ τὴν ἐκ τοῦ δακέτου πληγὴν, ἢ τὴν ἐπιγινομένην ὑπὸ τοῦ ζώου δύναμιν, καὶ τὸν εἰς τὰ σώματα βαλλόμενον ἰὸν, μή τε ψύξιν, μή τε ἔγκαυσιν, μή τε ἐκκοπὴν, μή τε ἀπεψίαν, μή τε ἄλλό τι παραπλήσιον ἔχοντες αἰτιᾶσθαι. ἐπεὶ δὲ καὶ ταῖς διαφοραῖς χαίρουσι τῶν αἰτίων, τὰ μὲν, καλοῦντες συνεκτικὰ, τὰ δὲ, προκαταρκτικὰ, λεκτέον αὐτοῖς ὅτι καθ' ἕτερον δὴ τούτων αἴτιόν ἐστι τὸ προκαταρκτικόν. ἐκληθήσεται δὲ ἀπὸ τοῦ προάγειν τοῦ ἀποτελέσματος καὶ τὴν προϋπόστασιν λαμβάνον τοῦ σώματος. συνεκτικὸν δὲ ἐπειδὴ τῶν παθῶν παρόντων καὶ αὐτὸ πάρεστι. καὶ χωρισθέντος αὐτοῦ, χωρίζεται καὶ τὰ συμβαίνοντα περὶ αὐτό. περὶ τούτων μὲν οὖν οὐ πλείω ῥητέον. θετέον δὲ ἔσωθεν ἐναργεστάτην φθοροποιὸν δύναμιν αἰτίαν εἶναι. καὶ

τὸν προηγούμενον σκοπὸν τοῦτον ποιητέον. καὶ πρὸ μὲν τῆς κα-
τασκήψεως τῶν παθῶν, ποικίλως διαγωνιστέον μέχρι τοῦ
παντελῶς αὐτὴν ἀποσκευασθῆναι τῶν σωμάτων, τοῦτο μὲν
ὑπεξαιρουμένην δι᾽ ὧν εἰσῄει μορίων, τοῦτο δὲ κρατουμένης
περὶ ἑνὶ καὶ μάλιστα οὐ κυρίῳ τόπῳ, πρὶν εἰς τὸ βάθος ἀπελ-
θεῖν καὶ σπλάγχνων ἅψασθαι. τοῦτο δὲ ἀποπλανωμένην ἢ ἐ-
πικιρνωμένην, ἐπειδὰν φθάσῃ χωρεῖν διὰ τῶν σωμάτων. ὁτὲ
μὲν οὖν ὑπέρζεσις αὐτοῖς κομιδῇ ἐπὶ τῶν θανασίμων φαρ-
μάκων δι᾽ ἐμέτων γίνεται. ἤδη δὲ τῶν ἰοβόλων διὰ τοῦ κατα-
σχασμοῦ, καὶ σικυῶν προσβολῆς. ἐκ μυζήσεως καὶ περισχαρ-
κισμοῦ. ὁτὲ δὲ δι᾽ ἀκρωτηριασμοῦ. ἡ δὲ κατοχὴ καὶ διακρά-
τησις, διὰ κλύσεων καὶ διὰ δριμέων ἐπιθέσεως φαρμάκων.
ταῦτα δὴ κρατεῖν ὁμοῦ καὶ ἀποπλανᾶν δύναται τὸν ἰόν.
ἡ σβέσις δὲ καὶ ἡ κράτησις δι᾽ ἀκρατοποσίας ἀκράτου τε καὶ
γλυκέος. ἢ καὶ ἐκ τῶν ἐναντίων δριμυφαγίας. ἤδη τέλος δὲ
συνεργεῖ τούτοις καὶ κάθαρσις κοιλίας. καὶ ἱδρωτοποιΐα.
καί τινα ἄλλα κοινῶς, καθὼς κατὰ μέρος ἤδη δείξομεν. δεῖ
δὲ οὐ μόνον τὴν φθοροποιὸν ὕλην ποιεῖσθαι σκοπὸν, ἀλλὰ
καὶ τὸ μέρος αὐτῆς καὶ τὸν χρόνον. καὶ γὰρ παρὰ ταῦτα
πλείστην ὅσην διαφορὰν τὰ βοηθήματα λαμβάνει. παρὰ
μὲν τὸ μέγεθος, ἐπειδήπερ τῶν δηλητηρίων καὶ τῶν ἰοβό-
λων, τὰ μὲν, διεγερτικὰ κινδύνων γίνεται. τὰ δὲ, σηπεδόνων
βαθυτέρων ἢ ἐπιπολαιοτέρων. τὰ δὲ, περιωδυνιῶν σφο-
δροτέρων ἢ ἀμυδροτέρων. τῶν δὲ ἄλλων δυσεργημάτων. ἧσ-
σον ἢ μᾶλλον ὀχλούντων. δεῖ δὲ πρὸς τὰ κίνδυνον ἔχοντα,
διὰ τῶν ἀγωνιστικωτέρων ἀγωνίζεσθαι βοηθημάτων. πρὸς δὲ τὰ
ἥσσονα χαλεπὰ διὰ τῶν ἐπιεικεστέρων. ἄτοπον γὰρ ἤδη μὲν
τῶν μειζόνων μακροτέροις ἂν οὕτω τύχῃ χρώμενον τοῖς βοη-
θήμασι, κινδύνῳ τὸν θεραπευόμενον περιβάλλειν. ἤδη δὲ τῶν
μικροτέρων δι᾽ ἀποτόμου τῆς βοηθείας μάτην αἰκίζεσθαι
τὸ σῶμα. πρόχειρος δὲ καὶ ὁ ἀπὸ τῶν χρόνων ἐστὶν ὁρισμός. ὁ
μὲν γὰρ ὀξέως καὶ παραχρῆμα. καὶ τὰς ὀχλήσεις καὶ τοὺς
κινδύνους ἐπιφέρει. ὁ δ᾽ ἐξ ἀναβολῆς καὶ χρόνου πλείονος
ἢ ἐλάττονος. προσήκει τοίνυν τοῖς μὲν ὀξέσι, κατεσπευσμένως
βοηθεῖν καὶ διὰ πολλῶν ὁμοῦ. τοῖς δὲ, σχολαιοτέρως. ταυ-

τὸ μὲν οὖν ὡς ἐν τεχνολογίᾳ μετρίως εἴρηται. προσάπτωμεν δὲ ἑξῆς ὡς ἤδη κατὰ μέρος.

## Σημεῖα κυνὸς λυττῶντος καὶ τῶν ὑπ᾽ αὐτοῦ δεδηγμένων. κεφ. κγʹ.

Τὸν περὶ τῶν λυσσοδήκτων λόγον προετάξαμεν τῶν ἄλλων. ἐπεὶ καὶ τὸ ζῶον πολύ τε καὶ συνήθές ἐστι. καὶ συνεχῶς ἁλίσκεται τῇ λύσσῃ ὁ κύων καὶ ἀπόλλυται. καὶ δυσφύλακτον καθέστηκε. καὶ ὁ ἀπ᾽ αὐτοῦ κίνδυνος ἀπαραίτητός ἐστιν εἰ μὴ πολλοῖς χρήσαιτο τοῖς βοηθήμασι. λυττᾷ δὲ ὁ κύων ὡς τὸ πολὺ μὲν ἐν τοῖς σφοδροτάτοις καύμασιν. ἐνίοτε δὲ καὶ ἐν τοῖς ἐπιτεταμένοις κρύεσι. λυττήσας δὲ ἀποστρέφεται καὶ βρῶσιν καὶ πόσιν. καὶ φλέγμα πολὺ ἀφρῶδες ἐκ τοῦ στόματος καὶ τῶν ῥινῶν προβάλλει. καὶ πονηρὸν βλέπει καὶ στυγνότερον τοῦ συνήθους. ἐφορμᾷ δὲ χωρὶς ὑλακῆς πᾶσιν ὁμοίως καὶ θηρίοις καὶ ἀνθρώποις πᾶσί τε συνήθεσι καὶ ἀγνώστοις δάκνων. καὶ παραχρῆμα μὲν οὐδὲν σκληρὸν ἐπιφέρει. πλὴν ὅσον ὀδύνην τὴν ἐκ τοῦ τραύματος. ὕστερον δ᾽ ἐμποιεῖ πάθος τὸ καλούμενον ὑδροφοβικόν. συμπίπτει δὲ μετὰ σπασμῶν καὶ ἐρυθημάτων ὅλου τοῦ σώματος. μάλιστα δὲ ὅλου τοῦ προσώπου. καὶ μάλιστα ἀπὸ ἱδρώσεως καὶ ἀπορείας. καὶ τινὲς μὲν φεύγουσι τὴν αὐγήν. τινὲς δὲ ψύχονται συνεχῶς. ἄλλοι δὲ ὑλακτοῦσιν ὥσπερ κύνες. καὶ δάκνουσιν ἐπιόντες. καὶ δάκνοντες, αἴτιοι τοῦ αὐτῶν πάθους κατέστησαν. εἰ μὴ καθ᾽ ἱστορίαν παρειλήφαμεν περιγενέσθαι ἕνα ἢ δεύτερον. καὶ γὰρ Εὔδημος περιγεγενῆσθαι τινά φησι. καὶ Θεμίσωνα οἱ μὲν, λέγουσι τῷ πάθει δηχθέντα περιπεσεῖν καὶ σωθῆναι. οἱ δὲ, φίλῳ ὑδροφοβιῶντι προσκαρτερήσαντα προθύμως καὶ συμπαθῶς, εἰς τὴν ὁμοίαν ἐμπεσεῖν διάθεσιν. καὶ πολλὰ κακοπαθήσαντα σωθῆναι. τὸ μὲν οὖν πάθος ἐστὶν ἀργαλέον. περὶ δὲ τῆς πείρας αὐτοῦ, πολλοὺς καὶ αὐτοὶ περιεσώσαμεν. καὶ ὑπὸ ἄλλων ἰατρῶν σωθέντας ἔγνωμεν.

## Θεραπεία τοπικὴ τῶν ὑπὸ λυττῶντος κυνὸς δηγμάτων. κεφ. κδʹ.

Τῆς θεραπείας ἡ μέν ἐστι κοινή, καὶ χρηστέον αὐτῇ ἐπὶ πάντων τῶν ὑπό τινος ἰοβόλου ζώου δεδηγμένων. ἡ δέ τις ἰδία τῶν λυσσοδήκτων. τοῖς μὲν γὰρ ἄκρως ὠφελεῖν εἰθισμένη. τοῖς δὲ ἀπὸ πολλοῦ δηχθεῖσιν ἀνάρμοστος. καὶ πρῶτόν γε αὐτὴν ἐκθέμενοι, μετὰ ταῦτα καὶ τὴν κοινὴν ἐκσφοχάσομεν. δεῖ τοίνυν καρκίνους ποταμίους ἐπὶ κληματίδος λευκῆς ἀμπέλου καῦσαι. καὶ τὴν τέφραν αὐτῶν λειοτριβήσαντα ἔχειν ἀποκειμένην. ὁμοίως δὲ καὶ ῥίζαν γεντιανῆς ἀποτίθεσθαι κεκομμένην καὶ σεσησμένην. ὁπότε δέ τις δηχθείη ὑπὸ λυσσῶντος κυνὸς, εἰς οἴνου ἀκράτου κυάθους δ' ἐμβάλλειν δύο μὲν κοχλιάρια τῆς τῶν καρκίνων τέφρας. ἓν δὲ κοχλιάριον τῆς γεντιανῆς. καὶ ἐγκυκήσαντας ὡς ἐν ἀλφίτῳ δεδευμένῳ, πίνειν ἀπὸ τῆς αὐτῆς ἡμέρας μέχρι τεσσάρων ἡμερῶν. ἀπ' ἀρχῆς μὲν οὕτω διδόμενον τὸ φάρμακον, ὕστερον προσφερέσθω τὸ ζωρόν. εἰ δὲ ἡμέραι παρεληλύθασι δύο ἢ τρεῖς ἀπὸ τῆς δήξεως, ἐγχειροῦντας τῇ θεραπείᾳ, διπλάσιον δεῖ διδόναι ὅσον ἐξ ἀρχῆς εἰρήκαμεν. τὸ μὲν ἄριστον ἐπὶ τῶν λυσσοδήκτων βοήθημα. ὃ δὴ καὶ μόνον ἐνίοις ἤρκεσε τοῦτ' ἐστί. καὶ χρηστέον αὐτῷ μετὰ πεποιθήσεως. ἕνεκα δὲ τοῦ καὶ δι' ἄλλων ἠσφαλίσθαι πρὸς ἄφυκτον δοκοῦντα κίνδυνον, οὐδὲν τὸ κωλῦόν ἐστι καὶ τοῖς λοιποῖς χρήσασθαι. αἱρετώτερον δὲ διὰ κενῆς ἂν οὔπω τύχῃ τῶν βοηθημάτων τὸν ἄνθρωπον ὑπομεῖναι, ἢ διὰ τὴν ὀλιγωρίαν κινδύνῳ περιπεσεῖν. οὐχ οὕτω δ' εὐλαβητέον τὰ μεγάλα τραύματα ἐπὶ τῶν λυσσοδήκτων, ὡς τὰ μικρὰ καὶ ταῖς ἀμυχαῖς ἐμφερῆ. διὰ γὰρ τῶν μειζόνων ἀθρόον καὶ πολὺ αἷμα προχεόμενον, δύναταί τι καὶ τοῦ ἰοῦ συναποκλύζειν. διὰ δὲ τῶν μικροτέρων οὐδαμῶς. καὶ ἐκ μὲν τῶν μειζόνων τὰς ἀφισταμένας σάρκας αὐτόθεν ἀφαιρετέον. καὶ τὰ χείλη περιγλυπτέον διὰ τῆς ἀκμῆς. ἀνατεθείσης δὲ τῆς σαρκὸς ἀγκίστρῳ ἢ μυδίῳ, τὴν ἐκτομὴν ἀποτελεστέον. ἐπὶ ἀμφοτέρων δὲ τὰ ἐν κύκλῳ βαθυτέραις ἀμυχαῖς καταχαρακτέον. εἴπως ἡ τοῦ αἵματος παραπλησιωτέρα γενομένη κένωσις, ἐναντιωθήσεται τὰ σώματα τῇ τοῦ ἰοῦ διαδόσει. πολλὴν δὲ καὶ ἡ σικύα κολληθεῖσα μετὰ πολλῆς φλογὸς παράσχοι ὠφέλειαν, ὥστε λῦσαι τοῦ ἰοῦ τὴν δύναμιν. Ἡ δὲ καῦσις αὐ-

σιμώτατον ἐπὶ τῶν ἰοβόλων ἐστὶ βοηθημάτων. τὸ γὰρ πῦρ πάσης δυνάμεως εὐτονώτερον ὑπάρχον, ὁμοῦ μὲν κρατεῖ καὶ κωλύει φέρεσθαι τὸν ἰὸν ἐσωτέρω. ὁμοῦ δὲ τὸ κρατηθὲν αὐτοῦ μέρος τῆς ἐφεξῆς θεραπείας, καταβολὴν οὐ τὴν τυχοῦσαν ἐργάζεται. παραμενούσης τῆς ἑλκώσεως ἐπὶ πλέον. τὴν μὲν γὰρ ἔκπτωσιν τῆς ἐσχάρας μάλιστα ἐκ τούτου φροντιστέον, ὅπως μὴ τάχιον τὰ μέρη συγκλεισθείη. ἀλλ' εἰ δυνατὸν ἐστι πολὺ τῆς προθεσμίας τὰς ἑλκώσεις τηρητέον. καὶ ἐπὶ φλεγμαινούσας καὶ ἐπὶ ῥυπαινομένας. παρέξει δὲ αὐταῖς τὸ τοιοῦτον τάριχος ἐπιτιθέμενος. καὶ σκόροδον ἄγριον λελειοτριβημένον. κρόμμυά τε ὡσαύτως. ὀπὸς μὲν οὖν μάλιστα ὁ κυρηναϊκὸς ἢ ὁ καλούμενος μηδικὸς ἢ παρθικός. κόκκοι δὲ πυρῶν ἐπιτιθέσθωσαν καὶ μεμασημένοι καὶ ἀμάσητοι. διαφυρώμενοι μὲν γὰρ ἀπὸ τῆς ἐμβροχῆς ἀνευρύνουσι τὰ τραύματα. τινὲς δὲ οἴονται τοὺς μεμασημένους ἀντιπαθές τι ἔχειν ἀπὸ τῆς τῶν μεμασηκότων νηστείας. οὐ μὴν τοῦτο βέβαιόν ἐστιν. ἀλλὰ εὐκαίρως αὐτοῖς χρηστέον. εἰ δὲ ὅπερ γίνεται πολλάκις, καὶ οὐλαὶ συνερχόμεναι φθάνουσι πρὸ τῶν ἡμερῶν, διὰ χειρὸς ἀναξαίνειν προσήκει. ὑπερσαρκίζοντας καὶ τέμνοντας. ἢ καὶ ἐπικαίοντας πάλιν ἐὰν οὕτω τύχῃ. παρελθούσης δὲ τῆς προκειμένης προθεσμίας, ἀφετέον μὲν ἀπουλωθῆναι τοῖς ἕλκεσιν. ἐμπλάστρῳ δὲ τῇ διὰ τῶν ἁλῶν ὅλον τὸν τόπον καταληπτέον. μετὰ ὀλίγας δὲ ἡμέρας καὶ σιναπιστέον.

## Περὶ διαίτης τῶν ὑπὸ κυνὸς λυσσῶντος δηχθέντων. Κεφ. ϟϛέ.

Ἡ μὲν οὖν τοπικὴ θεραπεία τῶν λυσσοδήκτων, τοιαύτη τίς ἐστι. δεῖ δὲ καὶ τὴν δίαιταν αὐτῶν ἐστοχάσθαι τῆς πρὸς τὸν ἰὸν ἐναντιώσεως. ἵνα ὁμοῦ μὲν ἀμβλύνῃ καὶ σβεννύῃ τὴν δύναμιν. ὁμοῦ δὲ κωλύῃ τὴν εἰς βάθος φοράν. καταλαμβανόμενα γὰρ ἀντιπίπτει τῇ παρεισδύσει τῆς φθοροποιοῦ δυνάμεως. δύναται δὲ τούτων ἑκάτερον παρέχειν τοῦτο. οἴνου ἀκράτου ζωροτέρου πόσις καὶ γλυκέος καὶ γάλακτος. οἱ γὰρ ταῦτα πάντα λαμβάνοντες πρὸς τὴν ἐπιμέλειαν, ὀνίσαν-

ταί τι ἰῷ. καὶ πάσχειν αὐτοῦ τὴν δριμύτητα ἐκκαίει. ὡσαύ-
τως δὲ καὶ σκόρδων καὶ πράσων καὶ κρομμύων ἐδωδή. καὶ
ταῦτα γὰρ τὸ ὅλον δυσμετάβλητα καὶ δυσεξίτηλα. πα-
ραμένουσι γὰρ αὐτῶν αἱ ποιότητες ἤδη πλείους ἡμέρας
ὁπόταν οὐ νικᾶται οὐδὲ τρέπεται ὑπὸ τῆς φθοροποιοῦ
δυνάμεως. ἐκ δὲ τῶν ἐναντίων κρατεῖν αὐτῆς πέφυκεν. εἰς
τοῦτο δὲ καὶ τῶν ἀντιδότων ἐστὶ χρεία. καὶ τῆς θηριακῆς. καὶ
τῆς εὐπατορίου λεγομένης. καὶ τῆς μιθριδατίου καὶ πά-
σης ἄλλης ἥ τις ἐκ πλειόνων ἀρωμάτων εἴληφε τὴν σύστασιν.
δυσμετάβλητα γὰρ τῇ συστάσει πάντα τὰ ἀρώματα ταῖς
δυνάμεσι καὶ ταῖς οὐσίαις. διὸ περικρατεῖται τοῖς σώμα-
σι. τοιοῦτος μὲν οὖν καὶ ὁ τῆς διαίτης τρόπος. δεῖ δὲ γινώ-
σκειν ὅτι ἡ τοῦ ὑδροφοβικοῦ πάθους ἐγκατάσκηψις, οὐδὲ
ὡρισμένην ἔχει προθεσμίαν. ὡς ἤδη τὸ πλεῖστον γὰρ ἕως
τεσσαρακοστῆς ἡμέρας εἰωθὸς, τοῖς ἀμεληθεῖσι καὶ δι' ἑξαμή-
νου ἐνίοις ἀπήντησε. καὶ δι' ἐνιαυτοῦ. καὶ ταῦτα ἡμῖν ἑώρα-
ται. ἱστοροῦσι δέ τινες μετὰ ἑπταετίαν ἐνίοις ἐνδιδόναι τῷ
πάθει. καὶ κατὰ μὲν τὰς ἀρχὰς τῶν λυσσοδήκτων ἡ θερα-
πεία, τοιαύτη ἐστίν. ἐὰν δὲ ὅπως δήποτοῦν ἐν ταῖς πρώ-
ταις ἡμέραις μὴ προληφθῇ τὰ προειρημένα βοηθήματα,
τὸ μὲν περισαρκίζειν καὶ καίειν, παραληπτέον. καὶ γὰρ ἱ-
κανῶς εἰς τὸ παρεληλυθὸς μετάγειν δύναται. οὐδὲ μία γὰρ
ὄνησις τῆς ἐπιβολῆς. ἀλλὰ διακενῆς τὰ σώματα ταῖς ὀδύ-
ναις βλαβηθήσεται. τρόπος δὲ τῆς θεραπείας ἕτερος ἀ-
γαθῶ. κάθαρσις. ἡ καὶ μέγα ὄφελος ἐμπαρέχειν δυναμένη.
συμμεταποιεῖ γὰρ τὴν ἕξιν κινοῦσα. ἥ τε διὰ τῆς κολο-
κυνθίδος ἱερὰ δόσις. καὶ δὴ καὶ τὸ γάλα τὸ σχιστὸν, ὁμοῦ κά-
θαρσιν καὶ ἐπικράσεις παρέχειν δυνάμενον αἵ τε δριμυφα-
γίαι καὶ ἡ τοῦ ἀκράτου πόσις, παραλαμβανέσθωσαν καθ' ἡ-
μέραν. ἀμβλύνειν δυνάμεναι τὸν ἰόν. καὶ πρὸς τούτοις ἱδρω-
τοποιΐα. καὶ πρὸ τροφῆς καὶ μετὰ τροφήν. δρωπακισμός
τε καὶ σιναπισμὸς κατὰ μέρος ἐφ' ὅλου τοῦ σώματος. πάντων
δὲ ἀνυσιμώτατον ἀπὸ τούτων ὁ ἐλλεβορισμὸς ἐγνώσθη. καὶ
χρηστέον τεθαῤῥηκότως τῷ βοηθήματι. οὐχ ἅπαξ. οὐδὲ δίς.
ἀλλὰ καὶ πλειστάκις πρὸ τῆς τεσσαρακοστῆς ἢ καὶ μετὰ ταῦ-

ται· τοσαύτην γὰρ τὴν ἰσχὺν προσφέρεται τὸ βοήθημα, ὥστε τῶν ἤδη συνηκαθημένων τοῦ ὑδροφόβου, περισωθῆναι τινὰς λαβόντας ἐλλέβορον εὐθὺς ἐν τῷ πρώτῳ καταπειρασμῷ τοῦ συμπτώματος. τοὺς δ' ἤδη κατεσχημένους, οὐδὲ αὐτός τι περιποιῆσαι δύναται. τὴν μὲν οὖν τῶν λυσσοδήκτων ἐπιμέλειαν πρώτην ἐξεθέμεθα, δι' ὃν ἔμπροσθεν εἰρήκαμεν ἐπιλογισμόν. μεταβαίνοντες δ' ἤδη ἐπὶ τὰ λοιπὰ τῶν ἰοβόλων πρῶτον μὲν τὰς σημειώσεις αὐτῶν, ὑπὸ μίαν ἐκθησόμεθα πρόφασιν. μετὰ δὲ ταῦτα, κοινὴν τὴν θεραπείαν πᾶσιν ἁρμόσαι δυναμένην. ὑποδραμόντες δὲ ἑξῆς ὑποδείξομεν, εἴ τινα κατ' ἰδιότητα ἐνίους προσωφελεῖν πέφυκεν, ὁμοίως καὶ τὰ τελείως ἀβοήθητα παρασημειωσόμεθα.

## ΠΕΔΑΚΊΟΥ ΔΙΟΣΚΟΡΊΔΟΥ ἈΝΑΖΑΡΒΈΩΣ ΠΕΡῚ ΣΗΜΕΙΩΣΕΩΣ ΤΩ͂Ν ὙΠῸ ἸΟΒΌΛΩΝ ΔΕΔΗΓΜΈΝΩΝ ΒΙΒΛΊΟΝ ὌΓΔΟΟΝ.

### Περὶ φαλαγγίων. Κεφ. τνϛʹ.

Οἷς μὲν ὑπὸ φαλαγγίων δεδηγμένοις, αὐτὸς μὲν ὁ τόπος ἐνερευθὴς ἐστι καὶ ὅμοιος κεντήμασιν, οὔτε διῳδηκὼς οὔτε περίθερμος. ἀλλὰ μετρίως μὲν ὑπέρυγρος. ἐκ δὲ τῶν ἐναντίων κατεψυγμένος. παρακολουθεῖ δὲ τρόμος δι' ὅλου τοῦ σώματος. καὶ ἐντάσεις περὶ τοὺς βουβῶνας. καὶ τὰς ἰγνύας προσεοικυίας σπασμῷ. περὶ τὴν ὀσφὺν σύλλημα καὶ συνεχὴς πρὸς οὔρησιν ἐρεθισμοῖς. δυσκολία πολλὴ περὶ τὴν ἔκκρισιν τοῦ περιττώματος. ὁμοίως δὲ ἴτοις καὶ ἱδρὼς ψυχρὸς καθ' ὅλην τὴν ἐπιφάνειαν ἐκκρίνεται. τά τε ὄμματα δακρύει καὶ πως ἀμαυροῦται.

### Περὶ σκολοπένδρας. Κεφ. τνζʹ.

Οἷς δὲ ὑπὸ τῆς καλουμένης σκολοπένδρας ἢ ὀφιοκτένης δεδηγμένοις, ὁ μὲν ἐν κύκλῳ τόπος τοῦ δήγματος πελιοῦται,

καὶ περισήπεται. καὶ ποτὲ ῥυπώδης κατὰ τὸ πτισάνιον καὶ ἐνερευθὴς φαίνεται. ἑλκοῦται δὲ ἀπ' αὐτοῦ τοῦ δήγματος λαμβάνων τὴν ἀρχὴν, ἕλκωσίν τινα ἐπίπονον καὶ δύσφορον. πρὸς δὲ τούτοις περὶ ὅλον τὸ σῶμα συναίσθησις γίνεται κνησμώδης.

Περὶ σκορπίου. Κεφ. ϟϛη.

Τοῖς δὲ ὑπὸ σκορπίου δηχθεῖσιν, ὁ μὲν τόπος εὐθέως ἄρχεται φλεγμαίνειν. σκληρὸς καὶ ἐνερευθὴς καὶ περιπαθής. σὺν ὀδύνῃ γινόμενος ἐναλλάξ. ὁτὲ μὲν γὰρ πύρωσις. αὖθις δὲ ψύξις ἐπιλαμβάνεται. καὶ πόνος ἐξαπίνης. καὶ ποτὲ μὲν ῥαΐζει. ποτὲ δὲ ἐπιτείνεται. παρέπεται δ' αὐτοῖς ἱδρὼς καὶ φρικώδης αἴσθησις. καὶ τρόμος. καὶ περίψυξις ἀκρωτηρίων. καὶ βουβώνων ἔπαρσις φύματα διὰ τῆς ἕδρας. ὀρθοτριχία τε καὶ δύσχροια. ἐπαλγὴς περὶ τὴν ἐπιφάνειαν τῆς αἰσθήσεως. καθάπερ ὑπὸ βελόνης κεντημάτων ὀδυνώμενος.

Περὶ τρυγόνος θαλασσίας. Κεφ. ϟϛθ.

Τοῖς δὲ ὑπὸ τρυγόνος θαλασσίας δηχθεῖσι, παραυτίκα μὲν περιωδυνίαι συμβαίνουσι δυσκατέργαστοι. σπασμοί τε συνεχεῖς καὶ πόνος. καὶ ἀτονία καὶ διανοίας παραφορά. μετὰ δὲ τοῦτο ἀφωνία καὶ σκοτασμὸς ὀφθαλμῶν. αὐτὸς δὲ ὁ πληγεὶς τόπος, μέλας γίνεται κύκλῳ καὶ τὰ πλησίον αὐτοῦ. καὶ πρὸς τὴν ἁφὴν ἀναισθητεῖ. ἐπὰν δέ τις αὐτὸν ἀποψήσῃ, ἰχὼρ ἐξ αὐτοῦ μέλας. παχὺς δυσώδης ἐκκρίνεται.

Περὶ μυγαλῆς. Κεφ. ρ.

Τοῖς δὲ ὑπὸ μυγαλῆς δηχθεῖσι, κύκλῳ μὲν περὶ τὸν τόπον τοῦ δήγματος γίνεται φλεγμονή. φλυκτὶς δὲ ἐπανίσταται μέλαινα. μεστὴ ἰχῶρος ὑδατώδους. καὶ τὰ πλησίον πάντα πελιοῦται. ῥαγείσης τε τῆς φλυκταίνης, νομὴ παραλαμβάνεται παραπλησία τῇ ἀπὸ τῶν ἑρπυστικῶν. σὺν τούτοις δὲ παρέπεται καὶ στρόφος περὶ τὰ ἔντερα. καὶ δυσουρία. καὶ ψυχρᾶς νοτίδος περίχυσις.

Περὶ ἐχίδνης. Κεφ. ρα.

Τοῖς δὲ ὑπὸ ἐχίδνης δηχθεῖσιν, οἰδεῖ καὶ ἐφ' ἱκανὸν τὸ σῶμα ξηραίνεται. τὴν χροιὰν δὲ ὑπόλευκον ἔχει. ἰχὼρ δὲ ἀπὸ τοῦ τραύματος προχεῖται. τὸ μὲν πρῶτον ὑπολίπαρος. μετὰ ταῦτα δὲ αἱματώδης. φλυκταινῶν τε ἐπανάστασις καθάπερ ἐπὶ τῶν πυρικαύτων ἕπεται. καὶ νομὴ προκαταλαμβάνει προχωροῦσα ἐπὶ τὰ παρακείμενα πάντα πλησίον. οὐ μόνον ἐπιπόλαιος ἀλλὰ καὶ διὰ βάθους. αἱμάσσεται δὲ αὐτοῖς καὶ τὰ οὖλα. καὶ περὶ τὸ ἧπαρ συνίσταται φλεγμονή. στρόφοι τε καὶ χολώδεις ἐπισυμβαίνουσιν ἔμετοι. προσγίνεται δὲ αὐτοῖς ἔμετος καὶ κάρος. καὶ δυσουρία. καὶ ψυχρὰ περίδρωσις.

## Περὶ Ἀσφισβαίνης. Κεφ. α,β.

Παραπλήσια δὲ συμβαίνει καὶ τοῖς ὑπὸ τῆς προσαγορευομένης σκυτάλης ἢ ἀμφισβαίνης δηχθεῖσι. βοηθεῖ δὲ σχεδὸν ἤδη τὰ αὐτά. διὸ περὶ ἰδίας ἀναγραφῆς οὐ τετύχηκεν, οὔτε ἠξιώθη τὸ εἶδος τοῦτο.

## Περὶ Δρυΐνου. Κεφ. α,γ.

Τοῖς δὲ ὑπὸ δρυΐνου δηχθεῖσιν, ἰσχυραὶ περιωδυνίαι ἐμπίπτουσι. καὶ φλυκταινώδεις ἐν τῷ οἰκείῳ μέρει ὅπου δὲ καὶ ὑδατώδους ἰχῶρος ἔκχυσις. ἐπακολουθεῖ δὲ καὶ δηγμὸς καὶ στρόφος.

## Περὶ Αἱμόῤῥου. Κεφ. α,δ.

Τοῖς δὲ ὑπὸ αἱμόῤῥου δηχθεῖσιν, ἰσχυραὶ περιωδυνίαι ἐμπίπτουσι. βραχέα δὲ καὶ στεγνὰ παντελῶς παρέχουσι τὰ σώματα ὑπὸ συντυχίας τῶν ἀλγημάτων. ἐκ δὲ τοῦ δήγματος ἔκκρισις γίνεται πολλή. κἂν οὐλὴ καθ' ἕτερον μέρος τοῦ σώματος ὑπάρχῃ, παρέχει αἱμοῤῥοεῖν. τὰ δὲ διαχωρήματα αἱματώδη ἐκκρίνεται. καὶ τὸ ἀποῤῥεόμενον ἀπ' αὐτῆς αἷμα τεθρομβωμένον ἐστί. βήσσοντές τε ἀπὸ πνεύμονος, αἷμα ἀνάγουσι. καὶ ἐξεμοῦσιν ἀβοηθήτως.

## Περὶ Διψάδος. Κεφ. α,ε.

Τοῖς δὲ δηχθεῖσιν ὑπὸ διψάδος, ἄστεγνος ὄγκος ἐγγίνεται. καὶ δίψος ἐπιτεταμένον ἰσχυρῶς ὥς τε ἀπλήρωτον καὶ ἀδιάλη

τιον εἶναι. καὶ τὸ ποτὸν χανδὸν ἕλκειν. κἂν τῷ αὐτῷ καθίσακται. τῷ δὲ μὴ τὴν ἀρχὴν εἰληφότι τὸ ποτὸν, παραπλήσιόν τι ὅλου τοῦ συγκρίματος ἀκολουθεῖ. διὰ τὴν συνεχῆ τοῦ πόματος εἰσφοράν. ὅπερ πρῆσις τε καὶ καῦσος προσαγορεύεται ἢ δίψα.

### Περὶ ὕδρου, κεφ. α,ς.

Τοῖς δὲ ὑπὸ ὕδρου δηχθεῖσι, τὸ ἕλκος πλατύνεται καὶ μέγα γίνεται πελιούμενον. ἰχώρ τε ἐξ αὐτοῦ μέλας καὶ πολὺς καὶ δυσώδης οἷον ἀπὸ νομῆς ἐκκρίνεται.

### Περὶ κέγχρου. κεφ. α,ζ.

Τοῖς δὲ ὑπὸ κέγχρου δηχθεῖσι, τὸ μὲν δῆγμα ὅμοιον τοῖς ἀπὸ τῆς ἐχίδνης. σηπεδὼν δὲ παρακολουθεῖ. καὶ περιρρέουσι σάρκες ἐξοιδήσασαι πρότερον ὡς ἐπὶ ὕδρωπες. ληθαργώδεις τε γίνονται καὶ καταφορᾶς αἴτιοι. Ἐρασίστρατος δέ φησιν αὐτοὺς πεπονθέναι τὸ ἧπαρ καὶ τὴν νῆστιν καὶ τὸ κῶλον. ἀνατμηθέντων γὰρ αὐτῶν, διεφθαρμένα πως εὑρίσκεται πάντα τὰ μέρη.

### Περὶ κεράστου. κεφ. α,η.

Τοῖς δὲ ὑπὸ κεράστου δηχθεῖσιν, ὁ μὲν τόπος ἐπαίρεται μετὰ σκληρίας καὶ φλυκταινώσεως. ῥεῖ δὲ ἀπὸ τοῦ ῥήγματος ἰχὼρ ποτὲ μὲν μέλας. ποτὲ δὲ ὕπωχρος. κιρροειδὴς δὲ γίνεται περὶ τὸ σύγκριμα ὅλον. καὶ τὸ μὲν αἰδοῖον τείνεται. ἡ δὲ διάνοια ἐξίσταται ὀφθαλμῶν τε ἀμαύρωσις ἐπιγίνεται. τέλος δὲ ἀπόλλυται σπώμενος τετάνῳ.

### Περὶ ἀσπίδος. κεφ. α,θ.

Τοῖς δὲ ὑπὸ ἀσπίδος δηχθεῖσι, τὸ μὲν δῆγμα ὅμοιον τοῖς ὑπὸ βελόνης κεντήμασι μικρὸν παντελῶς φαίνεται χωρὶς τῆς ἐπάρσεως. καὶ αἱμάτιον δὲ οὐ πολύ. ἀλλὰ βραχὺ καὶ μέλαν ἀποστάζει. ταχεῖα δὲ ἀμαύρωσις ὀμμάτων καταλαμβάνεται. πόνος τε ὅλου τοῦ σώματος πολυειδής. παντάπασιν ἐλαφρὸς καὶ οὐκ ἄτερ ἡδονῆς παρακολουθεῖ. διὸ καλῶς ὁ Νίκανδρος πεφώνηκε. καμάτου δ᾽ ἄτερ ὄλλυται ἀνήρ. χρόαν ἀτρόπιος καὶ χλοανθής. καρδιωγμὸς ὀλίγος. μέτωπον δὲ συ-

νεχῶς ἀνασπᾶται. βλέφαρα κινοῦνται μετὰ ἀναισθησίας ὁμοίως ὕπνῳ. καὶ τούτοις θάνατος συναιρεῖ μηδὲ τρίτον ἡμέρας διαλιπών. Ἐρασίστρατος ἐν τῷ καλουμένῳ περὶ δυνάμεων καὶ θανασίμων περὶ τοῦ καλουμένου βασιλίσκου ῥητῶς οὕτω φησίν. ὅταν δὲ ὁ βασιλίσκος δάκῃ. πληγὴ ὑπόχρυσος γίνεται. τὰ μὲν οὖν ἐν τοῖς πλείστοις τῶν ἰοβόλων παρακολουθοῦντα σημεῖα, τοιαῦτά ἐστι μεταβαίνοντες δ' ἐπὶ τὴν θεραπείαν, πρῶτον τὰ κοινὰ τῆς θεραπείας ὡς δυνατὸν παραδώσομεν.

### Τίς κοινὴ τῶν ἰοβόλων θεραπεία. Κεφ. ια'.

Πρὸς πᾶσαν πληγὴν ἰοβόλου ἁρμόζει ἡ διὰ τοῦ στόματος ἐκμύζησις. δεῖ δὲ μὴ ἄσιτον εἶναι τὸν ἐκμυζῶντα. ἀλλὰ καὶ εἰληφέναι ῥοφήν. καὶ διακλύζεσθαι οἴνῳ ἔπειτα δὲ καὶ βραχύ τι ἐν τῷ στόματι ἐλαίου κατέχων, οὕτω τὴν ἐκμύζησιν ἐπιτελείτω. καὶ αὐτὸς δὲ ὁ τόπος σπόγγῳ πυριάσθω. ἔπειτα δὲ ἐγκατασχαζέσθω. βαθυτέρας δὲ ἐμβάλλειν τὰς ἀμυχὰς προσήκει, ὅπως τὴν ὕλην ἐκ βάθους ἀναλαμβάνῃ. καὶ περισαρκισμὸς δὲ καὶ ἐκτομή, πλουσιώτερον καταχαμοῦ βοηθοῦσιν. ἴδια γὰρ ἐπ' αὐτῶν τὰ χρησιμεύοντα γίνεται. ἐν μὲν ὅτι αἴρεται ὁ ἰὸς ἐκ τοῦ τόπου. δεύτερον δὲ ὅτι τῷ αἵματι συνεκκρίνεται πολλῷ καὶ ἀθρόῳ τὸ φθάσαν ἔσω παρελθεῖν. εἰ δὲ ὁ τόπος τὸν περισαρκισμὸν οὐ προσδέχοιτο, συκίας χρὴ προσβάλλειν μετὰ φλογὸς πλείονος. περὶ δὲ καύσεως ἐπὶ τῶν λυσσοδήκτων προειρήκαμεν. εἰ δ' εὐφυῶς ἔχει πρὸς ἀποκοπὴν τὸ μόριον τὸ δεδηγμένον, μάλιστα ἐπὶ πάντων θηρίων ἀνενδοιάστως τὸν ἀκρωτηριασμὸν ποιητέον. ὡς ἀσπίδος, καὶ κεράστου καὶ τῶν ὁμοίων. ὡς ἐπιτηδειότερα διὰ τῶν προειρημένων βοηθημάτων, ἄξια ἐπιθέματά ἐστιν. ἐπιτιθέσθω δὲ τέφρα κληματίνη ἢ συκίνη, μετὰ κονίας στακτῆς πεφυραμένης. γάρου δριμέος. ταρίχου. πράσα τε καὶ κρόμμυα. καὶ σκόροδα ποτὲ μὲν ὡς ἔχει λειοτριβηθέντα καταπλασσέσθω. ποτὲ δὲ καέντα προσβάλλεται τοῖς δήγμασι. καὶ οἱ τῶν ὀρνίθων νεοσσοὶ διασχισθέντες καὶ θερμότατοι περιπτυσσόμενοι τῷ πεπληγότι τόπῳ, τινὲς μὲν ὡς ἀντιπαθέσιν

αὐτοῖς ἐχρήσαντο. πρόχειρον δὲ ἔχει τὸν λόγον. φύσει γὰρ οἱ ὄρνιθες εἰσὶ θερμοί. διὸ καὶ ἐπίσημον τὸν ἰὸν καταπέψωσι, τύχουσι. καὶ τὰ ξηρότατα δαπανῶσι τῶν σπερμάτων. ἐνίοτε, καὶ ψάμμους καὶ λίθους διαλύουσιν ἐμφαρυγξάμεναι. τοιγαροῦν πρὸς τὴν τοῦ ζώου θερμασίαν, τὸ πνεῦμα τὸ ἐκ τοῦ δεδηγμένου μέρους ὁρμὴν λαμβάνον, συνεξάγει τὸν ἰόν. ἔγνωμεν δὲ ἐπὶ τῆς αἰγύπτου τοιοῦτόν τι γινόμενον. ὁπόταν οἱ αἰγύπτιοι θερίσωσι τὸν στάχυν, χύτραν ἔχουσι κατεσκευασμένην πίσσης. καὶ σφήκωμα προσηρτημένον τῇ χύτρᾳ. τότε γὰρ μάλιστα δεδίασι τὰ θηρία. καὶ διὰ τὴν ὥραν, καὶ διὰ τὸ λανθάνειν αὐτὰ κείμενα κατὰ τῶν ὀπῶν τῶν ἐν ταῖς ἀρούραις ἐπισκοτούμενα ὁμοῦ καὶ ὑπὸ τῆς δασύτητος τῶν χερῶν. πολλὰ δὲ κατὰ τὰ πεδία χαλεπώτερα τῶν ἰοβόλων ζώων ἡ αἴγυπτος φέρει. ἐπειδὰν οὖν δηχθῇ τις πόδα ἢ ἄλλο τι μέρος ταχέως οἱ παρατυχόντες τὸ σφήκωμα βάλλουσιν εἰς τὴν χύθραν τῆς πίσσης. καὶ περιειλοῦσιν ἅπαξ ἢ δὶς περὶ τὸν πῆχυν ἢ τὴν κνήμην, μικρὸν ἐπάνω τοῦ δήγματος. καὶ περισφίγγουσι δύο παρεστῶτες ἰσχυρῶς. καὶ ἐντέμνοντες τὸν τόπον διὰ τῆς περιθέσεως τοῦ βρόχου, ἐπιχέουσι καὶ πίσσαν. ὅταν δὲ αὐτάρκως ἔχειν δοκῇ, τὸν βρόχον ἀφαιροῦσι, καὶ καταπλάττουσι κρομμύοις. καὶ δι' ἄλλων τῶν προειρημένων. καὶ τούτων δὲ χωρὶς ὑγρὰ πίσσα μετὰ ἁλῶν λείων θερμοτέρων καταπλασσομένη, σπουδαίως βοηθεῖ. αὐτὴ καινοποιηθεῖσα συνεχέστερον ὡσαύτως ἁρμόζει καὶ κέδρος. τά τε σπυρείθια τῶν αἰγῶν ἐν οἴνῳ καθεψόμενα. ἀρήγει δὲ αὐτοῖς καὶ καταντλησις δι' ὄξους θερμοῦ. καὶ καλαμίνθη ἑψομένη δι' οὔρου καὶ θαλάσσης ἢ ὀξάλμης εἰσὶ δὲ καὶ ἔμπλαστροι δριμύταται δυνάμεναι τὸν ἰὸν ἐπισπᾶσθαι. καὶ διακρατεῖν καὶ διαφορεῖν. ὡς δι' ἁλῶν ἢ νίτρου καὶ σινάπεως καὶ κάγχρυος προσφερόμεναι. ἃς περ ἐξῆς ῥητέον. οὐκ ἀλόγως δὲ ὁ ἐρασίστρατος ἐπιμέμφεται τοῖς ἀγνώστους δυνάμεις πρὸς τὴν χρείαν ἀναγεγραφόσιν. ὡς χολὴν ἐλέφαντος καὶ αἷμα χελώνης καὶ ᾠὰ καὶ τὰ παραπλήσια. δοκοῦσι μὲν γάρ τινα πεποιῆσθαι παράδοσιν ὠφελοῦσαν, ἐξηπατήκασι δὲ αὐτὰ μόνα τοὺς ἐντυγχάνοντας. ὅθεν τὰ μὲν τοιαῦτα παραιτη-

τέον μή τε ῥαδίως εὑρεθῆναι δυνάμενα εἰ μὴ ὑπ' ἐξουσίας βασιλικῆς, μή τε διὰ τῆς πλείστης τηρήσεως οἵαν εἰς τὸ πιστευθῆναι τὴν πεῖραν παρεσχημένα. τὰ δὲ κοινωφελῆ καὶ εὐπόριστα, ὑποδεικτέον. τὰ καὶ εἰς πάντα καὶ ἐν πᾶσι τοῖς θηριοδήκτοις δυνάμενα τὴν χρῆσιν παρέχειν. σέρις τοίνυν καὶ εἰρείνη καὶ ἀστράγαλος πινόμενα μετ' ὄξους, πᾶσι τοῖς θηριοδήκτοις βοηθεῖ. ὡσαύτως καὶ ἄσφαλτος καὶ πλατάνου χλωρὰ σφαιρία καθεψηθέντα ἐν κράματι. καὶ παλιούρου ἀφέψημα. καὶ ῥίζα ἀριστολοχίας καὶ ἠρύγγης. καὶ δαφνίδες ἐφθαὶ κατεσθιόμεναι καὶ πέπερι δαψιλέστερον τρωγόμενον καὶ πήγανον καὶ ἄνηθον καὶ κυκλάμινον, πράσων τε ἡ κόμη ἰδία σὺν ἄρτῳ. ἢ σκόροδα. ἢ κρόμμυα. καὶ τάριχος δριμύτατος. καὶ ὀριγάνου ἀφέψημα σὺν οἴνῳ πινόμενον. καὶ μαράθρου καὶ γλήχωνος καὶ καλαμίνθης καὶ πράσων χυλὸς σὺν μέλιτι καταρροφούμενος. ταῦτα μὲν ἐκ τῶν φυομένων. ἀπὸ ζώων δὲ λαμβάνεται τινὰ ὠφέλιμα οὕτως. ἐγκέφαλοι μὲν ἀλεκτρυόνων ἐσθιόμενοι. πιτύα δὲ λαγωοῦ σὺν οἴνῳ πινομένη καὶ καστορείου δραχμῶν β' τὸν αὐτὸν τρόπον. λέγεται δὲ καὶ ὅτι χελώνης θαλασσίας οἱ ὄρχεις λαμβανόμενοι βοηθοῦσιν. ἔστι δὲ καὶ ἡ γαλῆ ἡ σκελετευθεῖσα τῶν βεβοηθημένων, εὑρίσκεται δὲ πρότερον ἡ πάντη σχισθεῖσα τῶν ἐντὸς ἐκκριθέντων. σκελετεύεται δὲ ξηραινόμενον. καὶ ἀπ' αὐτῆς δίδραχμον σὺν οἴνῳ πινόμενον. τοσαῦτα δὴ καὶ τὰ ἁπλᾶ τῶν προσφερομένων. ἁρμόζει δὲ τοῖς θηριοδήκτοις καὶ κάθαρσις διὰ κοιλίας. καὶ ἱδρωποιΐα. καὶ οὔρων πολλῶν ἔκκρισις. σκευαστὰ δὲ ποτήματα παραδέδοται καινοτέρως ὑπισχνούμενα βοηθεῖν. ὡς ὀπίου καὶ σμύρνης ἀνὰ ὀβολόν. καὶ πεπέρεως ∠ β'. ταῦτα δὲ δεῖ μέλιτι ἀναλαμβάνειν. καὶ διδόναι κυάμου μέγεθος αἰγυπτίου μετὰ οἴνου. ὁμοίως πηγάνου ἀγρίου σπέρματος μελανθίου. κυμίνου αἰθιοπικοῦ. χαλβάνης. ἀριστολοχίας. ταῦτα πάντα λεανθέντα καὶ φυραθέντα χυλῷ εὐζώμου, ἀναπλάσσονται τροχίσκοι δραχμιαῖοι. διδόναι δὲ ἐξ αὐτῶν μετὰ οἴνου ἡμικοτυλιαίου. ταῦτα μὲν περὶ τῶν κοινῇ βοηθούντων. τὰ δὲ ἴδια πρὸς ἕκαστον τῶν ἰοβόλων ἑξῆς εἴπωμεν.

# ΠΕΔΑΚΙΟΥ ΔΙΟΣΚΟΡΙΔΟΥ ἈΝΑΖΑΡΒΕΩΣ ΠΕΡΙ ΘΕΡΑΠΕΙΑΣ ΤΩΝ ὙΠΟ ἸΟΒΟΛΩΝ ΔΕΔΗΓΜΕΝΩΝ ΒΙΒΛΙΟΝ ἜΝΑΤΟΝ.

Ἐν τῇ σημειώσει περὶ σφηκῶν καὶ μελισσῶν οὐδὲν διηθρώσαμεν. εὔδηλα γὰρ πᾶσιν ἦν καὶ παράσημον ἔχει ἐξαίρετον οὐδοτιοῦν φυλασσόμενον. ἐν δὲ τῇ θεραπείᾳ, καὶ τούτων οὐκ ἄτοπον μνημονεῦσαι.

## Περὶ θεραπείας τῶν ὑπὸ σφηκῶν καὶ μελισσῶν δεδηγμένων. Κεφ. α, ια.

Πρὸς τὰς πληγὰς τῶν σφηκῶν καὶ μελισσῶν, ἁρμόζει μαλάχη καταπλασσομένη. καὶ κρίθινον ἄλευρον σὺν ὄξει. καὶ συκῆς ὀπὸς ἐνσταζόμενος τοῖς δήγμασι. καὶ πυρία δι᾽ ἅλμης ἢ θαλάσσης.

## Περὶ τῶν ὑπὸ φαλαγγίων δεδηγμένων. Κεφ. α, ιβ.

Τοῖς δὲ ὑπὸ φαλαγγίων δεδηγμένοις, ταῦτα ἐπιτιθέναι δεῖ. τέφραν συκίνην σὺν ἁλσὶ λείοις μετ᾽ οἴνου πεφυραμένην. ἢ ῥίζαν ἀγρίας ῥόας λελειοτριβημένην. ἢ ἀριστολοχίαν σὺν κριθίνῳ ἀλεύρῳ καὶ ὄξει δεδευμένην. καταντλεῖν δὲ θαλάσσῃ τὰ ἕλκη, ἢ μελισσοφύλλου ἀφεψήματι. ταύτης δὲ τὰ φύλλα ἐπιπλάσσειν. λουτρῷ δὲ λίαν συνεχέστερον, καὶ προποτισμοῖς χρηστέον διὰ τούτων τῶν φαρμάκων. ἀβροτόνου τὸ σπέρμα. ἀψίνθιον. ἀριστολοχία. ἐρέβινθος ἄγριος. κύμινον αἰθιοπικόν. κεδρίδες λεῖαι. πλατάνου φλοιός. καὶ τὸ σπέρμα τῆς τριφύλλου πόας. τούτων δὲ ἑκάστου διδόναι κατ᾽ ἰδίαν < β μετ᾽ οἴνου κοτύλης α΄. δίδοται δὲ καὶ μυρσίνης ὁ καρπὸς ὡσαύτως καὶ χαμαιπίτυος. καὶ τῶν χλωρῶν τῆς κυπαρίσσου σφαιρίων τὸ ἀφέψημα κιρνάμενον μετ᾽ οἴνου. φασὶ δέ τινες καὶ καρκίνον ποτάμιον χυλωθέντα μετὰ γάλακτος καὶ προσλαβόντα σελίνου σπέρμα τῶν ὀχληρῶν ἀπαλλάσσειν.

Περὶ τῶν ὑπὸ σκολοπένδρας δεδηγμένων. Κεφ. αιγ.

Τοῖς δὲ ὑπὸ σκολοπένδρας δεδηγμένοις, κατὰ μὲν τὴν πληγὴν ἐπιθέσθαι δεῖ λελειοτριβημένον μετ' ὄξους ἅλας. ἢ πήγανον ἄγριον. καταντλεῖν δὲ ὀξάλμῃ τὸν τόπον. πότημα δὲ προσφέρειν ἀριστολοχίαν μετ' οἴνου. ἢ ἕρπυλλον ἢ καλαμίνθην, ἢ ἄγριον πήγανον.

Περὶ τῶν ὑπὸ σκορπίου δεδηγμένων. Κεφ. αιδ.

Τοῖς δὲ ὑπὸ σκορπίου πληγεῖσι παραχρῆμα μὲν ἀκριβῶς βοηθεῖ συκῆς ὀπὸς εἰς τὰ τραύματα ἐνσταχθείς. αὐτός τε ὁ πλήξας σκορπίος λειοτριβηθεὶς καὶ ἐπιτεθεὶς τῷ πληχθέντι τόπῳ, τῆς ἰδίας πληγῆς γίνεται βοηθὸς κατά τινα ἀντιπάθειαν ὡς ἔοικε. μετὰ δὲ ταῦτα ἁρμόζει λεῖος ἐπιτιθέμενος ὁ σκορπίος σὺν ἅλατι καὶ λινοσπέρμῳ καὶ τῇ ἀλθαίᾳ βοτάνῃ. βοηθεῖ δὲ καὶ θεῖον ἄπυρον ἀναληφθὲν ῥητίνῃ τερμινθίνῃ καὶ ὡς ἔμπλαστρον ἐπιρριφέν. ὁμοίως δὲ καὶ χαλβάνη πλατυνθεῖσα σπληνίου τύπῳ, καὶ καλαμίνθη λεία καταπλασσομένη. καὶ ὠμήλυσις ἐν οἴνῳ σκευασθεῖσα. ἐν ἀφεψήματι πηγάνου. βοηθεῖ δὲ καὶ τὸ σπέρμα τῆς τριφύλλου πόας λεαινόμενον καὶ ἐπιρριπτούμενον. τοπικὰ μὲν οὖν ταῦτα. μετὰ δὲ τούτων καὶ ποτήμασι χρηστέον ὡς ἀνυσιμωτάτοις. ἔστι δὲ ἀριστολοχίας δίδραχμον μάλιστα τοῦ φλοιοῦ σὺν οἴνῳ. γεντιανὴ κεκομμένη. καὶ γλήχων ἐπικαθημένη. καὶ δάφνιδες ἀριθμῷ βραχεῖ λειοτριβούμεναι. καὶ καλαμίνθη μετὰ ὀξυκράτου. δεῖ δὲ αὐτὴν ἐπιπολὺ ἑψῆσαι ἐν τῷ ὀξυκράτῳ. καὶ κυπάρισσος μετ' οἴνου ἢ πηγάνου. ὡσαύτως καὶ συκῆς ὀπός. καὶ σίλφιον εἰ παρείη. μὴ παρόντος δέ, τῷ πευκεδάνου χρηστέον ὀπῷ. ποιεῖ δὲ καὶ ὁ τοῦ τριφύλλου καρπὸς πινόμενος. καὶ τὸ τοῦ ὠκίμου σπέρμα. τούτοις δὲ πλατύτερον λουτροῦ συνεχῶς χρῆσις μετὰ πολλῆς ἱδρώσεως. καὶ οἰνοποσία μετὰ κράματος.

Περὶ τῶν ὑπὸ τρυγόνος θαλασσίας δεδηγμένων. Κεφ. αιε.

Τοῖς δὲ ὑπὸ τρυγόνος θαλασσίας πληγεῖσιν ἁρμόζει πάντα

τὸν αὐτὸν τρόπον ὅσον μικρὸν ὕδρον εἶναι τῶν ἐχιοδήκτοις ὁροῦμεν. ἁρμόζει δὲ πρὸς τὰς πληγὰς αὐτῶν ποτισμὸς ἀψινθίου. ἢ ἐλελισφάκου. ἢ θείου σὺν ὄξει τετριμμένου. καὶ αὐτὴ δὲ ἀναπτυχθεῖσα καὶ ἐπιτεθεῖσα τοῖς τραύμασι, τῆς ἰδίας ἴαμα πληγῆς.

Περὶ τῶν ὑπὸ μυγαλῆς δεδηγμένων. Κεφ. αιϛ.

Τοῖς δὲ ὑπὸ μυγαλῆς δηχθεῖσι, βοηθεῖ χαλβάνη πλωίον ἐπιτεθὲν κατὰ τοῦ δήγματος ὡς φάρμακον μετ' ὄξους λειοτετριμμένον. καὶ κρίθινον ἄλευρον μετ' ὀξυμέλιτος ἐπιπλασθέν. καὶ ἡ αὐτὴ δὲ ἡ δακοῦσα μυγαλή, ἀναπτυσσομένη καὶ ἐπιτιθεμένη, τῆς ἰδίας πληγῆς ἀντιφάρμακόν ἐστι. καὶ γλυκείας ῥοᾶς ἑφθὰ καταπλασθέντα κηκία. καὶ πράσα ἑφθὰ καταπλασθέντα καὶ σκόροδα σὺν τετριμμένα. καὶ ἡ διὰ τῆς θέρμης καταντλησις. τοπικὰ μὲν ταῦτα. ποτιζόμενον δὲ ἀρήγει ἀβρότονον καθεψηθέν. εἶτα δι' οἴνου προσφερόμενον. ἕρπυλλος δὲ καὶ χαλβάνη καὶ εὔζωμον διεθέντα οἴνῳ, καὶ κυπαρίσσου τὰ ἁπαλὰ σφαιρία μετ' ὄξους. καὶ κυκλάμινον μετ' ὀξυμέλιτος. καὶ πύρεθρον σὺν οἴνῳ. καὶ χαμαιλέοντος τῆς βοτάνης ἡ ῥίζα. τινὲς δὲ ἀναγράφουσιν ὅτι καὶ αὐτὴ λειοτριβηθεῖσα ἡ μυγαλή, πρὸς τὸ ἴδιον πλῆγμα ποτίζεται. τὴν δ' ἱστορίαν ταύτην ἐν ἄλλοις κειμένην εὑρόντες, παρασημειώσεως μόνον ἠξιώσαμεν. ἔνιοι δέ φασι μὴ ἄλλως ἑλκοῦσθαι τὸν δηχθέντα, εἰ μὴ ἔγκυος ἡ μυγαλὴ τυγχάνει. τότε οὖν φασὶ βοηθεῖν.

Περὶ τῶν ὑπὸ ἐχίδνης δεδηγμένων. Κεφ. αιζ.

Τοῖς δὲ ὑπὸ ἐχίδνης δηχθεῖσι βοηθοῦσι τῶν αἰγῶν αἱ σπύραθοι μετ' οἴνου ἀνατεθεῖσαι σπουδαίως. καὶ δάφνη ὡσαύτως καὶ ἀβρότονον καὶ χαλβάνη ἀντὶ πλωίου ἐπιρριπτούμενα. καὶ ὀρίγανος χλωρὰ ἀνεθεῖσα. καὶ τῶν ὀρνίθων οἱ νεοσσοὶ ἀναπτυχθέντες καὶ παραχρῆμα προστιθέμενος. ὀρόβινόν τε ἄλευρον μετ' οἴνου πεφυραμένον. καὶ ῥαφανίου φλοιὸς ἰσχυρῶς κοπείς, ὥστε λειότατος γενέσθαι. καὶ σκίλλα ὀπτὴ καὶ χαμαίμηλον λελειωμένα. καὶ ὠμήλυσις δι' ὀξυμέλιτος ἐσκευασμένη.

προσκατὰ τὴν τλημμένου θερμοῦ. ταῦτα μὲν τοπικῶς ἐπιτιθέμενα. ὠφελεῖ δὲ τοὺς ἐχιοδήκτους καὶ βάτος μετ' οἴνου. ἔνιοι δὲ ἀγχοῦσαν τὴν λεπτόφυλλον βοηθεῖν ἐπαινοῦνται. προπίνεται δὲ καὶ λαγωοῦ τῆς πιτύας ὅσον τριώβολον καὶ πράσου χύλισμα ὅσον κοτύλιον ἐν ἀκράτῳ. καὶ μελισσοφύλλου τῶν φύλλων ὁ χυλός. καὶ πήγανον ἄγριον. ταῦτα δὲ ἐν οἴνῳ δεῖ ποτίζειν. καὶ αὐτὴ ἡ οἰνοποσία συνεχῶς παραλαμβανομένη. σκόροδά τε ἐσθιόμενα καὶ κρόμμυα. καὶ πράσα ἁπαλὰ καὶ τάριχος δριμύτατος καὶ πολυτελέστατος. καὶ τὰ μὲν ἁπλᾶ ταῦτα. καὶ αὐτὸ δὲ τὸ φάρμακον εὐδοκιμοῦν ἐστὶ τῶν ὀφιοδήκτων. ὁ περιέχει σμύρνης. κασσίας. πεπέρεως. ἀν δράχνης ἄνθους καὶ σπέρματος ὀξυβάφου τὸ ἥμισυ. ταῦτα πάντα λέαινε ἐν γλυκεῖ κρητικῷ. ἢ ἑτέρῳ τινὶ τῶν σπουδαίων. Ἐρασίστρατος δὲ ἐν τῷ περὶ δυνάμεων ἀνεγράψατο καὶ ἄλλα τινὰ πλείονα βοηθεῖν δυνάμενα τοῖς ἐχιοδήκτοις.

## Περὶ τῶν ὑπ' ἀμφισβαίνης δεδηγμένων. Κεφ. αιη.

Π ερὶ ἀμφισβαίνης τοπικῶς ἐπεμνήσθημεν ὅτι πως ταῖς πρὸς τὰς ἐχίδνας ἀναγεγραμμέναις βοηθείαις, πέφυκε βοηθεῖσθαι ὁ ὑπ' αὐτῆς πληγείς.

## Περὶ τῶν ὑπὸ δρυΐνου δεδηγμένων. Κεφ. αιθ.

Τ οῖς δὲ ὑπὸ δρυΐνου πληγεῖσιν, ἁρμόζει ἀριστολοχία σὺν οἴνῳ πινομένη. καὶ ἡ τρίφυλλος πόα. ῥίζα δὲ ἀσφοδέλου παραπλησίως λαμβανομένη, καὶ δρυὸς πάσης ὁ καρπὸς πινόμενος καὶ τῆς πρίνου αἱ ῥίζαι κοπτόμεναι καὶ καταπλασσόμεναι, τοπικῶς παρηγοροῦσιν.

## Περὶ τῶν ὑφ' αἱμόρρου καὶ διψάδος δεδηγμένων. Κεφ. ακ.

Α ἱμόρρου δὲ καὶ διψάδος τοῖς πληγεῖσι τῶν προγινομένων ἀπηγορεύθησαν, ὡς ἀβοήθητοι αἱ δήξεις. διὸ καὶ τῶν κατ' ἰδιότητα πρὸς τὸ θηρίον τὴν διψάδα ὠφελούντων ἀποροῦσι. δεῖ μὲν οὖν ἀποπειρᾶσθαι τῶν κοινῶν βοηθημάτων. παραχρῆμα δὲ τοὺς κατασχασμοὺς παραλαμβάνειν. τήν τε καῦσιν ποιεῖν καὶ εἰ ὁ τόπος ἐγχωροίη τὸν ἀκρωτηριασμόν. ἐφεξῆς

δὲ τὰς τῶν δριμέων καταπλασμάτων ἐπιθέσεις. περὶ ὧν εἰρήκαμεν πολλάκις. χρησιμεύειν οἶδα καὶ δριμυφαγίας μάλιστα τὰς ἀπὸ τῶν ταριχηρῶν. ἀκρατοποσία τε καὶ λουτρὸν ὠφελεῖ. ταῦτα συνεχῶς ἐκ μικρῶν διαστημάτων, πλεονάκις καταληπτέον. πρὶν κατασκήψῃ τὸ τῶν νοσημάτων εἶδος. ἐκείνων δὲ ἅπαξ ἐπιφανέντων, οὐδ᾽ ὁτιοῦν παρὰ τῆς τῶν ἰατρῶν ἐπικουρίας ὄφελος γίνεται. ἔστι δὲ τῶν αἱμόῤῥου τὰ αὐτά. καὶ πρὸς τούτοις τὰ ἐν τῷ κοινῷ τῶν βοηθημάτων. διὸ τοὺς καταχασμοὺς καὶ τὰς καύσεις καὶ δριμυφαγίας καὶ ἀκρατοποσίας. καὶ ὅσα ὠφεῖσα μὲν ἔστι διψάδος. ἔτι δὲ καὶ ἀμπέλου φύλλα ἑφθὰ σὺν μέλιτι λελειωμένα.

Περὶ τῶν ὑφ᾽ ὕδρου δηχθέντων. κεφ. α,κα.

Τοῖς δὲ ὑφ᾽ ὕδρου δηχθεῖσιν ἁρμόζει ὀρίγανος λεία φυραθεῖσα ὕδατι. κονία τε ἐνεθεῖσα ἐλαίῳ ἢ ἀριστολοχίας ὁ φλοιός. ἢ ῥίζα δρυὸς λειοτριβηθεῖσα καὶ κρίθινον ἄλευρον σὺν ὕδατι μετὰ μέλιτος συντετηκός. ποτίζεται δὲ καὶ ἀριστολοχίας δίδραχμον ἐν κράματι ὀξυκράτου κυάθων ἕξ. ἢ πρασίου χυλός. ἢ ἀφέψημα ὀποτόρου σὺν οἴνῳ. πρόσφατόν τε κνεῖον προσφερόμενον μετ᾽ ὄξους.

Περὶ τῶν ἀπὸ κεγχριδίου δηχθέντων. κεφ. α,κβ.

Τοῖς δὲ ἀπὸ κεγχριδίου δηχθεῖσι, θειδακίνης ὁ καρπὸς μετὰ λινοσπέρμου καταπλασσόμενος βοηθεῖ καὶ θύμβρα. καὶ ἄγριον πήγανον. καὶ ἕρπυλλος σὺν ἀσφοδέλου < β΄ καὶ σὺν οἴνου κυάθοις γ΄ ἢ ἀριστολοχίας ῥίζα. ὡσαύτως καὶ καρδάμωμον. καὶ γεντιανὴ παραπλησίως.

Περὶ τῶν ἀπὸ κεράστου δηχθέντων. κεφ. α,κγ.

Τοῖς δὲ ἀπὸ κεράστου δηχθεῖσι καὶ ἀσπίδος, συντόμως ὁ ἀκρωτηριασμὸς ἐπαμύνει. διὸ περὶ ἀνυπερθέτως ἀποκόπτειν δεῖ, ὅσον τὸ δηχθὲν μέρος. ἢ περισαρκίζειν τὰ δηχθέντα μέρη

παραχρῆμα καὶ τὰ τούτοις παραπλήσια. εἶτα δὲ τὰ ὑπολειπόμενα τοῖς καυστηρίοις αἱμακτέον. καὶ γὰρ καὶ τούτοις ὁ ἰὸς οἷος ὁ τοῦ βασιλίσκου.

### Περὶ τῶν ὑπ' ἀσπίδος δηχθέντων. Κεφ. ακδ.

Τοῖς δὲ ὑπὸ ἀσπίδος δηχθεῖσιν, ὅσα καὶ τοῖς ὑπὸ κεράστου ὡς προγέγραπται προσενεκτέον βοηθήματα. ὃν τρόπον γὰρ βοὸς αἷμα ὀξύτατα πήγνυσι τὸ ἐν ταῖς ἀρτηρίαις αἷμα καὶ πήγνυται πρὸς τύπον ὁ ἰός, ὥσπερ καὶ ὁ τοῦ βασιλίσκου.

### Περὶ τῶν ὑπὸ βασιλίσκου δηχθέντων. Κεφ. ακε.

Τοῖς δὲ ὑπὸ βασιλίσκου δηχθεῖσιν, ὡς Ἐρασίστρατος φησὶ βοηθεῖ καστορείου < α πινομένη σὺν οἴνῳ. ὡσαύτως δὲ καὶ ὁ τοῦ μήκωνος ὀπός. τοιοῦτος μὲν καὶ ὁ θηριακὸς τρόπος.

ΤΈΛΟΣ.

CVM diuinum hoc opus castigaremus more nostro multis perquisitis exẽplaribus, iisdemq; diligẽter collatis, animaduertit Hieronymus Roscius non solum medicinæ scientia præstantissimus, uerum etiam græcis latinisq; literis clarissimus multa aliter scripta in illis, quàm in olim impressis haberentur, maximeq; in iis, quæ ad plãtarum nomina pertineant. Nam ueteres omnes codices ita scripti sunt, ut tantis illis nominibus, quæ ferè in principio cuiusq; capitis reperiũtur, careant. Placuit igitur eadem ipsa ab authoris contextu seperata huic loco apponere, ut itelligeres lector, nihil à nobis in susceptà prouincia fieri, nisi quod ~~non~~ à diligenti homine, & laudis ueterum scriptorum studioso exspectari debeat.

Περὶ ἴρειδος. κεφ. α'. Cartha 2

Οἱ δὲ, ἶρις  οἱ δὲ, θελπίδη. οἱ δὲ, οὐρανία. οἱ δὲ, καθαίρων. οἱ δὲ, θαυμαστός. ῥωμαῖοι ῥάδιξ μαρίνα. οἱ δὲ, γαλδιόλα. ὁ προτεῖτος. οἱ δὲ, κονασικράτεις. αἰγύπτιοι ναρ. ἀπὸ μὲν τῆς κατ' οὐρανὸν ἐμφερείας ὠνόμασται.  πάθη καὶ

Περὶ ἀκόρου. κεφ. β'. cartha 3

Οἱ δὲ χορὸς ἀφροδισίας. ῥωμαῖοι βενέρεα. οἱ δὲ, ναυτικαράδιξ. γάλλοι πεπεράκιουμ.

Περὶ κυπείρου. κεφ. δ'. c. 3

Ῥωμαῖοι ἰουίκι ῥάδικεμ. οἱ δὲ, ἰούνκουμ.  ἀνασομωτική.

Περὶ ἀσάρου. κεφ. θ'. c. 5

Προφῆται αἷμα ἄρεως. ὀσθάνης, θέζεν. αἰγύπτιοι κερέβρα. ῥωμαῖοι περιφεσάμ. οἱ δὲ βάκχαρ. θοῦσκοι σούκκινουμ. οἱ δὲ, νάρδουν ῥούστικουμ. γάλλοι βάκκαρ. ἄσαρον πόα εὐώδης στεφανωματική.  μικρότερα  ἐοικυῖα τῇ ὀσμῇ κινναμώμῳ. φιλεῖ τραχέα χωρεία καὶ αὔικμα. ταύτης ἡ ῥίζα, βοηθεῖ ῥήγμασι. σπάσμασι. βηχὶ χρονίῳ. δυσπνοίᾳ. δυσουρίᾳ. ἄγει καὶ ἔμμηνα. καὶ θηριοδήκτοις χρήσιμος σὺν οἴνῳ πινομένη. τὰ δὲ φύλλα στυπτικὰ ὄντα, καταπλασσόμενα, ὠφελεῖ κεφαλαλγίας. ὀφθαλμῶν φλεγμονάς. καὶ αἰγίλωπας ἀρχομένους.

καὶ μαστοὺς ἐκ τόκων φλεγμαίνοντας. καὶ θρυσιπέλατα. ἔστι δὲ καὶ ὑπνοποιὸς ἡ κόμη. καὶ Κρατεύας ὁ ῥιζοτομικὸς εἰς τὸ αὐτό. Ἄγερον

Περὶ Κασσίας. ΚΕΦ. ιβ΄. C. 5

Γ ενώμενα. βλαστὸς μουσηλητικός. δάκρα.

Περὶ Κινναμώμου. ΚΕΦ. ιγ΄. C. 6

Φ έρειν ποσὴν μακρὰς

Περὶ Ἀμώμου. ΚΕΦ. ιδ΄. C. 7

Ὀ ειγανίζον πεπαίνει καὶ ἐν προσθέτοις,

Περὶ Κόστου. ΚΕΦ. ιε΄. C. 7

Γ ινόμενον δὲ οὐγκίας β΄ πλῆθος.

Περὶ Καλάμου. ΚΕΦ. ιζ΄. C. 8

Γ ιηρός.

Περὶ Βαλσάμου. ΚΕΦ. ιη΄. C. 8

Ἡ λυκίου ἐκπλυνθεὶς, ἑαυτοῦ λοῦτρα.

Περὶ Ἀσπαλάθου. ΚΕΦ. ιθ΄. C. 9

Ο ἱ δὲ, σφάγνον. οἱ δὲ, φάσγανον. σύροι δὲ διάξυλον καλοῦσι.

Περὶ Ἀγαλλόχου. ΚΕΦ. κα΄. C. 9

Ἐ οικὸς θυΐνῳ ξύλῳ.

Περὶ Καγκάμου. ΚΕΦ. κγ΄. C. 9

Γ οσῶς ἐοικός.

Περὶ Κρόκου. ΚΕΦ. κε΄. C. 10

Ο ἱ δὲ, κάστωρ. οἱ δὲ, κυνόμορφος. προφῆται αἷμα ἡρακλέους Θεσσαλὸς μὲν οὕτω φησὶ μόνον εὐώδη αὐτόν. οἱ δὲ, καὶ θανάσιμον, εἰ πιεῖν τις δῷ αὐτοῦ < Γ΄ μετὰ ὕδατος. κατὰ δὲ τὸ ἀληθὲς,

Περὶ Κροκομάγματος. ΚΕΦ. κϛ΄. C. 11

Τ οιοῦτον δὲ ἐστι τὸ ἀπὸ συρίας.

Περὶ Ἐλενίου. ΚΕΦ. κζ΄. C. 11

Ο ἱ δὲ, σύμφυτον. οἱ δὲ, περσικόν. οἱ δὲ, μηδικόν. οἱ δὲ ὀρέστειον. οἱ δὲ, νεκτάριον. οἱ δὲ, κλεωνίαν. οἱ δὲ, βάτον ἰδαίαν. οἱ δὲ, φλόμον ἰδαῖον καλοῦσι. ῥωμαῖοι τερμινάλιουμ. οἱ δὲ, ἰνοῦλα καμπάνα. αἰγύπτιοι λιώης. ὑπολύκον καὶ

Περὶ Ἐλαίου κοινοῦ. ΚΕΦ. λ΄. C. 11

Θ ερμοῦ, κοτύλας ϛ΄

Περὶ Ἐλαίου ἐκ τῆς ἀγρίας ἐλαίας. ΚΕΦ. λα΄. C. 11

Κ ομιζόμενον.

Περὶ δαφνελαίου. κεφ. ν΄. c. 13

Φ είκαις νεφριτικοῖς δὲ τοῖς ἀπὸ ψύξεως ἄλειμμά ἐστιν ἄρι-
στον, ὡς οὐδὲν ἕτερον ὠφελοῦν.

Περὶ σχινελαίου. κεφ. να΄. c. 13

Ψ ύχει δὲ καὶ στύφει.

Περὶ σαμψυχίνου σκευασίας. κεφ. νθ΄. c. 15

Ἄ νθους. λαμβάνων στοχασμῷ, πρὸς τὴν ἑκάστου αὐτῶν δύ-
ναμιν ἀποβλέπων,

Περὶ ὠκιμίνου σκευασίας. κεφ. ξ΄. c. 15

Ἔ λαιον ὠκίμινον σκευάζεται ὡς περὶ τὸ κύπρινον.

Περὶ σουσίνου σκευασίας. κεφ. ξγ΄. c. 16

Μ ικρὰ ἐστιν καὶ φλεγμονῶν. καὶ καθόλου πάντων ἐστὶ

Περὶ ἀμαρακίνου. κεφ. ξθ΄. c. 18

Κ ασία.

Περὶ κινναμωμίνου. κεφ. οε΄. c. 19

Σ ὺν ὀλώθοις λείοις.

Περὶ ἰασμίνου. κεφ. c. 20

Ἡ δὲ καλουμένη ἴασμη παρὰ πέρσαις σκευάζεται ἐκ τῶν ἀν-
θῶν τῶν λευκῶν τοῦ ἴου. τούτων οὐγγιῶν β΄ ἐμβαλλομένων
ἰταλικῷ ξέστῃ σησαμίνου ἐλαίου. καὶ ἀμειβομένων ἤγουν ἀλ-
λασσομένων ὡς ἐπὶ τοῦ κρινίνου εἴρηται. ἡ δὲ τούτου χρῆσις,
παρὰ τὰς ἐθιάσεις, εὐωδίας ἕνεκα παρὰ πέρσαις παρα-
λαμβάνεται. ἁρμόζει δὲ ὅλῳ τῷ σώματι κατὰ τὰ λουτρά.
ἐπὶ τῶν θερμασίας καὶ χαλάσεως δεομένων σωμάτων. βα-
ρυτέραν δὲ ἔχει τὴν εὐωδίαν. ὡς πολλοὺς αὐτῆς μὴ ἡδέως ἀν-
τιλαμβάνεσθαι.

Περὶ αἰθάλης λιβανωτοῦ. κεφ. πε΄. c. 22

Ἕ τερον προσεπιτίθει. ἕως ἂν ἀποθεὶς κατὰ τὸ ἕτερον αὐτοῦ
χεῖλος ἢ εἰς ἀμφότερα. ἕτερον προσεπιτίθει.

Περὶ ἀρκευθίδος. κεφ. ρδ΄. c. 26

Ἀ ρκευθὶς μικρά. οἱ δέ, ἀρκευθίδα. οἱ δέ, μνησίθεος. ἡ δέ, ἀκα-
ταλίδα. ἄφροι ζουοειναίπετ. αἰγύπτιοι λιβιούμ. ῥωμαῖοι

ἰουνίπερουμ. γάλλοι ἰουπικέλλουσον. φύλλα δὲ ἔχει δριμέα. διὸ καὶ καταπλασσόμενα καὶ πινόμενα καὶ αὐτὰ καὶ ὁ χυλὸς αὐτῶν μετ᾽ οἴνου, ποιεῖ πρὸς ἐχιοδήκτους. ὁ δὲ φλοιὸς καυθεὶς καὶ μεθ᾽ ὕδατος καταχρισθεὶς, λέπρας ἀφίστησι. τὸ δὲ ῥίνημα τοῦ ξύλου καταποθὲν, ἀναιρεῖ.

περὶ ἀρκευθίδος μεγάλης. κεφ.

Ἄρκευθις μεγάλη. οἱ δὲ, κυπάρισσος ἀγρία. οἱ δὲ, μνησίθεος. οἱ δ᾽, ἀκατέρα. ῥωμαῖοι ἰουνίπερουμ. ἔστι καὶ αὕτη γνώριμος τοῖς πλείστοις. ἐμφερὴς κυπαρίσσῳ. γεννωμένη ἐν τραχέσι καὶ παραθαλασσίοις τόποις ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον. δύναμιν δὲ ἔχει τὴν αὐτὴν τῇ προειρημένῃ.

περὶ βράθυος. κεφ. ρε΄. c. 26

Οἱ δὲ, βάρυτον. οἱ δὲ, βάρον. ῥωμαῖοι ἕρβα σαβίνα.

περὶ ῥάμνου. κεφ. ρκ΄. c. 29

Ῥάμνος οἱ δὲ περσεφόνιον. οἱ δὲ, λευκάκανθα. ῥωμαῖοι σπίνα ἄλβα. οἱ δὲ σπίνα κέρβαλις. ἄφροι ἀταδίμ.

περὶ ἁλίμου. κεφ. ρκα΄. c. 29

Ἅλιμος. οἱ δὲ δαμασσώνιον. οἱ δὲ ἔρυμον. οἱ δὲ, βρεττανική. οἱ δὲ ῥάβδιον. οἱ δὲ, βασίλειον. προφῆται ἑρμοῦ βάσις. ὁμοίως σαλφοῖς. οἱ δὲ, ὀσιειδὸς διάδημα. οἱ δὲ, ἡλυστέφανος. οἱ δὲ, ἱερὸς καυλός. πυθαγόρας ἀνθήνορος. αἰγύπτιοι ἀσοντιεὶ, οἱ δ᾽, ἄσφη. οἱ δὲ, ἀσκαλουεί. οἱ δὲ ἀσαειφή. ῥωμαῖοι ἀλβούκιουμ. οἱ δὲ ἀμπελούκιαμ.

περὶ ῥόδων. κεφ. ρλα΄. c. 31

Ῥόδα. ῥωμαῖοι ῥόσα.

περὶ ἀκακίας. κεφ. ρλδ΄. c. 32

Τῷ δὲ φθινοπόρῳ φέρει.

περὶ ἄγνου. κεφ. ρλς΄. c. 33

Ἄγνος. οἱ δὲ ἄγνον. οἱ δὲ, λύγον. οἱ δὲ, ἀμικτομίαινον. οἱ δὲ, ζιδάκτυλον. προφῆται σεμνόν. οἱ δὲ, αἷμα ἴβεως. αἰγύπτιοι σούμ. ῥωμαῖοι σάλιξ μαρίνα. οἱ δὲ, πίπερ ἀγρέστε. οἱ δὲ λενκείσικουμ.

Περὶ ἐλαίου ἀγρίας ἐλαίας. Κεφ. ρμα´. c. 34

Καὶ διακλυζομένου. δεῖ δὲ ἔριον μηλωτῇ περιτιθέντας, ἀποβάπτειν εἰς τὸ ἔλαιον. καὶ προσάπτεσθαι τοῖς οὔλοις,

Περὶ ἁλικακάβου. Κεφ. c. 42

Ἁλικάκαβος. οἱ δὲ, δίρκαιον. οἱ δὲ, στρυχνόν. οἱ δὲ, μανικόν. οἱ δὲ, δορύκνιον. οἱ δὲ, φυσαλίς. οἱ δὲ, καλλιάδα. ῥωμαῖοι, ἀπολιναρὶς μίνορ. οἱ δὲ, ἔρβα οὐλτικάνα. οἱ δὲ ἐσφαγομάδα καὶ κωκαλίδα, ἄφροι κακκάβουμ. θάμνος ἐστὶ κλάδους ἔχουσα πολλούς. δυσθραύστους. στελεχώδεις. φύλλα πλεῖστα λιπαρά. ἐμφερῆ μηλοκηδωνίῳ. ἄνθος ἐρυθρόν. καρπὸν ἐν θυλακίοις μικροῖς. κροκίζοντα ὥς περ ἐρεβίνθου. σπέρμα στρογγύλον. ὥς περ ὀρόβου ε´. ἢ ἕξ. φύεται δὲ ἐν πέτραις οὐ πόρρω θαλάσσης. ταύτης ὁ χυλὸς ἐν οἴνῳ ποθεὶς < α´. ὕπνον ἄγει, ὡς τοῦ ὀπίου μήκωνος. ὁ δὲ καρπὸς οὐρητικός ἐστι. δίδοται δὲ ὑδρωπικοῖς ὡσεὶ κορύμβους ιβ´. πλείονες δὲ ποθέντες ἔκστασιν ἐργάζονται. βοηθοῦνται δὲ, μελικράτῳ πολλῷ πινόμενοι. μίγνυται δὲ καὶ ἀνωδύνοις τροχίσκοις ὁ χυλὸς αὐτῆς, καὶ ὁ φλοιὸς αὐτῆς. ἑψηθὲν δὲ ἐν οἴνῳ καὶ διακρατούμενον ἐν τῷ στόματι ὀδονταλγίας παύει. ὁ δὲ χυλὸς τῆς ῥίζης μετὰ μέλιτος χρισθεὶς ἀμβλυωπίας παραιτεῖται.

Περὶ ἐγκεφάλου ἀλεκτορίδος. Κεφ. σμα´ c. 48

Ἡ δὲ κοιλία τούτων ταριχευθεῖσα καὶ ξηρανθεῖσα ἐν σκιᾷ, ἐπὶ ταῖς ὑπερκαθάρσεσι ταῖς ἀπὸ φαρμάκων κενωτικῶν, ὅσον γ´. λαμβανομένη, βοήθημά ἐστιν ἄριστον, ἵστησι γὰρ παραχρῆμα τὴν κένωσιν. δεῖ δὲ τρῖμμα ποιεῖν καὶ ἐν τῷ μετὰ ὕδατος καὶ διδόναι.

Περὶ ἀκρίδων. Κεφ. σμε´ c. 48

Τῶν δὲ σάρκα ἀχρείαν ἔχουσιν.

Περὶ ἀποπάτου. Κεφ. σπς. c. 58

Ἀνθρώπων δὲ ξηρὰν σὺν μέλιτι φυραθεῖσαν καὶ ἐπιτεθεῖσαν τῷ λάρυγγι ὡς καὶ ἡ τοῦ κυνὸς συναγχικοῖς βοηθεῖν ἀναντιρρήτως εὕρομεν.

Περὶ κειθῆς. Κεφ. σςς. c. 60

Ποιήσεις δὲ πτισάνην οὕτως· τὴν κριθὴν πτίσας ξήρανον ἐν ἡλίῳ καὶ αὖθις πτίσας ξήρανον. ἀρτιθέμενος δὲ αὐτὴν παρέμπασσε αὐτῇ τὸ γινόμενον ἐξ αὐτῆς λεπτὸν ἐν ταῖς πτίσεσι, διατηρεῖ γὰρ αὐτήν. ὅτι ἡ πτίση ὑγροτέρα λαμβανομένη ὠφελιμωτάτη ἐστίν. ἔστω δὲ τὸ ὕδωρ δεκάτον τῶν τοῦ κριθῶν μέρους· ἔμπασσε δὲ καὶ ἁλῶν ἀτρίπτων.

Περὶ χόνδρου. κεφ. τϛ. c. 53

Γίνεται δὲ χόνδρος οὕτως. ζειὰς πτιστέον καὶ βραστέον καὶ ἐμβλητέον θερμῷ ὕδατι καὶ συνεκπιεστέον. ἔπειτα καὶ πλέον γύψον λευκὸν καὶ εἰς λεπτὸν σηστέον. εἶτα ἄμμου τῆς λευκοτάτης καὶ λεπτοτάτης τὸ τέταρτον σὺν γύψου μέρει καθ' ὀλίγον μίξας, αὖθις ἐπίπασσε τῇ ζειᾷ. σκευαστέον δὲ ἐν ταῖς ὑπὸ κύνα ἡμέραις, ἵνα μὴ ὀξύς. ἐπὰν δὲ ἅπας ἐπιπασθῇ κοσκινιασθήτω ἁδρότερον. κάλλιστος δὲ ὁ πρότερον σκευασθεὶς γίνεται χόνδρος, δεύτερος δὲ ὁ μετὰ τοῦτον καὶ τρίτος ἐλάττων.

Περὶ κέγχρου. κεφ. τζ´. c. 61

Ῥωμαῖοι μίλιουμ.

Περὶ ἐλύμου. κεφ. τη´. c. 62

Ῥωμαῖοι πάνικουμ.

Περὶ αἴρας. κεφ. τι´. c. 54

Ῥωμαῖοι λόλιουμ.

Περὶ τήλεως ἀλεύρου. κεφ. τιβ´. c. 62

Οἱ δὲ τήλεως καρπός. οἱ δὲ, βούκερως. οἱ δὲ, αἰγόκερως. οἱ δὲ, κεραῖτις. οἱ δὲ, λωτόν. Ῥωμαῖοι φαίνουμ γραίκουμ. Αἰγύπτιοι ἴτασιν.

Περὶ λίνου. κεφ. τιγ´. c. 62

Οἱ δὲ, λινοκαλαμίς. οἱ δὲ, αἶνον. οἱ δὲ, λίνον ἄγριον. Ῥωμαῖοι λινομυροῦμ. οἱ δὲ, λίνουμ ἀγρέστεμ. Ἄφροι ξεραφοῖς.

Περὶ φακοῦ. κεφ. τιζ´. c. 64

Φακὸς ὁ ἐσθιόμενος. Ῥωμαῖοι λέντεμ. οἱ δὲ λεντίκουλαμ.

Περὶ ὀρόβου. κεφ. τιθ´. c. 64

Ῥωμαῖοι ὄροβουμ.

Περὶ θέρμου.

Περὶ θέρμου. Κεφ. τκ'. c. 64

Ῥωμαῖοι λούπινουμ. αἰγύπτιοι βρεχού. ἢ μετὰ ὄξους πινόμενον,

Περὶ θέρμου ἀγρίου. Κεφ. τκα'. c. 65

Ὃν ῥωμαῖοι λούπινουμ ἀγρέστεμ καλοῦσιν,

Περὶ γογγύλης. Κεφ. τκβ'. c. 65

Γογγύλη ἢ μέρος. οἱ δὲ, γογγυλίδα. οἱ δὲ, γολγόσιον. ῥωμαῖοι ῥάπα.

Περὶ ῥαφανίδος. Κεφ. τκε'. c. 65

Οἱ δὲ, πολύειδος ἠρυγγίου. ῥωμαῖοι ῥάδιξ νοστράς. ἄφροι θορφάθ. οἱ δὲ, ῥάφανον ὀρεινήν. οἱ δὲ, ἄπιον. οἱ δὲ, ἰσχάδα. οἱ δὲ, χαμαιβάλανον ἀγρίαν. οἱ δὲ λινόζωστιν. ῥωμαῖοι ῥάδιξ σιλβέστρις ἄφροι θορφαθσαδοί. κλωνία δύο ἢ τρία σχοινώδη ἔχει. λεπτά. ἐρυθρά. φύλλα πηγάνῳ ἀγρίῳ ἐοικότα. ἐπιμηκέστερα μέντοι καὶ στενώτερα. καρπὸς μικρός. ῥίζα σπονδύλῳ παραπλησία. στρογγυλοτέρα. καὶ πρὸς τὸ τοῦ ἀπίου σχῆμα μεστὴ ὀποῦ. φλοιὸν ἔχουσα λευκόν. ταύτης τὸ μὲν ἄνωθεν μέρος τῆς ῥίζης ληφθὲν, δι᾽ ἐμέτων ἄγει χολὴν καὶ φλέγμα. τὰ δὲ πρὸς τῇ ῥίζῃ κάτω καθαίρει. ὅλη δὲ ληφθεῖσα, ἀμφοτέρας τὰς καθάρσεις κινεῖ. ὀπίσαι δὲ βουληθεὶς, κόψας τὰς ῥίζας καὶ βαλὼν εἰς κρατῆρα ὕδατος, τάραττε. καὶ τὸν ἐφιστάμενον ὀπὸν, πτερῷ ἀνελὼν ξήραινε. τούτου τρία ἡμιωβόλια ποθέντα ἄνω καὶ κάτω καθαίρει.

Περὶ ῥαφανίδος ἀγρίας. Κεφ. τκς'. c. 65

Ἣν ῥωμαῖοι ἀρμοράκιον καλοῦσι, εἰς βρῶσιν

Περὶ λαπάθου. Κεφ. τκη'. c. 66

Καὶ αὐτὸ ἐν τῷ ἢ λουτρῷ ἀνατριβόμενον.

Περὶ λαμψάνης. Κεφ. τλ'. c. 66

Ῥωμαῖοι νάπιουμ. αἰγύπτιοι ἔθμοι.

Περὶ βουνίου. Κεφ. c. 66

Βούνιον. οἱ δὲ, ἄτον. οἱ δὲ, ἀκτίνην. οἱ δὲ, ἀνεμόσφορον. προφῆται παράδακρυ. αἰγύπτιοι ἐρξώην. ῥωμαῖοι σκόπα ῥέγια. ἄφροι ζιγάρ. οἱ δὲ, θεμψώ. καυλὸν ἀνίησι τετράγωνον. καὶ ἐν αὐτῷ κλωνάρια περίπλεα φυλλαρίων λεπτῶν καὶ ἀνθῶν

πολλά. τῷ μήκει δακτυλιαίων. φύλλα δὲ πρὸς τῇ ῥίζῃ ὅμοια σελίνῳ. λεπτότερα δὲ πολλῷ πρὸς τὰ τοῦ ζιβώλου. ἄνθος δὲ ὡς ἀνήθου. σπέρμα εὐῶδες. ὑοσκυάμου μικρότερον. ἔστι δὲ οὐρητικόν. θερμαντικόν. καὶ δευτέρων ἀγωγόν, σπληνί τε καὶ νεφροῖς καὶ κύστει ἐπιτήδειον. χρῆσις δ' αὐτοῦ ὑγροῦ τε καὶ ξηροῦ. καὶ χυλισθέντος σὺν ταῖς ῥίζαις καὶ τοῖς καυλοῖς μετὰ μελικράτου ὠφελίμως.

Περὶ βλήτου. Κεφ. τλα΄. c. 66

Αἰγύπτιοι ἐχλωτοειτάμ. οἱ δὲ, ῥιπλάμ. ῥωμαῖοι βλίτουμ. δακοὶ βλής.

Περὶ μαλάχης. Κεφ. τλβ΄. c. 66

Κηπευτή. ῥωμαῖοι μάλβα ὁρτένσις. πυθαγόρας ἄνθεμα. ζωροάστρης, διάδεσμα. αἰγύπτιοι χωκορτήν. προφῆται αἰγὸς σπλήν. οἱ δὲ, οὐρὰ μυός.

Περὶ ἀτραφάξυος. Κεφ. τλγ΄. c. 66

Ῥωμαῖοι ἀτρίπλικεμ. αἰγύπτιοι ὠχεῖ.

Περὶ κράμβης. Κεφ. τλδ΄. c. 67

Ἡ δὲ κράμβη κηπαία. ῥωμαῖοι βράσσικα.

Περὶ κράμβης ἀγρίας. Κεφ. τλε΄. c. 67

Ἣν ῥωμαῖοι βράσσικα ῥούστικα.

Περὶ τεύτλου. Κεφ. τλϛ΄. c. 67

Μέγα. ῥωμαῖοι βέτα σιλβάτικα.

Περὶ ἀνδράχνης ἀγρίας. Κεφ. τλθ΄. c. 68

Λεγομένη ἀείζωον ἄγριον. οἱ δὲ, τηλέφιον. ῥωμαῖοι ἰλλεκέβραμ. οἱ δὲ, πορτουλάκαμ. ἄφροι μοίμοιμ. δακοὶ λάξ. αἰγύπτιοι μοχμουτίμ.

Περὶ ἀσπαράγου. Κεφ. τμ΄. c. 68

Οἱ δὲ, μύον

Περὶ ἀρνογλώσσου. Κεφ. τμα΄. c. 68

Οἱ δὲ ἀρνεῖον. οἱ δὲ, προβάτειον. οἱ δὲ, κυνόγλωσσον. οἱ δὲ, ἑπτάπλευρον. οἱ δὲ, πολύνευρον. προφῆται εὐρεχυεύμονος. αἰγύπτιοι ἀσόνθ. ῥωμαῖοι πλαντάγω μίνορ. ταρβηλοδάθιον. ἱσπανοὶ θησαρικάμ. ἄφροι ἀτιερκόν. Οἱ δὲ σύροι τὸν τούτου ζωμὸν καὶ τῆς καλαμίνθης σὺν μέλιτι, φασὶ τοὺς πυρέτους θεραπεύειν. διδόμενον δευτέρᾳ τετάρτῃ καὶ παρασκευῇ. τοῦτο ὡς μυστήριόν τι δέχου. ἔστι γὰρ ἀληθέστατον καὶ

διὰ πείρας.

Περὶ σίου. Κεφ. τμβ΄. c. 69

Οἱ δὲ, ἀναγαλλὶς ἔνυδρος. οἱ δὲ, σχῖνος ἀρωματική. οἱ δὲ, σάριον. οἱ δὲ, λαουβέρδε.

Περὶ σισυμβρίου. Κεφ. τμγ΄. c. 69

Οἱ δὲ, ἀφροδίτης στέφανον. ῥωμαῖοι σουστράλις. οἱ δὲ, ἕρβα βενέρεα.

Περὶ κορωνόποδος. Κεφ. τμς΄. c. 69

Οἱ δὲ, ἄμμονος. οἱ δὲ, ἄστριον. ἄφροι ἀπεσίτλη. ῥωμαῖοι καικατεικέμ. οἱ δὲ σιλάτω, οἱ δὲ, σεστινιναρίαμ.

Περὶ σόγχου. Κεφ. τμζ΄. c. 69

Τραχύς. οἱ δὲ, κιχώριον. ῥωμαῖοι κουκούρβιτα ἄσπερα. ἄφροι γαθουόνημ. τούτου δὲ

Περὶ σέρεως. Κεφ. τμη΄. c. 70

Οἱ δὲ πικρίδα. αἰγύπτιοι ἄγον. ῥωμαῖοι ἰντιβουμ ἀγρέστεμ. διαστή.

Περὶ θρίδακος ἡμέρου. Κεφ. τνγ΄. c. 70

Ῥωμαῖοι λακτούκα. αἰγύπτιοι ἐμβροσί.

Περὶ ἀγρίας θρίδακος. Κεφ. τνδ΄. c. 71

Ἣν προφῆται αἷματι τάνου. ζωροάστρης φθρούμβρος. ῥωμαῖοι λακτούκα σιλβέστρις καλοῦσιν,

Περὶ γιγγιδίου, Κεφ. τνε΄. c. 71

Ῥωμαῖοι βισακούτουμ. αἰγύπτιοι δυρυσαστρού. σῦροι ἀδδειά. ἄφροι πεικτά.

Περὶ σκάνδικος. Κεφ. τνς΄. c. 71

Ῥωμαῖοι ἕρβα σκανάρια. οἱ δὲ, ἀκουκλάμ.

Περὶ καυκαλίδος. Κεφ. τνζ΄. c. 71

Οἱ ἔνιοι δὲ καῦκον ἢ οἱ δὲ, μυΐτις. δημόκριτος βεῖον. ῥωμαῖοι πέδεμ γαλλινάκεουμ. οἱ δὲ, πέδεμ πύλλι. αἰγύπτιοι σέσελις. σελίνῳ ἐμφερῆ. ἐπ' ἄκρου δὲ μαραθροειδῶς.

Περὶ εὐζώμου. Κεφ. τνη΄. c. 71

Ῥωμαῖοι δὲ ἐρούκαμ. αἰγύπτιοι ἐθρεκικλώ. ἄφροι ἀσουείκ.

Περὶ ὠκίμου. Κεφ. τνθ΄. c. 71

Γ νόμονος.

Περὶ ὀροβάγχης. Κεφ. τξ΄. c. 71

Οἱ δὲ, κυνομόριον. οἱ δὲ, λέοντα. κύπριοι δὲ θυρσίνην καλοῦσιν ὁ κοινῶς λύκος ὀνομάζεται.

Περὶ πράσου κεφαλωτοῦ. Κεφ. τξζ΄. c. 72

Ῥωμαῖοι πόρρουμ.

Περὶ κρομμύων. Κεφ. τξθ΄. c. 73

Οἱ δὲ, πολύειδος. προφῆται καλαβωτίς. Ῥωμαῖοι κέπαμ.

Περὶ σκορόδου. Κεφ. το΄. c. 73

Οἱ δὲ, γήβοσκον. οἱ δὲ, ἐλαφόβοσκον. Ῥωμαῖοι ἄλλιουμ. ὥσπερ τὸ πράσον. γλυκύ. ἐμπόρφυρον. μικρόν. τὸ δὲ λοιπὸν μέγα. πολυκέφαλον. λευκόν. δηκτικήν. τὰ αὐτὰ δὲ ποιεῖ καὶ τὸ ὀφιόσκορδον. ὃ καὶ ἐλαφόσκορδον λέγεται. βιβρωσκόμενον ἕλμινθας πλατείας ἐξάγει. καὶ οὖρα κατάγει. ἐχιοδήκτοις τε καὶ αἱμορροοῦσιν ἁρμόζει ὡς οὐδὲν ἕτερον. λαμβανομένου οἴνου συνεχῶς. ἢ σὺν τῷ οἴνῳ λεανθὲν καὶ ποθέν. καταπλάσσεται δὲ πρός τε ταῦτα καὶ ἐπὶ τῶν λυσσοδήκτων ὠφελίμως. καὶ βιβρωσκόμενον δὲ ὀνίνησι, βιβρωσκόμενον.

Περὶ σινήπεως. Κεφ. τοβ΄. c. 73

Κηπαῖον. οἱ δὲ, Ῥωμαῖοι σινάπε.

Περὶ καρδάμου. Κεφ. τογ΄. c. 74

Οἱ δὲ, κυνοκάρδαμον. οἱ δὲ, ἴβηρις. οἱ δὲ, καρδαμινακάμ. αἰγύπτιοι σέμεθ. Ῥωμαῖοι νασούρκιουμ.

Περὶ θλάσπεως. Κεφ. τοδ΄. c. 74

Οἱ δὲ, θλασπίδιον. οἱ δὲ, σίνηπι περσικόν. οἱ δὲ, σίνηπι ἄγριον. οἱ δὲ, μυΐτην. οἱ δὲ, μυόπτερον. οἱ δὲ, δασμοφῶν. οἱ δὲ, βίζον. αἰγύπτιοι σουιτέμψου. Ῥωμαῖοι σκανδουλάκιουμ. οἱ δὲ, κάψελλα. οἱ δὲ, πέδεμ γαλλινάκεουμ.

Περὶ ἐρυσίμου. Κεφ. τος΄. c. 74

Οἱ δὲ, χαμαίπλιον. προφῆται ἡρακλέους ἄλφιτα. αἰγύπτιοι ἐρέθμου. Ῥωμαῖοι ἐρίονεμ.

Περὶ πεπέρεως. Κεφ. τοζ΄. c. 75

Λεπτὴ δυνάμεις.

Περὶ στρουθίου. Κεφ. τπα΄. c. 76

Οἱ δὲ, κέρδον. οἱ δὲ κάθαρσις. οἱ δὲ, στρουθοκάμηλος. οἱ δὲ, χαμαίρρυτον. προφῆται χαλιέρρυτον. Ῥωμαῖοι ῥαδιξανάρια. οἱ δὲ, ἐρβαλαρία. αἰγύπτιοι οἰνώ. ἄφροι συείς. γνωει-

## Περὶ κυκλαμίνου. κεφ. τπβ'. c. 76

Οἱ δὲ, κυσάνθεμον. οἱ δὲ, κισσόφυλλον. οἱ δὲ, χελώνιον. οἱ δὲ, ἰχθυόθηρον. οἱ δὲ, χυλίνην. οἱ δὲ, ζωροάστρις ἡ τειμφαλίτης. ὀσθαίνης ἀσφώ. προφῆται μιασφώ. αἰγύπτιοι θέσκε. ῥωμαῖοι ῥάπουμ τέῤῥαι. οἱ δὲ, οὐμβιλίκουμ τέῤῥαι. οἱ δὲ, ἀρκάρ.

## Περὶ ἑτέρας κυκλαμίνου. κεφ. τπγ'. c. 76

Ἢ κισσόφυλλον.

## Περὶ δρακοντίας μεγάλης. κεφ. c. 76

Δρακοντία μεγάλη. οἱ δὲ, ἄρον. οἱ δὲ ἴσαρον. οἱ δὲ, ἴαρον. οἱ δὲ, ἱεράκικος. οἱ δὲ, βίαρον. οἱ δὲ, ἀρμιάγριον. οἱ δὲ, κύπρις. ῥωμαῖοι λουρουμέμ. οἱ δὲ μαυειαριάμ. οἱ δὲ σιγγιάλιος. φύεται ἐν συσκίοις περιφραγμοῖς. καυλὸν δὲ ἔχει λεῖον. ὀρθὸν ὡς διπηχυαῖον. καὶ παχὺν ὡς βακτηρίαν. ποικίλον κατὰ χρόνον ὡς ἐοικέναι δράκοντι. καὶ πλεονάζει μὲν ἐν τοῖς διαπορφύροις σπίλοις. φύλλα δὲ ὡς λαπαθώδη ἀντεμπλεκόμενα. καρπὸν δὲ ποιεῖ ἐπ' ἄκρου τοῦ καυλοῦ βοτρυοειδῆ. σποδοειδῆ τῷ χρώματι τὸ πρῶτον. ἐν δὲ τῷ πεπανθῆναι κροκίζοντα καὶ φοινικοῦν. ῥίζαν εὐμεγέθη. στρογγύλην. λευκήν. φλοιὸν ἔχουσαν λεπτόν. συλλέγεται δὲ καὶ χυλίζεται ὅταν πυρκάζῃ. καὶ ξηραίνεται ἐν σκιᾷ. ἡ δὲ ῥίζα ὀρύσσεται πυραμητῷ καὶ πλυθεῖσα κατατέμνεται. καὶ ἐνείρεται μὲν ἱμάντι. ξηραίνεται δὲ ἐν σκιᾷ. θερμαντική δέ ἐστι μετὰ συγκράματος. ποιεῖ δὲ ὀπτή τε καὶ ἑφθὴ μετὰ μέλιτος ἐκλειχομένη, πρὸς ὀρθοπνοϊκούς. ῥήγματα. σπάσματα. βῆχας. καταῤῥοῦν. ποθεῖσα δὲ μετὰ οἴνου, τὰς ἐπὶ συνουσίαν ὁρμὰς κινεῖ. καθαίρει δὲ σὺν μέλιτι λειανθεῖσα ἢ ἐπιπλασθεῖσα τὰ κακοήθη τῶν ἑλκῶν. καὶ φαγεδαινικά. καὶ μετὰ λευκῆς ἀμπέλου μάλιστα. καὶ κολλύρια δὲ ἐξ αὐτῆς σὺν μέλιτι, πρὸς σύριγγας ἀναπλάττεται, καὶ ἐμβρύων κομιδήν. ποιεῖ δὲ καὶ πρὸς ἀλφοὺς σὺν μέλιτι καταχρισθεῖσα. πολύποδας δὲ, καὶ καρκινώματα δαπανᾷ. ποιεῖ δὲ ὁ χυλὸς αὐτοῦ καὶ εἰς ὀφθαλμικά. πρὸς νεφέλια. λευκώματα. ἀχλύν. ἡ δ' ὀσμὴ τῆς ῥίζης καὶ τοὺς πόας τῶν ἄρτι συνειλημμένων, φθόριόν ἐστι. καὶ τοῦ καρποῦ λ' κόκκοι ποθέντες μετ' ὀξυκράτου. ἔνιοι δὲ τῷ χυλῷ τῷ τούτου, καὶ τοὺς ὠταλγοῦντας ἐνεχυμάτισαν μετὰ ἐλαίου. τὰ φύλλα

δὲ ὡς σύμφοντα τοῖς νεοβρώτοις ὑπέθεσαν. ἐν ψημενίᾳ δὲ ἐν οἴνῳ καὶ τοῖς χύμεθλα ἔχουσι. φασὶ δὲ καὶ τοὺς διατρίψαντας αὐτὰ ταῖς χερσὶν ἢ τὴν ῥίζαν ἀναιροῦντας, ἀπὸ ἔχεως μὴ δάκνεσθαι.

Περὶ Ἄρου. Κεφ. τπε. c. 77

Οἱ μὲν ἄλιμον· οἱ δὲ θύμον. οἱ δὲ δρακοντίαν. οἱ Κύπριοι καὶ κολο λοκάσιον λέγουσι.

Περὶ Ἀσφοδέλου. Κεφ. τπζ΄. c. 77

Οἱ δὲ, ναρθήκιον. ῥωμαῖοι ἀλβούκιουμ. ἐν ἄλλῳ. αἰθεῖ δὲ ἐν πυραμητῷ. χρὴ δὲ τὸν λευκὸν ἀσφόδελον τέμνεσθαι κατὰ τὴν ἰσημβρίαν ἐν ἔαρι. πρὸ τοῦ τὸν καρπὸν αὐξηθῆναι. τὴν δὲ ῥίζαν πινομένην, ἀνορέκτους φησὶ ποιεῖν πρὸς ἀφροδίσια. καὶ κρατεύας δὲ ὁ ῥιζοτομικὸς τὰ αὐτὰ εἶπε. καὶ ὅτι θεραπεύει ἡ ῥίζα πινομένη μετ' οἴνου δραχμὴ μία ποδάγρας ἀλγήματα.

Περὶ βολβοῦ ἐδωδίμου. Κεφ. τπθ΄ c. 78

Ἑφθὸς δὲ σὺν ἀλφίτοις καὶ στέατι χοιρείῳ προστεθεὶς, οἰδήματα καὶ φύματα συντόμως ἐκπυΐσκει καὶ διαῤῥήσσει.

Περὶ Καππάρεως. Κεφ. τϟβ΄. c. 79

Κυνόσβατος. οἱ δὲ, καπρία. οἱ δὲ, κέρανος μῆλον. οἱ δὲ, ὀφιόσκορδον. οἱ δὲ, φυλοστάφυλον. οἱ δὲ, θαλλίαν. οἱ δὲ, πετραίαν. οἱ δὲ, ὁλόφυτον. οἱ δὲ, ἰωνίτην. οἱ δὲ, ὀλιγόχλωρον. οἱ δὲ, ἀκόντιον. οἱ δὲ, ἱππομανές. οἱ δὲ, τειχομανές. προφῆται ποτόρα. οἱ δὲ, πεύτερον. οἱ δὲ καρδία λύκου. οἱ δὲ, ἀλοσκόρδον. οἱ δὲ, κεῖνον. οἱ δὲ, θλάσπιν. ῥωμαῖοι σίναπι πέρσικουμ. οἱ δὲ ἰντούβεις. ἄφροι περβιαμαθοῦμ.

Περὶ Βατραχίου. Κεφ. τϟβ΄. c. 80

Τὰ αὐτὰ καὶ

Περὶ Ἀνεμώνης. Κεφ. τϟε΄. c. 80

Ἀνεμώνη. οἱ δὲ, ἀγρίαν. οἱ δὲ, μέλαιναν καλοῦσι καὶ ἀνεμώνη ἡ φοινική. οἱ δὲ ἀνέμιον. ἡ δὲ, μηκώνιον. οἱ δὲ, ῥαγοκέρως. οἱ δὲ, γῆς παρίνη. οἱ δὲ βαρβύλη. ὀσθάνης βηρύλιος. ὁμοίως ὄρνιος κοράνιος. πυθαγόρας ἀδρακτυλίς. προφῆται κυνὸς ἀγρία. ῥωμαῖοι ὄρκι τούνικαμ. ἄφροι χουφφοις.

Περὶ Ἀργεμώνης. Κεφ. τϟϛ. c. 80

Οἱ δὲ οἰνώνη. οἱ δὲ, ἀνθεμίς. οἱ δὲ, ὁμόνοια. οἱ δὲ, ἄνθος παιδινόν.

ῥωμαῖοι λοβορνία. οἱ δὲ κογκορδιάλις. οἱ δὲ περγαλία. γάλ-
λοι κέρνα παρέοικεν ἀγρίᾳ μήκωνι. Κρατεύας ὁ ῥιζοτό-
μικὸς εἰς τὸ αὐτό. ἀργεμώνη. αὕτη ἡ βοτάνη κοπεῖσα μετὰ
ὀξυγγίου, χοιράδας διαλύει. ποιεῖ καὶ πρὸς ἀλφοὺς μετὰ
νίτρου καὶ θείου ἀπύρου ξηρὰ κοπεῖσα καὶ σεισθεῖσα. ἐν βα-
λανείῳ δὲ τοὺς χρωμένους θεραπεύει πρὸ ξηροτριβηθέν-
τας. ποιεῖ καὶ πρὸς ψώραν.

Περὶ ἑτέρας ἀργεμώνης. Κεφ. c. 80

Ἀργεμώνη ἑτέρα. οἱ ἀρτεμώνη. οἱ δὲ, ἀρσελάμ. οἱ δὲ, ἐρεκο-
κόλλα. ῥωμαῖοι ἀρτεμόνιαμ. καὶ αὕτη παρέοικε μὲν ἀ-
γρίᾳ μήκωνι τοῖς φύλλοις. Δύναμιν δὲ ἔχει αὕτη χλωρὰ
τριβομένη λεία καὶ ἐπιτιθεμένη διακοπὰς θεραπεύειν. καὶ
ὀφθαλμῶν φλεγμονὰς παύειν. ἁρμόζει καὶ δυσεντερικοῖς
σὺν ὕδατι πινομένη. κολλητικὴ δὲ τραυμάτων καὶ φλεγμο-
νῶν ἐστιν εὔθετος. ὡσαύτως ἐπιτιθεμένη, σπασμάτων καὶ πλ-
μάτων ἐστὶ θεραπευτική. ἁρμόζει καὶ θηριοδήκτοις σὺν οἴ-
νῳ πινομένη.

Περὶ ἀναγαλλίδος. Κεφ. τϛζ΄. c. 80

Ἡ φοινική. οἱ δὲ, ἄβριτις. οἱ δὲ αἰγῖτις. οἱ δὲ σαυρῖτις. προφῆται
αἷμα ὀφθαλμοῦ. οἱ δὲ, χελιδόνιον. ῥωμαῖοι μακία. θοῦσκοι
μασυτίπως. γάλλοι σαπάνα. δακοὶ κὸρ κοραφεών. ἀναγαλ-
λὶς οἱ κοινή. οἱ δὲ κόρχορον. οἱ δὲ, ἁλικάκαβον. οἱ δὲ, ζηλίαυ-
ρος προφῆται νυκτέριτις. αἰγύπτιοι μικιέ. ῥωμαῖοι με-
νίαθ. ἄφροι ἀσιρρίσοι.

Περὶ κισσοῦ. Κεφ. τϛη΄. c. 80

Κισσὸς οἱ δὲ, κίθαρον. οἱ δὲ κίθαρον. οἱ δὲ χρυσόκαρπος. οἱ δὲ ποιη-
τική. οἱ δὲ κορυμβήθρα. οἱ δὲ κύσσιον. οἱ δὲ διονύσιον. οἱ δὲ ἰθυ-
θήλειον. οἱ δὲ, περσις. οἱ δὲ, κῆμος. οἱ δὲ, ἀσπλῖνος ῥωμαῖοι
σίλβα μάτερ. οἱ δὲ ἔδερα. γάλλοι σουβίτης. καὶ μύρῳ.
καὶ ἰᾶται.

Περὶ χελιδονίου τοῦ μεγάλου. Κεφ. τϛθ΄. c. 81

Οἱ δὲ παιονία. οἱ δὲ, κραταιά. οἱ δὲ ἀούβιος. οἱ δὲ, γλαύκιος.
οἱ δὲ, πάνδιος ῥίζα. ἡ δὲ φιλομήδειον. οἱ δὲ, ὀθόνιον. ῥωμαῖοι
φάβιουμ.. γάλλοι θῶνα. αἰγύπτιοι. μοθόθ. δακοὶ κρουστάνη.
κροκοειδεῖς.

## Περὶ χελιδονίου τοῦ μικροῦ. Κεφ. ν΄. c. 81

Ὁμοίως καὶ τὸ ταύτης ἀφέψημα σὺν μέλιτι ἀναγαργαριζόμενον, κεφαλὴν καθαίρει γενναίως καὶ πάντα τὰ ἐκ θώρακος.

## Περὶ μυὸς ὤτων. Κεφ. c. 81

Μυὸς ὦτα. οἱ δὲ, μύωτον. οἱ δὲ, ἀνθύλλιον. οἱ δὲ, ἀλσίνην. οἱ δὲ, μυόρτοχον. οἱ δὲ, μυρτόσπληνον. ῥωμαῖοι μούρεις ἀείκουλα. ἄφροι λαβαθολαβάτ. ὠνόμασται δὲ ἀπὸ τοῦ ἔχειν μυὸς ὠτίοις ὅμοια τὰ φύλλα. ἀλσίνη δὲ διὰ τὸ σκιεροὺς καὶ ἀμμώδεις φιλεῖν τόπους. πάνυ ὁμοία ἑλξίνῃ. ταπεινοτέρα δὲ καὶ μικροφυλλοτέρα. Δύναμιν δὲ ἔχει ψυκτικὴν. ἁρμόζουσαν πρὸς φλεγμονὰς ὀφθαλμῶν. καταπλαττομένη μετὰ ἀλφίτων. καὶ πρὸς ὤτων πόνον ὁ χυλὸς αὐτῆς ἐνσταζόμενος. καὶ καθόλου δύναται τὰ αὐτὰ τῇ ἑλξίνῃ.

## Περὶ μυὸς ὤτων. κεφ. νβ΄. c. 81

Ἑτέρα.

## Περὶ ἰσάτιδος ἡμέρου. κεφ. νγ΄ c. 82

Οἱ δὲ, αὔγιον. οἱ δὲ, ἔγνη, προφῆται ἀρούσιον. ῥωμαῖοι ῥοῦταμ. ἰσάτις

## Περὶ ἰσάτιδος ἀγρίας. κεφ. νδ΄. c. 82

Οἱ δὲ, ἔγνη μικρά. ῥωμαῖοι ῥοῦταμ μινόρεμ. ἡ δὲ ἀγρία ἰσάτις. Ἐπιστατέον τὰ περὶ ἰσάτεων ὅτι αἱ ἐκδόσεις αὗται τὸ ἐσφαλμένον ἔχουσι. τό τε γὰρ μήλινον ἄνθος καὶ τοὺς λεπτοτέρους καὶ πολυσχιδεῖς κλάδους καὶ τὰ ἐξ ἄκρου γλωττοειδῆ θυλάκια ἐν οἷς τὸ σπέρμα, ἡ ἥμερος φέρει. ἐμπεριέχεται δὲ τούτοις σπέρμα μέλαν ἐοικὸς μελανθίῳ. καὶ τὸν καυλὸν δὲ ὑπὲρ δίπηχυν. ἀλλ' οὐχ ὑπὲρ πῆχυν μόνον φέρει. ἡ δὲ ἀγρία μελαντέρα ταύτης τὰ φύλλα φέρει. καὶ καυλὸν ἐλάττω καὶ παχύτερον. ἄνθος τε ἐμπόρφυρον ἢ κυανοῦν. καὶ καρπὸν σταυροειδῆ. ῥαχὼν. ἐν οἷς τὸ σπέρμα φυλλαρίοις μικροῖς ἀνὰ πέντε ἴσοις οἱονεὶ διειλημμένον.

## Περὶ ἀραβίδος. κεφ. c. 82

Ἀραβὶς πόα, περὶ πῆχυν τὸ ὕψος ῥάβδους ἔχουσα λεπτάς. παρ' ἑκάτερα δὲ αὐτῶν φύλλα ὥσπερ λεπίδι. ἁπαλώτερα δὲ καὶ λευκότερα. ἐπ' ἄκρου δὲ σκιάδιον καθάπερ ἀκτὶς

ἔχον αὐτῇ λευκά. ταύτης ἡ πόα συλλέγεται πλεονάκις μάλιστα ἐν καππαδοκίᾳ. ὁ δὲ καρπὸς αὐτῆς ξηρὸς ἀντὶ πεπέρεος μίγνυται τοῖς ἑψήμασι.

περὶ τηλεφίου. κεφ. υε΄ c. 82

Οἱ δὲ, ἀείζωον ἄγριον. οἱ δὲ, καὶ ταύτην ἀνδράχνην ἀγρίαν καλοῦσι. ῥωμαῖοι ἰλλέκεβραν. αἰγύπτιοι ἀνώθ. ἄφροι ἀτιρβόπουεις.

περὶ ἀγαρικοῦ. κεφ. υϛ΄. c. 82

Γ αὐν

περὶ ῥᾶ. κεφ. υζ΄. c. 83

Οἱ δὲ, ῥίαν ῥωμαῖοι ῥᾶ ποντικουμ.

περὶ γεντιανῆς. κεφ. υή. c. 83

Οἱ δὲ, κενταύρειος ῥίζα. οἱ δὲ, ἀλόη γαλλική. οἱ δὲ, νάρκη. οἱ δ᾽, χειρώνειον, δαρδανοι ἀλοῖτις. ῥωμαῖοι γενούς. οἱ δὲ, κικενδία. οἱ δὲ, κιμιναλίς.

περὶ ἀριστολοχίας μακρᾶς. κεφ. υί. c. 84

Οἱ δὲ, μηλόκαρπον. οἱ δ᾽ πεύξινον. ῥωμαῖοι ἕρβα ἀριστολόχια.

περὶ ἀριστολοχίας κληματίτιδος. κεφ. υιά. c. 84

Καλεῖται δὲ αὕτη καὶ ἀραρίζα καὶ μελεκάπρουμ. καὶ ἐφέσιος. καὶ λεπῖτις καὶ πυξιόνυξ. καὶ δαρδανον. καὶ ἰοντῖτις. γάλλοι δὲ καλοῦσιν αὐτὴν θέξιμον. αἰγύπτιοι δὲ σοφοέφ. σικελοὶ δὲ χαμαίμηλον. ἰταλοὶ τέρρα μάλα. δακοὶ ἀψίνθιον χωρικόν. γίνεται εἰς τόπους ὀρεινοὺς καὶ θερμοὺς καὶ ὁμαλοὺς ἢ τραχεῖς καὶ πετρώδεις. πιεῖ δὲ πρὸς πυρετὸν βαρυώτως. ἀριστολοχία ἐπ᾽ ἀνθράκων καπνιζον τὸν πυρέσσοντα. καὶ παυθήσεται ὁ πυρετός. θαύματα ἐστὶ πλασσομένη ἰατρ. μετὰ δὲ κυπείρου καὶ δρακοντίου σπέρματος καὶ μέλιτος, τοῖς ἐν ῥινὶ καρκινώμασι βοηθεῖ. μετ᾽ ἐλαίου δὲ ἢ ὑείου στέατος ἑψηθεῖσα, ῥίγη συγχριομένη θεραπεύει. καὶ κρατεύας ὁ ῥιζοτομικὸς καὶ γαλλὸς τὰ αὐτὰ περὶ αὐτῆς εἰρήκασι καὶ ὅτι τοῖς ποδαγρικοῖς ὠφελεῖ.

περὶ γλυκυρρίζης. κεφ. υιβ΄ c. 84

Οἱ δὲ, ποντική. οἱ δὲ γλυκήρατον. οἱ δὲ, σύμφυτον. οἱ δὲ, λεοντική. οἱ δὲ, γλυκύφυτον. οἱ δὲ, σκύθιον. οἱ δὲ ἄδιψον. οἱ δὲ, συ

λίθρα. οἱ δὲ, λιβυεστασώ. οἱ δὲ, ὁμοιονόμοιος. οἱ δὲ, πενθαόμοιος, ῥωμαῖοι δούλκις ῥάδιξ.

περὶ κενταυρείου τοῦ μεγάλου. κεφ. υιγ΄. c. 84

οἱ δὲ, λιμνήσιον. οἱ δὲ, μαρώνιον. οἱ δὲ, πληκτρονιάς. οἱ δὲ, χειρωνιάς. οἱ δὲ, λίμνησις. προφῆται αἷμα ἡρακλέους. ῥωμαῖοι φελέρρει. οἱ δὲ, οὐνεφόρα. οἱ δὲ, φελτόραι. πολυφάρμακος οὗτος.

περὶ κενταυρείου τοῦ μικροῦ. κεφ. υιδ΄. c. 85

οἱ δὲ, λιμνήσιον. οἱ δὲ, ἐλλεβορίτης. οἱ δὲ, ἀμάραντον, προφῆται αἷμα ἡρακλέους. ῥωμαῖοι φελειφουγιάμ. οἱ δὲ, αὐραμουλ τιράδιξ. δάκοι τουλβηλά. γευομένῳ δὲ ἐμποιεῖ πικρίαν.

περὶ χαμαιλέοντος λευκοῦ. κεφ. υιε΄. c. 85

οἱ δὲ, χρυσίσκηπτρον. οἱ δὲ, ἰξίαν. ῥωμαῖοι κάρδουν σουαρίνους. αἰγύπτιοι ἐφήρ. οἱ δὲ, ἐφθόσεχιν.

περὶ χαμαιλέοντος μέλανος. κεφ. υιϛ΄. c. 85

οἱ δὲ, πάγκαρπον. οἱ δὲ, οὐλόφωνον. οἱ δὲ, ἰξίαν. οἱ δὲ, κυνόμαζον. οἱ δὲ, ὠκιμοειδές. οἱ δὲ, κνίδιον κόκκον. οἱ δὲ, κνόξυλον. ῥωμαῖοι κάρδους νίγρα. οἱ δὲ, οὐβριλατώ. αἰγύπτιοι σοβέλ.

περὶ διψάκου. κεφ. υιή. c. 86

οἱ δὲ, κροκοδείλιον. οἱ δὲ, χαμαιλέων. οἱ δὲ, ὀνοκάρδιον. οἱ δὲ, ἀφροδίτης λουτρόν. ῥωμαῖοι λάβρουμ βενέρις. οἱ δὲ, κάρδουμ βενέρις. αἰγύπτιοι σεσενεόρ. οἱ δὲ, χείρ. οἱ δὲ μελῆτα. δάκοι σκιαρή.

περὶ ἀκάνθας λευκῆς. κεφ. υιθ΄. c. 86

οἱ δὲ, ἀγριοκιννάραν. οἱ δὲ, δονακῖτις. οἱ δὲ, χρυσίσκηπτρον. ῥωμαῖοι σπίνα ἄλβα. οἱ δὲ, ῥήγια. οἱ δὲ, κάρδους ῥαμπτάρια.

περὶ ἀκάνθας ἀραβικῆς. κεφ. υκ΄. c. 86

οἱ δὲ ἀκανθίς. ῥωμαῖοι σπίνα. φύεται ἐν τραχώδεσι τόποις.

περὶ σκολύμου. κεφ. υκα΄. c. 86

οἱ δὲ, φόρουσα. οἱ δὲ, πυράκανθα. ῥωμαῖοι σούβουλουμ. αἰ-

γύπτιοι κυνούς.

περὶ ποτηρίου. κεφ. υκβ΄. c. 86

Οἱ δὲ, φύνιον. οἱ δὲ, ἀκιδωτὸν καλοῦσι. φλοιόν. καὶ καὶ πλὺν

περὶ ἀκάνθης. κεφ. υκδ΄. c. 87

Οἱ δὲ, ἀκανθηστόπα. οἱ δὲ, μαμολαρία. οἱ δὲ, κραίπουλα.

περὶ ἀγρίας ἀκάνθης. κεφ. υκε΄. c. 87

Ἣν ῥωμαῖοι σπίνα ἀγρέστις.

περὶ ἀνωνίδος. κεφ. c. υκς΄. c. 87

Τὸ δὲ ταύτης ἀφέψημα πινόμενον, αἱμορροΐδας θεραπεύειν πεπίστευται.

περὶ λευκακάνθης. κεφ. υκζ΄. c. 87

Οἱ δὲ πολυγόνατον, οἱ δὲ φύλλον, οἱ δὲ ἰσχιάδα καλοῦσι. ῥωμαῖοι γινακάρδους. θοῦσκοι σπίνα ἄλβα.

περὶ ἠρυγγίου. κεφ. υκθ΄. c. 87

Οἱ δὲ, ἠρύγγην, οἱ δὲ ἐρυνῆεις, οἱ δὲ καρύον, οἱ δὲ γοργόνιον, οἱ δὲ ἑρμίον. οἱ δὲ ὀρείγανον, χλούνιον. οἱ δὲ μυράκανθον. οἱ δὲ μῶλυ. αἰγύπτιοι κρόβυσσος. προφῆται σίσερτος, ῥωμαῖοι καπιτουλουμ μάρδους. οἱ δὲ καρτεραί, δάκοι σικουπνοὲξ, ἱσπανοὶ κιοτουκαπιτά. ἄφροι χερδάν. οἱ δὲ ὀρείαν χλόην. οἱ δὲ χιδά.

περὶ ἀλόης. κεφ. υλ΄. c. 88

Οἱ δὲ, ἀμφίβιον. οἱ δὲ ἠρύσιον. οἱ δὲ, ἑρμίνον. οἱ δὲ, φραγόκερως. ῥωμαῖοι ἀλόαμ. παρὰ βαρβάροις ἀλοέ.

περὶ ἀψινθίου. κεφ. υλα΄. c. 88

Αἰγύπτιοι σόμι. ῥωμαῖοι ἀψίνθιουμ ῥούστικουμ.

περὶ ἀψινθίου θαλασσίου. κεφ. υλβ΄. c. 89

Ἀψίνθιον θαλάσσιον. οἱ δὲ, σανδονίκην καλοῦσιν. οἱ δὲ, σέριφον. ῥωμαῖοι σανδόνικουμ.

περὶ ἀβροτόνου. κεφ. υλδ΄. c. 89

Οἱ δὲ, ἀβρούτονον. οἱ δὲ, ἀψίνθιον. οἱ δὲ, ἡράκλειον. οἱ δὲ, χολοποιόν. οἱ δὲ, θηλυφθόριον. οἱ δὲ, ἀψινθιόμηνον. οἱ δὲ, περικάμπυλον, προφῆται νεῦρα φοίνικος. οἱ δὲ κωναγχίτην. ῥωμαῖοι ἀψίνθιουμ πόντικουμ. τινὲς δὲ αὐτὸ θηλύθαμνον. οἱ

δὲ, γλυκυὼ ἀγκῶνα καλοῦσιν.

Περὶ ὑσσώπου. ΚΕΦ. υλέ. c. 90

Ῥ ωμαῖοι ὑσσώπουμ. οἱ δὲ, λάτορ. οἱ δὲ, κασσίαλα. αἰγύπτιοι πεσαλέμ.

Περὶ στοιχάδος. ΚΕΦ. υλς΄. c. 90

Ο ἱ δὲ, συγκλίοπα. οἱ δὲ, ἀλκιβιάδης. οἱ δὲ παγκράτιον. οἱ δὲ, στυφωνία. αἰγύπτιοι σουφλώ. προφῆται ὀφθαλμὸς πύθωνος. ῥωμαῖοι σκιολεβίνα. ἐκφράττει καὶ λεπτύνει καὶ ῥίπτει καὶ ῥωννύει τὰ σπλάγχνα πάντα. καὶ ὅλην τοῦ ζώου τὴν ἕξιν.

Περὶ γλήχωνος. ΚΕΦ. υμά. c. 91

Ο ἱ δὲ βλῆχρον. οἱ δὲ ἀρσένικανθον ῥωμαῖοι πολέϊουμ. ἄφροι ἀπολέϊουμ. γάλλοι ἄλβολον. οἱ δὲ, γαλίσοψις.

Περὶ δικτάμου. ΚΕΦ. υμβ΄. c. 91

Ἔ μβακτρον. οἱ δὲ βελουάκος. οἱ δὲ, ἀρτεμεδήϊον. οἱ μὲν, κρητική. οἱ δὲ, ἐφήμερον. οἱ δὲ, ἐλδίαν. οἱ δὲ, βελοτόκος. οἱ δὲ, δορκίδιον. οἱ δὲ, ἐλβούνιον. ῥωμαῖοι οὐστιλάγω ῥούστικα.

Περὶ ἐλελισφάκου. ΚΕΦ. υμέ. c. 91

Ο ἱ δὲ, κίοσμιν. οἱ δὲ, φάγνον. αἰγύπτιοι βήκιον. ῥωμαῖοι ἀχρουσί. οἱ δὲ, κόσαλον. οἱ δὲ, σάλβια.

Περὶ ἡδυόσμου ἡμέρου. ΚΕΦ. υμς΄. c. 92

Ἥ μερος. Ῥωμαῖοι μέντα. οἱ δὲ, νέπεταμ. αἰγύπτιοι τίς. οἱ δὲ φερθερουμερθερου μονθού. οἱ δὲ, περξώ. οἱ δὲ, μακηθό.

Περὶ ἡδυόσμου ἀγρίου. ΚΕΦ. υμζ΄. c. 92

Ὃ ῥωμαῖοι μεντάστρουμ καλοῦσι.

Περὶ θύμου. ΚΕΦ. υμθ΄. c. 92

Ο ἱ δὲ θύμος λευκός. οἱ δὲ κεφαλωτός. οἱ δὲ, ἐπιθυμίς. οἱ δὲ, θύρσιον. ῥωμαῖοι θούμουμ. αἰγύπτιοι στεφανή. δακοὶ μόζουλα.

Περὶ ἑρπύλλου. ΚΕΦ. υνά. c. 93

Ο ἱ δὲ, ζυγὶς ἀγρία. οἱ δὲ, πόλιον, αἰγύπτιοι μερσόπυος. ῥωμαῖοι σερπύλλουμ. οἱ δὲ, κερηλατικούμ.

Περὶ σαμψύχου. ΚΕΦ. υνβ΄. c. 93

Ο ἱ μὲν, σίφυλλον. οἱ δὲ, ἀμάρακον. οἱ δὲ, ἀγαθίδον. οἱ δὲ, κνήκιον. οἱ δὲ, ἄγρυπνον. πυθαγόρας θραμβής, αἰγύπτιοι σοφό. ἀρμέ-

νιοι μύουρον. προφῆται ὄνος ἴχρεως. οἱ δὲ, ἡμίγονος ἴσιως. ῥωμαῖοι μαιζουραίνα. ὁμοίως καὶ πρὸς οἰδήματα.

περὶ Μαρόυ. κεφ. υνδ΄. c. 93

Οἱ δὲ, ὀριγανίδα καλοῦσιν.

περὶ Ἀκίνου. κεφ. υνε΄. c. 93

Οἱ δὲ, ἄγριον βασιλικόν. ῥωμαῖοι ὠκιμάστρουμ.

περὶ Πηγάνου. κεφ. υνϛ΄. c. 94

Πήγανον ὀρεινόν. οἱ δὲ, ῥυτὴν ὀρεινήν. ῥωμαῖοι ῥοῦτα μοντάνα. πήγανον κηπευτόν. ῥωμαῖοι ῥοῦτα ὁρτένσις. αἰγύπτιοι ἐπνουβού. σύροι ἀρμαλᾶ. οἱ δὲ, βησασά. ἄφροι χουρμᾶ.

περὶ πηγάνου ἀγρίου. κεφ. υνη΄. c. 94

Πήγανον ἄγριον. οἱ δὲ, ὑπερικόν. οἱ δὲ ἀνδρόσαιμον. οἱ δὲ, κόρον. οἱ δὲ, χαμαιπίτυν. ῥωμαῖοι ἐλβράλις. οἱ δὲ, σεντουνάλις. ἄφροι χούρμα σεμμακέλ. διὰ δὲ τὸ τὴν περὶ τὸ σπέρμα ὀσμὴν ἐοικέναι πιτυίνῃ ῥητίνῃ, ὠνόμασται χαμαιπίτυς. φύλλα ἔχει πηγάνῳ παραπλήσια. θαμνίον φρυγανοειδές. ὑπέρυθρον. ἄνθος ἔχον μήλινον. ὃ διατριβὲν ἐν τοῖς δακτύλοις αἱματώδη τὸν χυλὸν ἐκκρίνει. ὅθεν καὶ ἀνδρόσαιμον ἐκλήθη. κλωνάρια δὲ ὑπόδασεα. πρόμηκη ἐν τῷ περικαφερεῖ ὅμοιον κριθῇ. ἐν ᾧ σπέρμα μέλαν. ῥητίνης ὄζον. φύεται ἐν ἐργασίμοις καὶ τραχέσι χωρίοις. Δύναμιν δὲ ἔχει διουρητικήν. καὶ ἐμμήνων ἀγωγὸν προστιθέμενον. τεταρταίου ἀπαλλακτικὴν μετ᾽ οἴνου πινόμενον. τὰ δὲ φύλλα σὺν τῷ σπέρματι καταπλαττόμενα, κατακαύματα ἰῶνται. θεραπεύει δὲ καὶ ἰσχιάδας ἐφ᾽ ἡμέρας τεσσαράκοντα πινόμενον ἐν ἄλλῳ καὶ ταῦτα.

περὶ Μώλεως. κεφ. υνθ΄. c. 95

Οἱ δὲ, λευκόϊον ἄγριον καλοῦσι.

περὶ πάνακος ἀσκληπιοῦ. κεφ. υξα΄. c. 95

Λεπτή.

περὶ λυγυστικοῦ. κεφ. υξγ΄. c. 96

Οἱ δὲ, πανάκειαν καλοῦσιν. οἱ δὲ, πάνακες.

περὶ σταφυλίνου. κεφ. υξδ΄. c. 96

Οἱ δὲ, κερασκόμην. ῥωμαῖοι καρόταμ. οἱ δὲ, φασινάκα ῥούστικα. αἰγύπτιοι βαβιβυρού. ἄφροι σιχάμ.

περὶ σεσέλεως μασσαλεωτικοῦ. κεφ. υξε. c. 96

Οἱ δὲ, σφάγνον.

περὶ σεσέλεως αἰθιοπικοῦ. κεφ. υξς. c. 97

Οἱ αἰγύπτιοι κύονον φείκλω καλοῦσι,

περὶ τορδύλου. κεφ. υξη. c. 97.

Οἱ δὲ κόρδυλον. ἐν ἄλλῳ. ἔχει δὲ κλωνία πολλὰ πρασινίζοντα, μηλίζοντα. πορφυρίζοντα. καὶ ἐπ' ἄκρῳ ὅμοια στρογγυλοειδῆ. ἔχοντα ἔσωθεν ὡς σπέρματα τὰ ἄνθη.

περὶ ἀνίσου. κεφ. υο. c. 97.

Οἱ δὲ σίον. ῥωμαῖοι ἄνισουμ.

περὶ ἀνήθου. κεφ. υοβ. c. 97

Ἄνηθον τὸ ἐσθιόμενον. οἱ δὲ, πόλγιδος. οἱ δὲ, ἀνίκητον. προφῆται γόνος κυνοκεφάλου. ὁμοίως τρίχες κυνοκεφάλου. οἱ δὲ, γόνος ἑρμοῦ. αἰγύπτιοι ἀραχθοῦ. ῥωμαῖοι ἄνηθουμ. ἄφροι σικκίρια. δάκοι πόλπουμ.

περὶ κυμίνου ἀγρίου. κεφ. υοδ. c. 98

Ῥωμαῖοι κύμινουμ ἀγρέστεμ. οἱ δὲ κύμινουμ σιλβάτικουμ.

περὶ ἄμμιος. κεφ. υοε. c. 98

Ῥωμαῖοι ἄμμιουμ ἀλεξανδρίνουμ. ἔνιοι καὶ τοῦτο αἰθιοπικόν. οἱ δὲ, βασιλικὸν κύμινον καλοῦσιν.

περὶ κορίου. κεφ. υος c. 98.

Αἰγύπτιοι ὄχιον. ἄφροι γοίδ.

περὶ ἱερακίου τοῦ μεγάλου. κεφ. υοζ. c. 98

Οἱ δὲ, σογχίτην. ῥωμαῖοι λαμπούκα. ἄφροι σιθιλέας.

περὶ ἱερακίου τοῦ μικροῦ. κεφ. υοη. c. 98

Οἱ δὲ καὶ τοῦτο σογχίτην καλοῦσιν. οἱ δὲ, ἄτιμον ἄγριον. ῥωμαῖοι ἴντιβουμ ἀγρέστεμ. σιθιλέβεδε.

περὶ ἐλαιοσελίνου. κεφ. υπ. c. 99

Οἱ μὲν, πεδινόν. οἱ μὲν, ὑδροσέλινον ἄγριον. ῥωμαῖοι ἄπιουμ ῥούστικουμ.

περὶ ὀρεοσελίνου. κεφ. υπα. c. 99

Οἱ δὲ, πετροσέλινον ἄγριον, ῥωμαῖοι ἄπιουμ. αἰγύπτιοι ἀνώνιμ.

περὶ ἱπποσελίνου. κεφ. υπγ. c. 99

Ῥωμαῖοι δὲ ὄλους ἄτρουμ.

περὶ ἐλαφοβόσκου. κεφ. υπε. c. 100

οἱ δὲ, ἐλαφικόν. οἱ δὲ, νέφελον. οἱ δὲ, ὀφθαλμίον. οἱ δὲ, ὀφιοκτόνον. οἱ δὲ, ὀρόπυξη. οἱ δὲ, λύμη. ῥωμαῖοι κερδιοκέλλουμ. αἰγύπτιοι χημίς. ἄφροι ἀσκαουκιού.

περὶ ἱπποµαράθρου. κεφ. υπζʹ. c. 100

Οἱ δὲ, μαραθίς. οἱ δὲ, μάραθρον ἄγριον. αἰγύπτιοι σαμψώς. προφῆται θυμαρνόλιον. ῥωμαῖοι φαινικουλουμ ἐρατικουμ. οἱ δὲ, φαινικουλους. οἱ δὲ, κουίνους. οἱ δὲ, μιούμ. γάλλοι σιστραμεόρ.

περὶ δελφινίου. κεφ. υπθʹ. c. 100

Οἱ δὲ, διάχυσις. οἱ δὲ, διάχυτος. οἱ δὲ, παράλυσις. οἱ δὲ, κάμαρος. οἱ δὲ, ὑάκινθος. οἱ δὲ, δελφινίας. οἱ δὲ, νήειον. οἱ δὲ, νηρειάδειον. οἱ δὲ, σώσανδρον. οἱ δὲ, κρόνιον. ῥωμαῖοι βούκινος μίνορ.

περὶ πυρέθρου. κεφ. υϛαʹ. c 101

Οἱ δὲ, δορύκνιον. οἱ δὲ, πύρινον. οἱ δὲ, πύρωτον. οἱ δὲ, πύρωθρον. οἱ δὲ, ἀρνὸς πυρίτης. προφῆται πυρίτης. ῥωμαῖοι σαλίβαρις.

περὶ σφονδυλίου. κεφ. υϛεʹ. c. 102

Οἱ δὲ, ἀράχνη. οἱ δὲ, φαλάγγιον. οἱ δὲ, ἀστέριον. οἱ δὲ, νίσυρις. οἱ δὲ, σφονδυλίς. οἱ δὲ, χεῤῥόδανον. οἱ δὲ, οἰνάνθη. ῥωμαῖοι ἕρβα ῥουτινάλις. αἰγύπτιοι ἀψαφθρ. προφῆται ὄσιρις.

περὶ ναρθήκος. κεφ. υϛζʹ. c. 102

Ῥωμαῖοι φέρουλαμ.

περὶ πευκεδάνου. κεφ. υϛηʹ. c. 102

Οἱ δὲ, ἄγριον. οἱ δὲ, ἀγριόφυλλον. προφῆται ἀγαθὸς δαίμων. οἱ δὲ, πινασγελουμ. ῥωμαῖοι σαταίειαν.

περὶ μελανθίου. κεφ. υϛθʹ. c. 103

Οἱ δὲ, καὶ τὴν μήκωνα ἄγριον καλοῦσι μέλανα. ῥωμαῖοι παπάβερ νίγρουμ.

περὶ ἀμμωνιακοῦ. κεφ. φδʹ. c. 105

Γάλβανον ὀρεινόν. ὅθεν τὸ ἀμμωνιακὸν θυμίαμα. οἱ δὲ, ἀγάσυλλος. οἱ δὲ, κελόθεος. οἱ δὲ, ἡλίουσρος. ῥωμαῖοι γούττα.

περὶ ἀλύσσου. κεφ. φιαʹ. c. 106

Οἱ δὲ, ἀσπίδιον. οἱ δὲ, ἁπλόφυλλον. οἱ δὲ, ἀκκύσητον. οἱ δὲ, ἀδέσετον. μονόκαυλον.

περὶ ἀσκληπιάδος. κεφ. φιβ. c. 106

Οἱ δὲ κισσίον. οἱ δὲ κισσόφυλλον καλοῦσι.

Περὶ ἀσφακτυλίδος. Κεφ. φιγ´. c. 106

Οἱ δὲ, ἄμυρον. οἱ δὲ, κνῖκος ἀγρία. οἱ δὲ ἀσπίδιον. προφῆται ἄφεδρος. αἰγύπτιοι χηνώ. ῥωμαῖοι πρεσούπιουμ. οἱ δὲ φουβού-γρεστις. οἱ δὲ κλένουκα ῥούστικα. ἐν ἄλλοις δὲ τόποις πορφυ-ροῦν.

Περὶ πολυκνήμου. Κεφ. φιδ´ c. 106

Οἱ δὲ, κλινοπόδιον. οἱ δὲ πολυγόνατον. οἱ δὲ Διὸς ἠλακάτη. οἱ δὲ, ἐχιώνυμον, ῥωμαῖοι που παλογονθεία.

Περὶ κλινοποδίου. Κεφ. φιέ. c. 107

Οἱ δὲ, κλεώνικον. οἱ δὲ ὠκιμοειδές. οἱ δὲ, ζώπυρον καλοῦσι.

Περὶ λεοντοπετάλου. Κεφ. φις´. c. 107

Οἱ δὲ, λεοντοπόδιον. οἱ δὲ λευκόρον. οἱ δὲ λεόντιον. οἱ δὲ δωρείς. οἱ δὲ, δωρεικτορίς. οἱ δὲ, λυχνὶς ἀγρία. οἱ δὲ παρδάλη. οἱ δὲ, θορύβηθρον. οἱ δὲ, ῥαπήϊον. οἱ δὲ, μήκων κερατίτις. οἱ δὲ, ἀνεμώνη. ῥωμαῖοι παπάβελκλουμ. οἱ δὲ, σέμεν λεόνιουμ.

Περὶ πευκεΐου. Κεφ. φιζ. c. 107

Οἱ δὲ, πευκεῖδα.

Περὶ χαμαιδρύος. Κεφ. φιη. c. 107

Ῥωμαῖοι τριφάγο μίνωρ.

Περὶ λυχνίδος στεφανωματικῆς. Κεφ. φκ´. c. 107

Οἱ δὲ, ἀθάνατος. οἱ δὲ, ἀκυλώνιον. οἱ δὲ βαλλάριον. οἱ δὲ, γερανοπόδιον. οἱ δὲ, κορύμβιον. οἱ δὲ ταύρειον. οἱ δὲ σκῆπτρον. οἱ δὲ μαλοΐον. αἰγύπτιοι σιμεόν. προφῆται αἷμα ἀρκαθημάνης. ῥωμαῖοι γενικουλαρίς. οἱ δὲ βαλλαρία.

Περὶ λυχνίδος ἀγρίας. Κεφ. φκά. c 107

Οἱ δὲ, φαγόνατον. οἱ δὲ, ἀχύκιον. οἱ δὲ ἱερακοπόδιον. οἱ δὲ, λαμπάς. αἰγύπτιοι σιμοῦρα. προφῆται ἀρκαθημάνης ταῦρος. ῥωμαῖοι ἴντιβουμ ἀγρέστεμ. οἱ δὲ, λαπάτιου. καφασουίνα. οἱ δὲ, στέρδος.

Περὶ κρίνου. Κεφ. φκβ´. c. 107

Οἱ δὲ, κριναίνθεμον. οἱ δὲ, καλλείειον. προφῆται αἷμα ἄρεως. ὀαθαΐνης αὖρα κροκοδείλου. αἰγύπτιοι συμφαιφὼ. οἱ δὲ, γάλλος. ῥωμαῖοι λίνουμ. οἱ δὲ ῥόσα ἰκώνις. σύροι σεσά. ἄφροι ἀβιβλαβον.

περὶ

Περὶ βαλλωτῆς. κεφ. φκγ΄. c. 108

Η' μέλαν, οἱ δὲ, νοφθαν. οἱ δὲ νοτιανοσκέμιν. οἱ δὲ νόσπρασον. οἱ δὲ νωθερᾶς. οἱ δὲ, νοχελίς. οἱ δὲ νωστελίς. οἱ δὲ νῶφρυς. οἱ δὲ γνώθουεις. οἱ δὲ γνωτόρα. ῥωμαῖοι ἄπιουμ. οἱ δὲ μέδεταμ. οἱ δὲ οὐλκόραιεια. οἱ δὲ μαρούβιουμ. οἱ δὲ κανθουεινουμ. αἰγύπτιοι ἄσφος. οἱ δὲ ἔσκε. προφῆται αἷμα ἰσίωνος.

Περὶ μελισσοφύλλου. κεφ. φκδ΄. c. 108

Οἱ δὲ μελίφυλλον. οἱ δὲ ἐρυθρά. οἱ δὲ τημελῆ. ῥωμαῖοι ὠτιωστροῦ. οἱ δὲ, κιτράγω. γάλλοι μέρισει μόειον. ὠνόμασται δὲ οὕτω

Περὶ πρασίου. κεφ. φκέ. c. 108

Οἱ δὲ, εὐπατώειον. οἱ δὲ φυλλόφαρες. οἱ δὲ τειπέδιλον. οἱ δὲ καμηλοπόδιον. οἱ δὲ φιλόφαρος. αἰγύπτιοι ἀσδρόπη. προφῆται αἷμα ταύρου. οἱ δὲ ἄφεσδος γόνος ὥρου. ῥωμαῖοι μαρούβιουμ. οἱ δὲ λαβεώνια. ἄφροι ἀτιδρβορζια.

Περὶ φυλλίτιδος. κεφ. φκζ΄. c. 109

Οἱ δὲ, φυλλίς. οἱ δὲ ἄκαυλον. οἱ δὲ λάπαθον ἄγριον καλοῦσι.

Περὶ τριφύλλου. κεφ. φκθ΄. c. 109

Ρ' ωμαῖοι τριφόλιουμ. οἱ δὲ τριφόλιουμ ἀκούτουμ. ὀδοράτουμ.

Περὶ πολίου ὀρεινοῦ. κεφ. φλ΄. c. 109

Τ ὸ ὀρεινόν. οἱ δὲ πεύθειον. οἱ φευξασπίδιον. οἱ δὲ ἀχαμενίς. οἱ δὲ ἐβενίτις. οἱ δὲ μέλοσμον. οἱ δὲ βέλιον. οἱ δὲ λεοντόχαρον.

Περὶ σκορδίου κεφ. φλά. c. 109

Οἱ δὲ σκόρβιον. οἱ δὲ πολυείτις. οἱ δὲ δύοσμον. οἱ δὲ καλαμίνθη ἀγρία. οἱ δὲ χαμαίδρυν. οἱ δὲ μιθειδάνιος. προφῆται αἷμα πόδδτος. αἰγύπτιοι ἀφῶ. ῥωμαῖοι φειξάτω παλούστρις.

Περὶ βηχίου. κεφ. φλβ΄. c. 110

Οἱ δὲ, ἐρίχιον οἱ δὲ πετείνη. οἱ δὲ πήγανον. οἱ δὲ πίθιον. οἱ δὲ, παγόνατον. οἱ δὲ χαμαιλεύχη. οἱ δὲ πρόχιτον. οἱ δὲ ἀρκόφυτον. οἱ δὲ χαμαίγερον. αἰγύπτιοι σαρθά. ῥωμαῖοι του

σιλλάγω. οἱ δὲ φαρφάριαμ. οἱ δὲ πουσολάγω. βέσσοι ἀσᾶ.

περὶ ἀρτεμισίας πολυκλώνου. ΚΕΦ. φλγ΄. C. 110

Π ολύκλωνος. οἱ δὲ, μονόκλωνος. οἱ δ᾽ τοξητησία. οἱ δὲ ἐφεσία.
οἱ δ᾽ ἀνακτίελος. οἱ δὲ σώζουσα, οἱ δὲ λεία. οἱ δὲ λυκόφευξ.
προφῆται αἷμα ἀνθρώπου. οἱ δὲ χρυσάνθεμον. ῥωμαῖοι οὐ
λεντία. οἱ δὲ σερπίλλουμ. οἱ δὲ ἕρβα ῥέγια. οἱ δ᾽ ῥάπιουμ. οἱ
δ᾽, περταινάγεται. οἱ δ᾽ ἀρτεμίσιαμ. γάλλα πονέμ. δάκοι ζουόστη.

περὶ ἀμβροσίας. ΚΕΦ. φλε΄. C. 110

Ρ ωμαῖοι κάπρουμ σιλβάτικουμ. οἱ δ᾽ ἄπιουμ ῥούστικουμ. αἰ
γύπτιοι μερσεώ.

περὶ γερανίου. ΚΕΦ. φλζ΄. C. 111

Ο ἱ δὲ, πελωνιτίς. οἱ δ᾽ τρίκα. οἱ δ᾽ γερανογέρων. ῥωμαῖοι οὐχι
νάστρουμ. ἄφροι ἰέσκε.

περὶ γερανίου ἑτέρου. ΚΕΦ. φλη΄. C. 111

Ο ἱ δὲ, ὀξύφυλλον. οἱ δὲ μερόφυξ. οἱ δὲ μυῤῥίς. οἱ δ᾽ καρδάμω
μον. οἱ δ᾽ ὀρίγανον. προφῆται ἱεροβρύγκας. ῥωμαῖοι πουλ
μενία. οἱ δ᾽ κικοτεία. οἱ δὲ γρουΐνα. ἄφροι.

περὶ γναφαλίου. ΚΕΦ. φλη΄. C. 111

Οἱ δὲ, ἱρές. οἱ δὲ ἀμπέτοκος. οἱ δ᾽ ἀνάξητον. οἱ δὲ ἀναφαλίς. αἰ
γύπτιοι σεμεών. γάλλοι γελασονέμ. ῥωμαῖοι κέντουλουμ. οἱ δ᾽
τουκούλαρις. οἱ δὲ ἀλβίνους.

περὶ τύφης. ΚΕΦ. φλθ΄. C. 111

Α δηλόν. περὶ οἰνάνθης. ΚΕΦ. φμα΄. C. 111

Ο ἱ δὲ, κεράσκομιον οἱ δὲ, λευκάνθον καλοῦσι.

περὶ κονύζης μεγάλης. C. 111

Κ όνυζα μεγάλη. οἱ δὲ, κνωζεματῖτις. οἱ δὲ δανάϊς. οἱ δὲ τανά
χιον. οἱ δὲ φύκος. οἱ δὲ ἰσχύς. οἱ δὲ δείνοσμος. προφῆται βρε
φοκτόνος. οἱ δὲ ἀνουβίας. οἱ δὲ ἡδεμίας. αἰγύπτιοι κέτι. ῥω
μαῖοι ἴντιβουμ. οἱ δὲ μιλιτάρις. μένα. οἱ δὲ δελλιάριον. οἱ δ᾽,
φεβροφύγα. οἱ δ᾽ φραγμόσα. οἱ δὲ μουστροί. οἱ δ᾽ πισσάν.

περὶ κονύζης ἑτέρας. ΚΕΦ. φμβ΄. C. 111

Κόνυζα ἑτέρα. οἱ δὲ, κόνυζα μικρά. οἱ δὲ πάνιος. οἱ δὲ λιβανωτίς. προφῆται κρόνος.

Περὶ ἡμεροκαλλίδος. κεφ. φμγ΄. c. 111

Οἱ δὲ, ἡμεροκατάλακτον. οἱ δὲ κρίνον ἄγριον. οἱ δὲ κρινάνθεμον. οἱ δὲ πορφυρανθές. οἱ δὲ βολβὸς ὁ αἱματικός. οἱ δὲ ἀντικάνθαρον. αἰγύπτιοι ἰοκροί. ῥωμαῖοι βούλβουμ. οἱ δὲ, ἔλιουμ ἀγρέστεμ. οἱ δὲ ἔλιουμ μαρίνουμ. ἄφροι ἀβίβλαβον.

Περὶ λευκοΐου. κεφ. φμδ΄. c. 112

Οἱ δὲ, βασίλειον. ῥωμαῖοι ὅπουλα ἄλβα. οἱ δὲ, βίολα ἄλβα. οἱ δὲ αὐγουστία. οἱ δὲ, βίολαμ ἀλβονάλεμ. οἱ δὲ πασσαείνα. οἱ δὲ πολύφουρα.

Περὶ σατυρείου. κεφ. φμθ΄. c. 113

Καὶ εἰ βούλει γυναικὶ συνουσιάσαι. χρῆσαι.

Περὶ σατυρείου ἐρυθρονίου. κεφ. φν. c. 113

Οἱ δὲ, μήλιον τὸ ἐν ὕδασιν. οἱ δὲ ἐντατικόν. οἱ δὲ πριαπικόν. οἱ δὲ σατυρείσκος. οἱ δὲ ὄρχις σατύρου. ῥωμαῖοι μολορτίκουλουμ βενέρεις.

Περὶ ὁρμίνου ἡμέρου. κεφ. φνα΄. c. 113

Ῥωμαῖοι γεμινάλις. δακοὶ ὅρμια.

Περὶ νυμφαίας ἄλλης. κεφ. φνε΄. c. 114

Νυμφαία ἄλλη. ἣ δὲ νυμφῶνα καλοῦσι.

Περὶ ἀνδροσάκους. κεφ. φνς΄. c. 114

Οἱ δὲ, πικράδα. οἱ δὲ, λευκήν. οἱ δὲ θαλασσίαν καλοῦσι.

Περὶ ἀσπλήνου. κεφ. φνζ΄. c. 114

Οἱ δὲ, λογχῖτις. οἱ δὲ ἀτούελος. οἱ δὲ φρυγία. οἱ δὲ φρυγῖτις. οἱ δὲ φιλαφροδίτης. προφῆται αἷμα γαλῆς.

Περὶ ἀνθυλλίδος. κεφ. φνθ. c. 114

Οἱ δὲ, ἄνθυλλον. οἱ δὲ ἀνθεμίδα. οἱ δὲ ἐράνθεμις. οἱ δὲ λευκάνθεμον. οἱ δὲ σωρανθίς. οἱ δὲ ἄνθος πεδινόν. ῥωμαῖοι σωλάστρουμ καλοῦσι. διττή.

Περὶ ἀνθέμιδος. κεφ. φξ΄. c. 114

Ῥωμαῖοι μάλιουμ. ἄφροι ἀστηρτιφή. ἕτεροι δὲ χρυσοκόμην.

Περὶ παρθενίου. κεφ. φξα΄. c. 115

Οἱ δὲ, ἀνθεμίς. οἱ δὲ χαμαίμηλον. οἱ δὲ χρυσόκαλλις. οἱ δὲ με

λάβαθρον. οἱ δὲ αἴθος πεδινόν. ῥωμαῖοι στόλις σέκουλουμ. οἱ δὲ μιλλεφόλιουμ. θοῦσκοι καυτάν. ἄφροι θαμακθ΄.

Περὶ βουφθάλμου. κεφ. φξβ΄. C. 115

Οἱ δὲ, βαλσαμίνη. προφῆται αἱμόῤῥα. οἱ δὲ γόνος ταύρου. οἱ δὲ γόνος ἄφθιτος. οἱ δὲ μνησίθεος. ῥωμαῖοι κάππα κορανία. ἄφροι ναράτ.

Περὶ παιονίας. κεφ. φξγ΄. C. 115

Παιονία ἄῤῥην. οἱ δὲ ὀροβέλιον. οἱ δὲ, ὀροβάξ. οἱ δὲ, αἱματωγόν. οἱ δὲ παισέδην. οἱ δὲ μονογένειον. οἱ δὲ μιώιον. οἱ δὲ παιώνιον. οἱ δὲ πανθηκέρατος. οἱ δὲ, ἀγλαωφῶτιδα. οἱ δὲ θεοδόνιον. οἱ δὲ σελήνιον. προφῆται σεληνόγονον. οἱ δὲ φθίσι. ῥωμαῖοι κάστα. λεπτή. ξηρὰ. φύεται δὲ ἐν ὑψηλοτάτοις ὄρεσι καὶ ἀκρωτηρίοις.

Περὶ λιθοσπέρμου. κεφ. φξδ΄. C. 115

Οἱ δὲ, λεόντιον. οἱ δὲ λίθος λεοντική. οἱ δὲ γορτώνιον. οἱ δὲ ταντάλιτις. οἱ δὲ διόσπορον. ῥωμαῖοι κολοῦμβαμ. δα καὶ γοναλήτα.

Περὶ ἐρυθροδάνου. κεφ. φξϛ΄. C. 116

Οἱ δὲ, ἐρυθρόδανος ῥίζα. οἱ δὲ σφάκανος. οἱ δὲ κιννάβαρις. ῥωμαῖοι ῥουβία πασσίβα. θοῦσκοι λάμπα μίνωρ. αἰγύπτιοι σωφοβί. καὶ ὅρα τῶν κειμένων τὴν διαφοράν.

Περὶ λογχίτιδος. κεφ. φξζ΄. C. 116

Οἱ δὲ, κέστρον, ἢ μηδούσα. ῥωμαῖοι βενδρέα. οἱ δὲ λαγκέολα πλατυκάρπω.

Περὶ ἑτέρας λογχίτιδος. κεφ. φξη΄. C. 116

Ῥωμαῖοι λογγίνα. οἱ δὲ καλαβεῖνα.

Περὶ ἀλθαίας. κεφ. φξθ΄. C. 116

Οἱ δὲ, ἀλθίοκον.

Περὶ καννάβεως. κεφ. φοα΄. C. 117

Οἱ δὲ, ὑδράστινα, ῥωμαῖοι τερμινάλις. οἱ δὲ κάνναβις.

Περὶ καννάβεως ἡμέρου. κεφ. φοβ΄. C. 117

Ἥμερος. οἱ δὲ, καννάβιον. οἱ δὲ σχοινοστρόφον. οἱ δὲ ἀστέριον. ῥωμαῖοι καννάβιμ.

Περὶ ἀναγύρεος. κεφ. φογ΄. c. 117

Οἱ δ᾽, ἀγνάκοπον ἢ καὶ ἀποστρόφυλος.

Περὶ ὀνοβρυχίδος. κεφ. φος΄. c. 117

Οἱ δὲ ὀνοβρόχειλος. οἱ δὲ ἐχασμένη. οἱ δὲ ὑποβρικόν. οἱ δὲ κόειον. οἱ δὲ χαμαιπίτυν. ῥωμαῖοι ὀπαίκα. οἱ δὲ βειχιλατά. οἱ δὲ λόπα. οἱ δὲ ἰοκιναλέμ. δακοὶ ἀνιαστεξέ. τὰ μὲν

Περὶ ἀσκύρου. κεφ. φοη΄. c. 118

Τοῖς φύλλοις λεπτοῖς.

Περὶ κόρεως. κεφ. φπ΄. c. 118

Ἡ δὲ ῥίζα αὐτοῦ σὺν οἴνῳ ἑψηθεῖσα καλῶς καὶ ποθεῖσα, παρέτοις βοηθεῖν πεπίστευται. δεῖ δὲ τὸν πάσχοντα ἐν τῷ πίνειν περισκέπεσθαι καλῶς, ἱδροῖ γὰρ ὅλον τὸ σῶμα καὶ τὴν εὐκινησίαν ἐκ τούτου λαμβάνειν.

Περὶ χαμαιπίτυος. κεφ. φπα΄. c. 118

Οἱ δὲ πιτυσόρυσιν. οἱ δὲ ὀρείζηλον. οἱ δὲ βελονίαν ἀγρίαν. προφῆται αἷμα ἀθηνᾶς. ῥωμαῖοι κυπριποῦμ. δακοὶ δοχελᾶ.

Περὶ βρεττανικῆς. κεφ. φπδ΄. c. 119

Ἐν ἄλλῳ καὶ ταῦτα. ζητητέον καί τοι ἐν διοσκορίδῃ.

Περὶ βεττονικῆς. κεφ. c. 119

Βεττονικὴ γεννᾶται ἐν χορτοκοπείοις καὶ ὀρεινοῖς τόποις. καὶ καθαροῖς καὶ ὑμβροις περὶ τὰ γεννήματα. καὶ ψυχὰς ἀνθρώπων καὶ σώματα φυλάττει. νυκτερινάς τε ὁδοιπορείας καὶ τόπους ἀβλαβεῖς. καὶ ὕπνους χαλεποὺς ἀντενεργεῖ. καὶ εἰς πᾶσαν ἴασιν ἐστὶν εὐλογημένη. ἔχει δὲ τὴν μὲν ῥίζαν ὅλην ἐρυθρὰν καὶ εὐώδη. τὰ δὲ φύλλα πράσινα. καὶ τὸ μέσον τῶν φύλλων φοινικοῦν. καὶ εἰς τὸν ὀρθοκάλαμον τετρώνια. καὶ ἐπ᾽ αὐτῶν ἄνθη πορφυρίζοντα. ἡ δὲ δύναμις αὐτῆς ἐστιν αὕτη. λειωθεῖσα γὰρ νεαρὰ καὶ ἐπιτεθεῖσα εἰς τεθραυσμένην κεφαλὴν κατὰ τῆς πληγῆς, ἀνώδυνον ποιεῖ. καὶ τὰ τραύματα κολλᾷ. καὶ τὰ τεθλασμένα ὀστᾶ ἐκβάλλει. καὶ τοῦτο ποιεῖ καθ᾽ ἑκάστην ἕως θεραπεύσῃ. ἀφεψηθεῖσα δὲ μετὰ ὕδατος, κεφαλαλγίαν καταντλουμένη, καὶ μετὰ ἀσφάλτου πέει χριομένη, τοῖς κροτάφοις ἰᾶται. ὑποθυμιωμένης αὐ

τοῖς καὶ τῆς ῥίζης.

Περὶ πολυγόνου ἄῤῥενος. Κεφ. φπϛʹ. c. 119

Οἱ δὲ, πολυγόνατον. οἱ δὲ, καυοχάλλην. οἱ δὲ, ἡράκλειαν. οἱ δὲ, ἄσφαλτον. οἱ δὲ, χιλιόφυλλον. οἱ δὲ, κλῆμα. οἱ δὲ, πολύκαρπον. οἱ δὲ, καρκίνηθρον. οἱ δὲ, πευθαλίδα. οἱ δὲ, μυρτοπέταλον. οἱ δὲ, κνωπόδιον. οἱ δὲ, ζαριθέα. οἱ δὲ, πηδάλιον. αἰγύπτιοι θεφίν. οἱ δὲ, στεμφίν. προφῆται γόνος ἥρωος. οἱ δὲ ὄνυξ μυός. ῥωμαῖοι σεμινάλις. οἱ δὲ, στοπίναγα. ἄφροι χουλούμ. καὶ μαλακώτερα.

Περὶ πολυγόνου θήλεως. Κεφ. φπζʹ. c. 120

Ῥωμαῖοι σεμινάλις.

Περὶ κλουματίδος. Κεφ. φπθʹ. c. 120

Οἱ δὲ, φιλεταίρειον.

Περὶ κληματίδος ἑτέρας. c. 120

Ἑτέρα κληματίς. οἱ δὲ, ἐπιγῆτις. αἰγύπτιοι φυλάκουον. ῥωμαῖοι ἀμβουξού. κλῆμα ἀνίησιν ὑπέρυθρον. λυγῶδες. φύλλον δριμὺ λίαν γευομένῳ καὶ ἑλκωτικόν. περιελίττεται δὲ τοῖς δένδρεσιν ὡς σμίλαξ. ταύτης ὁ καρπὸς λεῖος μεθ' ὕδατος ἢ ὑδρομέλιτος ποθεὶς, ἄγει κάτω φλέγμα καὶ χολήν. τὰ δὲ φύλλα καταπλασθέντα λέπρας ἀφίστησι. ταριχεύεται δὲ μετὰ τοῦ λεπιδίου εἰς βρῶσιν.

Περὶ συμφύτου ἄλλου. Κεφ. φϙβʹ. c. 121

Ῥωμαῖοι σολδάγινεμ. οἱ δὲ, σολδάγω. ἐν οἷς ἐμφερῆ πρὸς τὰ τοῦ πηγάνου. καὶ καρπὸν,

Περὶ ὀλεστίου. Κεφ. φϙγʹ. c. 121

Ὦ φελεῖν.

Περὶ στοιβῆς. Κεφ. φϙδʹ. c. 121

Οἱ δὲ πόβιον. ῥωμαῖοι στίπαμ. γνώειμος.

Περὶ κλυμένου. Κεφ. φϙεʹ. c. 121

Οἱ δὲ, καλυκάνθεμον. οἱ δὲ, περικλύμενον. οἱ δὲ, ἡλιοφυές. οἱ δὲ, ἡπατῖτις. οἱ δὲ, μίλαξ. οἱ δὲ, ἀναχολικόν. οἱ δὲ, δυτικόν. οἱ δὲ, μεργίνη. ῥωμαῖοι οὐόλουκρουμ. οἱ δὲ, οὐόλοκρουμ μαίους. αἰγύπτιοι ὀξυουί. κλύμενον. οἱ δὲ, κλυμένιον. ὃ καὶ ἄγονον καλοῦσι.

Περὶ περικλυμένου. Κεφ. φϙϛʹ. c. 121

Οἱ δὲ, αἰγίνη. οἱ δὲ, κλύμενον. οἱ δὲ, κάρπαθον. οἱ δὲ, πελήνι

ον. οἱ δὲ, ἐπαυτῖτις. οἱ δὲ, ἀξίνη μείζων. οἱ δὲ, κληματῖτις. οἱ δὲ, μυρσίνη. οἱ δὲ, καλυκάνθεμον. προφῆται πόλιον ἀφροδίτης. αἰγύπτιοι τοῦρκον. ῥωμαῖοι βόλουκρουμ μαιοῦς. ἄφροι λανάθ.

Περὶ τριβόλου. ΚΕΦ. φϟζ'. C. 121

Οἱ δὲ, βουκέφαλος. οἱ δὲ, ταυρόκερως. ῥωμαῖοι τρίβολουμ ἀκράτικουμ.

Περὶ σαρξιφάγου. C. 122

Σαρξίφαγον. οἱ δὲ, σαξίφραγγον. οἱ δὲ, ἔμπετρον. ῥωμαῖοι σαξιφράγγα. θάμνος ἐστὶ φρυγανώδης ἐν πέτραις καὶ τραχέσι τόποις φυόμενος ἐμφερής. Δύναμιν δὲ ἔχει ἑψηθεῖσα ἐν οἴνῳ καὶ πινομένη πυρέσσουσι βοηθεῖν. στραγγουρίᾳ τε καὶ λυγμῷ. λίθους τε τοὺς ἐν κύστει θρύπτειν καὶ οὖρα ἄγειν.

Περὶ λειμωνίου. ΚΕΦ. φϟη'. C. 122

Οἱ δὲ, ποταμογείτων. οἱ δὲ, λογχῖτις. οἱ δὲ ῥαπονονίου. μυσοὶ μενδρουτά. σύροι μεούδα. οἱ δὲ, λυκοσύμφυλλον. οἱ δὲ, ἐλλεβοροσήματα. οἱ δὲ, σκύλλιον. προφῆται λύκου καρδία. ῥωμαῖοι οὐιάρτου μνίγρουμ. οἱ δὲ, πιντίναβουμ τέῤῥαι. γάλλοι ἰουνβαρούμ. δάκοι δάκινα.

Περὶ λαγώποδος. ΚΕΦ. φϟθ'. C. 122

Οἱ δὲ, λαγωοῦ κύμινον καλοῦσι.

Περὶ μηδίου. ΚΕΦ. χ'. C. 122

Οἱ δὲ, μηδική. οἱ δὲ, τρίφυλλον. οἱ δὲ, κλημάτιον. οἱ δὲ ὀσμός. οἱ δὲ, τρίτωνος. οἱ δὲ, κυβέλλιον. οἱ δὲ, πολύφυλλον. ῥωμαῖοι τριφόλλιουμ ὀδοράτουμ. αἰγύπτιοι ἐπάφου. μήδιον.

Περὶ ἑτέρου μηδίου. ΚΕΦ. χα'. C. 122

Οἱ δὲ, ἐρινεός. οἱ δὲ, θρυάς. οἱ δὲ, πολύῤῥιζον. ῥωμαῖοι οὐινδίκτα.

Περὶ ξιφίου. ΚΕΦ. χβ'. C. 122

Οἱ δὲ, αἰάκχειον. οἱ δὲ, ἄριον. ῥωμαῖοι γαλδίολαμ. οἱ δὲ, γενιτάλεμ. ὠνόμασται ξιφίον.

Περὶ σπαργανίου. ΚΕΦ. χγ'. C. 112

Οἱ δὲ, ξιφίδιον. οἱ δὲ, βῶλον καλοῦσι.

Περὶ ξυρίδος. ΚΕΦ. χδ'. C. 122

Οἱ δέ, ἶριν ἀγρίαν. οἱ δέ, μακώς. ῥωμαῖοι γλαδίολουμ. οἱ δέ, ἴειμα γρέσεμ. δακοὶ ἄπρους.

Περὶ ἀγχούσης. κεφ. χέ. c. 123

Οἱ μὲν καπάγχουσαν. οἱ δέ, λιβυκὴν. οἱ δέ, ἀρχιβέλλιον. οἱ δέ, ἀλκιβιάδιον. οἱ δέ, ὀνόφυλλος. οἱ δέ, πορφυρεῖς. οἱ δέ, μύδουσα. οἱ δέ, σάλυξ. οἱ δέ, νωνεάν. ἄφροι βουινεσάθ. ἄγχουσα.

Περὶ ἐχίου. κεφ. χθ́. c. 123

Ῥωμαῖοι ἀλκιβίακουμ. ὑπέρυθρα. δασεία.

Περὶ ὠκυμοειδοῦς. κεφ. χί. c. 123

Οἱ δέ, καὶ ταύτην ἔχιον καλοῦσιν. οἱ δέ, σκορπίουρον. οἱ δέ, σπάργανον. οἱ δέ, ἀλθαίαν. οἱ δέ, ἀμαρανθίδα. οἱ δέ, προβατεῖαν. οἱ δέ, ἐλάφιον. οἱ δέ, αἵμιμον. οἱ δέ, πορφυρεΐδα. οἱ δέ, αὐγίον. οἱ δέ, νεμέσιον. οἱ δέ, ὑακινθόλον. οἱ δέ, θυρσίτιν. οἱ δέ, θερμοῦτιν. οἱ δέ, μισόπαθος. ῥωμαῖοι ὠκιμάστρουμ. καὶ οἶνου

Περὶ ὀρίνου. κεφ. χιά. c. 123

Οἱ δέ, ὠκυμοειδὲς. οἱ δέ, ὑδρηρόν. ῥωμαῖοι ὤκιμουμ. κυάθοις

Περὶ ἀγρώστεως. κεφ. χιβ́. c. 124

Οἱ δέ, αἰγικόν. οἱ δέ, ἀμαξῖτις. αἰγύπτιοι αἰουφί. ῥωμαῖοι γράμεν. οἱ δέ, ἀσυφύλιουμ. οἱ δέ, σεγουινάλεμ. οἱ δέ, οὐνίολαμ. ἱσπανοὶ ἀπαρεία. δακοὶ κοτίατα. ἄφροι ἰεβάλ.

Περὶ σιδηρίτιδος. κεφ. χιέ. c. 124

Γροφῆται γόνον. οἱ δέ, αἷμα τιτάνου. οἱ δὲ οὐρὰ σκορπίου. Πυθαγόρας πάρμηρον. ἀνδρέας ξανθοφανέα. ὀσθάνης βουφθαλμόν. αἰγύπτιοι σενδιονώρ. ῥωμαῖοι ὑπέρτεμνουμ. οἱ δὲ σολεάστρουμ. ἄφροι οὐδηδόνιν.

Περὶ ἀχιλλείου. κεφ. χιή. c. 124

Οἱ δέ, μυριόμορφον. οἱ δέ, χιλιόφυλλον. οἱ δέ, στρατιωτικόν. οἱ δέ, ἡράκλειον. ῥωμαῖοι σουπερκίλιουμ βενέρις. οἱ δέ, ἄκρουμ σιλβάτικουμ. οἱ δέ, μιλιτάρεμ. οἱ δέ, μιλλεφόλιουμ. ἄφροι ἀστὴρ χιλλός. καὶ πορφυρὰ

Περὶ βάτου. κεφ. χιθ́. c. 124

Οἱ δέ, κυνόσβατον. οἱ δέ, σελινοείτιον. οἱ δέ, ἀσκώφοφον. προφῆται αἷμα τιτάνου. οἱ δέ, αἷμα ἴβεως. ῥωμαῖοι σέντις. οἱ

δὲ, ῥούβουμ. οἱ δὲ, μόρα βατικανά. δακοὶ μαντεῖα. αἰγύπτιοι αἵμοος. οἱ δὲ, ἄμεθος.

Περὶ ἰδαίας βάτου. ΚΕΦ. χκ΄. C. 125

Εὑρίσκεται δὲ καὶ χωρὶς ἀκάνθης.

Περὶ ἐλξίνης. ΚΕΦ. χκα΄. C. 225

Ἐλξίνη. οἱ δὲ, ἐλεῖτιν. οἱ δὲ, κανοκορσαίαν. οἱ δὲ, ἀμελξίνην. οἱ δὲ εὐσίνην. οἱ δὲ, ἀμοργίνην. οἱ δὲ, σουκότιχος. οἱ δὲ, ψυχρύακος. οἱ δὲ, μελάμπελον. οἱ δὲ, κιττάμπελον. οἱ δὲ, κισσάμεθον. οἱ δὲ, ἀνατεταμένον. ῥωμαῖοι βουλουτουλαπάρου. αἰγύπτιοι ἄπαπ. οἱ δὲ, παρθένιον. οἱ δὲ, σιδηρεῖτιν. οἱ δὲ, ἡράκλειαν. οἱ δὲ, ἀγρίαν. οἱ δὲ, κλιβώδιον. οἱ δὲ, πολυώνυμον καλοῦσι, φύεται ἐν φραγμοῖς καὶ τοίχοις καὶ ἀμπελῶσι. καὶ σίτῳ. καυλία δὲ ἐστὶν ὑπέρυθρα φύλλα ὅμοια λινοζώστει δασέα. περὶ δὲ τοὺς καυλοὺς οἱονεὶ σπερμάτια τραχέα ἀντιλαμβανόμενα τῶν ἱματίων. Δύναμιν δὲ ἔχει τὰ φύλλα, ψυκτικὴν στυπτικήν. ὅθεν καταπλασσόμενα ἰᾶται ἐρυσιπέλατα. καὶ τὰ καύματα. κονδυλώματα. φύγεθλα ἀρχόμενα. καὶ πᾶσαν φλεγμονὴν καὶ οἰδήματα. ὁ δὲ χυλὸς αὐτῆς μιγεὶς ψιμμιθίῳ, ἐρυσιπέλατα καὶ ἕρπητας ὠφελεῖ καταχριόμενος. καὶ ποδάγρας σὺν κηρωτῇ κυπρίνῃ ἀναληφθεὶς ἢ τραγείῳ στέατι. ὠφελεῖ καὶ βήσσοντας χρονίως ὁ χυλὸς καταρροφούμενος ὅσον κύαθος καὶ παρισθμίοις φλεγμαίνουσιν ἀναγαργάρισμα καὶ διάχρισμα ὠφέλιμόν ἐστι. καὶ ὠταλγίαν σὺν ῥοδίνῳ ἐγχεόμενον ὠφελεῖ. ἐν ἄλλῳ.

Περὶ εὐπατωρίου. ΚΕΦ. χκγ΄. C. 125

Οἱ δὲ, ἡπατώριον. οἱ δὲ, ἡπατῖτις. ῥωμαῖοι ὄλου κρουμμαίους. καὶ ἡπατικούς

Περὶ πενταφύλλου. ΚΕΦ. χκδ΄. C. 125

Οἱ δὲ, πενταπετές. οἱ δὲ, πεντάτομον. οἱ δὲ, πενταδάκτυλον. οἱ δὲ, ψευδοσέλινον. οἱ δὲ, καλλιπέταλον. οἱ δὲ, ξυλόλωτον. οἱ δὲ, ξυλοπέταλον. οἱ δὲ, ἄσφαλτον. οἱ δὲ, πεντάκοινον. οἱ δὲ, θυμαλῖτις. αἰγύπτιοι ὀρθιτεβέωκη. οἱ δὲ, ἄνωζον. προφῆται ἴβεως ὄνυξ. οἱ δὲ, πτερὸν ἴβεως. οἱ δὲ, ἑρμοδάκτυλον. ῥωμαῖοι κινκεφόλιουμ. γάλλοι πεμπέδουλα. δακοὶ προπεδουλά ἀνὰ φύλλων λ΄.

Περὶ φοίνικος. ΚΕΦ. χκε΄. C. 126

Οἱ δὲ, φοινικόπτερον. οἱ δὲ, ἐρῦν στάχυος. οἱ δὲ, ὀθάλην. ῥωμαῖοι παλολουκουπίνουμ. αἰγύπτιοι ἄθνον.

Περὶ ῥοδίας ῥίζης. Κεφ. χκζ΄. c. 126

Οἱ δὲ, ῥοδίδα καλοῦσι.

Περὶ ἱππούριδος. Κεφ. χκη΄. c. 126

Οἱ δὲ, τελμάχιον. οἱ δὲ, ἀνάβασις. οἱ δὲ, χερέσπανον. οἱ δὲ, φαίσπαν. οἱ δὲ, ἱππαίλενδρον. οἱ δὲ, γίς. οἱ δὲ, σχοινιόστροφον. αἰγύπτιοι φορφά. προφῆται κρόνου βοφή. ῥωμαῖοι ἐκωάλις. οἱ δὲ, σάλιξ ἐκυνάλις. οἱ δὲ, ἀναβάσιον. οἱ δὲ, ἔφυδρον καλοῦσι.

Περὶ ἑτέρας ἱππούριδος. κεφ. χκθ΄. c. 126

Οἱ δὲ, ἐκύτιον. οἱ δὲ, χέσπαν. οἱ δὲ, γύνον. ῥωμαῖοι σάλιξ ἐκύνα. καυλός ἐστιν, ὀρθός. ἴσος. μείζων δὲ πήχεως. ὑπόκενος.

Περὶ ἄλλου φαγίου. Κεφ. χλβ΄. c. 127

Οἱ δὲ, ζάγος. οἱ δὲ, φαγήκορως. οἱ δὲ, σκορπίον. οἱ δὲ, γάργανον. ῥωμαῖοι κορνουλάκα. οἱ δὲ, βιτουνίσα. δακοὶ σαλία. αἰγύπτιοι σεβερ. ἄφροι ἀχθιοσίμ. φύεται δὲ ἐν ὀρεινοῖς καὶ κρημνώδεσι τόποις.

Περὶ σχίνου. κεφ. χλδ΄. c. 127

Οἱ δὲ, σχῖνος λεία. οἱ δὲ, ὀξύπτερνος. οἱ δὲ ὀφρῦς ἡλίου. ῥωμαῖοι ἰούνκουμ μαρίνουμ. οἱ δὲ ἰούνκουμ μανουάλεμ. ἄφροι χούδουα. τούτου διττὸν εἶδος.

Περὶ παρωνυχίας. κεφ. χλϛ΄. c. 127

Οἱ δὲ, ἀδόκητος. οἱ δὲ, νευράς. οἱ δὲ, φρύνιον. ῥωμαῖοι βρινάλις.

Περὶ χρυσοκόμης. κεφ. χλζ΄. c. 127

Οἱ δὲ, χρυσῖτις. οἱ δὲ χρυσάνθεμον. οἱ δὲ ἀμάραντον. οἱ δὲ, διὸς πώγων. ῥωμαῖοι ἰόβις βάρβα. ἄφροι δουβάθ. οἱ δὲ, βουρχουμάθ. θαμνίους.

Περὶ χρυσογόνου. κεφ. χλη΄. c. 127

Οἱ δὲ, χρυσόσπερμον. οἱ δὲ, δέσπιν. οἱ δὲ ὀρίγανον. οἱ δὲ, ἀρκόφθαλμον. ῥωμαῖοι ἀριλαρία.

Περὶ χρυσανθέμου. κεφ. χμ. c. 128

Οἱ δὲ, χαλκῖτιν. οἱ δὲ, χάλκανθον. οἱ δὲ χαλκάνθεμον. οἱ δὲ βούφθαλμον. ῥωμαῖοι ἄκανθαν. θοῦσκοι γαρούλεουμ. ἄ-

φοι χρυσῖτα.

περὶ περιστερεῶνος. κεφ. χμβ΄. c. 128

Ορθός. οἱ δέ, περιστέριον. οἱ δέ, ξυτώνιον. οἱ δὲ βούνιον. οἱ δὲ ἱερὰ βοτάνη, οἱ δὲ φιλτροδότης. αἰγύπτιοι πεμψεμπτέ. προφῆται ἥρας δάκρυον. οἱ δὲ αἷμα γαλῆς. οἱ δὲ αἷμα ἑρμοῦ. ῥωμαῖοι κρίστα γαλλινάκεα. οἱ δὲ φέρια. οἱ δέ, τερξαλίς. οἱ δὲ ἴξουπέρα. οἱ δὲ ἕρβα σαγγινάλις.

περὶ ἱερᾶς βοτάνης. κεφ. χμγ΄. c. 128

Περιστερεὼν ὕπτιος. οἱ δέ, ἱερὰ βοτάνη. οἱ δέ, κειλύιον. οἱ δέ, χαμαίλυκον. οἱ δέ, σιδηρῖτιν. οἱ δέ, κουρῖτιν. οἱ δέ, φερσεφόνιον. οἱ δέ, διὸς ἠλακάτην. οἱ δέ, δίχρωμον. οἱ δέ, κάλλησιν. οἱ δέ, ἱππάριον. οἱ δέ, δημητριάδα. αἰγύπτιοι πεμφθεμφθάμ. πυθαγόρας ἐρυσίσκηπτρον. ῥωμαῖοι κιγκινάλις.

περὶ ἀστραγάλου. κεφ. χμδ΄. c. 128

Οἱ δέ, χαμαισύκη. οἱ δὲ ὄνυξ. οἱ δέ, γατάλης. ῥωμαῖοι πίνουμ τείβιουμ. ὁμοίως φίκουμ τέρραι. οἱ δέ, γλανδουλαν. οἱ δέ, πιούμ. οἱ δέ, νωναριαμ. ἀστράγαλος.

περὶ ὑακίνθου. κεφ. χμε΄. c. 128

Οἱ δέ, ἐλωνιάς. οἱ δέ, πορφυρανθές. ῥωμαῖοι βάκκουμ. οἱ δέ, οὐλκίνουμ.

περὶ μήκωνος ῥοιάς. κεφ. χμς΄. c. 129

Οἱ δέ, ὀξύτονον. ῥωμαῖοι παπαβεράλις. αἰγύπτιοι ναντί. ἐν κει. θαῦς, ἢ εἶα,

περὶ μήκωνος ἡμέρου. κεφ. χμζ΄. c. 129

Οἱ δέ, χαμαισύκην. οἱ δέ, μήκων ῥοιάς. οἱ δέ, ὀξύτονον. ῥωμαῖοι παπάβερ. αἰγύπτιοι ναντί. ἡ μέν τις ἐστὶν ἥμερος παλαιᾶ

περὶ μήκωνος κερατίτιδος. κεφ. χμη΄. c. 130

Ρωμαῖοι φάβουλουμ. μαρίνουμ. ἄφροισι σιμάνθα. ἢ τραχεῖα ἐν ἄλλῳ. ἐν δὲ τῷ βρωθῆναι ἢ ποθῆναι ταύτην τὴν κεραῦτιν μήκωνα, ἐπιφέρονται ὅσα καὶ τῷ ὀπῷ τῆς μήκωνος συμπτώματα. καὶ τοῖς αὐτοῖς ὑποπίπτει βοηθήμασι. συνάγεται δὲ ὁ καρπὸς ἐν θέρει. ξηρὸς τὸ δὲ ἀφέψημα

τῆς ῥίζης. πίνεται μετὰ οἴνου. καὶ θεραπεύει δυσεντερίας.

περὶ ὑοσκυάμου. κεφ. χνα΄. c. 130

Οἱ δὲ, διοσκύαμος. οἱ δὲ, πυθώνιον. οἱ δὲ ἀδάμαντα. οἱ δ', ἀδάμενον. οἱ δὲ, ὑπνωτικόν. οἱ δὲ, ἐμμανές. οἱ δὲ ἄτομον. οἱ δὲ, διθιάμβειον. πυθαγόρας. προφῆται. ὀσθαίνης ξελέων. ζωροάστρης τηφώνιον. ῥωμαῖοι ἰνανασιταίεια. οἱ δὲ ἀπολλινάρις. προφῆται ῥάπον τική. αἰγύπτιοι σαφθώ. θοῦσκοι φαβουλώνγαν. γάλλοι βιλινουντίαν. δακοὶ διέλειαν.

περὶ ψυλλίου. κεφ. χνβ΄. c. 131

Οἱ δὲ, κατάφυσις. οἱ δὲ κυνοκεφάλιον. οἱ δὲ κρυστάλλιον. οἱ δὲ, κυνόμυια. οἱ δὲ, ψύλλερις. οἱ δὲ, σικελιωτικόν. οἱ δὲ, σικελοὶ κονιδίς. ῥωμαῖοι σιλβάκιουμ. οἱ δὲ ἕρβα πουλικάρις. ἄφροι οὐαργουγούμ. καὶ μακρότερον. μαλακτικήν. στυπτικήν. καὶ εἰς ὕδωρ δὲ ζέον ἐντιθέμενον καταστέλλει τὴν θέρμην. ποιεῖ δὲ καὶ πρὸς ἐρυσιπέλατα. φασὶ δὲ ὅτι κομισθεῖσα ἐν οἴκῳ χλωρά, οὐκ ἐᾷ ψύλλας γενέσθαι. κοπεῖσα δὲ μετὰ στέατος, τὰ ῥυπαρὰ καὶ κακοήθη τῶν ἑλκῶν ἀνακαθαίρει. ὁ δὲ χυλὸς μετὰ μέλιτος πρὸς ὦτα ῥευματιζόμενα ποιεῖ καὶ σκώληκας ἔχοντα.

Περὶ στρύχνου. κεφ. χνγ΄. c. 131

Οἱ δὲ, ἥμερον. ῥωμαῖοι στρούμουμ. οἱ δὲ, κακουβαλούμ. αἰγύπτιοι ἀλλήλω. γάλλοι σκούβουλουμ. ἄφροι ἀστρισμουνίμ. στρύχνος.

περὶ στρύχνου ὑπνωτικοῦ. κεφ. χνε΄. c. 132

Οἱ δὲ, δίρκιον. οἱ δὲ, στρύχνον μανικόν. οἱ δὲ, δορύχνιον. οἱ δ', καλλιάδα. ῥωμαῖοι ἀπολλινάρις μίνορ. οἱ δὲ, ἕρβα οὐλτικανά. οἱ δὲ, ὀψάγινεμ. δακοὶ κυκωλίδα. ἄφροι κακαβούμ.

περὶ στρύχνου μανικοῦ. κεφ. χνϛ΄. c. 132

Οἱ δὲ, ἄνυδρον. οἱ δὲ πεντάδρυον. οἱ δὲ, ἔνορον. οἱ δὲ ὀρθόγυιον.

περὶ Δορυκνίου. κεφ. χνζ΄. c. 132

Λ ευκὰ καὶ

περὶ Μανδραγόρου. κεφ. χνη΄. c. 132

Οἱ δὲ, κίρκαιον. οἱ δὲ, ξηραύθη. οἱ δὲ, ἀνθίμνιον. οἱ δὲ, ἀνθίμον. οἱ δὲ, βομβόχυλον. οἱ δὲ, μῆνον. αἰγύπτιοι ἀπεμούμ. πυθαγόρας ἀνθρωπόμορφον. οἱ δὲ, ἀλοίτην. οἱ δὲ, θριδακίαν. οἱ δὲ, κάμμαρον. ζωροάστρις διάμονον ἢ ἀρχίνην. προφῆται ἡμιόνους. οἱ δὲ, γονογεῶνας. ῥωμαῖοι μάλα κανίνα. οἱ δὲ, μάλα τέῤῥεστρις.

Περὶ ἑτέρου ἀκονίτου. κεφ. χξ. c. 133

Οἱ δὲ, κύαμον λευκόν. ῥωμαῖοι κολομέστρουμ. τούτου γένη εἰσὶ τρία. ᾧ μὲν οἱ κυνόθηρες χρῶνται. τοῖς δὲ δυσὶν οἱ ἰατροί. ὧν τὸ τρίτον λεγόμενον ποντικόν,

Περὶ κωνείου. κεφ. χξά. c. 133

Οἱ δὲ, αἴγυνος. οἱ δὲ ἤθουσα. οἱ δὲ ἀπολήγουσα. οἱ δὲ δολία. οἱ δὲ, ἀμαύρωσις. οἱ δὲ παράλυσις. οἱ δὲ ἄφρων. οἱ δὲ κρηΐδιον. οἱ δὲ, κοίτην. οἱ δὲ, κατεχομένιον. οἱ δὲ, ἀβίωτον. οἱ δὲ, ἀψευδής. οἱ δὲ ἀγεόμορφον. οἱ δὲ, τιμωρόν. οἱ δὲ, πολυανώδυνος. οἱ δὲ, δαρδανίς. οἱ δὲ, καταψυξις. ὀσθάνης. βαβάθυ. αἰγύπτιοι ἀπεμφύν. ῥωμαῖοι κικούταμ.

Περὶ ἀποκύνου. κεφ. χξγ. c. 134

Οἱ δὲ, κυνοκτόνον. οἱ δὲ, φάλεως. οἱ δὲ, κυνάγχη. οἱ δὲ, ὀλίτωρος. οἱ δὲ, ἱππομανές. οἱ δὲ, ὄνιστις. οἱ δὲ, ὀσφιοσκέλιδον. οἱ δὲ, κυναρική. οἱ δὲ, ἐλαφόσκορδον. προφῆται παράλυσις. ῥωμαῖοι βράσσικα ῥούστικα. οἱ δὲ, κανίνα. δυσώδης.

Περὶ νηρείου. κεφ. χξδ. c. 134

Οἱ δὲ, σπόγγος. οἱ δὲ, αἱμοστατεῖς. ῥωμαῖοι ῥοδάνδρουμ. λευκανοὶ ἰκμανή. αἰγύπτιοι σκινφή. ἄφροι ῥοδοδάφνη.

Περὶ κολχικοῦ. κεφ. χξς. c. 134

Ῥωμαῖοι βούλβους ἀγρέστις. ἐπίπυῤῥον

Περὶ ἐλξίνης. κεφ. χξή. c. 135

Οἱ δὲ, ἐλάτιν. οἱ δὲ, κανοχερσαίαν. οἱ δὲ, ἀμελξίνην. οἱ δὲ, σουκόταλας. οἱ δὲ, ψυχρύακος. οἱ δὲ, κυτάμπελον. οἱ δὲ, κυσάμεθον. οἱ δὲ, ἀνατεταμένη. ῥωμαῖοι βέλουτον λαπάρου. αἰγύπτιοι ἄπαπ.

Περὶ ἀλσίνης. κεφ. χξθ. c. 135

Οἱ δὲ, ἀνθύλλιον. οἱ δὲ, μυόρτοχον. οἱ δὲ, μυοσώτιλινον. ῥωμαῖοι μούρις ἀουρίκουλα. ἄφροι λαβοθολαβάτ.

Περὶ φακοῦ τοῦ ἐπὶ τῶν τελμάτων. κεφ. χο'. c. 135

Οἱ δὲ, φακὸς ἄγριος. οἱ δὲ ἐπίπτερον. ῥωμαῖοι βιπτεράλις. οἱ δὲ, ἰκεοσμίγδονος.

Περὶ ἀειζώου τοῦ μεγάλου. κεφ. χοα'. c. 135

Ἀείζωον τὸ μέγα οἱ δὲ, ἀειθαλές. οἱ δὲ, ἀμβρόσιον. οἱ δὲ, χρυσόσπερμον. οἱ δὲ, ζωόφθαλμον. οἱ δὲ, βουόφθαλμον. οἱ δὲ, στέργηθρον. οἱ δὲ, αἰώνιον. οἱ δὲ, ἀείχρυσον. οἱ δὲ, ὁλόχρυσον. οἱ δὲ, χρυσάνθεμον. οἱ δὲ, πρωτόγονον. οἱ δὲ βόρος. οἱ δὲ, νότιος. προσφῆται παρωνυχία. οἱ δὲ, χρυσῖτις. ῥωμαῖοι κεριακούσσα. οἱ δὲ, ἰόβις κάουλις. οἱ δὲ λεαπετές. οἱ δὲ σουδερμούρ. αἰγύπτιοι παμφανής.

Περὶ ἀειζώου τοῦ μικροῦ. κεφ. χοβ'. c. 136

Οἱ δὲ, περιφυές. οἱ δὲ, βρότιον. οἱ δὲ, θεοβρότιον. οἱ δὲ, κρόβυσσον. οἱ δὲ, χειμερινή. οἱ δὲ, κεραυνία. ῥωμαῖοι βιτάλις. οἱ δὲ, ἔρβα σέρπερ βίβα. αἰγύπτιοι ἐπιεικελταί.
Ἀείζωον τὸ λεπτόφυλλον. οἱ δὲ, ἀείζων τὸ μικρόν. οἱ δὲ, περιφυές. οἱ δὲ, ἀείζωον ἄγριον. ῥωμαῖοι σέμπερ βίβουμ. μεσαώους.

Περὶ κοτυληδόνος. κεφ. χοδ'. c. 136

Οἱ δὲ, κῆπος ἀφροδίτης. οἱ δὲ, γῆς ὀμφαλός. οἱ δὲ στιχίς. οἱ δὲ, στέργηθρον. ῥωμαῖοι οὐμβιλίκουμ βενέρις.

Περὶ ἑτέρας κοτυληδόνος. κεφ. χοε'. c. 136

Ὃ τινες κυμβάλιον καλοῦσι.

Περὶ ἀκαλύφης. κεφ. χοϛ'. c. 136

Οἱ δὲ, ἀδίκη. ῥωμαῖοι οὐρτίκα. αἰγύπτιοι σελέψιον. δάκοι δυώ. ἀκαλύφη ἑτέρα. οἱ δὲ, κνίφην καλοῦσι. ῥωμαῖοι οὐρτίκα μόλλις.

Περὶ γαλιόψεος. κεφ. χοζ'. c. 136

Οἱ δὲ, γάλεψος. αἰγύπτιοι αἴθοπι. ῥωμαῖοι οὐρτίκα λαβωνέμ.

Περὶ ἠριγέροντος. κεφ. χοθ'. c. 137

Οἱ δὲ, ἐρεχθίτης. ῥωμαῖοι ἕρβουλουμ. οἱ δὲ, σενέκιουμ.

Περὶ σείου θαλασσίου. κεφ. χπα'. c. 137

Οἱ δὲ, βάλλαρις. οἱ δὲ, ἰραΐνη. ῥωμαῖοι γνωμβυσίλου.

Περὶ ποταμογείτονος. κεφ. χπγ'. c. 137

Οἱ δὲ, σταχυίτην. ῥωμαῖοι φατάλις. αἰγύπτιοι ἐθαχίς.

Περὶ στρατιώτου. κεφ. χπδ΄. c. 137

Οἱ δὲ, ποτάμιον στρατιώτην καλοῦσιν. αἰγύπτιοι τιβούς. προφῆται αἷμα αἰλούρου. Περὶ φλόμου. κεφ. χπϛ΄. c. 138

Οἱ δὲ, φλόνον. ῥωμαῖοι βερβάσκουλουμ. οἱ δὲ, φηλαλαλή.

Περὶ ἀρκείου. κεφ. χπθ΄. c. 138

Οἱ δὲ, ἀπαρίνην. ῥωμαῖοι περσωνάκιαμ. οἱ δὲ λάππαμ καυλὸν ὑπόλευκον. ἐνίοτε δὲ

Περὶ ἐπιπακτίδος κεφ χϛα΄. c. 139

Οἱ δὲ, βόρειον.

Περὶ καπνοῦ. κεφ. χϛβ΄. c. 139

Οἱ δὲ, κορυδάλιον ἢ κόρειον. οἱ δὲ κορυδάλιον ἄγριον. οἱ δὲ, καπνὸς ὁ ἐν ταῖς κριθαῖς. οἱ δὲ, καπνίτης. οἱ δὲ μαρμαρίτης. οἱ δὲ, καπνογόργιον. οἱ δὲ χελιδόνιον μικρόν. οἱ δὲ, περιστέριον. οἱ δὲ, κανθαρίς. οἱ δὲ, καλλικεί. ῥωμαῖοι ἄπιουμ. οἱ δὲ φουμαρία. αἰγύπτιοι κνύξ. οἱ δὲ, τοῦκιν.

Περὶ λωτοῦ ἡμέρου. κεφ. χϛγ΄. c. 139

Οἱ δὲ, τριπόδιον. οἱ δὲ, τριβόλιον καλοῦσι.

Περὶ λωτοῦ ἀγρίου. κεφ. χϛδ΄. c. 139

Οἱ δὲ, τρίφυλλον. Περὶ κυτίσου. κεφ. χϛε΄. c. 139

Οἱ δὲ, τηλίνην. οἱ δὲ λωτὸν μέγαν. οἱ δὲ, τρίφυλλον. ῥωμαῖοι τριφόλιουμ μαίους.

Περὶ μυριοφύλλου. κεφ. χϛζ΄. c. 139

Οἱ δὲ, μυλλόφυλλον. οἱ δὲ, στρατιωτική. οἱ δὲ, ἀχίλλειος. ῥωμαῖοι μιλλεφόλιουμ. οἱ δὲ, σουπερκίλιουμ βένερις. γάλλοι βελιουκαύδαο.

Περὶ μυρρίδος. κεφ. χϛη΄. c. 139

Οἱ δὲ, κονίλην. Περὶ κρατίου. κεφ. ψα΄. c. 140

Οἱ δὲ, βούγλωσσον μέγα καλοῦσι. ῥωμαῖοι σπίνα μόλλις.

Περὶ ἀστέρος ἀττικοῦ. κεφ. ψβ΄. c. 140

Οἱ δὲ, ἀστερίσκος. οἱ δὲ, ἀστέριον. οἱ δὲ, βουβώνιον. οἱ δὲ, ὑόφθαλμον. ῥωμαῖοι ἐγγινάλις. δακοὶ ῥαθίβιδα. Γίνεται δὲ μεταξὺ πετρῶν καὶ τόπων τραχέων. ταύτης οἱ ἀστέρες ἐν νυκτὶ λάμπουσιν. οἱ γὰρ μὴ εἰδότες ὅταν αὐτὴν ἴδωσι, νομίζουσι φάντασμα εἶναι. εὑρίσκεται δὲ παρὰ βοσκοῖς

προβάτων. καὶ κρατεύας ὁ ῥιζοτόμος ἱστορεῖ. αὕτη χλωρὰ κοπεῖσα μετὰ ὀξυγγίου παλαιοῦ, ποιεῖ πρὸς λυσσοδήκτους καὶ βρογχοκηλικούς. ὑποθυμιωμένη δὲ φυγαδεύει θηρία.

περὶ ἴου. κεφ. ρδ΄. c. 140

Πορφυροῦν. οἱ δὲ, δασυπόδιον. οἱ δὲ, ἴον. οἱ δὲ πριαπήϊον ἄγριον, οἱ δὲ κυβέλιον. ῥωμαῖοι σεπτάλις. οἱ δὲ μυραρία. οἱ δὲ βιόλα πουρπούρεα.

περὶ βουνίου. κεφ. ρς΄. c. 140

Οἱ δὲ, ἄτον. οἱ δὲ, ἀκτίνην. οἱ δὲ, ἀνεμόσφορον. προφῆται παράδακρυ. αἰγύπτιοι ὀρξώην. ῥωμαῖοι σκόπα ῥέγια. ἄφροι ζιγάρ. οἱ δὲ, θεψώ. καὶ ἐν αὐτῷ κλωνάρια περιπλέα φυλλαρίων, λεπτῶν καὶ ἀνθῶν πολλά. τῷ μήκει δακτυλιαῖον. πρὸς τῇ ῥίζῃ.

περὶ ψευδοβουνίου. κεφ. ρζ΄. c. 141

Καὶ κλωνία.

περὶ χαμαικίσσου. κεφ. ρη΄. c. 141

Οἱ δὲ, χαμαιλεύκη. οἱ δὲ, κισσὸς ἄκαρπος. οἱ δὲ, γῆς στέφανος. οἱ δὲ, σελινῖτις. ῥωμαῖοι ἔδερα πλουβιάτικα. λευκότερα. καὶ λεπτότερα.

περὶ χαμαιλεύκης. κεφ. ρθ΄. c. 141

Ἐν ἄλλῳ. ἔστι δὲ ἡ βοτάνη ὁλόχλωρος. ἔχουσα φυλλάρια ἐπικαμπῆ. καὶ τοὺς κλάδους ἐπικαμπεῖς. καὶ ἄνθη ὡς ῥόδα.

περὶ βουγλώσσου. κεφ. ρι΄. c. 141

Προφῆται γένος αἰλούρου. ὀσθάνης τξανουχεί. αἰγύπτιοι αὐτουσένειν βέσωρ. ῥωμαῖοι λογγαίβουμ. οἱ δὲ, λιβανίν. ἄφροι αἰσανάφ. γίνεται εἰς τόπους ὁμαλοὺς καὶ ἀτμώδεις. συνάγεται δὲ ἐν ἰουλλίῳ μηνί. φασὶ δὲ πρὸς ῥίγη λυσιτελεῖν. πρὸς μὲν τριταῖον τοῦ ἔχοντος βουγλώσσου γ΄ καυλούς, ὅλην ἀποτεμώσας μετὰ τῶν ῥιζῶν καὶ τοῦ σπέρματος τὴν βοτάνην, δίδου πιεῖν. τοῦ δὲ τέσσαρας ἔχοντος τῷ τεταρταίζοντι. ἡ δὲ ἕψησις τούτων σὺν οἴνῳ. καὶ πρὸς ἀποστήματα φασὶν αὐτὸ χρησιμεύειν.

περὶ λεοντοποδίου. κεφ. ριγ΄. c. 141

Οἱ δὲ, ζωόνυχον. οἱ δὲ ἀετώνυχον. οἱ δὲ, κῆμος. οἱ δὲ, δυναμένη. οἱ δὲ, ἰδιόφυτον. οἱ δὲ, φυτοβασίλα. οἱ δὲ, κρόσιον. οἱ δὲ, κροσσόφθοον.

σόφθοον. προφῆται αἷμα κροκοδείλου. οἱ δὲ, κροκομβρίον. αἰγύπτιοι δαφνοινής. ῥωμαῖοι μινδρίκουμ. οἱ δὲ, νεοουμάτους. οἱ δὲ, παλλάδιουμ. οἱ δὲ, φλάμουλα περιαπτομένη. καὶ φύματα διαφορεῖ.

Περὶ ἱππογλώσσου. κεφ. ρμδ΄. c. 141

Οἱ δὲ, καὶ τοῦτο ἀντίῤῥινον. οἱ δὲ, ἀνάῤῥινον. οἱ δὲ, καὶ ταύτην λυχνίδα ἀγρίαν καλοῦσι. ἥτε ῥίζα καὶ τὸ χύλισμα.

Περὶ ἀντιῤῥίνου. κεφ. ρμε΄. c. 141

Ἢ κυπρίνῳ.

Περὶ κατανάγκης. κεφ. ρμς΄. c. 141

Οἱ δὲ, δαμναμένη. οἱ δὲ, διονυσιάς. οἱ δὲ, θύρσιον. οἱ δὲ, δῆμος. οἱ δὲ, κῆμος. οἱ δὲ, κρότιον. προφῆται ἀρχαράς. οἱ δὲ, ἀρκόπους. ῥωμαῖοι ὕρβα φιλικλᾶ. οἱ δὲ, δαπίσκα. οἱ δὲ, ἰοβισμάδιους. δακοὶ καρωπίθλα. μαλακαὶ δὲ εἰσὶ γῆς ἐστρωμένα καὶ ἐπικεχισμένα.

Περὶ τριπολίου. κεφ. ρμζ΄. c. 142

Οἱ δὲ, ψυχήν. οἱ δὲ, μηκείς. οἱ δὲ, ποταμογείτων. οἱ δὲ, σταχυΐτης. ῥωμαῖοι καλιουμαρῆς. ξηρά.

Περὶ ἀδιάντου. κεφ. ρμη΄. c. 142

Οἱ δὲ, καλλίτριχον. οἱ δὲ, φυγομανές. οἱ δὲ, ἐβενότριχον. οἱ δὲ, ἄργιον. οἱ δὲ, κόσειον ἄνυγρον. αἰγύπτιοι ἐπιέρ. ῥωμαῖοι κιγκινάλις. οἱ δὲ, τέρραι καπίλλους. οἱ δὲ, σουπερκίλιουμ τέρραι. δακοὶ φιθοφθεθελά.

Περὶ τριχομανοῦς. κεφ. ρμθ΄. c. 142

Οἱ δὲ, πτέριον. οἱ δὲ, ὄπτερον. ῥωμαῖοι καπιλλαρέμ. οἱ δὲ, πινουλάμ. οἱ δὲ, φιλικλάμ.

Περὶ ξανθίου. κεφ. ρν΄. c. 142

Ῥωμαῖοι λάππα.

Περὶ αἰγίλωπος. κεφ. ρνα΄. c. 142

Οἱ δὲ, σιτόστελος. οἱ ἢ, σίφων. οἱ δὲ, βρῶμος. ῥωμαῖοι ἀβενά.

Περὶ σμίλακος τραχείας. κεφ. ρνβ΄. c. 143

Οἱ δὲ, ἐπάπιτις. οἱ δὲ, λυκάνθεμον. οἱ δὲ, κυνόσβατον. οἱ δὲ, ἀνίκητον. οἱ δὲ, ἡλιόφυτον. οἱ δὲ, ἀνατολικόν. οἱ δὲ, δυτικόν. οἱ δὲ ἑλίδη. αἰγύπτιοι λυϊαθῆ. ῥωμαῖοι μεργίνα. θοῦσκοι ῥαδία.

ὡς αἰθὶ φυλλίδα.

Περὶ μυρσίνης ἀγρίας. κεφ. ψκη΄. c. 143

Οἱ δὲ, μυρτάκανθα. οἱ δὲ, ἱερόμυρτον. οἱ δὲ, ὀξυμυρσίνη. οἱ δὲ, μυάκανθα. οἱ δὲ ἄγονον. οἱ δὲ, σκίγκος. οἱ δὲ μίνθη. οἱ δὲ, κατάγγελος. οἱ δὲ ἀνάγγελος. οἱ δὲ ἄκομαρον. οἱ δὲ ὀκνηρόν. οἱ δὲ κένλω. οἱ δὲ λειχήνη. οἱ δὲ χαμαιπίτυς. οἱ δὲ χαμαιμύρτη. Βοιωτοὶ δὲ γυρίωνιας. προφῆται γόνος ἡρακλέους. ῥωμαῖοι ῥούσκουμ.

Περὶ δάφνης. κεφ. ψκθ΄. c. 143

Οἱ δὲ, δάφνος. οἱ δὲ, σαμοθρακική. οἱ δὲ μέθελον. οἱ δὲ ὑπόγλωσσον.

Περὶ δαφνοειδοῦς. κεφ. ψλ΄. c. 144

Ὅμοιον ἀλύπῳ. ἄνθος ὡς νυμφαίας. καὶ μέσον τούτου κώνῳ ἐμφερὲς ἐν ᾧ τὸ σπέρμα.

Περὶ χαμαιδάφνης. κεφ. ψλα΄. c. 144

Οἱ δὲ, δαφνίτην. οἱ δὲ, ὑδραγωγόν. ῥωμαῖοι λαυρεόλα. οἱ δὲ, λακτάγω. γάλλοι οὔσσουβιμ. μονοκλώνους.

Περὶ ἐλλεβόρου λευκοῦ. κεφ. ψλβ΄. c. 144

Οἱ δὲ, ἀσκίδα. οἱ δὲ ἄτομον. οἱ δὲ, πιγνατόξαρις. προφῆται γόνος ἡράκλειος. οἱ δὲ πολύειδος. οἱ δὲ ἀνάφυσος. αἰγύπτιοι σομφία. οἱ δὲ οὔνρε. ῥωμαῖοι βεράτρουμ ἄλβουμ. γάλλοι λάπινον. οἱ δὲ ἀνεψᾶ.

Περὶ ἐλλεβόρου μέλανος. κεφ. ψλγ΄. c. 144

Οἱ δὲ, πρώτιον. οἱ δὲ, μελανόρριζον. οἱ δὲ κιρραίνιον. προφῆται ζωμαείτιον. αἰγύπτιοι ἰσαύα. οἱ δὲ ἐλαφινέ. οἱ δὲ κεμελέγ. ῥωμαῖοι βεράτρουμ νίγρουμ. οἱ δὲ σαράκα. δακοὶ προδίορνα.

Περὶ σησαμοειδοῦς τοῦ μεγάλου. κεφ. ψλδ΄. c. 145

Οἱ δὲ, σησαμίτης. οἱ δὲ σησαμίς. οἱ δὲ λυκοσκυτάλιον. οἱ δὲ, ἐλλέβορος λευκός. οἱ δὲ ἀντικύρικον. τὴν κοιλίαν.

Περὶ σησαμοειδοῦς τοῦ μικροῦ. κεφ. ψλε΄. c. 145

Οἱ δὲ, κορώνιον. οἱ δὲ, σήσαμον ἄγριον καλοῦσι

Περὶ σίκυος ἀγρίου. κεφ. ψλϛ΄. c. 145

Οἱ δὲ, ἐλατήειον. οἱ δὲ, γρυῶον. οἱ δὲ, βαλίς. οἱ δὲ σύγκεισις. οἱ δὲ βουβάλιον. οἱ δὲ σκόπιον. οἱ δὲ φερόμβρον. οἱ δὲ πευκεδανόν. οἱ δὲ νότιον. ῥωμαῖοι ἀπκέτουμ. οἱ δὲ, ἀγρέστεμ. ἄφροι κουσιμεζάρ. νήσεσι παρ' ἡμβράσ γ΄.

Περὶ ἐλατηείου. κεφ. ψλζ΄. c. 146

Καὶ ὅταν ὅλον ἐκθλίψῃς, ἔασον αὐτὸ καταστῆναι.

Περὶ σταφίδος ἀγρίας. κεφ. ψλη΄. c. 146

Οἱ δὲ, τείφυλλον. οἱ δὲ, στήσιον. οἱ δὲ, ἀσταφίς. οἱ δὲ, φθειροκτόνον. οἱ δὲ, φθείριον. οἱ δὲ, ἀπάνθρωπον. οἱ δὲ, πολυειδές. οἱ δὲ ψευδοπαθές. οἱ δὲ ἀρσενοτή. αἰγύπτιοι ἰβησαοιδή. ῥωμαῖοι ἕρβα πεδικουλάρια.

Περὶ θαψίας. κεφ. ψλθ΄. c. 147

Οἱ δὲ, ὑπώπιον. οἱ δὲ, πάγκρανον. οἱ δὲ σκαμμώνιον. οἱ δὲ θηλυτερίς. ῥωμαῖοι φερουλάτω. οἱ δὲ φέρουλα σιλβέστρις. ἄφροι βοίδλιν. τοῦ γυμνοῦ σώματος.

Περὶ σπαρτίου. κεφ. ψμ΄. c. 147

Οἱ δὲ, λοβόν. οἱ δὲ, λύγον καλοῦσι.

Περὶ βολβοῦ. κεφ. c. 147

Βολβὸς ὁ καλούμενος ἐμετικὸς, ἔχει τὰ φύλλα ἱμαντωδέστερα. καὶ πολλῷ μακρότερα τοῦ ἐδωδίμου. ῥίζαν ἐοικυῖαν βολβῷ. περὶ ἣν φλοιὸς μέλας. αὕτη ἐσθιομένη καθ' αὑτὴν καὶ τὸ ἀφέψημα αὐτῆς πινόμενον, ἐμέτους κινεῖ.

Περὶ μυροβαλάνου, ζητητέον δὲ εἰ γνήσιον. κεφ. c. 148

Μυροβάλανον κίτεινον. ξηραίνει μὲν κατὰ τὴν πρώτην ἀπόστασιν. κινεῖ δὲ ξανθὴν χολήν. τοῦτο δὲ παρ' ἐνίοις λέγεται ξανθόν. μεῖζον δὲ τοῦ χρυσοβαλάνου καὶ εὐσαφέστερον. ὁ μὲν παῦλός φησιν ὅτι ἐστὶ ψυχρὸν καὶ ξηρὸν κατὰ τὴν δευτέραν ἀπόστασιν. ὠφελεῖ δὲ ἐπὶ δριμεία ξανθῇ χολῇ διδόμενον. κινεῖ γὰρ καὶ καθαίρει αὐτὴν κατὰ τέχνην διδόμενον. δίδοται δὲ καὶ τοῖς φύματα ἀπὸ χολῆς ἔχουσι. καὶ τοῖς ὠχριῶσιν ὀφθαλμοῖς καὶ μάλιστα τοῖς ἰκτερικοῖς. καὶ τοῖς ἐμπεφραγμένον ἔχουσιν ἧπαρ καὶ σπλῆνα. λύει γὰρ τῷ κενοῦν, καὶ τονοῖ καὶ σφίγγει τὰ σπλάγχνα. ὁ δὲ ὀρειβάσιος περὶ τοῦ

του φησὶν ὅτι ὠφελεῖ ἐπὶ τῶν χολώδους πυρετοῦ. κεφαλαλγίας τε καὶ ἡμικρανίας τὰς ἐπὶ χολῇ γινομένας. πρός τε φύματα καὶ ψώρας ἐπιπολαζούσας τῷ δέρματι. καὶ ἐπὶ πάντων τῶν ἀπὸ χολῆς συμπτωμάτων.

Τὸ μέλαν ὁμοίως ψύχει καὶ ξηραίνει κατὰ τὴν πρώτην ἀπόστασιν. κινεῖ δὲ μέλαιναν χολήν.

Τὸ μέγα τὸ λεγόμενον κέπουλε. παρ' ἐνίων δὲ κέβουλε, μέσης κράσεώς ἐστιν ὀλίγον. ἔστι δὲ θερμόν. καὶ κενοῖ τὰ ἐν τῇ κεφαλῇ ὑγρὰ ὡς ἐπίπαν.

Τὸ κεκλασμένον ἤτοι τὸ ἀφλέτζιν, ψυχρόν ἐστι καὶ ξηρὸν κατὰ τὴν πρώτην τάξιν. δυναμοῖ δὲ τὸν στόμαχον. καὶ κωλύει τὴν ῥοῦσιν τῶν τριχῶν.

Τὸν πελελέτζιν ὁμοίως καὶ αὐτὸ ῥωννύει τὸν στόμαχον καὶ τὴν ἕδραν κινεῖ ἐλαφρῶς.

Τὸ ὀξυφοίνικόν ἐστι ψυχρὸν καὶ ὑγρὸν κατὰ τὴν πρώτην ἀπόστασιν. πραΰνον τὴν ξανθὴν χολὴν ὡς οὐδὲν ἕτερον. πλὴν τοῦ ἰνδικοῦ ῥέου. ὠφελεῖ ἰκτεριῶντας. διψῶντας. κεφαλαλγοῦντας. ῥύπτει δὲ τὴν ἄνω κοιλίαν ἐκ τῶν λυπούντων αὐτὴν χυμῶν. καὶ ὄρεξιν διεγείρει. ὁ ῥειβάσιος δέ φησιν ὠφελεῖ ναυτίας. ἐμέτους. σφάκελον φρενῖτιν. τριταίους δὲ πυρετοὺς εἰς τοὐπίπαν ἀπαλλάσσει, σὺν ἰνδικῷ πινόμενον ῥέῳ καὶ μέλανι κασσίᾳ. καύσους καὶ δὲ πυρετοὺς ἰᾶται. πλευρίτιδι βοηθεῖ σὺν ἡδυόσμῳ πινόμενον καὶ σελίνῳ περσικῷ. ὅσον γο α τὸ πᾶν τῆς δόσεως. ὁ δὲ πορφύριος λέγει ὅτι πραΰνει τὴν ψυχήν. καὶ πάντα τὰ ἀπὸ θερμότητος κάμνοντα μόρια θεραπεύει καὶ καταπαύει τὰ ἀπὸ θερμότητος χολώδη ῥεύματα.

Τὸ τούρπετ θερμόν ἐστι ξηρὸν κατὰ τὴν τρίτην ἀπόστασιν. ὑπάγει δὲ μέλανα καὶ φλέγμα γλίσχρον. θεραπεύει δὲ καὶ τὰς χρονίους διαθέσεις. τὰς ἐπὶ ψύξει ἢ μελαγχολικῷ χυμῷ γινομένας. ὠφελεῖ παραπληξίας. ἐπιληψίας. μανίας καὶ μελαγχολίας. ὁ δὲ παῦλός φησιν ὅτι τοῦτο ὑπάγει ῥᾳδίως. καὶ τονοῖ τὸ σῶμα. οὐ μὴν ἰσχναίνει μετὰ τὴν πόσιν καθάπερ τὰ ἄλλα καθαρτικά. ὁ δὲ μάγνος φησὶν ὅτι διαλύει τοὺς ἐν τοῖς σπλάγχνοις καὶ τοῖς νεφροῖς φλεγματικοὺς χυμούς. ὑπάγει δὲ ῥᾳδίως μέλανα καὶ φλέγμα. ὁ δὲ ἀρχιγένης λέγει ὅτι ἀναλύει καὶ καθαίρει ἅπαν τὸ σῶμα ἐκ τῆς σαπρίας τῶν χυμῶν. ἔστι δὲ θερμὸν καὶ ξηρὸν καὶ

λεπτωτικόν. περὶ ναρκίσσου. κεφ. ψμγʹ. c. 148

Οἱ δὲ, νάρκισσος ἄνυδρος. οἱ δὲ, αὐτογενές. οἱ δὲ, βολβὸς ὁ ἐμετικός. οἱ δὲ λείριον. ῥωμαῖοι. βούλβους μορβιτάριους. ἐν μέσῳ.

περὶ ἱπποφαοῦς. κεφ. ψμδʹ. c. 148

Οἱ δὲ, ἱπποφυές. οἱ δὲ, ἱπποφανές. οἱ δὲ, ἱππίον. οἱ δὲ, ἐχίνιον. οἱ δὲ, πελεκῖνος. ῥωμαῖοι λαππάτω. οἱ δὲ, λαππολάμβρα καλοῦσιν.

περὶ κίκεως. κεφ. ψμϛʹ. c. 148

Αἰγύπτιοι σύσθαμνα. οἱ δὲ, τείξιν. προφῆται αἷμα πυρετοῦ. ῥωμαῖοι ῥικίνουμ. οἱ δὲ, λοῦπα.

περὶ πιτυούσης. κεφ. ψμηʹ. c. 150

Ἣν καλοῦσι τούρπετ.

περὶ χαμαισύκης. κεφ. ψναʹ. c. 151

Οἱ δὲ, μήκωνα ἀφρώδη.

περὶ σκαμμωνίας κεφ. ψνβʹ. c. 151

Οἱ δὲ σκαμβωνίας ῥίζα. οἱ δὲ κολοφωνία. οἱ δὲ δακτύλιον. ῥωμαῖοι κολοφώνιουμ. προφῆται ἀρπαλδύμονος. αἰγύπτιοι σάνιλουμ.

περὶ χαμελαίας κεφ. ψνγʹ. c. 151

Οἱ δὲ, χαμελαία μέλαινα. οἱ δὲ ἡράκλειον. οἱ δὲ, βδελυρά. ῥωμαῖοι κιτοκάκιουμ. οἱ δὲ, ἐλεάτω. οἱ δὲ ὀλοασέλλουμ.

περὶ ἀκτῆς. κεφ. ψνδʹ. c. 152

Οἱ δὲ, δένδρον ἄρκτου. οἱ δὲ ἥμβρον. ῥωμαῖοι σαμβούκουμ. γάλλοι σκοβιήμ. δάκοι σέβα.

περὶ χαμαιάκτης. κεφ. ψνεʹ. c. 152

Οἱ δὲ, ἑλιοβακτή. οἱ δὲ, ἀγρία ἀκτή. οἱ δὲ εὐβοϊκή. ῥωμαῖοι ἔβουλουμ. γάλλοι δουκωνέ. δάκοι ὄλμα. ψυκτική.

περὶ ἀπίου. κεφ. c. 153

Ῥωμαῖοι ῥάδιξ σιλβέστρις. ἄφροι θορφαθβαδοί.

περὶ κολοκυνθίδος. κεφ. ψνζʹ. c. 153

Ζωρόαστρις θύμβρη. ὀσθάνης αὐτογενές. ῥωμαῖοι κουκούρβιτα σιλβάτικα. δάκοι τούτραστρα.

περὶ ἐπιθύμου. κεφ. ψνηʹ. 153

Οἱ δὲ κεδοίς. ῥωμαῖοι ἐμβόλουκρουμ.

περὶ κληματίτιδος. κεφ. ψξαʹ c. 154

Οἱ δὲ ἐπιγῆτις. αἰγύπτιοι φιλάκουον. ῥωμαῖοι ἀμβούξουμ.

Περὶ ἀμπέλου λευκῆς. κεφ. ψξγ. c. 154

Καὶ δυσπνοοῦσι.

Περὶ ἀμπέλου μελαίνης. κεφ. ψξδ. c. 154

Οἱ δὲ, βουκράνιον. ῥωμαῖοι ὀβλαμινία. οἱ δὲ, βατανούτα. οἱ δὲ βετισάλιγα. δακοὶ πριαδήλα. οἱ δὲ περρίνα. ἄφροι λασυοθειν.

Περὶ πτερίδος. κεφ. ψξε. c. 155

Οἱ δὲ, πτέριον. οἱ δὲ πτερίνεον. οἱ δὲ δασύκλωνον. οἱ δὲ αἰνάσφορον. προφῆται αἷμα ἐρμοῦ βαΐν. ῥωμαῖοι φιλισφαναρία. οἱ δὲ λακοῦλλα. οἱ δὲ φιλικέμ. αἰγύπτιοι αἷμα ὄνου.

Περὶ θηλυπτερίδος. κεφ ψξϛ. c. 155

Ῥωμαῖοι λίνγουα κερβίνα.

Περὶ πολυποδίου. κεφ. ψξζ. c. 155

Οἱ δὲ, σκολοπένδριον. οἱ δὲ πτερίς. οἱ δὲ πολύρριζον. ῥωμαῖοι φολίκουλα λίκουταλις.

Περὶ δρυοπτερίδος. κεφ. ψξη. c. 155

Οἱ δὲ πτέριον. οἱ δὲ νυμφαία πτερίς.

Περὶ λινοζώστεως. κεφ. ψο. c. 156

Ἀρρὲν. οἱ δὲ, ἄργυρος. οἱ δὲ ἀριτεμλλίς. οἱ δὲ χρυσῖτις. αἰγύπτιοι ἀφλοφό. ῥωμαῖοι ἕρβα μερκουριάλις μάσκουλα. οἱ δὲ τεστεκουλάτα. ἄφροι ἀσυμές.

Περὶ ἡλιοτροπίου τοῦ μεγάλου. κεφ. ψοβ. c. 156

Οἱ δὲ, σκορπιοῦρον. οἱ δὲ ἡλιότροπος. οἱ δὲ, διάλιον. οἱ δὲ, ἡλιόπουν. οἱ δὲ, σκορπιοκτόνον. οἱ δὲ σήψεμον ἄγριον. οἱ δὲ, σκορπίου οὐράν. λέγεται.

Περὶ ἡλιοτροπίου τοῦ μικροῦ. κεφ. ψογ. c. 156

Οἱ δὲ σκορπιοῦρον.

Περὶ ὀμφακίου. κεφ. ψπ. c. 158

Ἐν ἄλλῳ. δυνάμει δὲ στυπτικόν. ἁρμόττον τοῖς βραδέως πέπτουσι καὶ λελυμένοις στομάχοις. καὶ ταῖς κισσώσαις γυναιξὶ καὶ ἑλκώδεσι. δοκεῖ δὲ βοηθεῖν καὶ ταῖς λοιμικαῖς καταστάσεσι ῥοφούμενον. χρήζουσι δὲ οἱ τοιοῦτοι οἶνοι ἐτῶν πολλῶν. ἄλλως γὰρ οὐκ εἰσὶ πότιμοι.

Περὶ θυμοξάλμης. κεφ. ψϛη. c. 162

Ἐκ καὶ θερμόταται καὶ ἡ κροκοδείλου.

περὶ τῶν ὑπὸ φαλαγγίων δεδηγμένων. κεφ. αιβʹ. c. 210

Ὕδατος ἢ παραχρῆμα.

περὶ τῶν ὑπὸ τρυγόνος θαλασσίας δε-
δηγμένων. κεφ. αιεʹ. c. 211

Γίνονται δὲ ἰδίως πληγαὶ καὶ ὑπὸ δράκοντος καὶ σκορπίων τῶν ἐκ θαλάσσης. καὶ περιωδυνίας χαλεπὰς φέρουσι. σπανίως δέ ποτε καὶ νομάς. γίνεται.

περὶ τῶν ὑπὸ ἐχίδνης δεδηγμένων. κεφ. αιζʹ. c. 211

Ἐν οἴνῳ τῶν ὀρνίθων ἐγκεφάλους σὺν οἴνῳ πινομένους καὶ κράμβης ἡμέρου τοῦ σπέρματος, ὀξύβαφον λεῖον πινόμενον μετ᾽ οἴνου. ἀγαθὸν δὲ καὶ τὸν δάκτυλον καταβάπτειν εἰς πίσσαν ὑγράν. ἔπειτα εἰς οἶνον ἀποκλύζοντα πίνειν. τοιαῦτα μὲν καὶ πρὸς τοὺς ἐχιοδήκτους.

περὶ τῶν ὑφ᾽ αἱμόρρου καὶ διψάδος δε-
δηγμένων. κεφ. ακʹ. c. 212

Γρὸς

περὶ χαμαιμήλου. σκεπτέον δὲ εἰ ταῦτα μέ-
χρι τέλους εἰσὶ γνήσια. κεφ. c. 213

Τοὺς πυρέσσοντας τὸ χαμαίμηλον θεραπεύει σὺν ῥοδίνῳ λεῖον τετριμμένον. ὠφέλιμον δὲ τοῖς μετειάζουσι τὸ φυτόν. φύεται δ᾽ ἐπὶ θινοῖς τὸ βραχὺ καὶ κάλλιστον. ὃ βαστάζουσιν ἰατροὶ ἀρχομένου θέρους.

περὶ ῥάμνου. κεφ.

Τὴν ῥάμνον ἤν τις ἄρῃ ἐν λειψοσελήνῳ καὶ βαστάζῃ, ὠφελεῖ πρὸς φάρμακα καὶ πρὸς ἀνθρώπους φαύλους. ἁρμόζει δὲ φορεῖν αὐτὴν θρέμματα. καὶ πλοίοις περιτίθεσθαι. ὠφελεῖ δὲ καὶ πρὸς πόνον κεφαλῆς καὶ δαίμονας. καὶ ἐπιπομπάς.

περὶ ἀρτεμισίας κεφ.

Ἀρτεμισίαν τὴν βοτάνην εἴ τις ἔχει ἐν ὁδῷ, λύει τὸν κάματον. καὶ ἐν τοῖς ποσὶν ὁ φορῶν, θηρία διώκει καὶ δαίμονας. αἵμα δὲ ἐπὰν περὶ τὰ ἄρθρα σκιῤῥωθῇ, κλωνία λαβὼν μείζω μετὰ ῥοδίνου, καὶ ποιήσας ζέσαι εἰς χύτραν, σύγχριε τὸν πονοῦντα ὅλον ὡς ὑπάγῃ κοιμᾶσθαι. καὶ ὑστερικαῖς γυναι-

ξεῖ πάνυ βοηθεῖ. στραγγουρίαν παύει. καὶ ὀπισθοτόνου ῥῆγμα.

### Περὶ πενταδακτύλου. Κεφ.

Τὴν πεντάδακτυλον εἴ τις φορεῖ περὶ τὸ σῶμα, ἄπονος μένει καὶ ὀφθαλμοὺς ὠφελεῖ. χοιράδας. αὐτιάδας. σταφυλήν. καὶ τὰ ὑπὸ τὴν γλῶσσαν ἄφθρα τε καὶ νεύρων ὀδύνας καὶ ὀδόντας. ψώραν ἐκλιμοκτονίας. λοχίων ἔμμηνα κατασπασθέντα. ἐν ὕδατι δὲ χλιαρῷ προσκλυζομένη εἰς τὰς χεῖρας πρὸς φόβους καὶ βασκοσύνας καὶ δαίμονας ἐστὶ πάνυ καλή. διὸ λάμβανε τὴν βοτάνην ὅτε αὔξει ἡ σελήνη, ἡλίου ἀνατέλλοντος.

### Περὶ περιστερεῶνος. Κεφ.

Περιστερεών. ὁ μὲν ὀρθὸς τείνει τὸ αἰδοῖον. ὁ δὲ ὕπτιος ξηραντικός ἐστιν. ὠφελεῖ δὲ ὁ ὀρθὸς περιαφθεὶς πρὸς πόνους ὀφθαλμῶν. ποιεῖ πρὸς ἀμβλυωπίαν καὶ κεφαλῆς πόνον. καὶ καύματον παύει τριφθεῖσα μετὰ ὄξους. χοιράδας. αὐτιάδας παραχρῆμα παύει. ὅτε δέ τις φρικιᾷ, ἀπὸ ταύτης κλωνία λαβὼν, κατέναντι στήτω τοῦ φρικιῶντος μόνον. καὶ εὐθὺς θεραπεύεται.

### Περὶ δικτάμου. Κεφ.

Τὴν δίκταμον ξηράνας, τρίψον ἐν ταῖς χερσί σου. καὶ ὡς ἄλφιτον ποιήσας, καὶ βαλὼν σταλεγμὸν οἴνου, θίγε τοῦ σώματος. πρὸς πάντα γὰρ τὰ ἑρπετὰ ἁρμόζει. ἕλκη δὲ καὶ τὰς σαπρὰς νομὰς πληροῖ προκαθαῖρον. κἂν σκολοπισθῇ τις προσκατάπλασσε. καὶ εὐθέως ὠφελήσεις. πρὸς σπλῆνα δὲ καὶ τὰ ἐν κρυφίοις τόποις πάθη φλεγμαίνοντα, κατάπλασσε ὡς ἄλφιτον ποιήσας. αἶρε δὲ τὴν βοτάνην ἔαρι καὶ ἐν τοῖς καύμασι καὶ ἐν τῷ φθινοπώρῳ.

### Περὶ ἐλελισφάκου. Κεφ.

Ἐλελίσφακον, λύει ψυγμόν. βῆχα. πρὸς πάντα δὲ τὰ κακὰ ἕλκη σὺν ῥοδίνῳ καὶ κηρῷ ληφθὲν ὠφελεῖ. σπληνὸς πόνον καὶ δυσεντερίαν θεραπεύει πινόμενον μετὰ οἴνου λευκοῦ ἐξ ἴσου. τοὺς αἱμοπτοϊκοὺς προποτιζόμενον θεραπεύει. καὶ πρὸς πάντα ποιεῖ λόχια γυναικός. αἱ κάκισται δὲ γυναῖκες

πεσὸν ἐξ αὐτῆς ποιήσασαι, προστιθέασι καὶ ἐκβάλλουσι τὰ ἔμβρυα.

Περὶ κυπαρίσσου. Κεφ.

Κυπάρισσος βοτάνη, ὠφελεῖ πρὸς βράγχους καὶ ὠτία. καὶ ἀντιάδας. καὶ ὕδρωπα καὶ ἰσχιάδας θεραπεύει.

Περὶ κενταυρείου. Κεφ.

Κενταύρειον ὠφελεῖ πρὸς φλεγμαίνοντα πάθη. καὶ κρούσματα πληκτῶν. ὑστερικαῖς γυναιξὶ βοηθεῖ. στραγγουριῶντάς τε παύει καὶ λιθιῶντας. αἶρε δὲ τὴν βοτάνην ἐν ἔαρι ἡλίου ἀνατέλλοντος.

Περὶ βουφθάλμου. Κεφ.

Τὴν βούφθαλμον σελήνης αὐξανούσης λαμβάνειν δεῖ. ποιεῖ δὲ πρὸς φόβους καὶ δαίμονας καὶ βασκοσύνας. καὶ φάρμακα κατὰ ταῦτα ἀποστρέφουσα. καὶ ὀδόντα εἴ τίς ποτε τὴν ῥίζαν μαστησάμενος ἀποπτύσει, εὐθὺς τὸ ῥεῦμα στέλλουσα ὠφελεῖ. λύει δὲ καὶ γαστέρα.

Περὶ παιονίας. Κεφ.

Παιονία βοτάνη αἴρεται ἐν τοῖς κυνοκαύμασι πρὸ τοῦ τὸν ἥλιον ἀνατεῖλαι. καὶ κρεμᾶται. καὶ ὠφελεῖ πρὸς φάρμακα καὶ βασκοσύνας καὶ φόβους καὶ δαίμονας, καὶ ἐπιπομπάς. καὶ εἰς πυρετὸν ἐκ φρικιάσεως νυκτερινόν τε καὶ ἡμερινόν. καὶ τεταρταῖον. λέγεται δὲ ὅτι ποτὲ ἐν τῷ ὄρει ἔνθα ἦσαν δαίμονες φυεῖσα, τούτοις ἀπεδίωκεν.

Περὶ πολίου. Κεφ.

Πόλιον ἡ βοτάνη φορουμένη περὶ τὸ σῶμα, ὠφελεῖ πρὸς σεληνιασμὸν καὶ κόπον. δύναται δὲ τριφθεῖσα μετὰ ὄξους ἡ βοτάνη καὶ καταχεομένη πόδας ἀκροκορύμβους ὠφελεῖν.

Περὶ μώλεως. Κεφ.

Μῶλυ βοτάνη ῥιζοτομηθεῖσα καὶ πρὸς τὸ σῶμα φορουμένη, ὠφελεῖ πρὸς φάρμακα καὶ βασκανίαν.

Περὶ ἐναλίας δρυός. Κεφ.

Τὴν ἐναλίαν δρῦν, ὅταν ἡ σελήνη λήγῃ. μίξον μετὰ ῥοδίνου ἐλαίου καὶ χρῖσον σου τὸ πρόσωπον ὅταν ἐπὶ πράγματα

πέλθῃς. ζωογονεῖ δὲ καὶ παιδία ἀπὸ τὴν κοιλίαν φορουμένη. καὶ πρὸς τοὺς φόβους τοὺς γινομένους ἔχει κατὰ νύκτα. καὶ πρὸς βασκανίαν τε καὶ πάντα τὰ κακὰ ὠφελεῖ. καὶ τὸ σῶμα φυλάσσει. ὅθεν γὰρ οἱ βάσκανοι ἀφεστήκασι, μέμυκεν. ἐρχομένων δὲ αὐτῶν ἐγγὺς, ἀνοίγει τὸ κάρφος.

περὶ χρυσανθέμου. κεφ.

Τὸ χρυσάνθεμον εἴπερ αἴρεις ἐκ τῆς γῆς, πρὸ τοῦ τὸν ἥλιον ἀνατέλλειν καὶ περιάπτεις τῷ σώματι, ἢ ἐκ τοῦ τραχήλου ἀποκρημνᾶς, ὠφελεῖ ἀποστρέφον τὰς φαρμακίδας γυναῖκας. καὶ πάντας τοὺς βασκάνους.

περὶ ἐρυσίμου. κεφ.

Ἐρύσιμον λεῖον μετ' οἴνου πρὸς κοιλίας πόνον πινέσθω. ἐὰν δὲ κόκκους ζ εἰς οἰκίαν βάλῃς, ἀψιμαχία ἔσται.

περὶ ἑλλεβορίνης. κεφ.

Ἑλλεβορίνη. οἱ δὲ ἐπιπακτίς. οἱ δὲ βόρδον. θαμνίσκος ἐστὶ μικρός. ἐλάχιστα φύλλα ἔχων. πίνεται πρὸς πᾶν θανάσιμον. καὶ πρὸς τὰ ἐν ἥπατι πάθη.

ΤΕΛΟΣ.

Χ αμαίμηλον. Ῥάμνος ὥρου. Ἀρτεμισία μονόκλωνος.

Π ενταδάκτυλος. Ὕπτιος. Ὁ ὀρθός.

Δ ίκταμνον μικρόν. Ἐλελίσφακον. Βράθυ.

Κ υπάρισσος. Χαμαικυπάρισσος. Κενταύρειον μέγα.

Β ούφθαλμον. Παιονία. Πόλιον.

Μ ῶλυ Ἐναλία δρῦς Χρυσάνθεμον. Ἐρύσιμον.

Τ οὺς πυρέσσοντας τὸ χαμαίμηλον θεραπεύει,
Σὺν ῥοδίνῳ λεῖον τετριμμένον ὠφέλιμον δὲ
Τοῖς μετειάζουσι τὸ φυτὸν φύεται δ' αὖθι θινοῖς
Τὸ βραχὺ καὶ κάλλιστον, ὃ βαστάζουσιν ἰητροί,
Ἀρχομένου θέρεος, μέγας ὃ ἥλιος ἣν ἴσχ' ὀδύνη,
Ἕβδομον ἱππεύσας τετράζυγον ἄντυγα πώλων.

## ῬΑΜΝΟΣ.

Ῥ άμνον ἔχει πανάκειαν ἐν οἴκοισι πανάριστην.
Φυομένην φραγμοῖσιν ἄκανθαν εὐπετάλειαν.
Ὥρου δ' ἐστὶ φυτὸν τόδε. σύμπορόν ἐστι βροτοῖσι.
Βαστάζειν τό τε ῥάμνον, ὅταν φθίνουσα σελήνη
Δρήκηται πάντεσσι βροτοῖς. κατὰ μακρὸν ὄλυμπον
Κρημναμένη. δύναται γὰρ ἀποστρέψαι κακότητας
Φαρμακίδων τε κακῶν. καὶ βάσκανα φῦλ' ἀνθρώπων.
Πρώτη γὰρ μακάρων γ' ἐχρήσατο τῇδε φυτείᾳ
Παλλὰς ἀθηναίη κούρη διὸς αἰγιόχοιο.
Πάλλαντα κτείνασα μάχαις κρατερῇ τε βίηφι.
Τῆμος ὅτ' ἀθάνατοί τε θεοὶ θνητοί τε γίγαντες.
Σύμβαλον εἰς ἔριδα κρατερὴν κράτιστον ἐόντες.
Πανδερκὴς δ' ἄρ' ἔπειτα θεὰ, νέμεσις πολύμορφος.
Καὶ νηοὺς ἐκάθηρε θεῶν. πρὸς ἀγάλματα ῥάμνῳ.
Θρέμματα γοῦν νηάς τε, καλὸν φυτὸν ἐστὶ φορῆναι.
Πρός τε πόνον κεφαλῆς, καὶ δαίμονας ἠδ' αὖθι πομπαῖς.
Πάντα γὰρ ἠδ' ἰάσατο βροτοφθόρα φάρμακα λυγρά.

## ΕΡΜΗΝΕΙΑ.

Τὴν ῥάμνον εἴ τις ἄρην λειψοσελήνῳ καὶ βαστάζει, ὠφελεῖ πρὸς φάρμακα, καὶ πρὸς ἀνθρώπους φαύλους. ἁρμόζει δὲ φορεῖν αὐτήν, θρέμματα. καὶ πλοίοις περιτίθεσθαι. ὠφελεῖ δὲ καὶ πρὸς πόνον κεφαλῆς. καὶ δαίμονας καὶ ἐπιπομπάς.

## ΑΡΤΕΜΙΣΙΑ ΜΟΝΟΚΛΩΝΟΣ.

Ἀρτεμίδος βοτάνην τε συνώνυμον αἶρ' ἐπιφώσκειν,
Ἠελίου μέλλοντος ἐπὶ χθόνα φέγγος ἐρυθρόν
Ἥν τινα τοξῖτιν ἄνδρες ἐφήμιζον, ἢ βοφυῖτιν.
Παρθενίην δ' ἕτεροι χαρίτων στέργηθρον ἔχουσαν.
Οἱ δ' ἕτεροι λυσίπονον. ἢ φιλοπάννυχον ἀγροιῶται.
Ἀθανάτην καλέουσι φυτὸν μέγα δῶρον ἔχοντες.
Λύει γὰρ κόπον ἀνδρὸς ὁδοιπόρου, ἣν ἐν χερσὶ
Τὴν μονόκλωνον ἔχῃ περὶ δ' αὖ ποσίν, ἑρπετὰ πάντα
Φεύγει, ἣν τις ἔχῃ ἐν ὁδῷ. καὶ φάσματα δεινά.
Αἷμα ἐπισκιρρωθὲν ἐπὴν ἄρθροισιν ἐλάσῃ
Κλῶνας ἑλών, μίξον ῥοδίνῳ. δήσας δ' ἐνὶ κύθρῃ,
Σύγχριε τὸν κάμνοντα ὅλον, μέλλοντα ὑπνώσσειν
Καὶ εὐθὺς ἀπαλλάξεις ἀλγήματος ἐκ μεγάλοιο.
Ὑστερικαῖς τε γυναιξὶν ἄγαν σωτήριόν ἐστι.
Στραγγουροῦντάς τε παύει. ὀπισθοτόνοιό τε ῥῆγμα.
Πάντα δ' ἀεινοσοεργὰ πάθη σέλλουσα διώκειν.

## ΕΡΜΗΝΕΙΑ.

Ἀρτεμισίαν βοτάνην εἴ τις ἔχει ἐν ὁδῷ, λύει τὸν κάματον. καὶ ἐν ποσὶν εἱλουμένη, θηρία διώκει. καὶ δαίμονας. αἷμα δὲ ἐπὰν περὶ τὰ ἄρθρα σκιρρωθῇ, κλώνια λαβών, μίξον μετὰ ῥοδίνου. καὶ ποιήσας, ζέσον εἰς χύτραν σύγχριε τὸν πονοῦντα ὅλον ὡς ὑπάγει κοιμᾶσθαι. καὶ ὑστερικαῖς γυναιξί, πάνυ βοηθεῖ. στραγγουρίαν παύει. καὶ ὀπισθοτόνου ῥῆγμα.

## ΠΕΝΤΑΔΑΚΤΥΛΟΣ.

Αὐτίκα δ' ἑρμείαο πενταδάκτυλον αἶρε κλοανθές.

Γανταετὴς διόπουν ἔρ μιαίαν πᾶσιν ἀρωγή.
Τὴν καὶ ὀνειροδότιον, ἐπεὶ κατὰ θέσφατα πάντα,
Θνητοῖς ἀνθρώποισιν ὀνείρατα καλὰ προφαίνει.
Γαύτα γὰρ ἀθλήσαιο πόνον φορέων περὶ σῶμα.
Ὀφθαλμῶν δέ τε πάθεσιν ἂμ ἐξοίσειας ἀνίην.
Χοιράδας. ἀντιάδας, σταφυλήν. ὅσα δὴ περὶ γλῶσσαν.
Ἄρθρα τε καὶ νεύρων ὀδύνας, καὶ ἔρκος ὀδόντων.
Ψώραν τ᾽ ἐξακέσαιο βροτοφθόρον ἐκ κακότητος.
Καὶ λοχίων ἔμμηνα κατὰ παθόντα γυναικῶν.
Ἐν ὕδατι χλιαρῷ προσκλυζομένη παλάμαισι.
Γρός τε φόβους, καὶ βασκοσύνας, καὶ δαίμονας. ἐχθρόν ἐστιν.
Ἄκος πανάριστον. ὅθεν καὶ λάμβανε ποίην,
Μήνης αὐξομένης, φαεσιμβρότου ἠελίου τε.
Ἀντέλλειν μέλλοντος ἐπὶ χθόνα φέγγος ἐρυθρόν.

## ἙΡΜΗΝΕΊΑ.

Τ αύτην εἴτις φορεῖ περὶ τὸ σῶμα ἄπονος μένει. καὶ ὀφθαλμοὺς ὠφελεῖ. χοιράδας. ἀντιάδας. σταφυλήν. καὶ τὰ περὶ τὴν γλῶσσαν ἄρθρα τε. καὶ νεύρων ὀδύνας καὶ ὀδόντας. ψώραν κλιμοκτονίας. λοχίων ἔμμηνα κατασπασθέντα. ἐν ὕδατι ᾗ χλιαρῷ προσκλυζομένη εἰς τὰς χεῖρας πρὸς φόφους καὶ βασκοσύνας, καὶ δαίμονας ἐστὶ πάνυ καλή. διὸ λάμβανε τὴν βοτάνην, ὅτε αὔξει ἡ σελήνη καὶ ἥλιον ἀνατέλλοντος.

## ΓΕΡΙΣΤΕΡΑΊ.

Γ ερὸς τὰ κυθήρειδος ἔργα θεᾶς κύπριδος ἀφροδίτης.
Τριγόνιον τό δε πάντες ἐπιχθόνιοι καλέουσιν.
Ἄλλοι δ᾽ ἄῤῥενα οἱ δὲ, περιστερεῶνα τὸν ὀρθόν.
Ὕπτιον δ᾽ αὖ ἕτεροι χαμαλὴν ἐπὶ γαῖαν θαλεργόν.
Δοιοὶ γὰρ πεφύκασιν ὁμοιότατοι πετάλοισιν.
Ὀρθὸς μὲν, τείνειν νεύρων φύσιν εἰς ἀφροδίτην.
Ὕπτιος ἐνάζει. δύναμις δ᾽ αὐτοῖσι μεγίστη.
Εὖ δ᾽ ὁπόταν ἐθέλῃς πόνον ὀφθαλμῶν ἀκέσασθαι,
Ἀμμαλίσας περὶ σῶμα περιστερεῶνα τὸν ὀρθὸν,

Ἠελίου κόσμον τὸν ἀτέρμονα κυκλώσαντος.
Παύσεις ὀφθαλμοῖο δυσαυγέας ἀμβλωτῆρας.
Ἐκ κεφαλῆς πόνος ἐν ταύτῃ παραχρῆμα μειοῦται.
Καὶ κόπον ἐξελάσεις πάντῃ τριφθεῖσα μετ' ὄξους.
Χοιράδας αἰγίλωπάς τε πάσας παύει παραχρῆμα.
Ἔσθ' ὅ δέ τοι σταῦρος χαρίτων τ' εὐχὴν δ' εἰς φιλίαν δυνάμεις καὶ
ζῇ δ' ὁπότ' ἄν τις ἀνὴρ βοτάνης
Κάμνοντος ἐναντίος ἵστασο μοῦνος.
Καὶ εὐθὺς ἀπαλλάξεις τὸν δαίμονα μηκέτ' ἐλθεῖν.

## ΕΡΜΗΝΕΙΑ.

Ὁ περιστερεὼν ὁ μὲν ὀρθὸς, τείνει εἰς αἰδοῖον. ὁ δὲ ὕπτιος, ξηραντικός ἐστιν. ὠφελεῖ δὲ ὁ ὀρθὸς περιαφθεὶς, πρὸς πόνους ὀφθαλμῶν. ποιεῖ πρὸς ἀμβλυωπίαν. καὶ κεφαλῆς πόνον. καὶ κόματον. παύει τριφθεῖσα μετ' ὄξους χοιράδας. αἰγίλωπας παραχρῆμα παύει. ὅτε δέ τις φρικιᾷ, ἀπὸ ταύτης κλώνια λαβὼν, κατέναντι στῆθι τοῦ φρικιῶντος μόνος, καὶ εὐθὺς θεραπεύεται.

## ΠΕΡΙ ΔΙΚΤΑΜΝΟΥ ΜΙΚΡΟΥ.

Δίκταμνον βοτάνην αἴρειν ἐπιβάλλεο κοῦρε,
Φροντίδι ἀθανάτῃ, ἣν αὐτοὶ θέσπισαν ἡμῖν.
Ὡς εἰδὼς δύναμιν βοτανῶν καὶ χρήσιμα ἔργα.
Δικτάμνου γὰρ ὅταν αὖον δέμας ἐν παλάμαισι,
Τρίψας ἀλφιτοειδὲς ἐνιστάξῃς διόνυσον,
Κουρήτων μακάρων ὑπερασπίζοντα πρεπόντως.
Καὶ νεβροστολίσης, ἕξεις περὶ σῶμα προσάψας,
Νίκος ἀμίμητον πρὸς κνώδαλα πάντα τὰ γαίης
Ἰκροὶ δ' ἅμα πάντες ὅσοις σωτήριόν ἐστι,
Βαστάζοντες ἔχουσιν ἐν ἄστει πρὸς τὰ μαδαῖα
Ἕλκη, καὶ μυσαρὰς δὲ νομὰς πληροῖ προκαθαῖρον.
Κἂν σκόλοπες θραυσθῶσιν ὑπ' ἴχνεσιν ἢ περὶ σῶμα,
Πάντα τόπον κατάπλασσε. καὶ αὐτόματος προφανεῖται.
Καὶ σπληνὸς πόνος ἐν ταύτῃ παραχρῆμα μειοῦται.
Ξηρὴ κοπτομένη, καταπλάσσεται ἄλφιτον ὥσπερ.

Καὶ κατοῖς

καὶ κεν τοῖς κρυφίμοισιν ἀναγκαίοις τε τόποισι,
φλεγμαίνοντα πάθη καταπλάσμασι τοῖς δ' ἀκέσαιο.
εἴαρι δ' αἶρε πόην καὶ καύματι καὶ φθινοπώρῳ.

## ἙΡΜΗΝΕΊΑ.

Αὐτὴν τὴν δίκταμνον ξηράνας τρῖψον ἐν ταῖς χερσί σου. καὶ ὡς ἄλφιτον ποιήσας. καὶ βαλὼν σταλαγμὸν οἴνου, θίγε τοῦ σώματος. πρὸς πάντα γὰρ τὰ ἑρπετὰ ἁρμόζει. πρὸς ἕλκη δὲ, καὶ τὰς σαπρὰς νομὰς πληροῖ προκαθαῖρον. κἂν σκολοπαθῇ τις, προσκατάπλασσε καὶ εὐθέως ὠφελεῖ. πρὸς σπλῆνα δὲ καὶ τὰ ἐν κρυφίοις τόποις πάθη φλεγμαίνοντα, κατάπλασσε ὡς ἄλφιτον ποιήσας. αἶρε δὲ τὴν βοτάνην, ἐν ἔαρι καὶ ἐν τοῖς καύμασι, καὶ ἐν τῷ φθινοπώρῳ.

## ΠΕΡῚ ἘΛΕΛΙΣΦΆΚΟΥ.

Ῥήσιον τόδε πάντες ἐπὶ χθόνα ναιετάοντες,
Ἄνθρωποι κλήζουσ' ἐλελίσφακον. οἱ δέ τε θεῖον.
Λύει γὰρ ψυγμὸν κακὸ τόρμονα βῆχά τε νεφρῶν.
Πάντα δ' ὅσ' ἀνθρώποις πέφυκεν ἕλκη κακοποιά,
Μιγνυμένου ῥοδίνοιο λίπει κηρῷ τε βραχεῖ,
ἐξιᾶται σπληνός τε πόνον λειεντερίην τε.
Πινόμενον μετ' οἴνου λευκῶν ἰσόρρεπες ἄχθος.
Τοὺς δ' αἱμοπτοϊκοὺς προποτιζόμενον θεραπεύει
Πρός τε γυναικείους κόλπους καὶ πάντα λοχείης
Μολυνθέντα πυρὶ σμαλδρῶν ἔμμηνα καθαίρει.
Αἱ μυσαραὶ δὲ γυναῖκες ὅσαι κακὰ μηχανόωντα,
Πεσσὸ ποιησάμεναί τε κακῶς ἐγκύμονι φύσει.
Καρπὸν καλλιχύεθλον ὑπ' ἔμβρυα ἐκβάλλουσιν.

## ἙΡΜΗΝΕΊΑ.

Ἐλελίσφακον λύει ψυγμὸν βῆχα. πρὸς πάντα δὲ τὰ κακὰ ἕλκη σὺν ῥοδίνῳ καὶ κηρῷν λυθὲν, ὠφελεῖ σπληνὸς πόνον, καὶ δυσεντερίαν θεραπεύει πινόμενον μετὰ οἴνου λευκοῦ ἐξ ἴσου τοὺς αἱμοπτοϊκοὺς προποτιζόμενον θεραπεύει. καὶ πρὸς πάντα ποιεῖ λόχεια γυναικός. κάκισται δὲ γυναῖκες πεσσὸν

φάγγεος οὕνεκα λαμπομένου πυρὸς αἴθος ἀναίθει.
Ἣν κυνὸς ἀντέλλοντος ἀναίρεο κοῦρε δαΐφρον.
Πρὶν μέγαν ἠέλιον τὸν ἀτέρμονα κύκλον ὁδεύειν.
Μή σε θεοὶ βλάψωσι νόῳ καὶ ἐχέφρονι βουλῇ.
Ὥρῃ ὡς προλιπόντασι ἣν φράζεσθαι ἄνωγα.
Οὐ γὰρ ἐν ἀθανάτοισι –
Οὕνεκα δὴ καλέουσι κυνὸς παστὸν κατ᾽ ὄλυμπον
Ἀθάνατοι μάκαρον ἐφιάλτιόν τε βοῶσι.
Κρημναμένη δεινὴ γὰρ ἀποστρέψαι κακότητας.
Φαρμακίδων φοβερῶν καὶ βάσκανα φῦλ᾽ ἀνθρώπων.
Πρός τε φόβους δυνατὴ καὶ δαίμονας ἠδ᾽ ἐπιπομπάς.
Καὶ πυρετὸν φρίκεσι καταρχόμενον στυγέοντα.
Νυκτερινόν τε καὶ ἡμερινόν. χαλεπὸν δὲ τέταρτον.
Ἥν τινα καὶ τηροῦσι–      κος μεγάλοιο.
Ἄγγελοι ἑξήκοντα τριηκόσιοι δ᾽ αὐθ᾽ ἔργοις ὤφελον
Ταύτην γὰρ λέγεταί ποτ᾽ ἐν οὔρεσι ῥιζωθεῖσαν
Δαίμονας ἐκεῖθεν ἀπᾶραι, τὸν τόπον οἰκήσαντας.

## ἙΡΜΗΝΕΊΑ.

Γ αιονία βοτάνη αἴρεται ἐν τοῖς κυνοκαύμασι, πρὸ τοῦ τὸν ἥλιον ἀνατέλλειν. καὶ κρεμᾶται. καὶ ὠφελεῖ πρὸς φάρμακα, καὶ βασκοσύνας, καὶ φόβους. καὶ δαίμονας. καὶ ἐπιπομπάν. καὶ εἰς πυρετὸν ἐκ φρικάσεως νυκτερινόν τε καὶ ἡμερινόν. καὶ τεταρταῖον. λέγεται δὲ ὅτι ποτὲ ἐν τῷ ὄρει ἔνθα ἦσαν δαίμονες, φυεῖσα, τούτους ἀπεδίωκε.

## ΠΕΡῚ ΠΟΛΊΟΥ.

Δ εῖ δέ σε καὶ περὶ σῶμα φορεῖν πολίοιο κόρυμβον.
Πρὸς τὸν ἀπαυλισμὸν τὸν ἀπ᾽ αἰθέρος ὃν καλέουσιν,
Ἄνθρωποι χαλεπὴν ἱερὴν νόσον ἀμπλακιῶτιν.
Οἱ δὲ, σεληνιασμὸν σωματικὴν δ᾽ ἐπιπομπήν.
Καὶ κόπον ἐξελάσαι δυνατὴ τριφθεῖσα μετ᾽ ὄξους,
Ἡ βοτάνη καταχεομένη πόδας ἀκροκορύμβους.

# Ἑρμηνεία.

Αὕτη ἡ βοτάνη φορουμένη περὶ τὸ σῶμα, ὠφελεῖ πρὸς σεληνιασμὸν καὶ κόπον. δύναται δὲ τριφθεῖσα μετὰ ὄξους ἡ βοτάνη καὶ καταχριομένη, πόδας ἀκροκορύμβους ὠφελεῖν.

# Μῶλυ.

Μῶλυ δὲ ῥιζοτομηθὲν ἀρεῖς πρὸς φάρμακα λυγρά.
Φαρμακίδων χαλεπῶν καὶ βάσκανα φῦλ' ἀνθρώπων.
Τοῦτο γὰρ Ἑρμείας λαβερ πιάδι ὀδυσῆϊ
Δῶκε φορεῖν περὶ σῶμα προσαψάμενον φυλάκειαν.
Αἰαίην ἐς νῆσον ὅτ' εἰς κλυτὰ δώματα κίρκης.
Ἤει πολλὰ δέ οἱ κραδίη φρεσὶ μερμήριζεν.
Οὐδὲ γὰρ ὡς ἑτάρους ἤδεε δυνατοὺς ὑπαίξαι.
Εἰ μὴ τοῦτό γε δῶκε διάκτορος ἀργειφόντης.
Ἐκ γαίης ἀρύσας ἐναλίγκιον αἴθει λευκῷ.
Ὥς γάλα λαμπόμενον καρποφθόρον αὐτὰρ ἔπειτα,
Ναρκίσσῳ ἴκελον ῥίζα ζοφοειδὲς ἰδέσθαι,
Τὴν βοτάνην περὶ σῶμα φορῶν, ἐχθροὺς ὑπαλύξεις.

Τέλος.

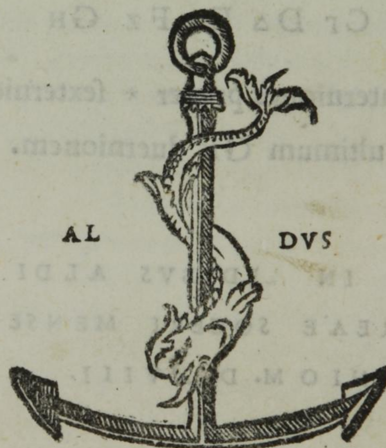
244

* a α b β c γ d δ e ε f ζ g η h θ i ι k κ l λ m μ n ν o ξ p ο q π r ρ ſ σ t τ u υ x φ y χ z ψ & ω

A A B B C Γ D Δ E E F Z G H

Omnes quaterniones præter * ſexternionem & ultimum G H duernionem.

VENETIIS IN AEDIBVS ALDI ET ANDREAE SOCERI MENSE IVNIO M. D. XVIII.


AL
DVS


BIBLIOTECA NAZIONALE CENTRALE
FIRENZE

